रेणु रचनावली-2

[उपन्यास : मैला आँचल, परती : परिकथा]

रेणु रचनावली

2

संपादक

भारत यायावर
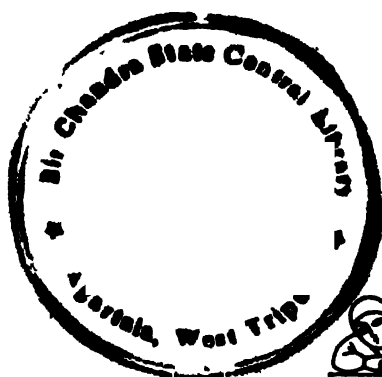
राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली पटना

▲ अप्रतिम कथाकार रेणु   फोटो   राबिन शॉ पुष्प

संपादकीय

रेणु रचनावली के इस खंड में हिंदी के कालजयी उपन्यास–'मैला आँचल' और 'परती : परिकथा' संकलित हैं। इन दोनों उपन्यासों की चर्चा इनके छपते ही हिंदी के अलावा अन्य कई भारतीय भाषाओं में भी होने लगी। इन दोनों उपन्यासों को लेकर तरह-तरह के विवाद और बहसें लंबे समय तक चलती रहीं। आज भी कमोबेश वह स्थिति बरकरार है। इन दोनों उपन्यासों के आधार पर 'आंचलिक उपन्यास' की एक नई अवधारणा हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी निर्मित हुई। 'आचलिकता' को लेकर आज भी कई बहस-तलब लेख लिखे जा रहे हैं। इन दोनो उपन्यासों के छपने के बाद 'प्रेमचंद की परंपरा' पर भी हिंदी में सार्थक बहसें हुईं।

'मैला आँचल' का प्रकाशन अगस्त, 1954 में हुआ और इसके तीन वर्ष बाद सितम्बर, 1957 में 'परती : परिकथा' का। इन दोनों उपन्यासों ने न सिर्फ रेणु को हिंदी साहित्य में एक बड़े लेखक के रूप में प्रतिष्ठित किया, बल्कि हिंदी की उपन्यास-विधा में एक युगांतर भी उपस्थित किया। इन दोनों गौरवशाली उपन्यासों ने हिंदी भाषा की अभूतपूर्व व्यंजना-क्षमता और संगीतात्मकता से पहले-पहल परिचित कराया। यह कहना बिल्कुल सही है कि "रेणु ने भाषा को पार्श्व संगीत दिया।"

'मैला आँचल' का प्रकाशन 1954 में हुआ, पर उसके लेखन में रेणु 1950 में ही लग गए थे। उन्होंने पहले 'मैला आँचल' का प्रारूप दूसरा तय किया था। बाद में बदल दिया। '50 में 'मैला आँचल' लिखना शुरू करने की चर्चा उन्होने गोपीकृष्ण प्रसाद के एक पत्र में की है : "समय मिलते ही मैं कुछ न कुछ लिखने बैठ जाता हूँ। बड़ी चीज के कैनवास पर रेखाएँ खींच रहा हूँ–रंग घोल रहा हूँ।·· गोपीजी, सच कहता हूँ–डर लगता है, इतनी बड़ी चीज सँभाल सकता हूँ या नहीं।"

'मैला आँचल' का प्रकाशन कितनी मुश्किलों से किस तरह हुआ, इसकी एक लंबी कहानी है। रेणु इसकी पाण्डुलिपि लेकर प्रकाशन के लिए लंबे समय तक दौड़-धूप करते रहे। अंत में लतिकाजी के गहने बेचकर कागज की व्यवस्था की और यूनियन प्रेस, पटना में इसका मुद्रण-कार्य प्रारंभ हुआ। प्रकाशन का नाम रखा गया–समता प्रकाशन। 'मैला आँचल' के छपने में लगभग एक साल लग गया। छपने के बाद 'मैला

आँचल' के महत्त्व की धीरे-धीरे चर्चा शुरू हुई। राजकमल प्रकाशन के तत्कालीन प्रबन्ध निदेशक श्री ओमप्रकाश ने अपने प्रकाशन से इसे छापना चाहा। उन्होंने रेणु से संपर्क किया। रेणु ने उन्हें नए सिरे से 'मैला आँचल' छापने की स्वीकृति दे दी। यह भी तय हुआ कि छपी हुई प्रतियों का वितरण भी राजकमल ही करेगा। इस तथ्य की जानकारी रेणु के इस पत्रांश से मिलती है :

> "राजकमल प्रकाशन ने सोल एजेंसी स्वीकार कर ली है। वह हमें वही कमीशन देंगे, जो 'बलचनमा' पर दिया है। और 30 प्रतिशत कमीशन पहले ही चुका देंगे। राजकमल एक तगड़ी प्रकाशन संस्था है। सारे भारत में उसकी पहुँच है। 'प्रकाशन समाचार' निकालकर वह अपनी किताबों का जोरदार वैज्ञानिक प्रचार भी करता है। 'आलोचना' त्रैमासिक उसी की है और हिंदी का एक बेजोड़ पत्र समझा जाता है। फोल्डर छापने के लिए कुछ लोगों की राय का संग्रह कर लिया है—बतौर Review के। नागार्जुन, नलिन विलोचन शर्मा, दिवाकर प्रसाद विद्यार्थी, नर्मदेश्वर प्रसाद, अनूप आदि की राय मिल चुकी है। नर्मदेश्वर जी ने बहैसियत सोशियोलॉजी के हेड ऑफ डिपार्टमेंट लिखा है—'किताब समाज विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी है'।"

रेणु का यह पत्र अपने एक ग्रामीण बंधु को 10 फरवरी, 1954 को लिखा गया है। इस पत्र से रेणु के मन में राजकमल प्रकाशन के प्रति तीव्र आकर्षण के कारण का पता चलता है। रेणु ने 'मैला आँचल' के साथ एक फोल्डर भी छपवाया था, जिसमें 'मैला आँचल' पर पटना के कई विद्वानों की समीक्षात्मक टिप्पणियाँ भी छपी थीं। नर्मदेश्वर प्रसाद की एक पक्ति को रेणु ने इस पत्र में उद्धृत किया है। 'मैला आँचल' का मुद्रण मार्च, 1954 तक पूर्ण हो चुका था, पर आर्थिक दिक्कतों के कारण यह अगस्त में छपकर बाहर आया। अगस्त के अत में ही रेणु के पटना-निवास पर इसका विमोचन हुआ। जैसाकि रेणु के पत्र से ज्ञात होता है, नलिनविलोचन शर्मा ने इसके प्रकाशन के पूर्व ही इसे पढ लिया था और एक समीक्षात्मक टिप्पणी लिखी थी। इसके छपने पर नलिनजी ने विस्तृत समीक्षा लिखी, जो आकाशवाणी से प्रसारित हुई। कहा जाता है कि इस समीक्षा से ही हिंदी साहित्य का ध्यान इस उपन्यास की ओर गया। नलिनविलोचन शर्मा ने इस समीक्षा का सारांश बाद में 'आलोचना' के पन्द्रहवें अंक में प्रकाशित करवाया। नलिनजी ने 'मैला आँचल' पर महत्त्वपूर्ण बातें कही थीं :

> 'मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु का प्रथम उपन्यास है। यह ऐसा सौभाग्यशाली उपन्यास है, जो लेखक की प्रथम कृति होने पर भी उसे ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त करा दे कि वह चाहे तो कुछ और न भी लिखे।... 'मैला आँचल' गत वर्ष का ही श्रेष्ठ उपन्यास नहीं है, वह हिंदी के दस श्रेष्ठ उपन्यासों

में सहज ही परिगणनीय है।...मैंने इसे 'गोदान' के बाद हिन्दी का वैसा दूसरा महान् उपन्यास माना है।...

'मैला आँचल' की भाषा से हिन्दी समृद्ध हुई है। रेणु ने कुशलता से ऐसी शैली का प्रयोग किया है, जिसमें आंचलिक भाषा-तत्त्व परिनिष्ठित भाषा में घुलमिल जाते हैं।

हिन्दी के उपन्यास-साहित्य में, यदि गत्यवरोध था, तो इस 'कृति' से वह हट गया है।

'मैला आँचल' एक वर्ष के भीतर ही श्रेष्ठ उपन्यास के रूप में प्रसिद्ध हो गया था। हिंदी के महत्त्वपूर्ण लेखकों ने और लगभग सभी पत्रिकाओं ने इस पर लिखा। अचानक मिले इतने अधिक यश का परिणाम बाद में यह हुआ कि 'मैला आँचल' को खारिज करनेवाले लेख छपने लगे। पटना से प्रकाशित मासिक 'अवंतिका' पत्रिका के नवम्बर, 1955 अंक में लक्ष्मीनारायण भारतीय की एक टिप्पणी छपी—'मैला आँचल : एक दृष्टिकोण'। इसमें 'मैला आँचल' को निम्नकोटि का उपन्यास साबित करनेवाले कई तर्क दिए गए। ये तर्क रेणु जैसे निर्लिप्त रहनेवाले कलाकार को भी तिलमिला देनेवाले थे। इसके प्रतिक्रियास्वरूप 'अवंतिका' के जनवरी, '56 अंक में 'मैला आँचल : स्वस्थ दृष्टियाँ और उचित दृष्टिकोण' नामक रचना सुश्री गौरा, एम.ए., के नाम से छपी। यह रचना रेणुजी के हस्तलेख में छपने आई थी, जिसे पटना के उनके कुछ निकट के लेखकों ने छपने के पूर्व देख लिया। इस बात को प्रचारित भी किया गया। तत्पश्चात् रेणुजी ने गौरा के सही मायने में लेखक होने की संपुष्टि की। राजकमल के 'प्रकाशन-समाचार' में गौरा का एक पत्र भी छपा। पर वह रचना रेणु ने ही लिखी थी, यह निर्विवाद है। इसमें रेणु का एक इण्टरव्यू भी है, जिससे रेणु की कई मान्यताओं का पता चलता है। इस लेख में 'मैला आँचल' के विरुद्ध दिए गए तर्कों का उचित उत्तर तो दिया ही गया है, इससे रेणु के एक भिन्न व्यक्तित्व का भी पता चलता है। इस लेख को *रचनावली* के पाँचवें खंड में संकलित किया जा रहा है। 'मैला आँचल' पर जो आरोप लगाए गए थे, उनमें प्रमुख हैं—अनैतिकता, भ्रष्ट भाषा, दूसरी भाषा में अनुवाद का संकट आदि। रेणु ने इन आरोपों को एक जगह संकलित कर 'मैला आँचल' का एक विज्ञापन तैयार किया था, जिसे पढ़ने से उस पर लगाए गए आरोपों का खुलासा होता है :

'मैला आँचल' ? वही उपन्यास जिसमें हिन्दी का एक भी शुद्ध वाक्य नहीं है ? जिसे पढ़कर लगता है कि कथानक की भूमि में सती-सावित्री के चरण-चिह्नों पर चलनेवाली एक भी आदर्श भारतीय नारी नहीं है ? मद्य-निषेध के दिनों में जिसमें ताड़ी और महुए के रस की इतनी प्रशस्ति गायी गयी है कि लेखक जैसे नशे का ही प्रचारक हो ! सरकार ऐसी पुस्तकों को प्रचारित ही कैसे होने देती है जी !

वही 'मैला आँचल' न जिसमें लेखक ने न जाने लोक-गीतों के किस संग्रह

से गीतों के टुकड़े चुराकर जहाँ-तहाँ चस्पाँ कर दिये हैं ? क्यों जी, इन्हे तो उपन्यास लिखने के बाद ही इधर-उधर भरा गया होगा ?

'मैला आँचल' ! हैरत है उन पाठकों और समीक्षकों की अक्ल पर जो इसकी तुलना 'गोदान' से करने का साहस कर बैठे ! उछालिए साहब, उछालिए ! जिसे चाहे प्रेमचंद बना दीजिए, रवीन्द्रनाथ बना दीजिए, गोर्की बना दीजिए ! ज़माना ही डुग्गी पीटने का है !

तुमने तो पढ़ा है न 'मैला आँचल' ? कहानी बताओगे ? कह सकते हो उसके हीरो का नाम ? कोई घटना-सूत्र ? नहीं न ! कहता ही था। न कहानी है, न कोई चरित्र ही पहले पन्ने से आखिरी पन्ने तक छा सका है। सिर्फ ढोल-मृदंग बजाकर, 'इन्किलास जिंदाबाघ' जरूर किया गया है। 'पाटी' और 'कलस्टर' और 'संघर्ख' और 'जकसैन'—भोंड़े शब्द भरकर हिंदी को भ्रष्ट करने का कुप्रयास खूब सफल हुआ है !

मुझे तो लगता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में या यों कहूँ कि हिन्दी-साहित्यिकों की आँखों में, ऐसी धूल झोंकाई इससे पहले कभी नहीं हुई। मैला आँचल, मैला आँचल सुनते-सुनते कान पक गये। धूल भरा मैला-सा आँचल ! लेखक ने इस धूल की बात तो स्वयं भूमिका में कबूल कर ली है। एक तरह से !! फिर भी

अरे, हमने तो यहाँ तक सुना है, 'मैला आँचल' नकल है किसी बँगला पुस्तक की और बँगला पुस्तक के मूल लेखक जाने किस लाज से कह रहे है, "नहीं, मैला आँचल अद्वितीय, मौलिक कृति है।" एक दूसरे समीक्षक ने यह भी कह दिया, जाने कैसे, कि एक ही पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कृतियाँ विभिन्न हो सकती हैं तो ये हैं !

पत्थर पड़े हैं उन कुंदजेहन आलोचकों के और तारीफ के पुल बाँधनेवालो के जो इसे ग्रेट नॉवल कह रहे हैं। ग्रेट नॉवल की तो एक ही परख हमें मालूम है, उसका अनुवाद कर देखिए ! कीजिए तो मैला आँचल का अनुवाद अंग्रेजी मे, फिर देखिए उसका थोथापन !

रेणु में आत्मालोचन और अपनी ही हँसी उड़ाने की प्रवृत्ति अपने समकालीन लेखकों में सबसे अधिक है। 'मैला आँचल' पर तरह-तरह के जितने आरोप लगाए जा रहे थे, उनका कोई ठोस उत्तर न देकर उन्होंने व्यंग्य की शैली में इस प्रकार दुहरा दिया है कि वे आरोप हास्यास्पद लगने लगते हैं।

'मैला आँचल' के संदर्भ में एक बात का और उद्‌घाटन करना चाहूँगा। रेणु के आत्मीय शिष्य जयशंकर ने एक बार उनसे पूछा कि इस उपन्यास में इतने अधिक चरित्र हैं, पर आप कहीं नही नजर आते। रेणु ने बताया कि इसमें मेरा चरित्र भी एक जगह आया है। जब आजादी का जुलूस निकाला जाता है, तो वे भी एक नारा लगाते हैं—'यह

आजादी झूठी है ! देश की जनता भूखी है।' इस पर मेरीगंज के लोग बिगड़ जाते हैं। बालदेवजी कहते हैं—'अरे भाई, हिंगना-औराही का सोसलिट है, तो हिंगना-औराही में जाकर अपने गाँव का नारा लगाये। यहाँ काबिलयती छाँटने का क्या जरूरत था ? अपना मुँह है—बस लगा दिया लारा—यह आजादी झूठी है !'

इतने लंबे समय के बाद देश आजाद हुआ। आजादी के नशे में पूरा देश मगन। पर रेणु 'मैला आँचल' के द्वारा असली आजादी के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई पड़ते हैं। आजाद भारत की सच्ची तस्वीर पेश करते हुए उनकी आस्था बामनदास की मृत्यु के साथ टूट जाती है। लोग अशिक्षा, अज्ञान, सांप्रदायिकता, जातिवाद, रूढ़िवादिता के अंधकार में जी रहे हैं—भूखे, बदहाल, विपन्न। आदमी जानवर से भी बदतर जीवन जी रहा है। 'मैला आँचल' के डॉक्टर को सब रोगों की जड़ में भूख और गरीबी दिखाई पड़ती है और उसे लगता है कि अभी पहला काम है जानवर को आदमी बनाना।

'मैला आँचल' के प्रकाशन के बाद उसको लेकर दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। पहली यह कि रेणु पर मानहानि का मुकदमा दायर किया गया। और दूसरी, उसे सतीनाथ भादुड़ी के उपन्यास 'ढोंढ़ाईचरितमानस' की नकल प्रचारित किया गया। मुकद्दमा लड़ते हुए रेणु ने वाचस्पति पाठक को इसका पूरा ब्यौरा एक पत्र में लिख भेजा। रेणु ने लिखा है—"कानून और कचहरी के पैंतरे ! भगवान बचायें। मुकद्दमा दिलचस्प है, इसलिए मेरी तारीख के दिन कचहरी में भीड़ लग जाती है। ··· मेरे गाँव के पास एक सज्जन हैं—उन्होंने 'मैला आँचल' के तहसीलदार को अपनी तस्वीर समझ लिया है। मूरख आदमी है, पुराना मुकद्दमेबाज है। संभवतः उसने अपने वकील से पहले भी सलाह ली होगी।"··· रेणु उसी पत्र में आगे लिखते हैं—"मुकद्दमे की पेशी के दिन संचालक-सूत्रधार छाते की ओट से फौजदारी कचहरी कंपाउण्ड के बाहर, दीवानी कचहरी के आसपास चक्कर मारते रहते हैं। पिछली तारीख को दलित-संघ के सेक्रेटरी साहब भी कचहरी में नहीं आये, क्योंकि वकीलों की टोली 'मैला आँचल' तथा अन्य रचनाओं के जीते-जागते पुतलों को उँगलियाँ बता-बताकर इधर-उधर चक्कर मारती है। बेवजह पान की दुकान पर खड़े एक आदमी से नाम पूछ लेते हैं—'आपका नाम ? क्या आपका घर फारबिसगंज थाना है ?—'जी मेरा नाम··· ?' पान खाते हुए नौजवान वकील ने नाम को एक बार दुहराया, फिर ठठाकर हँस पड़ा—'ओ, आप 'मैला आँचल' के फलाने जी हैं।' एक नया वकील—जो अपने को लेखक भी समझता है—इन मौकों का फायदा उठा रहा है। उसने सिर्फ तीन ही पेशी के दिनों घूम-घूमकर देख लिया है—'अलबत्ता तस्वीर उतारी है, तस्वीर बनानेवाले ने !' "

रेणु की कथाकृतियों के अधिकांश पात्र वास्तविक भूमि पर भी वैसी ही छवि रखनेवाले हैं। आप कभी रेणु के इलाके में जाइए तो लोग बताएँगे 'मैला आँचल या 'परती:परिकथा' या अमुक कहानी के अमुक पात्र ये हैं, वे हैं आदि। रेणु औ· उनकी रचनाओं से उस क्षेत्र के अधिकांश लोग परिचित हैं।

'मैला आँचल' की अपार लोकप्रियता के कारण बिहार के कई तथाकथित लेखकों में उनके प्रति ईर्ष्या-द्वेष का भाव उदित हुआ और वे रेणु पर और उनकी रचनाशीलता पर तरह-तरह के आरोप लगाते-फिरे। इनका उत्तर राजकमल प्रकाशन के तत्कालीन प्रबंध निदेशक ओमप्रकाशजी ने अप्रैल, 1956 के 'प्रकाशन-समाचार' में विस्तार से दिया। वे लिखते हैं–" 'मैला आँचल के शिल्प और वस्तु ने एक अनुपम चमत्कार के समान हिंदी क्षेत्र को अभिभूत कर लिया। एकदम इस नितान्त अपरिचित कलाकार को जो ख्याति और यश मिला, उसे पाने का बहुत ही कम लेखकों को सौभाग्य हुआ होगा। अपने पहले ही प्रयत्न से वह साहित्यकारों की अगली पाँत में आ बैठे। हिंदी की प्रत्येक साहित्यिक पत्रिका में 'मैला आँचल' की विस्तृत, मुख्यतः प्रशस्तिमूलक, समीक्षाएँ प्रकाशित हुईं। इस प्रतिभा के स्वागत में मानो होड़-सी मच गई, जो स्वयं में एक आश्चर्य से कम नहीं है। लेकिन यह उत्साह स्वस्थ मनोभाववाले, उदारचेता साहित्यिकों तक ही सीमित था। यह तब मालूम हुआ, जबकि दिसम्बर, 1955 में, जबकि रेणु की सफलता की गाथा इस छोर से उस छोर तक फैल रही थी, बिहार से ही यह 'व्हिस्परिंग कैंपेन' आरम्भ हुआ कि 'मैला आँचल' बंगाली के प्रसिद्ध लेखक श्री सतीनाथ भादुड़ी कृत 'ढोंढ़ाईचरितमानस' का अनुवाद है। ·" जो साहित्यकार महोदय रेणु पर यह आरोप लगा रहे थे, उन्होंने भादुड़ीजी से इस संदर्भ में पत्राचार किया। भादुड़ीजी ने उनके पत्र का उल्लेख करते हुए रेणु को बँगला में पत्र लिखा, जिसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है : "प्रियवर, आपका पत्र अभी मिला। कुछ दिन पूर्व किसी हिंदी साहित्यिक ने 'ढोंढ़ाईचरितमानस' और आपकी पुस्तक के सामंजस्य के विषय में एक प्रश्नात्मक पत्र लिखा था। उनके पत्र के उत्तर में मैंने लिखा था कि मेरी पुस्तक की विषयवस्तु है 1905 से 1945 ई. का समाज और आपकी पुस्तक का विषय है 1946 ई. के बाद की सामाजिक स्थिति। इस कारण सामंजस्य का प्रश्न ही नहीं उठता। पत्र लेखक का नाम है श्री । मौखिक प्रचार के विरुद्ध लिखित प्रचार करने की क्या बहुत ही आवश्यकता है ! अभियोग का लिखित उत्तर देने की अपेक्षा तो यही अच्छा होगा कि हम अपनी ओर से उस हिंदी पत्र में उसका प्रतिवाद करें। जी क्या आपके मित्र हैं ? मित्र होने के नाते तो वे अपने पत्र में इन बातों को स्थान दे सकते हैं। 'ढोंढ़ाईचरितमानस' का अनुवाद यदि हिंदी में हो जाए तो इस विवाद का अंत ही हो जाएगा। इस तरह की कुछ व्यवस्था होनी चाहिए। साहित्यिक का विचार आखिर साहित्य द्वारा ही होगा। नमस्कार स्वीकार करें।–सतीनाथ।"

ओमप्रकाशजी ने भी भादुड़ीजी को एक पत्र लिखा, जिसका उत्तर भादुड़ीजी ने अंग्रेजी में उन्हें दिया था–"आपके पत्र के लिए धन्यवाद। मैं समझता हूँ कि आपमें से किसी ने भी मेरी पुस्तक 'ढोंढ़ाईचरितमानस' नहीं पढ़ी है। मेरा उपन्यास 1905-1945 के बीच की, एक अपेक्षाकृत पिछड़े संप्रदाय की सामाजिक, राजनीतिक चेतना को व्यक्त करता है, जबकि 'मैला आँचल' उन घटनाओं पर दृष्टिपात करता है जो खास तौर पर 1945 के बाद में घटित हुईं। दोनों का घटनाक्रम अलग है। 'मैला

आँचल' एक मौलिक कृति है और उसके लेखक पर ऐसे आरोप लगाना अन्याय होगा !"

रेणु के विरोधी अब भी यत्र-तत्र उन पर यह आरोप लगाते दीख जाते हैं, इसीलिए यह प्रसंग यहाँ प्रस्तुत किया गया है। 'ढोंढ़ाईचरितमानस' का हिंदी अनुवाद प्रकाशित हुए कई वर्ष हो गए हैं और इस आरोप का खोखलापन जाहिर हो चुका है।

'मैला आँचल' पर जब तरह-तरह के आरोप लगाए जा रहे थे, आलोचना-प्रत्यालोचना का माहौल गर्म था, रेणु 'परती : परिकथा' के लेखन में जुटे थे। इलाहाबाद से उपेंद्रनाथ अश्क के संपादन में 'संकेत' नामक वृहद् संकलन प्रकाशित हुआ, जिसमें रेणु का रिपोर्ताज 'एकलव्य के नोट्स' छपा। 'एकलव्य के नोट्स' के कई अंश रेणु ने 'परती : परिकथा' में शामिल किए। इस उपन्यास का लेखन उन्होंने पटना में शुरू किया, पर वहाँ जब रेणु के विषय में तरह-तरह की अफवाहें उड़ाई जाने लगीं, तो वे गाँव चले गए। पर गाँव में अनेक तरह की समस्याएँ और झंझट ! वे वहाँ से हजारीबाग चले आए और 'परती : परिकथा' के एक भाग को यहीं लिखा। हजारीबाग में रेणुजी की ससुराल थी। वे यहाँ भी लंबे समय तक नहीं रह सकते थे। उस वक्त राजकमल प्रकाशन और ओमप्रकाशजी की मुख्य गतिविधियों का केंद्र इलाहाबाद था। ओमप्रकाशजी ने रेणु को इलाहाबाद में बुलवा लिया और रेणु वहाँ लूकरगंज मुहल्ले में एक मकान लेकर रहने लगे। 'परती : परिकथा' का तीन-चौथाई भाग वहीं लिखा गया। बाद मे, इलाहाबाद में भी रेणु को परेशान करनेवाली शक्तियाँ ज्यादा कारगर होने लगीं, तो वे बनारस चले गए और उपन्यास वहीं पूरा किया। बनारस के ही सन्मति मुद्रणालय मे इसका मुद्रण हुआ। सितम्बर, 1957 में इसका प्रकाशन हुआ। राजकमल प्रकाशन इस उपन्यास का विज्ञापन काफी पहले से कर रहा था और इस कृति की प्रतीक्षा इसके प्रकाशन के पूर्व ही होने लगी थी। राजकमल प्रकाशन ने दिल्ली और पटना मे इसका भव्य प्रकाशनोत्सव मनाया। दिल्ली के तीन दैनिक पत्रों– 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'हिंदुस्तान' तथा 'नवभारत टाइम्स' में यह विज्ञापन छपवाया गया कि 'परती : परिकथा' के लेखक श्री रेणु पुस्तक के प्रकाशन के दिन यानी 21 सितम्बर, 1957 को 2 से 5 बजे सायं तक राजकमल प्रकाशन में उपस्थित रहेंगे, तथा जो पाठक इस उपन्यास को खरीदेंगे, उस पर अपने हस्ताक्षर देंगे। पाठकों तथा लेखकों में इस प्रकार संपर्क स्थापित करने का यह पहला प्रयास था। अनेक पाठको ने 'मैला आँचल' लिखकर एकाएक ख्याति पानेवाले अपने प्रिय लेखक से व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करने के इस सुअवसर का लाभ उठाया और लेखक को भी अनेक जीवन-स्तरों से आनेवाले पाठकों से मिलकर एक नया अनुभव हुआ। यही कार्यक्रम 28 सितम्बर, 1957 को राजकमल प्रकाशन के पटना कार्यालय में दुहराया गया। दिल्ली में 21 सितम्बर, 1957 को शाम के छह बजे वेंगर रेस्टोरौं में 'परती : परिकथा' के प्रकाशनोत्सव के उपलक्ष्य में जलपान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर हिंदी के उदीयमान और वयोवृद्ध लेखको तथा प्रकाशकों का जो सम्मिलन हुआ, वह अभूतपूर्व था। श्री दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, जैनेंद्र, बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, नगेंद्र,

उदयशकर भट्ट, बारान्निकोण, रामधन शास्त्री, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, महावीर अधिकारी, गोपालकृष्ण कौल, लक्ष्मण राव जोशी, सुहैल अजीमाबादी, प्रयागनारायण त्रिपाठी, मन्मथनाथ गुप्त, सत्यवती मल्लिक, सावित्री देवी वर्मा, विष्णु प्रभाकर, क्षेमचंद्र सुमन, शिवदानसिंह चौहान, संतराम, नेमिचंद्र जैन, राधामुकुंद मुखर्जी, शमशेरसिंह नरूला, श्रीराम शर्मा 'राम' तथा नर्मदेश्वर चतुर्वेदी आदि लेखक मौजूद थे। इस अवसर पर शिवदानसिह चौहान ने 'परती : परिकथा' पर अपना लंबा भाषण दिया। 'परती : परिकथा' पर बोलते हुए उन्होंने कहा—"यह हिंदी का अब तक का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है, इसे सर्वश्रेष्ठ भारतीय उपन्यासों मे रखा जा सकता है और पाश्चात्य साहित्य में इस बीच (यानी पिछले पाँच-सात वर्षों में) जो महत्त्वपूर्ण उपन्यास प्रकाशित हुए है, उनमे से किसी से भी यह टक्कर ले सकता है। यह हम सबके लिए गर्व का विषय है।" बालकृष्ण शर्मा नवीन ने कहा—"आपमे निरीक्षण और स्थिति-चित्रण का अद्भुत सामर्थ्य है। भारतीय ग्राम-जीवन में जो कुछ कुत्सित, द्वेषपूर्ण, संकुचित, कलहप्रिय, नीच-वृत्ति है, उसे आपने अत्यंत, अत्यत सहानुभूतिपूर्वक व्यक्त किया है। इस निम्न वृत्ति में आप खो नहीं गए हैं। भारत के गाँवों में आपने मानवत्व को देखा है। आप निराश नहीं हैं। आप पराजयवादी नहीं हैं। आपने आशावादिता को पक से कमलवत् उत्थित, विकसित और पुष्पित किया है। 'परती : परिकथा' उपन्यास नही है, वह तो भारतीय जन की आत्मकथा है।"

पटना में 'परती : परिकथा' का प्रकाशनोत्सव शनिवार, 28 सितम्बर, 1957 को शाम छह बजे सिन्हा लाइब्रेरी के हॉल मे मनाया गया। इसमे सैकडो लेखक, सपादक, प्रकाशक तथा नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति मौजूद थे। इनमे प्रमुख व्यक्तियो के नाम हैं—आचार्य शिवपूजन सहाय, रामधारीसिंह दिनकर, ननिनविलोचन शर्मा, छविनाथ पाण्डेय, नवलकिशोर गौड़, हरिमोहन झा, अनूपलाल मण्डल, नर्मदेश्वर प्रसाद, बी.एन. माधव, प्रफुल्लचद्र ओझा मुक्त, कामताप्रसाद सिह 'काम', देवेद्रप्रसाद सिह, सुशीला कोइराला (बी.पी. कोइराला की पत्नी), रामदयाल पाडेय, हिमांशु श्रीवास्तव, शिवचद्र शर्मा, सुमन वाजपेयी, रंजन सूरिदेव आदि। आचार्य शिवपूजन सहाय ने रेणु को आशीर्वाद दिया। नलिनविलोचन शर्मा ने रेणु के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देते हुए बधाई दी। दिनकरजी ने इस अवसर पर कहा कि 'परती : परिकथा' मे लेखक ने जो ईमानदारी बरती है, उससे अधिक ईमानदारी की किसी लेखक से उम्मीद भी नही की जा सकती। उन्होने बताया कि उपन्यास ने उन्हे इतना पकड़ा कि ज़रा भी फुर्सत पाने पर वे उसे पढ़ने बैठ जाते थे।

'परती : परिकथा' के छपते ही संपूर्ण हिंदी जगत मे इसकी धूम मच गई। वरिष्ठ कथाकार यशपाल ने 'परती : परिकथा' पढकर उन्हें एक लबा पत्र लिखा, जिसे धरोहर की तरह यहाँ उद्धृत किया जा रहा है : "(पुस्तक) आज दोपहर तक पूरी पढ़ डाली है। इस बीच दाँत-दर्द ने भी कुछ शिथिलता की और 'परती : परिकथा' ने दाँत-दर्द सहने में सहायता दी।

"बीसियों लोगो ने प्रशसा की होगी। जिसे नहीं रुची, उसकी समझ कुछ और

ही ढंग की होगी। मुझे तो आरम्भ से अन्त तक इतना सुन्दर लगा कि प्रशंसा में अत्युक्ति का भय ही नहीं रहता। अभिव्यक्ति के लिए ध्वनियों का प्रयोग, मुहावरों के लटके और भाषा की सरलता की क्या प्रशंसा करूँ ! भाषा का चुनाव वस्तु-वर्णन के बिना भी एक विशेष वातावरण और चेतना जगाए रखता है। सहज भाषा के लिए क्या कहूँ, वह आपकी अपनी भाषा और आपके रक्त और स्वभाव में रमी हुई है। जैसे भाव उसी में से उद्भूत हैं ! हम इस भाषा को लाख सीखें, परन्तु आपका सहज कौशल हमारी पहुँच में कैसे आएगा ? प्रयोजन को भी आपने ऐसे बैठाया है कि प्ले-बैक के जोड़ की अनुभूति या उखड़न कहीं नहीं हो पाती। शब्द और अर्थ दोनो ही ढंग का हास्य भी, पुलाव में काली मिर्च की तरह अंदाज से बिखरा हुआ है, आद्यंत चमक बनी रहती है।"

एक ओर इस कृति को हिंदी के महानतम उपन्यास के रूप में स्वीकारा जा रहा था, तो दूसरी ओर इसकी प्रतिकूल समीक्षाएँ भी आईं। श्रीपत राय, जिन्होंने 'मैला आँचल' की बेहद प्रशंसा की थी, 'कल्पना' के फरवरी, 1958 के अक में 'उपन्यास के मौलिक आग्रह तथा 'परती:परिकथा' लेख लिखकर इसे उपन्यास तक मानने से इनकार किया। बालकृष्ण राव, शम्भुनाथ सिंह आदि ने भी श्रीपत राय की तरह ही इसकी प्रतिकूल समीक्षा की और इसे उपन्यास के शास्त्रीय निकष पर एक असफल कृति माना। यहाँ तक कि आचार्य नलिनविलोचन शर्मा ने 'साहित्य' के जनवरी, 1958 के अंक में 'परती : परिकथा' को खारिज करते हुए लेख लिखा। इसी क्रम में डॉ. रामविलास शर्मा ने 1958 में ही रेणु के 'मैला आँचल' और 'परती : परिकथा' पर तीखा आलोचनात्मक लेख लिखा, जो उनकी पुस्तक 'आस्था और सौंदर्य' में संकलित है। रेणु के प्रति इन आलोचकों के इस रवैये पर यशपालजी बेहद क्षुब्ध हुए और उन्होंने 'नया पथ' के मार्च, 1958 के अंक में एक आक्रामक लेख लिखा–'आलोचना का उल्कापात : 'परती : परिकथा' की अद्भुत समीक्षाएँ।'

'मैला आँचल' और 'परती : परिकथा' स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य की बहुत बड़ी उपलब्धि हैं। हिंदी में अब तक इन दोनों उपन्यासों के समान विस्तृत परिदृश्य के बहुत कम उपन्यास लिखे गए। इन दोनों कथा कृतियों पर अनेक खारिज करनेवाले तीखे लेख लिखे जा चुके हैं, फिर भी इनका महत्त्व आज तक बना हुआ है और अब भी ये उपन्यास प्रमुख कथा-समीक्षकों के सामने नई दृष्टि से मूल्यांकन के लिए आकर्षित करते हैं। इन दोनों उपन्यासों ने हिंदी साहित्य में 'आचलिक उपन्यास' नामक एक नयी विधा का जन्म दिया और आंचलिकता पर उस समय से अब तक एक लंबी बहस जारी है।

'मैला आँचल' और 'परती : परिकथा' धरती-पुत्रों की सिर्फ व्यग्र-कथा प्रस्तुत करनेवाली कथा-कृतियाँ ही नहीं हैं, न सिर्फ भूमि-संघर्षों को उजागर करनेवाली कथा-कृतियाँ। इनमें सिर्फ लोक-संस्कृति की रगारंग अर्थ-छवियाँ ही नहीं हैं। इन उपन्यासों में भारत की राष्ट्रीय समस्याओं, बदलते हुए राजनीतिक, सामाजिक मूल्यों

पर गहरी नजर है। ये उपन्यास आंचलिक होते हुए भी देश की वास्तविक छवि को प्रस्तुत करनेवाले हैं। हिंदी में ऐसी कथा-कृतियाँ बहुत कम हैं, जो अपनी स्थानीयता या स्थानीय रंग के कारण याद तो की ही जाती हों, साथ ही जो अपनी संकेतात्मकता या मूल आशय में इतनी परिव्याप्ति भी लिए हुए हों।

भारत यायावर

बोकारो स्टील सिटी

अनुक्रम

मैला आँचल

बाबूजी के लिए

प्रथम संस्करण की भूमिका

यह है 'मैला आँचल', एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है; इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा-रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में सन्थाल परगना और पच्छिम में मिथिला की सीमा-रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को—पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर—इस उपन्यास-कथा का क्षेत्र बनाया है।

इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी—मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।

कथा की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ खड़ा हुआ हूँ; पता नहीं अच्छा किया या बुरा। जो भी हो, अपनी निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।

पटना
9 अगस्त, 1954

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

प्रथम खंड

एक

गाँव में यह खबर तुरत बिजली की तरह फैल गई—मलेटरी ने बहरा चेथरू को गिरफ्फ कर लिया है और लोबिनलाल के कुएँ से बाल्टी खोलकर ले गए हैं।

यद्यपि 1942 के जन-आंदोलन के समय इस गाँव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न आंदोलन की लहर ही इस गाँव तक पहुँच पाई थी, किंतु जिले-भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहाँ तक जरूर पहुँची थी।

मोगलाही टीशन पर गोरा सिपाही एक मोदी की बेटी को उठाकर ले गए। इसी को लेकर सिख और गोरे सिपाहियों में लड़ाई हो गई, गोली चल गई। ढोलबाजा में पूरे गाँव को घेरकर आग लगा दी गई, एक बच्चा भी बचकर नहीं निकल सका। मुसहरू के ससुर ने अपनी आँखों से देखा था—ठीक आग में भूनी गई मछलियों की तरह लोगों की लाशें महीनों पड़ी रहीं, कौआ भी नहीं खा सकता था; मलेटरी का पहरा था। मुसहरू के ससुर का भतीजा फारबिस साहब का खानसामा है; वह झूठ बोलेगा ? पूरे चार साल के बाद अब इस गाँव की बारी आई है। दुहाई माँ काली ! दुहाई बाबा नरसिंह !

यह सब गुअरटोली के बलिया की बदौलत हो रहा है।

बिरंचीदास ने हिम्मत से काम लिया; आँगन से निकलकर चारों ओर देखा और मालिकटोला की ओर दौड़ा। मालिक तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद भी सुनकर घबड़ा गए, "लोबिन बाल्टी कहाँ से लाया था ? जरूर चोरी की बाल्टी होगी ! साले सब चोरी करेंगे और गाँव को बदनाम करेंगे।"

मालिकटोले से यह खबर राजपूतटोली पहुँची—कायस्थटोली के विश्वनाथप्रसाद और ततमाटोली के बिरंची को मलेटरी के सिपाही पकड़कर ले गए हैं। ठाकुर

रामकिरपालसिंघ बोले, "इस तरह तहसीलदारी का मजा निकलेगा। जरूर जमींदार का लगान वसूल कर खा गया है। अब बड़े-घर की हवा खाएँगे बच्चू !"

यादवटोली के लोगों ने खबर सुनते ही बलिया उर्फ बालदेव को गिरफ्तार कर लिया। भागने न पाए ! रस्सी से बाँधो ! पहले ही कहा था कि यह एक दिन सारे गाँव को बँधवाएगा।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद एक सेर घी, पाँच सेर बासमती चावल और एक खस्सी लेकर डरते हुए मलेटरीवालों को डाली पहुँचाने चले, बिरंची को साथ ले लिया। बोले, "हिसाब लगाकर देख लो, पूरे पचास रुपए का सामान है। यह रुपया एक हफ्ता के अंदर ही अपने टोले और लोबिन के टोले से वसूल कर जमा कर देना। तुम लोगों के चलते…।"

मलेटरीवाले कोठी के बगीचे में हैं। बगीचे के पास पहुँचकर विश्वनाथप्रसाद ने जेब से पलिया टोपी निकालकर पहन ली और कालीथान की ओर मुँह करके माँ काली को प्रणाम किया, "दुहाई माँ काली !"

बगीचे में पहुँचकर तहसीलदार साहब ने देखा, दो बैलगाड़ियाँ हैं; बैल घास खा रहे हैं; मलेटरीवाले जमीन पर कंबल बिछाकर बैठे हैं। ऐं…। मूढ़ी फाँक रहे हैं ! और बहरा चेथरू भी कंबल पर ही बैठकर मूढ़ी फाँक रहा है !

"सलाम हुजूर !"

बिरंची ने सामान सिर से नीचे उतारकर झुककर सलाम किया, "सलाम सरकार !"… बकरा भी मेमिया उठा।

"आ रे, यह क्या है ? आप कौन हैं ?" एक मोटे साहब ने पूछा।

"हुजूर, ताबेदार राजा पारबंगा का तहसीलदार है, मीनापुर सर्किल का।"

"ओ, आप तहसीलदार हैं ! ठीक बात ! हम लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का आदमी है। यहाँ पर एक मैलेरिया सेंटर बनेगा। ऊपर से हुकुम आया है, यहीं बागान का जमीन में। मार्टिन साहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को यह जमीन बहुत पहले दे दिया।"

तहसीलदार साहब फिर एक बार सलाम करके बैठ गए। बिरंची हाथ जोड़े खड़ा रहा।

राजपूतटोली के रामकिरपालसिंघ जब कोठी के बगीचे में पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि बगीचे के पच्छिमवाली जमीन की पैमाइश हो रही है; कुछ लोग जरीब की कड़ी खींच रहे हैं, टोपावाले एक साहब तहसीलदार साहब से हँस-हँसकर बातचीत कर रहे हैं।

और अंत में यादवटोली के लोग बालदेव के हाथ और कमर में रस्सी बाँधकर हो-हल्ला मचाते हुए आए। उसकी कमर में बँधी हुई रस्सी को सभी पकड़े हुए हैं। फिरारी सुराजी को पकड़नेवालों को सरकार बहादुर की ओर से इनाम मिलता है–एक हजार, दो हजार, पाँच हजार ! लेकिन साहब तो देखते ही गुस्सा हो गए, "क्या बात है ? इसको क्यों बाँधकर लाया है ? इसने क्या किया है ?"

"हुजूर; यह सुराजी बालदेव गोप है। दो साल जेहल खटकर आया है; इस

गाँव का नही, चन्ननपट्टी का है। यहाँ मौसी के यहाँ आया है। खध्धड़ पहनता है, जैहिन्न बोलता है।"

"तो इसको बाँधा है काहे ?"

"अरे बालदेव !" साहब के किरानी ने बालदेव को पहचान लिया, "अरे, यह तो बालदेव है। सर, यह रामकृष्ण कांग्रेस आश्रम का कार्यकर्त्ता है; बड़ा बहादुर है।"

यादवो के बधन से मुक्ति पाकर बालदेव ने साहब और किरानी को बारी-बारी से 'जाय हिद' किया। साहब ने हँसते हुए कहा, "आपका गाँव मे मलेरिया सेंटर खुल रहा है। खूब बडा डाक्टर आ रहा है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का तरफ से मकान बनेगा। लेकिन बाकी काम तो आप लोगो की मदद से ही होगा।"

तहसीलदार साहब ने जमीदार खाते और नक्शे को तजवीज करके कहा, "हुजूर, जमीन एक एकड दस डिसमिल है।"

ठाकुर रामकिरपालसिघ को अब तक साहब को सलाम करने का भी मौका नही मिला था। विश्वनाथप्रसाद ने बाजी मार ली। जिदगी मे पहली बार सिघ जी को अपनी निरक्षरता पर ग्लानि हुई। सचमुच विद्या की महिमा बडी है। लेकिन भगवान ने शरीर दिया है, उच्चजाति मे जन्म दिया है। इसी के बल पर बहुत बाबू-बबुआन, हाकिम-हुक्काम और अमला-फैला से हेलमेल हुआ, जान-पहचान हुई। मौका पाते ही सलाम करके जोर से बोले, "जै हा सरकार की ! हुजूर, पबली को भलाय के वास्ते इतना दूर से कष्ट उठाकर आया है, और हम लोग हुजूर, का कोई सेवा नही कर सके। गुसाई जी रमैन मे कहिन है—'धन्य भाग प्रभु दरसन दीन्हा ।' हुजूर, सेवक का नाम रामकिरपालसिघ वल्द गरीबनेवाजसिंघ, मोत्तफा, जात राजपूत, मोकाम गढबुदेल राजपुताना, हाल मोकाम मेरीगज।"

"सिह जी, हमारा कोई सेवा नही चाहिए। सेवा के वास्ते मैलेरिया सेटर खुल रहा है। इसी मे मदद कीजिए सब मिलकर। यही सबसे बडा सेवा है।" साहब हँसते हुए बाले।

यादवटोली के लोग एक-एक कर, नजर बचाकर, नौ-दो-ग्यारह हो चुके थे। उन्हे डर था कि बालदेव को बाँधकर लानेवालो का साहब चालान करेगे।

साहब ने चलते समय कहा, 'सात दिन के अदर ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का मिस्तिरी लोग आवेगा। आप लोग बॉस, खढ, सुतली और दूसरा दरकारी चीज का इतजाम कर देगा। तहसीलदार साहब, आप हैं, बालदेवप्रसाद तो देश का सेवक ही है, और सिह जी हैं। आप सब लोग मिलकर मदद कीजिए।"

सबने हाथ जोडकर, गर्दन झुकाकर स्वीकार किया। साहब दलबल के साथ चले। खस्सी मेमिया रहा था। बालदेव गाड़ी के पीछे-पीछे गॉव के बाहर तक गया।

बालदेव ने लौटकर लोगो से कहा, "डिस्टीबोट के बगाली आफसियरबाबू थे परफुल्लो बनरजी, और उनका किरानी जीत्तनबाबू, पहले काग्रेस आफिस के किरानी थे।"

दो

पूर्णिया जिले में ऐसे बहुत-से गाँव और कस्बे हैं, जो आज भी अपने नामों पर नीलहे साहबों का बोझ ढो रहे हैं। वीरान जंगलों और मैदानों में नील कोठी के खंडहर राही-बटोहियों को आज भी नीलयुग की भूली हुई कहानियाँ याद दिला देते हैं।··· गौना करके नई दुलहिन के साथ घर लौटता हुआ नौजवान अपने गाड़ीवान से कहता है-"जरा यहाँ गाड़ी धीरे-धीरे हाँकना, कनिया[1] साहेब की कोठी देखेगी। ··· यही है मकै साहब की कोठी।·· वहाँ है नील महने का हौज !"

नई दुलहिन ओहार के पर्दे को हटाकर, घूँघट को जरा पीछे खिसकाकर झाँकती है-झरबेर के घने जंगलो के बीच ईंट-पत्थरों का ढेर ! कोठी कहाँ है ?

दूल्हे का चेहरा गर्व से भर जाता है-अर्थात् हमारे गाँव के पास साहेब की कोठी थी; यहाँ साहेब-मेम रहते थे।

गंगा-स्नान करके लौटते हुए, तीर्थयात्रियों की बैलगाडियाँ यहाँ कुछ देर रुक जाती हैं। गाडियों से युवतियाँ और बच्चे निकलकर, डरते-डरते. खंडहरों के पास जाते हैं। बूढ़ियाँ जंगलों में जंगली जड़ी-बूटी खोजती हैं।

ऐसा ही एक गाँव है मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब, बूढ़ी कोशी को पार करके जाना होता है। बूढ़ी कोशी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जगल है। इस अंचल के लोग इसे 'नवाबी तड़बन्ना' कहते हैं। किस नवाब ने इस ताड़ के वन को लगाया था, कहना कठिन है, लेकिन वैशाख से लेकर आषाढ़ तक आस-पास के हलवाहे-चरवाहे भी इस वन में नवाबी करते हैं। तीन आने लबनी ताड़ी, रोक साला मोटरगाड़ी ! अर्थात् ताड़ी के नशे में आदमी मोटरगाड़ी को भी रास्ता समझता है। तड़बन्ना के बाद ही एक बड़ा मैदान है, जो नेपाल की तराई से शुरू होकर गंगाजी के किनारे खत्म हुआ है। लाखों एकड जमीन ! वध्या धरती का विशाल अंचल। इसमें दूब भी नहीं पनपती है। बीच-बीच मे बालूचर और कहीं कहीं बेर की झाडियाँ। कोस-भर मैदान पार करने के बाद, पूरब की ओर काला जंगल दिखाई पडता है; वही है मेरीगंज कोठी।

आज से करीब पैंतीस साल पहले, जिस दिन डब्लू. जी. मार्टिन ने इस गाँव में कोठी की नीव डाली, आस-पास के गाँवो में ढोल बजवाकर ऐलान कर दिया-आज से इस गाँव का नाम हुआ मेरीगंज। मेरी मार्टिन की नई दुलहिन थी जो कलकत्ता मे रहती थी। कहा जाता है कि एक बार एक किसान के मुँह से गलती से इस गाँव का पुराना नाम निकल गया था। बस, और जाता कहाँ है ? साहब ने पचास कोडे लगाए थे. गिनकर। इस गाँव का पुराना नाम अब किसी को याद नहीं अथवा

---

1 दुलहिन।

आज भी नाम लेने मे एक अज्ञात आशंका होती है। कौन जाने ! गाँव का नाम बदलकर, रौतहट स्टेशन से मेरीगज तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से सडक बनवाकर और गाँव में पोस्ट ऑफिस खुलवाने के बाद मार्टिन साहब अपनी नवविवाहिता मेम मेरी को लाने के लिए कलकत्ता गए। गॉव की सबसे बूढी भैरो की मॉ यदि आज रहती तो सुना देती--"अहा हा ! परी की तरह थी साहेब की मेम, इद्रासन की परी की तरह।'

लेकिन मार्टिन साहब का आयोजन अधूरा साबित हुआ। मेरीगंज पहुँचने के ठीक एक सप्ताह बाद ही जब मेरी को 'जडैया' ने धर दबाया तो मार्टिन ने महसूस किया कि पोस्ट ऑफिस से पहले यहाँ एक डिस्पेंसरी खुलवाना जरूरी था। कुनैन की टिकिया से जब तीसरे दिन भी मेरी का बुखार नही उतरा तो मार्टिन ने अपने घोडे को रौतहट की ओर दौडाया। रौतहट स्टेशन पहुँचने पर मालूम हुआ कि पूर्णिया जानेवाली गाडी दस मिनट पहले चली गई थी। मार्टिन ने बगैर कुछ सोचे घोडे को पूर्णिया की ओर मोड दिया। रौतहट से पूर्णिया बारह कोस है। मेरीगज मे किसी से पूछिए, वह आपको मार्टिन के पखराज घोडे की यह कहानी विस्तारपूर्वक सुना देगा जिस समय मार्टिन पुरैनिया के सिविलसर्जन के बँगले पर पहुँचा, पुरैनिया टीशन पर गाडी पहुँची भी नही थी।

किंतु मार्टिन का पखराज घोडा और सिविलसर्जन साहब की हवागाडी जब तक मेरीगज पहुँचे, मेरी को मलेरिया निगल चुका था। ट्यूबवेल के पास गढ़े मे घुसकर, घुँघराले रेशमी बालोंवाले सिर पर कीचड थोपते-थोपते मेरी मर गई थी।'

मेरी की लाश को दफनाने के बाद ही मार्टिन पूर्णिया गया, सिविलसर्जन, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन और हेल्थ ऑफिसर से मिला; एक छोटी-सी डिस्पेंसरी की मजूरी के लिए जमीन आसमान एक करता रहा। डिस्पेसरी के लिए अपनी जमीन रजिस्ट्री कर दी। अधिकारियो ने आश्वासन दिलाया–अगले साल जरूर डिस्पेंसरी खुल जाएगी। ठीक उसी समय जर्मनी के वैज्ञानिकों ने एक चुटकी मे नीलयुग का अत कर दिया। कोयले से नील बनाने की वैज्ञानिक विधि का प्रयोग सफल हुआ और नीलहे साहबो की कोठियों की दीवारें अररा कर गिर पडी। साहबो ने कोठियाँ बेचकर जमींदारियाँ खरीदनी शुरू की। बहुतो ने व्यापार आरभ किया। मार्टिन की दुनिया तो पहले ही उजड चुकी थी, दिमाग भी बिगड़ गया। बगल मे रद्दी कागजों का पुलिंदा दबाए हुए पगला मार्टिन दिन-भर पूर्णिया कचहरी मे चक्कर काटता फिरता था, हर मिलनेवाले से कहता था, "गवर्नमेंट ने एक डिस्पेंसरी का हुक्म दे दिया है, अगले साल खुल जाएगा।" कहते है कि पटना और दिल्ली की दौड़-धूप के बाद एक बार वह बहुत उदास होकर मेरीगज लौटा; मेरी की कब्र पर लेटकर सारा दिन रोता रहा-'डार्लिंग ! डाक्टर नही आएगा।' इसके बाद उसका पागलपन इतना बढ़ गया कि अधिकारियो ने उसे कॉके[1] भेज दिया और

1 राँची स्थित पागलखाना।

काँके के पागलखाने में ही उसकी मृत्यु हो गई।

कोठी के बगीचे में, अंग्रेजी फूलों के जंगल में आज भी मेरी की कब्र मौजूद है। कोठी की इमारत ढह गई है, नील के हौज टूट-फूट गए हैं; पीपल, बबूल तथा अन्य जंगली पेड़ों का एक घना जंगल तैयार हो गया है। लोग उधर दिन में भी नहीं जाते। कलमी आम का बाग तहसीलदार साहब ने बंदोबस्त में ले लिया है, इसलिए आम का बाग साफ-सुथरा है। किंतु, कोठी के जंगल में तो दिन में भी सियार बोलता है। लोग उसे भुतहा जंगल कहते हैं। ततमाटोले का नंदलाल एक बार ईंट लाने गया; ईंट में हाथ लगाते ही खत्म हो गया था। जंगल से एक प्रेतनी निकली और नंदलाल को कोड़े से पीटने लगी—साँप के कोड़े से। नंदलाल वहीं ढेर हो गया। बगुले की तरह उजली प्रेतनी !

मेरीगंज एक बड़ा गाँव है; बारहो बरन के लोग रहते हैं। गाँव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं। बरसात में कमला भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े-बड़े गढ़ो में पानी जमा रहता है—मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गढ़े ! पौष-पूर्णिमा के दिन इन्हीं गढ़ों में कोशी-स्नान के लिए सुबह से शाम तक भीड़ लगी रहती है। रौतहट स्टेशन से हलवाई और परचून की दूकाने आती है। कमला मैया के महातम के बारे में गाँव के लोग तरह-तरह की कहानियाँ कहते हैं। गाँव मे किसी के यहाँ शादी-ब्याह या श्राद्ध का भोज हो, गृहपति स्नान करके, गले में कपड़े का खूँट डालकर, कमला मैया को पान-सुपारी से निमंत्रित करता था। इसके बाद पानी में हिलोरें उठने लगती थीं, ठीक जैसे नील के हौज में नील मथा जा रहा हो। फिर किनारे पर चाँदी के थालों, कटोरो और गिलासों का ढेर लग जाता था। गृहपति सभी बर्तनों को गिनकर ले जाता था और भोज समाप्त होते ही कमला मैया को लौटा आता था। लेकिन सभी की नीयत एक जैसी नहीं होती। एक बार एक गृहपति ने कुछ थालियाँ और कटोरे चुरा रखे। बस, उसी दिन से मैया ने बर्तनदान बंद कर दिया और उस गृहपति का तो वंश ही खत्म हो गया—एकदम निर्मूल ! उस बिगड़ी नीयतवाले गृहपति के बारे में गाँव में दो रायें हैं—राजपूतटोली के लोगों का कहना है, वह कायस्थटोली का गृहपति था; कायस्थटोलीवाले कहते हैं, वह राजपूत था।

राजपूतों और कायस्थों में पुश्तैनी मन-मुटाव और झगड़े होते आए हैं। ब्राह्मणो की संख्या कम है, इसलिए वे हमेशा तीसरी शक्ति का कर्तव्य पूरा करते रहे हैं। अभी कुछ दिनो से यादवों के दल ने भी जोर पकड़ा है। जनेऊ लेने के बाद भी राजपूतों ने यदुवंशी क्षत्रिय को मान्यता नहीं दी। इसके विपरीत समय-समय पर यदुवंशियों के क्षत्रित्व को वे व्यंग्यविद्रूप के बाणों से उभारते रहे। एक बार यदुवंशियों ने खुली चुनौती दे दी। बात तूल पकड़ने लगी थी। दोनों ओर से लोग लगे हुए थे। यदुवंशियों को कायस्थटोली के मुखिया तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद मल्लिक ने विश्वास दिलाया, मामले-मुकदमे की पूरी पैरवी करेंगे। जमींदारी कचहरी के वकील बसंतोबाबू कह रहे थे, "यादवों को सरकार ने राजपूत मान लिया है।

इसका मुकदमा तो धूमधाम से चलेगा। खुद वकील साहब कह रहे थे।"

राजपूतो को ब्राह्मणटोली के पडितो ने समझाया–"जब-जब धर्म की हानि हुई है, राजपूतो ने ही उनकी रक्षा की है। घोर कलिकाल उपस्थित है, राजपूत अपनी वीरता से धर्म को बचा ले।" लेकिन बात बढी नही। न जाने कैसे यह धर्मयुद्ध रुक गया। ब्राह्मणटोली के बूढ ज्योतिषीजी आज भी कहते हैं–"यह राजपूतो के चुप रहने का फल है कि आज चारो ओर, हर जाति के लोग गले मे जनेऊ लटकाए फिर रहे हैं।–भूमफोड क्षत्री तो कभी नही सुना था। शिव हो ! शिव हो !"

अब गॉव मे तीन प्रमुख दल हैं कायस्थ, राजपूत और यादव। ब्राह्मण लोग अभी भी तृतीय शक्ति हैं। गॉव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार इन्ही तीनो दलो मे बँटे हुए है।

कायस्थटोली के मुखिया विश्वनाथप्रसाद मल्लिक, राज पारबगा के तहसीलदार है। तहसीलदारी उनके खानदान मे तीन पुस्त से चली आ रही है। इसी के बल पर तहसीलदार साहब आज एक हजार बीघे जमीन के एक बडे काश्तकार हैं। कायस्थटोली को गाव की अन्य जाति के लोग मालिकटोला कहते हैं। राजपूतटोली के लोग कहते है–कैथटोली।

ठाकुर रामकिरपालसिंघ राजपूतटोली के मुखिया हैं। इनके दादा महारानी चपावती की स्टेट के सिपाही थे और विश्वनाथप्रसाद के दादा तहसीलदार। कहते है कि जब महारानी चपावती और राजपारबगा मे दीवानी मुकदमा चल रहा था तो विश्वनाथप्रसाद के दादा राज पारबगा स्टेट की ओर मिल गए थे। स्टेटवालो को महारानी के सारे गुप्त कागजात हाथ लग गए और महारानी मुकदमे मे हार गई। काशी जाने से पहले महारानी ने रामकिरपालसिंघ के नाम अपनी बची हुई तीन सौ बीघे जमीन की निरखा पढी कर दी थी। रामकिरपालसिंघ कहते हैं कि उनके दादा ने महारानी को एक बार डकैतो के हाथ से अकेले ही बचाया था, इसी के इनाम मे महारानी ने दानपत्तर लिख दिया था। कायस्थटोली के लोग राजपूतटोली को 'सिपैहियाटोली' कहते हैं।

यादवो का दल नया है। इनके मुखिया खेलावन यादव को दस बरस पहले तक लोगो ने भैस चराते देखा है। दूध-घी की बिक्री से जमाए हुए पैसे की बात जब चारो ओर बुरी तरह फैल गई तो खेलावन को बडी चिता हुई। महीनो तहसीलदार के यहाँ दौडते रहे, सर्किल मैनेजर को डाली चढाई, सिपाहियो को दूध-घी पिलाया और अत मे कमला के किनारे पचास बीघे जमीन की बदोबस्ती हो सकी। अब तो डेढ सौ बीघे की जोत है। बडा बेटा सकलदीप अररिया बैरगाछी मे नाना के घर पर रहकर, हाईस्कूल मे पढता है। खेलावनसिह यादव को लोग नया मातबर कहते हैं। लेकिन यादव-क्षत्रियटोली को अब 'गुअरटोली' कहने की हिम्मत कोई नही करता। यादवटोली मे बारहो मास शाम को अखाडा जमता है। चार बजे दिन से ही शोभन मोची ढोल पीटता रहता है–ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना ! ढोल

के हर ताल पर यादवटोली के बूढ़े-बच्चे-जवान डड-बैठक और पहलवानी के पैंतरे सीखते है।

सारे मेरीगज मे दस आदमी पढ़े-लिखे है–पढ़े-लिखे का मतलब हुआ अपना दस्तखत करने से लेकर तहसीलदारी करने तक की पढ़ाई। नए पढ़नेवालो की सख्या है पद्रह।

गॉव की मुख्य पैदावार है–धान, पाट और खेसारी। रब्बी की फसल भी कभी-कभी अच्छी हो जाती है।

तीन

डिस्टीबोट के मिस्तिरी लोग आए है। बालदेव के उत्साह का ठिकाना नही है। आफिसियरबाबू ने तहसीलदार साहब और रामकिरपालसिंघ के सामने ही कहा था–"आप तो देश के सेवक है।" सबो ने सुना था। दुनिया मे धन क्या है ? तहसीलदार साहब और सिघ जी के पास पैसा है, मगर जो इज्जत बालदेव की है, वे कहॉ पाएँगे ? यादवटोली के लोगो ने बालदेव से उसी दिन माफी मॉग ली थी, "बालदेव भाइ ! हम लोग मूरख ठहरे और तुम गियानी। हम कूप के बेग[1] है। तुम तो बहुत देश विदेश घूमे हो, बडे बडे लोगो के साथ रहे हो। हमारा कसूर माफ कर दो।"

उसी दिन से खेलावनसिघ यादव बालदेव को अपने यहॉ रहने के लिए आग्रह कर रहे है "जात का नाम, जात की इज्जत तो तुम्ही लोगो के हाथ मे है। तुम कोइ पराए हो ? तुम्हारी मौसी मेरी चाची होगी। हम तुम भाई भाई ठहरे।"

खेलावन की ड्रगवाली खुद आकर बालदेव की बुढ़िया मौसी से कह गई, "घर ऑगन सब आपका ही है। जिस घर मे एक बूढ़ी नही, उस घर का भी कोई ठिकाना रहता है ! मै अकेली क्या करूँ, दूध घी देखूँ कि गोबर-गुहाल ?"

बालदेव की बूढ़िया मौसी की दुनिया ही बदल गई। कल तक घर-घर घूमकर कुटाई पिसाई करती फिरती थी और आज गॉव की मालकिन आकर उसे सारे घर की मालकिन बना गई !

मिस्तिरी लोग आए है। बालदेव गॉव के टोले मे घूमता रहा। "डिस्टीबोट से मिस्तिरी जी लोग आए है। कल से काम शुरू हो जाना चाहिए। मलेरिया

1 मेढक।

बोखार मच्छड़ काटने से होता है। मगर कुनैन खाने से, जितना भी मच्छड़ काटे, कुछ नहीं होगा।" ततमाटोली (तंत्रिमाक्षत्रियटोली) में मँहगूदास के घूर के पास, बालदेव की बातो को लोग बड़े अचरज से सुन रहे हैं। आँगन की औरतें भी घूँघट काढ़े, टट्टी के पास खड़ी होकर सुन रही हैं, "अब रात-भर गोइँठा जलाकर धुआँ करने का झंझट नहीं, काटे जितना मच्छड़ !"

पोलियाटोली, तंत्रिमा छत्रीटोली, यदुवंशी छत्रीटोली, गहलोत छत्रीटोली, कुर्म छत्रीटोली, अमात्य ब्राह्मणटोली, धनुकधारी छत्रीटोली, कुशवाहा छत्रीटोली, और रैदासटोली के लोगों ने बचन दिया, "सात दिन तक कोई काम नहीं करेंगे। मालिक लोगों से कहिए—हल-फाल, कोड़-कमान बंद रखें ! करना ही क्या है ? एक इसपिताल का घर, एक डागडरबाबू का घर, एक भनसाघर[1] और एक घर फालतू। सात दिनों में ही सब काम गैट हो जाएगा।"

धनुकधारीटोली के तनुकलाल ने एक सवाल पैदा कर दिया, "लेकिन हलफाल, काम-काज बंद करने से मालिक लोग मजूरी तो नहीं देंगे ! एक-दो दिन की बात रहे तो किसी तरह खेपा भी जा सकता है। सात दिन तक बिना मजूरी के ? यह जरा मुश्किल मालूम होता है ! ततमा और दुसाधटोली के लोगों की बात जाने दीजिए। उनकी औरते हैं, सुबह से दोपहरिया तक कमला में कादो-पानी हिडकर एक-दो सेर गैची मछली निकाल लाएँगी। चार सेर धान का हिस्सा लग जाएगा। बाबू लोगो के पुआल के टालो[2] के पास धरती खरोंचकर, चूहे के माँदो को कोड़कर भी कुछ धान जमा कर लेंगी। नहीं तो कोठी के जंगल से खमरआलू उखाड़ लाएँगी। रौतहट हाट मे कटिहार मिल के कुल्ली लोग चार आने सेर खमरआलू हाथोहाथ उठा लेते है। लेकिन, और लोगों के लिए तो बड़ा मुश्किल है।"

बालदेव ने निराश होकर पूछा, "अब क्या किया जाए ?"

तनुकलाल के पास समस्या का समाधान पहले से ही मौजूद था। बोला, "एक उपाय है, यदि मालिक लोग आधे दिन की मजूरी दे दें तो काम चल जाए।"

तनुकलाल के इस प्रस्ताव पर विचार करता हुआ बालदेव मालिकटोला की ओर चला। विश्वनाथ बाबू तो मान लेंगे, सिंघ जी के बारे में कुछ कहना मुश्किल है। सिपैहियाटोली का बिरजूसिंघ कल कह रहा था। "सिंघ जी इसपिताल मे कोई मदद नही करेंगे। कहते थे, इसपिताल का मालिक-मोक्तयार है विश्वनाथ और बलदेवा !"

ब्राह्मणटोली से तो कुछ उम्मीद करनी ही बेकार है। जिस दिन से अस्पताल होने की बात उन लोगों ने सुनी है, दिन-रात डाक्टर और अंग्रेजी दवा के खिलाफ तरह-तरह की कहानियाँ सुनाते फिर रहे हैं। [illegible]ज्ञी जी का विश्वास है कि डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं, सुई भोंककर देह में जहर दे देते है, आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है; हैजा के समय कूपों में दवा डाल देते हैं, गाँव-का-गाँव

1. रसोईघर, 2 घास की ढेरी

हैजा से समाप्त हो जाता है। कालाबुखार का नाम पहले लोगो ने कभी सुना था ? पूरब मुलुक कामरू कमिच्छा हासाम[1] से कालाबुखारवालो का लहू शीशी मे बद करके यही लोग ले आए थे। आजकल घर-घर काला बुखार फैल गया है। इसके अलावा, बिलैती दवा मे गाय का खून मिला रहता है।

भगमान भगत की दुकान के पास ही विश्वनाथबाबू से भेट हो गई। तनुकलाल के प्रस्ताव को सुनते ही विश्वनाथबाबू चिढ गए। " धानुकटोली का तनुकलाल ? अपने को बडा काबिल समझता है। हर बात मे वह एक-न-एक 'लेकिन' जरूर लगाएगा। तुम भी तो बालदेव पूरे 'बमभोलानाथ' हो। उसमे पूछा नही कि अस्पताल से सिर्फ मालिक लोगो की भलाई होगी क्या ?"

भगमान भगत हमेशा सुपारी चबाता रहता है। बोलने के समय ऐसा लगता है कि वह बात को भी चबा रहा है, "अरे ! ई तो दस आदमी के काम बा, जे बा-से एकरा मे सब के मिल के मतत[2] करे के चाही। का हो सीप्रसाद ?"

भगत की दुकान पर यो भी हमेशा चार-पॉच आदमी बैठे रहते हैं। विश्वनाथबाबू की आवाज सुनकर दो-चार व्यक्ति और जमा हो गए। बूढे सुमरितदास को लोग लबडा समझते हैं। मगर वह समय पर पते की बात बता जाता है। आते ही बोला, "अरे तहसीलदार, आप समझे नही। तनुकलाल अपने मन से नही बोला है, इसमे कनकशन है। जरा इधर एकात मे आइए तो बतावे।" तहसीलदार और सुमरितदास भगत की दुकान से जरा दूर जाकर बतियाने लगे। दुकान मे बैठे हुए किसी ने कुढकर कहा "बूढा लुच्चा इसी को कहते हैं—हर बात मे एकाती !"

भगत ने ऑख टीपकर मना कर दिया—जोर से मत बोलो, बालदेव है।

सुमरितदास से प्रायबिट करने के बाद तहसीलदार का मिजाज बदल गया। आकर बोले, "अच्छा तो बालदेव, तुम जाकर ततमाटोली और पोलियाटोलेवालो से कहो, मैंने पचास रुपया माफ कर दिया। उस दिन आफसियरबाबू को जो डाली दी गई थी सो तो तुम्हारे ही सामने की बात है। बिरची भी था। अब जरा सिपैहियाटोला जाओ, देखो वे लोग क्या कहते हैं। कोई कुछ करे, हमारा जो धरम है हम करेगे ?"

बालदेव जब सिघजी के दरवाजे पर पहुँचा तो सिघजी घोडे पर सवार हो चुके थे। शायद कटिहार जा रहे है। जात्रा का टोकना अच्छा नही, इसलिए बालदेव चुप ही रहा। सिघजी के दरवाजे पर पॉच-सात आदमी बैठे हुए थे। किसी न बालदेव को बैठने के लिए भी नही कहा। बालदेव ने सबो को एक ही साथ 'जाय हिद' कहा। शिवशक्करसिघ के बेटे हरगौरी ने बालदेव से पूछा, "कहिए बालदेव लीडर, क्या समाचार है ?"

"आप लोगो की किरपा से सब अच्छा है। बाबूसाहेब, आप स्कूल से कब आए ?" बालदेव पास के पडे हुए खाली मोढे पर बैठते हुए पूछा।

1 आसाम 2 मदद

"सुना कि आपकी लीडरी खूब चल रही है।"

"बाबूसाहेब, गरीब आदमी भी भला लीडर होता है ! हम तो आप लोगों का सेवक है।"

"आप तो लीडर ही हो गए। तो आजकल कांग्रेस आफिस का चौका-बर्तन कौन करता है।" हरगौरी अचानक उबल पड़ा। "अरे भाई, सभी काशी चले जाओगे ? पत्तल चाटने के लिए भी तो कुछ लोग रह जाओ। जेल क्या गए, पंडित जमाहिरलाल हो गए। कांग्रेस आफिस में भोलटियरी करते थे, अब अंधों में काना बनकर यहाँ लीडरी छाँटने आया है। स्वयंसेवक न घोड़ा का दुम !"

"बाबूसाहेब, मुँह खराब क्यों करते हैं ? आप विदमान हैं और हम जाहिल। हमसे जो कसूर हुआ है कहिए।"

"उठ जाओ दरवाजे पर से। बेईमान कहीं के ! डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से अस्पताल की मंजूरी हुई है, रुपया मिला है। सब चुपचाप मारकर अब बेगार खोज रहे हैं। चोर सब !··· उठ जाओ दरवाजे पर से !"

हरगौरी तमतमाकर बालदेव को धक्का देने के लिए उठा। बैठे हुए लोगों ने 'हाँ-हाँ' करके हरगौरी को पकड़ लिया। बालदेव चुपचाप बैठा रहा, "मारिए, यदि मारने से ही आपका गुस्सा ठंडा हो तो मारिए।"

हल्ला-गुल्ला सुनकर भीड़ जम गई। हरगौरी का लड़कपन किसी को पसंद नहीं। शिवशक्करसिंघ भी सुनकर दुखित हुए, "लीडरी करे या भोलटियरी, तुमको किस बात की चिढ़ लगी ? तुम्हारा क्या बिगाड़ा था··· अच्छा बालदेव, बुरा मत मानना। हँसी-दिल्लगी में उड़ा दो।··· छोटा भाई है।"

"शिवशक्कर मौसा, बाबूसाहब गाली-गलौज करके मारने चले। मगर हम कोई लाजमान[1] बात मुँह से निकालते हैं ? पूछिए सबों से। महतमाजी कहिन हैं···"

नीम के पेड़ का कागा कायँ-कायँ कर उठा।

हरगौरी गुस्से से थर-थर काँप रहा है।··· ये लोग भी अजीब हैं। एक घंटा पहले बालदेव की टोकरी-भर शिकायत कर रहे थे, लीडरी सटकाने की बात कह रहे थे, और अभी उसका बाप भी बालदेव की खुशामद कर रहा था ! ग्वाला होकर लीडरी··· ?

"गुअरटोलीवाले हँसेरी[2] लेकर आ रहे हैं", एक लड़का दौड़ता-हाँफता आकर खबर दे गया। ऐं !··· गाँव के उत्तर में शोरगुल हो रहा है। खूँटे में बँधे हुए बैलों ने चौकन्ने होकर कान खड़े किए। गाँव के बाहर चरती हुई बकरियाँ दौड़ती-मिमियाती हुई गाँव में भागी आ रही हैं। कुत्ते भूँकने लगे।··· बात क्या हुई ?

"अरे बेटा रे ! गौरी बेटा रे !··· आँगन में आ जा बेटा रे ! गुअरटोली का कलिया पगला गया है !" हरगौरी की माँ छाती पीटती और रोती हुई आई, और हरगौरी को घसीटकर आँगन में ले गई। बच्चे रोने लगे।

1. अपशब्द, 2. बलवा करनेवाला दल।

"अरे, बात क्या हुई ?"

"भाला निकालो छत्तर !"

"हमारी गगाजीवाली लाठी कहाँ है ?"

"तीर निकाल रे !"

"अरे बात क्या है ? हँसेरी क्यो ?"

कौन किसका जवाब देता है ! किसे फुरसत है ! मारे गाँव मे कुहराम मचा हुआ है। हरगौरी की माँ अब शिवशक्करसिघ को आँगन मे बुला रही है। चिल्ला रही है, "गुअरटोली का रौदी बूढा आया है। गुअरटोली मे बूढे बच्चे खौल रहे हैं कि हरगौरी ने बालदेव को जूते से मारा है। कुकुरू का बेटा कलचरना काली किरिया[1] खाया है–हरगौरी का खून पीएँगे। आँगन मे आ जाओ गौरी के बाबू !"

"ओ !" बालदव दौडा, "आप लोग अकुलाइए मत। हम देखते है। नासमझ लोग हैं, समझा देते है।"

"एक बार बोलिए प्रेम से महाबीरजी की जै !"

"जे ! जाय जाय !"

बालदेव को देखते ही यादव सेना खुशी से जयजयकार कर उठी। "बोलिए एक बार प्रेम से गन्ही महतमा की जै ! जाय जाय। ऐ ! शाती ! शाती ! चुप रहो बालदेव जी क्या कहते है, सुनो ! "

"पियारे भाइयो, आप लोग जो अडोलन किए हैं, वह अच्छा नही। अपना कान देखे बिना कौआ के पीछे दौडना अच्छा नही। आप ही सोचिए, क्या यह समझदार आदमी का काम है ! आप लोग हिसावाद करने जा रहे थे। इसके लिए हमको अनसन करना होगा। भारथमाता का, गाँधी जी का यह रास्ता नही !"

सचमुच गियानी आदमी हैं बालदेव जी। अडोलन, अनसन, और और क्या ? हिसाबात ! किसी ने समझा ! गियानी की बोली समझना सभी के बूते की बात नही।

"अनसन क्या करेगे ?"

"अट-सट ?"

कलिया कहता था–उपास करेगे बालदेव जी। कलिया को बुलाकर बालदेव जी कहते थे–कालीचरन, तुम बहुत बहादुर लौजमान हो। लेकिन जोस मे होस भी रखना चाहिए। हम खुस हैं, लेकिन उपास करेगे।

"सचमुच यदि उस दिन बालदेव जी ठीक समय पर नही आ जाते तो कालीचरन इस पार चाहे उस पार कर देता। अरे, हरगौरिया ! कल का छौंडा इस्कूल मे चार अच्छर पढ क्या लिया है लाटसाहेब हो गया है।"

"अरे, पढता क्या है, दाढी-मोच हो गया है और अपना सकलदीप से दो गिलास[2] नीचे पढता है। एकदम फेलियर है। इस साल भी फैल हो गया है। उसका बाप

1 कसम। 2 क्लास।

मास्टर को घूस देने गया था। मास्टर गुस्साकर बोला—भागो, नही तो तुमको भी फैल कर देगे।"

"अरे पढेगा क्या ! सुनते हैं कि लालबाग मेला मे लाल पढना मे पास हो गया है।"

बात बनाने मे दुलरिया से कोई जीत नही सकता। "लाल पढना नही समझे ? हा-हा हा-हा खी-खी ! लाल पढना !"

—ढाक-ढिन्ना, ढाक-ढिन्ना !

"चलो रे, अखाडा का ढोल बोल रहा है।"

चार

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

महथ साहेब सदा ब्रह्म वेला मे उठते हैं। "हो रामदास। आसन त्यागो जी ! लक्ष्मी को जगाओ ! सतगुरु हो ! ये कभी जो बिना जगाए जागे। रामदास ! हो जी रामदास !"

रामदास ऑखे मलते हुए उठता है, बाहर निकलकर आसमान मे भुरूकुआ[1] को देखता है, फिर रामडडी[2] को खोजता है। अभी तो बहुत रात बाकी है। महथ साहब आज बहुत पहले ही जग गए हैं "माघ का जाडा तो बाघ को भी ठढा कर देता है। सरकार, रात तो अभी बहुत बाकी है।"

"रात बहुत बाकी है, तो क्या हुआ ? एक दिन जरा सवेरे ही सही। सोओ मत। धूनी मे लकडी डाल दो। कोठारिन को जगा दो। सतगुरु साहेब ने सपना दिया है।"

लछमी उठी। उठकर महथसाहब के आसन के पास आई। हाथ जोडकर 'साहेब बदगी' किया और ऑखे मलते हुए कुएँ की ओर चली गई।

लछमी के रग-रग मे अब साधु-सुभाव, आचार-विचार और नियम-धरम रम गया है। साहेब की दया है। और यह रामदास ? गुरु जाने, इसकी मति-गति कब बदलेगी ! बचपन से ही साधु की सगति मे रहकर भी जो नही सुधरा, वह अब कब सुधरेगा ? भक्ति-भाव ना जाने भोदू पेट भरे से काम ! बस, दो ही गुण हैं—सेवा अच्छी तरह करता है और खजडी बजाने मे बेजोड है। "अरे हो

1 भोर का तारा। 2 तीन-तरवा।

रामदास ! फिर सो गए क्या ?···गंगाजली में जल भर दो।"

जागहु सतगुरुसाहेब, सेवक तुम्हरे दरस को आया जी
जागहु सतगुरुसाहेब··· ।
··· डिम-डिमिक-डिमिक, डिम-डिमिक-डिमिक !
भोर भयो भव भरम भयानक भानु देखकर भागा जी,
ज्ञान नैन साहेब के खुलि गयो, थर-थर काँपत माया जी ।
जागहु सतगुरुसाहेब···

माघ के ठिठुरते हुए भोर को मठ से प्रातकी[1] की निर्गुणवाणी निकलकर शून्य में मँडरा रही है। बूढ़े महंथ साहब पहला पद कहते हैं। दंतहीन मुँह से प्रातकी के शब्द स्पष्ट नहीं निकलते। गले की थरथराहट सुर में बाधा डालती है, बेसुरा राग निकलता है। दमे से जर्जर शरीर में दम कहाँ !·· लेकिन लछमी सब सँभाल लेती है। पाँच साल पहले प्रातकी गाने के समय उसकी आँखों की पलकें नीद से लदी रहती थीं। महंथ साहब जब गीत की दूसरी पंक्ति 'भोर भयो भव भरम' गाते थे तो वह बहुत मुश्किल से अपनी हँसी रोक पाती थी–भोर भयो भव भरम ! लेकिन अब नहीं। उसकी बोली मीठी है। उसका सुर मीठा है। वह तन्मय होकर गाती है। उसकी सुरीली तान के साथ महंथ साहब के बेसुरे और मोटे राग का मेल नहीं खाता, फिर भी संगीत की निर्मल धारा में कही विरोध नहीं उत्पन्न होता। महंथ साहब का मोटा राग लछमी के कोमल लय को सहारा देता है। शहनाई के साथ सुर देनेवाली शहनाई की तरह–भों ओं ओं ओं ओं· !

रामदास की खँजड़ी की गमक निःशब्द वातावरण में तरंगें पैदा करती है। खँजड़ी में लगी हुई छोटी-छोटी झुनुकियों की हल्की झुनुक ! मानो किसी का पालतू हिरन नाच रहा हो, दौड़ रहा हो ! डिम डिमिक ! रुन झुनुक-झुनुक !

प्रातकी के बाद बीजक 'शबद'। "रामुरा झीं झीं जंतर बाजे। करचर्ण बिहुना नाचे। रामुरा झीं-झीं ।"

और तब सत्संग ! रोज इसी वेला में सत्संग होता है। प्रातकी सुनते ही मठ के अन्य साधु-संन्यासी, अतिथि-अभ्यागत तथा अधिकारी-भंडारी वगैरह जग जाते हैं। प्रातकी और बीजक में कोई सम्मिलित हो या नहीं, सत्संग में भाग लेना अनिवार्य है। मठ का भंडारी इसी समय रोज की हाजिरी लेता है। इस समय जो अनुपस्थित रहे उसकी चिप्पी[2] बंद हो जाती है। सत्संग में महंथ साहब साधुओं और शिष्यों को उपदेश देते हैं, प्रश्नों के उत्तर देते हैं, अज्ञान अंधकार को अपनी वाणी से दूर करते हैं।

···सतगुरु सेवा सत्य करि माने सत्य विचार ।
सेवक चेला सत्य सो जो गुरु वचन निहार ।।···

1 प्रभाती। 2. राशन।

फिर सातचक्र परिचय !

प्रथम चक्र आधार कहावे गुद स्थल के माँही
द्वितीय चक्र अधिष्ठान कहिए लिंगस्थल के माँही।
तृतीय चक्र मणिपूरण जानो नाभी स्थल···

सत्सग समाप्त होते ही भंडारी उपस्थित 'मूर्तियों' की गिनती लेता है–"रानीगंज के तीन गो मुरती तो आज सात दिन से धरना देले हथुन। जाए ला कहै हियेन्ह, त कहै हथिन बलु सरकार से आज्ञाँ ले ली है। बेला मठ के एक मुरती के बुखार लगलैन्ह है, दोकान में सबुरदाना न भेटाई है ।"

कोठारिन लक्ष्मी दासिन का रोज इसी समय बक-बक झक-झक बहुत बुरा लगता है, सत्संग से प्राप्त की हुई मन की पवित्रता नष्ट हो जाती है। लेकिन क्या करे ? मठ के इस नियम को यदि जरा भी ढीला कर दिया जाए तो साधु-वैरागी एक महीने में ही मठ को उजाड देगे। बाहर के साधुओं के लिए चार ही दिन रहने का नियम है, मगर । "रानीगज के मूर्तियों को खुद सोचना चाहिए। यहाँ कोई कुबेर का भंडार तो नहीं ।"

"लक्ष्मी," महंथ साहब कहते हैं, "आज-भर रहने दो। भंडारी, जितने मुरती आज हैं, सबों का बालभोग[1] और प्रसाद[2] आज लगेगा। सभी मुरती बैठ जाइए। आज सतगुरु साहेब सपना दीहिन हैं।"

धूनी में फिर सूखी लकड़ियो के छोटे-छोटे टुकड़े डाल दिए गए। सभी मुरती फिर धूनी के चारो ओर अर्धवृत्ताकार पंक्ति में बैठ गए। लछमी की महंथ साहब के आसन के पास ही लगती है । सभी महंथ साहब की ओर उत्सुकता से देख रहे हैं।

"आज मध्य रात्रि में, सतगुरु साहेब सपने में मेरे आसन के पास आए। हम जल्दी से उठके 'साहेब बदगी' किया। हमको 'दयाभाव' देके साहेब कहिन–सेवादास, तुम नेत्रहीन हो, लेकिन तुम्हारे अतर के नैनो का जोत बड़ा विलच्छन्न है। हम भेख बदल करके आए और तूँ पहचान लिया ? तुम्हारे ज्ञान नेत्र मे दिब्बजोत है। सो तुम्हारे गाँव में परमारथ का कारज हो रहा है और तुमको मालूम नही ? गाँधी तो मेरा ही भगत है। गाँधी इस गाँव में इसपिताल खोलकर परमारथ का कारज कर रहा है। तुम सारे गाँव को एक भंडारा दे दो। कहके साहब अंतरधियान हो गए। हमारी निद्रा भंग हो गई। सतगुरु के विरह में चित्त चचल हो गया। विरह अगिन तक कैसे बूझे, गृहवन अधकार नही सूझे। आखिर, सतगुरु आज्ञा शब्द विचारकर चित्त को शांत किया।"

महंथ साहब के सपने की बात तुरत गाँव-भर में फैल गई। बालदेव-हरगौरी सवाद और यादव सेना के अचानक हमले से गाँव की दलबंदी को नया जीवन

1 जलपान। 2 भात।

प्रदान कर दिया था। जोतखी की राय है, "यादव लोग बार-बार लाठी-भाला दिखाते हैं, राजपूतो के लिए यह डूब मरने की बात है। फौजदारी मे यतलाय[1]/देकर इन लोगो का मोचिलका करवा लिया जाए। लेकिन सिघजी थाना-फौजदारी से घबराते हैं। बात-बात मे गाली और डेग-डेग पर डाली ! कानूनी-कचहरी की शरण जाना तो अपनी कमजोरी को जाहिर करना है। समय आने पर बदला ले लिया जाएगा। अकेले यादवो की बात रहती तो कोई बात नही थी, इसमे कायस्त समाया हुआ है। मरा हुआ कायस्त भी बिसाता है। फिर, वह बदमाशी हरगौरी की ही है। मेरे दरवाजे पर किसी को उठ जाने के लिए कहना, मेरे दरवाजे पर किसी को मारने के लिए उठना, यह तो अच्छी बात नही।'

यादवटोली मे अब दोपहर से ही ढोल बजने लगता है–ढाक-ढिन्ना ढाक-ढिन्ना ! शोभन मोची को एक नया गमछा और नई गजी मिली है। कालीथान के बड के पास गाय-भैंस बथान करके दोपहर से ही कुश्ती खेलने लगते हैं यादव सतान। बालदेव जी ने जिस दिन अनसन किया था, शाम को खेलावन यादव के दरवाजे पर कीर्तन हुआ था। बालदेव जी का सिखाया हुआ सुराजी कीर्तन "धन-धन गाधी जी महराज, ऐसा चरखा चलानेवाले कीर्तन के बाद बालदेव जी ने भैंस का कच्चा दूध पीकर व्रत तोडा था। कहते थे, अब हिसाबात करने से फिर अनसन करेगे, अब के दो दिनो का ! सुराजी कीर्तन, लहमन का बेटा सुनरा खूब गाता है। बालदेव जी जबकि फिर उपवास करेगे तो सुनना। अभी और सीख रहा है। सिपैहियाटोला मे तो अब दिन मे ही उल्लू बोलता है। तहसीलदार कह रहे थे–राजपूतो की सिट्टी गुम हो गई है। हल्दी बोला[2] दिया है। कालीचरन बहादुर है !

इसपिताल के सभी घर बनकर तैयार हो गए हैं। सिर्फ मिट्टी साटना बाकी है। बिरसा माँझी ने कहा है–सथालटोली की सभी औरते आकर मिट्टी लगा देगी आज। अलबत्त मिट्टी लगाती हैं सथालिन ! पोखता मकान भी मात ! अगले सनिचर को डागडरबाबू ने बालदेव जी से दसखत करा लिया है। भैंसचरमनबाबू[3] जरूर यादव ही होगे। किसी दूसरी जाति का ऐसा नाम क्यो होगा–भैंसचरमनबाबू ! तहसीलदार के यहाँ जाकर देखो–खुरसी, ब्रीच, बडे-बडे वक्स मे दवा, बाल्टी, कठौत, लोटा। पानी का कल गाडा जाएगा, जैसे रोतहट के मेला मे गडता है।

सनिच्चर को ही महथ साहेब का भडारा है–पूडी जिलेबी का भोज। सारे गाँव के औरत-मरद बूढे बच्चे–और अमीर-गरीब को महथ साहेब खिलावेगे। सपनौती हुआ है।

यादवटोली का किसनू कहता है, "अधा महत अपने पापो का प्राच्छित कर रहा है। बाबाजी होकर जो रखेलिन रखता है, वह बाबाजी नही। ऊपर बाबाजी भीतर दगाबाजी ! क्या कहते हो ? रखेलिन नही, दासिन है ? किसी और को सिखाना। पाँच बरस तक मठ मे नौकरी किया है; हमसे बढकर और कौन जानेगा

1 इत्तला 2 वित्त कर देना। 3 वाइस चेयरमैन।

मठ की बात ? और कोई देखे या नहीं देखे, ऊपर परमेसर तो है। महंथ जब लछमी दासिन को मठ पर लाया था तो वह एकदम अबोध थी, एकदम नादान। एक ही कपडा पहनती थी। कहाँ वह बच्ची और कहाँ पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध ! रोज रात में लछमी रोती थी–ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाए। हम तो सो नहीं सकते थे। उठकर भैसों को खोलकर चराने चले जाते थे। रोज सुबह लछमी दूध लेने बथान पर आती थी, उसकी आँखें कदम के फूल की तरह फूली रहती थीं। रात में रोने का कारण पूछने पर चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगती थी ठीक गाय की बाछी की तरह, जिसकी माँ मर गई हो··· ! वैसा ही चंडाल है यह रमदसवा। वह साला भी अंधा होगा, देख लेना।·· महंथ एक बार चार दिन के लिए पुरैनिया गया था। हमने सोचा कि चार रात तो लछमी चैन से सो सकेगी। ले बलैया। बाघ के मुँह से छूटी तो बिलार के मुँह में गई। उसके बाद लछमी ऐसी बीमार पड़ी कि मरते-मरते बची। पाप भला छिपे ? रामदास को मिरगी आने लगी और महंथ सेवादास सूरदास हो गए। एकदम चौपट !·· हमारा तीन साल का दरमाहा बाकी रखा है। भंडारा करता है ! हम उन लोगो को साधू नहीं समझते हैं।"

महंथ सेवादास इस इलाके के ज्ञानी साधु समझे जाते थे–सभी सास्तर-पुरान के पंडित ! मठ पर आकर लोग भूख-प्यास भूल जाते थे। बड़ी पवित्र जगह समझी जाती थी। लेकिन जब महंथ दासिन को लाया, लोगों की राय बदल गई। बसुमतिया मठ के महंथ से इसी दासिन को लेकर कितने लड़ाई-झगड़े और मुकदमे हुए। बसुमतिया का महंथ कहता था, लछमी दासिन का बाप हमारा गुरु-भाई था इसलिए बाप के मरने के वाद उस पर मेरा हक है। सेवादास की दलील थी, लछमी पर हमारा अधिकार है। अंत मे लछमी कानूनन सेवादास की ही हुई। सेवादास के वकील साहब ने समझाकर कहा था–महंथ साहब ! इस लड़की को पढ़ा-लिखाकर इसका शादी करवा दीजिएगा। महंथ साहब ने वकीलसाहब को विश्वास दिलाया था–वकीलसाहब, लछमी हमारी बेटी की तरह रहेगी लेकिन आदमी की मति को क्या कहा जाए ! मठ पर लाते ही किशोरी लछमी को उन्होंने अपनी दासी बना लिया। लछमी अब जवान हुई है, लेकिन लछमी के जवान होने से पहले ही महंत सेवादास की आँखे अपनी ज्योति खो चुकी थीं ! पता नहीं, लछमी की जवानी को देखकर उसकी क्या हालत होती ! अब तो महंथ सेवादास को बहुत लोग प्रणाम-बदगी भी नहीं करते।· धर्म-भ्रष्ट हो गया है। बगुलाभगत है। ब्रह्मचारी नही, व्यभिचारी है।

पूड़ी-जिलेबी और दही-चीनी के भंडारे की घोषणा के बाद जनमत बदल रहा है। कैसा भी हो, आखिर साधु है ! किसने आज तक इतना बड़ा भोज किया ! तहसीलदार ने अपने बाप के श्राद्ध में जाति-बिरादरीवालों को भात और गैर जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था। सिंघजी ने अपनी सास के श्राद्ध में अपनी जाति के लोगों को पूरी-मिठाई और अन्य जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया

था। खेलावन के यहाँ, पिछले साल, माँ के श्राद्ध मे जैसा भोज हुआ सो तो सबो ने देखा ही है। फिर, सारे गाँव के लोगो को, औरत-मरद-बच्चो को, आज तक किसने खिलाया है ? चीनी मिलती नही। भगमान भगत ने कहा है कि बिलेक मे एक बोरा चीनी का दाम है एक नमरी[1]। चरमन चीनी—दो नमरी !

तत्रिमा, गहलोत और पोलियाटोली के अधिकाश लोगो ने पूडी-जिलेबी कभी चखी भी नही। बिरची एक बार राज की गवाही देने के लिए कचहरी गया तो तहसीलदार ने पूडी-जिलेबी खिलाई थी। गाँव मे, न जाने कैसे, यह हल्ला हो गया कि बिरची ने तहसीलदार का जूठा खाया है। जनेऊ देने के लिए जाति के पडित जी आए थे। बिरची के सिर पर सात घटे तक घैला-सुपाडी रखने की सजा दी गई थी—पाँच सुपारी पर घैला भर पानी ! जरा भी घैला हिला, एक बूँद भी पानी गिरा कि ऊपर से झाड की मार ! तहसीलदार साहब क्या कर सकते हैं ! जाति-बिरादरी का मामला है, इसमे वे कुछ नहीं बोल सकते। आखिर पाँच रुपैया जुरमाना और जाति के पडित जी को एक जोडा धोती देकर बिरची ने अपना हुक्का-पानी खुलवाया था। पूडी-जिलेबी का स्वाद याद नही !

"जीवनदास !"

"बालदेव जी आए हैं। बनगी बालदेवबाबू !"

"बनगी नही, जाय हिद बोलो, जाय हिद ! हाँ जी, इस टोले म कितने लोग हैं, हिसाब करके बताओ तो। औरत-मरद, बच्चो का भी जोडना। क्या गिनना नही जानते ? बिरची कहाँ है ?"

बालदेव जी घर-घर घूमकर मर्दुमशुमारी कर रहे है। बडा झझट का काम है। सिर्फ पोलियाटोले मे सात कोडी[2] चार नही चार कोडी सात, ततमाटोली मे पूरे पाँच कोडी, दुसाधटोली मे दो कोडी, कोयरीटोले मे छः कोडी तीन। यादवटोली का हिसाब कालीचरन कर रहा है। भगवान जाने, सिपैहियाटोली के लोग इसमे भी मीनमेख निकालकर बखेडा न खडा कर दे। क्या ठिकाना है ! बाभना ने तो साफ इनकार कर दिया है। यदि बाभनो के लिए अलग प्रबध न हुआ तो सरब सघटन मे नही खाएँगे। बाभन भोजन ही नही हुआ तो फिर भोज क्या ! महथ जी से कहना होगा। बाभन है ही कितने, सब मिलाकर दस घर।

महथ साहब ने सब सुनकर कहा, "सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! बाभन लोगो का अलग इतजाम कर दो बालदेवबाबू ! इसमे हर्ज ही क्या है ! नही हो, तो उन लोगो का प्रबध मठ पर ही कर दो।"

इसी समय लछमी दासिन ने आकर खबर दी, "सिपैहियाटोला के लोग भी नही खाएँगे। हिबरनसिघ का बेटा आकर कह गया है, ग्वाला लोगो के साथ एक पगत मे नही खाएँगे। हम लोगो के गाँव का आटा-घी-चीनी अलग दे दिया जाए, हम लोग अलग बनवा लेगे।"

1 सौ रुपए का नोट। 2 एक कोडी मे बीस सख्या होती है।

"सतगुरु हो ! यह तो अच्छा बखेड़ा खड़ा हुआ। अब यादव लोग कहेंगे कि धानुक लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खाएँगे।"

"हिबरनसिंघ के बेटे ने तो यह भी कहा कि बालदेव यदि इंतजामकार रहेगा तो महंथ साहेब का भंडारा भंडुल होगा।"

"गुरु हो ! गुरु हो !"

"तो महंथ साहेब, हमारे रहने से लोग विरोध करते हैं तो हम खुसी-खुसी..."

"वाह रे ! यह भी कोई बात है ! महंथ साहेब, मैं कह देती हूँ, यदि बालदेव जी को छोड़कर और किसी को प्रबंध करने का भार दिया तो समझ लीजिए कि भंडारा चौपट हुआ। मैं इस गाँव के एक-एक आदमी को पहचानती हूँ।"

बालदेव ने पहली बार लछमी की ओर गरदन उठाकर देखने की हिम्मत की। निगाहें ऊपर उठीं और लछमी की बड़ी-बड़ी आँखों में वह खो गया। आँखों में समा गया बालदेव शायद।

पाँच

मठ पर गाँव-भर के मुखिया लोगों की पचायत बैठी है। बालदेव जी को आज फिर 'भाखन' देने का मौका मिला है। लेकिन गाँव की पंचायत क्या है, पुरैनिया कचहरी के रामू मोदी की दुकान है। सभी अपनी बात पहले कहना चाहते हैं। सब एक ही साथ बोलना चाहते हैं। बातें बढ़ती जाती हैं और असल सवाल बातों के बवंडर में दबा जा रहा है। सिंघ जी चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, "उस दिन यदि हम घर में रहते तो खून की नदी बह जाती।" कालीचरन चुप रहनेवाला नहीं है, "वाह रे ! दरवाजे पर एक भले आदमी को बेइज्जत करना 'इंसान' आदमी का काम है ?" तहसीलदार साहब कहते है, "अस्पताल तो सबों की भलाई के लिए बन रहा है। इससे सिर्फ हमारा ही फायदा नहीं होगा। ओवरसियरबाबू कह गए थे कि तहसीलदार साहब जरा मदद दीजिएगा। हम अपने मन से तो अगुआ नहीं बने हैं। तुम्ही बताओ खिलावन भाई !'

बूढ़े जोतखी जी भविष्यवाणी करते हैं, "कोई माने या नहीं माने, हम कहते हैं कि एक दिन इस गाँव में गिद्ध-कौआ उड़ेगा। लक्षण अच्छे नहीं हैं। गाँव का ग्रह बिगड़ा हुआ है। किसी दिन इस गाँव में खून होगा, खून ! पुलिस-दारोगा गाँव की गली-गली में घूमेगा। और यह इसपिताल ? अभी तो नहीं मालूम होगा।

जब्र कुएँ मे दवा डालकर गॉव मे हैजा फैलाएगा तो समझना। शिव हो ! शिव हो !"

बालदेव भाखन के लिए उठना चाहता था कि लछमी हाथ जोडकर खडी हो गई, "पंच परमेश्वर !"

मानो बिजली की बत्ती जल उठी। सन्नाटा छा गया। सफेद मलमल की साडी के खूँट को गले मे डालकर लछमी हाथ जोडे खडी है, "पच परमेश्वर !"

"लछमी", महथ साहब शून्य मे हाथ फैलाकर टटोलते हुए कहते है, "लछमी तुम चुप रहो।"

लछमी रुकी नही, कहती गई, "जोतखी जी ठीक कहते हैं। गॉव के ग्रह अच्छे नही हैं। जहॉ छोटी-मोटी बातो को लेकर, इस तरह झगडे होते हैं, जहॉ आपस मे मेल-मिलाप नही, वहॉ जो कुछ न हो वह थोडा है। गॉव के मुखिया लोग ही इसके लिए सबसे बडे दोखी हैं। सतगुरुसाहेब कहिन है-'जहॉ मेल तहॉ सरग है।' मानुस जन्म बार-बार नही मिलता। मानुस जन्म पाकर परमारथ के बदले सोआरथ देखे तो इससे बढकर क्या पाप हो सकता है ? परमारथ मे जो 'विघिन' डालते हैं वे मानुस नही। आप लोग तो सास्तर-पुरान पढे है, जग्ग भग करनेवालो को पुरान मे क्या कहा है, सो तो जानते ही हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि सब कोई भेदभाव तेयाग के, एक होकर के परमारथ कारज मे सहयोग दीजिए। आप लोग तो जानते हैं-"परमारथ कारज देह धरो यह मानुस जन्म अकारथ जाए।' बस हाथ जोडकर पच परमेश्वर से बिनै है, झगडा तेयागकर मेल बढाइए। सतगुरु साहेब गॉव का मगल करेगे। आगे आप लोगो की मरजी।"

लछमी बैठ गई। उसका चेहरा तमतमा गया है, गाल लाल हो गए है और कपाल पर पसीने की बूँदे चमक रही हैं। पचायत मे सन्नाटा छाया हुआ है, मानो जादू फिर गया हो। बालदेव जी का भाखन देने का उत्साह कम हो गया है। वह दोहा कवित्त नही जानता, सास्तर-पुरान भी नही पढा है। जेहल मे चौधरी जी उसे पढाया करते थे। तीसरा भाग मे-'भारी बोझ नमक का लेकर एक गधा दुख पाता था' के पास ही वह पढ रहा था कि चौधरी जी की बदली हो गई। उसी दिन से उसकी पढाई भी बद हो गई। लेकिन वह जरूर भाखन देगा। उसने लछमी की ओर देखा तो और मानो नशे मे उठकर खडा हो गया, "पियारे भाइयो !"

"बोलिए एक बार प्रेम से गधी महतमा की जै !" यादवटोली के नौजवानो ने जयजयकार किया।

"पियारे भाइयो ! कोठारिन साहेब जितना बात बोलीं, सब ठीक है। लेकिन सबसे बडा दोखी हम हैं। हमारे कारन ही गॉव मे लडाई-झगडा हो रहा है। हम तो सबो का सेवक हैं। हम कोई बिदमान नही है, सास्तर-पुरान नही पढे है। गरीब आदमी हैं, मूरख है। मगर महतमा जी के परताप मे, भारथमाता के परताप से, मन मे सेवा-भाव जन्म हुआ और हम सेवक का बाना ले लिया। आप लोगो को तो मालूम है, जयमगलबाबू, जो मेनिस्टर हुए है, अपना दस्तखत भी नही जानते

हैं। बहुत छोटी जात का है। वह भी गरीब आदमी थे, मूरख थे। मगर मन में सेवा-भाव था और महतमा जी उसको मेनिस्टर चुन लिए। महतमा जी कहिन हैं–"बैस्नब जन तो उसे कहते हैं जो पीर पराई जानता है रे।" मोमेंट में जब गोरा मलेटरी हमको पकड़ा तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। पानी माँगते थे तो मुँह में पेसाब कर दिया था⋯"

बालदेव जी का 'भाखन' शुरू होते ही पचायत में फिर कानाफूसी शुरू हो गई थी। राजपूतटोली के लोग और भी जोर-जोर से बात करने लगे। बालदेव के भाखन के इस रोमांचक अंश ने ज़रा असर किया। मुँह में पेशाब करने की बात सुनते ही पंचायत में फिर सन्नाटा छा गया। बालदेव ने झट अपनी कमीज खोल ली, चारों ओर घूमकर पीठ दिखलाते हुए उसने अपना भाखन जारी रखा, "आप लोगों को विश्वास नहीं हो तो देख सकते हैं !"

"अरे बाप ! चीता-बाघ की तरह देह हो गया है⋯ धन्न हैं।"

"देखिए आप लोग", यादवटोली का एक नौजवान कहता है, "हम लोग गाँधी जी का जै करते हैं तो आप लोगो के कान में लाल मिर्च की बुकनी पड जाती है। देखिए !"

"अरे भाई ! यह सब महतमा जी का परताप है। कौन सह सकता है ? जब गुड गंजन सहे तो मिसरी नाम धराए।"

"⋯लेकिन पियारे भाइयो, हमने भारथमाता का नाम, महतमा जी का नाम लेना बंद नहीं किया। तब मलेटरी ने हमको नाखून में सूई गड़ाया, तिस पर भी हम इसबिस[1] नहीं किया। आखिर हारकर जेलखाना मे डाल दिया। आप लोग तो जानते ही हैं कि सुराजी लोग जेहल को क्या समझते हैं–'जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करने को जाएँगे।' मगर जेहल मे अँगरेज सरकार हम लोगो को तरह-तरह की तकलीफ देने लगा। भात मे कीड़ा मिला देता था, घास-पात का तरकारी देता था। बस, हम लोगें ने भी अनसन शुरू कर दिया। पियारे भाइयो ! पॉच दिन तक एकदम निरजला अनसन। उसके बाद कलकटर, इसपी, जज, सब आया। माँग पूरा कर दिया, खाने को दूध-हलुआ दिया। हम लोग बोले–दूध-हलुआ अपने बाल-बच्चों को खिलाओ, हम लोगो को बढ़िया चावल दो। सो पियारे भाइयो ! सेवा-वर्त जब हम लिया है तो इसको छोड़ नहीं सकते⋯। 'अंधी होकर पुलिस चलावे पर डडो का परिवाह नही !' आप लोग अपने गाँव में सेवा नही करने दीजिएगा, हम चन्ननपटी चले जाएँगे। वहाँ आसरम है, घर-घर चरखा-करघा चलता है। घर-घर में औरत-मरद पढ़ते हैं। महतमा जी, जमाहिरलाल, रजीन्नरबाबू और दूसरे बड़े-बड़े लीडर लोग साल में एक बार जरूर आते हैं। चौधरी जी हमको बार-बार खबर भेज देते हैं।⋯ बालदेव अपने गाँव में चले आओ। हम कहे कि चौधरी जी, आप हमारा गुरु हैं, आपका वचन हम नहीं काट सकते। लेकिन अपना

1 चूँ-चपड़

गांव ता उन्नति कर गया है। जो गाँव उन्नति नहीं किया है, हम वहीं सेवा करेंगे।

हम मेरीगंज की चन्ननपटी की तरह बनाना चाहते हैं। हम अपने से गाँव में झाड़ू देंगे, मैला साफ करेंगे। हम लोगों का सब किया हुआ है। महतमा जी खुद मैला साफ करते थे। जहाँ सफाई रहती है वहाँ का आदमी भी साफ रहता है। मन साफ रहता है। साहेब लोगों को देखिए, उनके देस का गाछ-बिरिछ भी साफ रहता है। कोठी के बगीचे में कलकटर के गाछ को देखिए, एकदम बगुला की तरह उजला है। लेकिन, आप लोग हमको नहीं चाहते हैं तो हम चले जाएँगे। आप लोगों को बिसबास नहीं हो, जो पढ़ना जानते हैं, इस चिट्ठी को पढ़ लीजिए कि इसमें क्या लिखा हुआ है। टैप में छापी किया हुआ है। दो साल पहले की चिट्ठी है।"

कौन पढ़ेगा ! बड़े मौके से सभी इसकुलिया अँगरेजिया लोग भी घर में ही हैं। पढ़ो जी कोई। खेलावन ने अपने लड़के सकलदीप से कहा, "जाओ पढ़ दो।" लेकिन वह बड़ा शरमीला है। "हरगौरी, पढ़ो जी !"

पासवानटोले के रामचंदर का भतीजा मेवालाल उठकर खड़ा हुआ, बालदेव के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ने लगा।

"जरा जोर से पढ़ो। गला साफ कर लो। थर-थर क्यों काँपते हो ?"

"सेवा मे, बालदेवसिंह जी। महाशय ! आपको विदित हो कि कस्तुरबा स्मारक निधि की एक अस्थाई कमेटी गठन करने के लिए कॉंग्रेसजनों की एक विशेष बैठक ता. 8-12-45 को पूर्णिया धर्मशाला में होगी। इस बैठक मे बिहार के भूतपूर्व प्रीमियर भी उपस्थित रहेंगे। इस महत्त्वपूर्ण बैठक में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। आपका, विश्वनाथ चौधरी।"

"अरथ भी समझा दो मेवालाल ! अरे नहीं, अरथ क्या समझाएगा ! टैप मे छापी किए हुए खत का अब अरथ समझाएगा ?"

"चौधरी जी भी बालदेव जी से राय लिए बिना कुछ नहीं करते हैं। यह अपने गॉव का भाग है कि बालदेव जी जैसा हीरा आदमी यहॉ आकर रहते हैं। अपना गाँव भी अब सुधर जाएगा जरूर । सुनो, सिंघ जी क्या कहते हैं।"

"बालदेव ! तुम यहाँ से चले जाओगे तो यह मेरीगंज गाँव का दुरभाग होगा, सरम की बात होगी। गाँव में तो लड़ाई-झगड़े लगे ही रहते हैं। दो हंडी एक जगह रहे तो ढनमन होना जरूरी है। तुम लोगो का काम है, गाँव में मेल-मिलाप बढ़ाना गाँव की उन्नति करना। इसमें जो बाधा डालता है, वह अधर्मी है। तुम लोग देश के सेवक हो। खल और कुटिल लोगों को सुमारग पर चलाना तुम्हीं लोगों का काम है। गोसाईं जी ने रमैन में पहले खल और कुटिल की ही वंदना की है। तुम गाँव से मत जाओ। तहसीलदार और हम तो छोटे-बड़े भाई हैं। बचपन के साथ खेले-कूदे, लड़े-झगड़े और फिर मिल गए। आओ जी तहसीलदार भाई, लोग तो हम लोगों के खानदान को बदनाम करते ही हैं कि कायस्थ और राजपूत ने मिलकर महारानी चंपावती के इस्टेट को ही पार कर दिया। अब हम लोग

एक बार फिर मिल जाएँ।" सिंघ जी ने अपना लंबा-चौड़ा वक्तव्य समाप्त करते हुए पंचायत में बैठे लोगों की ओर देखा।

पंचायत में जोर का ठहाका पड़ा। लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। एकदम 'बम भोलानाथ' हैं सिंघ जी ! मन में कोई सात-पाँच नहीं रखते। सादा दिल के आदमी हैं।

सिंघ जी ने तहसीलदार को हाथ पकड़कर उठा लिया। दोनों गले मिलने लगे।

"बोलिए एक बार प्रेम से गन्ही महतमा की जै !"

"जै ! जै !"

अब भंडारा जमेगा। दो दिन से तो ऐसा मालूम होता था कि लोगो के पत्तल मे परोसी हुई पूड़ी-जिलेबी अव गई तब गई। उस दिन कीर्तन और नाच करेंगे। अगमू चौकीदार क्या कहता था, महतमा जी का झडा पत्तखा नही उड़ाना होगा, ाह मार खाएगा अव। उसको कहो, अपने नाना दारोगा साहेब से पूछे कि राज किसका है। अनसन करने से लाट, हाकिम, कलट्टर मब डर जाता है।

सारी पंचायत मे दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनके ऊपर मेल-मिलाप की खुशी का उलटा असर हुआ है। खेलावन सिंह यादव को सिंघ ने जिस चालाकी से एक किनारे किया है. इसे कोई नही समझ पाए, लेकिन खेलावन ने सब समझ लिया। खेलावन की चर्चा भी नहीं की सिंघ ने। और इस तहसीलदार को तो देखो, तुरत गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। लड़ाई-झगडा यादवटोली से था और गले मिले तहसीलदार जी। खेलावन को सठबरसा[1] नहीं समझना। सब चालाकी समझते हैं। दुनिया की ज्ञान-गुदड़ी वघारता है बालदेव, मगर इतना भी समझ मे नहीं आया कि सिंघ तहसीलदार से क्यो मिल रहा है। मेल-मिलाप तो यादवटोली के मुखिया से होना चाहिए। सुराजी होने से क्या हुआ, जात मुभाव नहीं छूटते। इतना मान-आदर से अपने यहाँ रखते है, खिलाते-पिलाते हैं और समय पडने पर सव धान बाईस पसेरी !

जोतखी जी खेलावन के चेहरे को देखकर ही मवकुछ समझ लेते हैं। मोटी चमड़ी पर असर हुआ है ! "खेलावनबाबू, मकलदीप बबुआ की जन्मपत्री काशी जी से बनकर आ गई क्या ? जरा एक बार हम भी देखते। आज तक हम जो गणना किए है उसको काशी के पंडितो ने भी कभी नही काटा।"

"कल सुबह मे आइएगा जोतखी काका ! आप तो बहुत दिन से आए भी नहीं हैं। सकलदीप तो हायस्कूल में संसकिरत भी पढ़ता है। जरा आकर देखिएगा तो संसकिरत में उसका जेहन कैमा है ?"

ठीक दोपहर से पंचायत की बैठक शुरू हुई, शाम को खत्म हुई। बहुत दिन बाद गाँव-भर के लोग पंचायत मे बैठे थे। बहुत दिन बाद फिर मेल-मिलाप हुआ।

कल ही भंडारा है। सुबह से ही इसपिताल के सामने की जमीन को साफ

1 साठ वर्ष तक समझदारी का न आना।

करके जाफरा से घेरना होगा, शामियाना टाँगना होगा, सजाना होगा। हलवाई लोग सुबह से ही आ जाएँगे। आजकल दिन छोटा होता है। बिजै होते-होते शाम हो जाएगी। डॉक्टर साहब को लाने के लिए चार बैलगाड़ियाँ जाएँगी टीशन–भैंसचरमनबाबू ने बालदेव से कहा है। कल भोर को ही इसपिताल में सब-कोई जमा होंगे; काम का बँटवारा होगा। इतने बड़े भोज को सँभालना खेल नहीं।

सभी बारी-बारी से महंथ साहब को 'साहेब-बंदगी' करके विदा हुए। बालदेव जी को महंथ साहब ने रोक लिया है। "बालदेव बाबू, तुम जरा ठहर जाना। कल फिर समय नहीं मिलेगा। अभी एक बार हिसाब-किताब कर लेना अच्छा होगा। थोड़ी देर बैठ के बीजक बाँचो, हम डोलडाल[1] से हो आएँ। कहाँ हो रामदास ? गंगासागर में जल भर दो !"

बालदेव धुनी के पास बैठकर बीजक के पन्ने उलटता है–

...बीजक बतावे बित्त को जो बित्त गुप्ते होय,
शब्द बतावे जीवको बूझे विरला कोय।।

लछमी लालटेन जलाकर सामने रख गई। अक्षर स्पष्ट हो गए–"संतो, सारे जग बौराने।" लछमी के शरीर से एक खास तरह की सुगंध निकलती है। पचायत में लछमी बालदेव के पास ही बैठी थी। बालदेव को रामनगर मेला के दुर्गा मदिर की तरह गंध लगती है–मनोहर सुगध ! पवित्र गंध ! · औरतों की देह से तो हल्दी, लहसुन, प्याज और घाम की गंध निकलती है !

छह

बालदेव जी को गत में नींद नहीं आती है।

मठ से लौटने में देर हो गई थी। लौटकर सुना, खेलावन भैया की तबियत खराब है; आँगन में सोये हैं। यदि कोई आँगन में सोया रहे तो समझ लेना चाहिए कि तबियत खराब हुई है, बुखार हुआ है या सरदी लगी है अथवा सिरदर्द कर रहा है। जिसको आँगनवाली[2] ही नही वह आँगन में क्यो सोएगा ? आँगन मे सोने का अर्थ है आँगनवाली के हाथों की सेवा प्राप्त करना। खाने के समय भौजी से मालूम हुआ, पेट में वाय हो गया है। कड़वा तेल लगाकर पेट ससारते समय

1. नित्य क्रिया। 2. पत्नी।

गों-गों बोलता था।

भौजी भी बहुत अनमनी थी। और दिनों की तरह बैठकर बातें नहीं की भौजी ने। भौजी बोरसी[1] के पास बैठकर हुक्का पीती रहती थी, बालदेव जेल की गप सुनाता रहता। बालदेव जी आज पंचायत की गप भौजी को सुनाते, लेकिन आज गप जमाने का लच्छन नहीं देखकर बालदेव जी सोने चले आए।

··· नींद नहीं आती है। जेल का बी. टी. कंबल आज बड़ा गड़ रहा है। खद्दर की धोती मैली हो जाने पर बहुत ठंडी हो जाती है।··· बार-बार लछमी दासिन की याद आती है। आते समय कह रही थी–आज यहीं परसाद पा लीजिए बालदेव जी ! ··· परसाद ! लछमी के शरीर की सुगंध ! ·· आज माँ की भी याद आती है। गाँव के लोग बालदेव को 'टुरवा' कहते थे। सुनकर माँ बहुत गुस्सा होती थी। बाप के मरने से कोई टूअर[2] नहीं होता। बाप मरे तो कुमर, माँ मरे तब टूअर ! मेरा बालदेव तो कुमर है; मेरा बालदेव टूअर नहीं। ऐसा लगता है, माँ ने अभी तुरंत ही पीठ सहलाई है।

माँ के मरने के बाद, बालदेव बहुत दिन तक अजोधी भगत की भैंस चराता था। अजोधी भगत की याद आते ही बालदेव की देह सिहर उठती है। कैसा पिशाच था बुड्ढा ! बूढ़ी तो और भी खटाँस थी, खेकसियारी[3] की तरह हरदम खेंक-खेंक करती रहती थी। दिन-भर भैंस चराकर आने के बाद बालदेव की उँगलियाँ भगत का देह टीपते-टीपते दर्द करने लगती थीं। आँखें नींद से बंद हो जाती थीं। लेकिन जरा भी ऊँघे कि चटाक्। उस बूढ़े की उँगलियों की चोट बड़ी-बड़ी कड़ी होती थी। बालदेव ने बचपन से ही मार खाई है–थप्पड़, छडी और लाठी की मार। शायद सूखी चमड़ी की चोट ज्यादा लगती है।·· लेकिन रूपमती का कलेजा मोम का था। वैसे बेदर्द माँ-बाप की बेटी वैसी दयालु कैसे हुई, समझ में नहीं आता है। बूढ़े–बूढ़ी को रात में नींद नही आती थी। आध पहर रात को ही भैंस चराने के लिए जगा देता था। आध पहर रात होते ही पीपल के पेड़ पर उल्लू अपनी मनहूस बोली में कचकचा उठता था और इधर बूढ़ा ठीक उसी तरह की आवाज में चिल्ला उठता,"रे टुरवा, भोर हो गई, भैंस खोल !" ·· रूपमती कभी 'टुरवा' नही कहती थी। छोटा-सा नाम 'बल्ली' उसी का दिया हुआ है। चार सेर सुबह और तीन सेर शाम को दूध होता था, लेकिन बुढ़िया कभी सितुआ-भर घोल भी नही खाने देती थी। रूपमती रोज चुराकर भात के नीचे दूध की छाली रख देती थी। बूढ़ा-बूढ़ी का जमाया हुआ पैसा आखिर डकैत ही ले गए। · इस बार रूपमती को देखा था। बहुत दिन बाद ससुराल से आई थी। तीन बच्चे हैं, बड़ी बेटी ठीक रूपमती जैसी है। ठीक वैसी ही हँसी।

याद आती है माये जी की ! माये जी–रामकिसूनबाबू की इसतिरी ! पहले-पहल सभा हुई थी चन्ननपटी में। सभा मे रामकिसूनबाबू, उनकी इसतिरी, चौधरी जी और तैवारी जी आए थे।·· अलबत्त रूप था रामकिसून-बाबू का ! बड़ी-बड़ी आँखें !

---

1. अँगीठी। 2. अनाथ। 3. लोमड़ी।

भाखन देते थे, जैसे बाघ गरजे ! सुनते है, जब वोकालत करते थे तो बहस करने के समय पुरानी कचहरी की छत से पलस्तर झड़ने लगता था। क्या मजाल कि हाकिम उनके खिलाफ राय दे दे! लेकिन महतमा जी का उपदेश सुनकर एक ही दिन मे सबकुछ छोड-छाड दिया। इसतिरी के साथ गॉव-गाँव घूमने लगे। माये जी के पॉव की चमडी फट गई थी। लहू से पैर लथपथ हो गए थे। लाल उडहूल ? माये जी का दुख देखकर, रामकिसूनबाबू का भाखन सुनकर और तैवारी जी का गीत सुनकर वह अपने को रोक नही सका था। कौन सॅभाल सकता था उस टान को ! लगता था, कोई खीच रहा हो। " गगा रे जमुनवाँ की धार नयनवॉ से नीर बही। फूटल भारथिया के भाग भारथमाता रोई रही।" माये जी के पॉव की चमडी फट गई थी, भारथमाता रो रही थी। वह उसी समय रामकिसूनबाबू के पास जाकर बोला था-" मेरा नाम सुराजी मे लिख लीजिए।" उस दिन की सभा मे तीन आदमियो ने नाम लिखाया था- बालदेव, बावनदास और चुन्नी गुसाई। चौधरी जी उसे जिला आफिस मे ले आए थे। मायेजी बराबर आफिस आती थी। कभी गुस्सा होते नही देखा माये जी को; जब बोलती थी तो हॅसकर। एक बार देहात से लौटते समय उसको बुखार हो गया था; देह जल रही थी, सिर फटा जा रहा था, कोई होश नही। रात मे, ऑख खुली तो जी बडा हल्का मालूम हुआ। "कैसे हो बालदेव भाई ?" कौन बावन ? गरदन उलटाकर देखा, माये जी पास ही कुरसी पर बैठी हुई हैं। "कैसे हो बोलो ? बुखार था तो देहात क्यो गया था ? सोओ ।" माथे पर हाथ रखते हुए माये जी बोली थी, "बुखार उतर गया है।" माये जी के हाथ रखते ही नीद आ गई थी। दूसरे दिन बावनदास ने कहा, "माये जी को जैसे ही मालूम हुआ कि तुमको बुखार है, वैसे ही मुझे लेकर आफिस आई। जतर[1] लगाकर बुखार देखते ही चिल्लाने लगी-"पानी लाओ पखा दो।" उसी समय से माथे पर पानी की पट्टी देती रही, बारह बजे रात तक। भगवान् भी कैसे हैं, अच्छे आदमी को ही अपने पास बुला लेते हैं। दो-तीन साल के बाद ही रामकिसूनबाबू एक ही दिन के बुखार मे सरगवास हो गए। हे भगवान ! उस दिन माये जी की ओर कौन देख सकता था ! देखने की हिम्मत नही होती थी। माये जी का उस दिन का रूप गगा रे जमुनवॉ की धार नयनवॉ से नीर बही। फूटल भारथिया के भाग भारथमाता रोई रही ! सचमुच सबो के भाग फूट गए। सराध के दिन से जिला आफिस का नाम हो गया 'रामकिसून आसरम'। सराध के दूसरे दिन ही माये जी कासी जी चली गई। गाडी पर चढने के समय, पैर छूकर जब परनाम करने लगा था तो माये जी एकदम फूट-फूटकर रो पडी थी-ठीक देहाती औरतो की तरह। बावनदास को माये जी 'ठाकुर' कहती थी, "हामार ठाकुर र।" धरती पर लोटते हुए बावनदास को उठाते हुए माये जी बोली थी, "महतमा जी पर भरोसा रखो। वह सब भला करेगे। महतमा जी का रास्ता कभी मत छोडना।"

पता नही माये जी कहॉ हैं !

1 थर्मामीटर।

आँसू की गरम बूँदें बालदेव की बाँह पर ढुलककर गिरी। माँ, रूपमती, माये जी और लछमी दासिन ! माये जी जैसा ही लछमी भी भाखन देना जानती है। लछमी भाखन दे रही है।

विशाल सभा ! जहाँ तक नजर जाती है आदमी-ही-आदमी दिखाई पड़ते हैं। बाँस के घेरे को तोडकर लोग मच की ओर बढ़े आ रहे हैं। मच पर बालदेव के बगल में लछमी बैठी हुई है। लछमी के भी पैर की चमडी फट गई है। मंच की सुफेद चादर पर लहू की बूँदे टप-टप गिर रही है। लछमी भाखन दे रही है। कौन, हरगौरी ? हरगौरी लछमी के गले में माला डालने के लिए आगे बढ़ रहा है। लछमी माला नही पहनती है। माला लेकर बालदेव को पहना देती है—गेदे के फूलो की माला ! फूल से लछमी के शरीर की सुगधी निकलती है ! भीड मंच की ओर बढी जाती है। हरगौरी आगे बढ आया है, लछमी को पकड रहा है। बालदेव चिल्ला रहा है, लेकिन आवाज नही निकल रही है। लोग हल्ला कर रहे हैं। बहुत जोर लगाकर बालदेव चिल्लाता है—"हरगौरी बाबू !"

"गन्ही महतमा की जै!"

"जै !"

बालदेव हडबडाकर उठता है; आँखे मलते हुए बाहर निकल आता है ! सबेरा हो गया है। गाँव-भर के नौजवानो को बटोरकर जुलूस बनाकर कालीचरन जय-जयकार करता हुआ जा रहा है। वाह रे कालीचरन ! बुद्धिमान है, बहादुर है और बुद्धिमान भी। यह पुलोगराम[1] कब बनाया था ? रात मे ही शायद ! जरूर मेरीगंज की चन्ननपटी की तरह नाम करेगा। और भोर का सपना ?

"खेलावन भैया, कैसी तबियत है ?"

"तुम रात मे कब लौटे ? कहाँ ... हुई, सिपैहिया टोली मे ? कायस्थ—राजपूत की जोडी मिल गई, अब क्या है, सुराज हो गया ! लेकिन भाई बालदेव, हम ठहरे सीधे-सादे आदमी। कलिया पर नजर रखना। उसमे और भी बहुत गुन है, सो तो तुमको मालूम ही हो जाएगा। किसी किस्म का उपद्रो करेगा तो हम जिम्मेदार नही है। पीछे यादवटोली के मुखिया के ऊपर बात नही आवे। हाँ भाई, कायस्थ और राजपूत का क्या विश्वास ?"

खेलावन किसके ऊपर अपना दिल का बुखार उतारे, समझ नही पा रहा था। भैस-चरवाहा भैस दूहने के लिए बरतन ले आ... था। खेलावन आज भी अपने ही हाथो भैस दूहता है। उसका कहना है, "भैंस के थन में चार आदमी के हाथ लगे कि भैंस सूखी।" चरवाहा पर बिगड पड़ा, "साला ! अभी भैस थिराई भी नही है, दूहने के लिए हल्ला मचा रहा है। पूडी-जलेबी क्या अभी ही बँट रही है ? जीभ से पानी गिर रहा है ! "परनाम जोतखी काका !"

1 प्रोग्राम।

जोतखी जी कान पर जनेऊ टाँगे, हाथ में लोटा लटकाए इनारे की ओर जा रहे थे। खेलावन ने टोका," आइए, यहीं पानी मँगवा देते हैं।"

"खेलावनबाबू, गाँव में तो सुराज हो गया, देखते हैं। अच्छा-अच्छा ! देखिएगा गाँव के लौंडे सब आज फुच्च-फुच्च कर रहे हैं। "छुद्र नदी चलि भरी उतराई, जस थोरे धन खल बौराई।" ऐसा ही सिमरबनी में भी हुआ था। हमारे मामा का घर सिमरबनी में ही है। आज से दस-बारह साल पहले की बात कहते हैं। हम मामा के यहाँ गए थे। मामा के बड़े पुत्र का जग्योपवित था। प्रातःकाल उठके देखते हैं कि गाँव-भर के लौंडे इसी झंडा-पत्तखा लेकर 'इनकिलास-जिंदाबाघ' करते हुए गाँवों में घूम रहे हैं। मामा से पूछा कि "मामा, बात क्या है ?" तो मामा बोले कि गाँव के सभी लड़कों ने भोलटियरी में नाम लिखा लिया है। 'इनकिलास जिंदाबाघ' का अर्थ है कि हम जिंदा बाघ हैं। ·· जिंदा बाघ भी उसी शाम को देखा। इस्कूल से पच्छिमी कँगरेसी तैवारी नीमक कानून बनानेवाला था। बड़े-बड़े चूल्हे पर, कड़ाहियों में चिकनी मिट्टी और पानी डालकर खौला रहे हैं। खूब गीत-नाद, झंडा-पत्तखा ! पूछा कि यह क्या है भाई ! तो कहा कि नीमक कानून बन रहा है। हम भी खड़ा होकर तमाशा देखने लगे। इसी समय हल्ला हुआ, दारोगा आ रहा है। इस्कूल के हाता से एक टोपावाला और चार-पाँच लाल पगड़ीवाला निकला ! बस, फिर क्या था, जिंदा बाघ आ गया; जो जिस मुँह से खड़ा था, उधर ही भागा। एक-दूसरे के ऊपर गिर रहा है। कहाँ झंडा, कहाँ पत्तखा और कहाँ इनिकलास जिंदाबाघ ! दारोगा साहब तैवारी को पकड़कर ले गए। इसके बाद गाँव के घर-घर मे घुसकर खाना-तलाशी ! गाँव के सभी जिंदाबाघ माँद में घुस गए। सुनने में आया कि जब कँगरेसी राज हुआ तो फिर घर-घर में भोलटियर घरघराने लगा। फिर इनकिलास जिंदाबाघ ! पुलिस-दारोगा को देखकर और जोर से चिल्लाते थे सब। लो भाई, चिल्लाओ, तुम्हारा राज है अभी ! पुलिस-दारोगा मन-ही-मन गुस्सा पीकर रह गए। पिछले मोमेंट मे जिंदाबाघो ने जोम में आकर अड़गड़ा जला दिया, कलाली लूट लिया। दूसरे ही दिन चार लौरी में भरके गोरा मलेटरी आया और सारे गाँव में जला-पका, लूट-पीटकर एक ही घंटा मे ठंडा कर दिया। पचास आदमी को गिरिफ्फ किया। दो को तो मारते-मारते बेहोश कर दिया। एक को कीरीच भोंक दिया। अंग्रेज बहादुर से यही दुग्गी-तिग्गी लोग पार पाएँगे। बड़ा-बड़ा घोड़ा बहा जाए तो नटघोड़ी पूछे कितना पानी। अंग्रेज बहादुर ने अभी फिर ढील दे दिया। सब उछल-कूद रहे हैं। इस बार बिगड़ेगा तो खोपसहित कबूतराय· ।"

"नहीं जोतखी काका, अब वैसा नहीं हो सकता," बालदेव इससे आगे नहीं सुन सका "पिछले मोमेंट में सरकार का छक्का छूट गया है। सिमरबनी के बारे में आप जो कह रहे हैं सो आप इधर सिमरबनी गए हैं ? नहीं। तब क्या देखिएगा ! एक बार वहाँ जाकर देखिए—इसपिताल, इस्कूल, लड़की-इस्कूल, चरखा सेंटर, रायबरेली[1], क्या नहीं है वहाँ ? घर-घर में ए-बी-सी-डी पास ! सिवानंदबाबू को

1. लायब्रेरी।

जानते हैं ? उनका बेटा रमानंद हम लोगों के साथ जेहल में था; अब हाकिम हो जाएगा। पक्की बात !"

खेलावन भी कुछ कहना चाहता था कि चरवाहे ने पुकारा, "पाँड़ा भैंस पी रहा है।"

खेलावन भैंस दुहने चला गया। बालदेव के पास बेकार बहस करने के लिए समय नहीं है। गाँव में जय-जयकार हो रहा है–"गन्ही महतमा की जै !"

सात

प्यारू को सबों ने चारो ओर से घेर लिया। डागडर साहेब का नौकर है। डागडर साहेब कब तक आएँगे ? तुम्हारा क्या नाम है ? कौन जात है ? दुसाध मत कहो, गहलोत बोलो गहलोत ! जनेऊ नही है ?

बालदेव जी प्यारू को भीड से बाहर ले आते हैं। "भाई, तुम लोगों ने आदमी नहीं देखा है कभी ? जाओ, अपना काम देखो ! हलवाई जी लोगो के पास कौन है ?"

बालदेव जी सबो के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं। रामकिसून आसरम में लीडर लोग इसी तरह सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं–"ड्राइवर जी', 'ठेकेदारजी', 'हरिजन जी' " !

पूछताछ के बाद मालूम हुआ, प्यारू डागडर साहेब के पास नौकरी करने आया है। गौतहट टीसन में जो हेमापोथी डागडर साहेब थे, प्यारू उनके यहाँ पाँच साल नौकरी कर चुका है। डाक्टरबाबू आ रहे हैं। सो प्यारू डाक्टरबाबू के पास नौकरी करने आया है।

चूड़ा–गूड़ का जलखै[1] करके प्यारू बालदेव जी से कहता है, "डागडरबाबू का सामान कहाँ है ? टेबल-कुर्सी लगाना होगा। अलमारी को झाड़ना-पोंछना होगा। पानी के ढोल के पास एक बोल[2] रखना होगा, एक साबुन और एक गमछा। डागडरबाबू आते ही पहले साबुन से हाथ धोएँगे··"

सचमुच प्यारू डाक्टर का पुराना नौकर है। टेबल-कुर्सी ठीक से लगा दिया है। तीन पैरवाली लोहे की सीढ़ी पर पानी का ढोल रख दिया; सीढ़ी में ही लगी हुई गोल कड़ी में ललमुनियाँ[3] का कठौत बिठा दिया है। ढोल में कल लगा हुआ

1. जलपान। 2. कठौत। 3. अलमुनियम

है। कल टीपने मे पानी गिरने लगता है। बक्से से गमछा निकालकर वही लटका दिया है। खस्सी-बकरी की अँतडी का भीतरी हिस्सा रोयाँदार होता है, वैसा ही गमछा है। साबुन ? साबुन नही है ? अरे, कपडा धोनेवाला साबुन नही, गमकौआ साबुन चाहिए। भगत की दुकान मे गमकौआ साबुन कहाँ से आवेगा ? कटिहार मे मिलना है। तहसीलदार साहब की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव गमगम करने लगता है। तहसीलदार साहब कहते है, कमली दीदी से साबुन माँगकर ला दो ! सचमुच प्यारू पुराना डागडरी नौकर है। बडे मौके से वह आ गया, नही तो इतना इतजाम कौन करता ? बेला झुक गया है, अब डागडरबाबू भी आ जाएँगे। तहसीलदार साहब कहते हैं, "भरुकुवा उगने के पहले ही बैलगाडियो को रवाना कर दिया है। साथ मे गया है अगमू चौकीदार।"

सारा गाँव महक रहा है। मेले मे ठीक ऐसी ही महक रहती है। तहसीलदार साहब के गुहाल म हलवाई लोग सुबह से ही पूडी-जलेबी बना रहे हैं। पूडी बनाकर ढेर लगा दिया है। गाँव के बच्चे सुबह से ही जमा है। राजपूत और कायस्थो के बच्चे दूसरे टोले के बच्चो को उधर नही जाने देते है—"भागो, छू जाएगा !"

सिघ जी खुद जाकर खेलावनसिघ यादव को पकड लाते है। "तहसीलदार देखो, इसके पेट मे बाय उखड गया है। भोज खाने के पहले ही अन्नसर्जी हो गई है। अरे भाई, औरतो की तरह रूठने मे क्या फायदा ! तुम्ही कहो तहसीलदार, हम ठीक कहते है या नही। लडो झगडो और फिर गले-गले मिलो। यह रूठने का क्या माने ? हमको तो बालदेव से मालूम हुआ। जाकर देखो तो कागभुसुडी इसके कान मे मतर पढ रहा है। ए बालदेव मुन्ना, डागडर साहेब आएँ तो पहले इसी का इलाज कराओ। कहना कि आठवाँ महीना है ।"

हा हा हा हा हा हा हा !

"रामकिरपाल भाई, लडको के सामने भी आप दिल्लगी करते हैं ? अच्छा हाथ छोडिए। सब कोई तो है ही, सिर्फ हमारे नही रहने से कौन काम हरज हो रहा था ?"

सिघ जी मजेदार आदमी है। सुबह से ही सबो को हँसा रहे है। खेलावन यादव रूठे थे, उसको भी पकड लाए। जोतखी जी नही आए। बोले, दाँत मे दर्द है। सिघ जी कहते है, "पता नही उनके पेट के दाँत मे दरद है शायद। सुनते है आजकल डागडर लोग पत्थर का नकली दाँत लगा देते है। डागडर साहेब से कहकर जोतखी जी का दाँत बनवा दो भाई !" अजी, सभागाछी[1] मे लडकीवाले दाँत को हिला डुलाकर देखते है थोडा !"

"डागडर साहेब आ रहे है।"

"आ रहे हैं ? कहाँ।"

"पछियारीटोला के पास पाँचो बैलगाडियाँ आ रही हैं। अगमू चौकीदार आगे आगे

1 विवाहार्थी मैथिलो का मेला।

दौड़ता हुआ आ रहा है। डाक्टर साहेब टोपा पहने हुए हैं।"

अगमू आ गया। "कंधे पर क्या है, बक्सा ?"

कामकाज छोड़कर सभी जमा हो गए–डाक्टर साहब आ रहे हैं।"

"हट जाइए !" अगमू कहता है, "डाक्टर साहब बोले हैं, इंतजाम से रखना ठेस नहीं लगे। बेतार का खबर है।"

बालदेव जी कहते हैं, "रेडी[1] है या रेडा ! अब सुनिएगा रोज बंबै-कलकत्ता का गाना। महतमा जी का खबर, पटुआ का भाव सब आएगा इसमें। तार में ठेस लगते ही गुस्साकर बोलेगा–बेकूफ। बिना मुँह धोए पास में बैठते ही तुरत कहेगा–क्या आपने आज मुँह नही धोया है ?"

"जुलुम बात !"

डाकडर साहेब !

सभी हाथ जोड़कर खड़े हैं। डॉक्टर साहब भी हँसते हुए हाथ जोडते हैं। बालदेव जी 'जाय हिंद' कहते हैं। देखादेखी कालिया भी आजकल 'जाय हिंद' कहता है। प्यारू शामियाने में कुर्सी लाकर रखता है, डॉक्टर साहब के हाथ से टोप ले लेता है। डाक्टर साहब के चेहरे का रंग एकदम लाल है। 'लालटेस' ! मोछ नहीं है क्या ? नहीं मोछ सफाचट कटाए हैं।

बालदेव जी हाथ जोडकर पूछते हैं, "रास्ते में कहीं तकलीफ तो नहीं हुई ?" सब तैयार है, भोजन कर लिया जाए। इनका नाम विश्वनाथ प्रसाद है, राजपारबंगा के तहसीलदार हैं। इनका नाम रामकिरपालसिंघ है, सिपै · राजपूतटोली के मालिक हैं। इनका नाम खेलावनसिंह यादव है, यादव छत्रीटोले के 'मड़र' हैं। इनका नाम कालीचरन है, बड़ा बहादुर नौजवान है। और ये लोग 'इसकुलिया' हैं। ·· आइए बाबू साहब, आप लोग डागडर साहेब से बतियाइए। इस गाँव के महंथ साहेब, ने इसपिताल होने की खुशी मे गाँववालो को आज भंडारा दिया है।

डाक्टर साहब हाथ जोड़कर सबों को फिर नमस्कार करते हैं। कहते हैं "हम अभी नहीं खाएँगें। सबको खिलाइए !"

सचमुच प्यारू पुराना नौकर है। देखो, डागडरबाबू ने सबसे पहले साबुन से हाथ धोया।

मठ से महंथ साहेब, कोठारिन लछमी दासिन, रामदास और दो मुरती आए हैं। महंथ साहेब की बैलगाड़ी के आगे एक साधु तुरही फूँकता हुआ आ रहा है। धुतुतुतुऽऽ · धुतुतु ! और तुरही की आवाज सुनते ही गाँव के कुत्ते दल बाँधकर भोंकना शुरू कर देते हैं। छोटे-छोटे नवजात पिल्ले तो भोंकते-भोंकते परेशान हैं। नया-नया भोंकना सीखा है न !

सबसे पहले कालीथान में पूड़ी चढ़ाई जाती है। इसके बाद कोठी के जंगल की ओर दो पूड़ियाँ फेंक दी जाती हैं, जंगल के देव-देवी और भूत-पिशाच के

1. रेडियां

लिए। इसके बाद साधु और बाभन भोजन ! बालदेव जी ने बहुत कहा, लेकिन डाक्टर साहब नहीं माने। प्यारू ठीक कहता था, डागडर लोग हलवाई की बनाई हुई पूड़ी-जिलेबी नहीं खाते हैं। 'कल के चूल्हे' पर प्यारू डागडरबाबू के लिए भात बना रहा है। जल्दी से बिजे[1] खत्म हो तो बेतार के खबर का गाना सुनें। क्या ? आज गाना नहीं होगा ? हाँ भाई, कल-कब्जा की बात है। इतना जल्दी कैसे होगा ! फिर कटिहार जंकशन में रेलगाड़ियों और मिलों का अभी इतना शोरगुल होता होगा कि यहाँ तक खबर आ भी नहीं सकेगी।"

"बिझै ! बिझै !"

"हर टोले के लोग अलग-अलग पंगत में बैठो। अपने-अपने बगल में एक फाजिल पत्ता लगा देना भाई ! अपने-अपने घर की जनाना लोगों के लिए कमबेस नहीं।..."

गुअरटोली के रौदी बूढ़ा को सभी मिलकर चिढ़ा रहे हैं। रौदी गोप गाँव-गाँव में घूमकर दही बेचता है। उसकी चाल-चलन, उसकी बोला-बानी सबकुछ औरतों जैसी है। सिर और छाती पर से कपड़ा जरा-सा भी सरक जाने पर औरतों की तरह लजाकर ठीक कर लेता है। मर्दों से बातें करने के समय लजाता है, औरतें उसके सामने किसी भी किस्म का परदा नहीं करतीं। हाट जाते और लौटते समय वह औरतों के झुंड में ही रहता है।... अभी सब मिलकर रौदी बूढ़ा को चिढ़ा रहे हैं—"तुम्हारा हिस्सा आँगन में भेज दिया जाएगा। देखो, लालचन ने तुम्हारा पत्ता लगा दिया है।"

"दुर ! मुँहझौंसे ! बूढ़े-पुराने से हँसी-दिल्लगी करते लाज नहीं आती ? हम पूछते हैं तुम लोगों से, कि तुम लोग अपनी बूढ़ी दादी और नानी से भी इसी तरह हँसी-मसखरी करते हो ? इस गाँव के लौंडे-छौंड़े बिगड़ गए हैं। और सारा दोख इसी सिंघवा का है। जहाँ बूढ़े बदचाल हों तो लौंडों का क्या हाल ! हम कह देते हैं, हाँ सुन रखो ! हाँ।... "

महंथ साहब रात में भोजन नहीं करते हैं।

"सतगुरु हो ! डागडर साहेब, आपको कितना मुसहरा मिलता है ? दो सौ ? .. हाँ, यहाँ ऊपरी आमदनी भी होगी। असल आमदनी तो ऊपरी आमदनी है। . बहुत अच्छा हुआ।... गाँधी जी तो अवतारी पुरुख हैं।—डागडर साहेब ! आज से करीब पाँच साल पहले एक बार हमारी आँखें आईं, उसके बाद दो महीने तक आँखों में लाली छाई रही। पुरनियाँ के सिविलसार्जन साहेब को पचास रुपया फीस देकर दिखलाया। बहुत दिनों तक इलाज भी करवाया। मगर बेकार। अब तो आप आ गए हैं। अपने घर के डागडर हुए !... "

लछमी दासिन टकटकी लगाकर डाक्टर साहब को देख रही है।... कितना सुंदर पुरुष है ! बेचारे का इस देहात में मन नहीं लग रहा है। नौकरी कोई भी हो, आखिर नौकरी ही है। मन घर पर टँगा हुआ होगा। बीवी-बच्चों की याद

1. खाना-पीना

आती होगी।··· कुछ दिनों में मन लग जाएगा। फिर बाल-बच्चों को भी ले आवेंगे। अचानक वह पूछ बैठती है, "आपके घर पर और कौन-कौन हैं डाक्टर बाबू ?"

"जी," डाक्टर ने जरा हकलाते हुए कहा, "जी, मेरा कोई नहीं। माँ-बाप बचपन में ही गुजर गए।"

लछमी समझ लेती है कि यह सवाल पूछना उचित नहीं हुआ। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि उसने ऐसा प्रश्न किया ही क्यों !··· मेरा कोई नहीं !

"लछमी ! रामदास को बुलाओ। अच्छा तो डागडरबाबू, अब आज्ञा दीजिए। आप भी भोजन करके आराम कीजिए। कभी मठ की ओर भी आइएगा। सतगुरु साहेब कहीन हैं–"दरस-परस सतसंग ते छूटे मन का मैल'।"

लछमी हाथ जोड़कर नमस्कार करती है।

ब्राह्मणटोली के लोग बालदेव जी से पूछते हैं, "डागडरबाबू का नौकर तो दुसाध है। और डागडरबाबू कौन जात हैं ? दुसाध का बनाया हुआ खाते हैं ?"

बोलिए प्रेम से··· महतमा गन्ही की जै !

भंडारा समाप्त हो गया। कोई 'तरुटी' नहीं हुई। सबको 'पूर्ण' हो गया। जो भूल-चूक से छूट गए हैं, उनका हिस्सा कल ले जाइएगा।

बालदेव जी अगमू चौकीदार और बिरंची के साथ इसपिताल में सोएँगे। आज पहली रात है !

आठ

लछमी का भी इस संसार में कोई नहीं !

··· जी, मेरा कोई नहीं ! लछमी सोचती है, उसका दिल इतना नरम क्यों है ? क्यों वह डाक्टर को देखकर पिघल गई ? यह अच्छी बात नहीं। ··· सतगुरु मुझे बल दो।

सतगुरु के सिवा कोई और भी उसका नहीं। माँ की याद नहीं आती। पसराहा मठ के पास अपनी झोंपड़ी की याद आती है ! सुबह होते ही बाबू जी कंधे पर चढ़ाकर मठ ले जाते थे। महंथ रामगुसाईं कितना प्यार करते थे–"आ गई लच्छो ! ले, मिसरी खाएगी ? चाह पीएगी ?" भंडारी एक कटोरे में चाहचूड़ा दे जाता था। बाबू जी बैठकर महंथ साहेब के लिए गाँजा तैयार करते थे। एक चिलम, दो चिलम, तीन चिलम ! पीते-पीते महंथ साहेब की आँखें लाल हो जाती थीं। कभी-कभी बाबूजी भी थर-थर काँपने लगते थे। भंडारी दही लाकर देता था–"खा लो रामचरन भाई ! नशा टूट जाएगा।" बाबू जी को महंथ साहेब बहुत मानते

थे। कोई काम नहीं। दिन-भर महंथ साहेब की धूनी के पास बैठे रहो, गाँजा तैयार करो, चिलम चढ़ाओ। मठ पर ही हमारा खाना-पीना होता था।

गाँव में जब हैजा फैला तो बाबू जी को महंथ साहेब ने कहा, "रामचरन ! तुम मठ पर ही रहो।" उन दिनों, दिन-भर में कभी चिलम ठंडी नहीं होने पाती थी। एक दिन महंथ साहेब का बीजक जल गया। न जाने कैसे चिलम की आग बीजक पर गिर पड़ी। महंथ साहेब ने रोते हुए कहा था, "रामचरन, साहेब करोध कीहिन है, दंड भोगना पड़ेगा। अमंगल होगा।"… दूसरे ही दिन मठ के एक साधु का पेट-मुह चलने[1] लगा। तीसरे दिन साधु ने देह 'तेयाग' दिया तो महंथ साहेब बीमार पड़े। बाबू जी ने महंथ साहेब की बड़ी सेवा की। शरीर त्यागने के पहले महंथ साहेब ने कहा था, "रामचरन एक बार आखिरी चिलम पिलाओ बेटा !" बाबू जी चिलम तैयार करने के लिए धूनी से आग ले ही रहे थे कि धूनी में ही उलटी होने लगी। महंथ साहेब ने शाम को और बाबू जी ने सुबह को काया बदल दिया। भंडारी ने दूर से ही बाबू जी का दरसन करा दिया था। भंडारी ने कहा था, "मरे हुए आदमी के पास नहीं जाना चाहिए।"

"लछमी ! ओ लछमी !"

"आई !" लछमी कुनमुनाती उठती है। … उस दिन बीजक छूकर कसमें खाए थे और आज फिर पुकारने लगे। सतगुरु हो, तुम्हारी बुलाहट कब होगी ? बुला लो सतगुरु अपने पास दासी को।

"लछमी !"

"महंथ साहेब चित्त को शांत कीजिए। सतगुरु का ध्यान कीजिए। माया… "

"सब माया है लछमी। लेकिन एक बार पास आओ।"

अंधा आदमी जब पकड़ता है तो मानो उसके हाथों में मगरमच्छ का बल आ जाता है। अंधे की पकड़। लाख जतन करो, मुट्ठी टस-से-मस नहीं होगी! … हाथ है या लोहार की 'सँड़सी' ! दंतहीन मुँह की दुर्गंध ! … लार ! … "महंथ साहेब ! महंथ साहेब, सुनिए !" रामदास धूनी के पास ही है। "महंथ साहेब ! अरे रामदास ! रामदास ! जल्दी उठो जी ! महंथ साहेब को क्या हो गया।"

महंथ साहेब को सतगुरु ने अपने पास बुला लिया।

सुबह को सारे गाँव के लोग जमा होते हैं। … महंथ साहेब सिद्ध पुरुख थे ! इच्छा-मृत्यु हुई है ! रात को बैठकर, गाँव के बूढ़े-बच्चों को खिलाकर आए और रात में ही चोला बदल लिए। दुनिया में ऐसी मरनी सबों को नसीब नहीं होती। गियानी महातमा थे।

रामदास कहता है, "भंडारा से लौटकर जब सरकार आए और आसन पर

1 कै-दस्त होना।

'धेयान' लगाकर बैठे तो देह से 'जोत' निकलने लगा। हम मसहरी लगाने गए तो इसारे से मना कर दिया। हम धूनी के पास बैठकर देखते रहे। सरकार के देह का जोत और तेज हो गया और सरकार एकदम बच्चा हो गए। जोत की चमक से हमारी आँखें बंद हो गईं। हम वहीं धूनी के पास लेट गए। कोठारिन जी जब हल्ला करने लगीं तो आँखें खुलीं ·।"

लछमी सुबह कुछ नहीं बोलती। साधुओं को माटी देने की रीत भी नहीं मालूम? जटा बढ़ा लिया और हाथ में कमंडल ले लिया, हो गए साधू! "चरनदास! पहले बीजक पाठ होगा, तब माटी! इसके बाद सभी संतन के गोर[1] पर माटी दी जाएगी। इतना भी नही जानते ?"

"माया जाल बिखडने सुर गुरु दुख परहरता
सरबे लोक जनाच जेन सतत,
हिया लोकिता·· ।"

नमास्तु सतगुरु साहेब को
चरणकमल धरी शी·· ।

सबसे पहले रामदास माटी देता है! उसके बाद लछमी दासिन मुट्ठी-भर माटी महथ साहेब की सफेद चादर पर डाल देती है। फिर फूलो की माला। साधु लोग कुदाली से गोर मे मिट्टी भरने लगते हैं। चरनदास कहता है, "महथ साहेब को लगाकर दस महथो को माटी दिया है। माटी देना भी नही जानेंगे ?"

गॉव के 'कीरतनियॉ लाग' समदाउन शुरू करते हैं–

"हॉ रे, बड़ा रे जतन मे सुगा एक हे पोसल,
माखन दुधवा पिलाए।
हॉ रे, से हो रे सुगना बिरिछी चढ़ि बैठल
पिंजड़ा रे धरती लोटाए "

गौर के बाद रामदाम खॅजडी बजा-ब··कर 'निरगुन' गाता है–

"कँहवॉ से हसा आओल, कँहवॉ समाओल हो राम,
कि आहो रामा हो, कोन गढ़ कयल मोकाम, कवन लपटाओल हो राम!"

डिम डिमिक डिमिक···
"सुरपुर से हसा आओल, नरपुर समाओ·· हो राम,
कि आहो रामा हो, कायागढ़ कयला मोकाम,
मायहि लपटाओल हो राम!'

1 समाधि

"जै हो, सतगुरु की जै हो ! महंथ साहेब की जै हो ! सब संतन की जै हो !"

मठ सूना लगता है। जीवन में आज पहली बार लछमी समझ रही है महंथ साहेब की कीमत को। ··· नेत्रहीन हो गए थे, कुछ देख नहीं सकते थे, बिना रामदास के सहारा के एक पग चल भी नहीं सकते थे, किंतु ऐसा लगता था कि मठ भरा हुआ है। बिना महंथ के मठ और बिना प्राण के काया !

काँचहि बाँस के पिंजड़ा,
जामें दियरो न बाती हो,
अरे हंसा उड़ल आकाश,
कोई संगो न साथी हो !

·· जो भी हो, संसार में सबसे बढ़कर लछमी को प्यार करते थे महंथ साहेब। चढ़ती जवानी में, सतगुरु साहेब की दया से माया को जीतकर ब्रह्मचारी रहे। बुढ़ौती में तो आदमी की इंद्रियाँ शिथिल हो जाती हैं, माया के प्रबल घात को नहीं सँभाल सकती हैं। इसीलिए तो साधु-ब्रह्मचारी लोग बुढ़ापे में ही माया के बस में हो जाते हैं। यह तो महंथ साहेब का दोख नहीं। उसका भाग ही खराब है। यदि वह नहीं होती तो महंथ साहेब सतगुरु के रास्ते से नहीं डिगते। यह ध्रुव सत्त है। दोख तो लछमी का है। एक ब्रह्मचारी का धरम भ्रष्ट करने का पाप उसके माथे है। अब उसका अपना कौन है ? कोई नहीं !

"महंथ साहेब ! महंथ साहेब ! हमको छोड़कर आप कहाँ चले गए ? दासी के अपराध को छिमा करना गुरु। जीवन में तुम्हारी कोई सेवा सुखी मन से नहीं कर सकी। मरने के समय भी तुमको सुख नहीं दे सकी प्रभू ! ·· छिमा करो !"

जिंदगी-भर के जमे हुए आँसू आज निकल जाना चाहते हैं, रोके रुकते नहीं।

"जाय हिंद कोठारिन जी !"

"दया सतगुरु के ! बालदेव जी, बैठिए !"

बालदेव जी सब भूल गए। लछमी को सांत्वना देने के लिए रास्ते मे जितनी बातें सोची थीं, दोहा, कवित्त, सब भूल गए। उसे माये जी की याद आ जाती है। माये जी का वह रूप··· "गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से नीर बही।'

बालदेव जी की गढ़ी हुई ढाढ़स की बाँध इस तेज धारा में नहीं टिक सकेगी। बालदेव जी की भी आँखें छलछला जाती हैं। फल्गू में भी बाढ़ आती है। वह दिल को मजबूत करके कहते हैं, "कोठारिन जी, सब परमेसर की माया है। हानि-लाभ जीवन-मरन जस-अपजस बिधि हाथ। ·· हम तो सूरज उगने के पहले ही डागडर साहेब के साथ बाहर निकल गए थे। डागडर साहेब को गाँव की चौहद्दी दिखलानी थी। दखिन संथालटोली से सुरू करके, दुसाधटोली तक गली-कूची, अगवारा-पिछवारा देखते-देखते दस बज गए। वहीं मालूम हुआ कि महंथ साहेब इंतकाल कर गए हैं। डागडर साहेब का भी मन उदास हो गया। वे इसपिताल लौट गए। बाकी टोलों को कल देखेंगे। ··· आज रौतहट हाट में ढोल भी दिला देना है—इसपिताल

खुल गया है। शोभन मोची को भेजकर हम यहाँ आए हैं।"

लक्ष्मी के आँसू थम चुके थे। बालदेव जी ठीक समय पर आ गए। महथ साहेब बालदेव जी को बहुत प्यार करने लगे थे। पाँच-सात दिनो की जान पहचान मे ही महथ साहेब ने बालदेव जी को अच्छी तरह पहचान लिया था। रुपैया को बजाकर देखा जाता है और आदमी को एक ही बोली से पहचाना जाता है। महथ साहेब कहते थे, "सुद्ध विचार का आदमी है। ससकार बहुत अच्छा है।" इसके पहले महथ साहेब ने किसी पर इतना विश्वास नही किया था। मठ मे रोज तरह-तरह के साधु-सन्यासी आते थे। महथ साहेब रोज यह कहना नही भूलते थे– 'लछमी इन लोगो का कोई विश्वास नही। रमता लोग है। इन लोगो से ज्यादे मिलना जुलना अच्छा नही !" नई उमर के साधुओ को पैर की आहट से ही वे पहचान लेते थे। उनके अतर की दृष्टि बडी तेज थे। पिछले साल एक दिन सत्सग मे एक नौजवान साधु आकर बैठ गया। रात मे आया था, बगहछत्तर[1] जा रहा था। उसके नैन बडे चचल ! सतसग मे बैठकर लछमी की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। महथ साहेब, 'साहेब वचन' सुना रहे थे। आखर[2] कहते कहते अचानक रुक गए। ध्यान 'हो नौगछिया के नौजवान उदासी जी ! अरे साहेब बचन पर धेयान दीजे जी ! लछमी के सरीर पर क्या नैन गडाए हैं ? माटी का सरीर तो मिथ्या है, साहेब वचन सत्त !

बेचारा बिना बालभोग किए ही आसन छोडकर चला गया था। लेकिन बालदेव जी पर उनका बडा विश्वास था। अमल तयागी यही लोग है लछमी !

बालदेव जी को देखते ही लछमी का दुख आधा हो गया। बालदेव जी कहते है 'बडे भाग से ऐसे लोगो का दरसन मिलता है। हमको तो दरसन मिला लेकिन सेवा का औसर नही मिला। हमारा अभाग है।

बालदेव जी आप तो दास है ?

जी ! मेरी मा भी दास थी। माँस मछली छूती भी नही थी।

तब तो आप गरभदास' है। फिर कठी क्या नही ले लेते ?

बालदेव जी जरा होठो पर हँसी लाकर कहते हैं कठी कारिन जी असल चीज है मन। कठी तो बाहरी चीज है।

दूसरा साधू होता तो कठी को बाहरी चीज कहते सुनकर गुस्सा हो जाता। रामदेव गुसाई होते तो तुरत चिमटा लेकर खडे हो जाते गाली गलौज करने लगते। लेकिन लछमी शात होकर कहती है कठी बाहरी चीज नही है बालदेव जी ! भेख है यह। आप विचार करके देखिए। जैसे आपका यह खध्धड कपडा है। मलमल और मारकीन कपडा पहननेवाले मन भले ही महतमा जी के पथ को माने लेकिन आप उन्हे सुराजी तो नही कहिएगा ?

लछमी की बातो का जवाब देना सहज नही। जब जब लछमी से बाते होती है बालदेव जी को नई बातो की जानकारी होती है।

1 बगहछेत्र एक तीर्थस्थान। 2 पंक्ति।

"आप कहती हैं तो ले लेंगे कंठी।"

"किससे लीजिएगा ?"

"आप ही दे दीजिए।"

लछमी हँस पड़ती है। शोकाकुल वातावरण में लछमी की मुसकराहट जान डाल देती है। ·· कितने सूधे हैं बालदेव जी ! मुझे गुरु बनाना चाहते हैं !

"नहीं बालदेव जी, मैं आपको आचारज जी से कंठी दिलाऊँगी। आचारज जी काशी जी में रहते हैं। मैं आपको अपना बीजक देती हूँ। इसका रोज पाठ कीजिए। बीजक पाठ से मन निरमल होता है, अंतर की ज्योति खुलती है।"

··· बीजक ! एक छोटी-सी पोथी ! 'गयान' का भंडार ! बालदेव जी का दिल धक-धक कर रहा है। लछमी कहती है, "सब हाथ का लिखा हुआ है। उस बार काशी जी से एक विद्यार्थी जी आए थे। बड़े जतन से लिख दिया था। मोती जैसे अच्छर हैं।"

बीजक से भी लछमी की देह की सुगंधी निकलती है। इस सुगंध में एक नशा है। इस पोथी के हरेक पन्ने को लछमी की उँगलियों ने परस किया है··· "पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़ा सो पंडित होय।"

लछमी को देखने से ही मन पवित्र हो जाता है।

नौ

डाक्टर प्रशांतकुमार !

जात ?·

नाम पूछने के बाद ही लोग यहाँ पूछते हैं–जात ? जीवन में बहुत कम लोगों ने प्रशांत से उसकी जाति के बारे में पूछा है। लेकिन यहाँ तो हर आदमी जाति पूछता है। प्रशांत हँसकर कभी कहता है–"जाति ? डाक्टर !",

"डाक्टर ! जाति डाक्टर ! बंगाली है या बिहारी ?"

"हिंदुस्तानी," डाक्टर जवाब देता है।

जाति बहुत बड़ी चीज़ है। जात-पात नहीं माननेवालो की भी जाति होती है। सिर्फ हिंदू कहने से ही पिंड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण हैं ? · कौन ब्राह्मण ! गोत्र क्या है ? मूल कौन है? ·· शहर में कोई किसी से जात नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना ! लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं·चल सकता।

प्रशांत अपनी जाति छिपाता है। सच्ची बात यह है कि वह अपनी जाति के

बारे में खुद नहीं जानता। यदि उसे अपनी जाति का पता होता तो शायद उसे बताने में झिझक नहीं होती। तब शायद जाति-पाति के भेद-भाव पर से उसका भी पूर्ण विश्वास नहीं हटता। तब शायद ब्राह्मण कहने में वह गर्व अनुभव करता।

हिंदू विश्वविद्यालय में नाम लिखाने के दिन भी प्रशांत को कुछ ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ा था। रात-भर वह जगा रह गया था। ··· प्रशांतकुमार, पिता का नाम अनिलकुमार बनर्जी, हिंदू, ब्राह्मण। सब झूठ ! बेचारा डा. अनिलकुमार बनर्जी, नेपाल की तराई के किसी गाँव में अपने परिवार के साथ सुख की नींद सो रहा होगा। प्रशांत कुमार नामक उसका कोई पुत्र हिंदू विश्वविद्यालय में नाम लिखा रहा है, ऐसा वह सपना भी नहीं देख सकता। · लेकिन प्रशांत अपने तथाकथित पिता डा. अनिलकुमार को जानता है। मैट्रिक परीक्षा के लिए फार्म भरने के दिन डा. अनिल उसके पिता के रिक्तकोष्ठ में आकर बैठ गए थे।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी सुन रहा है। घर की नौकरानी, बाग का माली और पड़ोस का हलवाई भी उसके जन्म की कहानी जानता था। लोग बरबस उसकी ओर उँगली उठाकर कहने लगते थे-"उस लड़के को देखते हो न ? उसे उपाध्याय जी ने कोशी नदी में पाया था। बंगालिन डाक्टरनी ने पाल-पोसकर बड़ा किया है।" फिर लोगों के चेहरों पर जो आश्चर्य की रेखा खिंच जाती थी और आँखो में करुणा की हल्की छाया उतर आती थी, उसे प्रशांत ने सैकड़ों बार देखा है। · एक लावारिस लाश को भी लोग वैसी ही दृष्टि से देखते हैं।

प्रशांत अज्ञात कुलशील है। उसकी माँ ने एक मिट्टी की हाँड़ी में डालकर बाढ़ से उमड़ती हुई कोशी मैया की गोद में उसे सौंप दिया था। नेपाल के प्रसिद्ध उपाध्याय-परिवार ने नेपाल सरकार द्वारा निष्कासित होकर, उन दिनों सहरसा अंचल में 'आदर्श आश्रम' की स्थापना की थी। एक दिन उपाध्याय जी बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए रिलीफ की नाव लेकर निकले, झाऊ की झाड़ी के पास एक मिट्टी की हाँडी देखी-नई हाँडी। उनकी स्त्री को कौतूहल हुआ "ज़रा देखो न, उस हाँड़ी में क्या है ?" नाव झाड़ी के पास पहुँची, पानी के हिलोर से हाँड़ी हिली और उससे एक ढोढा साँप गर्दन निकालकर 'फों-फों' करने लगा। साँप धीरे-धीरे पानी में उतर गया और हाँडी से नवजात शिशु के रोने की आवाज आई, मानों माँ ने थपकी देना बंद कर दिया। · बस, यही उसके जन्म की कथा है, जिसे हर आदमी अपने-अपने ढंग से सुनाता है।

'आदर्श आश्रम' में एक दुखिया युवती थी-स्नेहमयी। स्नेहमयी को उसके पति डा. अनिलकुमार बनर्जी ने त्यागकर एक नेपालिन से शादी कर ली थी। उपाध्याय जी के आदर्श आश्रम में रहकर वह हिरण, खरगोश, मयूर और बंदर के बच्चों पर अपना स्नेह बरसाती रहती थी। तरह-तरह के पिंजड़ों को लेकर वह दिन काट लेती थी। जब उस दिन उपाध्याय-दंपति ने उसकी गोद में सोया हुआ शिशु दिया, तो वह आनंद-विभोर होकर चीख उठी थी-"प्रशांत! ·· आमार प्रशांत !" उस दिन से प्रशांत स्नेहमयी का एकलौता बेटा हो गया। कुछ दिनों के बाद नेपाल सरकार

ने निष्कासन की आज्ञा रद्द करके उपाध्याय-परिवार को नेपाल बुला लिया—आदर्श आश्रम के पशु-पक्षियों के साथ। स्नेहमयी और प्रशांत भी उपाध्याय-परिवार के ही सदस्य थे। उपाध्याय जी ने नेपाल की तराई के विराटनगर में आदर्श-विद्यालय की स्थापना की। स्नेहमयी उसी स्कूल में सिलाई-कटाई की मास्टरनी नियुक्त हुई।

स्नेहमयी के स्नेहांचल में पलते हुए किशोर प्रशांत पर कर्मठ उपाध्याय-परिवार की रोशनी नहीं पड़ती तो वह सितार के झलार ओर रवींद्र-संगीत के बसंत-बहार के दायरे से बाहर नहीं जा सकता था। उपाध्याय जी का ज्येष्ठ पुत्र बिहार विद्यापीठ का स्नातक था और मँझला देहरादून के एक प्रसिद्ध अंग्रेजी स्कूल का विद्यार्थी। पुत्री शांतिनिकेतन में शिक्षा पा रही थी। छुट्टियों में जब वे एक जगह इकट्ठे होते तो शांतिनिकेतन में शिक्षा पानेवाली बहन चर्खा चलाना सीखती, विद्यापीठ के स्नातक आश्रम-भजनावली की पंक्तियों पर राविंद्रिक सुर चढ़ाते और अंग्रेजी स्कूल का स्टूडेंट सेवादल के कवायदों के हिंदी कमांड के वैज्ञानिक पहलू पर बहस करता—'एटेंशन' में जो फोर्स है वह 'सावधान' में नहीं ! एटेंशन सुनते ही लगता है कि दर्जनों जोड़े बूट चटख उठे।

ऐसे ही वातावरण में प्रशांत के व्यक्तित्व का विकास हुआ।

हिंदू विश्वविद्यालय से आई. एस-सी. पास करके के बाद वह पटना मेडिकल कालेज में दाखिल हुआ। माँ की इच्छा थी कि वह डाक्टर बने। लेकिन अपने प्रशांत को वह डाक्टर के रूप में नहीं देख पाई। काशीवास करते-करते, काशी की किसी गली में वह हमेशा के लिए खो गई! ·· एक बार लाहौर से प्रशांत के नाम पर एक मनिआर्डर आया था—विजया का आशीर्वाद लेकर। भेजनेवाली थी—श्रीमती स्नेहमयी चोपड़ा। एक माँ ने जन्म लेते ही कोशी मैया की गोद में सौंप दिया और दूसरी ने जनसमुद्र की लहर को समर्पित कर दिया।

डाक्टरी पास करने के बाद जब वह हाउस सर्जन का काम कर रहा था, 1942 का देशव्यापी आंदोलन छिड़ा। नेपाल में उपाध्याय-परिवार का बच्चा-बच्चा गिरफ्तार किया जा चुका था। अंग्रेजी सरकार को पूरा पता था कि उपाध्याय-परिवार हिंदुस्तान के फ़रार नेताओं की सिर्फ मदद ही नही करता है, गुप्त आंदोलन को सक्रिय रूप से चला भी रहा है। मँझला पुत्र बिहार की सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्ता था, वह पहले ही नजरबंद हो गया था। प्रशांत भी तो उपाध्याय-परिवार का था, वह कैसे बच सकता था ? उसे भी नजरबंद कर लिया गया। जेल में विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के निकट संपर्क में रहने का मौका मिला· सभी दल के लोग उसे प्यार करते थे।

1946 में जब कांग्रेसी मंत्रिमंडल का गठन हुआ तो एक दिन वह हेल्थ मिनिस्टर के बँगले पर हाजिर हुआ। वह पूर्णिया के किसी गाँव में रहकर मलेरिया और काला-आज़ार के संबंध में रिसर्च करना चाहता है; उसे सरकारी सहायता दी जाए। मिनिस्टर साहब ने कहा था—"लेकिन सरकार तुमको विदेश भेज रही है। स्कालर-शिप·· "

"जी, मैं विदेश नहीं जाऊँगा," पूर्णिया और सहरसा के नक्शे को फैलाते हुए

उसने कहा था, "मैं इसी नक्शे के किसी हिस्से में रहना चाहता हूँ। यह देखिए, यह है सहरसा का वह हिस्सा, जहाँ हर साल कोशी का तांडव नृत्य होता है। और यह पूर्णिया का पूर्वी अंचल जहाँ मलेरिया और काला-आज़ार हर साल मृत्यु की बाढ़ ले आते हैं।"

मिनिस्टर साहब प्रशांत को अच्छी तरह जानते थे। इस विषय पर प्रशांत से तर्क में जीतना मुश्किल है। "लेकिन सवाल यह है कि·· "

"सवाल-जवाब कुछ नहीं। मुझे किसी मलेरिया सेंटर में ही भेज दीजिए !"

"मलेरिया सेंटर में ? लेकिन तुम एम. बी. बी. एस. हो और मलेरिया काला-आज़ार सेंटरो में एल. एम. पी. डाक्टर लिए जाते है।"

"जब तक मैं यह रिसर्च पूरा नहीं कर लेता, मै कुछ भी नहीं हूँ। मेरी डिग्री किस काम की ?"

बहुत मेहनत से नई और पुरानी फाइलों को उलटकर और पूर्णिया डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन से लिखा-पढ़ी करके मिनिस्टर साहब ने मि. मार्टिन की दी हुई जमीन के बारे मे पता लगाया! बीस-बाईस वर्ष पहले मिनिस्टर साहब पूर्णिया में ही वकालत करते थ। पगले मार्टिन को उन्होंने देखा था।

अत में केंद्रीय सरकार से सलाह-परामर्श के बाद एक दिन प्रसे-नोट में यह खबर प्रकाशित हुई कि पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक गाँव में मलेरिया स्टेशन खोला गया है (दि स्टेशन विल अडरटेक मलेरिया ऐंड काला-आज़ार इन्वेस्टिगेशन इन ऑल ऐस्पेक्ट्स–प्रिवेन्टिव, क्यूरेटिव ऐंड इकोनामिक)।

प्रशात के इस फैसले को सुनकर मेडिकल कालेज के अधिकारियों, अध्यापकों और विद्यार्थियो पर तरह-तरह की प्रतिक्रिया हुई। मशहूर सर्जन डा. पटवर्धन ने कहा, "बेवकूफ है !"

ई. एन. टी. के प्रधान डाक्टर नायक बोले, "पीछे आँखे खुलेंगी।"

मेडिसन के डाक्टर तरफदार की राय थी, "भावुकता का दौरा भी एक खतरनाक रोग है। मालूम ?"

लेकिन प्रिंसिपल साहब खुश थे, "तुमसे यही उम्मीद थी। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ ! जब कभी तुम्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो, हमें लिखना।"

प्रशांत का गला भर आया था।

मद्रास के मेडिकल गजट ने संपादकीय लिखकर डा प्रशांत का अभिनंदन किया।

·· और जिस दिन वह पूर्णिया आ रहा था, स्टीमर खुलने में सिर्फ पाँच मिनट की देरी थी, उसने देखा, एक युवती सीढ़ी से जल्दी-जल्दी उतर रही है। कौन है ? ममता ! हाँ, ममता ही थी।

आते ही बोली, "आखिर तुम्हारा भी माथा खराब हो गया। तुमने तो कभी बताया नही। बलिहारी है तुम्हारा ! ··· ओह, प्रशांत, तुम कितने बड़े हो, कितने महान् ! ·· मैं तो अभी आ रही हूँ बनारस से। आते ही चुन्नी ने तुम्हारी चिट्ठी

दी।"

रूमाल से फूल और बेलपत्र निकालकर प्रशांत के सिर से छुलाते हुए ममता ने कहा था, "बाबा विश्वनाथ जी का प्रसाद है। बाबा विश्वनाथ तुम्हारा मगल करें। पहुँचते ही पत्र देना।"

दस

डाक्टर पत्र लिख रहा है–

"ममता,

तुमने कहा था, पहुँचते ही पत्र देना। पहुँचने के एक सप्ताह बाद पत्र दे रहा हूँ। तुम्हारे बाबा विश्वनाथ ने मेरे आने से पहले ही अपने एक दूत को भेज दिया है। प्यारू सचमुच देवदूत है। इसलिए तुमको चिंता करने की आवश्यकता नहीं। सात ही दिनों में वह दो बार रूठ चुका है–'कहने को तो डाक्टर हैं, मगर समय पर नहीं खाने-पीने से देह पर कितना खराब असर होता है नहीं जानते ?' इसी से प्यारू का पूरा परिचय तुम्हें मिल गया होगा।

"यह एक नई दुनिया है। इसे वज्र देहात कह सकती हो। गाँव का चौकीदार सप्ताह मे एक बार हाजिरी देने थाने पर जाता है; वह मेरी डाक लाएगा और ले जाएगा।

"काम शुरू कर दिया है। सुबह सात बजे से ही रोगियो की भीड लग जाती है। अभी जनरल सर्वे कर रहा हूँ; खून लेकर परीक्षा कर रहा हूँ। प्यारू कहता है, यहाँ कौआ को भी मलेरिया होता है।

"... यहाँ गड्ढो और तालाबों में कमल के पत्ते भरे रहते हैं। कहते हैं, फूलों के मौसम में छोटी-छोटी गड्हियाँ भी किस्म-किस्म के कमल और कमलिनी से भर जाती हैं। लेकिन यहाँ के लोगों को तुम लोटस ईटर्स नहीं कह सकती हो ! गड्ढो की परीक्षा कर रहा हूँ। .. यहाँ की धरती बारहों महीने भीगी रहती है शायद !

"गाँव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं; सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे है वे। जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी। यह मेरा सिर्फ सात दिन का अनुभव है। संभव है, पीछे चलकर

मेरी धारणा गलत साबित हो। मिथिला और बगाल के बीच का यह हिस्सा वास्तव में मनोहर है। औरते साधारणतः सुंदर होती हैं, उनके स्वास्थ्य भी बुरे नहीं… !"

"डाक्टर साहब !"

"कौन ?"

"विश्वनाथप्रसाद।"

"आइए। कहिए क्या है ?"

"डाक्टर साहब, जरा एक बार मेरे यहाँ चलिए। मेरी लड़की बेहोश हो गई है।"

"बेहोश ! क्या उम्र है ? इससे पहले भी कभी बेहोश हुई थी ?"

"जी ! दो-तीन बार और ऐसा ही हुआ था। उम्र ? यही सोलह-सत्रह साल धर लीजिए। जरा जल्दी ।"

"चलिए।"

बंद कमरे मे एक चारपाई पर, नीली रजाई मे लिपटी हुई युवती का गोरा मुखड़ा बाहर है। बाल खुले और बिखरे हुए है। आँखे बद हैं। कोठरी में लालटेन की मद्धिम रोशनी हो रही है–रोशनी कम और धुआँ ज्यादा।

डाक्टर खिड़कियाँ खोलने के लिए कहता है और जेब से टार्च निकालकर युवती के चेहरे पर रोशनी देता है। चेहरा ठीक है। साँस ? ठीक है। नाड़ी भी दुरुस्त है।

डाक्टर आँखों की पलकों को उलटता है, मानो कमल की पंखुड़ियाँ हों–ब्राइट! · पेट ? कब्ज तो नहीं ?

कोई जवाब नहीं देता है। घूँघट काढ़े खड़ी औरतों के घूँघट आपस में मिलते हैं। एक अधेड़ स्त्री आगे बढ़ जाती है। युवती की माँ है। "जी, कब्जियत नहीं है।"

घर की नौकरानी पर्दा नहीं करती है। कहती है, "डागरडरबाबू, लर लगाकर देखिए न !"

लर, अर्थात् स्टेथस्कोप। यहाँ के लोगो का विश्वास है कि इससे डाक्टर रोगी के अंदर की सारी बातों को जान लेता है–क्या खाया है, पेट में पचा है या नहीं, अब।

"सूई दीजिएगा ?"

"हूँ !"

डाक्टर सिरिंज ठीक करता है। युवती आँखें खोल देती है–

"सुई ? · नहीं, सूई नहीं। माँ ! अरे बाप !"

"अच्छा सुई नही देंगे। कैसी तबियत है ? अच्छी बात है। हूँ। क्यों बेहोश हो गईं। हाँ, बेहोशी कैसे हुई ? डर लगा था। हूँ ! काहे का डर लगा था ? · तब ? इसके बाद ? देह घूमने लगी। ठीक है। अब कैसी हैं ? डर तो नहीं लगता ?

दवा भेज दूँगा, अब डर नहीं लगे।

"दवा ? ·· दवा नहीं। माँ, मैं दवा नहीं पियूँगी।"

"वाह, सुई भी नहीं और दवा भी नहीं? ··मीठी दवा ?"

सभी हँस पड़ते हैं। युवती के मुरझाये हुए लाल होठों पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। आँखों की पलकें ज़रा उठाकर मानों डाक्टर को डाँट देती हैं–"हट ! दवा भी कहीं मीठी होती है !"

बाहर आकर डाक्टर तहसीलदार से कहता है, "घबराने की बात नहीं दवा भेज देता हूँ। इसके पहले कितनी देर तक बेहोश रहती थीं ?"

"करीब एक घंटा। जोतखी जी से एक बार जंतर बनवाके दिया। झाड़-फूँक भी करवाकर देखा। डाक्टर साहब, बस यही मेरा बेटा, यही मेरी बेटी··· सबकुछ यही है।"

"ठीक हो जाएँगी।"

सेंटर में आकर डाक्टर सोचता है, क्या दिया जाए ! मीठी दवा ! कार्मिनेटिव मिक्श्चर या ब्रोमाइड! · "अजी, तुम्हारा क्या नाम है ?"

"मेरा नाम ? जी, नाम रनजीत।"

"तहसीलदार साहब के यहाँ कितने दिनों से नौकरी करते हो ?"

"बहुत दिन से। लड़कैयाँ से। ··· एक ठो बीडी है तो दीजिए दागदरबाबू।"

"प्यारू, रनजीत को बीड़ी पिलाओ।"

प्यारू बीड़ी-दियासलाई दे जाता है। बीड़ी सुलगाकर रनजीत अपने आप कहता है, "दागदरबाबू ! तहसीलदार को दिन-दुनियाँ में बस यही एक बेटी है। कितना मानत-मनौती के बाद कमला मैया ने निंहारा भी तो बेटी ही हुई। मगर··· !"

रनजीत बीड़ी की राख झाड़कर चुप हो जाता है। डाक्टर ने लक्ष्य किया है, रनजीत ने 'मगर' पर आकर पूर्ण विराम दे दिया है।

"मगर क्या ?"

"यही देखिए न ! तीन जगह बातचीत चली, मगर·· पहली जगह से तो पान देने की बात भी पक्की हो गई थी। ठीक तिलक-पान के दिन लड़के की माँ मर गई। दूसरी जगह बातचीत ठीक हुई तो उसके घर में आग लग गई। तीसरे लड़के को 'मैया' हो गया, इंतकाल हो गया। अब कोई लडकावाला तैयार ही नहीं होता। हजार, दो हजार, पाँच हजार रुपैया भी कबूलते हैं, मगर· । आखिर में एक 'पछवरिया कैथ' को घर-जमैया रखने के लिए लाए, बस उसी दिन से कमली को मिरगी आने लगी। लोग तो कहते हैं कि कमला मैया नहीं चाहती हैं कि कमली की सादी हो। कमला मैया भी कुमारी ही थीं न ! अब आप लगे हैं। किसी तरह कमली दैया को आराम कर दीजिए दागदर बाबू ! जो बक्सीस माँगिएगा, तहसीलदार दे देंगे।"

"देखो रनजीत, तीन खुराक दवा है। मीठी दवा है। तुम्हारी कमली दैया आराम हो जाएँगी। कल सुबह फिर एक बार खबर देना। समझे !"

"तीन खोराक ! खाएगी क्या ?"

"अभी ? अभी रोटी-दूध।"

"रनजीत !" एक आदमी दौडा हुआ आता है।

"कौन रामदेल, क्या है ?"

"कमली दैया फिर बेहोश हो गई। तहसीलदार साहेब कहिन हैं कि दागदरबाबू फिर एक बार ज़रा तकलीफ करे।"

डाक्टर घडी देखता है। नौ वजकर दस मिनट। कुछ ही देर मे समाचार होगे। डाक्टर कुछ सोचकर कहता है, "रजनीत ! वह बक्सा उठाओ ! ले चलो।"

"बेतार का खबर ?"

"हाँ, तुम्हारी कमली दैया का इलाज बेतार से ही होगा।"

कमला फिर पहले की तरह बेहोश पडी हुई है। उसकी ऑखे बद हैं ! बाल बिखरे हुए हैं। डाक्टर को रोग का निदान मिल गया है। वह अपने बैग से शीशी, सिरिंज वगैरह निकालता है।

"सूई ? सूई नही।" कमला फिर होश मे आती है।

"बगैर सूई के आपका रोग आराम नही होगा।" डाक्टर सिरिज ठीक करता है।

"दवा दीजिए डाक्टर साहब ! मै सूई नही लूँगी।"

"फिर डर लगा था ?"

"हाँ।"

"रनजीत, दवा की शीशी कहॉ है ? लाओ, बक्सा यहॉ लाकर रखो। हॉ, पी लीजिए। ठीक है। कैसी है दवा ? मीठी है न ?"

डाक्टर पोर्टेबल रेडियो को खोलकर मीटर ठीक करता है–"यह ऑल इडिया रेडियो है। रात के सवा नौ बजे हैं। अब आप हिंदी मे समाचार सुनिए।"

"डर लगता है। मॉ !"

"देखिए, डर की कोई बात नही। सुनिए।"

"मुझे उठा दो माँ !"

"उठिए मत। लेटी रहिए।"

" अब आप सवितादेवी से एक मैथिली लोकगीत सुनिए !"

माइगे, हम ना बियाहेब अपन गौरा के
जौं बुढ़वा होइत जमाय गे माई !

"ओ मॉ !" कमला खिलखिलाकर हँस पड़ती है, "शादी का गीत हो रहा है।"

हम ना बियाहेब अपन गौरा के…

कोठरी ओर आँगन में घूँघट काढ़े औरतो की भीड लग जाती है। कमला

पर ब्रोमाइड का असर हो रहा है, उसकी आँखों में नींद झाँक रही है।

डाक्टर लौटकर खत को पूरा करने बैठ जाता है। सुबह सात बजे से रोगियों की भीड़ लग जाती है। अगमू चौकीदार कल हाज़िरी देने जाएगा। पाँच बजे भोर को ही आकर वह पुकारेगा। डाक्टर लिखता है–

"पत्र अधूरा छोड़कर एक केस देखने गया था। केस अजीब है। केस-हिस्ट्री और भी दिलचस्प है। तुम्हारी शीला रहती तो आज खुशी से नाचने लगती; हिस्टीरिया, फ़ोबिया, काम-विकृति और हठ-प्रवृत्ति जैसे शब्दों की झड़ी लगा देती। शीला से भेंट हो तो कहना–मैंने अपने पोर्टेबल रेडियो से उसके दिमाग को झकझोरकर दूसरी ओर करने की चेष्टा की है।... "

ग्यारह

नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरबरिया से
नहीं तोरा पास में तीर जी !...

एक सखी ने पूछा कि हे सखी, तुम्हारे पास में न तीर है न तलवार।

... नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरबरिया से
कौनहि चीजवा से मारलू बटोहिया के
धरती लोटाबेला बेपीर जी ई ई ई।...

यह सुनकर जो औरत सदाब्रिज पर मोहित थी, बोली–

... सासू मोरा मरे हो, मरे मोरा बहिनी से,
मरे ननद जेठ मोर जी !
मरे हमर सबकुछ पलिबरवा से,
फसी गइली परेम के डोर जी !...

इतना कहकर वह सदाब्रिज के पास आई और पानी पिलाकर प्रेम की बातें करने लगी।..

आजु की रतिया हो प्यारे, यहीं बिताओ जी !

तंत्रिमाटोली में सुरंगा-सदाब्रिज की कथा हो रही है। मँहगूदास के घर के पास लोग जमा हैं। पुरैनिया टीसन से एक मेहमान आया है, रेलवै में काज करता है।

तत्रिमाटोली के लोग कहते है–खलासी जी ! खलासी जी सरकारी आदमी हैं। खलासी जी यदि लाल पत्तखा दिखला दे तो डाक-गाडी भी रुक जाए। रुकेगी नही ? लाल पत्तखा देखते ही रेलगाडी रुक जाती है। लाल ओढना ओढकर गाडी पर चढने जाओ तो ! गाडी रुक जाएगी और ओढना जप्पत हो जाएगा। खलासी जी बहुत गुनी आदमी हैं। पक्का ओझा हैं। चक्कर पूजते हैं। भूत-प्रेत को पेड मे कॉटी ठोककर बस मे करते हैं। बॉझ-निपुत्तर को तुकताक[1] कर देते हैं। कुमर विज्जैभान, लोरिका और सुरगा सदाब्रिज का गीत जानते हैं। गला कितना तेज है! उस बार सुराजी हूलमाल[2] म खलामीजी ने लिख दिया था–"बैगनबाडी के जमीदार के लडके ने रेल का लैन उखाडा है।' बस, फॉसी हो गई ! हैकोठ और नदन[3] तक फॉसी बहाल रही। लेकिन मॅहगूदाम को कौन समझाए ? बेचारे खलासी जी एक माल से दौड रहे हैं। मॅहगूदास की बेवा बेटी फुलिया से पच्छिम की बातचीत पक्की करने के लिए। हर बार खलासी जी झोरी मे मोरगिया (नेपाली) गॉजा लाते हैं, तत्रिमाटोली के पचो को पिलाते हैं, सुरगा-सदाब्रिज गाते हैं, गॉव के बीमार लोगो को झाड-फूंक देते हैं। उस बार उचितदास की डेरावाली को तुकताक कर दिया, मरने के चार दिन पहले बूढा उचितदास सतान का मुॅह देख गया।

लेकिन मॅहगूदाम को कौन समझाए ? फिर खलासी जी लेन देन की बात भी करते है। एक कौडी नगद न दगे, जाति-बिरादरी को एक साम भोज कबूलते है और क्या चाहिए ? सरकारी आदमी जमाई होगा। कभी तीरथ करने के लिए जाएँगे, तो रेल मे टिकम भी नही लगेगा।

रमजूदास की स्त्री तत्रिमाटोली की औरतो की सरदारिन है। हाट-बाजार जाने के समय, मालिको के खेतो मे धान रोपने और काटने के समय आर गॉव मे शादी-ब्याह के समय टोल भर की औरते उसकी सरदारी मे रहती हैं। राजपूत, बाभन और मालिकटोले सभी बाबू बबुआन से मुॅहामुॅही बात करती है, दिल्लगी का जवाब हॅसकर देती है। और समय पडने पर हाथ चमका-चमकाकर झगडा भी करती है। एक बार तो सिघ जी की भी सीसी सटका दिया था–"ऊॅह बूढा हो गया है, चाट लगी हुई है। सिर के बाल सादा हो गए हैं, मन का रग नही उतरा है। हमारा मुॅह मत खुलवाइए सिघ जी !" उससे सभी डरते हैं। न जाने कब किसका भेद खोल दे ! सभी उसकी खुशामद करते हैं; टोले-भर की जवान लडकियाँ उसकी मुट्ठी मे रहती है। उससे कोई बाहर नही। खलासी जी इस बार लालबाग मेला से उसके लिए असली गिलट का कगना ले आए हैं। चाँदी की तरह चमक है। " मौसी, किसी तरह फुलिया से चुमौना ठीक कर दो।"

अरे सूते ले देबौ हो प्यारे लाली पलॅंगिया से…
खाए ले गुआ खिल्ली पान जी !…

1 टोटका। 2 आदोलन। 3 लदन

खलासी जी आज दिल खोलकर गा रहे हैं। उन्हें आज ऐसा लग रहा है कि वे खुद सदाब्रिज हैं। लेकिन न तो उसकी फुलिया उसे रहने के लिए बिनती करती है और न मैंहगूदास चुमौना की बात मंजूर करता है !··· "अरू सूते ले देबौ हो प्यारे लाली पलँगिया से··· !"

फुलिया क्या करे ? माँ-बाप के रहते वह क्या बोल सकती है ! अंदर-ही-अंदर मन जलकर खाक हो रहा है, लेकिन मुँह नहीं खोल सकती। लोग क्या कहेंगे !

रमजूदास की स्त्री फुलिया के जलते हुए दिल की बात जानती है। उस दिन फुलिया कह रही थी–"मामी, काली किरिया, किसी से कहना मत। खलासी जी इतने दिनों से दौड़ रहे हैं। बाबा कोई बात साफ-साफ नहीं कहते हैं। आखिर वह बेचारा कब तक दौड़ेगा ? यहाँ नहीं तो कहीं ओर ढूँढ़ेगा। दुनिया में कही और तंत्रिमा की बेटी नहीं है क्या ? जब एक दिन कुछ हो जाएगा तो सहदेब मिसर देह पर माछी भी नहीं बैठने देगा। तब करो खुशामद नककट्टी चमाइन की और चिचाय की माँ की ! मुसब्बर चबाओ और ऐंड़ी से पेट को आँटा की तरह गुँथवाओ। उस बार जोतखी का बेटा नामलरैन ने क्या दिया ? अंत में नककट्टी को गाभिन बकरी देकर पीछा छुडाया "

याद जो आवे है प्यारी तोहरी सुरतिया से
शाले करेजवा मे तीर जी··· !

खलासी जी का तीर खाया हुआ दिल तडप रहा है। फुलिया क्या करे ? लेकिन रमजूदास की स्त्री का मुँह कौन बद कर सकता है ? · "अरे फुलिया की माये ! तुम लोगों को न तो लाज है और न धरम। कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारीवाली साड़ी चमकाओगी ? आखिर एक हद होती है किसी बात की ! मानती हूँ कि जवान बेवा बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना मत दूहो कि देह का खून भी सूख जाए।"

"अरे हाँ-हाँ, बेटा-बेटी केकरो, घीढारी करे मंगरो। चालनी कहे सुई से कि तेरी पेदी मे छेद ! हाथ मे कंगना तो चमका रही हो, खलासी को एक पुडिया सिंदूर नहीं जुटता है ?" फुलिया की माँ ने जब से रमजूदास की स्त्री के हाथ कगना देखा है, उसका कलेजा जल रहा है। मैंहगूदास पर गुस्सा करने से कोई फायदा नहीं। खलासी की बुद्धि ही मारी गई है। रमजू की स्त्री को कुटनी बहाल किया है, कंगना दिया है। रमजू की स्त्री काली माई है जो लोग उसकी बात को मान लेंगे।

"मुँह सँभालकर बात कर नेंगड़ी ! बात बिगड़ जाएगी। खलासी हमारा बहन-बेटा है। बहन-बेटा लगाकर गाली देती है ? गाली हमारी देह मे नहीं लगेगी। तेरे देह में तो लगी हुई है। अपने खास भतीजा तेतरा के साथ भागी तू और गाली देती है हमको·? सरम नहीं आती है तुझको ! बसेरमी, बेलज्जी ! भरी पंचायत में जो पीठ पर झाड़ू की मार लगी थी सो भूल गई ? गुअरटोली के कलरू के साथ रात-भर

भैंस पर रसलील्ला करती थी सो कौन नहीं जानता है। तूँ बात करेगी हमसे ?"

"रे, सिंघवा की रखेली ! सिंघवा के बगान का बंबै आम का स्वाद भूल गई। तरबन्ना में रात-रात-भर लुकाचोरी मैं ही खेलती थी रे ? कुरअँखा बच्चा जब हुआ था तो कुरअँखा सिंघवा से मुँह-देखौनी में बाछी मिली थी, सो कौन नहीं जानता ?"

"··· एतना बात सुनते ही सदाब्रिज फिर मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़ा।··· "

मैंहगूदास के घूर के पास होनेवाली सुरंगा-सदाब्रिज की कथा में औरतों के झगड़े से कोई बाधा नहीं पहुँचती है। औरतों के झगड़े पर यदि मर्द लोग आँख-कान देने लगें तो हुआ ! औरतों के झगड़े का क्या ? अभी झगड़ा किया, एक-दूसरे को गालियाँ सुनाईं, हाथ चमका-चमकाकर, गला फाड़-फाड़कर एक-दूसरे के गड़े हुए मुर्दे उखाड़े गए, जीभ की धार से बेटा-बेटी की गर्दन काटी गई, काली माई को काला पाठा कबूला गया, हाथ और मुँह को कोढ़-कुष्ठ से गलाने की प्रार्थना की गई और एक-दो घंटे के बाद ही सफाई मेल-मिलाप हो गया। एक-दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर गुड़गुड़ाने लगीं। साग माँगकर ले गईं और बदले में शकरकंद भेज दिया—"कल साम को मालिक के खेत से अँधेरे में उखाड़ लाया है लड़के ने ! मालिक देखते तो पीठ की चमड़ी खींच लेते।"

पहले झगड़ा का सिरगनेस दो ही औरतों से होता है। झगड़े के सिलसिले में एक-एक कर पास-पड़ोस की औरतों के प्रसंग आते-जाते हैं और झगड़नेवालियों की संख्या बढ़ती जाती है। झगड़े से उनके कामकाज में भी कोई बाधा नहीं पहुँचती है। काम के साथ-साथ झगड़ा भी चल रहा है। जब सारे गाँव की औरतें झगड़ने लगती हैं, तब कोई किसी की बात नहीं सुनतीं; सब अपना-अपना चरखा ओटने लगती हैं··· लेकिन फुलिया आज झगड़े में हिस्सा नहीं ले रही है। वह टट्टी की आड़ में खड़ी होकर सुरंगा-सदाब्रिज की कथा सुन रही है।··· खलासी जी के गले में जादू है। ओझा गुनी आदमी है। कथा और गीत मे फुलिया यह भी भूल जाती है कि सहदेव मिसर शाम से ही कोठी के बगीचे में उसके इंतजार में मच्छड़ कटवा रहा है।·· खलासी के गले में जादू है !

"मामी !"

"क्या है रे ? बोल ना ! सहदेव मिसरवा के पास जाएगी क्या ?"

"नहीं मामी, एक बात कहने आई हूँ। काली किरिया, किसी से कहना मत। ·· खलासी जी तो तुम्हारे गुहाल में सोते हैं न ? काली किरिया !"

सुरंगा-सदाब्रिज की कथा समाप्त हो गई है। झगड़ा लंकाकांड तक पहुँचकर शेष हो गया। सहदेव मिसर मच्छड़ों से कब तक देह का खून चुसवाते ?··· साला खलसिया ! साली हरामजादी !··· अच्छा, कल देखूँगा।

गाँव में सन्नाटा छाया हुआ है और रमजू की स्त्री के गुहाल में सुरंगा कह रही है सदाब्रिज से, "अभी नहीं, जब बाबा चुमौना के लिए राजी नहीं होंगे तब मैं तुम्हारे साथ भाग चलूँगी।"

"उनको राजी कैसे किया जाए ? कौन एक मिसर है, सुना है… ।" सदाब्रिज बेचारा ठीक कहता है।

"सब झूटी बात है। तुम बालदेव जी से कहो।"

"कौन बालदेव ! पुरैनियाँ आसरमवाला ?"

"हाँ। सभी उनकी बात मानते हैं ! बाबू-बबुआन भी उनसे बाहर नहीं। तुम बंदगी मत करना, जै हिन्न कहना।"

"लेकिन वह तो हम पर बड़ा नाराज है। देश दुरोहित[1] के फिरिस में नाम दे दिया है।"

"… माँ के लिए नाक की बुलाकी ले आना, असली पीतल की बुलाकी।"

बारह

मठ पर आचारजगुरु आनेवाले हैं, नए महंथ को चादर-टीका देने के लिए ! मुजफ्फरपुर जिला का एक मुरती आया है—लरसिंघदास। आचारजगुरु मुजफ्फरपुर जिले के दुपड़ी मठ पर भंडारा मे आए हैं। लरसिंघदास खबर लेकर आया है—आचारजगुरु आ रहे हैं। मठ के सभी सेवक-सती, आस-पास के बाबू-बबुआन लोगों को पहले ही खबर दे दी जाए !

रामदास को महंथी की टीका मिलेगी ! महंथ सेवादास का एकमात्र चेला वही है।· रामदास सोचता है, यदि खँजड़ी बजाना नहीं जानते तो आज तक बेलाही के जमींदार की भैंस की पूँछ हाथ से नहीं छूटती। महंथ साहब के साथ भागकर मेरीगंज मठ पर आ गया… पंद्रह साल पहले की बात ! पंद्रह साल बाद रामदास का भाग फिरा है। "जै हो सतगुरु साहेब की !"

नियमानुसार मभी पंचों की उपस्थिति मे नया महंथ एक एकरारनामा लिख देगा—हमेशा 'लँगोटाबंद' रहकर सतगुरु के स्थल की रक्षा करेंगे। किसी तरह का मादक द्रव्य नहीं सेवन करेंगे। दासी-रखेलिन नहीं रखेंगे… आदि-आदि। इसके बाद आचारजगुरु एक सुरतहाल[2] पर दस्तखत करके नए महंथ को देंगे। फिर चादर-टीका की विधि !… दही की टीका और सिर पर दूब-धान ! बस, नए महंथ साहेब उस दिन से नौ सौ बीघे की पतनी[3] के एकमात्र मालिक हो जाएँगे।

लरसिंघदास तो आचारज जी का संदेशा लेकर आया था, किंतु मेरीगंज मठ

1. देशद्रोही। 2. महंती का दस्तावेज। 3. छोटी जमींदारी।

पर एक ही रात रहने के बाद उस पर महथी का मोह सवार हो गया। नौ सौ बीघे की काश्तकारी। कलमी आम का बाग। दस बीघे मे सिर्फ केला ही लगा हुआ है। एक-एक घौर मे हजार केले फले हैं। हजरिया केला ! दो कोडी गाय, चार गुजराती भैंस और सबसे कीमती सपत्ति–अमूल्य धन–लछमी दासिन। लछमी दासिन कहती है, "महथ साहेब को बस यही एक चेला है–रामदास ! तो कानूनन रामदास ही होनेवाला अधिकारी महथ है।" रामदास ! काठ का उल्लू रामदास ! सतगुरु हो ! यह अधेर है। रामदास महथ नही हो सकता। छुछुँदर की तरह तो सूरत है, वह महथ होगा ? नही, ऐसा नही हो सकता। और यह लछमी ? श्रापभ्रष्ट अप्सरा !

लछमी ने लरसिघदास की ऑखो मे न जाने क्या देखा है कि उसकी छाया से भी वह बचकर चलती है, रात मे किवाड मजबूती मे बद करके सोती है। किवाड की छिटकनी लगाने के बाद एक ओखल किंवाड मे सटा देती है। लरसिघदास को शायद बहुमूत्र की बीमारी है, रात-भर मे दस ग्यारह बार पेशाब करने के लिए उटता है। हर बार धूनी के पास सोया हुआ रामदास उसे टोकता है–"कौन ?" लरसिघदास किसी बार जवाब नही देता। कल रात एक बार गुस्से मे जवाब दिया–"महथ होने के पहले ही अधे हो गए क्या ? देखते नही हो ? जैसा गुरु वैसा चेला !" रामदास कुनमुनाकर रह गया था। सुबह को सत्सग के समय ही लछमी बरस पडी–"क्यो आप वैसी भाखा बोले थे ? महथ होने के पहले ही अधे हो गए ? जैसा गुरु । गुरु निदा सुनहि जो काना । मैं गुरु-निदा नही सुन सकती, नही सह सकती। रामदास को आप क्या समझते हैं ? वह इस मठ का अधिकारी महथ है। आपके जैसे एक कोडी बिलटा[1] साधुओ को वह रोज परसाद देगा। बात करना भी नही जानते ? आने दीजिए आचारज जी को।"

रामदास भी सुना देता है–"रात मे हम छोड दिया, लेकिन अब बोलोगे तो सीधे पच्छिम का रास्ता दिखा देगे। हॉ, समझ रखो !"

भडारी तो नबरी शैतान है। कल से ही उसने बदमाशी शुरू की है। दाल की कटोरी मे सिर्फ पानी रहता है। आलू की भुजिया दुबारा नही देता। घी मॉगने पर कहता है- "दाल घी से बघारल है।" केला बिक्री होने के लिए हाट भेज दिया जाता है। दूध मे पानी मिलाकर देता है। बालभोग मे पहले दही चूडा देता था, कल से सिर्फ चूडा लाकर रख देता है।

बिलटा साधू ? रडी की यह हिम्मत ! उसे बिलटा साधू कहती है ? अच्छा ! अच्छा !

लछमी पहले से ही तो उसे नही जानती ! कैसे जान सकती है ? वह कभी पहले यहॉ आया नही। पुपडी मठ से भी तो कभी कोई मुरती यहॉ नही आया। सोनमतिया कहारिन भी तो नही आई है यहॉ। सभव है उस बार अपनी बेटी रधिया को खोजने के लिए यहॉ भी पहुँची हो। ठीक है । रधिया ! रधिया को

1 आवारा

पहली बार जब देखा तो उसके मन की ऐसी हालत हुई थी। कनपट्टी के पास हमेशा गर्म रहता था। लेकिन रधिया अल्हड़ थी। एक ही चक्कर में जाल में आ गई थी। लछमी तो पुरानी है, खेली-खिलाई है। सत्तर चूहे खाई हुई है।··· यदि वह रधिया को लेकर नौटंकी कंपनी में नहीं शामिल होता तो रधिया हाथ से नहीं निकलती। नौटंकी कंपनी के मालिक की ही बात रहती, तो वह सह ले सकता था, हारमोनियम और नगाड़ावाले भी रधिया को कभी फुर्सत नहीं देते थे। कभी ताल को रिहलसल करना है, तो कभी नाच सिखाना है।··· रधिया साली भी कुत्ती ही थी। वह भी तो बदल गई थी।

लरसिंघदास अपने सिर के दाग पर हाथ फेरकर मफलर से ढक लेता है—साले नगाड़ची ने ठीक सामने कपाल पर ही डंडा चलाया था।

··· मठ लौटने पर महंथ साहेब ने खड़ाऊँ से मरम्मत की थी। लेकिन सात दिन से उपवास किए हुए शरीर में इतना दम कहाँ था जो भागते ! सिर का घाव ताज़ा ही था। महंथ साहेब की खड़ाऊँ गुरु की खड़ाऊँ थी। महंथ साहेब के पैर पर वह लेटा रहा था। वे बहुत दयालु पुरुष थे। लरसिंघदास उनका एकलौता चेला था। गुरु ने छिमा कर दिया। महंथ साहेब के शरीर त्यागने के बाद पुपड़ी-मठ की महंथी उसे ही मिलती, लेकिन रामबरन कोयरी ने उसकी मती फेर दी थी।··· लरसिंघदास, नेपाली गाँजा में बड़ा नफा होता है। दस रुपए का लाओ और चार सौ बनाओ। नेपाल में चार आने सेर गाँजा मिलता है। बराहछत्तर मेला के समय चलो !"

महंथ साहेब ने जब शरीर त्याग किया तो वह जेल में था। महंथ साहेब ने मरने के समय जीऊतदास को चेला कबूलकर 'वील' लिख दिया।··· नहीं तो वह भी एक मठ का महंथ होता। तब लछमी उसे बिलटा साधू नहीं कह सकती। तब तो पैर पखारकर, पैर के दसों नाखूनों को धोकर वह परेम से चरनोदक पीती। ··· लेकिन वह लछमी को चरनोदक पिलाकर छोड़ेगा।

"रामदास।"

"क्या है ? रामदास मत बोलिए, अधिकारी जी कहिए।"

"कोठारिन से कहो कि लरसिंघदास आज जा रहे हैं।"

"जा रहे हैं तो जाइए।"

"तुम कोठारिन से कहो··· ।"

"तुम-ताम मत करो। कोठारिन जी से क्या कहेंगे, राह-खर्च कल ही कोठारिन जी ने दे दिया है!"

रामदास झोली से एक पाँच रुपए का नोट निकालकर लरसिंघदास के आगे फेंक देता है।

"हम पूछना चाहते हैं कि कोठारिन ने हमारा अपमान काहे किया ? हमको बिलटा काहे बोली ? हमारे आचारजगुरु को काहे गाली दिया ?"

"आचारजगुरु को कब गाली दिया है ?"

"दिया है। बोली नहीं थी,··· पूजा-बिदाई लेने के समय आचारजगुरु हैं. बेर-बखत

पड़ने पर सीधा जवाब मिलता है। आज आचारजगुरु हुए हैं, कल तक तो गुरुभाई थे। यह गाली नहीं तो और क्या है ?"

"संसार में सत्त का भी लेस ज़रा रहने दीजिए साधू महाराज," लछमी अंदर से निकलकर कहती है, "साधू का काम झूठ बोलना नहीं है। छिः-छिः !"

"छिः-छिः क्या ? हमको बिलटा नहीं कहा है··· आ··· आ··· आप··· तुमने ?"

"रामदास !" लछमी गरज उठती है, "गरदनियाँ देकर निकाल दो इसको। यह साधू नहीं, राक्षस है। उसके सिर पर माया सवार है। इससे पूछो, आज सवेरे जब मैं स्नान कर रही थी तो बाँस की पट्टी में छेद करके यह क्या देखता था ? सैतान !"

लछमी फुफकारती हुई अंदर चली जाती है।

रामदास उठकर लरसिंघदास के गले में हाथ लगाकर धक्का देता है। लरसिंघदास सीढ़ी पर गिर पड़ता है। नाक से खून निकल रहा है।

"जाय हिंद रामदास जी ! क्या है ? क्या हुआ ?" बालदेव जी लहू देखकर घबरा जाते हैं।

"कुछ नहीं, पछवरिया साधू है। काया में कहीं साधू-सुभाव नहीं। कोठारिन जी से बतकुट्टी[1] करता था।"

"तो मारपीट क्यों हुई ? सांती से सब काम करना चाहिए। हिंसा-बात नहीं करना चाहिए।

"रामदास ! बालदेव जी को अंदर भेज दो !"

लरसिंघदास नाक का खून पोंछते हुए देखता है—बालदेव नाम का यह खध्धड़धारी आदमी अंदर जा रहा है—सीधे लछमी की कोठरी में !··· जायहिंद बालदेव जी !

··· शायद यह खध्धड़धारी और लछमी एक ही आसनी पर बैठे हैं। एकदम आसपास-देह-से-देह सटाकर !··· अच्छा !

तेरह

गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

सिर्फ जोतखी जी नहीं, गाँव के सभी मातबर लोग मन-ही-मन सोच-विचार कर देख रहे हैं—गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

तहसीलदार साहब को स्टेट के सर्किल मैनेजर ने बुलाकर एकांत में कहा है,

1. वाद-विवाद।

"एक साल का भी खजाना जिन लोगों के पास बकाया है, उन पर चुपचाप नालिश कर दो। बलाय-बलाय[1] से नोटिस 58 बी. तामील करवा लो। कुर्की और इश्तहार निकास करवाकर सरज़मीन पर चपरासी को ले जाने की जरूरत नहीं कचहरी में ही बैठकर गाँव के चमार से अँगूठा का टीप लेकर ढोल बजाने की रसीद बनवा लो।··· गाँव के एक-दो गवाहों को भी ठीक करके रखो। स्टेट से उनको भत्ता मिलेगा। इन काँगरेसियों का कोई ठीक नहीं।"

सिंघ जी यादवटोला के नढ़ेलों[2] का सीना तानकर चलना बरदाश्त नहीं कर सकते। जोतखी जी ठीक कहते थे–बार बार लाठी-भाला दिखलाते हैं। हौसला बढ़ गया है। अब तो राह चलते परनाम-पाती भी नहीं करते हैं यादव लोग ! कलिया कभी-कभी चिढ़ाने के लिए नमस्कार करता है। देह में आग लग जाती है सुनकर। लेकिन सिंघ जी क्या करें ? राजपूतटोली के नौजवान लोग भी ग्वालों के दल में ही धीरे-धीरे मिल रहे हैं। अखाड़े में ग्वालों के साथ कुश्ती लड़ते हैं। रोज शाम को कीर्तन में भी जाने लगे हैं। हरगौरी ठीक कहता था–यदि यही हालत रही, तो पाँच साल के बाद ग्वाले बेटी माँगेंगे। तब काली कुर्तीवालों के बारे में जो हरगौरी कहता था, उन लोगों को बुला लिया जाए ? कहता था, लाठी-भाला सिखानेवाला मास्टर आवेगा। संजोगकजी या सनचालसजी, क्या कहता था, सो आवेंगे। हिंदू राज–महराना प्रताप और शिवाजी का राज होगा। हरगौरी आजकल बड़ी-बड़ी बातें करता है !

भंडारा के दिन सिंघ जी रूठे हुए खेलावनसिंह यादव को घर से जबर्दस्ती खींचकर ले गए थे, लेकिन खेलावनसिंह का मन रूठा ही हुआ था। जोतखी काका रोज़ आते हैं। उन्होंने कहा है, सकलदीप का अठारह साल की उम्र में माता या पिता का बिजोग लिखा हुआ है। सकलदीप का यह सत्रहवाँ जा रहा है। सकलदीप की माँ बेटे का गौना करवाने के लिए रोज तकादा करती है। बेटे को वोकील बनाने की इच्छा शायद काली माई पूरी नहीं होने देगी। गौना के बाद फिर क्या पढ़ेगा ! माता-पिता का बिजोग ? बालदेव को सारी दुनिया की भलाई तो सूझती है, मगर जिसका नमक खाता है उसके लिए एक तिनका भी तो सोचे। दिन-भर तहसीलदार के यहाँ बैठा रहता है और शाम को कीर्तन ! कमला किनारेवाले एक जमा में कलरु पासवान के दादा के नाम कायमी बटैयादार की हैसियत से दर्ज है। बालदेव से कहा की कलरु से कह-सुनकर सुपुर्दी लिखवा दो या रजिस्ट्री करवा दो, तो कान ही नहीं दिया। हलवाहा गोनाय ततमा कल से हल जोतने नहीं आता है। कहता है, पिछले साल का बकाया साफ कर दीजिए तो हल उठावेंगे। बालदेव टुकुर-टुकुर देखता रहा, कुछ बोला भी नहीं, उलटे हमसे बहस करने लगा,··· गरीब लोगों का दरमाहा नहीं रोकना चाहिए भाई साहब !

जोतखी जी की अठारह साल की नववधू कनचीरावाली के पेट में रोज खाने

1. घूस देकर। 2. बदमाशों।

के बाद दर्द हो जाता है। पिछले एक साल से वह खाने के बाद पेट पकड़कर सो जाती है। इस साल तो और भी दर्द बढ़ गया है।··· डागडरी दवा ? नहीं, नहीं। डागडर तो पेट टीपेगा, जीभ देखेगा, आँख की पपनियाँ उलटाकर देखेगा, पेसाब और पाखाना के बारे में पूछेगा, सायद लहू भी जाँच करे। इधर वह रोज कहती है, डागडरबाबू ने कोयरीटोला की छोटी चंपा को एक ही जकशैन में आराम कर दिया है। इसी तरह उसके पेट में भी दर्द रहता था।··· औरत को समझाना बड़ा कठिन काम है। सभी औरतें एक समान। जो जिद पकड़ेगी, पकड़े रहेगी। जोतखी जी को अपनी चार स्त्रियों का अनुभव है। पहली बेचारी को तो सिर्फ मेला-बाजार देखने का रोग था। कोई भी मेला नहीं छोड़ती थी वह। जहाँ मेला आया कि जोतखी जी के तीसों दिन परमानन झा की खुशामद करने में ही बीतते थे। परमानन की भैंसागाड़ी पर ही मेला जाएगी। परमानन बेचारा खुद गाड़ी हाँककर मेला ले जाता था, कभी भाड़ा नहीं लिया। आखिर बेचारी की मृत्यु भी मेले में ही हुई। उस साल अर्धोदय के मेले में वह जोरों का हैजा फैला था।··· दूसरी को हुक्का पीने की आदत थी। ब्राह्मण का हुक्का पीना ? लेकिन जोतखी जी क्या करते—औरत की जिद्द ! जब वह बीमार पड़ती थी तो बहुत बार जोतखी जी को ही हुक्का तैयार कर देना पड़ता था।··· पुरानी खाँसी से खाँसते-खाँसते वह भी मर गई।·· तीसरी को इस बात की जिद्द लग गई थी कि वह गाँव के लड़कों से हँसना-बोलना बंद नहीं करेगी।··· और कनचीरावाली को डागडरी दवा की जिद लग गई है। एकमात्र पुत्र रामनारायण तो कुपुत्र निकला। बिदापत नाच करता है। ततमा पासवानों के साथ रहता है। सारी ब्राह्मण मंडली में उसकी शिकायत फैल गई है। कोई बेटी देता ही नहीं। जोतखी जी क्या करें ? हाथ की उर्ध्व-रेखा तो सीधे तर्जनी में चली गई है, लेकिन कुंडली के दसम घर में शानि है। समझाते-समझाते थक गया कि अपना नाम रामनारायण मिश्र कहा करो, लेकिन वह भी गँवार की तरह नामलरैन ही कहता है।·· रामनारायण के साथ कनचीरावाली को एक दिन इसपिताल भेज दें ? घर पर बुलाने से तो डागडर फीस लेगा।

लरसिंघदास गाँव के घर-घर में जाकर पंचों से कह रहा है—"आचारज गुरु आ रहे हैं। मठ का अधिकारी महंथ वही है; उसी को चादर-टीका मिलनी चाहिए, महंथ की रखेलिन या दासिन को मठ के मामले में कुछ बोलने का अधिकार नहीं। रामदास तो भैंसवार है। इतने बड़े मठ को चलाना मूरख आदमी के बूते की बात नहीं। वह 'बीए' पास है। अंग्रेजी में ही बीजक बाँचता है। इसीलिए तो बाबड़ी-केश रखता है, धोती-कुर्ता पहनता है और आधी मूँछ कटाता है।··· मठ पर एक स्कूल खोलेंगे। गाँववालों की भलाई करेंगे। आप लोग बुद्धिमान आदमी हैं, खुद विचारकर देख सकते हैं। दासिन रखेलिन मठ को बिगाड़ देती है; साधू-धरम को भ्रष्ट कर देती है। आप लोग खुद विचारकर देख सकते हैं।"

तंत्रिमाटोले में पंचायत हुई ! बंदिश हुई है—तंत्रिमाटोले की कोई औरत अब बाबूटोला के किसी आँगन में काम करने नहीं जाएगी। बाबू-बबुआन लोग शाम

को गाँव में आवें, कोई हर्ज नहीं; किसी की अंदरहवेली में नहीं जा सकते। मजदूरी में जो एक-आध सेर मिले, उसी में सबों को संतोख रखना होगा। बलाई आमदनी में कोई बरकत नहीं। अनोखे और उचितदास छड़ीदार हुआ है। जिसे चाल से बेचाल देखेगा, बाँस की छड़ी से पीठ की चमड़ी उधेड़ लेगा।

तंत्रिमा लोगों की इस बंदिश के बाद गहलोत छत्री, कुर्म छत्री, पोलियाटोले, धनुखधारी और कुशवाहा छत्रीटोले के पंचों ने भी ऐसी ही व्यवस्था की है।··· सिर्फ जनेऊ लेने से ही नहीं होता है, करम भी करना होगा। जाए तो कोई बाबू कभी संथालटोली में, शाम या रात को ! उनकी औरतों से कोई दिल्लगी भी कर सकता है !··· संथालों के तीर पर जहर का पानी चढ़ाया रहता है।

कुर्म छत्रीटोले के लौजमानों ने कल रात को शिवशक्करसिंह को बेपानी कर दिया। झुबरी मुसम्मात का घर तो टोले के एक छोर पर है न, सिपैहियाटोली की बाँसवाड़ी के ठीक बगल में ! लेकिन शिवशक्करसिंघ को क्या मालूम कि बाँस की झाड़ियों में छोकरे पहले से ही छिपे हुए हैं !··· झुबरी मुसम्मात को दस रुपए जरिमाना हुआ है। जहाँ से दे, देना तो होगा ही, नहीं तो हुक्का-पानी बंद। शिवशक्करसिंघ से रुपया लेकर दे। इसी बार लालबाग मेला में पंचलैट[1] खरीद होगा। बिना पंचलैटवाली पंचायत की क्या कीमत ? लैट के दाम में बीस रुपैया और कम है। एक दिन फिर बाँसवाड़ी में एक घंटा मच्छड़ कटवाना होगा, और क्या ?

कालीचरन का अखाड़ा आजकल खूब जमता है। शाम को कीरतन भी खूब जमता है। नया हरमुनियाँ खरीद हुआ है। गंगा जी के मेले से गंगतीरिया ढोलक लाया गया है। खूब गम्हड़ता है।

बालदेव जी को कीरतन तो पसंद है, लेकिन अखाड़ा और कुश्ती को वे खराब समझते हैं।··· शरीर में ज्यादा बल होने से हिंसाबात करने का खौफ रहता है। असल चीज़ है बुद्धि। बुद्धि के बल से ही गन्ही महतमा जी ने अंग्रेजों को हराया है। गाँधी जी की देह में तो एक चिड़िया के बराबर भी मांस नहीं। काँगरेस के और लीडर लोग भी दुबले-पतले ही हैं।

लेकिन कालीचरन का अखाड़ा बंद नहीं हो सकता। ढोल की आवाज में कुछ ऐसी बात है कि कुश्ती लड़नेवाले नौजवानों के खून को गर्म कर देती है।

ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना !

शोभन मोची ने ढोल पर लकड़ी की पहली चोट दी कि देह कसमसाने लगता है।

ढिन्ना ढिन्ना, ढिन्ना ढिन्ना··· !

अर्थात्—आ जा, आ जा, आ जा, आ जा !

1. पेट्रोमेक्स।

सभी अखाड़े में आए। काछी और जाँघिया चढाया, एक मुट्ठी मिट्टी लेकर सिर में लगाया और 'अज्ज्ज्जा' कहकर मैदान में उतर पड़े। कालीचरन 'आ-आ-अली' कहकर मैदान में उतरता है। चंपावती मेला में पंजाबी पहलवान मुश्ताक इसी तरह 'आली' (या अली) कहकर मैदान में उतरता था·

तब शोभन ताल बदल देता है–

चटधा गिड़धा, चटधा गिड़धा !

आ जा भिड़ जा, आ जा भिड़ जा !

अखाड़े में पहलवान पैंतरे भर रहे हैं। कोई किसी को अपना हाथ भी छूने नहीं देता है। पहली पकड़ की ताक में है। वह पकड़ा

धागिड़ागि, धागिड़ागि, धागिड़ागि !

कसकर पकड़ो, कसकर पकड़ो !

चटाक चटधा, चटाक चटधा !

· उठा पटक दे, उठा पटक दे !

गिड़ गिड़ गिड़ धा, गिड़ धा गिड़ धा !

वह वा, वह वा, वाह बहादुर !

पटक तो दिया, अब चित्त करना खेल नहीं ! मिट्टी पकड़ लिया है। सभी दाव के पेंच और काट उसको मालूम हैं !

ढाक ढिन्ना, तिरकिट ढिन्ना !
··· दाव काट, बाहर हो जा !

वाह बाहदुर ! दाव काटकर बाहर निकल आया। फिरी, धा-चट गिड़ धा ! आ जा भिड़ जा !

ढोल के हर ताल से पैंतरे, दाँव-पेंच, काट और मार की बोली निकलती है।

कालीथान में पूजा के दिन इसी ढोल की ताल एकदम बदल जाती है। आवाज़ भी बदल जाती है–धागिड़ धिन्ना, धागिड़ धिन्ना !

···जै जगदंबा ! जै जगदंबा !
गाँव की रक्षा करो माँ जगदंबा।

चौदह

चढ़ली जवानी मोरा अग अग फड़के से
कब होइहैं गवना हमार रे भउजियाSSS !

पक्की सडक पर गाडीवानो का दल भउजिया का गीत गाते हुए गाडी हॉक रहा है। "ऑ ऑ ! चल बढके। दाहिने हॉ, हॉ, घोड़ा देखकर भी भडकता है ! साला !"

हथवा रँगाये सैयॉ देहरी बैठाई गइले
फिरहू न लिहले उदेश रे भउजियाSSSS !

ननदिया के दिल की हूक गाडीवानो के गले से कूक बनकर निकल रही है। भउजिया ? कमली की कोई भौजी नही, किससे दिल की बात कहे ? भउजिया की ननदिया की तो शादी हो चुकी है, कमली का तो हाथ भी पीला नही हुआ है। 'प्रेमसागर' मे मन नही लगता है–'श्री सुकदेव जी बोले कि हे राजा ! एक दिन कृष्ण कन्हैया वशी बजैया कदम के बिरिछ पर बैठके बशी बजाए रहे थे।" चीरहरणलीला की तस्वीर को देखकर कमली का जी न जाने कैसा कैसा करने लगता है ! वह 'प्रेमसागर' बद कर देती है।

–सुबह प्यारू आया था। कितना गौ आदमी है प्यारू ! आज क्या बना था प्यारू ? डाक्टर साहब आज ठीक समय पर खाए थे या शीशी-बोतल लेकर पड़े हुए थ ? प्यारू हॅसकर हमेशा की तरह जवाब देगा, "अरे, क्या पूछती हो दैया ! इस आदमी का हमको कोई ताल-पता[1] नही लगता है। राज कहेगे कि प्यारू आज खाना जरा जल्दी बनाओ, और खाते फिर वही रात मे ग्यारह बजे और दिन मे दो बजे। आज बधा का झोल बना था। झोल क्या खाएँगे ? मिर्च मसाला छूते भी नही हैं। आज सथालटोली के जोगिया मॉझी को कह रहे थे–चार खरगोश और एक दर्जन चूहा पकडकर दे जाओ। पूरा इनाम मिलेगा।"

प्यारू को गॉव-भर की औरते प्यार करती हैं। गॉव-भर मे उसकी मामी, मौसी, नानी, दादी और काकी हैं। सभी जवान लडकियो को वह 'दैया' कहता है।

डाक्टर की मुस्कराहट बडी जानलेवा है। जब आवेगा तो मुस्कराते हुए आवेगा–डर लगता है ? हॉ-हॉ, डर लगता है तो तुमको क्या ? तुमको तो मजा मिलता है न ! मुस्कराए जाओ। गले मे आला लटकाए फिरते हैं बाबू साहब ! छाती और पीठ मे लगाकर लोगो के दिल की बीमारी का पता लगाते हैं। झूठ ! इतने दिन हो गए, मेरे दिल की बात, मेरी बीमारी को कहॉ जान सके ! या जान बूझकर

1 ठौर-ठिकाना।

अनजान बनते हो डाक्टर ! तुम्हारी मुस्कराहट से तो यही मालूम होता है। अच्छा डाक्टर ! सच-सच बताना, तुम क्यों मुस्कराते हो ? तुम मुझे जलाने के लिए इस गॉव मे क्यों आए ? नहीं, नही, तुम नही आते तो पागल हो जाती। रोज सपने मे कमला नदी की बाढ़ मे मैं बह जाती थी। बड़े-बड़े सॉप ! तरह-तरह के सॉप काटने दौड़ते थे तुम आए, मैं डूबते-डूबते बच गई। मेरी ऑखों की पपनियाँ उलटकर देखो, मेरी पीठ पर आला लगाकर देखो, मेरे दिल की बात सुनो। तुम डॉटते हो, बड़ा अच्छा लगता है ! तुम मुझे सूई से डराते हो, चिढाते हो। कितना अच्छा लगता है मुझे ! फिर मीठी दवा भेज दूँगा ? हा जी, भेज देना, पूछ्त हो क्या ! तुम्हारी बोली क्या कम मीठी है ! लेकिन तुम एक बार जरूर आया करो। नही आओगे तो मुझे डर लगेगा ! सिपैहियाटोली की कुसमी कहती थी, डाक्टर मुझसे भी पूछता था–मीठी दवा चाहिए क्या ? मै नही विश्वास करती, डाक्टर ऐसा नही है। कुसमी झूठ बोलती है। मीठी दवा और किसी को मिल ही नही सकती है। डाक्टर, खबरदार ! कुसमी बड़ी चालबाज लडकी है। बहुतो को बदनाम किया है उसने। उसने हरगौरी उसका मौसेरा भाई है, लेकिन जाने दो, क्या करोगे सुनकर ? उसकी ससुराल फारबिसगज मे है। घरवाला एक मारवाडी का सिपाही है। रात भर सिपाही पहरा करता है और कुसमी 'बैसकोप' देखने जाती है।

" श्री सुकदेव जी बोले कि हे राजा ! एक दिन यशुमती सभी ग्वालिनो को बुलाए।"

"कमली !"

"मॉ !"

"पढ़ना बंद करो। डाकडरबाबू ने मना किया है न ! दवा पी लो। मैं तुम्हारी किताब बक्से मे बद कर ताला लगा दूँगी। हॉ, ऐसे तुम नही मानोगी।"

"पढ़ने से क्या होगा मॉ !"

"लड़की की बात तो सुनो जरा ! पढ़ने से क्या होगा सो तो डाकडर से पूछना !"

"डाक्टरबाबू से ? माँ, तुम्हारा डाक्टर क्या है जानती हो ? माटी का महादेव !"

मॉ ठठाकर हॅस पडती है, "एक-एक बात गढकर निकालती है तू ! अच्छा, ठहर। आज आने दे डाकडरबाबू को ।"

माँ-बाप के नैनों की पुतली है कमला ! तहसीलदार साहब बेटी की इच्छा के खिलाफ कुछ भी नहीं कर सकते। माँ कमला की हर आवश्यकता को बिना मुँह खोले ही पूरा कर देती है। बाप ने खुद पढ़ाया-लिखाया है रामायण, महाभारत, नल-दमयंती, सावित्री-सत्यवान, पार्वती-मंगल और शिवपुराण। कमला रोज शिव पूजती है–'ओ शिवशंकर सुखकर नाथ बरदायक महादेव ! महादेव ! मिट्टी का महादेव !"

"माँ चुप रहो।" कमली माँ से लिपटकर हाथों से मुँह बंद कर देती है। "पूछो न अपने डाक्टर से, खरगोश पालकर क्या करेंगे !"

डाक्टर कोई जवाब नहीं देता है, सिर्फ मुस्कराता है। फिर गंभीर होते हुए कहता है, "अब तो सूई देनी ही पड़ेगी; दवा से बेहोशी तो दूर हो गई, लेकिन पागलपन· !"

सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं ·तहसीलदार साहब, माँ और प्यारू। कमली का चेहरा लाल हो जाता है—"मैं आज खून का दबाव नहीं जाँच कराऊँगी। नहीं-नहीं, ठीक है। हाँ, मैं पगली हूँ !"

"दीदी !" तहसीलदार साहब बेटी को दीदी कहकर पुकारते हैं, "आओ, डाक्टरसाहब को देर हो रही है।"

ब्लड प्रेशर जाँच करते समय डाक्टर गंभीर होकर यत्र की ओर देखता है। कमली तिरछी निगाहों से चोरी-चोरी डाक्टर को देखती है—हाँ जी, मुझे पगली कहते हो ! लेकिन मुझे पगली बना कौन रहा है ?

गाँव में सिर्फ तहसीलदार साहब चाय पीते हैं, बढ़िया चाय की पत्ती का व्यवहार करते हैं। डाक्टर यहाँ हर शाम को चाय पीने आता है। कमला की माँ का अनुरोध है—"रोज शाम को चाय पी जाइए।"

तहसीलदार साहब कहते हैं, डाक्टर तो अपने समाँग की तरह हो गया है। डाक्टर को भी तहसीलदार साहब से घनिष्ठता हो गई है। तहसीलदार साहब से गाँव-घर और जिले की बहुत-सी नई-पुरानी बातें सुनने को मिलती हैं। राज पारबंगा स्टेट के जनरैल मैनेजर डफ साहब कैसा आदमी है ! आजकल एकदम हिंदुस्तानी हो गया है। धोती-कुर्ता पहनता है। कभी-कभी रोरी का टीका भी लगाता है। राज पारबंगा के कुमार जी उसकी मुट्ठी में हैं। डफ साहब की बेटी जब तक रहेगी, कुमार जी डफ साहब को नहीं हटा सकते हैं। महागनी चपावती जाति की मुसहरनी थी। राजा भूपतसिंह को 'मेमरानी' से दो लड़के हैं। बड़ा ऐयाश है राजा भूपत ! पोलो का जब्बड[1] खिलाडी ! दार्जिलिंग रेस मे हर साल उसका घोड़ा जीतता है। आजकल भी बाईस घोडे हैं। बड़ा ऐयाश ! पुन्याह में बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ मे इतनी बाई जी आती हैं कि तीन दिन तीन रात महफिल जमी रहती है, एक मिनट भी बंद नहीं होती। पैरिस की शराब पीता है। असल राजा तो वही है। राज पारबंगावाला तो मक्खीचूस है। जिला का सबसे बड़ा किसान है भोला बाबू ! तीस हजार बीघा जमीन है ! रहुआ इस्टेट के गुरुबशीबाबू भी किसान ही है। उनकी बात निराली है। दाता कर्ण हैं। 'वारफन' में सबसे ज्यादे रुपैया दिया और कांग्रेस के 'सहायताफन' में भी सबसे ज्यादे रुपैया दिया और इसी को कहते हैं दुनिया का इन्साफ ! दिल खोलकर दान देने का सुफल क्या मिला है, जानते है ? लोगों ने झूठ-मूठ अफवाह फैला दिया है कि नोट बनाता है। अरे भाई, नोट तो बनाती है उसकी कोशी-गंगा किनारे की हजारों बीघा जमीन, जिसमे न हल लगता है न बैल, न मेहनत न मजदूरी ! बाढ़ का पानी हटा ओर

1. जबर्दस्त।

कीचड़वाली धरती पर चना, खेसारी, मटर, सरसों, उरद वगैरह छींट दिया। बस, छींटने में जितनी मेहनत लगे। कोशी और गंगा के पानी से नहाई हुई धरती माता दिल खोलकर अपना धन लुटा देती है।··· जिला कांग्रेस के सबसे बड़े लीडर हैं शिवनाथ चौधरी जी।··· ओ, आप तो जानते ही हैं उनको ! वह भी बड़े किसान हैं।··· पूर्णिया कचहरी में जो वकालत सीसीबाबू कर गए, वह अब कोई वकील क्या करेगा ! हाईकोर्ट के बालिस्टर भी उनके बनाए हुए मिसिल को नहीं काट सकते थे। लेकिन फौजदारी कचहरी में कभी पैर नहीं रखते थे। एक बार राजा भूपत दस हजार फीस देने लगा, खूनी केस था। सीसीलबाबू ने अपना प्रण नहीं तोड़ा, कचहरी नहीं गए। कागज पढ़कर सिर्फ एक जगह एक लाइन काट दिया और एक जगह एक अक्षर जोड़ दिया। राजा भूपत बेदाग छूठ गया।·· अब तो न वह अयोध्या है और न वह राम।·

"बाबा !"

"दीदी !"

"डाक्टर साहब आज यहीं खाएँगे।"

"प्यारू से झगड़ा मोल लेना चाहती है ?"

"प्यारू से कह दिया है।"

"तब डाक्टर साहब !· हमारी तो कभी हिम्मत नहीं हुई। दीदी कहती है, यदि शरधा हो तो·· ।"

"श्रद्धा-अश्रद्धा की बात नहीं। बात यह है कि मैं···"

"मिर्च-मसाला नहीं खाते," कमली बीच में ही बोल उठी, "उबली हुई चीजें खाएँगे। यही न ?"

डाक्टर समझ रहा है–रोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है··· शीला रहती तो तुरंत कुछ कह देती। शायद कहती, 'भावात्मक संक्रमण' अथवा 'प्रत्यावर्तन' के मोड़ पर रोग पहुँच गया है।

पंद्रह

सुमरितदास को लोग लबड़ा आदमी समझते हैं, लेकिन समय पर वह पते की बातें बता जाता है। आजकल उसका नाम पड़ा है–बेतार की खबर। संक्षेप में 'बेतार'। बात छोटी या बड़ी, कोई भी नई बात बेतार तुरंत घर-घर में पहुँचा देता है।

तहसीलदार का वह रोटिया[1] गवाह है। गवाही देते-देते वह बूढ़ा हो गया है; वसूल-तगादा के समय तहसीलदार के साथ रहता है। किसी को दाखिल खारिज करवानी है, किसी रैयत की जमीन में झंझट लगा है या किसी को बंदोबस्ती लेनी है, तहसीलदार से पहले सुमरितदास से बातें करे। वह रैयतों को एकांत में ले जाकर कहेगा–तहसीलदार तो हमारी मुट्ठी में हैं। हमको पान-सुपारी खाने के लिए कुछ दो या नहीं दो, तुम्हारी मर्जी; लेकिन तहसीलदार साहब को तो··· वाजिब जो है सो·· !

रैयतों से छोटी-छोटी चीजें तहसीलदार साहब खुद कैसे माँग सकते है ? वह सुमरितदास ही माँगता है–कद्दू, खीरा, बैंगन, करेला, कबूतर हल्दी, मिर्चा, साग, मूली और सरसों का तेल ! वह सब तो सुमरितदास अपने लिए लेता है। लेकिन चीजें लेते समय सुमरितदास रैयत से एकांत मे कहता है, "अरे भाई, ये सब चीजें मैं लेकर क्या करूँगा ? न घर है न घरनी, न चूल्हा है न चौका। एक पेट के लिए मँगनी क्यों करूँ ? यह सब तो ।" कभी एक पैसे की तरकारी तहसीलदार साहब के यहाँ खरीदी नहीं जाती। सुमरितदास भला मँगनी करेगा ! आज उसकी हालत खराब हो गई है तो क्या वह खानदान की इज्जत को भी लुटा देगा ! उसके परदादा के दरवाजे पर हाथी झूमता था। सब करम का फेर है। सुमरितदास के पेट मे कोई बात नहीं पचती। कालीचरन कहता है–मुँह में दाँत हैं नहीं, बात अटके भी तो कैसे ? बेतार !

बेतार को बहुत-सी बातें मिल गई हैं। पहली बात तो यह कि पच्छिम से मठ पर आचारजगुरु आ रहे हैं, लरसिंघदास को कलकटर साहब ने भी महंथ मान लिया है। दूसरी बात यह कि कल से खम्हार[2] खुलने वाला है, बीच में भदवा पड़ गया है। तहसीलदार साहब ने कहा है–कल शुभ दिन है।

तहसीलदार साहब के खम्हार के साथ ही गाँव के और किसानो का खम्हार खुलता है। तहसीलदार साहब का खम्हार बड़ा खम्हार कहलाता है। 'जरीदहाड़'[3] से बचकर भी दो हजार मन धान होता है।

·· हाँ, तीसरी बात तो कहना भूल ही गया बेतार ! वह लौटकर सुना जाता है, "कपड़ा, तेल और चीनी की पुर्जी बाँटने का काम बालदेव को मिला है। नाम तो उसमे डाकडरबाबू का भी है, लेकिन डागडरबाबू कहते हैं–हमको फुर्सत नहीं। हमसे कहते थे कि हमारा काम आप ही कीजिए दास जी ! हम बोले कि हमको भी फुर्सत कहाँ है।"

आचारजगुरु के आने की खबर को कोई मोल नहीं भी हो, बाकी दो बातें, यदि सच हैं, तो वास्तव में कीमती हैं।

बात सच है। बालदेव जी भी कहते हैं, बात ठीक है।

खम्हार ! साल-भर की कमाई का लेखा-जोखा तो खम्हार में ही होता है।

1. गवाही की रोटी खानेवाला। 2. खलिहान। 3. बाढ़-सूखा।

दो महीने की कटनी, एक महीना मडनी, फिर साल-भर की खटनी। दबनी-मडनी करके जमा करो, साल-भर के खाए हुए कर्ज का हिसाब करके चुकाओ। बाकी यदि रह जाए तो फिर सादा कागज पर अँगूठे की टीप लगाओ। सफाई करनी है तो बैल-गाय भरना रखो या हलवाहा-चरवाहा दो। फिर कर्ज खाओ। खम्हार का चक्र चलता रहता है। खम्हार मे बैलो के झुड से दबनी-मडनी होती है। बैलो के मुँह मे जाली का 'जाब' लगा दिया जाता है। गरीब और बेजमीन लोगो की हालत भी खम्हार के बैलो जैसी है।—मुँह मे जाली का 'जाब'। लेकिन खम्हार का मोह ! यह नही टूट सकता। भुरुकवा उगते ही खम्हार जग जाता है। सूई की तरह गडनेवाली, माघ के भोर की ठडी हवा का कोई असर देह पर नही होता। ओस और पाले से देह शून्य हो जाता है। जब हाथ से अपनी नाक भी नही छूई जाती है तब घूर मे फिर से सूखे पुआल डालकर नई आग पैदा की जाती है। घूर मे शकरकद पकता रहता है। घूर के पास देह गर्माने की बारी जिसकी रहती है, वह प्रातकी गाता है—"हरि बिनू के पूरिहै मोर सुआरथ, हरि बिनू के। " अथवा "निरबल के बल राम हो सतो, निरबल के बल राम !"

दिन भर धान झाड-फटककर जमा किया। फिर धान के बोझे छीट दिए गए और शाम मे फिर दबनी मडनी शुरू हो गई। शाम को घूर के पास 'लोरिक' या कुम्र 'बिज्जेभान' की गीत कथा होती है—

अरे राम राम रे दैबा रे इसर रे महादेव,
वामे ठाढ़ी देवी दुरगा दाहिन बोले काग।
अपन मन मे सोच करैये मानिक सरदार,
बात से नाहीं माने वीर कनोजिया गुआर ।

कपडा, तेल और चीनी की पुर्जी कमलदाहा के कमरुद्दीबाबू बॉटते थे। मेरीगज से कमलदाहा दस कोम है। दस कोम जाना तो कोई बडी बात नही, लेकिन पुर्जी पाना बडे भाग की बात समझी जाती है। कमरुद्दीबाबू कुँजडा है, बैगन की बिक्री से ही जमीदार हुए हैं, मुस्लीग के लीडर है। कटिहार-पूर्णिया मोटर रोड के किनार पर ही घर है। हमेशा हाकिम-हुक्काम उनके यहॉ आते रहते है। महीने मे साठ मुर्गियो का खर्च है। लोग कहते हैं कि नए इसडिओ जब आए तो सारे इलाके मे यह बात मशहूर हो गई कि बडे कडे हाकिम हैं, किसी के यहॉ न तो जाते हैं और न किसी का पान ही खाते है। लेकिन कमरुद्दीबाबू भी पीछा छोडने वाले आदमी नही। इसडिओ का डलेबर मुसलमान है। उसको कुरान की कसम देकर पान-सुपारी खाने के लिए दिया। बस, एक बार कटिहार से लौट रहे थे इसडिओ साहब, ठीक कमरुद्दीबाबू के घर के सामने आकर मोटरगाडी खराब हो गई। दस बजे रात को इसडिओ साहब और कहॉ जाते ? उसके बाद मे ही कमरुद्दीबाबू ऑख मूँदकर बिलेक करने लगे। एक बार पुरैनिया मिटिन मे कॅगरेसी खुशायबाबू ने हाकिम मे कहा—'पबलिक बहुत शिकायत करती है।" कमरुद्दीबाबू ने हँसते हुए

पूछा–"हिंदू पबलिक या मुसलमान ?" हाकिम भी समझ गए–कमरुद्दीबाबू लीगी हैं, इसीलिए लोग झूठ-मूठ दोख लगाते हैं।··· अब तो बालदेव जी पुर्जी देंगे। बालदेव जी को बिलैती कपड़ा से क्या जरूरत ? खध्धड़ को छोड़कर दूसरे कपड़े को छूते भी नहीं।··· छूते हैं ? छूने में हर्ज नहीं।···

"जै हो, गन्ही महतमा की जै हो !"··· कल खम्हार खुलेगा, पिछले साल तो खम्हार खुलने के दिन जालिमसिंह का नाच हुआ था। जालिमसिंह सिपैहिया ने एक डोमिन से शादी कर ली थी।··· लेकिन इस बार कीर्तन होना चाहिए। सुराजी कीर्तन ! बेतार कहता है–इस बार बिदापत नाच होगा। डागडरबाबू, बिदापत नाच देखेंगे।··· तहसीलदार साहब तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। कितना समझाया कि डागडरबाबू, वह तो बहुत पुराना नाच है। खाली बिकटै[1] होता है। डागडरबाबू कहने लगे–"बिदापत ही करवाइए।" पासवानटोली के लिबडू पासवान को खबर दे दी गई है। लिबडू नाच का मूलगैन है। मूलगैन, अर्थात् म्यूजिक डायरेक्टर !

कालीचरन का कीरतन नहीं होगा ? अच्छा कोई बात नहीं, डाक्टर साहब को एक दिन कीरतन सुना देंगे।

बालदेव जी को डागडर बाबू की बुद्धि पर अचरज होता है–विदापत नाच क्या देखेंगे ? बड़ा खराब नाच है। कोई भला आदमी नहीं देखता। खराब-खराव गीत गाता है। नाच ही देखने का मन था तो तहसीलदार साहब से कहकर सिमरबनी गाँव की ठेठर कंपनी को बुला लेते। आने-जाने और पचास आदमी के खाने का खर्चा क्या तहसीदार साहब नहीं दे सकते थे ? गाँववाले देखते तो आँखें खुलतीं। सिमरबनी का ठैठर कंपनी मशहूर है, महाबीर जब दुर्जोधन का पाठ लेकर हाथ में तरवार लेकर गरजते हुए निकलता है तो एक कोस तक उसकी बोली साफ सुनाई पड़ती है–"बस बंद करा दो यह मृदंग बाजा, हमको अच्छा नहीं लगता।"

धिन्ना धिन्ना धिन्ना निन्ना निन्ना !
धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना !

बिदापत नाच का मृदंग 'जमीनका' दे रहा है–चलो ! चलो ! चलो !

धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना !
धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना !

गाँव-भर के लोग तहसीलदार साहब के खम्हार में जमा हुए हैं। शामियाना तान दिया गया है। शामियाना खचमखच है। डाक्टरबाबू, सिंघ जी और खेलावनसिंघ यादव कुर्सी पर बैठे हैं ! कालीचरन अपने दल के साथ है। जोतखी जी नहीं आए हैं। सिंघ जी ने कहा–"आज भी उनके दाँत में दरद है भाई !" सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं। सभी जोतखी जी के नहीं आने का कारण जानते हैं–उनका बेटा

1. कॉमिक।

नामलरैन भी बिदापत नाच का समाजी है।–बाभन नाचे तेली तमाशा देखे ! कुपुत्र निकला रामनारायण ! शिव हो ! · बालदेव जी नहीं आए हैं। कोई भला आदमी नहीं देखता बिदापत नाच ! अब मृदंग पर 'चलती' बज रहा है–

तिरकिट धिन्ना, तिरकिट धिन्ना !
धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना !
धिनक धिनक धा,
धिक् धिक् तिन्ना !

"ओ··· ! होय ! नायक जी !"

बिकटा[1] आया। भीड़ में हँसी की पहली लहर खेल जाती है–सैकड़ों मुक्त हृदयो की हँसी !· पायल की झनकार !

मुँह पर कालिख-चूना पोतकर, फटा-पुराना पाजामा पहनकर लोकायदास बिकटा बन गया है। वह जन्मजात बिकटा है। भगवान ने उसे बिकटा ही बनाके भेजा है। ऊपर का ओंठ त्रिभुजाकार कटा है। सामने के दाँत हमेशा निकले रहते हैं और शीतला माई ने एक आँख ले ली है। बात गढ़ने मे उस्ताद है।

"ओ ! होय ! हो नायक जी !"

"क्या है ?"

"अरे, यह फतंग-फतंग क्या बज रहे हैं ?"

"अरे, मृदंग बज रहा है। यह करताल है, यह झाल है।"

"सो तो समझा। यह धड़िंग धड़िंगा, गनपतगंगा क्या बजाते हैं ?"

"नाच होगा नाच, विद्यापति नाच !"

"ओ, हम समझे कि 'लीलामी' का ढोल बोल रहा है।"

धिन ताक धिन्ना, धिन ताक धिन्ना !

आहे ! उत्तरहि राज से आयेल हे नटुकवा कि आहे मैया
कि आहे मैया सरोसती है परथमे बन्नोनि हे तोहार !
··· हमहूँ मूरख गँवार कि आहे मैया,
सरोसती, भूलल आखर जोड़िके आहे मैया,
कंठे लीहै हे बास !

"ओ · ओ, होय नायक जी !" बिकटा जोर से चिल्ला उठता है। ताल भी कट चुका है। ठीक ताल काटने के समय बिकटा को चिल्लाना चाहिए. इसलिए मृदंग के ताल का ज्ञान बिकटा को होना ही चाहिए।

"तुम कैसा बेकूफ हो जी !"

"अरे हो नायक जी ! यह आप लोग किसका वंदना कर रहे हैं ?"

1 विदूषक

"हा-हा ! हा ! हा-हा-हा !··· हँसी की दूसरी, लेकिन हल्की लहर।

"बेकूफ ! सुनते नहीं हो, सरोसती माता का बंदना है !"

"यह सुरस्सु सुरती··· सुर··· सुरसस्सती माता को तुम देखा है ?··· हमको तुम बेकुफ कहते हो ? बेकुफ तो तुम खुद हो। अरे, सरस्सती का बंदना तो पढ़ल पन्नित लोग करता है।"

··· हा ! हा ! हा-हा !··· भीड़ में खिलखिलाहट।

"तो हम लोग किसको बंदेंगे ?"

"ऊँह, तुम खाँटी चलानी घी हो, जिस चलानी घी की पूड़ी भंडारा में हुई थी जिसको खाकर हमारा पेट दस दिन खराब रहा था।··· बिना किसी मिलावट के तुम भी खाँटी बेकूफ मालूम होते हो। इतना भी नहीं जानते ? सुनो ! जरा बजाने कहो–धिनक धिन्ना, तिरकिट धिन्ना !"

"अरे दाल बंदो, भात बंदो, साग बंदो बथुआ !

"यह तो हुआ कच्ची, सरकार !" अब जरा पक्की सुनिए–

"अरे चूड़ा बंदो, भूजा बंदो, रोटी बंदो मडुआ !"

··· हा ! हा ! हा !··· हा ! हा !···

"अब फल मेवा, सरकार !

"अरे गुलर बंदो, डूमर बंदो और बंदो अल्हुआ !"

हा ! हा ! हा !··· सैकड़ों खिलखिलाहट !

"हल बंदो, बैल बंदो और बंदो गइआ !

"··· अब सबसे बड़ा भगवान !

बिकटा मुँह बनाता है।

"चटाक पटपट दड़त सिर पर भागत बाप के भूतवा।
सबसे बढ़ि के तोहरे वंदो मालिक बाबूक जूतवा !"

बिकटा खेलावन के पैर के सलमसाही जूते को प्रणाम करता है।

डाक्टर साहेब तो अचरज से गुम हो गए हैं; एकदम खो गए हैं नाच में। इस बार नाच जमेगा। आखिर यह सब पुरानी चीज है, क्यों भाई !·· सब बात तो ठीक ही कहता है।

··धिन्ना धिन्ना, धिन्ना तिन्ना। समाजी लोगों ने शुरू किया :

आहे लेल परवेश परम सुकुमारी हे,
हँस गमन बिरखामान दुलारी हे।

मृदंग के ताल पर दबे पाँवों नटवा आता है। ताल पर ही चलकर सबसे पहले मृदंग को प्रणाम करता है, फिर झाल-करताल की ओर, अंत में मूलगैन लिबडू पासवान का पैर छूकर प्रणाम करता है। पोलियाटोली के छीतनदास का बेटा चलित्तरा लड़कियों की तरह लंबा बाल रखता है। नाक में बुलाक भी हमेशा पहने रहता

है। वह नटवा है अभी साज-पोशाक पहनकर एकदम बाभिन की तरह लग रहा है छौंड़ा।·· कान में कनफूल किसका है ? कमली दीदी का ?·· वाह रे छौंड़ा, आज यदि यह कान का कनफूल बकसीस में जीत ले तो समझें की असल बिदपतिया का चेला है।··· मृदंग बजाता है उचितदास ! क्या कहा—असल बिदपतिया ?··· हम सहरसा के गैनू मिरदंगिया का चेला है। – जानते नहीं, गैनू मिरदंगिया एक बार अपने समाजी के साथ कहीं से नाचकर आ रहा था। चोर लोग जानते थे कि गैनू मिरदंगिया का समाज एक-एक सौ रुपैया नकद, धोती, कुर्ता, गमछा वगैरह लेकर घर लौटता है। बस, ठुट्ठी पाखर के पेड़ के पास चोरों ने घेर लिया गैनू मिरदंगिया को। वह पीछे पड़ गया था—दिसामैदान के लिए सायद। गैनू मिरदंगिया ने क्या किया ? बोलो तो ! नही जानते ? हा-हा ! मिरदंग पर थाप दिया। दाहिने पूरे पर अंगुलियाँ फिरकी की तरह नाचने लगीं—धृकिट धिन्ना ना निन्ना ना निन्ना ना ना। तो मृदंग के पूरे की सूखी चमडी मानो जी उठी; साफ आदमी की तरह बोली निकली—'ठुट्ठी पाखैर तर चोर घेरलक हो, चोर घेरलक !"·· लिबडूदास का समाजी है, खेल नहीं ! नाच बेटा !·

धिरिनागि धिरिनागि धिरिनागि धिनता !

आहे तन मन बदन मदन सहजोर हे,
आहे दामिनी ऊपर···

"है रे ! है रे ! है रे !" बिकटा कलेजा पकड़कर मुँह बनाता है।

···धिनक धिनक ता, धिनक धिनक ता···
आहे, दामिनी ऊपर उगलय चान हे।

बिकटा मूर्छित होकर गिर पड़ता है--"अरे बाप !"

"अरे क्या हुआ ?"

"अरे बाप !"

"अरे ! बोलो भी तो ? क्या हुआ ?"

"अच्छा नायक जी, एक बात बताइए। जल्दी बताइए। आस्मान का चान यदि धरती पर उतर आया है तो धरती के चान को ऊपर जाना पड़ेगा ?"

"अरे धरती पर भी कही चान होता है ?"

"सुनिए जरा इसकी बोली ! इसीलिए न कहा था कि खौंटी चलानी घी हो। अजी हमारी एक ही बिजली बत्ती खराब है, तुम्हारे क्या दोनों खराब हैं ?·· आजकल रेलगाड़ी में सुनते हैं कि बत्ती नहीं जलती। पहले बिलेकोट तब तो बिलेक मारकेट।"

· हा ! हा ! हा ! हा !··· साला कटिहार नानी के यहाँ बराबर जाता है। रेलगाड़ी की भी गलती निकालता है। अंग-भंग आदमी सारी दुनिया को अंग-भंग देखता है। सुनो क्या कहता है, धरती का चान किसको बनाता है ?

"अरे भकुआ नायक जी, धरती का चान अपनी छतीसों कल्ला के साथ तुम्हारे

सामने खड़ा है, चौंधिया गए हो क्या ? जरा छट्ठम लैट जलाकर देखो।"

·· हा ! हा ! हा ! हा !··· साला अलबत्त बात बनाता है !

"छट्ठम लैट नहीं जानते ? देखो पंचम लैट तो यही है जो अभी पंच परमेसर के बीच में जल रहा है।··· छट्ठम लैट तुम्हारे घर में आजकल जलता है ! तेल मिलता ही नहीं–एक पटुआ के संठी में आग लगाकर हाथ में लेकर खड़ा रहो, भकभक गैशबत्ती की-सी रोसनी होने लगेगी। हम आजकल यही करते हैं।··· अच्छा, आप ही लोग देखिए पंच परमेसर, हमसे ज्यादे सुन्नर यहाँ कोई हैं ?"

"नहीं नहीं, आप तो कामदेव के औतार हैं।" सिंघ जी कहते हैं।

हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! नाचो रे चलितरा ! आज मोहड़ा[1] पड़ा है ! जी खोल के नाच बेटा !···

धिनागि धिन्ना, तिरनागि तिन्ना
धिनक धिनता तिटकत ग-द-धा !···
आहे चलहु सखि सुखधाम, चलहु !
आहे कन्हैया जहाँ सखि हे,
रास रचाओल हे ! चलहु हे चलहु !
··· धिन्ना तिन्ना ना धि धिन्ना !
आहे सिर बिरनावन कुंज गलिन में
कान्हु चरावत धेनु,
आहे मुड़ली जे टेड़े बिरीछी के ओटे,
आहे अबे ग्रिहे···
··· धिरिनागि धिरिनागि धिरिनागि···
आहे ! अबे ग्रिहे रहलो नि जाएं, चलहु हे चलहु !

ततमाटोली की औरतों के गिरोह में बैठी फुलिया का जी ऐंठता है··· अबे ग्रिहे रहलो नि जाए !

तहसीलदार साहब की हवेली की सामनेवाली खिड़की खुली हुई है। कमली दीदी भी देख रही है। नहीं देखेगी तो बक्सीस कैसे देगी ?

"देखा बेटा ! फिरकी की तरह नाच ! पुरइन के फूल की तरह घाँघरी खिल जाए !"

"अरे हो नायक जी ! एक बात तो बताइए। वह हमको छोड़कर कहाँ जा रही है ? चलहु-चलहु–कहीं मेला-तमासा है या भोज है ? या कपड़ा की पुर्जी बँटती है ?"

"अजी वह तुम्हारे ही पास जा रही है। तुम्हीं किसुनकन्हैया हो न ! तुम्हारे रूप पर मोहित हो गई है।"

"आ !·· वही तो हम भी कहते थे कि हमको छोड़कर कहाँ जा रही है !

1. मोर्चा।

हम कन्हैया हैं, लेकिन कन्हैया के बाप का नाम तो नंद था और हमारे बाप का नाम उजाडूदास।"

हा-हा ! हा-हा ! हा-हा !

"अरे उल्लू ! तुम्हारे बाप का नाम उजागिरदास था। तुम इसको खराब करके काहे बोलते हो ?"

"उजागिरदास तो माय-बाप ने रख दिया था। लेकिन जिस मालिक के यहाँ भैंस-गाय चराने के लिए भरती होते थे, वही उनको कुछ दिन बाद मार-पीटकर निकाल देता था। मेरे बाबू जी गाय-भैंस लेकर जाते थे और मालिक के ही हरे-भरे खेत में छोड़कर सो जाते थे—मिहनत किया है लछमी ने, बैल ने ! मालिक लोग दूध-घी खा-खाकर जिस भैंस के दूध से मोटे हो गए हैं, इस उपजा में तो इनका भी हिस्सा है। खाओ लछमी ! इसलिए लोगों ने उनका नाम उजाडूदास रख दिया।"

नटवा अब गाँजा में दम मार आया है। अब देखना, नाच जमाएगा छौंड़ा आज।

धिरनागि धिन्ना

आहे कुंज भवन से निकलल हो,
आहे सखि रोकल गिरधारी !

"हाँ चोरी-चोरी घर से निकलकर कोठी के बागान में जाओगी, रसलील्ला करने, तो रोकेगा नहीं ? अच्छा किया है।" बिकटा अपने-आप बड़बड़ाता है।

नटुआ दोनों हाथ जोड़कर, फन काढ़े गेहुअन साँप की तरह हिलतु-डुलते, कमर के सहारे बैठ रहा है। धरती पर घाँघरी पुरैन के पत्ते की तरह बिछी हुई है। मिनती करती है। है रे ! है रे !·· वाह रे छौंड़ा ! नाम रखा लिया गाँव का !

आहे, एकहि न-ग-र बसू माधव हो,
आहे जनि करू बटवा-वा-री !
आहे छोड़ छोडू जदूपति आँचर हो,
हो भाँगत न-ब सारी।

"हाँ भैया ! कोटा-कनटरोल का जमाना है। कपड़ा नहीं मिलता है। जरा होसियारी से !"

अरे अपजस होइत जगत भरि हो,

"ओह बड़ी कुलमती बनी है ! लछलछ किरिया खाए कुलमंत, मोर मन नहिं पतिआए।" बिकटा बीच-बीच मे टोकता रहता है।

आजु परेम रख लय लीह हो,
आहे पंथ छाडू झटकारी !

"सब दही जुठैलकर रे किसना। आहि रे बाप !" बिकटा चिल्लाता है।

आहे संग के सखि अगुआइल हो
आहो कान्हा, ह-म-हू एकसरि नारी !

"है रे ! है रे ! एकसरि नारि रे !"

भनहिं विद्यापति गाओल हो, सुनू कूलमंती नारी
हरि के संग किछु डर नाहिं है··· ।

"हाँ, हरि के संग काहे दोख होगा ! जितना दोख, हम सब लोगों के साथ। अपने खेले रसलील्ला, हमरे बेला में पंचायत का झाड़ू और जूत्ता।"

क्या है ? क्या हुआ·· डागडर साहब का नेंगड़ा नौकर आकर क्या बोलता है ?· कमली दीदी ने कनफूल दे दिया ?··रे ?·· वाह रे छौंड़ा ! नाम किया ! ··· जीओ रे चलित्तरा ! जीओ !

बिकटा भी क्यों पीछे रहे ? वह भी आज 'थै-थै' कर देगा। नाच जमा है आज ! "अरे होय नायक जी ! हमारे दुख को देखनेवाला, सुननेवाला कोई नहीं।"

"क्या हुआ ?"

"लेकिन कहें कैसे ?" बिकटा तहसीलदार की ओर उँगली उठाकर डरने की मुद्रा बनाता है।

"अरे ! हम समझ गए। तो कहो न भाई," तहसीलदार समझ जाते हैं, "दुनिया में सिर्फ हम ही एक तहसीलदार-पटवारी हैं ? बात तो तुम ठीक ही कहोगे। सुनते हैं डाक्टर साहब, अब यह तहसीलदार का बिकटै करेगा !"

"नायक जी ! हमको धीरज बँधानेवाला कोई नहीं। सुनते हैं कि बराहछत्तर में सरकार बहादुर कोसी मैया को बाँध रहा है, लेकिन हमारे दिल को बाँधनेवाला कोई नहीं !"

"अरे कहो भी तो !"

"अच्छा तो सुनो ! पचास साल पहले से सुरू करते हैं, सर्वे सितलमंटी[1] साल से।"

...सुनो ! सुनो ! जरूर कोई नई बात जोड़ा है। यह भी बकसीस वसूल करेगा।

"बजाने कहो—ताकधिन-ताकधिन !"

अरे केना के बाँधवै रे धीरजा, केना के बाँधवै रे,
अरे मुद्दई भेल पटवारी रे धीरजा केना के बाँधवै रे !

"सर्वे जब होने लगा !"

दस हाथ के लग्गा बनैलके
पाँचे हाथ नपाई !

1. सर्वे सेटलमेंट।

पाँच हाथ पार ? हा हा हा !

गल्ली-कुची सेहो नपलकै,
ढीप-ढाप सेहो नपलकै,
घाट-बाट सेहो नपलकै,
डगर-पोखर सेहो नपलकै।

"तब ?"

हाथी जस भलवेसन बैठलकै,
जम्मा भेलै भारी रे धीरजा के केना बाँधबै रे !

"इधर जमीदार सिपाही छप्पर पर का कद्दू, लत्तर का खीरा, बकरी का पाठा और चार जोडा कबूतर सिरिफ तलबाना मे ही साफ कर गया।"

"तब ?"

थारी बेच पटवारी के देलियै,
लोटा बेच चौकीदारी।
बाकी थोड़ेक लिखाई जे रहलै,
कलक देलक धुगाई रे धिरजा।

"आखिर "

कहे कबीर सुनो भाई साधो
सब दिन करी बेगारी
खँजड़ी बजाके गीत गवेछी
फटकनाथ गिरधारी रे धिरजा।

ओ हो हा हा, खी-खी खी हा-हा ! शामियाना फट जाएगा। कमाल कर दिया साले ने। अलबत्ता जोडा। वाह ! वाह रे लौकायदास !

डाक्टर तहसीलदार से पूछता है, "गीत तो विद्यापति का गाता है। बिकटै की रचना किसने की है ?"

"आप भी डाक्टरबाबू क्या पूछते हे", तहसीलदार साहब हँसते हैं, "इनकी रचना के लिए भी कोई तुलसीदास और बाल्मीकि की जरूरत है ? खेतो मे काम करते हुए तुक पर तुक मिलाकर गढ लेता है।",

डाक्टर साहब ने बिकटा को क्या दिया ? पँचटकिया लोट ? बाजी मार लिया बिकटा ने भी।

आहे परथम समागम पहुसग हे

धिरनागि धिरनागि !

भुरुकवा उगने के बाद नाच खत्म हुआ। खूब जमा।–अब खुलेगा खम्हार।

बिछावन पर लेटकर डाक्टर सोचता है–कोमल गीतों की पंक्तियाँ ! अपभ्रंश शब्द भी कितने मधुर लगते हैं !··· "पिया भइले डुमरी के फूल रे पियवा भइले। ··· चाँद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल, तिरिया बयरि दुहु लोचन-हिरदए के भेद बताए। –भोंमरा-भोंमरी–रोई-रोई कजरा दहायल, घामे तिलक बहि गेल। ··· चान के उगयत देखल सजनिगे··· लट धोए गइली हम बाबा की पोखरिया–पोखरि मैं चान केलि करे।'

डाक्टर सोचता है–विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था–"विद्यापति कवि के गान कहाँ ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया–ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि ! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपडियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।–ओ कवि ! तुम्हारी कविता ने मचलकर एक दिन कहा था–

चलो कवि, बनफूलों की ओर !

···बनफूलों की कलियाँ तुम्हारी राह देखती हैं।

सोलह

मुसम्मात सुनरी !

टक्का कटपीस–एक गज।

छींट–डेढ़ गज।

मलेछिया साटिन–एक गज।

साड़ी–एक नग।

बालदेव जी कपड़े की पुर्जी बाँट रहे हैं। रौतहट टीशन के हंसराज बच्छराज मरवाड़ी के यहाँ कपड़ा मिलेगा।

खेलावन यादव के दरवाजे पर खड़ होने को भी जगह नहीं। सुबह से पुर्जी बाँट रहे हैं, दोपहर हो गई।·· साड़ी नहीं है !··· नहीं ? · बालदेव जी ! हमको एक साड़ी··· रौफा की माए एकदम नगन हो गई है बालदेव जी !

बालदेव जी कहते हैं, "देखिए ! मौजे-भर में सिरफ सात साड़ियाँ दी गई थीं। चार फर्दी हैं, वह तो मालिक लोगों के घर में पहनने की चीज है··· चौदह रुपए जोड़ी। बाकी तीन साड़ियों को हमने इस तरह बाँट दिया है, ऐसे लोगों को दिया

है जो एकदम बेपरदे ''
"बेपरदे तो सारा गाँव है बालदेव जी !"

खेलावन यादव कहते हैं, "इतने दिनों से जब कमरुद्दीबाबू पूर्जी बाँटते थे, उस समय गाँव की औरतें बेपरदे और नगन नहीं थीं क्या ? भाई, जितना है उसी में इनसाफ से बाँट-बखरा कर लो।"

कालीचरन जिद्द कर रहा है, पुर्जी पर दो गज छींट और लिख दीजिए : हरमुनियाँ का खोल बनावाएँगे। बालदेव जी नहीं मानते। आदमी के पहनने के लिए कपड़ा नहीं, हरमुनियाँ-ढोलक को चपकन सिलाकर पहनावेगा ?... देखो तो भला !

बालदेव जी का राह चलना मुश्किल हो गया है। कपडा की मेंबरी मिली है कि बलाए है ! दिसा-मैदान जाते समय भी लोग पीछा नहीं छोड़ते हैं।· जाय हिंद बालदेव जी ! आए थे तो आपके ही पास। दुलारी का गौना है।· अच्छा-अच्छा चलिए, हम दिसा से आते हैं। कपडा अब कहाँ है। रिचरब[1] में भी नहीं है। सिरिफ कफन और सराध का कपड़ा है। उसी में से ? कैसे टेंगे ? कफ़न और सराध का कपड़ा गौना में ?

बालदेव जी को क्या मालूम की दुलारी का गौना पाँच साल पहले ही हो गया है और उसके तीन बच्चे भी हैं।

लछमी दासिन ने रामदास को भेजा था, "आचारज जी आ रहे हैं। आपको तो आजकल छुट्टी ही नहीं रहती है। उधर जाते भी नही। कंठी लेने की बात हुई थी ? सो आपकी क्या राय है ? आचारज जी आ रहे हैं। चादर-टीका के लिए चादर के अलावे पूजा-विदाई के लिए भी एक जोड़ी धोती चाहिए–बिना कोर की, महीन मारकीन की या ननकिलाठ की धोती। और कोठारिन जी को भी कपड़ा नहीं है।"

बडी मुश्किल है ! रिचरब मे थोडा कपड़ा है सो सादी-बिहा और सराध के लिए। कैसे दिया जाए ? ओ ! आचारज जी महंथसाहेब के सराध में ही आए हैं। तब ठीक है। सिरिमती नही, सिरिमती नहीं। दासिन लछमी कोठारिन–ननकिलाठ, दस गज ! फैन मारकीन, दस गज। चद्दर, एक !

रामदास याद दिला देता है, "लँगोटा-कोपीन के लिए भी एक गज।"

बड़ी मुश्किल है ! बालदेव जी को अब रोज दस-पद्रह बार से ज्यादे झूठ बोलना पड़ता है। क्या किया जाए ? बडा संकट का काम है। इधर जिला कांग्रेस की मिटिन भी है। मेनिस्टर साहब आ रहे हैं। गॉव से झंडा-पत्तखा और जत्था भी ले जाना होगा। जिला सिकरेटरी गंगुली जी ने चिट्ठी दी है। परचा भी आया है...।

चलो ! चलो ! पुरैनियाँ चलो ! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं। औरत-मर्द, बाल-बच्चा, झंडा-पत्तखा और इनकिलास-जिंदाबाघ करते हुए पुरैनियाँ चलो !· रेलगाड़ी का

1. रिजर्व।

टिकस ? कैसा बेकूफ है ! मेनिस्टर साहब आ रहे है और गाडी मे टिकस लगेगा ? बालदेव जी बोले हैं, मेनिस्टर साहब से कहना होगा, कोटा मे बहुत कम कपडा मिलता है। चलो-चलो, पुरैनियॉ चलो। भुरुकवा उगते ही कालीथान के पास जमा होकर जुलूस बनाकर चलो !

"बोलिए एक बार—काली माय की जाये !"

"जाये ! जाये !"

"बोलिए एक बार परेम से—गन्ही महतमा की जै !"

"जाये। जाये !"

फरर र र र, पेड पर घोसलो मे सोए हुए पंछी पख फडफडाकर उडे। कालीचरन कहता है, यदि गुलेटा रहता तो अँधेरे मे भी अभी एक-दो हरियल को मारकर गिरा देते। वासुदेव कहता है—चुप रहो। बालदेव जी ने नही सुना, नही तो अभी फिर अनसन ।

गिनती करो। कितनी औरत, कितने मरद ? अभी बच्चो को मत लो, झझट होगा। कालीचरन और गूदर सबो की देह छू-छूकर गिनते हैं। कालीचरन कहता है—पॉच कोरी चार औरत। गूदर हिसाब करता है—चार कोरी दस मरद। मातबर लोग काहे जाएगा ? मातबर लोग तो हमेशा गदारी करते है। बालदेव जी ने आज फिर एक नई बात कही—गदारी ! गदारी ! गदारी ?

जुलूस मे गाने के लिए बालदेव जी को दो ही गीत याद हैं। एक नीमक कानून के समय का सीखा हुआ—"आओ बीरो मरद बनो अब जेहल तुम्हे भरना होगा।" दूसरा, बियालिस, मोमेट के समय जेहल मे सुना था—'जिदगी है किराती की किराती मे लुटाए जा।" लेकिन यह तो सोशलिस्ट पाटीवाला गाता है। पुराना ही ठीक है आओ बीरो मरद बनो ! आज बालदेव जी खुद गाते है : सुनरा भी गीत का आखर धरता है।

तत्रिमाटोली के मगलू ततमा को कॅपकॅपी लग जाती है। जेहल ! अरे बाप ! ये लोग जेहल ले जा रहे हैं। पन्द्रह साल पहले उसको चोरी के केस मे सजा हुई थी। जेल के जमादार की पेटी की मार वह आज भी नही भूला है। चार हौद[1] पानी रोज भरना पडता था। नही ! वह पेशाब करने के बहाने पीछे रह जाता है और नजर बचाकर घर की ओर भागता है। सब पगला गया है !

सहर पुरैनियॉ ! यही है सहर पुरैनियॉ—पक्की सडक, हवागाडी, घोडागाडी और पक्का मकान ! "एक रत्ती चिनगी चिनगल जाए, सहर पुरैनियॉ लूटल जाए ? क्या है, बोलो तो ?" 'आग !' गॉव के बच्चे आज भी बुझौवल बुझाते समय शहर पुरैनियॉ का नाम लेते है। मेरीगज के इस जुलूस मे चार आदमी ऐसे भी

1 होज

हैं जो शहर पुरैनियाँ पहले भी आए हैं। बहुत तो आज ही पहली बार रेलगाड़ी पर चढ़े हैं। कलेजा धकधक करता है। जिसके हाथ में गन्ही महतमा का झंडा रहा है, उससे गाटबाबू, चिकिहरबाबू, टिकस नहीं माँगता है।··· सचमुच में रेलगाड़ी "जै जै काली छै छै पैसा" कहते हुए दौड़ती है! जै जै काली ?·· यही है कालीपुल। बालदेव जी दिखलाते हैं–यही कालीपुल है। पुल बाँधने के समय पाँच आदमी की बलि दी गई थी।··· बाप रे! पाँच ?··· जै काली! नीमक कानून के समय इसी पुल के नीचे पुलिस के सिपाहियों ने जाड़े की रात में भोलटियरों को लाकर, पानी में भिंगो-भिंगोकर पीटा था। पानी में डुबो देता था, सिर को हाथ से गोते रहता है। दम फूलने लगता था, नाक में पानी चला जाता था। वह है इसपिताल। अपने गाँव का इसपिताल तो उसके सामने बुतरू[1] है··· जेहल ? यही जेहल ? जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करन को जाएँगे··· आओ बीरो जेहल भरो।· फुलिया पुरैनियाँ टीसन से ही कुछ ढूँढ़ रही है··· खलासी जी तो काला कुरता पहनते हैं। ··· यह है कचहरी। यहीं कर-कचहरी में लोग मर-मुकदमा करने के लिए आते हैं। इसी तरह उपसर्ग लगाकर सब बोलते हैं–कर-कचहरी, खर-खजाना, गर-गरामित, घर-घरहट, चर-चुमौना, जर-जमीन, पर-पंचायत, फर-फौजदारी, बर-बरात, मर-मुकदमा या मर-महाजन!

शहर के लोग भी अचरज से इस जुलूस को देख रहे हैं। इनकिलास· जिंदाबाघ! ·· कचहरी के मोड़ पर, फल की दुकान पर बैठे हुए मौलवी हँसते हैं–"सब कपड़ा लेने आए हैं! जाओ-जाओ, मिलेगा कपड़ा इन्कलाब बोलता है। मतलब भी समझता है या···।"

झंडा ? बड़ा झंडा आसमान में लहरा रहा है, वही है रामकिसून आसरम। ऐ! यहाँ सब कोई खड़े हो जाओ। कपड़ा ठिकाने से पहन लो। उस कल के पास जाकर मुँह धो लो। डरते हो काहे ? बालदेव जी हैं। यहाँ से सत्तरबंदी होकर चलना होगा। बालदेव जी सबसे आगे रहेंगे। सबसे पहले कालीचरन नारा लगाएगा–इनकिलाब; तब तुम लोग एक साथ कहना–ज़िंदाबाघ। वैसे गड़बड़ा जाता है। कालीचरन कहेगा–अंग्रेजी राज; तुम लोग कहना–नास हो। लगाओ नारा कालीचरन! कालीचरन छाती का जोर लगाकर चिल्लाता है–"इनकिलाब!"

"नाश हो, ज़िंदा··· नाश!"

"ऐ! ठहरो, नहीं हुआ।"

शिवनाथ चौधरी जी, गंगुली जी, शशांक जी, नाथबाबू, सभी आश्चर्य से देखते हैं। चौधरी जी बालदेव पर बड़े खुश हैं। नाथबाबू कहते हैं, "ऐसे ही सभी वरकर अपने फील्ड में वर्क करें तब तो ? दो महीने में इतने गाँव को अकेले ही आरगेनाइज कर लिया है। चवन्निया मेंबर कितना बनाया है ? पाँच सौ ? तब तो तुम·· आप जिला कमिटी के मेंबर हो गये।" गांगुली जी तो बालदेव को पहले से ही आप

1. बच्चा।

कहते हैं, आज नाथबाबू भी आप कहते हैं।

चौधरी जी कहते है, "अरे बालदेव, चरखा-सेंटर खुलवाओ। रचनात्मक काम कुछ होता है या नही ?"

खादी भंडारवाले छत्तीसबाबू कहते हैं, "खादी भंडार मे खौंटी गाय का घी भेजो देहात से बालदेव !"

सचमुच बालदेव जी गियानी आदमी हैं, बड़े आदमी हैं। जिस सीढ़ीवाली चौकी पर बाबू-बबुआन लोग टोपी पहनकर बैठे हैं उसी पर बालदेव जी बैठे हैं। अरे, वह कौन है ? बौना ? डेढ़ हाथ का आदमी ! देखने में चार साल के लडके जैसा लगता है। दाढ़ी-मूँछ देखो ! बोली कितनी भारी है ! भ्रधुक्का[1] में तो सबो की बोली भारी मालूम होती है। किसी की बोली समझ में नही आती है। न जाने कौन देश की बोली बोलता है–हिदुस्तान, आजादी और गाँधी जी को छोडकर और कोई बात नहीं बूझी जाती है ताली काहे बजाया ? बस, सभा खतम ? मेनिस्टर साहेब कहाँ हैं ? कौन ? वही दुबला-पतला, बड़ी-बड़ी मोंचवाला आदमी ? बोलता था एकदम परेम से आस्ते-आस्ते। माथा की टोपी भी लब्बड-झब्बड। उस बार गाँव में दारोगा साहेब आये थे, देखा था ? सारे देह में चमोटी लपेटा हुआ था। मेनिस्टर साहब ऐसे ही हैं ? यह कैसा हाकिम !

कालीचरन कहता है, "मेनिस्टर साहब नही, यह रजिन्नरबाबू थे। सुराजी कीर्तन मे रोज सुनते हो नहीं देसवा के खातिर मजरूलहक भइले फकिरवा हो, दीन भेलै रजिन्नरपरसाद देसवासियो। देस के खातिर अपना सब हक-हिस्सा, जगह-जमीन, माल-मवेशी गँवाकर फकीर हो गए। आहा-हा ! हूँ ! आजकल मेनिस्टर से भी जादे पावरवाला आदमी है। ठीक है, होगा नहीं ? देश के खातिर अपना मजरूलहक माने बिल्कुल हक खतम कर दिया। "

चौधरी जी ने बालदेव जी को दस रुपैया का नोट दिया है–"सबों को जलपान करा देना।"

जै, जै ! चलो ! चलो !

कालीचरन कहाँ है ? बासुदेव भी नही है। नही, नही, लौटते समय लारा लगाने की जरूरत नही। लेकिन कालीचरन और बासुदेव कहाँ रह गए ? भीड मे से किसी ने कहा–वे दोनो एक पैजामावाला सुराजीबाबू के साथ न जाने कहाँ जा रहे थे। बोला, कल जाएँगे। पैजामावाला सुराजीबाबू ? लेकिन बिना पूछे क्यो गया ? सहरवाली बात है। बालदेव जी कालीचरन पर आजकल खुश नहीं, कालीचरन भी आजकल बालदेव जी से अलग-थलग रहता है।

"कालीचरन नही, कामरेड कालीचरन। कामरेड माने साथी। हम सभी साथी, आप भीं साथी। यहाँ कोई लीडर नही। सभी लीडर, सभी साथी हैं। अच्छा कामरेड, आपके गाँव मे सबसे ज्यादे किस जाति के लोग हैं ? यादव ! ठीक है। भूमिहार ?

1 लाउड स्पीकर का भोंपा।

एक घर भी नही ? गुड ! जुलूस मे कितने आदमी थे, सब क्या बालदेव जी से प्रभावित हैं ? माने ब्लाइड फौलोअर, यानी आँख मूँदकर विश्वास करनेवाले तो नहीं ? अध-भक्त तो नहीं ?"

"जी, अधा भक्त तो महथ सेवादास था, सो मर गया। उसकी कोठारिन तो ।"

" ठीक है। अच्छी बात है। आपने सारी बाते समझ ली न ? मेबरी की जिल्द ले जाइए। कुछ लिटरेचर दे दीजिए इनको राजबल्ली जी ! जरा कामरेड सैनिक जी को इधर भेज दीजिएगा। ये हैं कामरेड गंगाप्रसाद सिह यादव सैनिक जी, और आप लोग है, कामरेड कालीचरन और क्या नाम ? हॉं, बासुदेव जी। आज मेरीगज से रामकृष्ण आश्रम मे जो जुलूस आया था, इन्ही लोगो की सर्दारत मे। पार्टी प्लेज पर साइन कर दिया है। मेरीगज मे सबसे ज्यादे यादवो की आबादी है। वहॉं आपका जाना ही ठीक होगा। वहॉं आर्गेनाइज करने मे कोई दिक्कत नही होगी। वही, बस बालदेव है एक। अच्छा कामरेड कालीचरन ! आपको और भी कुछ पूछना है ?" सोशलिस्ट पार्टी के जिला-मत्री जी पूछते हैं।

"जी, यदि हम कोई काम करने लगे, दस पबलिक की भलाई का काम, और उसको कोई 'हिसाबात कहकर रोके तो हम क्या करेगे ?" कालीचरन का बस यही पूछना है।

जिला-मत्री जी कुछ सोचने लगते है। लेकिन कामरेड राजबल्ली जी को कुछ सोचने मे समय नही लगता; बस, तुतलाने मे कुछ देरी लगे तो लगे–"अ-अ-अरे ! काम-काम-रेड, उससे साफ ल-प-लप-लफ्जो मे कह दीजिए कि फो-फां-फो-फो टूटी-टी-टू के मुभमेट मे अहिसा के भरोसे रहते तो आ-आ-आ-जग-ग-द्दी नसीब नही होती। उससे साफ लप-लप-लफ्जो मे कह दीजिए कि तुम रि-रि-रि-ऐक्शनरी हो ! डि-डि-डि-डिम-डिमोर-लाइज्ड हो। यह ले जाइए, 'डा-डा डा डायले डायलेक्टि द द द द्वद्वात्मक भौतिकवाद', 'स-स-समाजवाद ही क्यो', दो किताबे। इसमे सबकुछ लिखा हुआ है। 'लाल प प-पताका' की एक कापी ले जाइए ! इसका ग्राह-ग्राह-आ-ह-ग्राहक बनाइए। लाल झडा ले लिया है न ?"

लाल झडा !

उठ मेहनतकश अब होश मे आ
हाथ मे झडा लाल उठा,
जुल्म का नामोनिशान मिटा
उठ होश में आ बेदार हो जा !

कॉमरेड कालीचरन और कॉमरेड बासुदेव ! सुशलिग पाटी ! रास्ते मे कालीचरन बासुदेव को समझाता है, "यही पाटी असल पाटी है। गरम पाटी है। 'किरातीदल' का नाम नही सुना था ? 'बम फोड दिया फटाक से मस्ताना भगतसिह', यह गाना नही सुना हो ? वही पाटी है। इसमे कोई लीडर नही। सभी साथी हैं, सभी लीडर हैं। सुना नही। हिसाबात तो बुरजुआ लोग बोलता है। बालदेव जी तो बुरजुआ

है, पूँजीबाद है। इस किताब में सबकुछ लिखा हुआ है। बुरजुआ, बेटी दुरजुआ, पूँजीबाद, पूँजीपति, जालिम जमींदार, कमानेवाला खाएगा, इसके चलते जो कुछ हो।· अब बालदेव जी की लीटरी नहीं चलेगी। हर समय हिंसाबात, कुछ करो तो बस अनसन।··· कपड़ा की मेंबरी किसी तरह मिल जाए, तब देखना !"

स्टेशन पर बासुदेव जी ने एक किताब खरीदी, सिर्फ एक आने में। 'लाल-किताब' ! एक आदमी झोली में लेकर बेच रहा थाईशू संदेश !

दो किताबें हुईं अब—'ईशू संदेश' और 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद' !

सत्रह

आचारजगुरु कासी जी से आए हैं।

सभी मठ के जमींदार हैं, आचारजगुरु। साथ में तीस मुरती आए हैं—भंडारी, अधिकारी, सेवक, खवास, चिलमची, अमीन, मुंशी और गवैया। साधुओं के दल में एक नागा साधू भी है। यद्यपि वह दूसरे मत को माननेवाला मुरती है, फिर भी आचारज जी उसको साथ में रखते हैं, बडा करोधी मुरती है। हाथ में छोटा-सा कुल्हाडा रखता है। लंबी दाढ़ी, जटा, सारे देह मे भभूत और कमर में सिर्फ चाँदी की सिकडी ! नंगा रहता है। महंथ साहेब के साथ वह जिस मठ पर जाता है, वहाँ के महंथ और अधिकारी को छट्टी का दूध याद करा देता है। क्या मजाल कि सेवा में किसी किस्म की तरोटी[1] हो ! इसीलिए आचारजगुरु उसको साथ में रखते हैं।

नागा बाबा जब गुस्सा होते हैं तो मुँह से अश्लील-से-अश्लील गालियों की झडी लग जाती है। आते ही लछमी दासिन पर बरस पड़े—"तैरी जात को मच्छड़ काटे ! हरामजादी ! रंडी ! तैं समझती क्या है री ? ऐं, दुनियाँ को तैं अंधा समझती है ? बोल ! लाल मिर्च की बुकनी डाल दूँ छिनाल ! तैं आचारजगुरु को गाली देती है ? तेरे मुँह में कुल्हाड़े का डंडा डाल दूँ बोल ! साली, कुत्ती ! साधू का रगत बहाती है और बाबू लोग से मुँह चटवाती है ! दूँ अभी तेरे गाल पर चॉटा; हट जा यहाँ से, कातिक की कुतिया !"

लछमी हाथ जोडकर बैठी रहती है। नागा साधू की गालियों पर लोग ध्यान नही देते, बुरा नहीं मानते। वह तो आशीर्वाद है। वह नागा बाबा का पाँव पकडकर कहती हे, "छिमा कीजिए परभू दासिन का अपराध !"

1 त्रुटि

रामदास की तो खड़ाऊ से पीटते-पीटते देह की चमड़ी उधेड़ दी है नागा बाबा ने–"सूअर के बच्चे, कुत्ते के पिल्ले ! तैं महंथ बनेगा रे ! आ इधर ! तुझको खडाऊँ से टीका दे दूँ महंथी का ! तेरी बहान को ! (खटाक्) तेरी माँ को ! (खटाक्) घसियारे का बच्चा ! जा लक्कड़ लाकर धूनी में डाल !"

लरसिंघदास खुश है। इसीलिए तो वह अगवानी करने स्टेशन तक गया था। सारी बातें सुनकर आचारज जी भी तो क्रोध से लाल हो गए थे।··· दासिन को मठ से निकालना होगा। नागा बाबा को पाँच-'भर' गाँजा दिया है लरसिंघदास ने। अधिकारी जी को एक सौ रुपया कबूला है।··· महंथी तो धरी हुई है। सतगुरु की दया है।

आचारजगुरु ने लछमी से स्पष्ट कह दिया है–"रामदास को महंथी का टीका नहीं मिल सकता। क्या सबूत है कि वह महंथ सेवादास का चेला है ? है कही लिखा हुआ ? कोई वील है ? पंथ के नियम के मुताबिक चेलाहीन मठ का महंथ आचारज ही बहाल कर सकता है। तू मठ पर नहीं रह सकती। सेवादास ने तुझे रखेलिन बनाया था। सेवादास नहीं है, अब तू अपना रास्ता देख।"

"साहेब की जो मरजी !"

साहब की मरजी !·· नागा बाबा की जो मरजी !

नागा बाबा रात में उठकर एक बार चारों ओर देखते हैं, फिर लछमी की कोठरी की ओर जाते हैं खाली पैर। खड़ाऊँ तो खट-खट करेगी !

·· हरामजादी किवाड़ बंद करके सोती है। यहाँ कौन सोया है ? वही पिल्ला, रामदसवा !··· अरे उठ, तेरी जात को मच्छड़ काटे। दासिन को जगा। बाबा का गाँजा मारकर सेज पर सोई हुई है। कहाँ है मेरा गाँजा ? जानता नहीं, तीन–'भर' रोज की खुराकी है ? कहाँ है ?"

"सरकार ! आधी रात में गाँजा··· !"

"चुप हरामजादे ! दासिन को जगा।"

"आज्ञा प्रभु !" लछमी किवाड़ खोलकर निकलती है।"

"गाँजा कहाँ है ?"

"हाजिर है सरकार !" लछमी एक बड़ी-सी पुड़िया नागा के हाथ में देती है।

"·· अरे ! हरामजादी के पास इतना गाँजा कहाँ से आया ? पूरा तीन 'भर' मालूम होता है।·· यह साला रमदसवा, कोढ़ी का बच्चा यहाँ खड़ा होकर क्या करता है ?"···

"अबे सूअर के बच्चे, तैं यहाँ खड़ा होकर क्या करता है ?"·· खट्-खटाक् ! लछमी जल्दी से किवाड़ बंद कर लेती है।

"अच्छा, कल देखना, तुझे बाल पकड़ मठ से घसीटकर नहीं निकाला तो कसम गुरु मचंदरनाथ की !"

लरसिंघदास एकांत में एक बार लछमी से कहना चाहता है, "तुम घबड़ाओ मत लछमी ! महंथ तो मैं ही बनूँगा। तुम मठ में ही रहोगी। तुमको मठ से कोई

निकाल नहीं सकता। तुम निराश मत होओ !" लेकिन मौका ही नहीं मिलता है। शायद सुबह ही लछमी कहीं चली न जाए।

आचारजगुरु के जवान अधिकरी को भी रात-भर नींद नहीं आई, "पुरैनियाँ जिला में कंबल के नीचे भी घुसकर ससुरे मच्छर काटे हैं हो !"

सुबह को लछमी बालदेव जी के पास जाती है। बालदेव जी पुरजी बाँट रहे थे। सारी बातें सुनकर बोले, "कोठारिन जी, आचारजगुरु तो सभी मठ के नेता हैं। वे जो करेगे, वही होगा। इसमे हम लोग क्या कर सकते हैं ? बड़ा धरम-संकट है ! किसी के धरम मे नाक घुसाना अच्छा नहीं है।·· तीसरे पहर टीका होगा ? हम आवेंगे।"

लछमी दासिन को बालदेव जी पर पूरा भरोसा था। तहसीलदार साहब घर में नही हैं। डाक्टर साहब पर-पंचायत में नही जाते हैं। सिंघ जी सुनकर गुम हो गए। खेलावन जी ने तो बालदेव जी पर ही बात फेंक दी—जाने बालदेव ! सतगुरु हो ! कोई उपाय नहीं।

"साहेब बदगी कोठारिन जी !"

"कौन ! कालीचरन बबुआ ! दया सतगुरु के !"

"हाँ, टीका कब होगा ? कीरतन नहीं करवाइएगा ?"

लछमी दासिन कालीचरन को रो-रोकर सुनाती है, "काली बाबू ! ऐसी खराब-खराब गाली ! उफ ! सतगुरु हो !· मैं अब कहाँ जाऊँगी ? कौन सहारा है मेरा ?"

"अच्छी बात ! आप कोई चिंता मत कीजिए। बालदेव जी क्या करेंगे, वह तो बुरजुआ हैं। रोइए मत।"

लछमी देखती है कालीचरन को उस बार परयाग जी के जादूघर मे एक आबलूस की मूर्ति देखी थी, ठीक ऐसी ही।

मठ पर सभी साधू-सती, बाबू-बबुआन, दास-सेवकान शमियाने में बैठे हैं। लरसिंघदास ने सिर का जुल्फा छिलवा लिया है। अधकट्टी मूँछ को भी मुड़वा लिया है। साधुओं की भाषा में कहते हैं—मोछभदरा। सुफेद मलमल की नई लँगोटी ओर कोपीन, देह पर चादर नहीं है। चादर तो आचारजगुरु देंगे। आचारजगुरु का मुशी एकरारनामा और सूरतहाल लिख रहा है। लछमी एक किनारे चुपचाप बैठी है जमीन पर। रामदास की सारी देह में हल्दी-चूना लगा है। बालदेव जी को लछमी पर बड़ी दया आ रही है। लेकिन क्या किया जाए !

"सभी साधू-सती, सेवक-सेवकान, सुन लीजिए !" आचारज जी का मुशी दलील पढ़ता. है, "लिखित लरसिंघदास चेले गोबरधनदास मोतफा जात बैरागी फिरके··· । अब आप लोग इस पर दस्तखत कर दीजिए।" लछमी फूट-फूटकर रो पड़ती है। सतगुरु हो !

"तैं चुप रह हरामजादी ! चुप रहती है या लगाऊँ डंडा !" नागा बाबा चिल्लाते हैं, "तैं चुप !"

जो दस्तखत करना जानते हैं दस्तखत कर रहे हैं। बालदेव जी ने भी दस्खत कर दिया। उनका हाथ जरा भी नहीं काँपा। कालीचरन दलील हाथ में लेकर उठता है–"आचारज जी ! आप कहते हैं, महंथ सेवादास बिना चेला के मरा है। आप क्या गाँव के सभी लोगों को उल्लू ही समझते हैं ?"

"कालीचरन !" बालदेव मना करते हैं, "बैठ जाओ।"

"कालीचरन !" खेलावन यादव डाँटते हैं।

लेकिन कालीचरन आज नही रुकेगा। कोई हिसाबाद कहे या अनसन करे ! वह भी भाखन दे सकता है।

" हम जानते हैं और अच्छी तरह जानते है कि रामदास इस मठ का चेला है, महंथ सेवादास का चेला है। उसको महथी का टीका न देकर, आप एक नंबरी बदमास को महंथ बना रहे हैं। मठ में हम लोगों के बाप-दादा ने जमीनें दान दी है, यह किसी की बपौती संपत्ति नहीं ।"

"तेरी जात को मच्छड़ काटे, चुप साले ! कुत्ते के बच्चे ! अभी कुल्हाड़े से तेरा ! तेरी माँ को ।"

"चुप रह बदमास !" कामरेड वासुदेव उछलकर खडा होता है।

"पकडो सैतान को !" कामरेड सुंदर चिल्लाता है।

"भागने न पावे !

"मारो !"

ले-ले ! पकड़-पकड ! मार-मार, हो-हो ! रुको, ऐ बासुदेब ! ऐ सुंदर ! ऐ !

नागा बाबा दाढी छुड़ाने हैं, जटा छुड़ाते हैं, थप्पड़ों की मार से आँखों के आगे जुगनू उड़ते नज़र आ रहे हैं। गॉजे का नशा उतर गया है। आखिर दाढ़ी और जटा नोंचवाकर, कुल्हाड़ा छोड़कर ही भागते है। पकड़ो, पकड़ो ! छोड़ दो, छोड़ दो ! अब मत मारो ! नागा बाबा भागे जा रहे हैं। भभूत लगाथा हुआ नंग-धड़ंग शरीर, बिखरी हुई जटा ! दौड़ते समय उनकी सूरत और भी भयावनी मालूम होती है। गाँव के कुत्ते पागल हो जाते हैं। भौ ! भौं ! नागा बाबा के पीछे दर्जनों गँवार कुत्ते दौड़ रहे हैं। अधिकारी महथ लरसिंघदास तो चार चाँटे में ही चें बोल जाते हैं–"नहीं लेंगे महंथी, छोड़ दीजिए हमको !"

"छोड़ दो ! छोड दो ! कालीचरन हुक्म देता है। लरसिंघदास भी भागते हैं।

पंचों को लकवा मार गया है; साधुओं की हालत खराब है। पंचों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। और सबों के बीच, कालीचरन हाथ में दलील लेकर सिकन्नरशाह बादशा की तरह खड़ा है। पलक मारते ही क्या-से-क्या हो गया ! ... जैसे रामलीला का धनुसजग हो गया!

"अब आचारज जी, आपसे हम अरज करते हैं कि सुरतहाल पर रामदास

जी का नाम चढ़ाकर महंथी का टीका दे दीजिए !"

आचारजगुरु काँपते हुए कहते हैं, "ब-बुआ! हम तो सतगुरु की दया से··· हमको तो लोगों ने कहा कि सेवादास का कोई चेला ही नहीं था। जब रामदास उसका चेला है तो वही महंथ होगा।··· मुंशीजी, लिखिए सूरत-हाल ! ले आओ, चादर, दही का बरतन !"

रामदास नहा-धोकर, देह के हल्दी-चूने के दाग को छुड़ा आया है। दही का टीका कपाल पर पड़ते ही सारे देह की जलन मिट गई।··· सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

पूजा-विदाई लिए बिना ही आचारज जी आसन तोड़ रहे हैं। पंचायत के लोग भी चुपचाप अपने-अपने घर की ओर वापस होते हैं। लछमी हाथ में पूजा-विदाई की थाली लेकर खड़ी है–"कबूल हो प्रभू ! दासनि का अपराध छिमा करो प्रभू !"

"काली बाबू !"

बालदेव जी उलटकर देखते हैं। लछमी कालीचरन को बुलाकर अंदर ले जा रही है।·· कालीचरन ने अन्याय किया है, घोर अन्याय किया है, हिंसाबाद किया है। इस बार दो दिन का अनसन करना पड़ेगा।

खेलावन जी जाति-बिरादरी की पंचायत बुलाकर सब बदमाशो को ठीक करेंगे। हे भगवान ! साधुओं के शरीर पर हाथ उठाना !

कालीचरन कुश्ती लड़ता है। उस्ताद ने कहा है, कुश्ती लड़नेवालों को औरतों से पाँच हाथ दूर रहना चाहिए।··· वह पाँच हाथ से ज्यादे दूरी पर खड़ा है।

अठारह

"क्या नाम ?"

"सनिच्चर महतो।"

"कितने दिनों से खाँसी होती है ? कोई दवा खाते थे या नही ?··· क्या, थूक से खून आता है ? कब से ?·· कभी-कभी ? हूँ !··· एक साफ डिब्बा में रात-भर का थूक जमा करके ले आना।··· इधर आओ।··· ज़ोर से साँस लो।··· एक-दो-तीन बोलो।···' ज़ोर से। हाँ, ठीक है।"

"क्या नाम ?"

"दासू गोप।"

"पेट देखें ?··· हूँ !··· पिल्ही है। सूई लगेगी। सूई के दिन पुरजी लेकर आना। कल खून देने के लिए सुबह ही आ जाना। समझे !"

"क्या नाम ?"

"निरमला।"

"डागडरबाबू !" एक बूढ़ा हाथ जोड़कर आगे बढ़ आता है। गिड़गिड़ाता है–"हमारी बेटी है। आज से करीब एक साल पहले भोंमरा ने एक आँख में झाँटा मारा। इसके बाद दोनों आँखें आ गईं। बहुत किस्म की जंगली दवा करवाए, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अब तो एकदम नहीं सूझता।"

बला की खूबसूरत है यह निरमला। दूध की तरह रंग है चेहरे का।·· विशुद्ध मिथिला की सुंदरता। भौंरे ने गलती नहीं की थी। आँखें देखें !··· और आगे बढ़ आइए।··· आह !··· एक बूँद आईड्राप के बगैर दो सुंदर आँखें सदा के लिए ज्योतिहीन हो गईं। अब तो इलाज से परे हैं।··

डाक्टर ने आँखों की पपनियाँ उलटकर रोशनी की हल्की रेखा भी खोजने की चेष्टा की।· ऊँहूँ ! पुतलियाँ कफ़न की तरह सफेद हो गई हैं। वह सोचता है, यदि तूलिका से इन पुतलियों में रंग भरा जा सकता ! हाँ, कोई चित्रकार ही अब इन आँखों को सुंदर बना सकता है, ज्योति दे सकता है।

"डागडरबाबू !" रोगिनी कहती है। आवाज़ में कितनी मिठास है ! "बहुत नाम सुनकर आई हूँ। बहुत उम्मीद लेकर आई हूँ, बाईस कोस से। भगवान आपको जस दें !"

प्रकाश दो ! प्रकाश दो ! अँधेरे में घुटता हुआ प्राणी छटपटा रहा है, आत्मा विकल है–रोशनी दो ! डाक्टर क्या करे ?··· डाक्टर को भावुक नहीं होना चाहिए।

"घबराइए नहीं, दवा दे रहा हूँ। यहाँ ठीक नहीं होगा तो पटना जाना पड़ेगा।"

"हाँ, दूसरा रोगी ! क्या नाम है ?"

"रामचलित्तर साह।"

"क्या होता है ?"

"जी ! कुछ खाते ही कै हो जाता है। पानी भी··· "

"कब से ?"

"सात दिन से।"

"अरे ! सात दिन से !· जरा इधर आओ।"

"जी ? बेमारी तो घर पर है।"

"घर कहाँ ?"

"जी, सरसौनी बिजलिया। यहाँ से कोस दसेक है।"

हठात् सभी रोगी एक ओर हट जाते हैं, खूँखार जानवर को देखकर जिस तरह गाय-बैलों का झुंड भड़क उठता है; सभी के चेहरे का रंग उतर जाता है। औरतें अपने बच्चे को आँचल में छिपा लेती हैं। सबकी डरी हुई निगाहें एक ही

ओर लगी हुई हैं।

डाक्टर उलटकर देखता है—एक अधेड़ स्त्री।··· भद्र महिला !

"कहिए, क्या है ?"

"डागडरबाबू ! यह मेरा नाती है, बस यही एक नाती ! मेरी आँखों का जोत है यह। एक साल से पाखाने के साथ खून आता है। इसको बचा दीजिए डागडरबाबू ! ··· यह नहीं बचेगा।"

"घबराइए नहीं।··· इधर आओ तो बाबू ! क्या नाम है ? · गनेश ! वाह ! जरा पेट दिखलाइए तो गनेश जी !"

गनेश की नानी दवा लेकर चली जाती है। रोगियों का झुंड फिर डाक्टर के टेबल को घेर लेता है।

चिचाय की माँ कहती है, "पारबती की माँ थी। डाइन है ! तीन कुल मे एक को भी नहीं छोड़ा। सबको खा गई। पहले भतार को, इसके बाद देबर-देबरानी, बेटा-बेटी, सबको खा गई। अब एक नाती है, उसको भी चबा रही है।"

चिचाय की माँ ने ऐसा मुँह बनाया मानो वह भी कुछ चबा रही हो। डाक्टर चिचाय की माँ को देखता है।·· काली, मोटी, गंदी और झगड़ालू यह बुढिया चिचाय की माँ, जो बेवजह बकती रहती है, चिल्लाती रहती है।··· यह डाइन नही ? सुमरितदास उस दिन कहता था—"चिचाय की माये तो जनाना डाकडर है। पाँच महीने के पेट को इस सफ़ाई से गिरा देती है कि किसी को कुछ मालूम भी नही होता।" यह डाइन नहीं और गनेश की नानी डाइन है ? आश्चर्य !

गनेश की नानी ! बुढ़ापे मे भी जिसकी सुंदरता नष्ट नहीं हुई, जिसके चेहरे की झुर्रियो ने एक नई खूबसूरती ला दी है। सिर के सफेद बालो की घुँघराली लट ! होठों की लाली ज्यों-की-त्यों है। ठुड्डी मे एक छोटा-सा गड्ढा है और नाक के बगल से एक रेखा निकल नीचे ठुड्डी को छू रही है। सुंदर दतपक्तियॉं ! जवानी की सुंदरता आग लगाती है, और बुढ़ापे की सुदरता स्नेह बरसाती है। लेकिन लोग इसे डाइन कहते हैं। आश्चर्य !

"कहाँ रहती है ?"

"इसी गाँव में ! कालीचरन का घर देखा है न ! उसी के पास। बैस बनियाँ है। कितना ओझागुनी थक गया, इसको बस नही कर सका। जितिया परब[1] की रात में कितनी बार लोगो ने इसको कोठी के जंगल के पास गोदी में बच्चा लेकर नगा नाचते देखा है। गैनू भैंसवार ने एक बार पकड़ने की कोशिश की थी। ऐसा झरका बान[2] मारा कि गैनू के सारे देह में फफोले निकल आए। दूसरे ही दिन गैनू मर गया।··· "

रोज़ रात में डाक्टर केस-हिस्ट्री लिखने बैठता है।··· अभी उसके हाथ में कालाआज़ार के पचास ऐसे रोगी हैं, जिनके लक्षण कलाआज़ार के निदान को

---

1. जीताष्टमी। 2. अग्निबाण।

भटकानेवाले साबित हो सकते हैं।

एक : (क) सेबी मंडल, उम्र 35, हिंदू (मर्द), गाँव मेरीगंज, पोलियाटोली। तकलीफ : दाँत और मसूड़े में दर्द। दतुअन करने के समय खून निकलना, मुँह महकना, देह में खुजली, भूख की कमी। बुखार : नहीं। निदान : पायोरिया। दवा : कारबोलिक की कुल्ली। विटामिन सी का इंजेक्शन।

(ख) पंद्रह दिन के बाद : शाम को सरदर्द की शिकायत। बुखार 99.5, रात में पसीना।··· कैलशियम पाउडर।

(ग) पाँच दिन के बाद पेट खराब हो गया है। बुखार : 100°। कार्मिनटिव मिक्शचर। कालाआज़ार के लिए खून लिया गया।

(घ) अल्डेहाइट टेस्ट का फल : (+ +)कालाआज़ार ! चिकित्सा : नियोस्टिबोसन का इन्जेक्शन।

दो : (क) तेतरी, उम्र : 17, हिंदू (औरत), गाँव पासवानटोली, मेरीगंज।

तकलीफ : हड्डियों के हर जोड़ में दर्द। कभी-कभी नाक से खून गिरता है।

बुखार : नहीं (थर्मामीटर से देखा 99.5)। भूख : नहीं। रोग अनुमान : गठिया, वात।

दवा : विटामिन बी का इंजेक्शन। मालिश का तेल। डब्ल्यू. आर. के लिए खून लिया।

(ख) डब्ल्यू. आर. (गरमी) : (–) गरमी नहीं।

(ग) एक सप्ताह बाद नाक से खून गिरा।··· पेट खराब हुआ। कालाआज़ार के लिए खून लिया।

(घ) अल्डेहाइड टेस्ट का फल : संदेहात्मक। फिर खून लिया।

(ङ) ब्रह्मचारी-टेस्ट का फल : (+)

चिकित्सा—यूरिया स्टिबामाइन (ब्रह्मचारी)।

तीन : (क) रामेसर का बच्चा : उम्र-2 महीने। नाभी में घाव। रात में रोता है, दूध फेंकता है।··· माँ को कैलशियम पाउडर।

(ख) एक सप्ताह के बाद सारे देह में चकत्ते। अनुमान : एलरजिक।

(ग) चार दिन के बाद : चकत्तों में पानी भर गया है। डब्ल्यू. आर. के लिए माँ का खून लिया। फल : (–) नहीं।

(घ) कालाआज़ार के लिए माँ का खून लिया। फल : (–) नहीं। कालाआज़ार के लिए बच्चे का खून लिया। फल : (+ + +) कालाआज़ार।

और इस बच्चे की यदि मृत्यु हुई तो ज़रूर किसी डाइन के मत्थे दोष मढ़ा जाएगा। देह में फफोले ! गनेश की नानी पर संदेह किया जाएगा। गनेश की नानी ! न जाने क्यों वह गनेश की नानी से कोई प्यारा-सा संबंध जोड़ने के लिए बेचैन हो गया है। कमली कहती है, "मौसी ! मौसी में बहुत गुन हैं। सीकों से बड़ी अच्छी चीजें बनाती है—फूलदानी, डाली, पंखे। कशीदा कितना सुंदर काढ़ती है ! पर्व-त्योहार और शादी-ब्याह में दीवार पर कितना सुंदर चित्र बनाती है—कमल

के फूल, पत्ते और मयूर ! चौक कितना सुंदर पूरती है !"... वह भी उसे मौसी कहेगा !

"मौसी !"

"कौन ?"

"मैं हूँ। डाक्टर। गनेश कहाँ है ?"

"डागडरबाबू ! आप ? आइए, बैठिए। गनेश सो रहा है। मैं तो अकचका गई, किसने मौसी कहकर पुकारा !" बूढ़ी की आँखें छलछला आती हैं।

"मौसी ! सुना है तुम एक खास किस्म का हलवा बनाती हो ?" मौसी हँस पड़ती है, "अरे दुर ! किसने कहा तुमसे ? पगली कमली ने कहा होगा जरूर। ... कमली कैसी है अब ? इधर तो बहुत दिन से आई ही नहीं है। पहले तो रोज आती थी।"

"अच्छी है। · अच्छी हो जाएगी। मौसी ! एक बात पूछूँ ?... तुम्हारी कोई बहन, माँ, बेटी या और कोई... सहरसा इलाके में, हनुमानगंज के पास कभी रहती थी ?" डाक्टर अपने बेतुके सवाल पर खुद हँसता है।

"सहरसा इलाके में हनुमानगंज के पास ?.. रहो, याद करने दो।... नहीं तो ? क्यों, क्या बात है ?"

"यों ही पूछता हूँ। ठीक तुम्हारे ही जैसी एक मौसी वहाँ भी है।" बात को बदलते हुए डाक्टर कहता है, "मुझे एक फूल की डाली दो न मौसी !"

उफ ! सचमुच डाइन है यह बुढ़िया। इसकी मुस्कराहट में जादू है। स्नेह की बरसा करती है। ऐसी आकर्षक मुस्कराहट ?

गनेश बड़ा भोला-भाला लड़का है ! बड़ा खूबसूरत ! गोरा रंग, लाल ओठ और घुँघराले बाल उसे नानी के पक्ष से ही मिले हैं। बड़ा अकेला लडका मालूम होता है। मौसी कहती है, "किसके साथ खेले ! गाँव के बच्चे अपने साथ खेलने नहीं देते।.. मेरे ही साथ खेलता है।"

"गनेश जी, जरा पेट दिखाइए तो !... मौसी ! कल इसे सुबह ले आना तो ! खून लूँगा। होंठ मुरझाए रहते हैं।"

गनेश को अब एक मामा मिल गया।

"सचमुच ऐसा हलवा कभी नहीं खाया मौसी !.. विश्वास करो।... गनेश को भी दो ! कोई हरज नहीं।"

"मामा देखो !" गनेश गले में स्टेथस्कोप लटकाकर हँसता है।

"वाह ! मेरा भानजा डाक्टर बनेगा।"

डाक्टर जब मौसी के घर से निकला तो उसने लक्ष्य किया, कालीचरन के कुएँ पर पानी भरनेवाली स्त्रियों की भीड़ लग गई है। सभी आँखें फाड़े, मुँह बाए, आश्चर्य से डाक्टर को देखती हैं–"इस डाक्टर को काल ने घेरा है सायद।"

"लाल सलाम !"· कालीचरन मुट्ठी बाँधकर सलाम करता है, और डाक्टर को एक लाल परचा देते हुए कहता है, "कामरेड मंत्री जी आपको पहचानते हैं डाक्टर साहब !···. हाँ, कृष्णकांत मिश्र जी !"

आइए ! आइए ! जरूर आइए !

कमानेवाला खाएगा, इसके चलते जो कुछ हो !

किसाना राज : कायम हो।

मजदूर राज : कायम हो।

प्यारे भाइयों ! ता··· को मेरीगंज कोठी के बगीचे में किसानों की एक विशाल सभा होगी। सोशलिस्ट पार्टी पूर्णिया के सहायक मंत्री साथी गंगाप्रसादसिंघ यादव सैनिक जी··· ।

"परसो सभा है ! आइएगा।··· लाल सलाम !"

उन्नीस

चलो ! चलो ! सभा देखने चलो !

सोशलिस्ट पार्टी की सभा की खबर ने संथालटोली को विशेष रूप से आलोड़ित किया है। गाँव मे अस्पताल खुलने की खुशखबरी की कोई खास प्रतिक्रिया संथालों पर नहीं हुई थी। गाँव के लड़ाई-झगड़े और मेल-मिलाप से भी उन्हें कुछ लेना-देना नहीं। लेकिन यह सभा ? जमीन जोतनेवालों की ?··· कर्तव्यनिष्ठ और मेहनती संथाल किसानों के दिमाग की मुद्दत से उलझी हुई गुत्थी का सही सुलझाव ! जमीन जोतनेवालों की सभा !

"जमीन किसकी ?··· जोतनेवालों की ! जो जोतेगा वह बोएगा, जो बोएगा वह काटेगा। कमानेवाला खाएगा, इसके चलते जो कुछ हो !" कालीचरन समझा रहा है।

चारों ओर स्वस्थ, सुडौल, स्वच्छ और सरल इंसानों की भीड़। श्याम मुखड़ों पर सफ़ेद मुस्कराहट, मानो काले बादलों में तीज के चाँद के सैकड़ों टुकड़े। बिरसा माँझी का जवान बेटा मंगल माँझी कालीचरन के वाक्यों को गीतों की कड़ी में जोड़ने की चेष्टा करता है···

जोहिरे जोतबे सोहिरे बोयबे···

सनियाँ मुरमू कालीचरन की हर बात पर खिलखिलाकर हँसती है–हँ हँ हँ

हँ हँ हँ हँ ! सरगम के सुर में हँसती है सनियाँ। पर तीतर की आवाज की तरह हँ हँ हँ हँ ! पीछे की ओर झूलता हुआ रंगीन आँचल रह-रहकर चंचल हो उठता है, मानो नाचने के लिए मोरनी पंख तौल रही हो। उसके चरण थिरकने के लिए चपल हो उठे हैं।

मनर की मंद आवाज··· रिंग रिंग ता धिन-ता !
डिग्गा की अटूट ताल··· डा डिग्गा, डा डिग्गा !
उन्मुक्त स्वर लहरी··· जोहिरे जोतबो सोहिरे बोयबे !
मुरली की लय पर पायलों का छुम छुम, छन्न छन्न !

डा डिग्गा डा डिग्गा
रिंग रिंग ता धिन-ता !

चल चल रे, सभा देखेला।···

चार पुश्त पहले की बात ! संथाल परगना के तीन पहाडी अंचल की पथरीली माटी का मोह तोड़कर, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ते को तय करके जब इनके पूर्वज इस गाँव की नरम माटी पर आकर बसे थे ! गाँववालों ने जमींदार के पास जाकर फरियाद की थी, "हुजूर ! माई-बाप ! जंगली लोग हैं। सुनते हैं तीर-धनुष से जान मार देने पर भी सरकार बहादुर इनको कुछ नहीं कर सकता है। इन्हें हरगिज नही बसाया जाए हुजूर !"

लेकिन जमींदार ने समझाकर कहा था, "ऐसी बात नहीं। वे बड़े मिहनती होते हैं। धरमपुर इलाके में जाकर देखो, राजा लछमीनाथसिंघ ने इनसे हजारो बीघा बनजर जमीन आबाद करवा लिया है; परती और भीठ जमीन से ही तेजू बाबू को दो हजार मन गेहूँ उपजाकर संथालों ने दिया है। मालूम ?"

जमींदार ने गाँववालों को विश्वास दिलाया था कि इन्हें गॉव से अलग ही बसाएँगे। सभी जमींदारों ने इन्हें जंगलो मे ही बसाया है।

इसके बाद से ही बबूल, झरबेर और सॉँहुड़ के पेड़ों से भरे हुए जंगल हर साल साफ होकर आबाद होते गए। आज जहाँ सैकड़ों बीघे जमीन में मोती के दानों से भरी हुई गेहूँ की बालियाँ पुरवैया हवा में झूम रही हैं, धरती का वह टुकड़ा सर्वे के कागजात और नक्शे में जंगल के नाम से दर्ज है, जिस जंगल में बाघ का शिकार खेलने के लिए ज़िले-भर के राजा और जमींदार जमा होते थे। गाँव के नई उम्र के लड़के तो विश्वास नहीं करते।

नीलहे साहबों के नील के हौज़ ज्यादातर इन्हीं मूक इंसानों के काले शरीर के पसीने से भरे रहते थे।

साहबों के कोड़ों की मार खाकर, जमीदारों की कचहरियों में दिन-भर मोगलिया

बाँधी[1] की सजा भुगतने के बाद शाम को मोहन की जादू भरी-वंशी बजी और सब के कष्ट दूर हो गए।

रिंग रिंग ता धिन-ता
डा डिग्गा डा डिग्गा !...

सोने के अनाज से भरे हुए, धरती के गुप्त भंडार का उद्घाटन करनेवाले पर धरती माता का कोप होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि आज जमीन के मालिकों ने, जमीन के व्यवस्थापकों ने और धरती के न्याय ने धरती पर इनका किसी किस्म का हक नहीं जमने दिया है। जिस जमीन पर उनके झोंपड़े हैं, वह भी उनकी नहीं। हल में जुता हुआ बैल दिन-भर खेत चास[2] करता है, इसलिए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल किया जाए ? यह कैसी बात है ?

1947 के कांग्रेसी मंत्रिमंडल के समय इस जिले में एक अंग्रेज कलक्टर आया था। उसने इस व्यवस्था को अन्याय समझ सुधारने की चेष्टा की थी। ज़िले-भर के भूमिहार, जमींदार और राजा घबरा गए थे। जिले के अधिकांश नेता भूमिहार और जमींदार थे। अंग्रेज कलक्टर पर इलजाम लगाया गया—संथालों को उभारकर, जिले में अशांति फैलाकर, कांग्रेसी मंत्रिमंडल को असफल बनाने का षड्यंत्र करता है ! 'कांग्रेस संदेश' के संपादकीय में संथालों के प्रति थोडी समवेदना प्रकट की थी। बेचारे विद्यालंकार संपादक को उसी दिन मालूम हुआ था कि विद्या का अलकार कितना बेमानी है। जिला-मंत्री ने आँखे लाल करके कहा था, "विद्यापीठ का शास्त्र यहाँ काम नहीं देगा। विद्यापीठ में गधे के सर पर सींग तो नहीं जम सकती है।"...

जमींदारों ने अपने भाड़े के लठैतों को जगह-जगह संथालो की लहलहाती फसलों पर हुलका[3] कर, संथाल टोली पर चढ़ाई करवाकर, रुपए लाठी के हिसाब से बटोरे हुए लठैतो को संथालों के तीरो से जख्मी करवाकर, सबल प्रमाण पेश कर दिया था—संथालों के जोर-जुल्म का मुख्य कारण है यह अंग्रेज कलक्टर। इसी के बल पर वे कूद रहे है।

अंग्रेज कलक्टर की तुरंत बदली हो गई। बहुत-से संथाल सरकारी गोली से घायल हुए और सैकड़ों ने बिहार के विभिन्न जेलों में सफैयाकमान[4] में काम करते-करते सारी उम्र बिता दी। उसके बाद फिर कौन चूँ करता है ! लेकिन मानर और डिग्गा की आवाज कभी मंद नहीं हुई, बाँसुरी कभी मंद नहीं हुई और न उनके तीरो मे ही जंग लगे। आज भी कभी-कभी बनैले जानवरों के शिकार के समय, सूरज की किरणों में चमकदार चकाचौंध पैदा कर देते हैं इनके तीर !

मलेरिया और कालाआज़ार की क्रीड़ा-भूमि में भी ये सबल और स्वस्थ रहकर क्रीडा करते हैं। हड्डियों पर कलापूर्ण ढंग से तराशकर बैठाए जैसे मांस का उभार

---

1. एक कड़ी सजा। 2. जोतना। 3. धावा करना। 4. मेहतर कमांड।

कभी सूखा नहीं; ताले फूलों की पंखड़ियों जैसे उनके ओठ कभी जर्द नहीं हुए और न किसी संथाल के पेट में कभी पिल्ही बढ़ जाने की बात ही सुनी गई। अस्पताल खुलने से उनका क्या फायदा होगा ? लेकिन जमीन !· जोतनेवालों की ?···

"चलो ! चलो ! सभा देखने चलो !"

किसान राज : कायम हो ।
मजदूर राज : कायम हो !
गरीबों की पाटी : सोशलिस्ट पाटी,
सोशलिस्ट पाटी : जिंदाबाद !

"·· यह जो लाल झंडा है, आपका झंडा है, जनता का झंडा है, अवाम का झंडा है, इन्कलाब का झंडा है। इसकी लाली उगते हुए आफताब की लाली है, यह खुद आफताब है। इसकी लाली, इसका लाल रग क्या है ?·· रंग नहीं ! यह गरीबों, महरूमों, मजलूमों, मजबूरों, मजदूरों के खून में रँगा हुआ झंडा है !" कामरेड सैनिक जी भाषण दे रहे हैं।

"ऐ ! खून में रँगा हुआ झंडा !" बादरदास ने कालीचरन के कहने से हाथ मे झडा लिया था। बादरदास वैष्णव है, मांस-मछली छूता भी नहीं; और यह आदमी के खून में रँगा हुआ झडा ? उसका धरम भ्रष्ट कर दिया कालिया ने। छिः-छिः ! वह हाथ में झंडें का बाँस थामं खड़ा है ? वह अचानक ही झडे के बाँस को छोड़ देता है ! आदमी के खून मे रँगा हुआ झडा !

जोतकी काका कहते हैं, "पताखा पतन, अशुभ, अमंगल और अनिष्ट की सूचना है।"

सैनिक जी अपना भाषण जारी रखते हैं। भाषण के बीच में रुक जाने से फिर, शुरू से याद करना पडता है—"जिस तरह सूरज का डूबना एक महान् सच है, पूँजीवाद का नाश होना भी उतना ही सच है। मिलों की चिमनियाँ आग उगलेंगी और उन पर मजदूरों का कब्जा होगा। जमीनो पर किसानो का कब्जा होगा। चारो ओर लाल धुआँ मँडरा रहा है। उट्ठो, किसानों के सच्चे सपूतो ! धरती के सच्चे मालिको, उट्ठो ! क्रांति का मशाल लेकर आगे बढ़ो !"

"बोलिए एक बार प्रेम से—सोशलिस्ट पाटी की जै !" यंही पार्टी असली है। किसानों की पार्टी, गरीबों की पार्टी। सभा-स्थल पर ही तीन सौ मेंबर बन गए। संथालटोली का एक आदमी भी गैर-मेबर नहीं रहा। सब लाल ! सिर्फ सरदार टुडू का तेरह साल का लड़का रह गया है। वह रोता है, सरदार टुडू सैनिक जी के पास जाकर अपील करता है, "इश्का नाम लेंबरी में नहीं लिखा जाएगा ? क्यों ? उमेर कम नहीं, देखिए, इश्कों मोंच का रेख आ रहा है।"

बालदेव जी कुछ बोलने को खड़े होते हैं। बासुदेव तुरत उठकर कहता है, "बालदेव जी, आपका बिख्यान हम लोग बहुत बार सुन चुके हैं। आप पूँजीबाद

हैं। इस सभा में आप नहीं बोल सकते।"

जनता ने भी विरोध किया, बैठ जाइए ! जाइए, कपड़ा का पुर्जी बाँटिए, चीनी बिलेक कीजिए।"

... अरे बाप ! कितना टीन छोआ कहा नेताजी ने ? एक हजार टीन छोआ बिलेक कर दिया मेनिस्टर कांग्रेसी ने ! इसीलिए तो देहात से हुक्का उठ रहा है। अब लोग बीड़ी न पीयें तो क्या करें। हुक्का के तंबाकू के लिए छोआ गूड़ कहाँ से आएगा। सब बिलेक हो गया। अन्याय है !

तहसीलदार साहब को तो नेताजी ने भरी सभा में बेज्जत कर दिया, अलबत्त गाली देते हैं नेताजी।... जमींदार के दुम ये तहसीलदार ! मुफ्तखोर !

मगर तहसीलदार साहब हँसते ही रहे थे। उस रात को बिदापत नाच के बिकटा की भँड़ैती सुनने के समय जैसी मंद मुस्कराहट उनके चेहरे पर थी, आज भी है।

कालीचरन अब खेलावनसिंह के कब्जे से बाहर है। कालीचरन यादव कुल-कलंक है। बूढ़ा कुकरू बुढ़ापे तक खेलावन का बैल चराता था और उसका बेटा लीडर हो गया। सुर्शिलग लीडर ! इसको काबू में रखने का कोई हथियार भी नहीं। अँगूठे का टीप भी कभी नहीं लिया इससे !

सिपैहियाटोली का एक बच्चा भी इस सभा में नहीं था। उनके टोले में कटिहार से काली टोपीवाले दल के संजोजकजी आए हैं। लाठी-भाला टरेनि देते हैं। छोटी जात के लोगों की सभा में वे नहीं जा सकते।

कालीचरन ने सैनिक जी के रहने का प्रबंध मठ पर किया है। महंथ रामदास जी तो नाम के महंथ हैं, मठ की असल मालकिन तो लछमी है।... पंद्रह सेर दूध को जलाकर खोआ बना है, मालपुआ की सोंधी सुगंध हवा में फैल रही है।

लछमी पूछती है, "काली बाबू ! नेताजी डोलडाल से आकर स्नान नहीं करेंगे ?"

सैनिक जी के साथ में 'लाल पताका' साप्ताहिक पत्र के संपादक श्री चिनगारी जी भी आए हैं। दुबले-पतले हैं, दिन-भर खाँसते रहते हैं; आँख पर बिना फ्रेम वाला चश्मा लगाते हैं। दिन-भर सिगरेट पीते रहते हैं। शायद इसीलिए 'चिनगारी जी' नाम पड़ा है। डॉक्टर ने अंडा खाने के लिए कहा है। बिना अंडा खाए इतना गरम अखबार कोई कैसे निकाल सकता है ?... लेकिन मठ पर अंडे का प्रबंध कैसे हो सकता है ?

लछमी के अतिथि-सत्कार को भूलना असंभव है। चिनगारी जी रात में सोते समय सैनिक जी से कहते हैं, "मैं लछमी जी पर एक मुक्तछंद लिखना चाहता हूँ...

"... ओ महान् सतगुरु की सेविका
गायिका पवित्र धर्मग्रंथ की
ओ महान् मार्क्स के दर्शन की दर्शिका,
सुदर्शने, प्रियदर्शिनी,
तुम स्वयं द्वंद्वयुक्त भौतिकवाद की
सिनथिसिस हो !"

बीस

कमली डाक्टर को पत्र लिखती है–

"प्राणनाथ !··· तुम कल नहीं आए। क्यों नहीं आए ? सुना कि रात में·· ।

कमली डाक्टर को रोज पत्र लिखती है। लिखकर पाँच-सात बार पढ़ती है, फिर फाड़ डालती है। उसकी अलमारी के एक कोने में फाड़ी हुई चिट्ठियों का ढेर लग गया है। पत्र लिखने और लिखकर पढ़ने के बाद उसको बड़ी शांति मिलती है। जी बड़ा हल्का मालूम होता है, और नींद भी अच्छी आती है।

"· सुना कि रात में तुम गेहुँअन साँप से बाल-बाल बच गए। भगवान को इसके लिए लाख-लाख धन्यवाद !"

रात में डाक्टर गेहुँअन साँप से बाल-बाल बच गए। गेहुँअन नहीं? घोड़-करैत। गेहुँअन और करैत का दोगला। घोड़े से ज्यादा तेज भाग सकता है। घोड़-करैत का काटा हुआ आदमी ओझा-गुणी का मुँह नहीं देख सकता। आधी रात को खरगोश और चूहे अपने-अपने पिंजड़ों में घबराकर दौड़-भाग करने लगे। डाक्टर साहब ने प्यारू को पुकारा, लेकिन प्यारू की नींद नहीं टूटी। जानवरों के कमरे का दरवाजा खोलकर टार्च देते ही डाक्टर तडपकर पीछे हट गए–साँप ठीक किवाड़ के पास ही अपनी पूँछ पर सारे धड़ को खड़ा किए फुफकार रहा था। तब तक प्यारू भी जग चुका था। उठते ही उसने बाएँ हाथ से ही ऐसी लाठी चलाई कि साँप वहीं ढेर हो गया। अढ़ाई हाथ का साँप ! डाइन का मंतर अढ़ाई अक्षरों का होता है और डाइन का भेजा हुआ साँप अढ़ाई हाथ का !

सुबह को जिसने यह बात सुनी, बस एक ही राय कायम की–यह तो पहले से ही मालूम था। डाक्टरबाबू को इतना समझाया-बुझाया की पारबती की माँ से इतना हेल-मेल नहीं बढ़ावें। नहीं माने, अब समझें। वह राच्छसनी किसी को छोड़ेगी ? जिसको प्यार किया, उसको जरूर खाएगी। डाक्टर बेचारा भी क्या करे ! वह अपने मन से तो कुछ नहीं करता। उस पर तो पारबती की माँ ने जादू कर दिया है; वह अपने बस में नहीं। मुफ्त में बेचारे की जान चली जाएगी एक दिन। चूः चूः !

कमली को डाइन, भूत और डाकिन पर विश्वास नहीं। तहसीलदार साहब भी इसे मूर्खता समझते हैं। कालीचरन तो आदमी से बढ़कर बलवान किसी देवता को भी नहीं समझता, फिर डाइन-भूत, ओझा-गुणी किस खेत की मूली हैं ! इन्हें छोड़कर गाँव के बाकी सभी लोग डाइन के बारे में एकमत हैं। बालदेव जी ने तो बहुत बार भूत को अपनी आँखों से देखा है। भैंस के पीछे-पीछे खैनी-तंबाकू माँगता है भूत ! डाकिन का पाँव उल्टा होता है और वह पेड़ की डाल से लटककर झूलती है। भूत-प्रेत झूठ है ? तब कमला किनारे, कोठी के जंगल के पास में

रात को जो भक्क-से राकस जल उठता है, दौड़ता है और देखते-ही-देखते एक से दस हो जाता है सो क्या है ?

"डाक्टर साहब अब रोज मौसी के यहाँ जाते हैं। मौसी के यहाँ एक बार बिना गए उनको चैन नहीं," प्यारू कहता है। कमली सुनती है और हँसती है।

"डाक्टर साहब गनेश को देखने जाते हैं, प्यारू !"

"वह लड़का तो आराम हो गया है। मुटाकर कोल्हू होता जा रहा है। उसको क्या देखने जाते हैं !"

"अच्छा प्यारू, डाक्टर साहब तो मेरे यहाँ भी रोज आते हैं।"

"तुम्हारे यहाँ की बात दूसरी है दीर्दी !"

"क्यो ? दूसरी बात क्या है ?"

डाक्टर साहब हँसते हुए आते हैं, "अच्छा ! तो प्यारू जी यहाँ दरबार कर रहे हैं। वह बुखारवाला खरगोश कैसे भाग गया ?"

"जी, हम दोपहर का दाना देने गए तो देखा कि पिंजड़ा खाली।"

"सुबह सूई देने के बाद तो मैंने पिंजड़ा बंद कर दिया था। तुमने पानी पिलाने के बाद पिंजड़ा बंद नहीं किया होगा। महीने-भर की मेहनत बेकार गई।"

प्यारू को इन चूहो और खरगोशों से बेहद नफरत है। आदमी के इलाज से जी नहीं भरता है, तो जानवरो का इलाज करते हैं ! दिन-भर पिंजडों को लेकर पड़े रहते हैं। बुखार देखते हैं, सूई देते हैं और खून लेते हैं। जब से ये जानवर आए हैं, डाक्टर साहब को प्यारू से बात करने की भी छुट्टी नहीं मिलती।" अब भाँगड़टोली के लोगों से कह रहे हैं–"दो-तीन सियार के बच्चों की जरूरत है। उस दिन मदारी से बंदर माँग रहे थे। अजीब सौख है !"

प्यारू चुपचाप चला जाता है। माँ हँसती हुई आती है, "डाक्टर साहब ! मैंने विषहरी माई को एक जोड़ी कबूतर और दूध-लावा कबूला है !"

"और मैंने भी विषहरी दवा के लिए लिख दिया है।"

"विषहरी दवा ?"

"हाँ, एंटिवेनम एक दवा है, साँप के काटे हुए का इलाज होता है ! मैं ऐंटिवेनम से भी ज्यादा प्रभावशाली और सस्ती दवा की खोज करना चाहता हूँ। सुनते हैं, रौतहट स्टेशन के पास सँपेरों का टोला है। साँप पकड़वाकर रखना होगा।"

"तब माटी के महादेव नहीं, असली महादेव हो जाइएगा।" कमली व्यंग्य करना जानती है।

डाक्टर साहब हँस पड़ते हैं और माँ हँसी को रोकते हुए कमली को डाँटती है, "जो मुँह में आया बोल दिया। जरा भी लाज-लिहाज नहीं। इसके बाप ने तो इसे और भी बतक्कड़ बना दिया है। तुम यहाँ आकर चुप बैठो तो जरा, मैं चाय बना लाऊँ।"

"तहसीलदार साहब कहाँ गए हैं ?" डाक्टर पूछता है।

"कटिहार। सर्किल मैनेजर के कैंप में गए है," कमली जवाब देती है। आज

पहली बार कमली ने डाक्टर को अपने पास अकेला पाया है। वह अपने चेहरे को देख नहीं सकती, लेकिन ऐसा लगता है कि उसका चेहरा धीरे-धीरे लाल होता जा रहा है। आँखों की पलकों पर भारी बोझ लद गए हैं, कान की इयररिंग थरथरा रही है। सारी देह गुदगुदी लग रही है। देह हलकी लग रही है।··· बेहोशी ? वह बेहोश होना नहीं चाहती। नहीं, नहीं ! डा··· क्टर !

"कमला !"

"जी !"

"कमला ! इधर देखो कमला !"

"डाक्टर, मुझे बचाओ !"

"कमला, आँखें खोलो !"

कमला ने आँखें खोल दीं। उसका सिर डाक्टर की गोद में है। माँ हाथ में चम्मच लिए खड़ी है, भय से माँ का मुँह पीला हो गया है, लेकिन डाक्टर साहब मुस्करा रहे हैं।

"डाक्टर साहब, इसकी बीमारी का तो टेर-पता ही नहीं चलता है।"

"लेकिन रोग तो धीरे-धीरे घट रहा है। बेहोश हुई, पर पाँच मिनट में ही स्वस्थ भी हो गई। इसी तरह एक दिन जड़ से यह रोग दूर हो जाएगा।....कमला को ही चाय बनाने दीजिए। जाओ कमला !"

कमला उठकर इस तरह दौड़ी मानो कुछ हुआ ही नहीं था। डाक्टर कमला की किताब हाथ में लेकर उलटता है—नल-दमयंती ! अस्याधिकारिणी कुमारी कमलादेवी।...दूसरी जगह कुमारी को काट दिया गया है और नाम के अंत में बनर्जी जोड़ दिया गया है —कमलादेवी, बनर्जी। डाक्टर जल्दी से पृष्ट उलटता है—आर्ट पेपर पर नल-दमयंती की तस्वीर। नल के नीचे नीली पेंसिल से लिखा है 'प्रशान्त' और दमयन्ती के नीचे लाल पेंसिल से 'कमला'। डाक्टर के ललाट पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें चमक उठती हैं। उसे याद आता है, एक बार ममता के साथ बाँकीपुर स्टेशन से लौट रहा था। रिक्शा पर बैठने के समय एक भिखारी ने घेर लिया था—"जुगल जोड़ी कायम रहे, सुहाग अचल रहे माँ का, बाल-बच्चा बनल रहे !" ममता ने बैग से इकन्नी निकालकर दी थी और डाक्टर की ओर देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ी थी; और डाक्टर के ललाट पर इसी तरह पसीने की बूँदें चमक उठी थीं।

"डाक्टर साहब, कमली के लिए एक अच्छा-सा वर ढूँढ़िए न ! आपके देश में... आपके साथी-संगी..." माँ कहते-कहते सिर पर घूँघट सरकाकर चुप हो जाती है। तहसीलदार साहब आ गए। रनजीत के हाथ में एक बड़ी रोहू मछली है।

"यह नजराना कहाँ मिला ?" डाक्टर साहब हँसते हैं।

"पकरिया घाट पर मछुआ लोग आज मछली मार रहे थे," तहसीलदार साहब ने मोढ़े पर बैठते हुए कहा।

कमला चाय ले आई।

"डाक्टर साहब, आज पाप की गठरी फेंक आया हूँ।" तहसीलदार साहब ने चाय की प्याली में चुस्की लेते हुए कहा।

"मलतब ?"

"यह तहसीलदारी पाप की गठरी ही तो थी। यह नया सर्किल मैनेजर आते ही 'आग पेशाब' करने लगा। 'लाल पताका' अखबार ने ठीक ही लिखा था, 'राज पारबंगा के मीरापुर सर्किल का नया मैनेजर नादिरशाह का भतीजा है।' अब आप ही बताइए डाक्टर साहब, कि जिन रैयतों के यहाँ सिर्फ एक ही साल का बकाया है, उन पर नालिश कैसे किया जाए ? फिर चुपचाप डिग्री जारी करवाकर नीलाम करो और जमीन खास कर लो। इतना बड़ा अन्याय मुझसे तो अब नहीं होगा। जमाना कितना नाजुक है, सो तो समझते हैं नहीं। मैंने साफ इनकार कर दिया तो कड़ककर बोले, "नहीं कर सकते तो इस्तीफा दे दो।" गंगा-स्नान से भी बढ़कर ऐसे पुण्य का अवसर बार-बार नहीं मिलता। तुरंत इस्तीफा दे दिया। सारी जिंदगी तो गुलामी करते ही बीत गई। ...कमला की माँ, आज मत्स भगवान आए हैं। कमला से कहो, डाक्टर साहब को निमंत्रण दे दे।"

तहसीलदार साहब की रसिकता ने डाक्टर को एक बार फिर नल-दमयंती की याद दिला दी। कमली मुस्करा रही है। माँ कहती है, "बग़ैर मिर्च-मसाला की मछली कमली ही बना सकती है।"

डाक्टर महसूस करता है, कमला के निमंत्रण को अस्वीकार करने की हिम्मत उसमें नहीं। ...कमला बनर्जी। ...कमला की आँखें !

चाँद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल
तिरिया बयरि दुहु लोचन...

इक्कीस

रात को तंत्रिमाटोली में सहदेव मिसर पकड़े गए !

यह सब खलासी की करतूत है। ऊपरी आदमी[1] के सिवा ऐसा जालफरेब गाँव का और कौन कर सकता है ? पुश्त-पुश्तैनी के बाबू लोग छोटे लोगो के टोले में जाते हैं। खेती-बारी के समय रात को ही जनो[2] को ठीक करना होता है, सूरज उगने से एक घंटा पहले ही खेतों पर मजदूरों को पहुँच जाना चाहिए।

1 परदेशी। 2 मजदूर।

इसलिए सभी बड़े किसान शाम या रात को ही अपने-अपने जनों को कह आते हैं। तंत्रिमाटोली में जब से खलासी का आनाजाना शुरू हुआ है, तभी से नई-नई बाते सुनने को मिल रही हैं। देखा-देखी, दूसरे टोले में भी नियम-कानून, पंचायत और बंदिश हो गई है। बेचारे सहदेव मिसर को रात-भर तंत्रिमा लोगों ने बाँधकर रखा। ...फुलिया के घर में घुसा था तो फुलिया ने हल्ला क्यों नहीं किया ? जिसके घर में घुसा उसकी नींद भी नहीं खुली, माँ-बाप को आहट भी नहीं मिली और उसका कुत्ता भी नहीं भूँका। गाँव के लोगों को बेतार से खबर मिल गई। यह खलासी की बदमाशी है। रही हालत यही तो छोटे लोगों के टोले में जन के लिए जाना मुश्किल हो जाएगा। कौन जाने, किस पर कब झूठ-मूठ कौन-सी तोहमत लग जाए ? पंचायत होनी चाहिए। राजपूतों ने यदि इस पंचायत में ब्राह्मणों का पक्ष नहीं लिया तो ब्राह्मण लोग ग्वालों को राजपूत मान लेंगे।

"हमको कुछ नहीं मालूम," फुलिया पंचों के बीच हाथ जोड़कर कहती है, "जब ऑगन में हल्ला होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं।"

सहदेव मिसर के पास मँहगूदास के अँगूठे की टीप है—सादा कागज पर। मँहगू की टीक[1] सहदेव के हाथ में है। सहदेव जो चाहे कर सकता है। दोनों गायें और चारों बाछे कल ही खूँटे से खोल कर ले जाएगा। इसके अलावा साल-भर का खरचा भी तो सहदेव ने ही चला दिया है। एक आदमी की मजदूरी से तो एक आदमी का भी पेट नहीं भरता है। ...लेकिन अब फुलिया के हाथ में ही सहदेव मिसर की इज्जत और अपने बाप की दुनिया है; उसकी बोली में जरा भी हेर-फेर हुआ कि सहदेव की इज्जत धूल में मिल जाएगी और उसके बाप की दुनिया भी उजड जाएगी।

पचायत में गॉव-भर के छोटे-बड़े लोग जमा हुए हैं। तहसीलदार साहब पुरैनिया गए हैं। पचायत में अकेले सिंघ जी बोल रहे हैं। काली टोपीवाले संयोजक भी हैं। बालदेव जी भी हैं। कालीचरन बिना बुलाए ही आया है। सिंघ जी अकेले ही जिरह-बहस कर रहे हैं। तहसीलदार साहब रहते तो थोड़ी सहूलियत होती सिंघ जी को।

"...बात पूछने पर एक घंटे में तो जवाब मिलता है। ...हाँ, जब आँगन में हल्ला होने लगा तब तुम्हारी नींद खुली। ...सुन लीजिए सभी पंच लोग। ...अच्छा, जब तुम्हारी नीद खुली तो तुमने क्या देखा ?"

"सहदेव मालिक को आँगन में घेरकर सभी हल्ला कर रहे थे।"

"अच्छा, तुम बैठो। कहाँ, सहदेव मिसर ? अब आप बताइए कि मँहगूदास के यहाँ उतनी रात को आप क्यों गए थे ?"

"रात मे हमारे पेट में जरा दर्द हुआ। लोटा लेकर बाहर निकले। जब दिसा-मैदान से हम लौट रहे थे तो देखा कि कमला किनारेवाले खेत में किसी का बैल गहूँम

1 चुटिया।

चर रहा है। इसीलिए मँहगू को जगाने गया था।"

"क्यों ?"

"कमला किनारेवाली जमीन का पहरा करने के लिए मँहगूदास को ही दिया है।"

"अच्छा, तब ?"

"जब हम जा रहे थे तो रबिया और सोनमा को आपके खेत में सकरकंद उखाड़ते पकड़ा। दोनों को डाँट-डपट दिया। मँहगूदास को जगाकर जैसे ही हम उनके आँगन से निकल रहे थे कि रबिया, सोनमा, तेतरा और नकछेदिया ने हमको पकड़ लिया और हल्ला करने लगे।"

"क्या बताएँ, हमारा पाँच बीघा सकरकंद इन्हीं सालों ने चुराकर खत्म कर दिया। ...अच्छा, आप बैठ जाइए। ...कहाँ मँहगू ?"

"जी सरकार," मँहगू बूढ़ा हाथ जोड़कर खड़ा होता है।

"सहदेव मिसर ने तुमको जाकर जगाया था ?"

"जी सरकार !"

"अब पंच लोग फैसला करें कि असल बात क्या है।"

कालीचरन कैसे चुप रह सकता है ! पंचायत में एकतरफा बात नहीं होनी चाहिए। रबिया और सोनमा पार्टी का मेंबर है। यह तो पंचायत नहीं, मुँह देखी है। कालीचरन कैसे चुप रह सकता है–"सिंघ जी, जरा हमको भी कुछ पूछने दीजिए।"

पंचायत के सभी पंचों की निगाहें अचानक कालीचरन की ओर मुड़ गईं। सिंघ जी गुस्से से लाल हो गए। लेकिन पंचायत में गुस्सा नहीं होना चाहिए। राजपूतटोली के नौजवान आपस में कानाफूसी करने लगे। संयोजक जी ने पाकेट टटोलकर देख लिया–सीटी लाना भूल तो नहीं गए हैं ? जोतखी जी एतराज करते हैं–"कालीचरन को हम लोग पच नहीं मानते।"

"तो पहले इसी बात का फैसला हो जाए कि पंचायत के कितने लोग हमको पंच मानते हैं और कितने लोग नहीं। एक आदमी के चाहने और न चाहने से क्या होता है !... अच्छा, पंच परमेसर ! क्या हमको इस पंचायत में बैठने, बोलने और राय देने का हक नहीं ? क्या हम इस गाँव के बासिंदे नहीं हैं ?' कालीचरन खड़ा होकर कहता है, "यदि आप लोग हमको पंच मानते हैं तो हाथ उठाइए।"

गुमसुम बैठे हुए सैकड़ों मूक जानवरों के सिर में मानो अरना[1] भैंसा के सींग जग गए। सैंकड़ों हाथ उठ गए।

"दोनों हाथ नहीं, एक हाथ ! ठहरिए, गिनने दीजिए। एक... दो, तीन, चार, पाँच... एक सौ पाँच।"

बालदेव जी ने हाथ नहीं उठाया।

"एक सौ पाँच। अब जो लोग हमको पंच नहीं मानते, हाथ उठाएँ।... एक,

1. जंगली।

दो, तीन, चार, पाँ... पंद्रह।"

"सिर्फ पंद्रह !" सिंघ जी को विश्वास नहीं होता। खुद गिनते हैं। राजपूत और ब्राह्मणटोली के लोग कहाँ चले गए ? जोतखी जी के लड़के नामलरैन ने भी कलिया के पक्ष में ही हाथ उठाया. है ?...

"फुलिया !" कालीचरन की बोली सुनकर डर लगता है। फुलिया फिर खड़ी होती है।

"देखो, यह पंचायत है। पंचायत में परमेसर रहते हैं। पंचायत में झूठ बोलने से हाथोंहाथ इसका फल मिलता है। सच-सच बताओ ! सच्ची बात क्या है ?"

"......"

"बोलो !"

"सहदेव मिसर हमारे घर में घुसे थे।"

"तुमने हल्ला क्यों नहीं किया ?"

"......"

"बोलो, डरने की कोई बात नहीं।"

"बाबा के डर से।"

"बाबा के डर से ?"

"हाँ, बाबा सहदेव मिसर का करजा धारते हैं।"

"बैठ जाओ।"... मँहगू !

मँहगू हाथ जोड़कर फिर खड़ा होता है।

"क्या बात है ?"

"......"

"फुलिया जो कहती है, ठीक है ?"

"......"

"डरो मत ! जो बात है, बताओ !"

"कौन गाछ ऐसा है जिसमें हवा नहीं लगती है और पत्ता नही झड़ता है !"

"दूसरो की बात मत कहो, अपनी बात बताओ !"

"अकेले हमको क्यो दोख देते है ? गाँव-भर का यही हाल है। कौन घर ऐसा है..."

"मैं तुमसे पूछता हूँ।"

"पहले तुम अपनी माँ से जाकर इमान-धरम से पूछो कि तुम किसके बेटा हो।" जोतखी जी हिम्मत करके कहते हैं। क्रोध से उनकी आँखें लाल हो उठी हैं।

"जोतखी काका, हमको अपने बाप के बारे में मालूम है।"

"जोतखी जी अपनी स्त्री से पूछें कि उनके पेट में किसका बच्चा है।" चिल्लाकर कहता है।

"कौन नहीं जानता कि जोतखी जी का नौकर..."

"चुप रहो सुंदर !" कालीचरन लोगो को शांत करता है, "चुप रहो ! शांती ! शांती !"

'टू टू... टू टू,' संयोजक जी सीटी फूँकते हैं।

एक दर्जन से भी ज्यादा नौजवान राजपूतटोली से हाथ में लाठी लेकर दौड़ आए और पंचायत को चारों ओर से घेर कर खड़े हो गए।

"सिंघ जी, इन लाठीवाले नौजवानों को आपने बुलाया है ?... तो आप पंचायत नहीं, दंगा करवाना चाहते हैं ?" कालीचरन पूछता है।

सिंघ जी कहते हैं, "अब यह पंचायत नहीं हो सकती। पाटीबंदी से कहीं इंसाफ होता है ?"

सिंघ जी राजपूत टोली के पंचों के साथ उठ खड़े होते है। काली टोपीवाले जवान, सिंघ जी को, सयोजक जी को और राजपूतटोली के पंचो को चारो ओर से घेरे में लेकर, फौजी कवायद करते हुए चले जाते हैं।

जोतखी जी के साथ ब्राह्मणटोली के पंच लोग भी चेहूदानी में फँस गए हैं। खेलावनबाबू का सहारा है। बालदेव जी भी हैं। लेकिन कालीचरन का गुस्सा ?...

"तो पंचायत का यह फैसला है कि मँहगूदास अपनी बेटी फुलिया का चुमौना खलासी के साथ करा दे, और आज से सभी टोले के लोग बाबू लोगों पर नजर रखें।

पंचायत के सभी पंच एक स्वर से कालीचरन की राय का समर्थन करते हैं। जोतखी जी भी हाथ उठाते हैं और बालदेव जी भी।... यह तो नियाय बात है, इसमें डिफेट करना अच्छा नहीं।

"सहदेव मिसर के पास सादे कागज पर मेरा अँगूठा का टीप है। यदि उसे भरकर नालिस कर दे तब ?" मँहगूदास गिड़गड़ाकर कहता है।

"सहदेव मिसर जब मुकदमा करेंगे, सभी पंच तुम्हारी गवाही देंगे। वह एक पैसा भी तुमसे नहीं पा सकते।"

बाईस

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

महंथ रामदास भी छींकने, खाँसने और जमाही लेने के समय महंथ सेवादास जी की तरह ही चुटकी बजाते हैं, 'सतगुरु हो', सतगुरु हो' कहते हैं और आँखें स्वयं ही बंद हो जाती हैं।

भजन, बीजकपाठ और सतसंग को अब लछमी ही सँभालती है। महंथ रामदास जी पढ़ना-लिखना नहीं जानते, सतगुरु-वचन की गंभीरता की तह तक नहीं पहुँच सकते, लेकिन खँजड़ी पर तो उनका पूरा अधिकार है। यों तो खँजड़ी भंडारी भी बजाता है, लेकिन कोठारिन लछमी दासिन उसके ताल पर गड़बड़ा जाती है। तब महंथ रामदास जी भंडारी के हाथ से खँजड़ी ले लेते हैं। लछमी मुस्कराकर गाने लगती है...

संतो हो, करूँ बँहियाँ वल आपनी
छाड़ूँ बिरानी आस !
संतो हो, जिंहिं अँगना नदिया बहै,
सो कस मरे पियास ! हो संतो, सो कस मरे पियास !

सो कस मरे पियास ? महंथ रामदास के आँगन में नदी बह रही है और वह प्यास से मर रहे हैं।... सतगुरु बचन में कहा है–"जस खर चंदन लादे मारा, परमिल बास न जानु गमारा।" परमिल वास महंथ रामदास को नहीं लगती, सो बात नहीं। परमिल वास से उनका भी मन मत्त हो जाता है, लेकिन वह क्या करें ? एक दिन मुँह से निकल गया था, "लछमी ! जरा इधर आना तो।" बस, चार घंटे तक कोठारिन ने सतगुरु बचनामिरित की झड़ी लगा दी थी–"अंतर जोति सबद इक नारी, हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी। ते तिरिए भंगलिंग अनंता, तेऊ न जाने•आदि न अंता। महंथसाहेब, आप अपने चित्त को मत विचलित कीजिए। यह आपके पूर्वजन्म का पुण्य है कि आपको महंथी की गद्दी मिली है, नहीं तो आपके जैसे लोगों को भैंस चराने के सिवा और कोई काम भी नहीं मिल सकता। आप मेरे गुरुबेटा हैं, मैं आपकी गुरुमाई।"

एक-डेढ़ महीने में ही महंथ रामदास जी का कलेवर बदल गया है। लछमी बड़े जतन से सेवा करती है। दूध, मक्खन और ताजे फलों के सेवन से महथ साहब के श्यामल मुखमंडल पर भी लाली दौड़ गई है। पेट जरा बाहर की ओर निकल रहा है, और तन का ताप भी कभी-कभी मन को बड़ा बेचैन कर देता है। लछमी सतगुरु वचनामृत बरसाकर शांत करने की चेष्टा करती है। सतगुरु वचनामृत से भी बढ़कर तन के ताप को शीतल करती है कालीचरन की याद ! कालीचरन रोज मठ पर एक बार थोड़ी देर के लिए ही, जरूर आता है। कभी पार्टी के लिए चंदा, आफिस-घर बनाने के लिए बाँस-खड़ माँगने आता है। लछमी कहती है–"कालीचरन असल नियायी आदमी है। गाँव के सभी बड़े लोग सिर्फ कहने को बड़े हैं। कालीबाबू का सुभाव जरा तिब्र है, लेकिन दुनिया के लोग अब इतने कुटिल हो गए हैं कि सीधे लोगों की यहाँ गुजर नहीं। फिर सुभाव में जरा कड़ापन तो सुपुरुख का लच्छन है...।"

महंथ रामदास को पहले कालीचरन पर बड़ा संदेह था। जब वह मठ पर आता तो महंथ साहब छिपकर लछमी और काली की बातें सुनते थे, बाँस की

अट्टी में छेद करके देखते थे। लेकिन कालीचरन हमेशा लछमी से चार हाथ दूर ही हटकर खड़ा रहता था। उसकी बोली में भी माया की मिलावट नहीं रहती थी। लछमी से बातें करते समय कभी उसकी पलकें शरमाकर झुकती नहीं थीं। बहुत कम लोगों को ऐसा देखा है रामदास ने। कालीचरन को बस अपनी सुशलिट पाटी से जरूरत है। लाल झंडा और सुशलिट पाटी को वह औरत की तरह प्यार करता है।...उस पर संदेह करना बेकार है। लेकिन बालदेव जी ? वह तो आजकल आते ही नहीं। उनकी नजर बड़ी मैली है।

लछमी बालदेव जी को भूली नहीं है। कहती है, साधू सुभाव के पुरुष हैं; किसी का चित्त दुखाना नहीं चाहते। बालदेव जी मठ पर नहीं आते हैं, कहते हैं, लछमी दासिन ने हिंसाबात करवाया है मठ पर, मठ पर नहीं जाएँगे।...बहुत सीधे हैं बालदेव जी। सच्चे साधू हैं। उनसे छिमा माँगना होगा।

महंथ रामदास जी सोच-विचारकर देखते हैं, कालीचरन के डर से ही वह प्यासा है। कोई बात हुई कि लछमी उससे कह देगी; और उसके बाद ? चादरटीका के दिन कालीचरन और उसके गणों ने जो कांड किया था उसे भूलना मुश्किल है। ...और उन्हीं की बदौलत तो रामदास महंथ बना है।

माना कि कालीचरन के बल से उसे महंथी मिली है। इसका यह अर्थ नहीं कि कालीचरन मठ के सभी मामले में दखल देगा। इंसाफन महंथी की गद्दी पर तो उसका अधिकार था ही। यदि कल कालीचरन कहे कि गद्दी पर तुम्हारा हक नहीं तो क्या वह मान लेगा ?...महंथ रामदास जी धीरे से उठते हैं। दबे पाँव लछमी की कोटरी के पास जाते हैं। किवाड़ी खुली है ? नहीं, बंद है। महंथ साहब बाहर से भी किवाड़ की छिटकनी खोलना जानते हैं। पतली-सी लकड़ी फँसाकर खोलते हैं।...लछमी अब किवाड़ में ओखल नहीं लगाती है।...लछमी सोई है। उसके कपड़े अस्त व्यस्त हैं, बाल बिखरे हुए हैं। लालटेन की मद्धिम रोशनी में भी उसकी सूरत चमक रही है।...

"कौन ?"

"रामदास ?"

"........."

"रामदास ! हाथ छोड़ो। बैठो। आखिर तुम चित्त को नहीं सँभाल सके। माया ने तुम्हें भी अंधा बना दिया।"

"माया से कोई परे नहीं। माया को कोई जीत नहीं सकता, " महंथ साहब आज लक्ष्मी को हर बात का जवाब देंगे।

"तुम नरक की ओर पैर बढ़ा रहे हो। अब भी चेतो।"

"अब चेतने से फ़ायदा नहीं। मुझे सरग नही चाहिए।... इस नरक में पहली बार नहीं आया हूँ।"

लछमी को बचपन की बातों की याद दिलाना चाहता है रामदास। लछमी हाथ छुड़ाकर बिछावन पर से उठना चाहती है, लेकिन महंथ साहब ने दस मिनट

पहले ही चौथी चिलम गाँजा फूँका है।

"मैं तुम्हारी गुरुमाई हूँ रामदास !"

"कैसी गुरुमाई ? तुम मठ की दासिन हो। महंथ के मरने के बादनए महंथ की दासी बनकर तुम्हें रहना होगा। तू मेरी दासिन है।"

"चुप कुत्ता !" लछमी हाथ छुड़ाकर रामदास के मुँह पर जोर से थप्पड़ लगाती है। दोनों पाँवों को जरा मोड़कर, पूरी ताकत लगाकर रामदास की छाती पर मारती है। रामदास उलटकर गिर पड़ता है।...सतगुरु हो !

संतो अचरज भौ एक भारी
पुत्र धयल महतारी।
एके पुरुष एकहि नारी
ताके देखु बिचारी।

"भंडारी ! भंडारी !"

"सरकार !"

"पानी लाओ !"

लछमी थर-थर काँपती है। महंथ सेवादास की दम तोड़ती हुई मूर्ति उसकी आँखों के सामने दिखाई पड रही है। नहीं, मरा नहीं है। भंडारी कहता है, "महंथ साहब को फिर मिरगी की बीमारी शुरू हुई ? कल रामपुर मठ से जो साधू आया है, मिरगी की दवा जानता है। कल ही दिलवा दीजिए।"

सतगुरु हो !

महंथ साहब को बुखार है, छाती में दर्द है ! डाक्टर साहब ने मालिश का तेल भेजा है। लछमी महंथ साहब की छाती पर तेल-मालिश कर रही है। महथ साहब कराह रहे हैं, "सतगुरु हो ! अब नहीं बचेंगे। हमको कासी जी भेज दो कोठारिन ! हम अपने पाप का प्रांच्छित करेंगे।... हमको जाने से ही क्यों न मार दिया ?... हाय रे ? सतगुरु हो !"

"जाय हिंद कोठारिन जी !"

"जै हिंद ! आइए बालदेव जी ! बहुत दिन बाद ?"

"रामदा... महंथ साहब को क्या हुआ है ?"

"बुखार है, छाती में दर्द है।"

"दर्द है ? पुरानी गाये के घी की मालिस कीजिए।"

पुरानी गाये का घी अर्थात् गाय का पुराना, सड़ा घी। सुनते ही लछमी को मिचली आने लगती है। महंथ सेवादास को भी जब दमे का दौरा होता था तो गाय का घी ही मालिश करवाते थे।

"कोठारिन जी ! सिवनाथबाबू आ रहे हैं। यहाँ एक चरखा-संटर खुलना चाहिए। कुछ मदत दिया जाए।"

"चरखा-संटर ! इसमें क्या होगा ?"

"चरखा-संटर में ? यही चरखा, करघा, धुनकी और बिनाई की टरेनि होगी।"

"गाँव में तो रोज नया-नया संटर खुल रहा है—मलरिया-संटर, काली-टोपी संटर, लाल झंडा संटर, और अब यह चरखा संटर !"

"हाँ, नए जमाने में तो रोज नई-नई बात होगी। सुनते हैं आपने सोशलिट पाटी को काफी मदत दी है।...लेकिन कोठारिन जी ! गन्ही महतमा का रस्ता ही सबसे पुराना और सही रस्ता है। नई-नई पाटी खुल रही है, मगर किसी का रस्ता ठीक नहीं। सब हिंसाबाद के रस्ते पर हैं।"

"सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! कोठारिन, इसको जो चन्ना देना है, देकर बिदा करो। सतगुरु हो !" महंथ साहब दर्द से छटपटाते हैं।...बालदेव जी की नजर बड़ी मैली है। दस रुपए का एक नोट निकालकर देते हुए लछमी कहती है, "आजकल तो हाथ एकदम खाली है। आप तो आजकल इधर का रास्ता ही भूल गए हैं। हमसे जो अपराध हुआ है, छिमा कीजिए।"

"नहीं कोठारिन जी, आजकल छुट्टी ही नहीं मिलती है कभी। कपड़े की पुर्जी बाँटने का काम क्या मिला है, एक आफत में जान फँस गई है। काँगरेस का भी कोई काम नही कर सकता हूँ। उधर दूसरी पाटीवालो को मौका मिल गया है। कालीचरन दिन-रात खटता है। हमारे काँगरेस के मिंबरो को भी सोशिलट पाटी का मिम्बर बना लिया है। इसलिए सिवनाथबाबू को बुला रहे हैं। चरखा-संटर खुलेगा। एक पुराना काजकर्ता बावनदास भी आ रहा है। पुराना तो नहीं है, मेरे ही साथ सुराजी मे नाम लिखाया था।...बावनदास बौना है, सिरफ डेढ़ हाथ ऊँचा। वैष्णव है। आएगा तो यहाँ ले आएँगे। जाय हिंद !"

"जै हिंद !"

बालदेव जी को फिर लछमी की देह की सुगंध लगी। कितनी मनोहर !

लछमी देखती है, बालदेव जी आजकल बहुत दुबले हो गए हैं। बालदेव जी के दिल में जरा भी मैल नहीं। कितने सरल हैं !... न जाने क्यों, लछमी का जी आज बालदेव जी को देखकर इतना चंचल हो रहा है। बालदेव जी सच्चे साधू है।

बिरह की ओदी लाकड़ी
सपुचै और धुधुआए।
दुख मे तबहिं बाचिहौं
जब सकलौ जरि जाए !

तेईस

गाँव के लोग अर्थशास्त्र का साधारण सिद्धांत भी नहीं जानते। 'सप्लाई' और 'डिमांड' के गोरख-धंधे में वे अपना दिमाग नहीं खपाते। अनाज का दर बढ़ रहा है; खुशी की बात है। पाट का दर बढ़ रहा है, बढ़ता जा रहा है, और भी खुशी की बात है। पंद्रह रुपए में साड़ी मिलती है तो बाहर रुपए मन धान भी तो है। हल का फाल पाँच रुपए में मिलता है, दस रुपए में कड़ाही मिलती है तो क्या हुआ पाट का भाव भी तो बीस रुपए मन है। खुशी की बात है।

अनाज के ऊँचे दर से गाँव के तीन ही व्यक्तियों ने फायदा उठाया है—तहसीलदार साहब ने, सिंघ जी ने और खेलावनसिंह यादव ने। छोटे-छोटे किसानों की जमीनें कौड़ी के मोल बिक रही हैं। मजदूरों को सवा रुपए रोज मजदूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का भी पेट नहीं भरता। पाँच साल पहले सिर्फ पाँच आने रोज मजदूरी मिलती थी और उसी में घर-भर के लोग खाते थे।

तहसीलदार साहब ने धान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा दिया है। दरवाजे पर दर्जनों बखार हैं, लेकिन इस साल सब खाली। चमगादड़ों के अड्डे हैं...सरकार शायद धान-जप्ती का कानून बना रही है।

कपड़े के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न हैं। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेटकर काम चला लेती हैं; बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं।

शिवनाथ चौधरी सभा में खादी के अर्थशास्त्र पर प्रकाश डाल रहे हैं। आँकड़े देकर साबित कर रहे हैं कि यदि घर का एक-एक व्यक्ति चरखा चलाने लगे तो गाँव से गरीबी दूर हो जाएगी; अन्न-वस्त्र की कमी नहीं रहेगी।

चरखा सेंटर खुल गया है। अब गाँव में गरीबी नहीं रहेगी। पटना से दो मास्टर आए हैं—चरखा मास्टर और करघा मास्टर। एक मास्टरनी भी आई हैं—औरतों को चरखा सिखाने के लिए। औरतों से कहती हैं, "चरखा हमार भतार-पूत, चरखा हमार नाती; चरखा के बदौलत मोरा दुआर झूले हाथी।"

चरखा की बदौलत हाथी ? जै...गाँधी जी की जै !

सैनिक जी और चिनगारी जी की तरह गरम भाखन शिवनाथ चौधरी जी नहीं देते हैं, लेकिन बात पक्की कहते हैं। एकदम हिसाब से सब बात कहते हैं। खूब ज्ञान की बात कहते हैं। कल का पिसा हुआ आटा नहीं खाते हैं। चीनी नहीं, गुड़ खाते हैं। त्यागी आदमी हैं। चौधरी जी के साथ में दरभंगा जिले में तमोड़िया टीशन से रमलगीना बाबू आए हैं। सुनते हैं, पानी से ही बीमारी का इलाज करते हैं। आग में पकाई हुई चीज नहीं खाते हैं। साग की हरी पत्तियाँ चबाकर खाते हैं। कहते हैं, इसमें बहुत ताकत है। वह भी असल त्यागी हैं। देह

में सिर्फ हड्डियाँ बाकी बच गई हैं, मांस का लेश भी नहीं। दिन-भर में करीब पंद्रह बार हाथ में लोटा लेकर मैदान की ओर जाते हैं।

सादा कागजवाला एक फाहरम[1] बाँट हुआ है। फाहरम पर महतमा जी की छापी[2] है और नीचे लिखा है...

बापू कहते हैं :

जो पहने सो काते,
जो काते सो पहने।

सोशलिट पाटीवालों ने भी फाहरम बाँट किया था। लेकिन वह लाल रंग का था और उसमें एक दोहा ज्यादा था...

जो जोतेगा सो बोएगा।
जो बोएगा सो काटेगा।
जो काटेगा वह बाँटेगा।

बालदेव जी की जगह पर बौनदास आया है। यही पुरैनियाँ सभा में रजिन्नर बाबू के सामने भाखन देता था। बालदेव जी को पुर्जी बाँटने से छुट्टी नहीं मिलती है, इसीलिए पबलि का काम करने के लिए बौनदास को यहाँ भेजा गया है। बड़ा बहादुर है बौनदास ! कहते हैं, जब 42 के मोमेंट में लोग कचहरी पर झंडा फहराने जा रहे थे तो मलेटरी ने घेर लिया था। बौनदास एक मलेटरी के फैले हुए पैर के बीच से उस पार चला गया और कचहरी के हाता में झंडा फहरा दिया...रमैन में हलुमान जी ने सुरसा को मसक रूप धरकर जिस तरह छकाया था, उसी तरह।

"इस आर्यावर्त में केवल आर्य अर्थात् शुद्ध हिंदू ही रह सकते हैं" काली टोपीवाले संयोजक जी बौद्धिक क्लास में रोज कहते हैं, "यवनों ने हमारे आर्यवर्त की संस्कृति, धर्म, कला-कौशल को नष्ट कर दिया है। अभी हिंदू संतान म्लेच्छ संस्कृति की पुजारी हो गई है। शिव जी, महाराणा प्रताप... !"

बौद्धिक क्लास ! सोशलिस्ट पार्टी का बासुदेव कहता है...बुद्धू किलास। बासुदेव ही नहीं, काली टोपीवाले बहुत से जवान भी बुद्धू किलास ही कहते हैं।

लाठी, भाला और तलवार हाथ में लेते ही खून गरम हो जाता है राजपूत नौजवानों का। उस दिन हरगौरी कह रहा था—संयोजक जी ! यवनों पर मुझे क्रोध नहीं होता। यवनों का पक्ष लेनेवाले हिंदुओं की तो गरदन उड़ा देने को जी करता है।" संयोजक जी जरा दूर हट गए थे, नहीं तो हरगौरी ने इस तरह तलवार चलाई थी कि संयोजक जी की गरदन ही धड़ से अलग हो जाती !...आरजाव्रत !... मेरीगंज का ही नाम अब शायद 'आरजाव्रत' हो गया है ! लेकिन इस गाँव में तो एक भी मुसलमान नहीं !...

---

1. परचा। 2. तस्वीर।

गाँव-भर के हलवाहों, चरवाहों और मजदूरों का नेता कालीचरन है। छोटा नेता बासुदेव सबों को समझाता है, "भाई, आदमी को एक ही रंग में रहना चाहिए। यह तीन रंग का झंडा...थोड़ा सादा, थोड़ा लाल और पीला... यह तो खिचड़ी पाटी का झंडा है। कांग्रेस तो खिचड़ी पाटी है। इसमें जमीदार हैं, सेठ लोग हैं और पासंग मारने के लिए थोड़ा किसान-मजदूरों को भी मेंबर बना लिया जाता है। गरीबों को एक ही रंग के झंडेवाली पार्टी में रहना चाहिए।"

तहसीलदार साहब भी कांग्रेसी हो गए हैं।

उन्होंने चरखा सेंटर के लिए अपना गुहाल-घर दे दिया है; खद्दर पहनने लगे हैं। बोलते थे, सारी जिंदगी तो झूठ-बेईमानी करते ही गुजर गई। आखिरी उम्र में पुण्य भी करना चाहिए।...तहसीलदार साहब चवन्निया मेंबर नहीं बने हैं। चवन्निया मेंबर तो सभी बनते हैं। तहसीलदार साहब चार-सौ-टकिया मेंबर बने हैं। देखा नही ? शिवनाथबाबू ने रसीद काटकर दिया और तहसीलदार साहब ने तुरंत मंधाता[1] तंबाकू के पत्तों के बराबर चार नंबरी नोट निकालकर दे दिया। खड़-खड़ करता था नोट !... अब सोशलिस्ट पाटी का चलना मुश्किल है। पाटी में एक भी धनी आदमी नही है। मठ की कोठारिन कब तक पाटी चलाएगी।

दफा 40 की लोटिस आई है।

जिला कांग्रेस के मंत्री जी ने लोटिस भेज दिया है। सोशलिस्ट पार्टी तो जोर-जबर्दस्ती जमीन पर कब्जा करने को कहती है। काग्रेस के मत्री जी ने दफा 40 कानून पास करके नोटिस भेज दिया है। बालदेव जी हाट में लोटिस बाँट रहे हैं;... दफा 40 कानून पास हो गया। अधिया, बटैयादारी करनेवाले किसान अपनी जमीन नकदी करा लें, बहती गंगा में हाथ धो लें। नया कानून पास हो गया। हिंसाबाद करने की जरूरत नहीं। पुरैनियाँ कचहरी में दफा 40 का हाकिम आ गया है। दरखास दे दो, बस, जमीन नकदी हो जाएगी।

वाजिब बात कहते हैं बालदेव जी। यदि बिना तूलफजूल किए ही जमीन नकदी हो रही है तो सोशलिट पाटी में जाने की क्या जरूरत है ? कांग्रेस का राज है, जिस चीज की जरूरत हो, कांग्रेस के मत्री जी से कहो। कानून बना देंगे। तब, एक बात है। इस तरह छिटपुट होकर कहने से कांग्रेस के मंत्री भी कुछ नहीं कर सकते हैं। सबो को एक जगह मिलना चाहिए, मिलकर एक ही बात बोलनी चाहिए। दस मिलकर करो काज, हारो-जीतो क्या है लाज !... गलती तो पबलि की ही है, कोई कांग्रेस में तो कोई सुशलिट में तो कोई काली टोपी में, इस तरह तितिर-बितिर रहने से पबलि की कोई भलाई नहीं हो सकती। बालदेव जी ठीक कहते हैं !

"फाट्टी बी. टी. ऐक्ट ?" सोशलिस्ट पार्टी के जिला मंत्री जी कॉमरेड कालीचरन को समझाते हैं, "फौट्टी बी. टी. ऐक्ट तो कोई नया कानून नहीं। यह तो पुराना

---

1 तंबाकू की एक किस्म।

कानून है। कांग्रेस के मंत्री ने परचे बँटवाए हैं ? ठीक है। आप भी गाँव के किसानों से कहिए कि जितने बड़े किसान हैं, सबों की जमीन पर धावा कर दें। कोई किसी के खिलाफ गवाही नहीं दे। कानून से क्या होता है ? असल चीज है, साबित करना। सबूत पक्का होना चाहिए। गवाहों के इजहार में भी जरा डेढ़-बेढ़ नहीं हो। यह तो तभी हो सकता है जब सभी गरीब एक झंडे के नीचे एक पार्टी में, एक सूत्र में बँध जाएँ। तहसीलदार साहब कांग्रेसी हो गए हैं। बस, उन्हीं की जमीन पर किसानों द्वारा दावा करवा दीजिए। रंग खुल जाएगा। तब देखिएगा कि कांग्रेस के मंत्री जी की नोटिस-बाजी की क्या कीमत है !·· 'लाल-पताका' के इस अंक में चिनगारी जी का इस संबंध में एक विशेष आर्टिकल है, ज्यादे कौपी ले जाइए इस बार।"

"··दफा 40, आधी और बटैयादारी करने वालों की जमीन पर सर्वाधिकार दिलाने का कानून है। लेकिन कानून में छोटा-सा छेद भी रहे तो उससे हाथी निकल जा सकता है।· जितने दफा 40 के हाकिम नियुक्त हुए हैं, सभी या तो जमींदार अथवा बड़े-बड़े किसानों के बेटे हैं। उनसे गरीबों की भलाई की आशा बेकार है। लेकिन, एकता की शक्ति कानून से भी बढ़कर है। सोशलिस्ट पार्टी के लाल झंडे के नीचे होकर हम प्रतिज्ञा करें कि जमीदारों और बड़े किसानो के पक्ष में गाँव का एक बच्चा भी गवाही नहीं देगा। 'लाल पताका' आधीदारों को विश्वास दिलाना है·· ।"

कहना वाजिब है !

"बात वाजिब नहीं, यह बात का बतंगड़ है !"

जोतखी जी सभी बात में मीन-मेख निकालते हैं, "दो भैंस की लड़ाई में दूब के सिर आफत। कांग्रेस और सुशलिंग अपने में लड़ रहा है। दोनों अपना-अपना मेंबर बनना चाहता है। चक्की के दो पाट में गरीब लोग ही पीसे जाएँगे।"

"गरीब पीसे नहीं जाएँगे, गरीबों की भलाई होगी। एक पाटी रहने से काम नहीं होता है। जब दो दलों में मुकाबला और हिड़िस[1] होता है तो फायदा पबलि का ही होता है। उस बार रौतहट मेला में बिदेसिया नाचवाला आया था। मन लगाकर न तो नाच करता था और न गाना ही अच्छी तरह गाता था। तीसरे दिन बलवाही नाच[2] का भी एक दल आ गया। दोनों में मुकाबला हो गया। साम ही से दोनों ने नाच शुरू किया; कितना गजल, कौवाली, खेमटा और दादरा गाया, इसका ठिकाना नहीं। सूरज उगने तक दोनों दलवाले नाचते ही रहे। तब मेला मनेजर बाबू ने दोनों दलों के लोगों को समझा-बुझाकर नाच बंद करवाया था।"

---

1. प्रतियोगिता। 2. बाउल सुर में गीत गाकर नाचनेवाला दल।

चलित्तर कर्मकार आया है।

किरांती चलित्तर कर्मकार ! जाति का कमार है, घर सेमापुर में है। मोमेंट के समय गोरा मलेटरी इसके नाम को सुनते ही पेसाब करने लगता था। बम-पिस्तौल और बंदूक चलाने में मसहूर ! मोमेंट के समय जितने सरकारी गवाह बने थे, बसों के नाक-कान काट लिए थे चलित्तर ने। बहादुर है। कभी पकड़ाया नहीं। कितने सी.आई.डी को जान से खतम किया। धरमपुर के बड़े-बड़े लोग इसके नाम से थर-थर काँपते थे। ज्यों ही चलित्तर का घोड़ा दरवाजे पर पहुँचा कि 'सीसी सटक'। दीजिए चंदा।··· पचास ! नहीं, पाँच सौ से कम एक पैसा नहीं लेंगे। नहीं है ? चाबी लाइए तिजोरी की। नहीं ?··· ठाएँ। ठाएँ !··· दस खूनी केस उसके ऊपर था, लेकिन कभी पकड़ा नहीं गया। आखिर हारकर सरकार ने मुकदमा उठा लिया ! किरांती चलित्तर कर्मकार कालीचरन के यहाँ आया है ? बस, तब क्या है ? करैला चढ़ा नीम पर। चलित्तर भी सोशलिट पाटी में है ? तब तो जरूर बम-पेस्तौल की टरेनि ही देने आया है। बम-पेस्तौल के सामने काली टोपीवालो की लाठी क्या करेगी ? हाथी के आगे पिद्दी !

चरखा-कर्घा, लाठी-भाला और बम-पेस्तौल ! तीन टरेनि !

चौबीस

हाँ रे, अब ना जीयब रे सैयाँ
छतिया पर लोटल केश,
अब ना जीयब रे सैयाँ !

महँगी पड़े या अकाल हो, पर्व-त्योहार तो मनाना ही होगा। और होली ? फागुन महीने की हवा ही बावरी होती है। आसिन-कातिक के मैलेरिया और कालाआज़ार से टूटे हुए शरीर में फागुन की हवा संजीवनी फूँक देती है। रोने-कराहने के लिए बाकी ग्यारह महीने तो हैं ही, फागुन-भर तो हँस लो, गा लो। जो जीये सो खेलै फाग। दूसरे पर्व-त्योहार को तो टाल भी दिया जा सकता है। दीवाली में एक-दो दीप जला दिए, बस छुट्टी। लेकिन होली तो मुर्दा दिलों को भी गुदगुदी लगाकर जिलाती है। बौरे हुए आम के बाग से हवा आकर बच्चे-बूढ़ों को मतवाला बना जाती है।··· चावल का आटा, गुड़ और तेल ! पूआ-पकवान के इस छोटे-से आयोजन के लिए मालिकों के दरवाजे पर पाँच दिन पहले से ही भीड़ लग जाती है। बखार के मुँह खोल दिये जाते हैं। मालिक बही-खाता लेकर बैठ जाते हैं,

पास में कजरोटी खुली हुई रहती है। धान नापनेवाला धान की ढेरी से धान नापता जाता है।·· बादरदास को एक मन !··· सोनाय ततमा को तीन पसेरी।··· सादा कागज पर अँगूठे का निशान देते जाओ। भादों महीने में यदि भदै धान चुका दोगे तो ड्योढ़ा, यानी एक मन का डेढ़ मन। यदि अगहनी फसल में चुकाओगे तो डेढ़ मन का तीन मन। सीधा हिसाब है।

गाँव के सभी बड़े-बड़े किसानों का अपना-अपना मजदूर टोला है–सिंघ जी का ततमाटोला और पासवानटोला; तहसीलदार साहब का पोलियाटोला, धानुकटोला, कुर्मीटोला और कियोटटोला; खेलावन यादव का गुआरटोला और कोयरीटोला। संथालटोली पर किसी का खास अधिकार नहीं।

इस बार तहसीलदार साहब को छोड़कर किसी ने मजदूरों को धान नहीं दिया। अंगूठे का निशान नहीं देंगे और धान लेंगे ? बाप-दादे के अमल से अँगूठे का निशान देते आ रहे हैं, कभी बेईमानी नहीं हुई। इस साल बेईमानी कर लेंगे ? कालीचरन ने टीप देने को मना किया है तो कालीचरन से ही धान लो।

तहसीलदार को नए टीप की जरूरत नहीं। पुराने टीप ही इतने हैं कि कोई इधर-उधर नहीं कर सकता। दूसरे किसानों के मजदूरों को भी तहसीलदार साहब ने इस बार धान दिया है, लेकिन कालीचरन को जमानतदार रखकर। धान वसूलवा देना कालीचरन का काम होगा। अरे, ड्योढ़ नहीं तो सवैया ही सही।·· जो भी हो, तहसीलदार के दिल में दया-धर्म है। बाकी मालिक लोग तो पिशाच हैं, पिशाच !

एक ओर लौटस बारी रे बिहउबा !

फागुआ का हर एक गीत देह में सिहरन पैदा करता है। फुलिया का चुमौना खलासी जी से हो गया है। खलासी जी बिदाई कराने के लिए आए थे। लेकिन फुलिया इस होली में जाने को तैयार नहीं हुई ! खलासी जी बहुत बिगड़े; धरना देकर चार दिन तक बैठे रहे। आखिर में रूठकर जाने लगे। फुलिया ने रमजू की स्त्री के आँगन में खलासी जी से भेंट करके कहा था–"इस साल होली नैहर मे ही मनाने दो। अगले साल तो·· ।"

नयना मिलानी करी ले रे सैयाँ, नयना मिलानी करी ले !
अबकी वेर हम नैहर रहबौ, जे दिल चाहय से करी ले !

दोपहर से शाम तक रमजूदास की स्त्री के आँगन में रहकर फुलिया ने खलासी जी को मना लिया है। होली के लिए खलासी जी ने एक रुपया दिया है।··· बेचारा सहदेव मिसिर इस बार किससे होली खेलेगा ? पिछले साल की बात याद आते ही फुलिया की देह सिहरने लगती है। "भाँग पीकर धुत्त था सहदेव-मिसर। एक ही पुआ को बारी-बारी से दाँत से काटकर दोनों ने खाया था।··· अरे, जात-धरम ! फुलिया तू हमारी रानी है, तू हमारी जाति, तू ही धरम, सबकुछ।"·· बाबू को दारू पीने के लिए डेढ़ रुपया दिया था और माँ को अठन्नी।··· रात-भर सहदेव

मिसर जगा रह गया था।··· फुलिया की देह के पोर-पोर में मीठा दर्द फैल रहा है। जोड़-जोड़ में दर्द मालूम होता है। कोई बाँहों में जकड़कर मरोड़े कि जोड़ की हड्डियाँ पटपटाकर चटख उठें और दर्द दूर हो जाए।··· सहदेव मिसर को खबर भेज दें !··· लेकिन गाँववाले ?···ऊँह, होली में सब माफ है।··· वह आवेगा ? नाराज जो है।

अरे बँहियाँ पकड़ि झकझोरे श्याम रे
फूटल रेसम जोड़ी चूड़ी
मसकि गई चोली, भींगावल साड़ी
आँचल उड़ि जाए हो
ऐसो होरी मचायो श्याम रे··· !

कमली की आँखें लाल हो रही हैं; पिछले साल होली के ही दिन वह बेहोश हुई थी। इस बार क्या होगा ? वह बेहोश नहीं होगी इस बार। इस बार डाकटर है; उसे बेहोश नहीं होने देगा।··· लेकिन सुबह से ही डाक्टर बाहर है। रोगी देखने गया है रामपुर। यदि वह आज नहीं आया तो ? नहीं, वह जरूर आएगा। माँ ने एक सप्ताह पहले ही निमत्रण दे दिया है। रंग, अबीर·· गुलाल ! पिचकारी !

"माँ !"

"क्या है बेटी ?"

"तुम्हारा डाक्टर आज नहीं आवेगा ?"

"क्यों, क्या बात है बेटी ?"

"मेरा जी अच्छा नही।"

"ऐसा मत कहो बेटी, दिल को मजबूत करो। कुछ नहीं होगा।"

···आजु ब्रज में चहुदिश उड़त गुलाल !

चारों ओर गुलाल उड़ रहा है। डाक्टर को कोई रंग नहीं देता है। रामपुर में भी किसी ने रंग नहीं दिया। रास्ते में एक जगह कुछ लड़के पिचकारी लेकर खड़े थे, लेकिन डाक्टर को देखते ही सहम गए। रंग नहीं, गोबर है। रंग के लिए इतने पैसे कहाँ ! डाक्टर को लोग रंग नहीं देते। वह सरकारी आदमी है, सरकारी उर्दी पहने हुए है। सरकारी उर्दी को रंग देने से जेल की सजा होती है। डाक्टर सरकारी आदमी है, बाहरी आदमी है। वह गाँव के समाज का नहीं।

यह डाक्टर की ही गलती है। शुरू से ही वह गाँव से, गाँववालों से अलग-अलग रहा है। उसका नाता सिर्फ रोग और रोगी से रहा। उसने गाँव की जिंदगी में कभी घुलने-मिलने की चेष्टा नहीं की। लेकिन डाक्टर को अब गाँव की जिंदगी अच्छी लगने लगी है, गाँव अच्छा लगने लगा है और गाँव के लोग अच्छे लगते हैं वह गाँव को प्यार करता है। उसे कोई रंग क्यों नहीं देता ? वह रंग में, गोबर में, कीचड में सराबोर होना चाहता है !

"अर र र र ! कोई बुरा न माने, होली है !"

डाक्टर के सफ़ेद कुर्त्ते पर लाल-गुलाबी रंगों की छींटें छरछराकर पड़ती हैं।

"ओ कालीचरन !"

"बुरा मत मानिए डाकटर साहब, होली है।"

डाक्टर मनीबेग से दस रुपए का नोट निकालकर कालीचरन को देता है–होली का चंदा ! रंग और अबीर का चंदा !

होली है ! होली है ! होली है !

गनेश हाथ में पिचकारी लिए मौसी का आँचल पकड़कर खड़ा है। मौसी हँसकर कहती है, "सुबह से ही रंग खेलने के लिए जिद्द कर रहा है। मेरी एक साड़ी को तो रंग से सराबोर कर दिया है। अब जिद्द पकड़ा है कि गाँव के लड़कों के साथ खेलेंगे।"

"आओ भैया गनेश।" कालीचरन गनेश का हाथ पकड़कर ले चलता है। गनेश खुश होकर डाक्टर पर रंग की पिचकारी से फुहारें बरसाता हुआ कालीचरन के साथ भाग जाता है। मौसी खुश है।

"जुगजुग जियो काली बेटा !"

"कमली पाँच बार पुछवा चुकी है–डाक्टर साहब लौटे हैं या नहीं। मुझे धमकी दे गई है–आज डाक्टर को तुम नहीं खिला सकतीं। आज मेरे यहाँ निमत्रण है।"

ढोल-ढाक, झाँझ-मृदंग और डम्फ !
होली, फगुआ, भड़ौवा और जोगीड़ा।

कालीचरन का दल बहुत बड़ा है। दो ढोल, एक ढाक है, झाँझ-डम्फ। सभी अच्छे गानेवाले भी उसी के दल में हैं। सुंदरलाल, सुखीलाल, देवीदयाल और जोगीड़ा कहनेवाला महंथा। मिडिल में पढ़ता है; पढ़ने में बड़ा तेज ! दोहा-कवित्त जोड़ने में उसको चाँदी की चकत्ती मिली है। गाँव के छोटे-छोटे दल भी कालीचरन के दल में मिल गए हैं।

जोगीड़ा सर· र र· ···

जोगीड़ा सर-र र..
जोगी जी ताल न टूटे
तीन ताल पर ढोलक बाजे

ताक धिना धिन. धिन्नक तिन्नक

जोगी जी !

होली है ! कोई बुरा न माने होली है !

बरसा में गड्ढे जब जाते हैं भर
बेंग हजारों उसमें करते हैं टर्र

वैसे ही राज आज कांग्रेस का है
लीडर बने हैं सभी कल के गीदड़… जोगी जी सर…र र…!
जोगी जी, ताल न टूटे
जोगी जी, तीन-ताल पर ढोलक बाजे
जोगी जी, ताक धिना धिन !
चर्खा कातो, खध्धड़ पहनो, रहे हाथ में झोली
दिन दहाड़े करो डकैती बोल सुराजी बोली…
जोगी जी सर…र र… !

सिर्फ जोगीड़ा ही नहीं। महंथा ने नया फगुआ गीत भी जोड़ा है। बटगमनी फगुआ–राह में चलते हुए गाने के लिए।

आई रे होरिया आई फिर से !
आई रे !
गावत गाँधी राग मनोहर
चरखा चलावे बाबू राजेंदर
गूँजल भारत अमहाई रे ! होरिया आई फिर से !
वीर जमाहिर शान हमारो,
बल्लभ है अभिमान हमारो,
जयप्रकाश जैसो भाई रे ! होरिया आई फिर से !

होली है ! होली है ! होली !

कोयटीटोले का बूढ़ा कलरू महतो कहता है, "अरे डागडर साहेब ! अब क्या लोग होली खेलेंगे ! होली का जमाना चला गया। एक जमाना था जब कि गाँव के सभी बूढ़ों को नंगा करके नचाया जाता था, एकदम नंगा। उस बार राज के मनेजर जनसैन साहब के साथ तीन-चार साहेब आए थे। काला बक्सा में आँख लगाकर छापी लेते थे। बाद मे खानसामाँ से मालूम हुआ कि बिलैत के गजट में छापी हुआ था। एकदम नंगा !"

कामरेड वासुदेव 'भँड़ौवा' गाने के लिए कह रहे हैं, "अब एक नया भँड़ौवा हो। एक दम नया ताजा माल ! जर्मनवाला !"

ढाल ढिन्ना, ताक ढिन्ना।

अरे हो बुड़बक बभना, अरे हो बुड़बक बभना,
चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाए।
सुपति-मउनियाँ लाए डोमनियाँ, माँगे पियास से पनियाँ
कुआँ के पानी न पाए बेचारी, दौड़ल कमला के किनरियाँ,
सोही डोमनियाँ जब बनली नटिनियाँ, आँखी के मारे पिपनियाँ
तेकरे खातिर दौड़ले बौड़हवा, छोड़के घर में बभनिया।

जोलहा धुनिया तेली तेलनियाँ के पीये न छुअल पनियाँ
नटिनी के जोबना के गंगा-जमुनुवाँ में डुबकी लगाके नहनियाँ।
दिन भर पूजा पर आसन लगाके पोथी-पुरान बँचनिया
रात के ततमाटोली के गलियन में जोतखी जी पतरा गननियाँ।
भकुआ बभना, चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाए !

कोई बुरा न माने होली है ! होली है !

तहसीलदार साहब की ड्योढ़ी पर पैर रखते ही डाक्टर के मुँह पर गुलाल मल दिया गया। डाक्टर की आँखें बंद हैं, लेकिन स्पर्श में ही वह समझ गया है कि गुलाल किसने मला है। कमली !·· वसंतोत्सव की कमली ! डाक्टर याद करने की चेष्टा करता है, एक बार किसी चित्रकार का 'मैथिली' शीर्षक चित्र किसी मासिक पत्रिका में देखा था !··· कौन था वह चित्रकार !

"डाक्टर बेचारे के पास न अबीर है और न रंग की पिचकारी। यह एकतरफा होली कैसी !··· लीजिए डाक्टरबाबू, अबीर लीजिए। और इस बाल्टी में रंग है।" माँ बेहद खुश है आज। पिछले साल होली के दिन इसी आँगन में मातम हो रहा था और इस साल उसकी बेटी चहकती फिर रही है।·· दुहाई बाबा भोलानाथ !

बेचारा डाक्टर रंग भी नहीं देना जानता; हाथ में अबीर लेकर खड़ा है। मुँह देख रहा है, कहाँ लगावे !

"जरा अपना हाथ बढ़ाइए तो।"

"क्यों ?"

"हाथ पर गुलाल लगा दूँ ?"

"आप होली खेल रहे हैं या इंजेक्शन दे रहे हैं। चुटकी में अबीर लेकर ऐसे खड़े हैं मानो किसी की माँग में सिंदूर देना है !" कमली खिलखिलाकर हँसती है। रंगीन हँसी !

डाक्टर अब पहले की तरह कमली की बोली को एक बीमार की बोली समझकर नहीं टाल सकता है। कमरे में लालटेन की हलकी रोशनी फैली हुई है; सामने कमली खड़ी हँस रही है। ऐसी हँसी डाक्टर ने कभी नहीं देखी थी। वह स्वस्थ हँसी है–विकारशून्य ! कमली का अंग-अंग मानो फड़क रहा है। डाक्टर अपने दिल की धड़कन को साफ-साफ सुन रहा है। उसके ललाट पर आज भी पसीने की बूँदें चमक रही हैं। सामने दीवार पर एक बड़ा आईना है। डाक्टर उसमें अपनी सूरत देखता है··· ललाट पर पसीने की बूँदें मानो दूल्हे के ललाट पर चंदन की छोटी-छोटी बिंदियाँ सजाई गई हैं !··· डाकटर को भवभूति के माधव-मालती की याद आती है। होली को पहले मदनमहोत्सव कहा जाता था। आम की मंजरियों से मदन की पूजा की जाती थी। इसी मदनोत्सव के दिन माधव और मालती की आँखें चार हुई थीं और दोनों प्रेम की डोरी में बँध गए थे। जहाँ राधेश्याम खेले होरी !

डाक्टर अबीर की पूरी झोली कमली पर उलट देता है। सिर पर लाल अबीर बिखर गया—मुँह पर, गालों पर और नाक पर।... कहते हैं, सिंदूर लगाते समय जिस लड़की के नाक पर सिंदूर झड़कर गिरता है, वह अपने पति की बड़ी दुलारी होती है।..

ऐसी मचायो होरी हो,
कनक भवन में श्याम मचायो होरी !

पचीस

बावनदास आजकल उदास रहा करता है।

"दासी जी, चुन्नी गुसाईं का क्या समाचार है ?" रात में बालदेव जी सोने के समय बावनदास से बातें करते हैं।

"चुन्नी गुसाईं तो सोशलिट पाटी में चला गया।"

बालदेव जी भाई, अचरज की बात नहीं। भगवान जो करते हैं अच्छा करते हैं।

"याद है दास जी, चन्ननपट्टी की सभा, तैवारी जी का लेक्चर और तनुकलाल का गीत ! याद करके आज भी रोवाँ कलप उठता है।.. गंगा रे जमुनवाँ की धार.. ।"

"लेकिन भारथमाता अब भी रो रही हैं बालदेव ! बावनदास को नींद आ रही है !

बालदेव जी चमक उठते हैं। भारथमाता अब भी रो रही हैं ? ऐं ?. क्या कहता है बावनदास ?

बावनदास करवट लेते हुए कहता है, "बिलैती कपड़ा के पिकेटिंन के जमाने में चानमल-सागरमल के गोला पर पिकेटिंन के दिन क्या हुआ था, सो याद है तुमको बालदेव ? चानमल मड़बाड़ी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा था; जेहल में भोलटियरों को रखने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है। और सुनोगे ? दुनारचंद कापरा को जानते हो न ? वही जुआ कंपनीवाला, एक बार नेपाली लड़कियों को भगाकर लाते समय जो जोगबनी में पकड़ा गया था। वह कटहा थाना का सिकरेटरी है।... भारथमाता और भी, जार-बेजार रो रही हैं।"

बालदेव जी को आश्चर्य होता है। वह बावनदास से बहस करना चाहता है।

लेकिन बावन तो खर्राटा लेने लगा।··· बालदेव जी के समझ में कोई बात नहीं आ रही है।··· भारथमाता जार-बेजार रो रही हैं ?···

बावनदास, चुन्नी गुसाईं और बालदेव जी ! तीनों ने एक ही दिन इस संसार के माया-मोह को त्यागकर सुराजी में नाम लिखाया था।

गृहस्थ चुन्नी गुसाईं ! चार बीघे जमीन, दो-चार आम-कटहल के पेड़, एक गाय और दो छोटे-छोटे लड़कों का एकमात्र अभिभावक। स्वभाव से धर्मभीरु। चंदनपट्टी में सभा देखने गया। तैवारी जी ने भाखन दिया और तनुकलाल ने गीत गाया। सभी रोने लगे। चुन्नीदास के मन का मैल भी आँसुओं की धारा में बह गया। उसी दिन सुराजी में नाम लिखा लिया। चर्खा-कर्घा, झंडा-तिरंगा और खद्दर को छोड़कर सभी चीजें मिथ्या हैं। सुदेशी बाना, विदेशी बैकाठ !

अरे देसवा के सब धन-धान विदेसवा में जाए रहे।
मँहगी पड़त हर साल कृसक अकुलाय रहे।

दुहाई गाँधी बाबा !··· गाँधी बाबा अकेले क्या करे ! देश के हरेक आदमी का कर्त्तव्य है· ।

का करें गाँधी जी अकेले, तिलक परलोक बसे,
कवन सरोजनी के आस अबहिं परदेस रही।

दुहाई गाँधी बाबा। चुन्नीदास को अपने शरण में ले लो प्रभु ! विदेशी कपड़ा बैकाठ··· नीमक कानून··जेल। गाँजा-दारू छोड़िए प्यारे भइयो··· जेल। व्यक्तिगत सत्याग्रह··· जेल। 1942 · जेल।··· सब मिलकर दस बार जेल-यात्रा कर चुका है चुन्नी गुसाईं !

और वह सोसलिट पाटी में चला गया ?

बावनदास !

पूर्वजन्म का फल अथवा सिरजनहार की मर्जी। प्रकृति की भूल अथवा थायराएड, थायमस और प्युटिटिरी ग्लैंड्स के हेर-फेर ! डेढ़ हाथ की ऊँचाई ! साँवला रंग, मोटे होंठ, अचरज में डाल देनेवाली दाढ़ी और चौंका देनेवाली मोटी-भोंड़ी आवाज। ऊँचाई के हिसाब से आवाज दसगुना भारी। अजीब चाल, मानो लुढ़क रहा हो। अज्ञात कुलशील। जन्मजात साधू। जिस ओर होकर गुजरता, लोगों की निगाहें बरबस अटक जातीं। फिर ताज्जुब की हँसी-मुस्कराहट। पीछे-पीछे बच्चों का हुजूम, तमाशा; कुत्ते भूँकते, इंसान हँसते ! गर्भवती औरतें छिप जातीं अथवा छिपा दी जातीं !··· और जब भगवान ने उसे चलता-फिरता तमाशा ही बनाकर भेजा है, लोग उसे देखकर खुश हो लेते हैं तो क्यों न वह पारिश्रमिक माँग ले।··· दे-दे मैया कुछ खाने को ! भगवान भला करेंगे। सेत्ताराम, सेत्तराम !

चंदनपट्टी की उस सभा में, तैवारी जी के भाखन और तनुकलाल के गीत ने इस डेढ़ हाथ के आदमी को भी झकझोर दिया था।··· न जाने पूर्वजन्म के किस

पाप का फल भोग रहा हूँ। क्या होगा यह सरीर रखकर ? चढ़ा दो गाँधी बाबा के चरण में, भारथमाता की खातिर !

अरे देसवा के खातिर मजहरुलहक भइले फकिरवा से
दी भइलै राजेंदर प्रसाद देशवासियो !

और वह तो फकीर ही है।··· चुन्नी गुसाईं ने नाम लिखा लिया ? मेरा भी नाम लिख लिया जाए।–रामकिसुनबाबू की स्त्री उसे देखते ही चिल्ला उठी थी–भगवान। "बावन भगवान !"··· उन्होंने पूर्णिया आने के लिए कहा था।

सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! बंदेमहातरम् ! बंदेमहातरम् !

जिले की राजनीति के जनक रामकिसुनबाबू के बँगले पर वह जिस समय हाजिर हुआ, उस समय पुलिस की लौरी खड़ी थी। दारोगा साहब इंतिजार कर रहे थे। रामकिसुनबाबू अपना आभारानी को जरूरी हिदायतें दे रहे थे।

बंदेमहातरम् ! बंदे महातरम् !

"तुमि जाओ ! आमार जन्ये भेबो ना। ओई दूयाखो, भगवान आमार काछे निजेई ऐसे गेछेन।" आभारानी की आँखें आनंद से चमक उठी थीं।

आभारानी ने बावनदास को 'भगवान' छोड़कर किसी दूसरे नाम से कभी नहीं पुकारा।

कुछ दिनों बाद आभारानी भी गिरफ्तार हुईं। बावन भी पकड़ा गया। पुलिस ने एकाटा डंडा लगाकर उसे भगा देना चाहा, पर पहले ही डंडे की चोट को आभारानी ने झपटकर अपने शरीर पर ले लिया तो पुलिस के पाँव के नीचे की मिट्टी खिसक गई थी। ···"आमार भगवान के मारो ना··· !" खून से लथपथ खादी की सफेद साड़ी। पत्थर को भी पिघला देनेवाली, करुणा से भरी बोली, "आमार भगवान !" बावन के पूर्वजन्म के सारे पाप मानो अचानक ही पुण्य में बदल गए। सूखे ठूँठ में नई कोंपल लग गई। उसके मुँह से मोटी आवाज निकली थी–"माँ !"

माँ ! महात्मा गाँधी जी भी आभारानी को माँ ही कहते। 1934 में भूकंप-पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर जब बापू आए थे, साथ में थे रामकिसुनबाबू, आभारानी और बावनदास। बावनदास के बिना आभारानी एक डग भी कहीं नहीं जा सकतीं। गाँधी जी हँसकर बोले था, "माँ तुम्हारे भगवान से ईर्ष्या होती है।"··· दंतहीन, पोपले मुँह की वह पवित्र हँसी, बच्चों की हँसी जैसी !

फुलकाहा बाजार ! लाखों की भीड़। ऊँचा मंच··· "महात्मा गाँधी की जय !' ··· रह-रहकर आकाश हिल उठता है। जय ! फिर आकाश हिलता है। रेलमपेल ! पुष्पवृष्टि। ··· चरणधूलि ! सीटी · स्वयंसेवक। कॉर्डन डालो··· घेरा·· घेरा !

मंच पर आगे-आगे रामकिसुनबाबू, आभारानी के कंधे का सहारा लिए गाँधी जी।··· वही गाँधी जी ! जै ! ··जै·· आभारानी हाथ का सहारा देकर फिर किसी को मंच पर चढ़ा रही हैं ? कौन है वह ?··· अरे बावनदास ! बौना !··· गाँधी जी तर्जनी से सबों को शांत रहने के लिए कह रहे हैं। ···लाखों की भीड़ में बावनदास

खँजड़ी बजाकर गाता है 'एक राम-नाम धन साँचा जग में कछु न बाँचा हो !' आवाज दूर तक नहीं पहुँचती। लेकिन बावनदास ! डेढ़ हाथ ऊँचा यह 'झर-आदमी' कितना बड़ा हो गया है ! महात्मा जी भीख माँगते हैं। हरिजनों के लिए दान दीजिए ! रुपए की थैली, सोने की अँगूठी, चेन, बुताम, हार, कंगन, अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी, अकन्नी, पत्थर का टुकड़ा। किंतु सबकुछ देकर भी बावनदास से बड़ा होना असंभव।

बावनदास को मानो कुबेर का भंडार मिल गया; ठूँठ के कोंपल नवपल्लव हो गए...बापू !

1937। पंडित जवाहरलाल नेहरू चुनाव के तूफानी दौरे पर आए हैं। बावनदास को देखकर ताज्जुब की मुद्रा बनाकर कुछ देर तक देखते ही रह गए। फिर ललाट पर बल और नाक पर अँगुली डालते हुए, गाँगुली जी से अंग्रेजी मे बोले; "आई रिमेंबर दि नेम ऑफ दैट बुक।" (मुझे उस किताब का नाम याद नहीं आ रहा है)।

"किंग ऑफ दि गोल्डन रिवर !" गांगुली जी ने छूटते ही जवाब दिया। फिर दोनों एक ही साथ हँस पड़े।

अब बावनदास भजन ही नहीं गाता, बिख्यान देना भी सीख गया है। वह बोलने को उठता है। माइक-स्टैड काफी ऊँचा है। ऑपरेटर हैरान है। जल्दीबाजी में वह क्या करे ? कभी ऊँचा कभी नीचा करता है, फिर भी बावनदास से काफी ऊँचा है माइक-स्टैंड। नेहरू जी बडी फुर्ती से उठकर जाते हैं, माइक खोलकर हाथ में ले लेते है। झुककर बावनदास के मुँह के पास ले जाते हैं, "बोलिए !" जनता हँसती है। बावन जरा घबरा जाता है। नेहरू जी मुस्कराकर उसके गले में माला डाल देते हैं, "बोलिए !" प्रेस रिपोर्टरो के कीमती कैमरों के बटन एक ही साथ 'क्लिक-क्लिक' कर उटे थे। 'नैशनल हेरल्ड' के मुखपृष्ठ पर बड़ी-सी तस्वीर छपी थी—बावन दास के गले में माला है, नेहरू जी हाथ में माइक लेकर झुके हुए हैं, मुस्करा रहे है। तस्वीर के ऊपर लिखा हुआ था, "माइक ऑपरेटर नेहरू !"

अगस्त, 1942। कचहरी पर चढ़ाई। धाँय-धाँय। पुलिस हवाई फायर करती है। लोग भाग रहे हैं। बावनदास ललकारता है, जनता उलटकर देखती है। डेढ़ हाथ का इंसान सीना ताने खडा है। 'बंबई से आई आवाज !' जनता लौटती है। बावनदास पुलिसवालों के पाँवों के बीच से घेरे के उस पार चला जाता है और विजयी तिरगा शान से लहरा उठता है। · महात्मा गाँधी की जय !

बावन को गाँधी जी जानते है, नेहरू जी जानते हैं और राजेंद्रबाबू भी पहचानते हैं। प्रांत-भर के लीडर और राजनीतिक कार्यकर्ता जानते हैं। कैंप जेल में सुपरिंटेंडेंट की बदनामी के खिलाफ कैदियों ने सामूहिक अनशन किया था। अंत तक बावनदास और चुन्नी गुसाई ही टिके रहे थे ! पच्चीस दिन का अनशन ! 'दरफोर्ड और आर्चर ने इन दोनों को 'देखने माँगा' था। गाँधी जी की कठोर परीक्षा में, सत्य की परीक्षा

में, सत्याग्रह की परीक्षा में, खरे उतरनेवाले दो कुरूप और भद्दे इंसान !

'सुराजी' में नाम लिखने के बाद सिर्फ दो बार बावन को माया ने अपने मोहजाल में फँसाने की कोशिश की थी। दोनों बार वह चेत गया था। मोहफाँस में फँसते-फँसते वह बच गया था। ... महात्मा जी की कृपा !

एक बार रामकिसुनबाबू ने सिमरबनी से मुठिया में वसूल हुआ चावल लाने को भेजा था–"चावल बेचकर रुपया ले आना।" पाँच रुपए तीन आने। लौटती बार सिमराहा स्टेशन बाजार में जगमोहन साह की दूकान पर वह दही-चूड़ा खाने गया था। जगमोहन साह जलेबियाँ छान रहा था और सहुआइन जलेबियों को रस में डुबो रही थी। बावनदास के मन में बहुत देर तक रस में डूबी जलेबियाँ चक्कर काटती रहीं। ... पथराहा के फागूबाबू ने अपने बाप के श्राद्ध में कंगाल भोजन कराया था। एक युग हो गया, बावन ने फिर जलेबी नहीं चखी। आखिर बावनदास ने दही-चूड़ा पर दो आने की जलेबियाँ ले लीं।

लेकिन पेट में पहुँचने के बाद उसे अचानक ज्ञान हुआ। उसकी आँखों के आगे से माया का पर्दा उठ गया। · ये पैसे ? मुठिया ? ... उसकी आँखों के सामने गाँव की औरतों की तस्वीरें नाचने लगीं। ... हाँडी में चावल डालने के पहले, परम भक्ति और श्रद्धा से, एक मुट्ठी चावल गाँधी बाबा के नाम पर निकालकर रख रही हैं। कूट-पीसकर जो मजदूरी मिली है, उसमें से एक मुट्ठी ! भूखे बच्चो का पेट काटकर एक मुट्ठी ! और बावन ने उस पैसे से अपनी जीभ का स्वाद मिटाया ?

व्रतभंग ! तपभ्रष्ट !· दुहाई गाँधी बाबा ! छिमा करो ! बावन फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी आँखों से आँसू झड़ रहे थे और वह कंठ में अँगुलियाँ डालकर कै करता जाता था ! · सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! दो दिनों का उपवास ! आत्मशुद्धि, प्रायिश्चत्त ! रामकिसुनबाबू ने बहुत समझाया, आभारानी परोसी हुई थाली लेकर सामने बैठी रहीं, लेकिन बावन ने उपवास नहीं तोड़ा। ·· "माँ, इस अपवित्तर मन को दंड देने से मत रोको। अशुद्ध आतमा मुझे बाबा की राह से डिगा देगी !"

माया का दूसरा फंदा

नमक कानून तोड़ने के समय श्रीमती तारावती देवी पटना से आई थीं। उनकी बोली में मानो जादू था। वह जहाँ जातीं, लोग उनके भाषण सुनने के लिए उमड़ पड़ते थे। ... जवान औरत ! सिर पर घूँघट नहीं। भगवती दुर्गा की तरह तेजी से जल-जल करती है, सरकार को पानी-पानी कर देती है। "मुट्ठी-भर अंग्रेजों को हम नाच नचा देंगे। गोली, सूली और फाँसी का डर नहीं।" पुलिस-दारोगा डर से थर-थर काँपते हैं। "... अंग्रेजों के जूठे पत्तल चाटनेवाले ये हिंदुस्तानी कुत्ते ?" जरूर उसमें भगवती का अंश है। सभा खत्म होने के बाद उनके निवास-स्थान पर भी भीड़ लग जाती थी। बहुत-सी बाँझ-निपुत्तर औरतें चरण-धूलि लेने आती थीं। भगवती ! उनके खाने-पीने और आराम करने के समय भी लोग जमे रहते थे। आखिर स्वयंसेवकों के पहरे का प्रबंध करना पड़ा था।

एक दिन चंदनपट्टी आश्रम में, दोपहर को तारावती जी बिछावन पर आराम

कर रही थीं। सामने के दरवाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था और पर्दे के इस पार ड्यूटी पर बावनदास। फागुन की दोपहरी। आम की मंजरियों का ताजा सुवास लेकर बहती हुई हवा पर्दे को हिला-डुलाकर अंदर पहुँच जाती थी। तारावती जी की आँखें लग गईं। बावन ने हिलते-डुलते पर्दे के फाँक से यों ही जरा झाँककर देखा था। उसका कलेजा धक् कर उठा था, मानो किसी ने उसे जोर से पीछे की ओर धकेल दिया हो।... धीरे-धीरे पर्दे को हिलानेवाली फागुन की आवारा हवा ने बावन के दिल को भी हिलाना शुरू कर दिया। बावन ने एक बार चारों ओर झाँककर देखा, फिर पर्दे के पास खिसक गया ! झाँका। चारों ओर देखा और तब देखता ही रह गया मंत्र-मुग्ध-सा !... पलँग पर अलसाई सोई जवान औरत ! बिखरे हुए घुँघराले बाल, छाती पर से सरकी हुई साड़ी, खद्दर की खुली हुई अँगिया !... कोकटी खादी के बटन !... आश्रम की फुलवारी का अंग्रेजी फूल 'गमफोरना', पाँचू राउत का बकरा रोज आकर टप-टप फूलों को खा जाता है।... बावन के पैर थरथराते हैं। वह आगे बढ़ना चाहता है।... वह जानता है ! वह इस औरत के कपड़े को फाड़कर चित्थी-चित्थी कर देना चाहता है। वह अपने तेज नाखूनों से उसके देह को चीर-फाड़ डालेगा। वह एक चीख सुनना चाहता है। वह अपने जबड़ों से पकड़कर उसे झकझोरेगा। वह मार डालेगा इस जवान गोरी औरत को। वह खून करेगा। ... ऐं ! सामने की खिड़की से कौन झाँकता है ? गाँधी जी की तस्वीर ? दीवार पर गाँधी जी की तस्वीर ! हाथ जोड़कर हँस रहे हैं बापू !... बाबा ! धधकती हुई आग पर एक घड़ा पानी ! बाबा, छिमा ! छिमा ! दो घड़े पानी ! दुहाई बापू ! पानी, पानी, पानी ! शीतल जल ! ठंडक... !

बावन आँखें खोलता है। रामकिसुनबाबू पानी की पट्टी दे रहे हैं। माँ पंखा झल रही हैं। गांगुली जी चुपचाप खड़े हैं और घबराई हुई तारावती कह रही हैं, "चीख सुनकर मेरी नींद खुली तो देखा यह धरती पर छटपटा रहा है।"

दूसरे दिन आभारानी एक गिलास टमाटर का रस देते हुए बोली थीं, "भगवान, आज थेके तोमाय रोज एक गिलास ऐई रस, आर रात्रे दुध खेते हबे।"

लेकिन, बावन तो सात दिनों का उपवास-व्रत ले चुका था। आत्मशुद्धि, इंद्रियशुद्धि, प्रायश्चित्त ! आभारानी ने गांगुली के पास जाकर धीरे-धीरे सारी कहानी सुना दी—"गांगुली जी ! आप माँ को समझा दीजिए। मैं व्रत तोड़ नहीं सकता। कल माया ने... !"

गांगुली जी ने हँसते हुए आभारानी से कहा था, "भगवानेर व्रत-भंग हउबा असंभव। कारण गुरुतर। तबे आपनार भाग्य भालो जे बेचारा के सूरदासेर कथा मने पड़े नि, नईले एतखन आर भगवानेर चोख थाकतो ना।" (भगवान का व्रत-भंग होना असंभव है। आपका भाग्य अच्छा है कि उन्हें सूरदास की बात याद नहीं आई, वर्ना अब तक भगवान की आँखें नहीं रहतीं।)

आभारानी अवाक् होकर गाँगुली की ओर देखती रह गई थीं, "की जानी बापू ?"

देवताओं और मंदिरों के नगर, बनारस में रहकर भी आभारानी को सबसे

पहले अपने 'भगवान' की याद आती है। कभी-कभी गांगुली जी के नाम मनीआर्डर आता है, "भगवानेर कापड़ेर जन्य। ··· भगवानेर दूधेर जन्य।"

··· और वही बावन दास कहता है, भारथमाता जार-बेजार हो रही हैं !

बालदेव जी को लछमी दासिन की याद आती है। ··· वह भी रो रही थी।

··· लेकिन कालीचरन ? सोसलिट पाटी !···

बालदेव निराश नहीं होगा। उसे नींद नहीं आ रही है। बहुत खटमल हैं। ··· हाँ, वह कल बावनदास से पूछेगा, यदि घर में खटमल ज्यादा हो जाएँ तो क्या घर में ही आग लगा देनी चाहिए ?

छब्बीस

बाबू हरगौरी सिंह राज पारबंगा के नए तहसीलदार बहाल हुए। 'बेतार का खबर' सुमरितदास सबों को कहता है, "देखो-देखो, कायस्थ के जूठे पत्तल में राजपूत खा रहा है। तहसीलदार विश्वनाथ बाबू को राज पारबंगा के कुमार साहेब ने बुलाकर बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन तहसीलदार ने कहा, थूक फेंककर चाटना आदमी का काम नहीं। ·· तहसीलदारी में अब क्या मजा है ! अब तो यह सूखी हड्डी है।"

वास्तव में अब तहसीलदारी में कोई मजा नहीं रह गया है। जमाना बदल गया है। तहसीलदार साहब के बाप देवनाथ मल्लिक सिर्फ पाँच रुपए माहवारी पर बहाल हुए थे। लेकिन ऊपरी आमदनी ? तीन साल बीतते-बीतते अस्सी-नब्बे बीघे धनहर[1] जमीन के मालिक बन गए थे। आदमी की ऊपरी आमदनी ही असल आमदनी है। और तहसीलदारी रोब का क्या पूछना ! तहसीलदार के खेत में मजदूरी करनेवालों को कभी मजदूरी नहीं मिलती थी। राज पारबंगा के राजा तो तिरहुत में रहते थे, उन्हें किसी ने कभी देखा भी नहीं। असल राजा तो बूढ़े देवनाथ मल्लिक ही थे। उस समय कटिहार शहर ठिकाने से बसा भी नहीं था। बूढ़े तहसीलदार साहब अपने सलीमशाही जूतों के तल्ले में ही काँटियाँ पुरैनियाँ से ठुकवाकर मँगाते थे और तीन महीने में ही काँटियाँ झड़ जाती थीं। सुनते हैं, वे बोलते बहुत कम थे, कान से कुछ कम सुनते थे; और जब बोलते थे तो "··· मारो साले को दस जूता।" कमला नदी के बगल में जो गड्ढा है, उसी में जोंक पालकर रखा था। जिसने तहरीर, तलबाना या नजराना देने में देर की, उसे गड्ढे में चार घंटे तक खड़ा करवा दिया। पाँव के अँगूठे से लेकर जाँघ तक मोटे-मोटे जोंक घुँघरू की

1. धान की खेतीवाली

तरह लटक जाते थे। ...वह जमाना तो बूढ़े तहसीलदार के साथ ही चला गया।

"जब नीलकाठी के साहबों के भी जुल्म से ऊबकर जगह-जगह किसानों ने बलवा करना शुरू किया तो जमीदारों ने अपने तहसीलदार और पटवारियों को गुप्त रूप से हिदायत दी, ज्यादा जोर-जुल्म मत करो !"

विश्वनाथ बाबू ने भी अच्छी तरह ही निभाया। रैयतों पर विशेष जोर-जुल्म करने की कभी जरूरत नहीं पड़ी। उनके पूर्वजों ने रैयतों के दिल और दिमाग पर तहसीलदार की ऐसी धाक जमा रखी थी कि उन्हें विशेष कुछ नहीं करना पड़ता था। कहावत मशहूर थी, जमदूत थोड़ा मुहलत भी दे सकता है, पर तहसीलदार नहीं। हर बार तमादी के पहले जनरल मैनेजर डफ साहब का खीमा आता था। खीमा आने के पहले ही बगैर जोत-जमीनवाले आदमी भी गाँव छोड़कर नेपाल के जिले मोरंग भग जाते थे। ...कोठी के बगीचे में पचासों छोटे-बड़े तंबू और शामियाने तान दिए जाते थे। पचास सिपाही, चार हाथी, मोटरगाड़ी, खानसामा, बावर्ची, नाई और धोबी। पाँच गाँव की बैलगाड़ियों पर खीमे के मामान लदकर आते थे।

इलाके-भर के बदमाश और टेढ़े लोगों की फेहरिस्त तहसीलदार पहले ही बनाकर रखते थे। सुमरितदास मोटे असामियों को चुपचाप एकांत में ले जाकर खबर सुना देता था–तुम्हारा नाम तो फेहरिस्त में सबसे ऊपर है !

... ऐं ? सबसे ऊपर ? सुननेवालों पर मानो वज्र गिर पड़ता था। ... जैसे भी हो, नाम तो कटाना ही होगा !

फ़ेहरिस्त बनाने के समय तहसीलदार साहब सुमरित दास की भी राय लेते थे। सुमरितदास साल-भर की घटनाएँ याद करते हुए लिखाता था–"हाँ, अनंत पर्व के दिन रनजीत दूध लाने के लिए गया था तो गुअरटोली के सतकौड़ी ने झूठ बोलकर बर्तन वापस कर दिया था–भैंस सूख गई। कुंजरटोली के फरजंदमियाँ ने करैला नहीं दिया था– ।" तहसीलदार साहब ऐसे लोगों के नाम याद करते जिन्होंने राज के मुकद्दमों में गवाही देने से इनकार किया; दाखिल-खारिज करवाकर तहसीलदार का नजराजा हड़प गया, किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गई है, कौन राह चलते ऐंठकर चलते हैं और पंचायत मे उनके सिपाहियों के विरुद्ध किन लोगों ने गवाहियाँ दी थीं।

डफसाहब खजाना-वसूली से ज्यादा महत्त्व देते थे राज के रोब को। राज का रोब ही असल चीज है। उनका कहना था–"अमारा स्टेट में एक भी बडमाश को अम नहीं देखने माँगटा। टुम अमारा टेसीलडार को जूठा बोला। अमारा अमला जूठा ? तुम साला का बच्चा सच्चा ?"

"चेंटरू मांडल।"

"माय-बाप !" हाथ जोड़े एक अर्धनग्न आदमी थर-थर काँपता हुआ खड़ा हुआ।

"टुम मुकडमा में गुआई क्यों नई डिया ?'

"माय-बाप··· !"

"फँ··· माय-बाप का बच्चा ! सिपाय, चाबुक डेगा।"

शपाक् ! शपाक् ! शपाक् ! ··· कोड़े बरसने लगते !

"सिं। टुम चेटरी आए ? राचपट आए ? टुम अमारा टेसीलडार से नेई जीट सकेगा। हम टुमको बेज्जट करेगा। बडमाश···"

और इसके बाद साल-भर तक इलाके में अमन-चैन का राज ! तहसीलदार साहब के डर से लोग थर-थर काँपते रहते थे। लेकिन अब ? जमाना बदला ही नहीं है, साफ उलट गया।

सिंघजी ने बहुत कोशिश पैरवी करके हरगौरीसिंघ को तहसीलदारी दिला दी है। मैनेजर साहब को पूरे चार सौ रुपए की सलामी दी गई है। सुना है, बही-बस्ता लेते समय हीं छींक पड़ गई है। अब नए तहसीलदार की तहसीलदारी कैसी चलती है, देखना है।

राजपूतटोली का बच्चा-बच्चा खुश है। शिवशक्करसिंघ सबों से कहते हैं, "हरगौरी एक किलास और पढ़ लेता तो मनेजरी धरी थी···"

काली कुर्तीवाले संयोजक जी बौद्धिक क्लास में समझा रहे हैं—"जिस तरह यह तहसीलदारी कायस्तों के हाथ से राजपूतों के हाथ में आई है, उसी तरह सारे आर्यावर्त के राजकाज का भार हिंदुओं के हाथ में आएगा। और उस दिन आर्यावर्त के कोने-कोने में हिंदू-राज की पताका लहराएगी।"

जोतखी जी सलाह देते हैं—"बिना लछमी की पूजा किए बही-बस्ता में हाथ नहीं लगाया जाए। शुक्रवार को शुभ दिन है। कार्यारंभ, यात्रा, गृहनिर्माण आदि।"

बालदेव जी को बार-बार अपने सपने की बात याद आती है—विशाल सभा, हरगौरी माला पहना रहा है लछमी को।

कॉमरेड कालीचरन और बासुदेव अपनी पार्टी के मेंबरों से कहते हैं, "पुराने तहसीलदार यदि नागनाथ थे तो यह नया तहसीलदार साँपनाथ है। दोनों में कोई फर्क नहीं। दोनों ही जालिम जमींदार के कठपुतले हैं। सोशलिस्ट पार्टी के सिक्रेटरी साहब ने कहा है, लोग संघर्ष के लिए तैयार रहें।"

बावनदास के लिए यह गाँव नया है, गाँव के लोग नए हैं। वह अभी चुप है। न जाने क्यों, उसका जी नहीं लगता है।

चरखा सेंटर में सिर्फ चरखा-कर्घा ही नहीं, बूढ़े लोगों को रात में पढ़ाया भी जाता है। औरतों और बच्चों को मास्टरनी जी पढ़ाती हैं और बूढ़ों को मास्टर जी। बूढ़ा विरंचीदास दस दिनों से 'क ख ग घ, पढ़ रहा है, लेकिन 'क' के बदले 'ग' से ही ककहरा शुरू करता है··· 'ग घ क ख'। मास्टर जी हैरान हैं··· क्या सचमुच ही बूढ़ा तोता पोस नहीं मानता ?

सत्ताईस

डाक्टर की जिंदगी का एक नया अध्याय शुरू हुआ है। उसने प्रेम, प्यार और स्नेह को बायोलॉजी के सिद्धांतों से ही हमेशा मापने की कोशिश की थी। वह हँसकर कहा करता, "दिल नाम की कोई चीज आदमी के शरीर में है, हमें नहीं मालूम। पता नहीं आदमी 'लंग्स' को दिल कहता है या 'हार्ट' को। जो भी हो, 'हार्ट' 'लंग्स' या 'लीवर' का प्रेम से कोई संबंध नहीं है।"

अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमे दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता वास करता है।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी को कभी भूल नहीं सका। प्रत्येक इतिहास पर गौरव करनेवाले युग में पले हुए हर व्यक्ति को अपने खानदान की ऐसी कहानी चाहिए जिसके उजाले से वह दुनिया में चकाचौंध पैदा कर दे। लेकिन डाक्टर के वंश-इतिहास पर काली रोशनाई पुती हुई है—जेल की सेंसर की हुई चिट्ठियो की तरह। काली रोशनाई से किसी हिस्से को इस तरह पोत दिया जाता है कोई कल्पना भी नही कर सकता कि उस हिस्से में कभी कुछ लिखा हुआ था।

जन्म देनेवाली माँ ने भी जिसे दूर कर दिया। ·· अँधेरे में एक अभागिन माँ, दिल का दर्द और भयावनी छाया आकर हाथ बढ़ाती है, माँ अंतिम बार अपने कलेजे के टुकड़े को, रक्त के पिंड को, एक पलक निहारती है, चूमती है। भयावनी छाया उसके हाथ से शिशु को छीन लेती है। माँ दाँतों से ओठ दबाए खड़ी रह जाती है!

डाक्टर ने अपनी माँ के स्नेह को, अँधेरे में खड़ी 'सल्हुटेड' तस्वीर-सी माँ के दुलार की कीमत को, समझने की चेष्टा की है। वह गला टीपकर मार भी तो सकती थी। खटमल को मसलने के लिए अँगुलियों पर जितना जोर डालना पड़ता है, उस पाँच घंटे की उम्र के शिशु की जीवन-लीला समाप्त करने के लिए उतने-से जोर की ही आवश्यकता थी। माँ ऐसा नहीं कर सकी। ··· शायद उसने चेष्टा की होगी। गले पर एक-दो बार अँगुलियाँ गई होंगी। सोया हुआ शिशु मुस्करा पड़ा होगा और वह उसे सहलाने लगी होगी। ··· उसने अपनी बेबस, लाचार और अभगिनी माँ के मन में उठनेवाले तूफान के झकोरे की कल्पना की है। ·· वह अपनी माँ के पवित्र स्नेह का; अपराजित प्यार का जीता-जागता प्रमाण है!

किसी भी अभागिन माँ की कहानी सुनते ही वह मन-ही-मन उसकी भक्ति करने लगता है। पतिता, निर्वासित और समाज की दृष्टि में सबसे नीच माँ की गोद में वह क्षण-भर के लिए अपना सिर रखने के लिए व्याकुल हो जाता है।

··· किसी स्त्री को प्रेमिका के रूप में कभी देखने की चेष्टा उसने नहीं की। वह मन-ही-मन बीमार हो गया था। एक जवान आदमी को शारीरिक भूख नहीं लगे तो वह निश्चय ही बीमार है, अथवा 'एब्नॉर्मल' है।

डाक्टर ने एक नए मोड़ पर मुड़कर देखा, दुनिया कितनी सुंदर है !

वह लोक-कल्याण करना चाहता है। मनुष्य के जीवन को क्षय करनेवाले रोगों के मूल का पता लगाकर नई दवा का आविष्कार करेगा। रोग के कीड़े नष्ट हो जाएँगे, इंसान स्वस्थ हो जाएगा। दुनिया-भर के मेडिकल कालेजों में उसके नाम की चर्चा होगी। 'प्रशांत मेथड़', 'प्रशांत रिऐक्शन'। डब्ल्यू. आर. की तरह पी. आर. कहेंगे लोग। इसके बाद ! ···'टेस्टट्यूब बेबी' किसे माँ कहेगा ? तब शायद माँ एक हास्यास्पद शब्द बनकर रह जाएगा। · जानते हो, पहले माँ हुआ करती थीं ? · एक अर्धनग्न से भी कुछ आगे लड़की, 'टेली-काफ' के द्वारा अमेरिकन पेस्ट्री का घर बैठे स्वाद लेती हुई मुड़कर कहेगी—"प्रीटेस्ट ट्यूब एज ? सि सि ! ···म्वाँ ! ट्यूब म्वाँ !"

· माँ ! माँ वसुंधरा, धरती माता ! माँ अपने पुत्र को नहीं मार सकी, लेकिन पुत्र अपनी माँ को गला टीपकर मार देगा। शस्य श्यामला !·

भारतमाता ग्रामवासिनी !
खेतों में फैला है श्यामल,
धूलभरा मैल-सा आँचल !

'मैला आँचल' ! लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है ! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर, सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें ! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे ! डाक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डाक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

सब दिन बोले कोयली भोर भिनसरवा ···वा···वा
वैरिन कोयलिया, आजु बोलय आधी रतिया हो रामा ···ऑं ···ऑं
सूतल पिया के जगावे हो रामा ···ऑं ···ऑं

किसी के पिया की नीद न टूट जाए ! गहरी नींद में सोए हुए पिया के सिरहाने पंखा झलती हुई धानी को डर है, पिया की नींद न खुल जाए; सपना न टूट जाए !

डाक्टर भी किसी की दुलार-भरी मीठी थपकियों के सहारे सो जाना चाहता है, गहरी नीद में खो जाना चाहता है। जिंदगी की जिस डगर पर बेतहाशा दौड़ रहा था, उसके अगल-बगल, आस-पास, कहीं क्षणभर सुस्ताने के लिए कोई छाँव नहीं मिली। उसने किसी पेड़ की डाली की शीतल छाया की कल्पना भी नहीं

की थी। जीवन की इस नई पगडडी पर पाँव रखते ही उसे बड़े जोरों की थकावट मालूम हो रही है। वह राह की खूबसूरती पर मुग्ध होकर छाँह में पड़ा नहीं रह सकेगा। मंजिल तक पहुँचने का यह कितना जबरदस्त रास्ता है जो राही को मंजिल तक पहुँचाने की प्रेरणा देता है! वह क्षण-भर सुस्ताने के लिए उदार छाया चाहता है। प्यार !·

सूतल पिया के जगावे हो रामा !

पिया जग गए, धानी ने पिया को बिदाई दी। पिया को जाना है। हिमालय की चोटी को उषा की प्रथम किरण ने छूकर स्वर्णिम कर दिया। आम के बागो मे कोयल-कोयली, दहियल और बुलबुल ने सम्मिलित सुर में मंगल-गीत गाए ! खेतो से गीत की कड़ियाँ पुरवैया के सहारे उड़ती आती हैं और डाक्टर के दिल म हलचल मचा जाती हैं। गेहूँ की काटनी हो रही है। झुनाई हुई रव्वी की फसल की सोंधी सुगंध चारो ओर फैल रही है।

"डाक्टर साहब !"

"क्या है ?"

"जरा चलिए ! मेरी बहन को कै हो रही है।"

"पेट भी चलता है ?"

"जी !"

डाक्टर तुरत तैयार होकर चल देता है। पास के ही गॉव मे जाना है। डॉयरिया होगा। लेकिन 'सेलाइन ऐपरेटस' भी ले लेना अच्छा होगा।

"तीस बार पेट चला है ?"

बिछावन पर पड़ी हुई युवती पीली पड गई है। उसके हाथ-पांव अकड रहे हैं। पेशाब बंद है। हैजा ही है। डाक्टर 'सेलाइन ऐपरेटस' ठीक करता है। स्पिरिट स्टोव जलाता है, नार्मल-सेलाइन की बोतल निकालता है। बूढ़ा बाप हाथ जोडकर कुछ कहना चाहता है, और आखिर कह ही डालता है, "डाक्टर साहब, यह जो जकसैन दे रहे हैं इसका कितना होगा ?"

छोटे जकसैन का फीस तो दो रुपया है। इतने बडे जकसैन का तो जरूर पचास रुपया होगा।

"क्यो ? पचास रुपया," डाक्टर मुस्कराता है।

"तो रहने दीजिए। कोई दवा ही दे दीजिए।"

"दवा से कोई फायदा नही होगा।"

"लेकिन मेरे पास इतने रुपए कहाँ हैं ?"

"बैल बेच डालो," डाक्टर पहले की तरह मुस्कराते हुए सेलाइन देने की तैयारी कर रहा है।

"डाक्टरबाबू, बैल बेच दूँगा तो खेती कैसे करूँगा ? बाल-बच्चे भूखों पर जाएँगे। ··लड़की की बीमारी है।"

"क्या मतलब ?"

"हुजूर, लड़की की जात बिना दवा-दारू के ही आराम हो जाती है !"

···लड़की की जाति बिना दवा-दारू के ही आराम हो जाती है ! लेकिन बेचारे बूढ़े का इसमें कोई दोष नहीं। सभ्य कहलानेवाले समाज में भी लड़कियाँ बला की पैदाइश समझी जाती हैं। जंगल-झार !

डिग-डिग, डिडिग-डिडिग !

"···कल सुबह को इसपिताल में हैजा की सुई दी जाएगी। सभी लोग—बाल-बच्चे, बूढ़े-जवान, औरत-मर्द—आकर सूई ले लें।" ···डिग-डिग डिडिग ! गाँव का चौकीदार ढोलहा दे रहा है।

हैजा के पहले रोगी को बचा लिया गया, लेकिन गाँव को नहीं बचाया जा सका। डाक्टर ने ढोल दिलवाकर लोगों को सूई लेने की खबर दी, लेकिन कोई नही आया। कुआँ में दवा डालने के समय लोगों ने दल बाँधकर विरोध किया—"चालाकी रहने दो ! डाक्टर कूपों में दवा डालकर सारे गाँव में हैजा फैलाना चाहता है। खूब समझते हैं !"

डाक्टर ने बालदेव जी, कालीचरन और चरखा—सेंटर के लोगों को खबर देकर बुलवाया। सहायता माँगी, "यदि लोगों ने सूई नहीं लगवाई और कुओं में दवा नहीं डालने दी तो एक भी गाँव को बचाना मुश्किल होगा।"

दोपहर को बालदेव जी, कालीचरन और चरखा सेंटर के मास्टर-मास्टरनी जी डाक्टर साहब के साथ दल बाँधकर निकले और कुओं में दवा डाल दी गई। सूई देने की समस्या जटिल थी। कालीचरन ने कहा, "एक बात ! आज कोठी का हाट है। हाट लगते ही चारों ओर घेर लिया जाए और सबों को जबर्दस्ती सुई दी जाए ! जो लोग बाकी बचे रहेंगे, उन्हें घर पर पकड़कर दी जाए।"

डाक्टर को यह सुझाव अच्छा लगा, लेकिन बालदेव जी ने एतराज किया, "किसी की इच्छा के खिलाफ जोर-जबर्दस्ती करना···।"

"क्या बेमतलब की बात बोलते हैं," चरखा सेंटर की मास्टरनी जी बालदेव जी की बात काटते हुए बोली, "कालीचरन जी ठीक कहते हैं।"

बालदेव जी की कनपट्टी गर्म हो जाती है। ···यह औरत बोलने का ढंग भी नहीं जानती ! नारी का सुभाव करकस नहीं होना चाहिए। कोठारिन जी कितनी मीठी बोली बोलती हैं। और यह तो मर्दाना औरत है। चरखा सेंटर की मास्टरनी ! हूँ ! बहुत महिला कांग्रेसी को देखा है—माये जी, तारावती देवी, सरस्सती, उखादेवी, सरधा देवी। लेकिन कोई तो इतना करकस नहीं बोलती थी। ···हुँ ! कालीचरन जी ठीक कहते हैं !··· जबर्दस्ती करना हिंसाबाद नहीं तो और क्या है ?

कालीचरन के दलवालों ने हाट को घेर लिया है। डाक्टर साहब आम के पेड़ के नीचे टेबल पर अपना पूरा सामान रखकर तैयार हैं। कालीचरन एक-एक आदमी को पकड़कर लाता है, मास्टरनी जी स्पिरिट में भिगोई हुई रुई बाँह पर मल देती हैं और डाक्टर साहब सूई गड़ा देते हैं। तहसीलदार साहब नाम लिखते जाते हैं। हाट में भगदड़ मची हुई है। लेकिन भगकर किधर जाओगे ? चारों ओर सुस्लिंग पाटी का सिपाही खड़ा है।

"माई गे ! माई गे ! हे बेटा काली !"

"क्यों, रोती क्यों है ?"

"हे बेटा !"

"सारी देह में गोदना गोदाने के समय देह में सूई नही गड़ी थी। चलो !"

सात सौ पचास लोगो को सूई दे दी गई है। अब जो लोग घर में रह गए हैं, उन्हें कल सुबह ही सूरज उगने के पहले ही दे देनी होगी।

डाक्टर साहब कहते हैं, "बीमारों की सेवा के लिए स्वयसेवक चाहिए।"

कालीचरन अपने दल के साठ स्वयंसेवकों के साथ रात को अस्पताल में दाखिल हो जाएगा।

चरखा सेटर की मास्टरनी जी बड़ी निडर हैं। वह भी सेवा करने के लिए अपना नाम लिखाती हैं।

बावनदास हँसकर कहता है, "मुझे देखकर तो रोगी लोग डर जाएँगे डाक्टर साहब, मुझे और कोई काम दीजिए।"

बालदेव जी चुप हैं। उनको हैजा का बहुत डर है।

अट्ठाईस

डाक्टर आदमी नहीं, देवता है देवता !

तंत्रिमाटोली पोलियाटोली, कुर्मछत्रीटोली और रैदासटोली में सब मिलाकर सिर्फ पाँच आदमी नुकसान हुए। घर-घर में एक-दो आदमी बीमार थे, लेकिन डाक्टर देवता है। दिन-रात, कभी एक पल चैन से नहीं बैठा। मास्टरनी जी भी देवी हैं। कालीचरन भी बहादुर हैं। कै और दस्त से भरे बिछावन पर लेटे हुए रोगी की सेवा करना, कपड़े धोना, दवा डालकर गंदगी जलाना आदमी का काम नहीं, देवता ही कर सकते हैं। एक पैसा भी फीस नहीं लिया और मुफ्त में रात-रात-भर जगकर लोगों का इलाज करते रहे। रेसमलाल कोयरी के इकलौते बेटे को ज़म

के मुँह से छुड़ा लिया। रेसम ने डाक्टर को खुशी-खुशी एक गाय बक्सीस दी, लेकिन डाक्टर साहब ने कहा, "अपने लड़के को इस गाय का दूध पिलाओ। दूध बिक्री मत करो। यही हमारी बक्सीस है।"

बावनदास भी अवतारी आदमी हैं। रात-भर नीम के पेड़ के नीचे बैठकर खँजरी बजाकर गाते रहते थे ···"मालिक सीताराम सोच मन काहे करो ! सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! बंदे महातरम् ! ···मालिक सीताराम !"

भयावनी रात में, जबकि आदमी अपनी छाया से डरते थे, बावन का गीत डरे हुए लोगों को बल देता था··· "मालिक सीताराम सोच मन काह करो। ···निर्बल के बल राम !"

ब्राह्मणटोली में तीन आदमी मरे। और जोतखी जी की स्त्री तो दूसरी बीमारी से मरी। बच्चा अटक गया था। ···कायस्थटोली, संथालटोली और यादवटोली में एक भी आदमी बीमार नहीं हुआ। राजपूतटोली में पाँच-सात आदमी को रोग ने पकड़ा, 'लेकिन डाक्टर साहब ने सबों को बचा लिया। पंद्रह दिनों के बाद कमली ने डाक्टर की सूरत देखी है।

कमली ने मन-ही-मन कितनी बातें गढ़ रखी थीं। वह रूठी रहेगी, बोलेगी नहीं। ···पंद्रह दिनों में एक बार भी तो आते ! रहने दीजिए, यही होता न कि रोग का छूत मुझे लग जाता। मैं मर जाती। आपका क्या बिगड़ता ? चरखा सेंटर की मास्टरनी जी जो थीं !··· रात-भर खूब चाय बनाकर पिलाती थीं न ?

लेकिन डाक्टर को देखते ही वह सबकुछ भूल गई। डाक्टर का चेहरा एकदम काला हो गया है। आँखें धँस गई हैं। प्यारू ठीक ही कहता था, "डाक्टर साहब दुनिया-भर को आराम कर रहे हैं, लेकिन खुद बीमार होते जा रहे हैं। खाना-पीना तो एकदम कम हो गया है।" ···कमली चाहती है कि माँ थोड़ी देर के लिए डाक्टर को अकेला छोड़ दे। आज वह डाक्टर से लिपट जाएगी।

"कहिए हैजा डाक्टर साहब !" कमली हँसते हुए डाक्टर के पास जाती है।

"हैजा डाक्टर ? सुनिए लड़की की बात जरा ! मैं पूछती हूँ तुमसे कि तुम दिन-दिन क्या होती जा रही हो ?" माँ डाँटते हुए कहती है।

"वाह रे ! रामपूर के बटैयादार लोग उस दिन आकर बाबू जी से पूछ रहे थे कि हैजा डाक्टर कहाँ रहता है। सुना था नहीं। लोग इन्हें हैजा डाक्टर ही कहते हैं।" कमला खिलखिलाकर हँसती है।

माँ हँसते हुए चली जाती है। डाक्टर मुस्कराते हुए कहता है, "लोग हैजा डाक्टर कहते हैं, लेकिन तुमको तो कहना चाहिए बेहोशी डाक्टर !"

"अहा-हा ! बेहोशी डाक्टर की सूरत तो आज पंद्रह दिनों बाद दूज के चाँद की तरह देखने को मिली है और बात बनाते हैं !" कमली मुँह फुलाती है।

"नहीं कमली, इस बीच मुझे बराबर यही डर लगा रहता था कि यदि तुमने कुछ गड़बड़ी पैदा की तो क्या होगा।"

"तो मैं जान-बूझकर बेहोश होती हूँ, क्यों ?"

"हाँ, जान-बूझकर।"
"क्यों ?"
"क्योंकि बेहोश होने से ही बेहोशी डाक्टर आता है।"
"ऊँ ! डाक्टर आवे न आवे मेरी बला से !"
"अच्छी बात है, ता मैं चला।"
"ऊँ !"
"डाक्टर साहब इतने दिनों बाद आए हैं, चाय बना देगी, सो तो नहीं, बैठकर झगड़ा कर रही है।" माँ अंदर से ही कहती है।
कमली दाँत से जीभ को दबाते हुए उठ भागती है–माँ सब सुन रही थी शायद।
डाक्टर ने इस बार आस-पास के पंद्रह गाँवों का परिचय प्राप्त किया है; भयातुर इंसानों को देखा है, बीमार और निराश लागों की आँखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे मध्यवित्त किसानों की अंदर हवेली और बेजमीन मजदूरों की झोंपड़ियों में आने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। रोगियों को देखकर उठते समय, छींके पर टँगी हुई खाली मिट्टी की हँड़ियों से उसका सिर टकराया है। सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है··· गरीबी, गंदगी और जहालत से भरी हुई दुनिया में भी सुंदरता जन्म लेती है। किशोर-किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने। कमला नदी के गड्ढों में खिले हुए कमल के फूलों की तरह जिंदगी के भोर में वे बड़े लुभावने, बड़े मनोहर और सुंदर दिखाई पड़ते हैं, किंतु ज्यों ही सूरज की गर्मी तेज हुई, वे कुम्हला जाते हैं। शाम होने से पहले ही पपड़ियाँ झड़ जाती हैं !··· कश्मीर के कमल और पूर्णिया के कमल में शायद यही फर्क है। ···और कमली तो राजकमल !
"मैं तुम्हें राजकमल कहूँगा।"
"और मैं तुम्हें प्रशांत महासागर कहूँगी।" कमला ने आज अनजाने ही 'तुम' कह दिया।
"प्रशांत महासागर में राजकमल नहीं खिलता, मैं कमला नदी का गड्ढा ही होना पसंद करूँगा।" डाक्टर हँसता है।
कमली की बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें एक बार ऊपर उठकर झुक गईं।
"तुमने मुझे आज तक अपना अस्पताल क्यों नहीं दिखलाया ? तुम्हारे चूहे, खरगोश, सियार और नेवले···"
"माँ और बाबू जी तुम्हें अस्पताल जाने देंगे ?"
"क्यों नहीं ?"
"तो आज ही चलो, अभी।"

कमली डाक्टर के साथ अस्पताल की ओर जा रही है। चैत का सूरज पच्छिम

की ओर निष्प्राण-सा, पूर्णिमा के उगते हुए चाँद का-सा मालूम हो रहा है। दिन-भर धू-धूकर चलनेवाली पछिया हवा गिर गई है।

गाँव के पनघट पर स्त्रियों की भीड़ आँखें फाड़कर इन दोनों को देखती है, झगड़े बंद हो जाते हैं, पानी भरना रुक जाता है। नजर से ओझल होने के बाद फिर सबों के मुँह से अपनी-अपनी राय निकलती है। ...कमली अब आराम हो गई। डाक्टर साहब ने इसको बचा लिया। ...दोनों की जोड़ी कैसी अच्छी है ! सतलरैना बैसकोप का एक किताब लाया है, उसमें ऐसी ही एक जोड़ी की छापी है, ठीक ऐसी ही ! ...डाक्टर भी कायस्थ है क्या ? कौन जात है ? क्या जाने बाबा, इलाज करते-करते कहीं... ! क्या बकती है—सिर की गर्मी शाम को मैदान की हवा में ठंडी होती है, जानती नहीं ? मौसी ने जब जुगलजोड़ी देखी तो उसके हाथ स्वयं ही आँचल के खूँट पर चले गए। आँचल पसारकर मन-ही-मन बोली, "दुहाई कमला मैया !"

गणेश पास ही गुल्ली खेल रहा था। वह जोर-जोर से चिल्लाया...

पूलव से छाहेब आया
पच्छिम छे मेम
छाहेब बोले गिटिल-पिटिल
खिल-खिल हँछे मेम !

कमला और डाक्टर ने उलटकर देखा। गणेश ताली बजाकर हँस रहा था, "देखो नानी, छाहेब-मेम।"

दोनों ने हँसते हुए मौसी को प्रणाम किया। गणेश भागकर मामी के आँचल में छिप जाता है। कमली चिल्लाकर कहती है, "अच्छा, ठहरिए गोबर गणेश जी ! अभी लौटती हूँ तो कान पकड़कर चाँद दिखाऊँगी।"

तहसीलदार साहेब रास्ते में ही मिले। हँसते हुए बोले, "आज शायद यही पागलपन सवार हुआ था !.. अच्छी बात है, सुबह-शाम की हवा में बहुत गुण हैं।"

सभी एक ही साथ हँस पड़े।

कोठी के बाग में गुलमुहर की बड़ी-बड़ी डालियाँ, लाल-लाल फूलों से जलती हुई, हवा के हल्के झोंकों में हिल-डुल रही थीं। अमलतास के पीले फूल नववधू की पीली ओढ़नी की याद दिला रहे थे। योजन-गंधा शाम की हवा में पागलपन बिखेर रही थी। शिरीष के फूलों की पंखुड़ियाँ मंगलआशीष की तरह झड़ रही थीं। मार्टिन ने बड़े जतन से फूल लगाए थे। बाग लगाते समय उसने ऐसी ही शामों की कल्पना की होगी—बाँहों मे पड़ी हुई मेरी के लाल होंठों की ताजगी को और भी प्राणमय बनाने के लिए। पानी पटानेवाले मालियों पर वह कड़कते हुए बोला

होगा–"डेको ! एक भी गाछ सूखने पर पचास बेंट डेगा।"

चैत की गोधूली में अपनी सारी तेली खोकर सूरज ने श्याम-सलोनी संध्या के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया था। दूर तक फैली हुई ताड़ों की पंक्तियाँ, कुछ मटमैली, कुछ सिंदूरी-सी पृष्ठभूमि में गर्दन ऊँची करके सूरज को अतल गहराई में डूबते हुए देख रही थीं। गाय और बैलों के साथ घर लौटते हुए चरवाहे सावित्री-नाच का गीत गा रहे थे·

आहे सखी चलू फुलवारी देखे हे
देखिबो सुंदर रूप
नाना रसना फूल अनूप, चलू फुलवारी देखे हे !

गुलमुहर के लाल-लाल फूल बुझ गए और अमलतास की पीली ओढ़नी न जाने कब सरककर गिर पड़ी। किंतु योजन-गंधा अब भी पागल बना रही है। ··डाक्टर देवता नहीं, आदमी बनना चाहता है !

एक जोड़ी निर्मल आँखों की पलकें जरा ऊपर की ओर उठीं और फिर झुक गईं।

उनतीस

कल 'मिरवा' पर्व है।

कल पडमान में 'मछमर्री' होगी–मछमरी अर्थात् मछली का शिकार। आज चैत्र सक्राति है। कल पहली वैशाख, साल का पहला दिन। कल सभी गाँव के लोग सामूहिक रूप से मछली का शिकार करेगे। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी टापी और जाल लेकर सुबह ही निकलेंगे। आज दोपहर को सत्तू खाएँगें। सतुआनी पर्व है आज। आज रात की बनी हुई चीजें कल खाएँगे। कल चूल्हा नहीं जलेगा। बारहों मास चूल्हा जलाने के लिए यह आवश्यक है कि वर्ष के प्रथम दिन में भूमिदाह नहीं किया जाए। इस वर्ष की पकी हुई चीज उस वर्ष मे खाएँगे।

सारे मेरीगंज के मछली मारनेवालों का सरदार है कालीचरन। भुरुकवा उगने के समय ही निकलना होगा। बारह कोस जमीन तय करना होगा। इस कालीचरन ने ऐलान कर दिया है, जुलूस बनाकर चलना होगा, लाल झंडे के साथ। नारा भी लगाते चलना होगा। जमींदार फैजबख्श अली ने इस बार पड़मान नदी के 'जलकर' को खास में रखा है ! उसके अमलों ने कहा है कि मछली नहीं मारने

देंगे, मलेटरी मँगाकर तैनात रखेंगे। देखना है मलेटरी को !

नए तहसीलदार बाबू हरगौरीसिंह के यहाँ नया खाता खुलेगा। शाम को सतनारायण की पूजा होगी। डाक्टर को भी निमंत्रण है।

तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद ने तहसीलदारी छोड़ दी है तो क्या, नया खाता भी न करेंगे ? उनके यहाँ भी सत्यनारायण व्रत की कथा होगी। डाक्टर साहब को निमंत्रण है।

मौसी ने होली में डाक्टर को नहीं खिलाया था। इस बार डाक्टर को वही खिलाएगी।

मठ पर भी नया खाता होता है। इस बार नए महंथ रामदास जी के हाथ से खाता खुलेगा। इसीलिए विशेष आयोजन है। बीजक पाठ, साहेब भजनावली, ध्यान और अंत में वैष्णव-भोजन। बालदेव जी और बावनदास को विशेष निमंत्रण है। लछमी दासिन ने भंडारी के मार्फत कहला भेजा है, "बालदेव जी जरूरी आवें। गाँव में वैष्णव है ही और कौन !"

बेतार सुमरितदास अब नए तहसीलदार का कारपरदाज है। वह कहता फिरता है, "हरगौरीबाबू हीरा आदमी है। सारा कागज-पत्तर हमीं पर फेककर निश्चिंत ! देखिए तो, हम कितना समझाते हैं कि बाबू साहेब ! बही-बस्ता, सेयाहा और कर्चा किसी दूसरे को छूने नहीं देना चाहिए। लेकिन हरगौरीबाबू हीरा आदमी हैं। विश्वनाथपरसाद तो एक नम्मर के मखीचूस और सक्की आदमी हैं। कायस्त और राजपूत का कलेजा बराबर हो भला ! हूँ ! कँगरेसी हुए हैं ! सुमरितदास से कौन बात छिपी हुई है ? अब तो गाँव का चाल-चलन एकदम बिगड़ जाएगा। जवान बेटी को एक परदेसी जवान के साथ हँसी-मसखरी करने की, घूमने-फिरने की आजादी दे दी है विश्वनाथपरसाद ने। गाँव का चाल-चलन नहीं बिगड़े तो सुमरितदास का नाम बदल देना।"

नए तहसीलदार बाबूहरगौरीसिंघ के यहाँ रात मे एक भी रैयत नही आया। पुन्याह में जो सलामी मिलती है, वह रकम जमीदार की होती है, लेकिन खाता खुलने के दिन की सलामी तो तहसीलदार की खास आमदनी है। सुमरितदास ने आकर खबर दी–"सभी रैयत विश्वनाथपरसाद के यहाँ गए थे। डेढ़ सौ रुपए सलामी में पड़े थे। मछली मारकर लौटते समय रास्ते में रैयतों ने मिटिन किया था कि नए तहसीलदार के यहाँ नही जाएँगे। कुकरा का बेटा कालिया लीटरी करता है। बाप काटे घोड़ा का घास और बेटा का नाम दुरगादास ! अभी ततमाटोली का बिरंचिया कहता था कि रैयतों का पेट जो भरेगा वही असल जमींदार है। नए तहसीलदार ने कभी एक चुटकी धान भी दिया है ? शास्तर-वचन कभी झूठ नहीं होता · रांड़ एड़ं कनमोचड़, जूता मारं पवित्तरम ! समझे तहसीलदार साहब, राड़ और काँटों को काँटीवाले जूते से बस में किया जाता है।"

बालदेव जी का काम छूट गया।

कपड़े, चीनी और किरासन तेल की पुर्जी अब तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद देंगे।

बालदेव जी को क्यों छुड़ा दिया ? ···सायद उनका बिलेक पकड़ा गया। पाप कितने दिनों तक छिपेगा ? खेलावन ने जो परमेसरसिंघ की जमीन मोल ली है, सो किस रुपए से ? वह बालदेव जी की ही जमीन है। खेलावन के घर में जाकर देखा, आज भी गाँठ-के-गाँठ कपड़ा पड़ा हुआ है; टीन-का-टीन तेल है। खेलावन के सभी सगे-संबंधियो के यहाँ कपड़े गए हैं। यह बात कितने दिनों तक छिपी रहेगी ? सुनते हैं कि काँगरेस ने अपना खौफिया बहाल किया है। अँगरेजी का खौफिया तो ऊपर से ही किसी बात का पता लगाता था, कँगरेस के खौफ़िया को हाँड़ी के चावल का भी पता रहता है।

स्त्री की मृत्यु के बाद जोतखी जी बहुत गुमसुम रहते हैं। ··डाक्टर को कितना कहा कि कोई दवा देकर रामनारायण की माँ को उबारिए, लेकिन कौन सुनता है ! बस, एक ही जवाब। बच्चा को पेट काटकर निकालना होगा। शिव हो ! शिव हो ! पराई स्त्री को बेपर्द करने की बात कैसे उसके मुँह से निकली ?··· पारबती की माँ ने बदला ले लिया। पॉच साल पहले पंचायत मे जोतखी जी ने कहा था कि पारबती की माँ को मैला घोलकर पिलाया जाए। विश्वनाथप्रसाद ने पारबती की माँ का पक्ष लिया था, नही तो उसी बार उसका सभी 'गुण-मंतर' शेष हो जाता। ··इस बार पारबती की माँ ने बदला चुका लिया। अच्छा ! ब्राह्मण का श्राप निष्फल नहीं होगा। देखना, देखना ! इस कलियुग में भी असल ब्राह्मण रहता है, देखना !

अरे ! वह जमाना चला गया जब राजपूतटोली और बाभनटोली के लोग बात-बात में लात-जूता चलाते थे। याद नहीं है ? एक बार टहलू पासवान का गुरु घोड़ी पर चढ़कर आ रहा था। गाँव के अंदर यदि आता तो एक बात भी थी। गाँव के बाहर ही सिंघ जी ने घोड़ी पर से नीचे गिराकर जूते से मारना शुरू कर दिया था—"साला दुसाध, घोड़ी पर चढ़ेगा !" · अब वह जमाना नही है। गाँधी जी का जमाना है। नया तहसीलदार हुआ है तो क्या ? हमारा क्या बिगाड़ लेगा ? न जगह न जमीन है; इस गाँव में नहीं उस गाँव में रहें, बराबर है। ··धमकी देते है कि जूते से रैट करेंगे। अच्छा ! अच्छा !

युगों से पीडित, दलित और उपेक्षित लोगों को कालीचरन की बातें बड़ी अच्छी लगती हैं। ऐसा लगता है, कोई घाव पर ठंडा लेप कर रहा हो। लेकिन कालीचरन कहता है—"मैं आप लोगो के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोए हुए को जगाना चाहता हूँ। सोशलिस्ट पाटी आपकी पाटी, गरीबों की, मजदूरों की पाटी है। सोशलिस्ट पाटी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए। मैं आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह काँगरेसी का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ।"

कालीचरन आग उगलता है, लेकिन सुननेवालों का जलता हुआ कलेजा ठंडा हो जाता है। ··जमीन, जोतनेवालों की ! पूँजीवाद का नाश !

बावनदास फिर एक फाहरम लाया है। मंत्री जी ने भेज दिया है। इस बार

पटनो का छापा फाहरम है, पुरैनियाँ का नहीं। पटना का फाहरम कच्चा नहीं हो सकता। ···इस फाहरम पर अपना नाम, अपने बाप का नाम, जमीन का खाता नंबर, खसरा नंबर लिखकर पुरैनियाँ कचहरी में दे दो 'दफा 40' के हाकिम को। जमीन नकदी हो जाएगी। सच ? ·हाँ, अँगूठे का टीप देना होगा। ···और जिन लोगों ने चरखा सेंटर में दसखत करना सीख लिया है, उन्हें भी टीप देना होगा ?

बालदेव जी क्या करें ? खेलावन भैया कुछ समझते ही नहीं। रोज कहते हैं, "बालदेव, कमला किनारेवाली जमीन में कलरू पासवान के दादा का नाम कायमी बटैयादार की सूरत से दर्ज है। कलरू से कहकर सुपुर्दी दिला दो। ···लेकिन बालदेव जी क्या करें ? चौधरी जी को वह सब दिन से गुरु की तरह मानता आ रहा है। कभी किसी काम में तरौटी नहीं होने दिया। इतना चौअन्नियाँ मेंबर बनाकर दिया। गाँव में चरखा सेंटर खुलवा दिया, लेकिन जिला कमेटी के मेंबर तहसीलदार साहब हो गए। बालदेव को कोई खबर नहीं दी गई। कपड़े की मेंबरी भी नहीं रही। नीमक कानून के समय से जेल जाने का यही बख्शीस मिला है। कालीचरन की पाटीवाले टीक कहते हैं, "काँगरेस अमीरों की पाटी है।"··· लेकिन वह कालीचरन की पाटी में तो नहीं जा सकता। कालीचरन की आँखें उसने ही खोलीं। रात-रात-भर जागकर कालीचरन को जेहल का कितना किस्सा, गाँधी जी का किस्सा, जमाहिरलाल का किस्सा सुनाया। कालीचरन उसका चेला है। वह आखिर चेला की पाटी में जाएगा ? नही, ऐसा नहीं हो सकता ! खेलावन भैया कुछ नहीं समझते हैं। पासवानटोली में अब उसकी पैठ नहीं। कलरू उसकी बात नहीं मानेगा। उसका लीडर कालीचरन है। ···तहसीलदार साहब को तो लोग डर से लीडर मानते हैं।

नए तहसीलदार साहब भी फेहरिस्त तैयार कर रहे हैं। सुमरितदास सबों का नाम लिखा रहा है–"सबसे पहले लिखिए बिरंचिया का नाम। सोनभा दुसाध, किराय कोयरी, ये सब देनदार कलम हैं। अब लिखिए–झोपड़िया कलम। हाँ, जिन लोगों को अपनी झोंपड़ी के सिवा कुछ भी नहीं। बस, यह फिरिस्त मनेजरसाहब को दे दीजिएगा और कहिएगा कि खेमा लेकर जल्दी इलाके में आवें, नहीं तो सारा सर्किल खराब हो जाएगा।"

लछमी दासिन के दिल में बालदेव जी ने घर कर लिया है। खाता-बही के दिन आए थे। एकदम सूख गए हैं बालदेव जी। लछमी कितनी समझाती है कि कामकाज छोड़कर कुछ दिन आराम कीजिए, लेकिन कौन सुनता है ? पहने जान तब जहान ! जब शरीर ही नहीं रहेगा तो परमारथ का कारज कैसे होगा ? शरीर ही तीरथ है। कितना कहने पर, सतगुरुसाहेब की कसम धराने पर यह मंजूर किया है कि एक बेला रोज मठ पर आया करेंगे। शाम के सतसंग में बैठेंगे। भंडारी से कह दिया है घी और दूध की मलाई रोज कटोरे में चुराकर रख दिया करेगा। रामदास बालदेव का आना पसंद नहीं करता है। ···जैसे भी हो, बालदेव जी के शरीर की सेवा करेगी लछमी। अब बालदेव जी के आने में जरा भी देर होती है तो लछमी का दिल धड़कने लगता है; मन चंचल हो जाता है। सतगुरुसाहेब

ने कहा है :

ई मन चंचल, ई मन चोर,
ई मन शुध ठगहार
मन मन करत सुर नर मुनि
मन के लक्ष दुआर ।

लछमी का मन चंचल है, पर चोर नहीं। बालदेव जी चोरी से उसके मन में नहीं आते हैं। मन के लक्ष दुआर हैं, बालदेव जी एक ही साथ लक्ष दुआर से उसके मन में पैठ जाते हैं · एक लक्ष बालदेव जी !

तीस

अखिल भारतीय मेडिकल गजट मे डाक्टर प्रशांत, मैलेरियोलॉजिस्ट के रिसर्च की छमाही रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। गजट के संपादक-मंडल में भारत के पाँच डाक्टर हैं। इस रिपोर्ट पर उन लोगों ने अपना-अपना नोट दिया है। · मद्रास के डाक्टर टी. रामास्वामी एम. एस-सी., डी. टी. एम. (कैल.), पी. एच-डी. (एडिन.), एफ. आर. एस. जे. (एडिन.) ने लिखा है : "हमें विश्वास हो गया कि डाक्टर प्रशांत मैलेरिया और कालाआजार के बारे में ऐसे तथ्यों का उद्घाटन करेंगे जिनसे हम अब तक अनभिज्ञ थे। ··नई दवा तथा नए उपचार की संभावनाओं के लिए सारा मेडिकल-संसार उनकी ओर निगाहें लगाए बैठा है।"

प्रशांत की विस्तृत रिपोर्ट में मैलेरिया और कालाआजार से संबंधित मिट्टी, हवा-पानी तथा इसमें पलनेवाले प्राणियों पर नई रोशनी डाली गई है। अपनी रिपोर्ट में डाक्टर ने एक जगह लिखा है :

"यहाँ के लोग सुबह को बासी भात खाकर, पाट धोने के लिए गंदे गड्ढों में घुसते हैं और करीब सात घंटे तक पानी में रहते हैं। गंदे गड्ढों को देखने से ऐसा लगता है कि पानी के आध इंच धरातल को जाँच करने पर एक लाख से ज्यादा मच्छड़ के अंडे जरूर पाए जाएँगे। किंतु यहाँ के मच्छड़ गंदे गड्ढों में बहुत कम अंडे देते पाए गए हैं। इनका कोई-कोई ग्रुप तो इतना सफाई-पसंद होता है कि निर्मल और स्वच्छ तालाबों को छोड़कर और कहीं अंडे देता ही नहीं। ··बेचारे खरगोशों को क्या पता कि उनकी जीभ में जो दाने निकल आते हैं, कानों के अंदर जो खुजलाहट होती है, कोमल-से-कोमल घास की पत्तियाँ भी खाने में अच्छी नहीं मालूम होती हैं, ये कालाआजार के लक्षण हैं।

मनुष्य के शत्रु, कीड़े-मकोड़ों के बारे में डाक्टर ने लिखा है—"मच्छड़ों को नष्ट करने के उपाय जो हमें बहुत पहले बता दिए गए हैं, हम उन्हीं को आज भी आँख मूँदकर दुहरा रहे हैं। जिन कीड़ों को हम नष्ट करना चाहते हैं, उनके बारे में हमारी जानकारी बहुत थोड़ी होती है। हमें उनकी आदत, स्वभाव और व्यवहार के ढंगों के बारे में जानना होगा। · एनोफिलीज के भी कई ग्रुप हैं, हर ग्रुप के अलग-अलग ढंग हैं। किंतु किसी ग्रुप में भी तरह-तरह के छोटे-छोटे सब-ग्रुप होते हैं जिनकी आदतों और प्रजनन-ऋतु में विभिन्नता पाई गई है। ···उनके लुकने-छिपने, पसंदगी और नापसंदगी में भी फर्क है। ·· मैंने एक ही ग्रुप के मच्छड़ों को तीन किस्म से अंडे छोड़ते पाया है और हर ग्रुप में कुछ दल-विशेष हैं जो हवा में अंडे छोड़ते हैं। ···इनकी चालाकी और बुद्धिमानी का सबसे दिलचस्प उदाहरण यह है कि एक ही मौसम में एक ही ग्रुप के मच्छड़ हमले के लिए पंद्रह तरह के तरीके व्यवहार करते हैं। · कुछ तो एकदम डाइव फ्लाइंग करके ही हमला करते हैं।"

इसके अलावा डाक्टर ने मैलेरिया और कालाआजार मे रक्त-परिवर्तन पर भी कुछ नई बातें कहीं हैं।

ममता की चिट्ठी आई है "पटना मेडिकल कालेज को इस बात पर गर्व है कि बिहार का एकमात्र मैलेरियोलॉजिस्ट डाक्टर प्रशांत उसी की देन है।" ममता ने और भी बहुत-सी बातें लिखीं हैं। बहुत-सी बातें; जिसे प्रशांत करीब-करीब भूल गया है या भूल जाना चाहता है। पटना क्लब का नाम पाटलिपुत्र क्लब हो गया है। मिस रेवा सरकार ने बैडमिंटन में रमेश पाल को हरा दिया···" इन बातों में प्रशात को अब कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन ममता जब पत्र लिखती है तो वह कुछ भी बाद नहीं देती, छोटी-से-छोटी बात का जिक्र करती है "पटना मार्केट के सामने जो चाय की दुकान थी, उसका बूढ़ा मालिक मर गया। तुम्हें याद है ! वही जो तुमको रोज सलाम करके चाय के लिए निमंत्रित करता था कश्मीरी चाय ?·" प्रशात को हँसी आती है। बेचारी ममता ! उसे क्या मालूम कि मछली को लेकर पालतू नेवले से झगड़ा करने में जो आनंद आता है, वह किसी खेल में नहीं। प्रशात कभी स्पोर्ट्समैन नहीं रहा। वह किसी भी खेल का खिलाड़ी नहीं रहा। फिर भी उसे खेलों में बड़ी दिलचर्स्पी रहती थी। उसने ताश के पत्तों को कभी हाथ से स्पर्श नहीं किया, लेकिन साप्ताहिक ब्रिज नोट्स को वह गंभीरता से पढ़ जाता था। चर्चिल का भाषण पढ़ना भले ही भूल जाए, कलकत्ता के आइ. एफ. ए. के मैचों की रिपोर्ट वह सबसे पहले पढ लेता था। ··लेकिन अब तो वह खुद खिलाड़ी है। नेवले का गुर्राना, चिल्लाना, पूँछ के रोओं को खड़ा कर हमला करना और हमला करते हुए इसका खयाल रखना कि चोट नहीं लग जाए, नाखून नहीं गड़ जाए। स्पोर्ट्समेन्स स्पिरिट और किसको कहते हैं ?

डाक्टर ममता श्रीवास्तव ! दरभंगा के प्रसिद्ध डाक्टर कालीप्रसाद श्रीवास्तव की सुपुत्री ममता ने डाक्टरी पास करने के बाद हेल्थयूनिट की स्थापना की है।

शहर के गरीब मुहल्लों में यूनिट ने अपने सेवा-कार्य का जो परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है। पटना की महिला-समाज-सेविकाओं में ममता का नाम सबसे पहले लिया जाता है। गरीब की झोंपड़ी से लेकर गवर्नमेंट हाउस तक उसकी पहुँच है। जो उसके निकट संपर्क में रह चुके हैं, उनका कहना है कि ममता दीदी दिन-रात मिलाकर सिर्फ चार घंटे ही आराम करती हैं। दूर से देखनेवाले उसके चरित्र पर भी संदेह करते हैं। उसकी सार्वजनीन मुस्कराहट लोगों को कभी-कभी भ्रम में डाल देती है। और जिन लोगों का काम सिर्फ बैठकर आलोचना करना है, वे कहते हैं कि तरह-तरह के जाल फैलाकर सरकार से रुपया वसूलना और उड़ाना ही ममता देवी का काम है। ··विकारपूर्ण मस्तिष्कवाले किसी मिनिस्टर का नाम लेकर मुस्करा देते हैं–मिस ममता श्रीवास्तव नहीं मिसेज ··कहो !

डाक्टर प्रशांत ममता का ऋणी है। ममता से उसे प्रेरणा मिली है।

···"डाक्टर ! रोज डिस्पेंसरी खोलकर शिव जी की मूर्ति पर बेलपत्र चढ़ाने के बाद, संक्रामक और भयानक रोगों के फैलने की आशा में कुर्सी पर बैठे रहना, अथवा अपने बँगले पर सैकड़ों रोगियों की भीड़ जमा करके रोग की परीक्षा करने के पहले नोटों और रुपयों की परीक्षा करना, मेडिकल कालेज के विद्यार्थियों पर पांडित्य की वर्षा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझना और अस्पताल मे कराहते हुए गरीब रोगियों के रुदन को जिंदगी का एक संगीत समझकर उपभोग करना ही डाक्टर का कर्तव्य नहीं !"

··ममता को प्रशांत पर संदेह है। वह समझती है कि घोर देहात में प्रशांत छटपटा रहा है; अपनी गलती पर पछता रहा है ! इसलिए वह हर पत्र में, शहर की सामाजिक जिंदगी पर कुछ लिख डालती है। एक पत्र में उसने लिखा है, "बुशशर्ट का युग है। पाँच साल पहले बाँकीपुर की सड़कों पर, पार्कों और मैदानों में दानापुर कैंट के गोरे फौजियों ने जिंदगी के जिन कुत्सित और बीभत्स पहलुओं का प्रदर्शन किया, हमारे समाज के अचेतन मन पर उसकी ऐसी गहरी छाप पड़ी कि आज हर आदमी के अंदर का भूखा टामी अधीर हो उठा है। युद्ध के विषैले गैसों ने सारे समाज के मानव को विकृत कर दिया है। काले बाजार के अँधेरे में एक नई दुनिया की सृष्टि हो गई है, जहाँ सूरज नहीं उगता, चाँद नहीं चमकता और न सितारे जगमगाते हैं ? इस दुनिया में माँ-बेटा, पिता-पुत्र, भाई-बहन और स्वामी-स्त्री जैसा कोई संबंध नहीं। ·कल एक गरीब ने विटामिन 'सी' की सूई आठ रुपए में खरीदी है। पाँच आने का छोटा-सा ऐम्प्यूल ! ···मेरे मुहल्ले के महाराज महता को तुम जरूर जानते होगे, उसकी छोटी बेटी फुलमतिया, जो मिल्क सेंटर में पिछले साल तक दूध पीने आती थी और ताली बजा-बजाकर नाचती थी उसे तुम भूले नहीं होगे, शायद ! परसों से अस्पताल में पड़ी हुई है। रामनवमी की शाम को नई रंगीन साड़ी पहनकर फुदकती हुई राममंदिर गई थी और रात को दो बजे पुलिस ने 'सिटी' के एक पार्क में उसे कराहते हुए पाया। फुलमतिया का बयान है–टेढ़ीनीम गली के पास एक मोटरगाड़ी रुक गई और दो आदमियों ने

पकड़कर उसे मोटर में बिठा दिया। ...बड़े-बड़े बाबू लोग थे !...

मंजरअली रोड से लेकर अशोकपथ तक विदेशी शराब की दस दुकानें खुल गई हैं।

"...कल बिलिंगडन हॉल में टी. बी. सेनेटोरियम के लिए स्थानीय महिला कालेज की लड़कियों ने एक 'चैरिटि शो' का आयोजन किया था। ज्योंही वीणा (बैरिस्टर प्राणमोहन सिन्हा की पुत्री) स्टेज पर उतरी कि ऊपर की गैलरी से दुअन्नी-इकन्नी फेंकी जाने लगीं और तरह-तरह की भद्दी आवाजें कसी जाने लगीं। पुलिस ने शांति कायम करने की चेष्टा की, किंतु उन पर ईंट-पत्थरों की ऐसी वर्षा की गई कि हॉल के सभी दरवाजों और खिड़कियों के काँच टूट गए। बहुत लोग घायल हुए। घायलों में महिलाओं और बच्चों की संख्या ही ज्यादा थी। ...और सबसे आश्चर्य की बात सुनोगे ? कहा जाता है कि खुराफातियों का लीडर था अमलेश सिन्हा, वीणा का चचेरा भाई। प्राणमोहन बाबू ने, कुछ दिन हुए, अपने घर में अमलेश का आना-जाना बंद कर दिया था। शराब के नशे में अमलेश ने कई बार घर की नौकरानियों के साथ अशोभनीय व्यवहार किया था। इसलिए (उनकी पुत्री और अपनी चचेरी बहन) वीणा के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है।"

कोठी के जगल में संथालिनें लकड़ी काट रही हैं और गा रही हैं। कुछ दिन पहले इसी जंगल में संथालिनों ने एक चीते को कुल्हाड़ी और दाब से मार दिया था। शोरगुल सुनकर गाँव के लोग जमा हो गए थे। मरे हुए बाघ को देखकर भी लोगों के रोंगटे खड़े हो गए थे और बहुत तो भाग खड़े हुए थे, किंतु संथालिने हमेशा की तरह मुस्करा रही थीं। मकई के दानों की तरह सफेद दंत-पंक्तियाँ और वही सरल मुस्कराहट ! चीते के अचानक हमले से दो-तीन युवतियाँ सामान्य घायल हो गई थीं। उनके होंठों पर भी वैसी ही मुस्कराहट खेल रही थी। उनके जख्मों को धोकर मरहम-पट्टी करते समय डाक्टर के शरीर में एक बार सिहर की हल्की लहरें दौड़ गई थीं। और संथालिनें खिलखिलाकर हँस पड़ी थी हँ ! हँ हँ ! जख्म पर तेज दवा लगने पर इस तरह हँसना डाक्टर ने पहली बार देखा, सुना।

आबनूस की मूर्तियाँ, जूड़े में गुँथे हुए शिरीष और गुलमुहर के फूल ! संथालिनें गाती हैं :

छोटी-मोटी, पुखरी, चरकुलिया पिंड रे
पोरोइनी फूटे लाले-लाल
पासचे तेरी फूल देखी फूलय लावेलब
पासचे तेरी आधा दिन लगित !

चारो ओर से बँधाए हुए एक छोटे-से पोखरे में पुरइन (कमल) के लाल-लाल फूल

खिले हैं। उस फूल पर तुम मुग्ध हो। मुझे भी देखकर तुम मोहित होते हो। किंतु वह मोह, आधे दिन का ही तो नहीं ?

नहीं, नहीं ! आधे दिन के लिए नहीं। प्राणों में घुले हुए रंगों का मोह आधे दिन में ही नहीं टूट सकता।

इकतीस

मंगलादेवी, चरखा-सेंटर की मास्टरनी जी बीमार हैं।

डाक्टर ने खून जाँचकर देखा, कालाआजार नहीं, टाइफायड है। चरखा-सेंटर के दोनों मास्टर तहसीलदार साहब के गुहाल में रहते हैं और मास्टरनी जी भगमान भगत की एक झोंपड़ी में। भगमान भगत ने गाड़ी-बैल रखने के लिए एक झोंपड़ी बनाई थी, लेकिन अब अगले साल टीन का मकान देने का इरादा है, इसलिए इस बार गाड़ी-बैल नहीं खरीद सका। चरखा-सेंटर खुलने पर गाँव के लोगों ने भगमान भगत से कहा—"घर तो खाली ही है। मास्टरनी जी के रहने के लिए घर नहीं है ! चरखा-सेंटर का घर बनेगा तो आपका घर खाली कर दिया जाएगा।" ··· कोटापरमिट के जमाने में कँगरेसी लोगों की बात काटना ठीक नहीं। नहीं तो कटिहार में इतनी बड़ी झोंपड़ी का ही किराया पंद्रह रुपया मिलता !

मंगलादेवी ने हैजा के समय रात-रात-भर जागकर रोगियों की सेवा की और जब वह खुद बीमार पड़ी तो उसके पास बैठनेवाला भी कोई नहीं। चरखा-सेंटर के दोनों मास्टर साहब बारी-बारी से एक-एक घंटा ड्यूटी दे जाते हैं। रात में चिचाए की माँ आकर सोती है। लेकिन बूढ़ी इतना हुक्का पीती और खाँसती है कि मंगलादेवी के ज्वर की ज्वाला और भी तीव्र हो जाती है। बुढ़िया जब सोती है तो इतने जोरों के खर्राटे लेती है कि पास-पड़ोस की नींद खुल जाए। डाक्टर कहता है—यदि यही हालत रही तो सँभालना मुश्किल होगा। घर खत लिखकर किसी को बुला लेना ठीक होगा।

घर ? यदि घर से कोई आनेवाला होता अथवा खबर लेनेवाला होता तो मंगला देवी चरखा-सेंटर में क्यों भर्ती होती ? उसे घर छोड़े हुए पाँच साल हो रहे हैं। मंगला देवी ने दुनिया को अच्छी तरह पहचाना है। आदमी के अंदर के पशु को उसने बहुत बार करीब से देखा है। विधवा आश्रम, अबला-आश्रम और बड़े बाबुओं के घर आया की जिंदगी उसने बिताई है। अबला नारी हर जगह अबला ही है। रूप और जवानी ?·· नहीं, यह भी गलत। औरत होना चाहिए, रूप और उम्र

की कोई कैद नहीं। एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख-चैन से नहीं सो सकती। मंगला देवी के लिए जैसा घर वैसा बाहर। उसका कौन है अपना? कोई नहीं।

"कौन··· ? ···कालीचरन बाबू !"

"डाक्टर साहब ने कहा है कि इस झोंपड़ी में आपकी बीमारी अच्छी नहीं होगी। हम लोगों का कीर्तनवाला घर साफ-सुथरा है, हवादार है।"

मंगलादेवी यादव टोली के कीर्तन-घर में आ गई है। कीर्तन-घर में ही सोशलिस्ट पार्टी का ऑफिस है। कालीचरन इसे ऑफिस ही कहता है।··· लेकिन सोशलिस्ट ऑफिस का नाम सुनकर मंगलादेवी शायद नहीं आती।

"दवा पी लीजिए।"

"नहीं पियूँगी।"

"पी लीजिए मास्टरनी जी ! दवा···"

"कालीबाबू, एक बात कहूँ ?"

"कहिए !"

"आप मुझे मास्टरनी जी मत कहिए।"

"तब क्या कहूँ ?"

"क्यों ? मेरा नाम नहीं है ?"

"मंगलादेवी ?"

"नहीं।"

"तो ?"

"सिर्फ ···मंगला।"

"दवा पी लीजिए।"

"मंगला कहिए।"

"मंगला !"

पंद्रह दिनों से कालीचरन मंगलादेवी की सेवा कर रहा है। दिन में तो और लोग भी रहते हैं, लेकिन रात में कालीचरन की ड्यूटी रहती है। डाक्टर कहते हैं, अब कोई खतरा नहीं। कमजोरी है, कुछ दिनों में ठीक हो जाएगी।

मंगला देवी के शरीर में सिर्फ हड्डियाँ बच रही हैं। बाल झड़ रहे हैं। वह खाने के लिए बच्चों की तरह रूठती है, रोती है और बर्तन फेंकती है। ···बार्ली नहीं पियूँगी। छेना का पानी भी कोई भला आदमी पीता है ! कालीचरन हाथ में पथ्य का कटोरा लेकर घंटों खुशामदें करता—"लीजिए, इसमें नीबू डाल दिया है। अब खा लीजिए। कल नहीं, परसों भात मिलेगा।"

कालीचरन का व्रत टूट गया। उसके पहलवान गुरु ने कहा था—"पट्ठे ! जब तक अखाड़े की मिट्टी देह में पूरी तरह रचे नहीं, औरतों से पाँच हाथ दूर रहना।" कालीचरन का व्रत टूट गया। पाँच हाथ दूर रहने से मंगलादेवी की सेवा नहीं की जा सकती थी। बिछावन और कपड़े बदलते समय, देह पोंछ देने के समय

कालीचरन को गुरु जी की बात याद आती थी, लेकिन क्या किया जाए !

"काली कहाँ गया ? काली !"

"क्या है ?"

"कहाँ की चिट्ठी है ?"

"सिकरेटरी साहब ने लिखा है, सोमवार को जिला पार्टी की रैली है। लेकिन मैं कैसे जाऊँगा ?"

"क्यों ¨तुम जाओ। मैं तो अब अच्छी हो गई।"

रैली के बाद सेक्रेटरी साहब ने कालीचरन को रोक लिया है—"कामरेड आप दो दिन और रह जाइए। सैनिक जी की स्त्री अस्पताल में भर्ती हैं। सैनिक जी पटना गए हैं। परसों आ जाएँगे। अस्पताल मे दोनो बेला खाना पहुँचाना है कोई है नहीं।"

सेक्रेटरी साहब की बात को टालना बड़ा कठिन है। कामरेड की स्त्री ! कालीचरन को रह-रहकर मगला की याद आती है। वह राह देख रही होगी। बासुदव जाकर कहेगा कि दो दिन बाद आएँगे। सुनते ही उसका मुँह सूख जाएगा, चेहरा फक् हो जाएगा। एकदम बच्ची की तरह है मंगला का मुँह ! कालीचरन ने बिहदाना और संतोला भेज दिया है। वह छुएगी भी नही। बासुदेव क्या समझाएगा ? हत्तेरे की ! ये शहर के लौंडे बड़े बदमाश होते हैं। ठीक पीठ के पास जाकर सैकिल की घटी बजाएगा। अ अभी तो सब खाना गिर जाता।

"उल्लू कहीं का ! गिलास ऐसे ही धोता है ?" उल्लू। कालीचरन के गाल पर मानो किसी ने जोर से एक तमाचा जड़ दिया। उल्लू ! उसका सारा शरीर झिनझिन कर रहा है। सैनिक जी की स्त्री ने उसे क्या समझा है ? नोकर ?

"बहन जी, गिलास "

"खबरदार ! बहिन जी मत बोल !"

बगल की खाट पर जो चमगादड-जैसी औरत लेटी हुई थी, बोली, "कौन देस का आदमी है ! आदमी है या भूत ? बात भी नहीं करना जानता है !"

"अरे जानती नही हैं, ग्वाला साठ बरस तक ।" सैनिक जी की स्त्री बोली।

कालीचरन पूरा सुन नहीं सका। उसका सिर चकराने लगा। सैनिक जी भी तो ग्वाला ही हैं ! कालीचरन की आँखों के आगे सरसो के फूल-जैसी चीजें उड़ने लगीं। यदि किसी मर्द ने ये बाते कही होती तो आज खून हो जाता, खून। कालीचरन की कनपट्टी गर्म हो गई है। मगलादेवी भी तो औरत ही है। हुँ ! कहाँ मंगला और कहाँ यह भूतनी ! गले की आवाज एकदम खिखिर[1] की तरह है। खेंक, खेंक। बातें करती है तो लगता है मानो दाँत काटने के लिए दौड़ रही है। शायद यह भी कोई रोग ही है।

1 लोमडी।

रौतहट स्टेशन पर गाड़ी से उतरकर कालीचरन जल्दी-जल्दी घर लौट रहा है। ··उसे देखते ही मंगला खुशी से खिल जाएगी। संतोला सूख गया होगा, बिहदाना पड़ा हागा। दोनों ओर का रेल-भाड़ा बचाकर कालीचरन ने एक पैकेट बिस्कुट खरीद लिया है। डाक्टर साहब ने मंगला को बिस्कुट खाने के लिए कहा है। कालीचरन ने कभी बिस्कुट नहीं खाया है। शायद इसमें मुर्गी का अंडा रहता है। वह रह-रहकर बिस्कुट के डब्बे को छूकर देखता है ! इसके अदर 'कुड़-कुड़' क्या बोलता है ? कहीं अंडा फूटकर ···!

"सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! जै हिंद, काली जी !"

"ऐ ? ओ बावनदास जी, हम तो चमक गए। यहाँ क्यों पड़े हैं ?"

"आप तो इस तरह आँख मूँदकर सरेसा[1] घोड़े की तरह चल रहे हैं !"

जंगली जामुन के पेड़ की छाया में बावनदास लेटा हुआ था। छाया में जाने पर कालीचरन को मालूम हुआ कि धूप कितनी तेज है।

"हम तो रात की गाड़ी से ही उतरे। कल दफा ४० का फैसला हो गया।"

"हो गया ? ···क्या हुआ ?"

"अरे होगा क्या ? सबों की दरखास खारिज हो गई। ··हम पहले ही जानते थे। कल गाँव के सभी रैयत आए थे। फैसला सुनकर सभी गेने लगे। अब जमींदार जमीन भी छुड़ा लेगा।"

"जमीन छुड़ा लेगा ? ··नहीं, उस दिन हम लोगों की रैली में परसताब पास हो गया। जमींदार लोग रैयतों को जमीन से बेदखल नहीं कर सकते। इसके लिए पाटी सघर्ख करेगी।"

"कालीबाबू ! परसताब-उरसताब से कुछ नहीं होता है।" बावनदास के होंठों पर भेद-भरी मुस्कान दौड़ जाती है।

"आप बैठिए दास जी, हमको जरा जल्दी है।"

"हाँ, आप जाइए। हम आपके डेग पर जा भी नहीं सकेंगे।"

कालीचरन चलते-चलते सोच रहा है, अब ठीक हुआ है। यदि रैयत की दरखास मंजूर हो जाती तो सभी लोग कँगरेस में चले जाते। अब संघर्ख में सभी सोशलिस्ट पार्टी में ही रहेंगे।

"क्या है ? बिस्कुट !" मंगलादेवी प्यार-भरी झिड़की देती है, "किसने कहा फिजूल पैसा खर्च करने को ? वह देखो तुम्हारा, संतरा और बेदाना पड़ा हुआ है। मैं नहीं खाती।"

"डाक्टर साहब ने कहा था··"

"डाक्टर साहब ने कहा था !" मंगला बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहती है,

---

1 दौड़नेवाले घोड़े की जाति।

"डाक्टर साहब ने कहा था कि खुद भूखे रहकर संतरा, बेदाना और बिस्कुट खरीदकर लाना ?"

कालीचरन को सैनिक जी की स्त्री की याद आती है। उल्लू ! साठ साल तक नाबालिग !"

"खा लो मंगला !"

"पहले तुम एक बिस्कुट खाओ।"

बिस्कुट मीठा, कुरकुरा और इतना सुआदवाला होता है ? इसमें दूध, चीनी और माखन रहता है, अंडा नहीं ?

बत्तीस

बैशाख और जेठ महीने में शाम को 'तडबन्ना' में जिदगी का आनद सिर्फ तीन आने लबनी बिकता है।

चने की घुघनी, मूड़ी और प्याज, और सुफेद झाग से भरी हुई लबनी ! खट-मिट्ठी, शकर-चिनियाँ और बैर-चिनियाँ ताड़ी के स्वाद अलग-अलग होते हैं। बसंती पीकर बिरले पियक्कड़ ही होश दुरुस्त रख सकते हैं। जिसको गर्मी की शिकायत है, वह पहर-रतिया पीकर देखे। कलेजा ठडा हो जाएगा, पेशाब में जरा भी जलन नहीं रहेगी। कफ प्रकृतिवालों को संझा पीनी चाहिए; रात-भर देह गर्म रहता है।

साल-भर के झगड़ों के फैसले तड़बन्ना की बैठक में ही होते हैं और मिट्टी के चुक्कड़ों की तरह दिल भी यहीं टूटते हैं। शादी-ब्याह के लिए दूल्हे-दुलहिन की जोड़ियाँ भी यहीं बैठकर मिलाई जाती है और किसी की बीवी को भगा ले जाने का प्रोग्राम भी यहीं बनता है।

जगदेवा पासमान, दुलारे, सनिच्चर और सुनरा ताड़ी पी रहे हैं, सोमा जट आज आनेवाला है। रौतहट के हाट में उसने कहा था, एतबार को तड़बन्ना में आएँगे। सोमा जट हाल ही में जेल से रिहा हुआ है। नामी डकैत है, लेकिन अब सोशलिस्ट पार्टी का मेबर बनना चाहता है। सुनरा ने कालीचरन से पूछा और कालीचरन ने जिला सिक्रेटरी साहब से पूछा। सिक्रेटरी साहब ने कहा, "साल-भर तक उनके चाल चलन को देखकर तब पार्टी का मेंबर बनाया जाएगा। उस पर नजर रखना होगा।"

नजर क्या रखना होगा, बीच-बीच में सिकरेटरी साहब को जाकर कहना

होगा—सोमा का चाल-चलन एकदम सुधर गया है। कालीचरन को वासुदेव समझा होगा। ···सोमा यदि पाटी में आ जाए तो सारे इलाके के बड़े लोग ठीक हो जाएँ। पाटी में आ जाने से थाना-पुलिस क्या करेगा ! सिकरेटरी साहब क्या दारोगा साहब से कम हैं ? देखते हो नहीं, जब भाखन देने लगते हैं तो जमाहिरलाल को भी पानी-पानी कर देते हैं। मजाल है दारोगा-निसपिट्टर की कि पाटी के खिलाफ मुँह खोले ? खेल है ! 'लाल पताका' अखबार में तुरत 'गजट छापी' हो जाएगा···'दारोगा का जुलम !'

··चलित्तर करमकार को तो पाटी से निकाल दिया है। सीमेंट में बहुत पैसा गोलमाल कर दिया। हिसाब-पत्तर कुछ भी नहीं दिया तो उसको निकालेगा नहीं ? पाटी का बंदूक-पेस्तौल भी नहीं दिया। ···लेकिन सिकरेटरी साहब कालीचरन जी से प्रायविट में बोले हैं, किसी तरह उससे बंदूक-पेस्तौल ऊपर करो। सरकार को जमा देना है। इसीलिए कालीचरन जी उससे हेल-मेल कर रहे हैं। ···वह बात एकदम गुपुत है। खबरदार, कहीं बोलना नहीं सनिचरा ! हाँ, नहीं तो जानते हो ? किरांती पाटी की बात खोलने की क्या सजा मिलती है ? · ढाएँ ! लोग पूछें तो कहना चाहिए कि··

"क्या पाटी को अब बंदूक-पेस्तौल का काम नहीं है ?"

"नहीं।" सुंदर मुस्कराता है। अर्थात् इतनी जल्दी तुम लोग सभी बातों को जान लेना चाहते हो ? अभी कुछ दिन और मेंबरी करो। जब तुम्हारा कानफारम[1] हो जाएगा तब सारी बातें जानोगे। नए मेंबरों का कान कच्चा होता है। यहाँ सुना और वहाँ उगल दिया। कानफारम होने दो ·।

"कामरेड सोमा ? आओ ! तुम्हारी ही बात हो रही थी ? आसरा में बैठे-बेठे दो लबनी ताड़ी खतम हो गई।" सुंदर हँसता है।

सुंदर आजकल हमेशा खद्दर का पंजाबी कुर्ता पहने रहता है। पंजाबी कुर्ते के गले में दो इंच की ऊँची पट्टी लगी हुई है। इसको 'सोशलिट-काट' कुर्ता कहते हैं; सोशलिट को छोड़कर और कोई नहीं पहन सकता। गाँव के मेबरों मे सिर्फ तीन मेंबर ही ऐसा कुर्ता पहनते हैं—काली, बासुदेव और सुंदर। बाकी मेंबरों ने जीवन में कभी गंजी भी नहीं पहनी है। लेकिन बिना सोशलिट-काट कुर्ता पहने कोई कैसे जानेगा कि सोशलिट है, किरांती है ! एक कुर्ते में सात रुपए खर्च होते हैं। ···बासुदेव आजकल बीड़ी नहीं पीता, मोटरमार-सिकरेट पीता है। सिक्रेटरी साहब सैनिक जी, चिनगारी जी, मास्टर साहब, सभी बड़े-बड़े लीडर सिकरेट पीते हैं। सोशलिट पाटी के मेंबर को बीड़ी नहीं, सिकरेट पीना चाहिए।

आज की बैठकी का पूरा खर्चा सोमा ही देगा। इसलिए हाथ खींचकर चुक्कड़ भरने की जरूरत नहीं। ढाले चलो। एक लबनी, दो लबनी, तीन लबनी ! चरखा सेंटर वाले कह रहे हैं, अगले साल से ताड़ी का गुड़ बनेगा। कोई ताड़ी नहीं पी

1. कन्फर्म।

सकेगा। इस साल पी लो, जितना जी चाहे।

सोमा का शरीर कालीचरन से भी ज्यादा बुलद है। पुलिस-दारोगा की मार से हड्डियाँ टूटकर गिरहा[1] गई हैं। गिरहवाली हड्डी बहुत मजबूत होती है। कालीचरन की देह मे हाथीदॉत का कडापन है और सोमा के चेहरे पर लोहे की कठोरता। कालीचरन की आँखो मे पानी है और सोमा की ऑखे बिल्ली की तरह चमकती हैं।

"कौन हरगौरी ? शिवशक्करसिह का बेटा ? तहसीलदार हुआ है ? कालीचरन जी हुकुम दे तो एक ही रात मे उसकी हड्डी-पसली एक कर दे।" सोमा मूँछ मे लगी हुई ताडी की झाग को पोछते हुए कहता है।

"कामरेड ! अब मूँछ कटाना होगा। पार्टी का मेबर होने से मूँछ नही रखना होगा।" सुदर कहता है।

"कटा लेगे, लेकिन कालीचरन जी हुकुम दे तो !"

"अच्छा अच्छा, कामरेड अभी ठहरो। सघर्ख होने वाला है। परमताब पास हो गया है। तब देखेगे तुम्हारी बहादुरी !"

"बलदेवा को गॉव से भगा नही सकते हो तुम लोग ? सुनते हैं कि मठ की कोठारिन से खूब हेल मेल हो गया है। कालीचरन जी हुकुम दे तो एक ही दिन मे उसको चन्ननपट्टी का रास्ता दिखला दे।"

"अरे, बालदेव जी तो मुर्दा हो गए, मुर्दा ! अब उनको कौन पूछता है ! उनको एक बच्चा भी अब मुँह नही लगाता हे। कॅगरेस मे भी उनकी बदनामी हो गई है। वह तो हम लोगो के बल पर ही कूदते थे। कोठारिन तो सत्तर चूहा खाई हुई है। बालदेव जी को उसके फेर मे पडने तो दो। हम लोग यही चाहते हैं। हॉ समझे ? चरखा-सेंटर पर भी अब अपना ही कब्जा समझो। मास्टरनी जी बिना कालीचरन के पूछे पानी भी नही पीती हैं। कुछ दिन मे वह भी कामरेड हो जाएँगी। एक बौनदास है, सो डेढ बित्ते का आदमी कर ही क्या सकता हे ?"

चार लबनी सझा ताडी खत्म हो रही है। सूरज डूबने के समय जो लबनी पेड से उतारी जाती है, उसकी लाली तुरत ही ऑख मे उतर आती है। नशा के माने है और भी थोडा पीने की ख्वाहिश ? और एक लबनी !

"अरे, बेचारे डाक्टर के पास पैसा कहॉ ? मुफ्त मे तो इलाज करता है। एक पैसा भी तो नही छूता है।"

"डाक्टर के पास पैसा नही ? क्या कहते हो ˆ लाचनपुर के डाक्टर ने पोख्ता मकान बना लिया है। जीवछगज के डाक्टर ने तीन सौ बीघे की पतनी खरीदी है। सिझवा गरैया का डाक्टर डकैती करता है, सरदार है डकैती का। जैसा डाक्टर है तुम्हारे गॉव का ?"

"हसलगॉव के हरखू तेली ने अलबत्त पैसा जमाया है। पैसा मेंहकता है।"

1 गाँठदार हो जाना।

"महमदिया के तालुकचंद को बंदूक का लैसन मिल गया है और लोहा का बक्सा कलकत्ते मे ले आया है।"

"अरे, कितने बंदूक और तिजोरीवालों को देखा है ! ·बल्लम-बर्छा से ही तो सारे इलाके को हम मछली की तरह भूनकर खाते रहे। यदि एक नाल भी बंदूक हाथ लग जाए तो साले भूपतसिंह की कचहरी के नेपाली पहरेदारों को भी देख लें।"

जो कभी नही गाता है, वह भी नशा होने पर गाने लगता है और सुंदर तो कीर्तनियाँ हैं, सुराजी कीर्तन भी गाता है और किरांती-गीत भी। नशा होने पर किरांती-गीत खूब जमता है !

अरे जिंदगी है किरांती से, किरांती मे बिताए जा।
दुनिया के पूँजीवाद को दुनियाँ से मिटाए जा।

सनिचरा लबनी को औंधा कर तबला बजाता है, और मुँह से बोल बोलता है :

चकै के चकधुम मकै के लावा···
दुनियाँ के गरीबों का पैसा जिसने चूस लिया,
अरे हाँ, पैसा जिसने चूस लिया,
हाँ जी, पैसा जिसने चूस लिया,
उसकी हड्डी-हड्डी से पैसा फिर चुकाए जा !
हँस के गोली दागे जा !
हँस के गोली खाए जा !

"वाह-वाह ! क्या बात है ! इन्किलाब है, जिदाबाद है। जरा खडा होकर बतौना बताके[1] कमर लचका के सुंदर भाई !"

सुंदर खड़ा होकर नाचने लगता है—"जिंदगी है किराती से, किरांती मे ।"

चकै के चकधुम मकै के लावा···

कालीचरन ने आज शाम को बैठक बुलाई थी। ऊपर से सबसे बडे लीडर आ रहे हैं पुरैनियाँ। थैली के लिए चदा वसूलना है। सिक्रेटरी साहब कह रहे थे सबसे बड़े लीडर जी पुरैनियाँ आने के लिए एकदम तैयार नहीं हो रहे थे। बहुत कहने-सुनने पर, सारे जिले से दस हजार रुपए की थैली पर राजी हुए है। कालीचरन को तीन सौ रुपए वसूलकर देना है। ···इस बार की रसीद-बही पर सबसे बडे लीडर की छापी है।

"लेकिन तुम लोग कहाँ गए थे ? ओ ! आसमान-बाग। बडी देर हो गई।

---

1 दिखलाकर।

ऐसा करने से पार्टी का काम कैसे चलेगा ? बोलो, कौन कितना रुपैया वसूल करेगा ? तीस सौ रुपैया दस दिन मे ही वसूल कर देना है।"

"बस तीन सौ ? कोई बात नही, हो जाएगा।"

"दस दिन क्या, पॉच ही दिन मे हो जाएगा।"

"तीन सौ रुपए की क्या बात है ?"

"इनकिलाब, जिदाबात है !"

तैंतीस

अमगल !

"गॉव के मगल का अब कोई उमेद नही।"

हरगौरी तहसीलदार दुर्गा के वाहन की तरह गुर्राता है–"साले सब ! चुपचाप दफा 40 का दर्खास देकर समझते थे कि जमीन नकदी हो गई। अब समझो। बौना और बलदेवा से जमीन लो। सब सालो से जमीन छुडा लेने के लिए कहा है मैनेजर साहब ने। लो जमीन ! राम नाम का लूट है ! अरे, कॉगरेसी राज है तो क्या जमीदारो को घोलकर पी जाएगा ?"

सुमरितदास बेतार की जीभ थकती नही। सुबह से ही बक-बक करता जा रहा है। ततमाटोली मे, पासवानटोली मे और कोयरीटोले मे घूम घूमकर वह लोगो को सुना रहा है–"मैनेजरसाहब ने परवाना मे क्या लिखा है मालूम ? नया तहसीलदार तो एकदम घबडा गया था। मैंने कितना समझाया–तहसीलदार, आप एकदम चुपचाप रहिए। जिन लागो को दरखास देना है, देने दीजिए। जिस दिन मुकदमे की तारीख होगी, उससे एक दिन पहले हम आपको एक नोक्स बता देगे। वही हुआ। जमीदार वकील तो सुनकर उछलने लगा। चाहे जो भी कहो, तहसीलदार बिस्नाथपरसाद ने कभी कोई नोक्स हमसे छिपाकर नही रखा। मैनेजर साहब ने क्या लिखा है, मालूम है ? सुमरितदास को एक बार सरकिल कचहरी मे भेज दो। सुस्लिग-मुस्लिंग क्या करेगा ?"

"सुमरितदास ! बुढापे मे यदि इज्जत बचानी है तो जरा होस-हवास दुरुस रखकर बोला करो। समझे ?" कालीचरन की आँखे लाल-लाल हैं। सुबह से ही वह सुमरितदास को खोज रहा है। सोसलिस्ट पाटी के खिलाफ बूढा कल से ही अटर-पटर[1] परोपगण्डा कर रहा है।

1 अलूल-जलूल।

"समझे ? हाँ। ...पीछे यह मत कहना कि सोसलिस्ट पाटी के लौण्डों को बड़े-छोटे का विचार नहीं।"

"हम क्या बोले हैं ? पूछो, लोगों से पूछो ! बोलो जी गुलचरन ! सुस्लिंग पाटी... ।"

"सुस्लिंग मत कहिए, सोसलिस्ट कहिए। ...बात तो सही मुँह से निकलती ही नहीं है और मुन्सियाती बघारते हैं। ...जमींदार के तहसीलदार से और अपने मैंनेजर से भी जाकर कह दो, रैयतों से जमीन छुड़ाना हँसी-ठट्ठा नहीं। पाटी के एजकूटी में परसताब पास हो गया हैं संघर्ख होगा संघर्ख ! समझे ?"

कालीचरन गर्दन ऐंठता हुआ चला गया। करैत साँप को गुस्से में ऐंठते देखा है न, ठीक उसी तरह ! सुमरितदास को कँपकँपी लग जाती है। आस-पास बैठे हुए लोगों की भी धुकधुकी तेज हो जाती है। अभी तो ऐसा लगता था कि जुलुम हो जाएगा। ...अलबत्त देह बनाया है कलिया ...कालीचरन् ने। देखकर डर लगता है। सुस्लि ...सुस्लि... सोसलिस्ट पाटी में जाकर तो और भी तेजी से जल-जल कर रहा है। संघर्ख क्या होगा ?...

डा डिग्गा, डा डिग्गा !

सन्थालटोली में दो दिनों से दिन-रात मादल बजता रहता है। डा डिग्गा, डा डिग्गा ! औरतें गाती हैं। नाचती हैं–झुमुर-झुमुर ! ...दरखास्त नामंजूर हो गई ! जमींदार जमीन छीन लेगा। कोठी के जंगल में, जामुन और गूलर में बहुत फल लगे हैं इस बार। जंगली सूअर के बच्चे भी किलबिल कर रहे हैं। हल के फाल को तोड़कर तीर बनाओ। लोहा महँगा है। रे ! हाय रे हाय ! डा डिग्गा, डा डिग्गा...!

कालीचरन ने कहा है–संघर्ख करेंगे। संघर्ख क्या ? परसताब क्या ?

रिंग-रिंग-ता-धिन-ता !

डा डिग्गा, डा डिग्गा !

...खेत में पाट के लाल पौधों को देखकर जी ललच रहा है। धान की हरी-हरी सूई खेत में निकल आई है। माटी का मोह नहीं टूटता। बधना पर्व[1] की रात में तूने जो जूड़े में फल लगाया था, उसे नहीं भूला हूँ। धरती का मोह भी नहीं टूट रहा। प्यारी, हमारे दादा, परदादा पुरैनियाँ के जेल में मर-खप गए। मकई के बाल की तरह उनके बाल भूरे हो गए होंगे। हमारे बच्चों के दाँत दूधिया मकई के दानों की तरह चमकेंगे। उनसे कहना, धरती माता के प्यार की जंजीर में हम बँध गए। रे ! हाय रे हाय ! रिंग-रिंग-ता-धिन-ता ! डा डिग्गा, डा डिग्गा !...

"यदि जमीन पर कोई आवे तो गर्दन काट लो !"

1. संथालों का एक प्रसिद्ध पर्व।

तहसीलदार हरगौरी सिंह ने रैयतों के साथ जमीन बंदोबस्ती का ऐलान कर दिया है ···बस, एक सौ रुपए बीघा सलामी देकर कोई भी रैयत जमीन की बंदोबस्ती के लिए दर्खास्त दे सकता है। ···अरे, तुम लोग बेकूफ हो। ये जमीन एक साल पहले ही नीलाम होकर खास हो गई हैं। पुराने तहसीलदार ने ही सारी कार्रवाई की थी। नीलाम होकर खास हुई जमीन पर दफा 40 की दर्खास्त करने से नकदी कैसे होगी ? ···हाँ, नए बंदोस्त लेनेवालों को जमा बाँध देंगे। यह तो हमारे हाथ की बात है। इसके लिए कचहरी को दौड़-धूप करने की क्या जरूरत है ? ··· अरे सूखानूदास, मुकदमा में कितना खर्च हुआ तुम लोगों का, जरा इन लोगों को बता दो। · हाँ, कँगरेसी और सोसलिस्ट पाटीवालों की खुराकी भी जोड़ना। ··· सुना ? हरेक तारीख में चंदा वसूलकर पैरवीकार नेताजी लोगों को देना पड़ा था—दस रुपए नकद; सिकरेट और पान की बात तो छोड़ ही दीजिए। यही पेशा है भाई, इन लागों का। ···हाँ, जिसकी जमीन नीलाम हो गई है, वह यदि जमीन पर आवे तो उसकी गर्दन उड़ा दो। राज से मदद मिलेगी।

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट !

गाय-बैल, बाछा-बाछी और भैंस के पाड़ा की बिक्री धड़ाधड़ हो रही है। दूने सूद पर भी रुपया कर्ज लेकर जमीन मिल जाए तो फ़ायदा ही है। पाट का भाव पंद्रह रुपया है; ऊपर पचास भी जा सकता है। सौ भी हो सकता है। धान सोने के भाव बिक रहा है। जमीन ! जिसके पास जमीन नहीं, वह आदमी नहीं, जानवर है। जानवर घास खाता है, लेकिन आदमी तो घास खाकर नहीं रह सकता ! अरे ! छोड़ो जी कँगरेसी और सुशलिट पाटी की बात को। ···दरखास नामंजूर हो गई। जमीन बंदोबस्ती ·

गाँव के मंगल की अब कोई उम्मीद नहीं।

हर टोले के लोग आपस में ही लड़ेंगे क्या ? कोयरीटोले के भजू महतो की जमीन उसी का भगिना सरूप महतो बंदोबस्ती ले रहा है। सोबरन की जमीन पर उसका चचा रामेसर नजर लगाए बैठा है। सोबरन की जमीन सोना उगलती है। यादवटोली के सभी रैयतों की नीलाम हुई जमीन खेलावनसिंह यादव ले रहे हैं। संथालों की जमीन राजपूत टोल के लोग ले रहे हैं। ···सुमरितदास कहते हैं, यह बात गुपुत है। किसी से कहना मत कि संथालों की जमीन खुद तहसीलदार साहब ले रहे हैं। लेकिन, अपने नाम से तो नहीं ले सकते। इसलिए दूसरों के नाम से लिया है।

गाँव के मंगल की अब कोई उम्मीद नहीं। तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद जी बालदेव और बावनदास को पंचायत बुलाने को कहते हैं। ···"पंचायत तुम्हीं लोग बुलाओ। मेरे बुलाने से ठीक नहीं होगा।"

कालीचरन की पाटी के सबसे बड़े लीडर पुरैनियाँ आ रहे हैं। कामरेडों ने पाँच ही दिनों में तीन सौ रुपए वसूल किए हैं। अकेले सोमा ने दो सौ पचास रुपए दिए हैं। सबसे बड़े लीडर से कहना होगा। गाँव में इस तरह फूट रहने

से तो संघर्ख नहीं होगा। फिर एक बार सैनिक जी और चिनगारी जी को लाना होगा। बहुत दिनों से सभा नहीं हुई है। खेत में कोड़-कमान नहीं करने से जिस तरह जंगल-झाड़ हो जाता है, उसी तरह इलाके में सभा मीटिंग नहीं करने से इलाका भी खराब हो जाता है। सिक्रेटरी साहब को भी इस बार लाना होगा। इस बार लौडपीसर भी लाना होगा।

चरखा-सेंटर की मास्टरनी जी और मास्टर जी लोगों में झगड़ा हो गया है।

करघा-मास्टर टुनटुन जी को मंगलादेवी का सोशलिस्ट आफिस में रहना बड़ा बुरा लगता है। जब तक बीमार थीं, वहाँ थीं, तो थीं। अब अच्छी हो गईं तो वहाँ रहने की क्या आवश्यकता! और मंगलादेवी को पटना से ही जानते हैं टुनटुनजी। 'गाँव तरक्की सेंटर' में जब ट्रेनिंग लेती थीं तभी से उड़ती थीं। व्यवस्थापिका जी इनके मिलने वालों से परेशान रहती थीं। रोज नए-नए लोग! बहुत बार मंगलादेवी को चेतावनी भी दी गई—लेकिन इनके मिलनेवालों में कालेज के विद्यार्थी, एम. एल. ए., साहित्य-गोष्ठी के मंत्री जी, चरखा-संघ के कार्यकर्ता तथा कई हिंदी दैनिकों के सहायक संपादक भी थे। व्यवस्थापिका जी हार मानकर चुप हो गईं। मंगलादेवी की स्वतंत्रता पर आघात करके यह एक दर्जन से ज्यादा व्यक्तियों का कोप-भाजन नहीं बनना चाहती थी। इसीलिए व्यवस्थापिकाजी ने मंगलादेवी को इस पिछड़े हुए गाँव में भेजा था। लेकिन यहाँ भी ?

मंगलादेवी बात करने में मर्दों के भी कान काटती हैं; पाजामा और कुर्ता पहनती हैं, बाहर निकलते समय खद्दर का दुपट्टा भी डाल लेती हैं। कद नाटा, रंग साँवला और शरीर गठा हुआ है। आँखें बड़ी अच्छी, खास तिरहुत की आँखें! करघा-मास्टर को वह ताँत-मास्टर कहती हैं और चरखा-मास्टर को धुनिया मास्टर। जोलाहा-धुनिया मंगलादेवी से क्या बात करेंगे ? जब बीमार पड़ीं तो झाँकी मारकर भी देखने के लिए नहीं आते थे और आज नैतिकता पर प्रवचन दे रहे हैं! मंगलादेवी इन लोगों को खूब पहचानती हैं। व्यवस्थापिका जी को लिखेंगे तो लिखें। क्या करेंगी व्यवस्थापिका जी ? ऐसी धमकियों से मगलादेवी नहीं डरतीं। टुनटुन जी जो चाहते हैं, सो वह जानती हैं। पटना से आते समय समस्तीपुर में उसे लेकर उतर गए। बोले, गाड़ी बदलनी होगी। बाद मे मालूम हुआ कि वही गाड़ी सीधे कटिहार जाती है। दूसरी गाड़ी फिर सुबह आठ बजे। रात को बारह बजे धर्मशाला में ले गए। टुनटुन जी का परिचय और कहना नहीं होगा !

बालदेव जी को खेलावनसिंह यादव ने साफ जवाब दे दिया है। सकलदीप का गौना होनेवाला है। नई दुलहिन ससुराल में बसने के लिए आ रही है। बाहरी आदमी का परिवार में रहना अच्छा नहीं। चंपापुर के आसिनबाबू की बेटी है। जरा भी इधर-उधर होने से बाप को चिट्ठी लिख देगी। बड़े आदमी की बेटी है...!

बालदेव जी ने झोली-झंडा खेलावन के यहाँ से हटा लिया है। बालदेव की मौसी गाँव में घूम-घूमकर शिकायत कर रही है। लेकिन बालदेव जी साधु आदमी हैं; मान-अपमान से परे हैं। वे चुप हैं।

लछमी उन्हें कंठी लेने के लिए जिद कर रही है। पुपड़ी मठ के महंत रामसरूप गुसाईं आए हुए हैं। बालदेव जी कण्ठी ले लें तो मठ पर रहने में कोई असुविधा नहीं हो।

बावनदास का मन बड़ा अविश्वासी हो गया है। किसी पर विश्वास करने को जी नहीं करता है। गाँधी जी को छोड़कर अब किसी पर विश्वास नहीं होता। वह गाँधी जी को एक खत लिखवाना चाहता है। गंगुली जी जरूर लिख देंगे। बराबर लिख देते हैं ! उसके मन में बहुत-सी शंकाएँ उठ रही हैं।

चौंतीस

फुलिया पुरैनियाँ टीसन से आई है।

एकदम बदल गई है फुलिया। साड़ी पहनने का ढंग, बोलने-बतियाने का ढंग, सबकुछ बदल गया है। तहसीलदार साहब की बेटी कमली अँगिया के नीचे जैसी छोटी चोली पहनती है, वैसी वह भी पहनती है। कान में पीतर के फूल हैं। फूल नहीं, फुलिया कहती है—कनपासा। आँचल में चाबी का गुच्छा बाँधती है, पैर में शीशी का रंग लगाती है। ...हाँ, खलासी जी बहुत पैसा कमाते हैं शायद। ... अरे ! खलासी के मुँह पर झाड़ू मारो ! वह क्या खाकर इतना सौख-मौज करावेगा ? क्या पहनावेगा ? फुलिया ने खलासी को छोड़ दिया है। खलासी को खोक्सीबाग की एक पतुरिया से मुहब्बत था. रोज ताड़ी पीकर वहीं पड़ा रहता था। तलब मिलने के दिन वह पतुरिया खलासी का पीछा नहीं छोड़ती थी। तलब का एक पैसा इधर-उधर हुआ कि पैर की चट्टी खोलकर हाथ में ले लेती थी। आखिर फुलिया कितना बर्दास करती। टीसन के पैटमान जी नहीं रहते तो फुलिया की इज्जत भी नहीं बचती। फुलिया अब पैटमान जी के यहाँ रहती है। खलासी एक दिन पैटमान से लड़ाई करने आया। टीसनमास्टर बाबू ने कहा कि यदि खलासी टीसन के हाता में आवे तो पकड़कर पीटो। उसी दिन खलासी जो दुम दबाकर भागा तो फिर खाँसी भी नहीं करने आया कभी। पैटमानजी जात के छत्री हैं—तंत्रिमा छत्री नहीं, असल बुँदेला छत्री : पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गए हैं; पत्थर का नकली दाँत लगाते हैं। कहने को नकली दाँत हैं, मगर असली दाँत से भी बढ़कर हैं। चना भुट्टा और अमरूद सबकुछ चबाकर खाते हैं पैटमान जी। पचीस साल पहले हासाम[1] मुलुक में चाह पीते और पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गए हैं, उमेर

---

1 आसाम।

तो अभी कुछ भी नहीं है। दस बरस से 'बेवा' थे, मन के लायक स्त्री मिली ही नहीं। पैटमान जी ने महँगूदास के लिए एक पुरानी नीली कमीज भेज दी है। कमीज पहनने पर मँहगू को पहचानने में गलती हो जाती है। ठीक रेलवे का आदमी! ···बुढ़िया के लिए नई साड़ी भेज दी है। एक बित्ता काली किनारी है। ···इस बार के कोटा में असली 'संतीपुरी साड़ी' मिलेगी तो फुलिया को भेज देगा। फुलिया कहती है, इस बार माँ को भी साथ ले जाएगी।

फुलिया का भाग! रमपियरिया की माँ कहती है—"रमिया भी अब बिहाने के जोग हो गई। बिना बाप की बेटी है! जब से तुम ससुराल हो गई हो, रोज एक बार तुम्हारा जिकर करती है रमिया—'फुलिया दीदी कब आवेगी? इस बार फुलिया दीदी आवेगी तो साथ में मैं भी जाऊँगी।' यदि उधर कोई बर नजर में आए तो रमिया को भी अपने साथ ले जाओ फूलो बेटी! कोयरीटोले के छोकड़े दिन-दिन बिगड़ते जा रहे हैं।···"

सहदेव मिसर पर तंत्रिमाटोली का कुत्ता भी भूँकता है! बहुत दिनों के बाद वह तंत्रिमाटोली में आया है—फुलिया के बुलाने पर। ···दस दिन रहेगी, फिर चली जाएगी। फुलिया अब जात-समाज से नहीं डरती। वह तंत्रिमा छत्री नहीं, वह असल बुंदेला छत्री की स्त्री है। आँगन में अपने से पकाकर खाती है। ···माँ का छुआ भी नहीं खाती!

वह तो मेहमान होकर आई है। उसके जी में जो आवे, वह करेगी। कोई कुछ नहीं बोल सकता। ···वह सहदेव मिसर को बैठने के लिए चटाई देती है। एक काँच की छोटी-सी थरिया में सुपारी, सौंफ और दालचीनी के टुकड़े बढ़ा देती है। ···तो फुलिया भूली नहीं है उसे? वाह! सहर क़ा पानी चढ़ने पर बाहर तो एकदम वदल गया है, पर भीतर जैसा-का-तैसा। काजलवाली आँखें और भी बड़ी मालूम होती हैं। अँगिया और नक्सा कोर की सफेद साड़ी। सहदेव मिसर डरते-डरते कहता है—

"फुलिया!"

"क्या?" फुलिया मुस्कराती है।

सहदेव मिसर का चेहरा एकदम लाल हो रहा है। कान लाल हो गए हैं। नाक के पासवाला सिरा धकधक कर रहा है—"फुलिया, जब से तुम गई मैंने कभी इस टोले में पैर नहीं दिया।"

"रहने दो! गहलोतटोले में नहीं जाते थे? ···पनबतिया के यहाँ कौन जाता था? झूठ मत बोलो।" फुलिया हँसती है।

"नहीं फूलो!"

ढिबरी की रोशनी में सहदेव मिसर फुलिया की आँखों की नई भाषा को पढ़ता है। ···हवा के झोंके से ढिबरी बुझ जाती है। फुलिया बालों में महकौआ[1] तेल लगाती है। अँगिया के नीचेवाली छोटी चोली में रब्बड़[2] लगा रहता है। शायद। ···फुलिया

1. सुगंधित। 2. रबर

की देह से अब घास की गंध नहीं निकलती है। सौंफ, दालचीनी खाने से मुँह गमकता है। ...शहर की बात निराली है। शहर की हवा लगते ही आदमी बदल जाता है। तहसीलदार की बेटी तो कभी शहर गई भी नहीं। ...जाति की बंदिश और पंचायत के फैसले को तो सबसे पहले पंच लोगों ने ही तोड़ा है। ...तंत्रिमाटोली का छड़ीदार है नोखे और उचितदास ; जिसे चाल से बेचाल देखेगा, छड़ी से पीठ की चमड़ी खींच लेगा। नोखे की स्त्री रामलगन सिंह के बेटे से फँसी हुई है और उचित दास की बेटी कोयरीटोले के सरन महतो से। पंचायत का फैसला ज्यादा-से-ज्यादा दस दिनों तक लागू रह सकता है। पुश्त-पुश्तैनी से जो रीति-रेवाज गाँव में चला आ रहा है, उसको एक बार ही बदल देना आसान नहीं। जिनके पास जगह-जमीन है, पास में पैसा है, वह भी तो अपने यहाँ का चाल-चलन नहीं सुधार सकते। ...बाबूटोली के किस घर की बात छिपी हुई है। ...पंच लोग पंचायत में बैठकर फैसला कर सकते हैं, उसमें कुछ लगता तो नहीं। लेकिन पंचायत के फैसले से चूल्हा तो नहीं सुलग सकता ? पंचों को क्या मालूम कि एक मन धान में कितना चावल होता है ! सास्तर में कहा है, 'जोरू जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का।' और देह के जोर से आजकल सब कुछ नहीं होता। जिसके पास पैसा है वही बोतल मिसर[1] पहलवान है। वही सबसे बड़ा जोरावर है।

तहसीलदार साहब की बेटी शाम से ही, आधे पहर रात तक, डागडरबाबू के घर में बैठी रहती है; चाँदनी रात में कोठी के बगीचे में डागडर के हाथ-में-हाथ डालकर घूमती है। तहसीलदार साहब को कोई कहने की हिम्मत कर सकता है कि उनकी बेटी का चाल-चलन बिगड़ गया है ?... तहसीलदार हरगौरीसिंह अपनी खास मौसेरी बहन से फँसा हुआ है। बालदेव जी कोठारिन से लटपटा गए हैं। कालीचरन ने चरखा स्कूल की मास्टरनी जी को अपने घर में रख लिया है। उन लोगो कोई कुछ कहे तो ?... जितना कानून और पंचायत है सब गरीबों के लिए ही ? हूँ !

जमीन के लिए गाँव में दलबंदी हुई। जिन लोगों की जमीन नीलाम हुई है, दर्खास्तें खारिज हुई हैं, वे एक तरफ हैं। जिन्होंने नई बंदोबस्ती ली है अथवा जमींदार से माफी माँग ली है, सुपुर्दी लिखकर दे दी है या जो जमीन बंदोबस्त लेना चाहते हैं, वे सभी दूसरी तरफ हैं। गरीबों और मजदूरों के टोलों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। खेलावन के हलवाहों को कालीचरन ने हल जोतने से मना कर दिया हे। तहसीलदार हरगौरीसिंह का नाई, धोबी ओर मोची बंद करने के लिए कालीचरन घर-घर घूमकर भाखन देता है। गाँव के सारे पुराने बाँध टूट गए हैं, मानों बाढ़ का नया पानी आया हो।...

गरीबों और मजदूरों की आँखें कालीचरन ने खोल दी हैं। सैकड़ों बीघे जमीनवाले किसानों के पास पैसे हैं, पैसे से गरीबों को खरीदकर गरीबों के गले पर गरीबों के जरिए ही छुरी चलाते हैं।... होशियार ! जिन लोगों ने नई बंदोबस्ती ली है,

1. मिथिला का एक प्रसिद्ध पहलवान।

वे गरीबों की रोटी मारनेवाले हैं··· !

कालीचरन ने चमारटोली में भात खा लिया ?

जात क्या है ! जात तो दो ही हैं, एक गरीब और दूसरी अमीर।··· खेलावन को देखा, यादवों की ही जमीन हड़प रहा है।··· देख लो आँख खोलकर, गाँव में सिरिफ दो जात हैं।

अमीर-गरीब !

तहसीलदार हरगौरीसिंह काली टोपीवाले नौजवानों से कहते हैं, "इस बार मोर्चे पर जाना पड़ेगा। हिंदू राज कायम करने के लिए गाँव में ही लोहा लेना पड़ेगा··· ।"

संयोजक जी आजकल महीने में दो बार घर मनिआर्डर भेजते हैं। संयोजक जो कहेंगे उसे काली टोपीवाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं। आग और पानी में कूद सकते हैं; इसी को कहते हैं अनुशासन !

बावनदास जिला काँग्रेस के नेताओं को खबर देने गया है–"गाँव में जुलुम हो रहा है।"

पैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के सामने विकट समस्या उपस्थिति है। नई बंदोबस्तीवाले किसान रोज उनके यहाँ जाते हैं। मामला-मुकदमा उठने पर विश्वनाथ प्रसाद की गवाही की जरूरत होगी। बेजमीन लोग अपनी पार्टीबंदी कर रहे है; जमीनवालों को भी भेदभाव, लड़ाई-झगड़ों को भूलकर एक हो जाना चाहिए।·· तहसीलदार हरगौरीसिंह दिन-रात विश्वनाथबाबू के घर पर ही रहते हैं !

"काका ! इस बार इज्जत बचा लीजिए ! क्या आप यही चाहते हैं कि नाई, धोबी और चमार के सामने हम हाथ जोड़कर गिड़गिड़ावें ?··· कल से ही रामकिरपाल काका की गुहाल में गाय मरी पड़ी है। चमार लोगों ने उठाने से इनकार कर दिया है। जीवेसरा चमार को लीडर आपने ही बनाया है·· राजपूतटोले के लोगों को देखिए, दाढ़ी कितनी बड़ी-बड़ी हो गई है। नाइयों ने काम करना बंद कर दिया है। आपके हाथ में सबों की चुटिया है। आप एक बार कह दें तो सबों की नानी मर जाए·· "

कालीचरन आकर कहता है, "बिसनाथ मामा, आप काँगरेस के लीडर हैं। इसी बार देखना है कि काँगरेस गरीबों की पाटी है या अमीरों की।·· आज तक

मैंने आपको देवता की तरह माना है। लेकिन गरीबों के खिलाफ कदम बढ़ाइएगा तो हम भी मजबूर होकर··· ।"

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद क्या करें, क्या नहीं करें, कुछ समझ नहीं पा रहे हैं।

बावनदास पुरैनियाँ से लौट रहा है।

वह गया था 'जुलुम हो रहा है' सुनाने। उसने पुरैनियाँ में देखा, जुलुम हो रहा है।

कचहरी में जिले-भर के किसान पेट बाँधकर पड़े हुए हैं। दफा 40 की दर्खास्त नामंजूर हो गई हैं, 'लोअर कोट' से। अपील करनी है।··· अपीलो ? खोलो पैसा, देखो तमाशा। क्या कहते हो ? पैसा नहीं है ! तो हो चुकी अपील। पास में नगदनारायण हो तो नगदी कराने आओ।·

कानून और कचहरी कंपौड में पलनेवाले कीट-पतंगे भी पैसा माँगते हैं।

जिला काँग्रेस आफिस में जुलुम हो रहा है। जिला काँग्रेस के सभापति का चुनाव होनेवाला है। चार उम्मीदवार हैं, दो असल और दो कमअसल[1]। राजपूत भूमिहार में मुकाबिला है। जिले-भर के सेठों और जमींदारों की मोटरलारियाँ दौड़ रही हैं। एक-दूसरे के गड़े मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं। कटिहार कॉटन मिलवाले सेठजी भूमिहार पार्टी में हैं और फारबिसगंज जूट मिलवाले राजपूतों की ओर।··· पैसे का तमाशा कोई यहाँ आकर देखे ।

बावनदास सोचता है, अब लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी टोपी पर लिखवा लें—भूमिहार, राजपूत, कायस्थ. यादव, हरिजन !··· कौन काजकर्ता किस पार्टी का है, समझ में नहीं आता।

"जुलुम हो रहा है ?"

"जी हाँ जुलुम हो रहा है।"

"देखिए बावनदास जी, बात यह है कि 95 सैकडे लोगों ने तो गलत और झूठा दावा किया होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। सही और वाजिब हकवाले बाकी रैयत भी इन्हीं झूठे दावे करनेवालों के कारण बेमौत मर गए। इसमें कानून का क्या दोष है? लोगों का नैतिक पतन हो गया है। देखिए, इस बार जिला कमिटी में, इस संबंध में एक प्रस्ताव पास होनेवाला है।"

"बेदखल किसानों से क्या कहेंगे ?"

"क्या कहिएगा ? कहिए कि जमीदारी प्रथा खत्म हो रही है। आज बिहार मंत्रिमंडल ने ऐलान कर दिया है—जमीदारी प्रथा को खत्म करने के लिए बिहार सरकार कटिबद्ध है।"

1. डम्मी कैंडिडेट।

बावनदास किसानों से क्या कहेगा ?

जमींदारी प्रथा खत्म हो जाएगी ? तब ये काँग्रेसी जमींदार लोग क्या करेंगे ? सब मिल खोलेंगे शायद। इसीलिए प्रायः हरेक छोटे-बड़े लीडर के साथ एक मारवाड़ी घूमता है। बावनदास को याद आती है पाँच महीने पहले की बात ! पुरैनियाँ टीसन में तीलझाड़ी के शंकरबाबू ने अपने साथ के दस काजकर्ताओं को पूरी-मिठाई का जलपान कराया, और पैसा दिया तीलझाड़ी हाट के मारवाड़ी चोखमल जुहारचंद के बेटे ने।··· "हाँ, जी खाओ जी ! तुम्हीं लोग तो देश के असल सेवक हो। जेहल में खिचड़ी खाते-खाते जिंदगी बिता दी। सारे इलाके के काजकर्ता को खिलाया और एक-एक सेर मिठाई भी खरीद दी। चोखमल जुहारचंद का बेटा आजकल अररिया सबडिविजन काँग्रेस का खजांची है। साठ रुपए जोड़ी खादी की धोती पहनता है। चरखासंघ के बाबू कितना खातिर करते हैं !

"जुलुम हो गया।"

"क्या हुआ ?"

"जमीदारी परथा खत्तम।"

"जुलुम बात !"

यहाँ के लोग सुख-संवाद सुनकर भी कहते हैं—जुलुम बात ! जुलुम हँसी, जुलुम खुशी ! बँगला के 'भीषण सुंदर' की तरह।

"जुलुम बात !"

"क्या है ?"

"बावनदास ने जमींदारी परथा खत्तम कर दिया।" कामरेड बासुदेव दौड़ता हुआ आकर कालीचरन को खबर देता है।

"बावनदास ने ?"

"नहीं। बावनदास खबर लेकर आया है। काँग्रेस के मंत्री जी ने जमींदारी का नास कर दिया है।"

"जब तक 'लाल पताका' अखबार मे यह खबर छापी नहीं हो, इस पर बिसवास मत करो कामरेड। यह सब काँगरेसी झाईं है, खैर, मैं कल ही सिकरेटरी साहेब से पूछ आता हूँ। तुम लोगों ने मेंबरी का पैसा जमा नहीं किया आफिस में। सब कामरेड को खबर दे दो। इस बार आखिरी तारीख है, इसके बाद 'लाल पताका' में नाम निकल जाएगा।"

"सनिचरा ने तो मेंबरी के पैसे से सोसलिस्ट-काट कुर्त्ता बना लिया है। कहता है, सन-पटुआ होने पर पैसा जमा कर देंगे।"

"जुलुम बात है। मेंबरी के पैसे से कुर्त्ता ? नहीं, उससे कहो, पैसा जमा करना होगा।"

तहसीदार हरगौरी और तहसीदार विश्वनाथप्रसाद अब एक पान को दो टुक करके

खाते हैं। सच ? सच नहीं तो क्या ? बेतार सुमरितदास सबों से कहता फिरता है··· "कलम और कानून की बात जहाँ आएगी, वहाँ लाठी-भाला चलानेवाले क्या करेंगे ? तहसीलदार बिस्नाथपरसाद पुराने तहसीलदार हैं। राज पारबंगा के नीमक-पानी से ही सब कुछ हुआ है। कायस्थ नमकहरामी नहीं कर सकता कभी। ··· कँगरेसी हुए हैं तो क्या अपने पैसे को भूल जाएँगे ?"

संथालटोली में मादल बज रहा है–

सोनो रो रूप, रूपे रो रूप
सोनो रो रूप लेका गातेञ मेलाय
गातेञ दिसाय रे सोना मुन्दोम
गातेञ उईहय जीवोदो लोकतिंय।

डा डिग्गा, डा डिग्गा ! रि-रि-ता-धिन-ता !
सोने और चाँदी के बीच मेरे प्रियतम का रूप सोने की तरह है। सोने की अँगूठी को देखकर अपने प्रियतम की याद आती है।

संथाल परगना के आदिवासी संथालों को सोने की झलक लगी है या नहीं, कौन जाने ! लेकिन यहाँ के संथाल, सोने और चाँदी में क्या फर्क है, जानते हैं।

··· जमींदारी प्रथा खतम हो गई। अब जमींदार जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। हमने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया। जो जोतेगा, जमीन उसकी है। जो जितना जोत सको, जिसकी जमीन मिले जोतो, बोओ, काटो। अब बाँटने का भी झंझट नहीं।··· धरती माता का प्यार झूठा नहीं। फिर खेतों में जिंदगी झूमेगी। आसाढ़ के बादल बजा रहे हैं मादल, बिजली नाच रही है। तुम भी नाचो।··· नाचो रे ! मादल बजाओ जोर-जोर से ! पँचाय[1] का नशा आज नहीं उतरेगा; जब तक पूर्णिमा का चाँद डूब नहीं जाए, घने बादलों में नाचना बंद नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कराहट, बाँसुरी-सी मीठी बोली तीर की तरह दिल पर घाव करती है।··· मेरे कलेजे पर फूलों से भरा हुआ सिर रख दो।

डा डिग्गा, रिं-रिं ता धिन !··

1. संथालों के घर में बनी हुई शराब।

छत्तीस

डाक्टर पर यहाँ की मिट्टी का मोह सवार हो गया। उसे लगता है, मानो वह युग-युग से इस धरती को पहचानता है। यह अपनी मिट्टी है। नदी तालाब, पेड़-पौधे, जंगल-मैदान, जीवन-जानवर, कीड़े-मकोड़े, सभी में वह एक विशेषता देखता है। बनारस और पटना में भी गुलमुहर की डालियाँ लाल फूलों से लद जाती थीं। नेपाल की तराई में पहाड़ियों पर पलास और अमलतास को भी गले मिलकर फूलते देखा है, लेकिन इन फूलों पर रंगों ने उस पर पहली बार जादू डाला है ।

गोल्डमोहर–गुलमुहर–कृष्णचूड़ा !··· गुलमुहर का कृष्णचूड़ा नाम यहाँ कितना मौजूँ लगता है ! काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुंदर लगते होंगे !

आम से लदे हुए पेड़ों को देखने के पहले उसकी आँखें इंसान के उन टिकोलो पर पड़ती हैं, जिन्हें आमों की गुठलियों के सूखे गूदे की रोटी पर जिंदा रहना है और ऐसे इंसान ? भूखे, अतृप्त इंसानों की आत्मा कभी भ्रष्ट नहीं हो या कभी विद्रोह नहीं करे, ऐसी आशा करनी ही बेवकूफी है। · डाक्टर यहाँ की गरीबी और बेबसी को देखकर आश्चर्यित होता है। वह संतोष कितना महान है जिसके सहारे यह वर्ग जी रहा है ? आखिर वह कौन-सा कठोर विधान है, जिसने हजारों-हजार क्षुधितों को अनुशासन में बाँध रखा है ?

कफ से जकड़े हुए दोनों फेफडे, ओढ़ने को वस्त्र नहीं, सोने को चटाई नहीं, पुआल भी नहीं ! भीगी हुई धरती पर लेटा न्यूमोनिया का रोगी मरता नही है, जी जाता है ! कैसे ?

· यहाँ विटामिनो की किस्में, उनके अलग-अलग गुण और आवश्यकता पर लंबी और चौड़ी फहरिस्त बनाकर बँटवानेवालो की बुद्धि पर तरस खाने से क्या फायदा ! मच्छरो की तस्वीरें, इससे बचने के उपायों को पोस्टरों पर चित्रित करके अथवा मैजिक लालटेन से तस्वीरें दिखाकर मैलेरिया की विभीषिका को रोकनेवाले किस देश के लोग थे ? · यहाँ तो उन मच्छरों की तस्वीरें देखते ही लोग कहते हैं–"पुरैनियाँ जिला को लोग मच्छर के लिए बेकार बदनाम करते हैं, देखिए पच्छिम का मच्छर कितना बड़ा है, एक हाथ लंबा देह, चार हाथ मूँड़। बाप रे !"

डी. डी. टी. और मसहरी की बात तो बहुत बड़ी हुई, देह में कड़वा तेल लगाना भी स्वर्गीय भोग-विलास में गण्य है। · तेल-फुलेल तो जमींदार लोग लगाते हैं। स्वर्ग की परियाँ तेल-फुलेल लेकर पुण्य करनेवालों की सेवा करती हैं ।

खेतो में फैली हुई काली मिट्टी की संजीवनी इन्हें जिलाए रहती है। शस्य-श्यामला, सजला-सुफला इनकी माँ नही ? अब तो शायद धरती पर पैर रखने का भी अधिकार नहीं रहेगा। कानून बनने के पहले ही कानून को बेकार करने के तरीके गढ लिए जाते हैं। सूई के छेद से हाथी निकाल लेने की बुद्धि

ही आज सही बुद्धि है।··· और लोग तो बकवास करते हैं, बुद्धि-विभ्रम रोग से पीड़ित हैं। जिसके पास हजारों बीघे जमीन है, वह पाँच बीघे जमीन की भूख से छटपटा रहा है।··· बेजमीन आदमी आदमी नहीं, वह तो जानवर है !

डाक्टर ममता को लिखता है—

"तुम जो भाषा बोलती हो, उसे ये नहीं समझ सकते। तुम इनकी भाषा नहीं समझ सकतीं। तुम जो खाती हो, ये नहीं खा सकते। तुम जो पहनती हो, ये नहीं पहन सकते। तुम जैसे सोती हो, बैठती हो, हँसती हो, बोलती हो, ये वैसा कुछ नहीं कर सकते। फिर तुम इन्हें आदमी कैसे कहती हो।"

·· वह आदमी का डाक्टर है, जानवर का नहीं।··· 'टेस्ट ट्यूबों' में आदमी और जानवर के खून अलग-अलग रखे हुए हैं। दोनों के सिरम की अलग-अलग जरूरतें हैं। डाक्टर आदमी के खूनवाले ट्यूब को हाथ में लेकर, जरा और ऊपर उठाकर, गौर से देखता है। वह जानना चाहता है, देखना चाहता है, कि इन इंसानों और जानवरों की रक्तकणिका में कितना विभेद है, कितना सामंजस्य है।···

खून से भरे हुए टेस्ट-ट्यूबों में अब कोई आकर्षण नहीं !··

क्या करेगा वह संजीवनी बूटी खोजकर ? उसे नहीं चाहिए संजीवनी। भूख और बेबसी से छटपटाकर मरने से अच्छा है मैलेग्नेण्ट मैलेरिया से बेहोश होकर मर जाना। तिल-तिलकर घुल-घुलकर मरने के लिए उन्हें जिलाना बहुत बड़ी क्रूरता होगी··· सुनते हैं, महात्मा गाँधी ने कष्ट से तड़पते हुए बछड़े को गोली से मारने की सलाह दी थी। वह नए संसार के लिए इंसान को स्वच्छ और सुंदर बनाना चाहता था। यहाँ इंसान हैं कहाँ ?··· अभी पहला काम है, जानवर को इंसान बनाना !

उसने ममता को लिखा है—

"यहाँ की मिट्टी में बिखरे, लाखों-लाख इंसानों की जिंदगी के सुनहरे सपनों को बटोरकर, अधूरे अरमानों को बटोरकर, यहाँ के प्राणी के जीवकोष में भर देने की कल्पना मैंने की थी। मैंने कल्पना की थी, हजारों स्वस्थ इंसान हिमालय की कंदराओं में, त्रिवेणी के संगम पर, अरुण, तिमुर और सुणकोशी के संगम पर एक विशाल डैम बनाने के लिए पर्वततोड़ परिश्रम कर रहे हैं। लाखों एकड़ बंध्या धरती, कोशी-कवलित, मरी हुई मिट्टी शस्य-श्यामला हो उठेगी। कफन जैसे सफेद बालू-भरे मैदान में धानी रंग की जिंदगी के बेल लग जाएँगे। मकई के खेतों में घास गढ़ती हुई औरते बेवजह हँस पड़ेंगी। मोती जैसे सफेद दाँतों की चमक··· !"

डाक्टर का रिसर्च पूरा हो गया; एकदम कम्पलीट। वह बड़ा डाक्टर हो गया। डाक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है·· ।

गरीबी और जहालत—इस रोग के दो कीटाणु हैं।

एनोफिलीज से भी ज्यादा ख़तरनाक, सैंडफ्लाई[1] से ज्यादा जहरीले हैं यहाँ के·

1. कालाआजार का मच्छर।

नहीं। शायद वह कालीचरन की तरह तुलनात्मक उदाहरण दे बैठेगा।···
कालीचरन किसानों के बीच भाषण दे रहा था, "ये पूँजीपति और जमींदार, खटमलों और मच्छरों की तरह सोसख हैं।··· खमटमल ! इसीलिए बहुत-से मारवाड़ियों के नाम के साथ 'मल' लगा हुआ है और जमींदारों के बच्चे मिस्टर कहलाते हैं। मिस्टर··· मच्छर !"

दरार-पड़ी दीवार ! वह गिरेगी ! उसे गिरने दो ! यह समाज कब तक टिका रह सकेगा ?

··· कविवर हंसकुमार तिवारी की कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं–

दुनिया फूस बटोर चुकी है,
मैं दो चिनगारी दे दूँगा।

गुलमुहर–आज का फूल ! सारी कुरूपता जल रही है। लाल ! लाल !

··· कमल–कमला नदी के गड्ढों में कमल की अधमुँदी कलियाँ अपने कोष में नई जिंदगी के पराग भरकर खिलना ही चाहती हैं।

"ओ ! तुम ! कमला ! इतनी रात में ?··· अकेली आई हो ?"

"डाक्टर !· बोलो। सच बोलो। मैं डेढ़ घंटे से खड़ी देख रही हूँ। तुमको क्या हो गया है ? क्या तुम्हें भी अब डर लगता है ?·· सिर चकराता है ? देखो, कान के पास गर्मी-सी मालूम होती है ? · डाक्टर !·· डाक्टर !··· प्यारू !"

··कमल की भीनी-भीनी खुशबू ! कोमल पंखुड़ियों का कमनीय स्पर्श। कमला !··· ओ ! मैं कमला की गोद में हूँ ? मुझे नींद न लग जाए। मुझे उठकर बैठ जाना चाहिए। मेरी मंजिल।

"कमला, चलो तुम्हें पहुँचा दूँ।"

"लेटे रहो बेटा !"

"ओ ! मौसी ! तुम आ गईं ?"

प्यारू कहता है, "कल सुबह से ही सिरफ चाय पीकर हैं, तो सिर नहीं चक्कर देगा ?"

सैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के दरवाजे पर पंचायत बैठी है। दोनों तहसीलदार के अगल-बगल में बालदेवजी और कालीचरन जी बैठे हैं। बाभन-राजपूत के साथ में बैठा है यादव–एक ही ऊँचे सफरे[1] पर। अरे ! जीबेसर मोची भी उसी कंबल

पर बैठा है ? बस, अब रास्ते पर आ रहा है। देखो, आज तहसीलदार हरगौरी किस तरह हँस-हँसकर कालीचरन से बात कर रहा है–मानो एक प्याली का दोस्त है। हाँ, तो यादवों को अब जमाहिरलाल भी छत्री मान लिए हैं। कौन क्या बोल सकता है ?··· बावनदास कौन जात है ?··· कहाँ है बावनदास ? पुरैनियाँ गया है ? आज पंचायत के दिन उसको रहना चाहिए था।·· अरे भाई बाहरी आदमी फिर बाहरी आदमी है। उसको इस गाँव से कौन जरूरत है ? यहाँ नहीं, वहाँ। लेकिन कालीचरन··· बाल···।··· डोमन ठाकुर क्या कहता है, सुनो !

"ठाकुर (नाई) टोले से और रजकटोले से एक-एक आदमी को ऊँचे सफरे पर बैठने के लिए चुन लिया जाए।"

"ओ ! आओ डोमन भाई ! अपने टोले से किसको पंच चुनते हो ? बोलो ! तुम्ही आओ ! और रजकटोले से तो प्यारेलाल है ही। आओ प्यारे !" कालीचरन प्यारे को अपने ही पास बिठलाता है।

"तो बात यह है कि," तहसीलदार विश्वनाथप्रसादजी सुपारी कतरते हुए कहते हैं, "जमाना बहुत खराब आ रहा है। जो लोग अखबार-गजट पढ़ते हैं, वही जानते हैं कि कितना खराब जमाना आ रहा है।· बंगाल की तरह अकाल फैलेगा। बंगाल के अकाल के बारे में नहीं जानते ?·· अरे, चरवाहा सब गाता है, सुने नहीं हो–

बड़ जुलुम कइलक अकलवा रे
बंगाल मुलुकवा में।
चार करोड़ आदमी मरल···

"··· पूछो कालीचरन से, बालदेव भी कहेगा कि बंगाल के अकाल जैसा अकाल कभी पड़ा ?·· उम्र ज्यादा होने से क्या हुआ ? जो लोग अखबार नहीं पढ़ते हैं, वे दुनिया की बातों से वाकिफ कैसे हो सकते हैं ? मैं ही पहले से यदि कर-कचहरी, कटिहार-पूर्णिया नहीं जाता तो कूपमण्डू रहता। कुएँ का बेंग !·· देखो, सरकार सभी धानवालों से धान वसूल रही है। क्यों ? सरकार को पूरा डर है कि अकाल फैलेगा। इसलिए अपने हाथ में बर-बखत के लिए पूरी स्टोक रखना जरूरी है। अरे, तुमको तो तीन आदमी की फिक्र करनी पड़ती है तो साल-भर बाप-बाप चिल्लाते हो, कभी इंद्र भगवान से पानी माँगते हो, सूरज भगवान से धूप उगाने के लिए कहते हो, नौकरी करते हो, कर्ज लेते हो ! और जिसको समूचा भारथवरश-हिंदुस्थान की फिक्र करनी पड़ती है, उसकी क्या हालत होती होगी ? अभी तुरत ही तो सभी लीडर जेहल से निकले हैं; तुरत मिनिस्टरी लिया है। यदि अकाल पड़ गया तो सुराज मिलनेवाला है, वह नहीं मिलेगा। यदि मिलेगा भी तो जो उसकी सारी ताकत तो लोगों का खिलाने में ही लग जाएगी। इसलिए हम लोगों को धरती से ज्यादा अन्न उपजाना चाहिए।·· अभी मान लो कि कर-कचहरी, फर-फौजदारी

1. बिछावन, दरी।

करके तुम खेत पर दफा 144 लगा देते हो, फिर 145 होगा, इससे जमीन में धान तो रोपा नहीं जाएगा ! खेत परती रहेगा और अन्न होगा नहीं। इसके बाद मालिक लोगों से ही यदि धान माँगोगे तो कहाँ से देंगे मालिक लोग ? अपने खर्च के लायक धान मालिकों के पास होगा नहीं और सरकार वसूल करेगी लाठी के हाथ से, कानून से । बड़े मालिकों के बखारों में भी चमगादड़ झूलेंगे।··· तो हमारा यही कहना है कि सभी भाई आपस में विचारकर, मिलकर देखो कि किस काम में भलाई है !"

··· अरे ! तो यह पंचायत सिरफ बेजमीनवालों को ही सीख देने के लिए बैठाई गई है !··· चुप रहो ! तहसीलदार जो कह रहे हैं, नहीं समझ रहे हो पक्की बात कहते हैं तहसीलदार !··· काबिल आदमी हैं। अरे, आज ही यह कालीचरन और बालदेव आया है न ! पहले तो हम लोगों के आँख-कान यही थे। इन्हीं के यहाँ बैठकर गजट में सुना था कि नेताजी सिंघापूर में पुसुप बिमान पर आ गए हैं। ··· तहसीलदार ठीक कहते हैं।

"तहसीलदारबाबू ? माए-बाप,··· आप ठीक ही कहते हैं। अब आप ही कोई रास्ता बताइए।"

"हाँ, हाँ, तहसीलदार काका, आप ही जो कहिए।"

"ठीक है !··· क्या कालीचरन जी ?" तहसीलदार हरगौरी हँसकर पूछता है।

"कालीचरन को 'जी' कहते हैं हरगौरी बाबू भी !"

"ठीक है। ठीक है। तहसीलदार साहब ठीक कहते हैं।"

"·· तो भाई, हम तो हिंदुस्थान, भारथवरश की बात नहीं जानते। हम अपने गाँव की बात जानते हैं। आप भला तो जग भला। हम तो इसी में गाँव का कल्याण देखते हैं कि सभी भाई, क्या गरीब क्या अमीर, सब भाई मिलकर एकता से रहें। न कोई जमीन छुड़ावे और न कोई गलत दावा करे। जैसे पहले जोतते-आबादते थे, आबाद करें, बाँट दें। न रसीद माँगें, न नकदी के लिए दर्खास्त दें।··· दोनों को समझना होगा।··· क्यों हरगौरीबाबू ! सुनते हो तो ? अपने मैनेजर से जाकर कह देना कि हुजूर अब भी होश करें। यदि इस तरह रैयतों के साथ दुश्मनी करेंगे, कम-से-कम हमारे यहाँ के रैयतों से, तो फिर बात बिगड़ जाएगी।··· सभी बात तो हमारे ही हाथ में है। हम अभी गवाही देदें, कि हाँ हुजूरआली, यह सब फर्जी काम हमसे करवाया गया है, और कल कागज-पत्तर, चिट्ठी-चपाती, रुक्का-परवाना दिखला दें तो बस खोप सहित कबूतराय नमः··· ।"

हँ-हँ, हो-हो !··· पंचायत के सभी लोग मुक्त अट्टहास कर बैठते हैं।

"अरे तो, किस खानदान का तहसीदार है, यह भी तो देखना चाहिए ?" सिंघ जी हँसते हुए कहते हैं।

"महारानी चंपावती·· "

हो-हो-हो-हो हँसी का दूसरा वेग, सैकड़ों सरलहृदय इंसानों को गुदगुदी लगाती है।

"अच्छा ! अच्छा ! अब काम की बात हो।··· सुनो कालीचरन बेटा ! लीडर बने हो तो बड़ा अच्छा काम है। बाबू-गाँव का नाम तो इसी में है। कोई सोशलिस्ट का लीडर है, तो कोई काँगरेस का, तो कोई काली टोपी का। लेकिन देख लो भैया, हम गाँव के सभी लौंडों के अकेले मालिक हैं। यदि गाँव में इधर-उधर कुछ किए तो पीठ की चमड़ी उधेड़ लें। · खेलावन ! जोतखी जी ! आप ही लोग कहिए, जो लौंडे हमको कहते हैं क़ाका, मामा, भैया, फूफा, उन लड़कों की गलती पर यदि हम कान पकड़कर मल दें या दो कड़ी बात कह दें तो हमको कोई दोख देगा ?"

"नहीं, नहीं। आप वाजिब बात कहते हैं।"

"हम गाँव से बाहर थोड़े ही हैं, लेकिन एक बात हम भी पहले ही कह देते हैं। अभी आप जैसा करने के लिए कहते हैं, हम लोग करें। बाद में फिर हमारी गर्दन पर छुरी चले तब ?" कालीचरन कहता है।

इसका जिम्मा हम लेते हैं। अरे, हमने कहा न कि सभी खेला मेरे हाथ में है।"

"तो ठीक है। हम गाँव से बाहर थोड़े हैं।"

"ठीक बात ! ठीक बात !"

"लेकिन सभी भाई सुन लीजिए। यदि गाँव के बाहर का कोई बाहरी हम पर हमला करे तो इसका मुकाबला सभी को मिलकर करना होगा। हाँ, यदि बाहरवाले इस गाँव के जमीनवालों पर हमला करें तो सबों को सहायता करनी होगी।··· गाँव की जमीन गाँव में रहेगी। बाहरवाले क्यों लेगे समझे ?"

"हॉ-हाँ, टीक है। ठीक है। बहुत रात हो गई। आसमान में बादल उमड़ आए हैं। बरसा होगी। दुहाई इंद्र महाराज ! बरसो, बरसो !"

हर साल बरसात के मौसम में यही होता है। भगवान के हाथ की बात इसान क्या जाने ! इंद्र भगवान से प्रार्थना की जाती है—बरसाओ ! हे इंद्र महाराज !· जरा भी आसमान के किसी कोने मे काले बादलो का जमाव हुआ, बिजली चमकी, फिर 'बरसो', 'बरसो' की पुकार घर-घर से सुनाई पड़ती है। जमीनवालों, बेजमीनों, सबों की रोटी का प्रश्न है। और यदि लगातार पाँच दिन तक घनघोर बरसा हुई और खेतों के आल डूबे कि ' जरा एक सप्ताह सबुर करो महाराज !'

इन्द्र महाराज की खुशी ! यदि उनका मिजाज अच्छा रहा तो प्रार्थना पर विचारकर एक सप्ताह सब्र कर गए। मौके से बरसा होती गई, धूप भी उगती रही तो फिर धान रखने की जगह नही मिलेगी। "मूसिन पूछे मूस से कहाँ के रखबऽधान"[1] । · तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के पास डाक-वचनामृत, भविष्यफल और खान-बचन है। पंजिका से हिसाब निकालकर बता देंगे कि यह पक्ष सूखेगा या झरेगा।·· नक्षत्रों

1. घाघ की एक सूक्ति।

की गणना में यदि स्त्री-स्त्री का संयोम हुआ तो शून्य, यदि पुरुष-पुरुष संयोग निकला तो शून्य। एक बूँद भी बरसा नहीं होगी, चिल्लाने से क्या होगा ?···

··· ततमाटोला, पासवानटोला, धानुक-कुर्मीटोला तथा कोयरीटोला की औरतें हर साल ऐसे समय में इंद्र महाराज को रिझाने के लिए, बादल को सरसाने के लिए, 'जाट-जट्टिन' खेलती हैं।

आज भी 'जाट-जट्टिन' का आयोजन है। कल तो पिछयारीटोले की औरतों ने किया था। बादल का एक टुकड़ा थोड़ी देर के लिए आकर चाँद को ढँक गया था। आज पुरनिमाँ है। कल से यदि बरखा नहीं हुई तो सारा पख सूखा रहेगा। ··· ततमाटोली की औरतों ने बाबूटोला की औरतों को निमंत्रण दिया है–"एक साथ सब मिलकर जाट-जट्टिन खेलें, जरूर बरखा होगी।"

गुआरटोली और कायस्तटोली के बीच में जो पंद्रह रस्सी मैदान खाली है, उसी में औरतें जमा हुई हैं।

··· जाट के पास हजारो-हजार भैंसें हैं। वह उन्हें चराने के लिए कोशी के किनारे जाता है। जट्टिन घर में रहती है; दूध, घी और दही की बिक्री करती है, हिसाब रखती है।··· सास या पति से झगड़कर, रूठकर जट्टिन नैहर चली गई। जाट उसे ढूँढ़ने जा रहा है। जट्टिन बड़ी सुंदरी थी, उसकी सुंदरता की चारों ओर चर्चा होती थी।

सुनरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी
पातरि बाँस के छौकिनियाँ हो बाबूजी,
गोरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी,
चाननी रात के इँजोरिया हो बाबूजी !
नान्हीं-नान्हीं दँतवा, पातर ठोरवा···
छटके जैसन बिजलिया··· ।

इसलिए जाट को गाँव के हरेक मालिक, नायक या मंडल पर संदेह। · जट्टिन नैहर नहीं जा सकेगी, किसी ने जरूर उसे अपने घर में रख लिया होगा।··· रास्ते में कितने गाँव हैं, कितनी नदियाँ हैं, कितने घाट हैं और घटवार हैं। वह रास्ते के हर गाँव के मालिक मड़र[1]. और नायक के यहाँ जाता है :

नायक जी हो नायक हो,
खोले देहो किवड़िया हो नायक जी,
ढूँढ़े देहो जटिनियाँ हो नायक जी···

जट्टिन बनी है रमपियरिया, और जाट बनी है कोयरीटोला की मखनी। मखनी ठीक मर्दों-जैसी लगती है।

1. मंडल, प्रमुख, मालिक

'जाट-जट्टिन' अभिनय के साथ और भी सामयिक अभिनय तथा व्यंग नाट्य बीच-बीच में होते हैं।··· फुलिया बनी है डाक्टर। उसने कमल के फल की डंडी को किस तरह जोड़-तोड़कर डाक्टर के गले में झूलनेवाला आला बनाया है। सनिचरा का नया पैजामा माँग लाई है और बिहुला नाचवालों के यहाँ से साहबी टोपा और कोट माँग लाई है।

"ए मैन ! इदार आता हाए। बोलो क्या होता हाए !"

"हुजूर ! थोड़ा सिर दुखता है, थोड़ा आँख भी दुखता है, थोड़ा कान भी दरद करता है ओर कलेजा भी धुकधुक करता है। सर्दी भी होता है, गर्मी भी लगता है। भूख भी नहीं लगता है और जब भूख लगता है तो खाना नहीं मिलता है।" ···रोगी बनी है धानुकटोले की सुरती ! खूब बात जोड़ती है··· हा-हँ-हँ-हँ-हँ !··

"अरे बाप रे बाप ! ऐसा बेमारी तो कभी नाहीं देखा। तुम्मारा नेबज देके ! (देखकर) उँहू ! तुम नेही बचेगा। तुमारा बेमारी को कीड़ा हो गया।·· जकसैन लगेगा।"

दूसरी रोगिनी आती है—कुर्मीटोले की ताराबत्ती।

"ऐ औरत ! तुमको क्या हुआ ?"

"हमारा दिल दकदक करता है।"

"अरे बाप ! यहाँ तो सबों का दिल धक्धक करता हाए। अमारा भी दिल धकधक करने लगा !"

डाक्टर और रोगिनी दोनों डरते हुए एक-दूसरे को बाँहों में पकड़ लेती हैं—दिल धकधक दिल दकदक !

· औरतों की मण्डली हँसते-हँसते लोटपोट हो जाती है। बूढ़ियों की खाँसी उभर आती है। हो-हो-हो, खों-खों, अक्खों !· खूब किया !

मर्दों को 'जाट-जट्टिन देखने का एकदम हक नहीं है। यदि यह मालूम हो गया कि किसी ने छिपकर भी देखा है तो दूसरे ही दिन पंचायत में चली जाएगी बात !· जिसको मूँछें नहीं उगी हैं, वह देख सकता है।

अंत में औरतें मिलकर हल जोतती हैं। हल और बैल किसी का ले आती हैं और जोतते समय गाँव के बड़े-बूढ़े किसानों को गाली देती हैं—"अरे बिस्नाथ तहसीलदरवा ! जल्दी पानी ला रे ! पियास से मर रहे हैं रे !"

"अरे ! सिंघवा सिपैहिया रे ! पानी लाओ रे !"

"अरे रमखेलोना रे !··· पानी ला रे !"

··· इस गाली को कोई बुरा नहीं मानते। बल्कि किसी बड़े किसान का नाम छूट जाए तो उसे तकलीफ होती है।··· बहुत दुख होता है।

इस बार डाक्टर को भी गाली दी जाती है—"अरे डकटरवा रे !·· अरे परसंतो रे, जल्दी से बोतल में पानी लेके आ रे !·· "

हो-हों-हा-हा··

आसमान में काले बादल घुमड़ रहे हैं। बिजली भी चमक रही है।

अड़तीस

दो दिन से बदली छाई हुई है। आसमान कभी साफ नहीं होता। दो-तीन घंटों के लिए बरसा रुकी, बूँदा-बाँदी हुई, फिर फुहिया। एक छोटा-सा सफेद बादल का टुकड़ा भी यदि नीचे की ओर आ गया तो हरहराकर बरसा होने लगती है। आसाढ़ के बादल…!

रात में मेंढकों की टरटराहट के साथ असंख्य कीट-पतंगों की आवाज शून्य में एक अटूट रागिनी बजा रही है–टर्र ! मेंक् टर्रर… मेंकू ! झि-झि-चि… किर-किर्र … सि, किटिर-किटिर ! झि …टर्र…।

कोठारिन लछमी दासिन को नींद नहीं आ रही है; चित्त बड़ा चंचल है। रह-रहकर ऐसा लगता है कि उसके शरीर पर कोई पतंगा घुरघुरा रहा है। वह रह-रहकर उठती है, बिछावन झाड़ती है, कपड़े झाड़ती है। लेकिन वही सरसराहट…। वह लालटेन की रोशनी तेज कर बीजक लेकर बैठ जाती है–

जाना नहिं बूझा नहिं
समुझि किया नहीं गौन !
अधे को अंधा मिला
राह बतावे कौन ?

कौन राह बतावे ? नहीं, उसने बालदेव जी को जाना है, अच्छी तरह पहचाना है। …महंथ सेवादास जी कहते थे–"लछमी ! बालदेव साधु पुरुष है।"… लेकिन बालदेव जी तो इतने लाजुक हैं कि कभी एकांत में बात करना चाहो तो थरथर काँपने लगें; चेहरा लाल हो जाए। लाज से या डर से ? …लेकिन बिरहबाण से घायल लछमी का मन सिसक-सिसककर रह जाता है।

बिरह बाण जिहि लागिया
ओषध लगै न ताहि।
सुसकि-सुसकि मरि-मरि जिवैं,
उठे कराहि कराहि !

किंतु बालदेव जी को क्या पता !… लछमी क्या करे ?

टर्र-र-मेंक्, मेंक्, झी …ई …टिंक-टिंक–झी रिं !…

नहीं। लछमी अब नहीं सह सकेगी। वह बालदेव जी के पास जाएगी। पसहरी नहीं है बालदेव जी को ! मच्छर काटता होगा। …नहीं। वह नहीं जाएगी। वह क्यों जाएगी ?…

पानी प्यावत क्या फिरो
घर-घर सायर बारि,
तृषावंत जो होयगा,
पीवेगा झख मारि !···

रामदास–महंथ रामदास अब लछमी से बहुत कम बोलते हैं। वे नाम के महंथ हैं। वे कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते। उन्हें कुछ भी नहीं मालूम। कितनी आमदनी और कितना खर्च होता है–उनको क्या पता ? बीस से ज्यादा तो गिनना नहीं जानते। कोड़ी का हिसाब जानते हैं। ···रामदास जी समझ गए हैं कि यदि लछमी मठ को एक दिन के लिए भी छोड़ दे तो रामदास के लिए यहाँ टिका रहना मुश्किल होगा। लछमी जादू-मंतर जानती हैं। क्या कागज-पत्तर, क्या खेती-बारी और क्या हाकिम-महाजन, सभी में वह अव्वल है। महंथ रामदास जी समझ गए हैं कि यदि इज्जत के साथ बैठकर दूध-मलाई भोग करना हो तो लछमी को जरा भी अप्रसन्न नहीं किया जाए। ··तन का ताप मन को चंचल तो करता है, लेकिन क्या किया जाए ! ···यदि एक दासिन रखने का हुकुम लछमी दे दे तो···! गड़गड़ाम ···गड़गड़··· बादल घुमड़ा। बिजली चमकी और हरहराकर बरसा होने लगी।

हाँ, अब कल से धनरोपनी शुरू होगी। ··जै इंदर महाराज, बरसो, बरसो ! ··लेकिन बीचड़[1] के लिए धान कहाँ से मिलेगा ? आज तो पचायत में सभी बड़े मालिक लोग बड़ी-बात बोलते थे, कल ही देखना कैसी बात करते हैं··· 'अपने खर्चा के जोग ही धान नहीं है', 'बीहन नहीं है' अथवा पहले हमको बोने दो'।

गड़ागड़ाम ···गुडुम !

"बीहन का धान मालिकों को देना होगा। हमेशा देते आए हैं, इस बार क्यों नहीं देंगे ?" कालीचरन आफिस में सोए, अधसोए और लेटे लोगों से कहता है, "और बार दूना लेते थे, बीहन का दूना, इस बार सो सब नहीं चलेगा। यदि तहसीलदार मामा ने ऐसा प्रबंध नहीं कि.ा तो फिर ·संघर्ख।"

विजली चमकती है। बादल झूम-झूमकर बरस रहे है।

मंगला अब कालीचरन के आँगन मे रहती है। कालीचरन की माँ अंधी है। कालीचरन की एक बेवा अधेड़ फूफू है। मंगला की मोटी बोली सुनकर कालीचरन की माँ की आँखें सजल हो उठती हैं और फूफू की आँखें लाल ! जब-जब बिजली चमकती है, पछवारिया घर के ओसारे पर सोई फूफू पुअरिया घर की ओर देखती है। आदमी की छाया ? नहीं। बाँस है। ·पुअरिया घर में सोई मंगला भी जगी है। बादलों के गरजने और बि·ली के चमकने से उसे बड़ा डर लगता है। बचपन से ही वह वादल, बिजली और आँधी से डरती है। और यहाँ की बरसा तो···। फिर, बिजली चमकी। "कौन···!" मगला फुसफुसाकर पूछती है, "कौन ?"

भीगे हुए पैरों के छाप बिजली की चमक में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

1. बीहन (बीज) धान, धान का छोटा पौधा।

सोनाये यादव अपनी झोंपड़ी में बारहमासा की तान छेड़ देता है :

एहि प्रीति कारन सेत बाँधल,
सिया उदेस सिरी राम हे।
सावन हे सखी, सबद सुहावन,
रिमिझिमि बरसत मेघ हे !···

रिमिझिमि बरसत मेघ ! ·· कमली को डाक्टर की याद आ रही है। कहीं खिड़कियाँ खुली न हों। खिड़की के पास ही डाक्टर सोता है। बिछावन भींग गया होगा। कल से बुखार है। सर्दी लग गई है। ···न जाने डाक्टर को क्या हो गया है ? ···कहीं मौसी सचमुच में डायन तो नहीं ? डाक्टर को बादल बड़ अच्छे लगते हैं। कल कह रहा था–"मैं वर्षा में दौड़-दौड़कर नहाना चाहता हूँ।"

छररर ! छररर ! ···बादल मानो धरती पर उतरकर दौड़ रहे हैं। छहर ···छहर ···छहर !

बिरसा माँझी अब लेटा नहीं रह सकता। ·परसों गाँववालों ने मिटिन किया है–बाहरी आदमी यदि चढ़ाई करे तो सब मिलकर मुकाबला करेंगे। कालीचरन भी था और बालदेव भी !···संथाल बाहरी लोग हैं।

तहसीलदार हरगौरी का सिपाही आज जमीन सब देख रहा था–अखता भदै धान पक गया है। काटेंगे क्या ! किस खेत में कौन धान धोएँगे ? तो क्या सचमुच में संथालों की जमीन छुड़ा लेंगे तहसीलदार ? जमींदारी पर्था खतम हुई, लेकिन तहसीलदार जमीन से बेदखल कर रहा है। ·· बात समझ में नहीं आ रही है।···क्या होगा ? कल ही देखना है। जमीन पर हल लेकर आवेगा तहसीलदार, भदै धान काटने आवेगा, तब देखा जाएगा। पहले से क्या सोच-फिकर ? ··वह अब लेटा नहीं रह सकता। ·लेटे-ही-लेटे मादल पर वह हाथ फेरता है–रिं-रिं-ता-धिन-ता।

गुड़गुडुम ···गुडुम·· गुडुम !

बिजलियाँ चमकती हैं !

कल बीचड़ मिलेगा या नहीं ? ··बालदेव जी को मच्छर क्यों नहीं काटता है, कालीचरन की फूफी सोती क्यों नहीं, और डाक्टर की खिड़की बंद है या खुली, इसका जवाब तो कल मिलेगा। अभी जो यह सोनाय यादव बारहमासा अलाप रहा है, इसको क्या कहा जाए ?···गाँव-घर में गाने की चीज नहीं बारहमासा·· अजीब है यह सोनाय भी। कुमर बिजैभान या लोरिक नहीं, बारहमासा ! खेत में गेपनी करते समय गानेवाला गीत बारहमासा ! धान के खेतों में पाँवों की छप-छप आवाज के साथ वह गीत इतना मनोहर लगता है कि आदमी सबकुछ भूल जाए। ···यह संथालटोली में माँदर क्यों बजा रहा है, बेवजह, और जब यह सोनाय बारहमासा गा ही रहा है तो चार कड़ी सुनने दो बाबा ! बेताल के ताल बजा रहे हो ! बरसा की छपछपाहट और बादलों की घुमड़न में माँदर की आवाज स्पष्ट नहीं सुनाई पड़ती है, गनीमत है। ओ ! सोनाय ने अब झूमर बारहमासा शुरू किया है–

अरे फागून मास रे गवना मोरा होइत
कि पहिरू बसंती रंग हे,
बाट चलैत-आ केशिया सँभारि बान्हू,
अँचरा हे पवन झरे हे ए ए ए !

डाक्टर अब गाँव की भाषा समझता ही नही, बोलता भी है। ग्राम्य गीतों को सुनकर वह केस-हिस्ट्री लिखना भी भूल जाता है। गीतों का अर्थ शायद वह ज्यादा समझता है। सोनाय से भी ज्यादा ? ·अँचरा हे पवन झरे हे ! ·आँचल उड़ि-उड़ि जाए !

गाँव के और लोग कहेंगे कि रात में रह-रहकर वर्षा होती थी। आधा घटा बद, फिर झर-झर ! लेकिन डाक्टर कहेगा, सारी रात बरसा होती रही, कभी बूँद रुकी नही। विशाल बड़ के तने, 'करकट टीन' के छप्परवाले घर पर जो बूँदें पड़ती थीं ! कोठी के बाग मे झरझराहट कभी बंद नहीं हुई ! ·

तो सुबह हो गई। सोनाय अब खेत में गीत गा रहा है। सोनाय अकेला नहीं है, सैकडो कण्ठों मे एक-एक विरहिन मैथिली बैठी हुई कूक रही है–

आम जे कटहल, तूत जे बड़हल
नेबुआ अधिक सूरेब !
मास असाढ़ हो रामा ! पंथ जनि चढ़िहऽ,
दूरहि से गरजत मेघ रे मोर !

बाग में आम-कटहल, तूत और बड़हल के अलावा कागजी नीबू की डाली भी झुकी हुई है और दूर से मेघ भी गरजकर कह रहा है–आ पन्थी ! अभी राह मत चलना ! लोग दूर के साथी को अपने पास बुलाते हैं, बिरह में तड़पते हैं, मेघों के द्वारा सदेश भेजते हैं और घर आया हुआ परदेशी बाहर लौट जाना चाहता है ? नही, नही ! विजली की हर चमक पर मैं चौंक-चौंककर रह जाऊँगी। बादल जब गरजते है तो कलेजे की धड़कन बढ़ जाती है।

अऽरे मास आ सा ढ़ हे ! गरजे धन
विजूरी-ई चमके सखि हे ए ए !
मोहे तजी कन्ता जाए पर-देसा आ ···आ
कि उमडू कमला माई हे !
···हेंऽरे ! हेंऽरे···

कमला में बाढ़ आ जाए तो कत रुक जाएँ। इसलिए कमला नहीं को उमड़ने के लिए आमंत्रित किया जाता है। जिनके कंत परदेश से लौट आए हैं, उनकी खुशी का क्या पूछना ! झलनी रागिनी उन्हीं सौभाग्यवतियों के हृदय के मिलनोच्छ्वास से झूम रही है खेतों में !

मास असाढ़ चढ़ल बरसाती
घर-घर सखी सब झूलनी लगाती।
झूली गावे,
झूली गावति मंगलबानी
सावन सखि अलि हे मस्त जवानी···
देखो, देखो !
देखो, देखो सखि री बृजबाला
कहाँ गए जशोधाकुमार, नंदलाला,
···देखो, देखो।

घर का कंत कहीं गाँव में ही राह न भूल जाए ! ···देखो, देखो, कहाँ गए ? किसी की झूलनी पर झूल तो नहीं रहे ?

"चाय !"

"कौन ? कमला !" डाक्टर अकचका जाता है।

"हाँ, चमकते हो क्यों ? तुमको भी सूई का डर लगता है ! यह मीठी दवा नहीं, मीठी चाय है डाक्टर साहब ! जब चाय पीकर ही जीना है तो आँख खुलते ही गर्म चाय की प्याली सामने रखने की जरूरत है।" कमला पास की कुर्सी पर बैठकर चाय बनाती है। प्यारू खड़ा-खड़ा मुस्करा रहा है। ···प्यारू को इतना खुश बहुत कम बार देखा गया है। ···"अब समझें ! यह प्यारू नहीं कि हर बात में 'नहीं' कर टाल दिया। ···चाय बनावें ? तो नहीं। अंडा बनावें ? तो नहीं। खाना परोसें ? तो नहीं। ···अब समझें !"

उनतालीस

संथाल लोग गाँव के नहीं, बाहरी आदमी हैं ?

"···जरा विचार कर देखो। यह तंत्रिमा का सरदार है···अच्छा, तुम्हीं बताओ जगरू, तुम लोग कौन ततमा हो ? मगहिया हो न ? अच्छा कहो, तुम्हारे दादा ही पच्छिम से आए और तुम्हारी बेटी तिरहुतिया तंत्रिमा के यहाँ ब्याही गई है। मगहिया चाल-चलन भूल गए। अब तिरहुतिया और मगहिया एक हो गए हो। लेकिन संथालों में भी कमार हैं, माँझी हैं। वे लोग अपने को यहाँ के कमार और

माँझी में कभी खपा सके ? नहीं। वे तो हमेशा हम लोगों को ही छोटा कहते हैं। गाँव से बाहर रहते हैं। ...कहो तो गाने किसी संथाल को, बिदेशिया का गाना या एक कड़ी चैती ! कभी नहीं गावेगा। इसका दारू हरगिज नहीं पिएगा। जब पिएगा तो 'पँचाय' ही। समझो ! सोचो !" तहसीलदार साहब दरवाजे पर बैठे हुए बीहन लेनेवालों से कहते हैं। ...डेढ़ सौ से ज्यादा लोग हैं। कालीचरन जी भी हैं, बासुदेव जी और बालदेव जी भी हैं।

तहसीलदार साहेब एकदम ठीक कह रहे हैं। ...नीं भाई जो भी हो तहसीलदार साहेब ही एक आदमी हैं जो कि गाँव की भलाई-बुराई की बात समझते हैं...ठीक कहते हैं तहसीलदार साहेब। एकदम से 'फाटक खोल' हुकुम दे दिए हैं, "कोई बात नहीं। इस बार तुम लोगों को संदेह क्यों हुआ ? अधियादार लोग ही बीहन के वाजिब हकदार हैं। और जो लोग मेरे अधिया नहीं हैं, उन्हीं से पूछो कि किसी साल हमने लौटाया है किसी को ? तब यह है कि पिछले-साल जैसी उपज हुई थी सो देखा ही हुआ है। तिस पर पेडीलाभी[1] कानून का देना अभी बाकी है। बहुत कोशिश-पैरवी करके किसी तरह एक सौ मन कराया है। हरगौरीबाबू की किरपा से तो पाँच सौ मन लग गया था। इनसे शायद दारोगा साहेब न पूछा और उन्होंने बता दिया कि पाँच हजार मन धान होता है। वह तो थाना काँग्रेस के सिकरेटरी ने कितनी कोशिश करके इसको एक सौ मन बनाया है।" हरगौरीबाबू से पूछ रहे थे कि कहिए बाबू हरगौरी जी ! यदि पाँच सौ मन धान अभी दे देते तो गाँववालों को बीहन और खर्चा कहाँ से मिलता ? तहसीलदार होने से ही नहीं होता।

ठीक बात ! ठीक बात ! वाजिब कहते हैं तहसीलदार साहेब।

कालीचरन के मन में बहुत-से सवाल आते हैं, पर वह नहीं पूछेगा। उस दिन सिकरेटरी साहेब ने साफ कह दिया कि 'कामरेड, अभी संघर्ष मत छोड़ो। सबसे पहले अभी किसी एक इलाके में, एक एरिया लेकर इसको इसपारमिन[2] करें, तब इसके बाद और इलाके में इसके लिए हुकुम देंगे। सो भी संघर्ष से एक महीना पहले दरखास्त लेना होगा लोगों से, फिर इनक्आएरी, फिर ऐजुकूटी मिटिंग, तब जाकर राय मिलेगी कि संघर्ष करना चाहिए कि नहीं। मेल-माफत और पंचायत से अभी जो काम चले, चलाइए। कुछ दिनों के बाद तो पार्टी एकदम धावा बोल देगी।

"हाँ, तहसीलदार साहेब ठीक कहते हैं।" कालीचरन भी कहता है। बालदेव जी भी कहते हैं। ·बौनदास कहाँ है ? पुरैनियाँ से लौटकर नहीं आया है।

हरगौरीबाबू भी अच्छी तरह समझ गए हैं कि काली टोपीवाले नौजवानों की लाठियों से ज्यादा खतरनाक हथियार है—कानूनी नुक्स ! तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद इसके माहिर हैं। उनसे अभी बैर लेना ठीक नहीं।

1 पैड़ी लेवी कानून। 2. एक्सपेरिमेंट।

सिंघ जी को हरगौरी की तहसीलदारी पर पूरा भरोसा था, काली टोपीवाले संयोजक जी पर पूरा विश्वास था ...लेकिन तहसीलदार विश्वनाथ ने तो कानून की ऐसी लकड़ी लगाई है कि भूमिहार भी मात ! राजपूत का बल्लम-बर्छा उसके आगे क्या करेगा...? ऊपर से कितना हँसमुख और कितना मीठबोलिया है तहसीलदार बिसनाथ, लेकिन पेट में जिलेबी का चक्कर है। राज का नया सरकिल मैनेजर दाँतों तले उँगली दबाता है। ऐसा कानूनची आदमी ! · कहा, इस्तीफा दे दो। इसीलिए तड़ाक् से दे दिया। काँगरेसी का लीडर हो गया। हद है ! इससे पार पाना मुश्किल है !

हरगौरी ने सिंघ जी के नाम संथालटोली की पचीस एकड़ जमीन बेनामी करवाई है, जिसमें से दो एकड़ सिंघ जी को मिलेगी।··

खेलावन ने भी पाँच बीघा संथालटोली की बंदोबस्त ली है।

बेतार का खबर सुमरितदास कोयरीटोलावालों से कहता है, "यदि हरगौरी तहसीलदार ने तहसीलदार बिसनाथपरसाद के नाम दो सौ बीघे और मेरे नाम से पचास बीघे की लिखा पढ़ी नहीं की तो फिर देख लेना ! हाँ कायस्त है, खेल नहीं।"

सुमरितलाल बेतार अब फिर तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के साथ है। अब तो जैसे हरगौरी तहसीलदार, वैसे विश्वनाथ तहसीलदार। लेकिन शर्त यही है··।

संथालों को सब मालूम है।

अभी बालदेव जी, बावनदास जी और कालीचरन जी सब एक हो गए। संथाल लोग अच्छी तरह जानते हैं, कोई साथ देनेवाला नहीं। धरमपुर में देखा नहीं ? ऐसा ही हुआ। इसीलिए बड़े-बूढ़े ठीक कह गए हैं–यहाँ के लोगों का विश्वास मत करना। जब जिससे जो फायदा हो ले लेना, मगर किसी के साथ मत होना। संथाल संथाल है और दिक्कू दिक्कू[1] पाँचाय देह को पत्थल की तरह मजबूत बनाता है और पीकर देखो यहाँ का दारू, पत्थल को गला देगा। हरगिन नहीं। दिक्कू आदमी, भट्ठी का दारू, इसका बिसवास नहीं। · अरे, तीर तो है ! यही सबसे बड़ा साथी है। साथी छोड़ सकता है, तीर कभी चूकता नहीं...।

चुनका मांझी क्या बोलता है ? · डाक्टर से क्या पूछने गया था पूछना चाहिए था कालीचरन से, बालदेव जी से, तहसीलदार साहब से।.

बालदेव और कालीचरन लोगों को धान दिला रहे हैं, तहसीलदार साहब से।

"डाक्टर ने कहा कि तुम लोग ही जमीन के असल मालिक हो। कानून है, जिसने तीन साल तक जमीन को जोता-बोया है, जमीन उसी की होगी।"

"डाक्टर ने कहा है ?"

डाक्टर ने ? सीनियाँ मुरमु हँसती है–हँ हँ हँ ! "डाक्टर हम लोगों का नाच देखना चाहता है। रोज टोकता है। हँ हँ हँ !"

1. संथाल लोग गैर-संथाल को दिक्कू कहते हैं।

जबान जोगिया माँझी तीर से पूँछ पर जंगली हँस के पैरों को बाँधते हुए कहता है, "डाक्टर ने खरगोस का दाम दिया था दस रुपैया। बारह रुपैया दर्जन चूहा।··· दो सियार के बच्चों का दाम पचास रुपैया। दे सकता है कोई बड़ा आदमी इतना दाम ? सरकारी आदमी है, मगर घूसखोर नहीं।"

कालीचरन को एकांत में कहती है मंगलादेवी। एकदम अनुनय करके कहती है, "काली, तुम मत जाना। संथाल लोग नहीं मानेंगे; जरूर तीर चलावेंगे। मैं जानती हूँ। तुम नहीं जानते कालीबाबू, ये लोग कैसे होते हैं उनकी सूरतें भ्रम में डालनेवाली हैं। देखने से पता चलेगा कि बहुत सीधे हैं, मगर···। तुम मत जाना काली, तुम्हें मेरे सिर की कसम।"

ठीक ही तो है, जो सरगना मेंबर हैं, वे क्यों जाएँगे !

··वासुदेव, सुनरा और सनिचर भी नहीं जाएगा !

··हाँ प्यारे भी नहीं जाएँगे।

··सोमा जट जाएगा ? जाने दो, वह मेंबर नहीं है।

बालदेव जी तो ऐसी जगह जाएँगे ही नहीं। वहाँ हिंसा का भय है; वे नहीं जा सकते। ···तहसीलदार साहब लीडर हुए हैं, खुद जाएँ या लठैतों को भेजें। हिंसा करें या अहिंसा करें। बालदेव जी तो सिर्फ चवन्निया मेंबर हैं। बावनदास यदि रहता तो अभी अकेले सबको, मय तहसीलदार बिसनाथ के कानून के, मात कर देता। लेकिन उसका दिमाग खराब हो गया है। सात दिन हुए चिट्ठी लिखाने गया है, सो लौटा नहीं। गाँधी जी को चिट्ठी देगा। ··गाँधी जी को इतनी फुर्सत कहाँ है, बाबा, जो तुमको जवाब देंगे ? ··लेकिन नहीं, बचन ने बहुत बार चिट्ठी लिखवाई है और हर बार जवाब आया है—"भाई बावनदास जी, आपका खत मिला।" उस बार ससांक जी सबको पढ़कर सुना रहे थे—महात्मा जी ने बावनदास को परनाम लिखा है। बावनदास को महात्मा भी 'भगवान' कहते थे। ··· बावन जरूर अवतारी आदमी है। वह ठीक कहता था—भारथमाता और भी जार-बेजार रो रही है !

"मैया रे मैया ! बाबा हो बाबा !··"

कौन रोती है ? ··रमपियरिया रोती है, उसके भाई गनोरी को तीर लग गया ? कहाँ गया। किसने मारा ? ··संथालों ने ? कहाँ ? लोग भागे क्यों आ रहे हैं ? ·

गाँव में कुत्ते भूँक रहे हैं। कौए काँव-काँव कर रहे हैं। ···जोतखी काका ठीक कहते थे—गाँव में चील-काग उड़ेगा।··

"हँसेरी ! बलवा ! लाठी निकार रे !"

"कहाँ हँसेरी ?"

"भाला निकालो रे !"

"कहाँ हँसेरी ? कैसा बलवा ? क्या बात है ?"

"संथाल लोग तहसीलदार बिसनाथपरसाद के चालीस बीघावाले बीहन के खेत में बीहन लूट रहे हैं।"

"नई बंदोबस्तीवाली जमीन में ?"

"नहीं भाई, अपनी खास जमीन में, कोठी के पासवाली जमीन में, ···लाठी निकालो।"

"गनोरी ने हल्ला किया; तीर छोड़ दिया। जाँघ में लगा है तीर। लहू की नदी बह रही है। बेहोस है। इसपिताल में डाक्टर लाया गया है। ··संथाल लोग बेखौफ धान का बीचड़ उखाड़ रहे हैं।"

चलो ! चलो ! मारो ! ···साला संथाल ! बाहरी आदमी ! ···जान जाए तो जाए। तहसीलदार बिसनाथपरसाद की ही जमीन पर धावा किया है ! ···चलो रे !···

···भौं-भौं भूँ ऊँ-ऊँ ! कुत्ते परेशान हैं भूँकते-भूँकते।

···रिंग-रिंग-रिंग-रिंग !

···डा-डा-डा-डा-डा-डा··

संथालों के डिग्गा और मादल एक स्वर में बोल उठे—रिंग-रिंग-रिंग-रिंग रिंग ! डा-डा-डा-डा-डा !

आज रिंग-रिंग-ता-धिन-ता अथवा डा-डिग्गा-डा-डिग्गा नहीं सिर्फ रिंग-रिंग-रिंग···, ड-डा-डा-डा ! यह खेत में बजा रहा है, संथालिनों को सचेत कर रहा है, तुम लोग भी तैयार रहो··· डा-डा-डा-डा ! ··संथालिनें जवाब देतीं···रिं-रिं-रिं-रि ! अर्थात् तैयार है, जूड़े में फूल खोंसने में बस जितनी देर लगे ! तैयार हैं !·

"जै, काली माई की जै !" दो सौ गलों की आवाज सुनकर कालीथान के बड़गाछ पर बैठे हुए कौए एक ही साथ काँव-काँव कर उड़ते हैं। कुत्ते और भी जोर से भूँकने लगते हैं।

"जै ! काली माई की जै !"

"महात्मा गाँधी की जै !"

"इनकिलाब जिंदाबाद !"

"भारथ माता की जै !"

"सोशलिस्ट पाटी जिंदाबाद !"

"झंडा हिंदू राज का !"

"हिंदू राज की जै !"

"तहसीलदार बिस्नाथपरसाद की जै !"

"बालदेव जी की जै !"

"घेर लो चारों ओर से ! भागने न पावे !" ·· हो-हो-हो-हो !··

अब नारा नहीं। सिर्फ हो-हो-हो-हो !···

"घेर। घेर। ·मारो। हो-हो-हो !"

"तीर चला रहा है। लेट जाओ। ··तीर चलाओ !"

"मारो ? गुलेटा चलाओ।"

"बिरसा माँझी भागा जा रहा है, मारो भाला !"

··बिरसा पानी में गिर पड़ा—छप् ! भाला लग गया।

· सुखानू को क्या हुआ। तीर लग गया, कलेजे में ?

संथालिन भी तीर चलाती हैं ?

बच्चे भी ?

"बिरसा माँझी गिर पड़ल रे ! डा-डा-डा-डा-डा !"

...रिं-रिं-रिं-रिं ! "गिरने दो। तुम भी गिरो !"

"बैठके तीर चला सोनिया !"

"सुखी मुरमू गिरल रे !" डा-डा-डा-डा !

"गिरने दो ! ·तुम भी गिरो !" रिं-रिं !

"जगारी बेटा, ठीक निसाना लगा बेटा। हरगौरी तहसीलदार के कलेजे पर ! हाँ वाह बेटा !"

..डा-डा-डा-डा !" हरगौरी तहसीलदार गिरलरे !"

'गिरने दो !" · रि-रि-रिं-रिं !

...तहसीलदार ? हरगौरी तहसीलदार गिर पड़ा ? · भागो मत। ऐ ! सुनो ! तुम लोगों को अपना माँ-बहन की कसम, गुरु-देवता की कसम, काली किरिया ! ...जो भागे वह दोगला ! ·संथालो के तीर खतम हो रहे हैं। अब घेर के मारो। ·मंगलदास को सँभालो। चलो ! जै, काली माई की जै !

"मारो भाला ! अरे बच्चा नहीं है, इसी ने तहसीलदार को मारा है।"

"वाह बहादुर ! ठीक है। अब लगाओ गुलेटा उस बूढ़े को, साला डिंग्गा बजा रहा है !"

"भाग रहा है। साले सब भग रहे हैं। घेरो ! भागने न पावे ! सथालिनें पाट के खेत में छिपी हुई हैं। घेर लो।"

"...एकदम 'फिरी' ! आजादी है, जो जी में आवे करो ! बूढ़ी, जवान, बच्ची जो मिले। आजादी है। पाट का खेत है। कोई परवाह नहीं है। · फांसी हो या कालापानी, छोड़ो मत।"

संथालिनें भी रोती हैं, दर्द से छटपटाती हैं · चिल्ला-चिल्लाकर रोती हैं या गाती हैं ?

..कुहराम मचा हुआ है पाट के खेतों में, कोठी के जंगल में। कहाँ दो सौ आदमी और कहाँ दो दर्जन संथाल, डेढ़ दर्जन संथालिनें ! सब ठडा। सब ठंडा ?

संथालटोली के चार आदमी ठंडे हुए, सात घायल हुए और एक लड़के की हालत खराब है। संथालिनें दुहरे दर्द से कराह रही हैं।..

तहसीलदार की हँसेरी में दस गुंडे ठंडे हुए, बारह बुरी तरह जख्मी हुए और तीस आदमी को मामूली घाव लगा है।

संथालटोली को लूट लिया गया। तहसीलदार हरगौरी की हालत बहुत खराब है, शायद नहीं बचेंगे।

चालीस

जोतखी ठीक कहते थे–गाँव में चील-काग उड़ेंगे और पुलिस-दारोगा गली-गली में घूमेगा।

पुलिस-दारोगा, हवलदार और मलेटरी, चार हवागाड़ी में भरकर आए हैं।··· दुहाई माँ काली !

इसपी, कलक्टर, हाकिम अभी आनेवाला है।

लहास ! ···लहास ! ···बाप रे–कौन कहता था कि अँग्रेजबहादुर का अब राज नहीं रहेगा ?

"तहसीलदार हरगौरी भी मर गए ? ···ऐं ! कोई घर से मत निकलो ! पाखाना-पेसाब सब घर के ही अंदर करो। घर से निकले कि गिरिफ्फ कर लेगा। ···दुहाई काली माई !"

"बालदेव जी को दारोगा साहेब ने बुलाया है ? कलिया ···कालीचरन जी को भी ? ···देखें, ये दोनों तो किसी से डरनेवाले नहीं हैं, क्या होता है ? ···दो लीडर तो हैं।"

"ओ ! आप ही यहाँ के लीडर हैं" दारोगा साहब बालदेव जी से पूछते हैं। इसपिताल के फालतू घर में दारोगा साहब कचहरी लगाकर बैठे हैं, मलेटरी ने संथालों को गिरिफ्फ कर लिया है। जखमी, घायल और बूढ़े-बच्चों को भी !··· सबको गिरफ्तार किया है ? नहीं, जखमी लोगों को मरहम-पट्टी तो कल ही डाक्टर साहब ने कर दी है। दो संथाल और चौदह गैर-संथाल घायलों को पुरैनियाँ के बड़े इसपिताल भेजा गया है। सबों की लहास भी चली गई है। सिंघ जी, शिवशक्करसिंघ और हरेक टोला से दो-चार आदमी लहास के साथ गए हैं। न जाने कब लहास मिले ? ऊँह, चीर-फाड़कर मिलेगी ! हे भगवान !··

बालदेव जी क्या जवाब दें ?··· लीडर हैं। किसके लीडर ? संथालों के या गैर-संथालों के ?···खखारकर गले को साफ करते हुए बालदेव जी के मुँह से बस वही पुराना जवाब निकलता है, जो उसने हरगौरी को दिया था जिस दिन कलिया पगला गया था।

"नहीं हुजूर ! हम तो मूरख और गरीब ठहरे। मूरख आदमी, चाहे गरीब आदमी, कभी लीडर हुआ है हूजूर ?

दारोगा साहब बालदेव जी को पास की कुर्सी पर बैठने को कहते हैं, "अरे, हम आपको जानते हैं। बालदेव जी, बैठिए ?"

बासुदेव और सुंदर एक-दूसरे का मुँह देखते हैं। ···कालीचरन जी को कुछ पूछा भी नहीं ?··· लो, तहसीलदार साहब सँभाल लेते हैं।

"दारोगा साहब यही हैं, कालीचरनबाबू, यहाँ के सोशलिस्टों के लीडर ! बहादुर

हैं ! लेकिन सिर्फ बहादुर ही नहीं, मगज भी हैं !"

"ओ हो ! कालीचरन जी हैं ? आइए साहब, आप लोग तो साहब, क्या कहते हैं, जो न करवाइए !" दारोगा साहब मुँह में पान-जर्दा डालते हुए कहते हैं, "लेकिन यहाँ तो सुना कि आप लोगों ने बड़े दिमाग से काम लिया है। हमको तो सुबह आते ही सारी बातों का पता चल गया। तारीफ करने के काबिल ! वाह ! बैठिए !"

कालीचरन बैठते हुए कहता है, "देखिए दारोगा साहब यदि आपस की पंचायत से सारी बात का फैसला हो जाए तो हम लोगो को पागल कुत्ते ने नहीं काटा है जो..."

"आपस की पंचायत से ? यह खूनी केस ?" दारोगा साहब का पान भरा मुँह एकदम गोल हो जाता है।

"नहीं, यह नहीं, यही आधी बट्टेदारी का सवाल !"

"ओ !" दारोगा साहब ने पीक की कुल्ली फेंकते हुए कहा, "ओ ! सो तो ठीक है ! अरे आप ही हैं, सोशलिस्ट पार्टीवाले हैं। कहिए तो, जो काम पंचायत से चार आदमी की राय से नहीं होगा, वह क्या कहते हैं, तूल-फजूल से हो सकता है ?"

"हिंसा के रास्ते पर तो हरगिज जाना ही नही चाहिए।" बालदेव जी बहुत गभीर होकर कहते हैं।

"क्या कहते हैं !" दारोगा साहब बालदेव जी की बात में टीप का बंद लगा देते है, "क्या कहते हैं !" दारोगा साहब बात करते समय हाथ खूब चमकाते हैं और कनखी भी मारते हैं।

बासुदेव और सुनहरा एक-दूसरे को देखते हैं—बालदेव जी जानते ही क्या हैं जो बोलेंगे। देखा, कालीचरन जी ने कैसा गटगटाकर जवाब दे दिया।

"हिंसा अहिंसा का सवाल नही है बालदेव जी, असल है बुद्धि ! यहीं पर हमारी पार्टी के कोई और कामरेड रहते तो हो सकता है, दूसरी बात होती। बुद्धि की बात है।" कालीचरन बालदेव जी को जवाब देता है।

कालीचरन और बालदेव जी ने दारोगा जी को दिखला दिया कि बुद्धि है ! उमेर देखकर मत भूलिए दारोगा साहेब, अब वह बात नहीं हे !

"अच्छा तो बालदेव बाबू; जब यह वकूआ हुआ तो, क्या कहते हैं, आप कहाँ थे ?" दारोगा साहब पूछते हैं।

बालदेव जी फिर खखारते हैं—"ह ख जी ! हुजूर ! हम तो मठ पर थे। जी, बात यह है कि यह वैष्णव हैं। उस दिन हमको गुरु जी कंठी देनेवाले थे। सुबह तो धान दिलाने में ही कट गई। पिछले पहर को हम जैसे ही कंठी लेकर उठे कि ततमाटोली की रमपियरिया रोती हुई गई।"

"ओ ! आपको पहले से कुछ पता नही था ?" दारोगा साहब गंभीर होकर पूछते है।

"जी ! इनको क्या, किसी को पता नही।" खेलावनसिंघ यादव हिम्मत से

काम लेते हैं। आखिर दारोगा साहब के लिए इतना खाने का इंतजाम भी तो वही कर रहे हैं। यह दारोगा साहब से क्यों नहीं बोलेंगे ? तहसीलदार साहब कुछ नहीं बोलते हैं।

"ओ ! खेलावन जी आइए बैठिए !"

"ठीक है। हम यहीं हैं। ...जरा हुजूर, जल्दी किया जाए ! उधर ठंडा हो जाएगा।" खेलावन जी कहते हैं।

सिर्फ यहाँ के दोनों लीडर ही बुद्धिवाले नहीं। और लोग भी बुद्धि रखते हैं !...

"हुजूर ! हमारा लड़का अभी रहता तो हुजूर से अभी अंग्रेजी में बतिया लेता। रमैन जैसी एक किताब है, लाल, मोटी ...उसी में देखकर वह आपसे अंग्रेजी में बतिया लेता।" खेलावनसिंघ यादव कहते हैं।

"अच्छा ? आपका लड़का अंग्रेजी बोल लेता है ?"

"हाँ, डागडरबाबू से बराबर अंग्रेजी में ही बोल लेता है।"

"मोकदमा का राय भी पढ़ लेता है।" बालदेव जी कहते हैं।

"एड किलास में पढ़ता है।" कालीचरन जी कहते हैं।

"अच्छा, आप कहाँ तक पढ़े हैं कालीचरन जी ?...कोई स्कूल में नहीं ?... वाह साहब, क्या कहते हैं, आपकी बोली सुनकर तो कोई नहीं कह सकता कि आप जाहिल ...ओ ! पढ़-लिख लेते हैं, अखबार भी पढ़ लेते हैं ? वाह ! रमैन भी पढ़ते हैं ? महाभारत भी ? ओ, क्या कहते हैं कि...।"

"बालदेव भी 'अकबार' पढ़ता है," खेलावनसिंह यादव कहते हैं, "अकबार तो हम लोग भी पढ़ लेते हैं। ...लेकिन बहुत झूठ बात लिखता है अकबार में। उस बार लिखा था कि एक औरत थी, सो कुछ दिनों के बाद मर्द हो गई। कहिए भला !"

"अच्छा तो कालीचरन जी, आप कहाँ थे, जब यह वकूआ हुआ ?" दारोगा साहब कमर के बेल्ट को खोलते हुए कहते हैं।

अगमू चौकीदार को डर होता है, कहीं दारोगा जी पेटी खोलकर मारना न शुरू कर दें बालदेव और कालीचरन जी को। ...जहाँ दारोगा जी पेटी खालते हैं कि अगमू का चेहरा फक् हो जाता है। ...नहीं, ऐसा नहीं कर सकते हैं दारोगा जी !

"जी, मैं तो उसी दिन सुबह को धान दिलाकर, ठीक बारह बजे दिन में ही पुरैनियाँ चला गया था। तहसीलदार हरगौरी ...तहसीलदार बिस्नाथपरसाद जी जानते हैं।"

"ओ ! आप पुरैनियाँ गए थे।" दारोगा साहब एक लंबी साँस छोड़ते हैं।

"अच्छा, तो अब उस पहर को काम कीजिएगा दारोगा साहब !" तहसीलदार साहब कहते हैं।

"नहीं तहसीलदार साहब ! एम.पी. आनेवाले हैं। हमको अभी सब काम खत्म

कर रखना है। गवाहों का इजहार...''

"जी, कुछ असल गवाही, दो-तीन लीजिए। और सब बाद में। ...अरे कालीबाबू, बालदेवबाबू, तुम लोग तो जो सच्ची बात है, वही कहोगे। कोई झूठी गवाही तो नहीं ...लिख लीजिए इन दोनों के बयान, दस्तखत करना दोनों जानते हैं।"

"आप लोगों का क्या खयाल है ?" दारोगा साहब धीरे से पूछते हैं।

"हाँ, दसखत करने में क्या है ?" कालीचरन कहता है।

...कालीचरन जी हाथ झाड़कर दस्तखत करते हैं और बालदेव जी बड़े 'परेम' से आस्ते-आस्ते लिखते हैं। ...भाई बालदेव जी सचमुच में साधु हैं।

"बलदव ?" दारोगा साहब कहते हैं, "बालदेव जी, जरा 'ब' में एक लाठी लगा दीजिए और 'द' के ऊपर, क्या कहते हैं, एक तलवार-सी। और बाकलम खुद !"

"दारोगा साहब, बालदेव जी नाम में भी लाठी-तलवार नहीं लगाते हैं। हिंसाबाद...।" कालीचरन मुस्कराकर खड़ा हो जाता है।

दारोगा साहब ठठाकर हँस पडते हैं। इसके बाद सभी लोग हँस पड़ते हैं।

अलबत्ता जवाब दिया कालीचरन जी ने। दारोगा साहब पानी-पानी हो गए।

.देखो ! बुद्धि है या नहीं ?

इकतालीस

नौ आसामी का चालान कर दिया।

नौ संथालों के अलावा जो लोग घायल होकर इसपिताल में पड़े हैं वे लोग भी गिरिफ्फ हैं। पुरैनियाँ इसपिताल में बंदूकवाले मलेटरी का पहरा है।

गैर-संथालों में कोई गिरिफ्फ नहीं हुआ। लेकिन, यह मत समझो कि मुफ्त में यह काम हुआ है। .दारोगा साहब कहने लगे कि खेलावन जी, आपके बारे में एस.पी. साहब को संदेह हो गया है कि आपने सभी यादवों को हँसरी में जाने के लिए जरूर हुकुम दिया होगा। ..खेलावन जी की हालत खराब हो गई। वह तो तहसीलदार भाई थे, तो पाँच हजार पर बात टूट गई। नहीं तो नहीं तो अभी बड़े घर की हवा खाते रहते खेलावन जी ! सिंघ जी घर में नहीं थे; शिवशक्करसिंघ भी नहीं। अब सिंघ जी लोगो के मन में क्या है सो कौन जाने ? ...दारोगा भी तो राजपूत ही है। आदमी के मन का कुछ ठिकाना नहीं, कब क्या करे। ...मुफ्त में सबकी गर्दन नहीं छूटी है। पाँच हजार !

तहसीलदार बिस्नाथ को कुछ लगा कि नहीं ? ···सुमरितदास बेतार को आज तीन दिनों से पेट में सूल हो गया है, नहीं तो सब बात कह जाता। ···अरे ! बहुत दिनों जिएँगे सुमरितदास जी ! बहुत उमेर है !"

"तो हमारा उमेर तुम लोग क्या लगाते हो ?"

"यही चालीस।"

"चालीस नहीं पैंतीस। ···जामुन का सिरका बिना पानी के पी गए थे, इसीलिए दाँत सब झड़ गए।"

"अच्छा सुमरितदास जी, कुछ पता है कि···?"

"अरे ! यह मत समझो कि सुमरितदास सूल से घर में पड़ा हुआ था। रामझरोखे बैठके सबका मुजरा लें···। पूछो, क्या जानना चाहते हो ?"

"क्या तहसीलदार साहेब को भी रुपैया लगा है ?"

"तहसीलदार बिस्नाथपरसाद को इतना बेकूफ नहीं समझना। वह दारोगा तो यह तहसीलदार। 'तुम कौआ तो हम कैथ' वाली कहानी नहीं सुने हो ?"

"तहसीलदार हरगौरी बेचारा···"

"अति संघर्ष करे जो कोउ, अनल प्रगट चंदन ते होहिं ! सियावर रामचंद्र की जै !"

"लेकिन राजपूतटोले को तो इसपी साहेब भी नहीं छोड़ सकते हैं। जानते हो इसपी साहेब क्या कहते थे ? "···यह समझ में नहीं आता है कि तहसीलदार बिस्नाथपरसाद की जमीन से बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरगौरीसिंघ क्यों गए ! जरूर कोई बात है !" ···सिंघ जी को एक चरन लगेगा।"

"गवाही में किन लोगों के नाम हैं ?"

"अरे, गवाही क्या, बोलो तुम्हीं, ईमान-धरम से कि संथाल लोग ने जोर-जबर्दस्ती किया है या नहीं ?"

"इसमें क्या संदेह है !"

"तो गवाही के लिए कोई बात नहीं। ···लेकिन गाँव की तकदीर चमकी है। इतना बड़ा केस कभी हाथ नहीं लगेगा। इसमें जो गवाही देने जाएगा, उसके तो तीन-तीन खिलानेवाले रहेंगे। तीनों एक ही केस में नत्थी हैं। समझे ? ···खबरदार ! मेरा नाम नहीं लेना। हाँ ! · और मेरा भी तो फैसला नहीं हुआ है। हमको क्या देते हैं लोग ? जितना कागज-पत्तर, लिखा-पढ़ी होगी, सब तो सुमरितदास के मत्थे पड़ेगा। लेकिन इस बार नहीं। पहले फैसला कर लें।"

"संथालों में किस-किसकी गवाही हुई ?"

"अरे, संथालटोली में गवाह आवेगा कहाँ से, सभी तो आसामी हैं। बड़का माझी का बारह साल का बेटा भी। ···दारोगा जी ने जब पूछा कि बताओ क्यों बीचड़ लूट रहे थे, तो बिरसा ने जवाब दिया कि हम लगाया है। इसके बाद, दारोगा जी ने झाड़-झपटके पूछा तो बिरसा के बाद सबों ने तुरंत कबूल कर लिया कि बीचड़ तहसीलदार बिस्नाथपरसाद का है। औरतों और बच्चों ने भी

कहा–तहसीलदार का बीचड़ है। तब ? उखाड़ता था जबर्दस्ती क्यों तुम लोग ? तो जवाब दिया कि जमींदारी परथा खत्तम हो गई, लेकिन हमारे गाँव के जमींदारों ने मिलकर हमारी जमीन छुड़ा ली है। इसीलिए लूट लिया।"

"हा-हा-हा-हा ! साफ जवाब ! जमीन छुड़ा लिया तो बीहन लूट लिया ! हा-हा-हा ! सच ? काली किरिया ! ऐसा ही जवाब दिया ?"

"नहीं तो तुम समझते हो कि सुमरितदास झूठ कहता है ? अरे, यदि संथालों ने ऐसा बयान नहीं दिया होता तो क्या समझते हो, तुम लोग अभी घर में बैठकर हा-हा ही-ही करते ? अभी जेहलखाना में कोल्हू पेड़ते रहते। समझे ! दारोगा जी ने भी सोचा कि आग लगते झोंपड़ा, जो मिले सो लाभ ! ···इसीलिए न कहा कि तहसीलदार इतना बेकूफ नहीं। तब, दारोगा जी का इलाका है, जो ऊपरी झाड़-झपड़, पान-सुपाड़ी वसूल सकें। इसमें तहसीलदार साहेब क्या कर सकते हैं ? ··सिंघ जी का पाँच हजार और शिवशक्करसिंघ को भी उतना ही लगेगा। ··डागडर से भी कुछ पूछा है दारोगा साहब ने ! पता नहीं, अंग्रेजी में क्या डिमडाम बात हुई। इसपी साहेब से भी डागडर साहेब अंग्रेजी मे ही बोल रहे थे। आदमी काबिल है यह डागडर ! · हरेक लहास के बारे में क्या लिखा है, जानते हो ? लिखा है कि संथालों की मार से मालूम होता है और घाव के मुँह देखकर मालूम होता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए ही इस पर हमला किया है। और, इधरवालों के लहास को लिखा ।"

" लहास ?"

लहास ! लाश ! पुलिस-दारोगा, मलेटरी ! मार ! जेहल !··· कालापानी ! नहीं, फाँसी ! ··सचमुच ! यदि तहसीलदार बिस्नाथपरसाद नहीं होते तो आज फाँसी ! ·कालीचरन के आफिस में जा·, से और बातों का पता लग जाएगा।

सोशलिस्ट पार्टी के आफिस में भीड़ लगी हुई है। ·कालीचरन ने कहा है, आज सुराजी, सोशलिस्ट और भगवान कीर्तन एक साथ गाए जाएँगे। सबसे पहले पुराने जमाने का कीर्तन नारदी-भठियाली कीर्तन होगा। बूढ़े लोगों के गले में अब भी जादू है !

आजु से बिराजु श्याम कदली के छैयाँ,
आवत मोहनलाल बंशी बजैयाँ !
पीतबसन मकराकृत कुंडल···!

यही नारदी है ! मृदंग कैसा बजता है–धिधनक-तिधनक ! धिधनक-तिधनक !··

"अब किरांती कीर्तन! "···गगा रे जमुनवाँ' बहुत पुराना हो गया। वह रुलानेवाला कीर्तन मत गवाइए कालीचरन जी !···"

. बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंघ !

···है ! वाह रे सुनरा ! क्या सँभाला है ! वाह ! भारत का वीर लड़ाका था, मस्ताना भगतसिंघ ! ···सिंघ ? भगतसिंघ कौन बता कौन जात था ?

मस्ताना भगतसिंघ जानते हो ? ···कालीचरन जी कहते थे, पाँच बार फाँसी की रस्सी खींचा। दस-दस आदमी एक-एक ओर लटक गए। खींचने लगे, खींचते रहे और उधर भगतसिंघ के मुँह से निकलता जाता था—इनकिलाब, जिंदाबाघ।

"इनकिलाब, जिंदाबाद ?"

जै ! जै···

"हाँ, आज, कौन इतने जोरों से नारा लगा रहा है ? सोमा जट ? ···अरे बाप ! तीन दिन से एकदम लापता था ! एकदम लापता ! लेकिन जानते हो, हँसेरी में सबसे ज्यादा मार किसने किया था ? चार को सोमा ने अकेले गिराया है।···हाँ, खबरदार ! तहसीलदार साहेब ने मना किया है, सोमा का नाम कोई नहीं ले।··· दागी है ! लेकिन, देखते हैं, इधर सुधर रहा है। कालीचरन जी सुधार देंगे।···

अब एक सुराजी कीर्तन होना चाहिए। हाँ, भाई ! सब संतन की जै बोलो। गाँव के देवताओं के परताप से, काली माय की कृपा से, महात्मा जी की दया से और किरांती···इनकिलास जिंदाबाघ से, गाँव के लोग बालबाल बच गए। सभी कीर्तन होना चाहिए।

भारत का डंका लंका में
बजवाया बीर जमाहिर ने

राजबल्ली महतो भी हरमुनिया बजाता है। कहाँ सीखा ? ···सिरिफ दाँत बड़े हैं सामनेवाले। गाने के समय मुँह कुदाली की तरह हो जाता है। ··भारथ का डंका लंका में··

··बालदेव जी कहाँ हैं ? सुना कि बालदेव जी साधु हो रहे हैं। कंठी ले ली है। कंठी पर किसका नाम जपा करेंगे ? महतमा जी का या सतगुरु का ?

चर्खा स्कूल की मास्टरनी जी कितना मुटा गई हैं ! अरे बाप रे ! ··सिरिफ कालीचरन जी से ही हँसकर बोलती हैं। कालीचरन जी आज कुर्ता में गोल-गोल क्या लगाए हुए हैं ? सुसलिट पाटी का मोहर है ? ··देखा, कालीचरन जी मोहरवाले लीडर हो गए हैं। बालदेव जी को, बावनदास को या तहसीलदार साहब को मोहर है ? मास्टरनी जी उसमें क्या लगा रही हैं ? फूल ? वाह ! अब और बना ! फूलमोहर छाप सिकरेट ! ···डाकडर साहब का नौकर कहाँ आया है ! ···ऐ ! चुप रहो ! चुप रहो ! शांती, शांती !···

"कालीचरन जी को डाक्टरबाबू बुलाते हैं," प्यारू मंगलादेवी से कहता है।···

"अ···ज्जा ! काली ! डाक्टरबाबू को निमंत्रण नहीं दिया ? तहसीलदार साहेब, खेलावन जी वगैरह तो कचहरी गए हैं। डाक्टर साहेब तो थे। ···जाओ, बुला रहे

हैं !"

क्या बात है ?··· जरूर कोई बात है। ···सुमरितदास बेतार कहाँ है ? एक बार बोलिए प्रेम से·

काली माई की जै !
महात्मा गाँधी की जै !
सोसलिट पाटी की जै !
इनकिलास···

"कालीचरन जी !"

"जी !"

"एक बात कहूँ ! बुरा मत मानिएगा। ··हरगौरी बाबू की माँ रो रही है और दूसरे टोले में भी औरतें रो रही हैं। आप लोग कीर्तन कर रहे हैं, यह अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे लगता है कि आज के कीर्तन से आपके भगवान भी दुःखी होंगे।"

"हम लोग भगवान को नहीं मानते," कामरेड बासुदेव ने बीच में ही टोक दिया।

"तुम चुप रहो !" कालीचरन कहता है, "हर जगह मत टपका करो।"

सब चुप हैं। हरगौरी की माँ अब भी रो रही है—राजा बेटा रे !·गौरी बेटा रे !

कालीचरन की आँखें भी सजल हो जाती हैं। बचपन से ही वह हरगौरी के साथ खेला-कूदा था। पूँजीवादी हो या बूर्जूआ, आखिर वह बचपन का साथी था। वह आज नहीं है। उसकी माँ रो रही है। यह हरगौरी की माँ नहीं रो रही है—सिर्फ 'माँ' रो रही है !

"वासुदेव !"

" "

"सबों से जाकर कहो—कीर्तन बंद करें। और कोठी के बगीचे में कल सोक-सभा होगी। ऐलान कर दो। समझे !"

बासुदेव सोचता है, सब बात तो समझे, मगर सोक-सभा का क्या मतलब ? उसमें गीत नहीं गावेगा, भाखन नहीं होगा ? बस, पाँच मिनट चुपचाप खड़ा रहना होगा ? वाह रे सभा !

बयालीस

हरगौरी की माँ रो रही है–"राजा बेटा रे ! ···गौरी बेटा रे !"

हरगौरी की सोलह साल की स्त्री बिना गौना के ही आई है। वह बहुत धीरे-धीरे रोती है। घूँघट के नीचे उसकी आँखें हमेशा बरसती रहती हैं।

शिवशक्करसिंघ पूर्णिया से लौट आए हैं। पुत्र का दाह-कर्म करके लौटे हुए पिता को देखकर डर लगता है। झुकी कमर पर हाथ रख शिवशक्करसिंघ बैलों की ओर देख रहे हैं। दो दिनों से घास-पानी छोड़े बैठे हैं दोनों बैल। आँखों में आँसू भर-भरकर, दोनों कभी-कभी चौकन्ना होकर इधर-उधर देखते हैं। फिर एक लंबी साँस लेकर एक-दूसरे को देखते हैं। एक-दूसरे को जीभ से चाटते हैं, मानो ढाढ़स बँधा रहे हों। ···हरगौरी इन्हें कितना प्यार करता था ! जब ये दो साल के बाछे थे, तभी से हरगौरी इनके साथ खेलता था। उसकी बोली सुनते ही दोनों खुशी से नाचने लगते थे। जान से भी बढ़कर प्यार करता था वह··।

शिवशक्करसिंघ की आँखें आँसू से धुँधली हो रही हैं। ···जब तक हरगौरी की लाश नहीं मिली थी, उन्हें अपने गिरफ्तार होने का डर लगा हुआ था। दाह-क्रिया समाप्त करके वोकील साहब ने रामकिरपालसिंघ को रोका, तो शिवशक्करसिंघ को लगा कि पुल नीचे धँस रहा है, धरती हिल रही है।

दारोगा साहब रामकिरपालसिंघ को गिरिफ्त करके उधर ले गए और शिवशक्करसिंघ अपने साथियों के साथ वहीं से लौट गए। टीसन तक दौड़ते ही आए थे। न जाने दारोगा साहब के मन में कब क्या हो भाग की बात हुई कि बिरजूसिंघ फिसलकर गिर गए और गाड़ी खड़ी हो गई, नहीं तो शिवशक्करसिंघ वहीं लाटफारम पर ही खड़े रह जाते। सबने तो कूद-कूदकर हत्था पकड़ लिया, सिंघ जी ने ज्यों ही एक हत्था में हाथ लगाया कि एक काले कोटवाले ने पकड़कर खींच लिया। सिकन्नर के पास जाते-जाते बिरजूसिंघ गिर गए तो गाड़ी खड़ी हो गई। बेचारे बिरजूसिंघ का एक हाथ कट गया। गाटबाबू[1] उसको कटिहार इसपिताल ले गए। जब तक घर नहीं पहुँच गए थे, शिवशक्करसिंघ को भरोसा नहीं था। क्या जाने किधर से लाल पगड़ीवाला निकल पड़े ! हसलगँव हाट के पास एक लाल चादरवाले को देखकर उनका कलेजा धुकधुका उठा था। ···भले आदमी ने लाल चादर की पगड़ी क्यों बाँध ली थी ?

घर जाते ही हरगौरी की माँ को छाती पीटते और जमीन पर लोटकर रोते देखा, तो वे भी बच्चों की तरह बिलख-बिलख रोने लगे। 'पुबरिया घर' के ओसारे पर हरगौरी की विधवा बहू घूँघट काढ़े रो रही थी। सामने दीवार पर हरगौरी

1. गार्डबाबू।

का फोटो टँगा हुआ है। रौतहट मेला में छपाया था–पगड़ी बाँधकर, हाथ में तलवार लेकर।

"बेटा रे ! ·गौरी बेटा रे !"

शिवशक्करसिंघ बैल की गर्दन पकड़कर रो रहे हैं–बेटा रे ! गौरी बेटा रे !"

सुमरितदास के कान में सबसे पहले आवाज पहुँचती है–ओ ! शिवशक्करसिंघ आ गए शायद !

"शिवशक्करबाबू ! रोइए मत ! देखिए, कलेजा पोख्ता कीजिए। ···आप ही इतना जी छोटा कीजिएगा तो औरतों का क्या हाल होगा ? हे ·! हरगौरी की माँ मर जाएगी। उसको समझाइए सिघ जी ! रोइए मत ! सुमरितदास शिवशक्करसिंघ को अकबार[1] में पकड़कर ले जाते हैं, समझाते हैं तथा आस-पास खडे लोगों से कहते हैं–"भाई ! क्या सभझाया जाए, किसको समझाया जाए ! पुत्रसोक से बढ़कर और कोई सोक क्या हो सकता है ! हम क्या समझाएँगे ! हमको तो ·खुद भोगा हुआ है। एक-एक कर चार लाल को कमला किनारे अपने हाथ से जला आए हैं। कलेजा पत्थल हो गया है। पुत्र सोक ! हे भगवान ! किसी को न हो।"

शिवशक्करसिंघ और जोर-जोर से रोने लगते हैं। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जाती है। सभी आकर यही जानना चाहते हैं कि और आगे क्या हुआ ? · हरगौरी की मृत्यु से ज्यादा दिल दहलानेवाली बात थी रामकिरपालसिंघ की गिरफ्तारी ! क्यों गिरफ्तारी किया ? कैसे गिरफ्तार हुआ ? और किन लोगों पर उवारंट है ? तहसीलदार बिस्नाथ पर भी ?

"तहसीलदारसाहब आ रहे है। मोढ़ा दो रे !"

तहसीलदार को देखते ही शिवशक्करसिंघ फिर धरती पर लोट गए और जोर-जोर से रोने लगे–"बिस्नाथ भैया ! कलेजा टूक-टूक हो रहा है। भैया हो ! कलेजा···"

तहसीलदारसाहब समझाते हैं–"शिवशक्करसिंघ, रोइए मत ! यह रोना तो जिंदगी-भर के लिए मिला है। एक दिन रोने से दिल ठंडा नही होगा। लेकिन, अभी रोने का समय नही। मालूम होता है, मुकदमा खराब हो गया। सिंघ जी के गिरफ्तार होने का मतलब ही है कि मुकदमा खराब हो गया। अब किसके सिर पर कौन आफत है, कौन जाने ! खूनी केस है ! उठिए, आपसे प्राइबिट में एक बात करना है।"

शिवशक्करसिंघ तुरत उठकर खड़े हो गए और तहसीलदार साहब के साथ दरवाजे से जरा दूर चले गए। सुमरितदास भी प्राइबिट सुनेगा · तब ठीक है, असल बात का पता भी तुरत लग जाएगा।

दरवाजे पर खड़े सभी एक ही साथ लंबी साँस छोड़ते हैं–अब किसके सिर पर क्या आफत है, कौन जाने ! हे भगवान !

1. बाँहों में भरकर, अँकवार।

"परनाम जोतखी काका !"

जोतखी काका के साथ खेलावन भी आया है। जोतखी जी पास के खाली मोढ़े पर बैठ जाते हैं। खेलावन भी तहसीलदार साहब के प्राइबिट में जाकर शरीक हो जाता है। जोतखी जी धीमी आवाज में लोगों से कहते हैं–तुम लोग यहाँ खड़े होकर क्या कर रहे हो ?" उनके कहने का ढंग ही ऐसा था, जिसके माने निकलते थे–"तुम लोगों की जान बलाई हुई क्या ? यहाँ से जितना जल्दी हो सके, खिसक जाओ ! वर्ना क्या ठिकाना !"

सब जल्दी से मौका देखकर उठ खड़े होते हैं। जोतखी जी कहते हैं–"यहीं चले आइए तहसीलदार ! सभी चले गए।"

"...लेकिन बात यह है कि एसपी ने तो यह नोक्स पकड़ा है–तहसीलदार विश्वनाथ की जमीन का बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरगौरी क्यों गया था ?" तहसीलदारसाहब कहते हैं।

"रामकिरपाल भैया तो हैं नहीं। हम आपको क्या क्या कहें ?...लेकिन मोकदमा तो आपका ही है। वाजिबन खर्चा तो ...आपको ही देना चाहिए।" शिवशक्करसिंघ गिड़गिड़ाकर कहते हैं।

जोतखी जी कुछ कहने के लिए खखारते हैं, लेकिन सुमरितदास बेतार बीच में ही जवाब देता है–"शिवशक्करसिंघ मोकदमा तहसीलदार बिस्नाथ का नहीं, तहसीलदार हरगौरी का है। पूछिए कैसे ? तो बात यह है कि असल में यह सब 'खुरखार', बेदखली-नीलामी तो हरगौरीबाबू ने ही शुरू किया था। हमसे ज्यादि कौन जानेगा ?...तहसीलदारी कारबार को आप क्या समझिएगा ? यदि बेदखली और नई बंदोबस्ती की बात नहीं उठती तो गाँव में यह लंकाकांड नहीं होता। पहले तो तहसीलदार हरगौरी ने ही सुरू किया। तहसीलदार बिस्नाथ उनके मदतगार हुए तो इन्हीं की जमीन पर संथालों ने धावा कर दिया। अब बताइए कि असल में यह मोकदमा किसका हुआ ? असल बात हम जानते हैं...दारोगा को दस हजार देना ही होगा।"

खेलावन कहता है–"तहसीलदार, अब जैसे भी हो, सब कोई सलाह करके गाँव के इस गरह को टालिए।"

"रामकिरपालभैया हैं नहीं, हम क्या कहेंगे ?" शिवशक्करसिंघ बस यही एक जवाब देते हैं।

बहुत देर के बाद जोतखी जी कहते हैं, "जो भी हो न्याय बात तो यही है कि विश्वनाथबाबू इस मुकदमे में अभी पूरी पैरवी करें।"

अंत में यही तय हुआ कि सबसे पहले रामकिरपालसिंघ जी को जमानत पर छुड़ाया जाए। इसके बाद सब मिलकर, जो वाजिब हो, सोचें। जो खर्चा होगा, सिंघ जी लोगों को देना होगा।

जोतखी जी ने मुस्कराते हुए कहा, "आज 'शोशलिस्ट' लोग शोक-शभा करने गए। एक भी आदमी शभा में नहीं गया। अब लोग शभा का अर्थ समझ रहे

हैं !···हुँ, कोई बात हुई तो फुच्च से शभा ! हम कहते थे न, गाँव में एक दिन चील-काग उड़ेगा !"

"जोतखी काका, सभा-जुलूस को दोख मत दीजिए।" कालीचरन बगल में, अँधेरे में खड़ा था।

"आओ काली !" तहसीलदार साहब हँसते हुए कहते हैं, "तुम लोगों को गवाही देनी होगी, सो जानते हो न ? बालदेव जी को भी। तुम्हीं दोनों लीडरों की गवाही पर सारी बात है।"

कालीचरन ने मोढ़े पर बैठते हुए कहा, "गवाही देनी होगी तो देंगे। जो बात जानते हैं वह कहने में क्या है ! दारोगा हो, इसपी हो, चाहे मजिस्टर-कलक्टर हो। सच्ची बात कहने में किसका डर है !"

"वाजिब बात ! वाजिब बात !" जोतखी जी को छोड़कर बाकी सभी कहते हैं–"वाजिब बात !"

तहसीलदार साहब का नौकर रनजीत दौड़ता-हाँफता आता है, "कमली दैया ··फिर !"

"तो यहाँ क्या है ? डाक्टर के यहाँ जाओ !" तहसीलदार साहब झुँझलाते हुए उठते हैं, "भगवान जाने क्या दवा करते हैं डाक्टर लोग ! इतने दिन हो गए, बीमारी सोलह आना से बाहर आना भी नहीं हुई !"

··तो असल में बात खुल गई ! मामले-मुकदमे की सोलहों आने बात जो है कालीचरन और बालदेव के हाथ में है !

"शिव हो ! शिव हो !" जोतखी काका उठते हुए कहते हैं, "कालीबाबू, कल जरा अपना हाथ दिखाना तो ! देखें, तुम्हारे हाथ की रेखा क्या कहती है। जन्मदिन और महीना याद है ?"

जोतखी जी के पेट में डर समा गया है–कालीचरन और बालदेव के ही हाथ में जब सबकुछ है तो वे जिसका नाम बतला दें, वह गिरिफ्फ हो जाएगा–तुरत। और कालीचरन, कालीचरन ही क्यों, बालदेव भी उन पर मन-ही-मन नाराज है ? ···बालदेव का तो उतना डर नहीं, मगर कलिया ··शिव हो ! शिव हो ···

तेंतालीस

लछमी दासनि आज मन के सभी दुआर खोल देगी। एक लक्ष दुआर !

"बालदेव जी !"

"जी !"

"रामदास फिर बौरा गया है। कल भंडारी से कह रहा था, लछमी से कहो एक दासी रखने की आज्ञा दे। ...कहिए तो भला !"

बालदेव जी क्या जवाब दें। दासी रखना धरम के खिलाफ है, यह उनको नहीं मालूम। ...दो-तीन महीने ही हुए, उन्होंने कंठी ली है। मठ के नियम-धरम, नेम-टेम के बारे में वे क्या कह सकते हैं ! लेकिन महंथ सेवादास ने भी तो...।

लछमी कहती है—"आप उसे समझाइए बालदेव जी ! वह बौरा गया है। आजकल ततमाटोली में आना-जाना शुरू कर दिया है। भगवान भगत ने कल हिसाब किया है, रमपियरिया की माँ को चार सेर चावल दिलवा दिया है रामदास ने। मैंने पूछा तो बोला—"मठ का पुराना नौकरान है, भूख से मरेंगे वे लोग ? जब दिन-भर बैठकर सिरिफ बीजक बाँचनेवाला दूध-मलाई खाता है तो...।" लछमी कहते-कहते रुक जाती है।

बालदेव जी आजकल कुछ 'मतिसून्न' हो गए हैं। सीधी बात भी समझ में नहीं आती। ...कुछ नहीं समझते हैं। कितने सीधे-सूधे हैं !

"आपका मठ पर रहना उसको पसंद नहीं।" लछमी बालदेव की ओर देखती है।

"तो हम चले जाते हैं। यदि हमारे रहने से मठ का नियम भंग होता है तो हम चले जाते हैं।"

"कहाँ जाइएगा ?"

"चन्ननपट्टी !"

लछमी का कलेजा धड़क उठता है—धक्...! इधर कई दिनों से बालदेव जी बहुत उदास रहते हैं। खाना-पीना भी बहुत कम हो गया है। कहीं घूमने-फिरने भी नहीं जाते। आसन पर पड़े बीजक पाठ करते रहते हैं। तहसीलदारसाहब कह गए हैं—'बालदेव जी की गवाही पर ही मुकदमे की सारी बात है।" बालदेव जी सुनकर बोले, गवाही के लिए हम कठघरा में नहीं चढ़ सकते। महतमा जी कहिन हैं—झगड़ू न जाहू कचहरिया, बेइमनवाँ के ठाठ जहाँ। ...आज मठ सूना है, आज ही लछमी सबकुछ कह देगी बालदेव जी से।

"आप चन्नपट्टी चले जाइएगा... और मैं ?"

"आप ?"

लछमी बालदेव जी की आँखों में आँखें डालकर देखती है। लछमी जब-जब इस तरह देखती है, बालदेव जी न जाने कहाँ खो जाता है ! एक मनोहर सुगंध हवा में फैल जाती है। पवित्र सुगंध ! बीजक से जैसी सुगंधी निकलती है।

"हाँ ! मैं कहाँ जाऊँगी ? मेरा क्या होगा ? महंथ की दासी बनकर ही मैं मठ पर रह सकती हूँ।" लछमी की आँखें भर आती हैं।

"नहीं लछमी, तुम ...रामदास की दासी नहीं। मैं... तुम... आप...।"

"बालदेव जी !" लछमी पागल की तरह बालदेव जी से लिपट जाती है, "रच्छा

करो बालदेव जी ! तुम कह दो एक बार–तुम्हें रामदास की दासी नहीं बनने दूँगा ! तुम बोलो–चन्ननपट्टी नहीं जाऊँगा। मुझे छोड़कर मत जाओ बालदेव ! दुहाई !"

"लछमी !" बालदेव जी लछमी को सँभालते हुए कहते हैं, "कोई देख लेगा।"

लछमी बालदेव जी के गले से हाथ छुड़ाकर अलग बैठ जाती है। सिर नीचा करके सिसकती है।

बालदेव जी की सारी देह झन्न-झन्न कर रही है। कनपट्टी के पास, लगता है, तपाए हुए नमक की पोटली है। ...एक बार आसरम में उसके कान में दर्द हुआ था। गाँगुली जी ने नमक की पोटली से सेंकने के लिए कहा था। ...कलेजा धड़-धड़ कर रहा है। लछमी की बाँह ठीक बालदेव के नाक से सट गई थी। लछमी के रोम-रोम से पवित्र सुगंधी निकलती है। चंदन की तरह मनोहर शीतल गंध निकल रही है। बालदेव का मन इस सुगंध में हेलडूब[1] कर रहा है। वह लछमी को छोड़कर चन्ननपट्टी में कैसे रह सकेगा ?... रूपमती, मायजी, लछमी !

"महतमा जी के पंथ को मत छोड़िए, बालदेव जी ! महतमा जी अवतारी पुरुख हैं। आजकल उदास क्यों रहते हैं ? महतमा जी पर भरोसा रखिए। जिस नैन से महतमा जी का दरसन किया है उसमें पाप को मत पैसने दीजिए। जिस कान से महतमा जी के उपदेस को सरबन किया है, उसमें माया की मीठी बोली को मत जाने दीजिए। महतमा जी सतगुरु के भगत हैं।" लछमी आँखें मूँदकर ध्यान की आसनी पर बैठ गई है। सफ़ेद मलमल की साड़ी पर बिखरे हुए लंबे-लंबे, काले बाल ! ...और गोरा मुख-मंडल ! ध्यान-आसन पर इस तरह बैठकर उपदेश देनेवाली यह लछमी कोई और है !. ..बालदेवजी के हाथ स्वयं ही जुड़ जाते हैं।

लछमी की पवित्र आत्मा की वाणी फिर मुखरित होती है–"दुनिया के दोख-गुन को देखने के पहले अपनी काया की ओर निहारो ! मन मैला तन सूथरो, उलटी जग की रीत ! ...पहले मन को साफ करो। मन पवित्र नहीं, इसलिए वह दुखी होता है, निरास होता है। तुम पंथ पर उदास होकर क्यों बैठ रहे हो ? डरते क्यों हो ?"

चलते-चलते पगु थका
नगर रहा नौ कोस,
बीचहिं में डेरा परॉं
कहहु कौन का दोख !

बालदेव को लगता है, खुद भारथमाता बोल रही है। यही रूप है ! ठीक यही रूप है जिसके पैर खून से लथपथ हैं। जिनके बाल बिखरे हुए हैं। ...बावनदास कहता था, भारथमाता जार-बेजार रो रही हैं। नहीं, माँ रो नहीं रही। अब पंथ बता रही है। उचित पंथ पर अनुचित करम करनेवालों को चेता रही है। बावनदास

1. डूबना-उतराना।

'भरम' गया है। ...और खुद बालदेव, महतमा जी के पंथ पर निरास और उदास होकर चल रहा है।

"...भारथमाता की जै ! महतमा जी की जै ! भारथमाता, भारथमाता !"

महंथ रामदास बहुत देर से कनैल गाछ की आड़ में खड़े होकर देख-सुन रहे थे। ...ध्यान-आसन पर बैठी हुई लछमी उपदेश दे रही है और बालदेव जी हाथ जोड़े एकटक से लछमी को देख रहे हैं। अचानक बालदेव जी लछमी के चरन पड़कर हल्ला करने लगे—भारथमाता की जै !

"भंडारी ! भंडारी !" महंथ रामदास पिछवाड़े की ओर भागते हुए चिल्लाते हैं, "भंडारी ! बालदेव पागल हो गया ! दौड़ो !"

मठ पर तुरंत भीड़ लग गई। डाक्टर साहब, तहसीलदारसाहब, कालीचरन और खेलावनसिंघ यादव भी आए हैं। बालदेव की बूढ़ी मौसी बीच-बीच में गा-गाकर रोने-रोने की सुरखुर[1] करती है, किंतु एक ही साथ इतने लोग डाँट देते हैं कि वह चुप हो जाती है और बारी-बारी से सबके मुँह की ओर देखती है। कुछ देर के बाद ही वह फिर शुरू करती है—"बाबू रे !..."

"ऐ बूढ़ी ! ठहर !...चुप !"

डाक्टर साहब बालदेव के बाँह में रबड़ की पट्टी बाँधकर, मुट्ठी से एक छोटे से गेंद को दबाते हैं। ...ओ ! इसी मीसीन से तो तहसीलदार की बेटी कमली का भी जाँच होता है ! ओ !

बालदेव जी रह-रहकर बाँहें ऐंठकर, हाथ छुड़ाकर उठ खड़े होते हैं, "आप लोग क्या समझते हैं मैं पागल हो गया हूँ ? कभी नहीं, हरगिस नहीं। ...हमको पागल कहते हैं ? इस गाँव में क्या था ? कोई जानता भी था इस गाँव का नाम ? इसको होल इंडिया में मशहूर कौन किया ? हमको छोड़ दीजिए ! हम महतमा जी के पंथ से नहीं हट सकते।"

भीड़ में कोई कहता है—"मठ पर रहने से गाँजा पीने की आदत हो जाती है।"

"कौन कहता है हम गाँजा पीते हैं ? दारू-गाँजा-भाँग की दूकान में पिकेटिन किया है हम, और हम गांजा पीयेंगे ? छिः छिः ! हम महतमा जी के पंथ को कभी नहीं छोड़ सकते। साच्छी हैं महतमा जी !"

बालदेव की बुढ़िया मौसी अब नहीं मानती। वह गा-गाकर रोती है—"डागडर ने तहसीलदार की बेटी कमला की बेमारी को उतारकर बालदेव पर चढ़ा दिया है। यह भले आदमी का काम नहीं। तहसीलदार की बेटी अभी तक कुमारी है। हे भगवान ! अब बालदेव का बिहा नहीं होगा ! दैबा रे दैबा !"

"बालदेव जी !" लछमी कहती है, "चित्त को सांत कीजिए।"

"ओ ! लछमी ! ...लछमी दासिन ! साहेब बंदगी ! ...ठीक है, कोई बात नहीं। हम पर कभी-कभी महतमा जी का भर[2] होता है। चुन्नी गुसाईं को तो रोज भोर को होता है।" बालदेव जी चुपचाप बैठ जाते हैं।

1. तैयारी। 2. देवी-देवता का सवार होना।

"डाकडर साहेब ! बालदेव जी इधर कई दिनों से बहुत उदास रहा करते थे। रात में नींद, पता नही, आती थी या नहीं। एक सप्ताह पहले, एक दिन बोखार लगा था। बोखार की पीली गोली एक ही साथ सात ठो खा गए।"

"पीली गोली ? सातों एक ही बार ?" डाक्टर आश्चर्य से पूछता है।

"जी ! बोखार की पीली गोली बाँटने के लिए मिली थी न ? उसी में से सात ठो एक ही बार खा गए। बोले कि रोज कौन् खाए ! एक ही साथ सात दिनों का खोराक ले लेते हैं !"

डाक्टर ठठाकर हँस पड़ता है, "कितना बढ़िया हिसाब है। बालदेव जी, दस दिनों तक घोल का शर्बत पीजिए। ठीक हो जाएगा। कुछ नहीं है, दवा की गर्मी ही है।"

रामकिरपालसिघ कहते हैं, "बिहदाना, अनार, संतोला का रस तो ठंडा होता है, गरमी को सांती करेगा। जेहल में हम सिरिफ बिहदाना-संतोला खाकर रहते थे। दो बिहदाना मेरे पास अभी भी हैं।"

बालदेव और कालीचरन के बयान पर ही सबकुछ है–जिसको चाहें फँसा दे, चाहें बचा दें। खुद दारोगा साहब कहते थे कि बालवेद की गवाही की बहुत कीमत है !

खेलावनसिंघ यादव आजकल कालीचरन का आगा-पीछा खूब करते हैं। पार्टी आफिस के बगल में एक चौखड़ा घर बनवा देंगे, सुनते हैं, 'साथी निवास' घर ! जैसा घर जिला पाटी आफिस में है। मीटिंग के दिन जितने साथी आते हैं, उसी घर मे रहते है। जो सिकरेटरी होगा, वह आफिस घर में रहेगा। कालीचरन ने खेलावनसिंघ से कहा तो वे तुरंत तैयार हो गए।

जोतखी काका ने कालीचरन का हाथ देखा है–"खूब नक्छत्तरबली है कालीचरन ! राजसभा में जश है। बेटा-बेटी भी ह। धन भी है। मगर एक गरह बड़ा 'जब्बड़' है।"

सिंघजी बालदेव जी को बिहदाना-संतोला खाने के लिए मना रहे हैं–"खा लो बालदेव जी ! बड़ा पूस्टीकारी चीज है। दवा की गरमी दूर हो जाएगी।"

गवाही ने बालदेव जी की खोई हुई कीमत को फिर बहुत तेजदर कर दिया है।

बालदेव जी कहते हैं, "महतमा जी का रस्ता हम कभी छोड़ नहीं सकते।

झगड़ू न जाहू कचहरिया, दललवा के ठाठ जहाँ।"

लेकिन बालदेव जी को तो कुछ भी कहना नहीं पड़ेगा। उनसे पूछा जाएगा कि यह दसखत आपका ही है ? ये कहेंगे कि–हाँ। बस, और कुछ कहना ही नहीं है। दसखत तो बालदेव जी ने किया था। यह तो झूठ बात नहीं। कालीचरन ने भी किया था।

चाहे जैसे भी हो, बालदेव जी को गवाही के लिए राजी करना ही होगा, नहीं तो सारे गाँव पर आफत है। कोठारिन लछमी दासिन को तहसीलदारसाहेब समझाकर कह दें तो बात बैठ जाएगी।

चवालीस

इधर कुछ दिनों से डाक्टर मौसी के यहाँ ज्यादा देर तक बैठने लगा है। मौसी के यहाँ जब तक रहता है, ऐसा लगता है मानो वह शीतल छाया के नीचे हो। काम में जी नहीं लगता है। ऐसा लगता है, उसका सारा उत्साह स्पिरिट की तरह उड़ गया। क्या होगा मानव-कल्याण करके ? मान लिया कि उसने कालाआजार की एक रामबाण औषधि का अनुसंधान कर लिया; अमृत की एक छोटी शीशी उसे हाथ लग गई। किंतु इसके बाद ? इसके बाद जो होता आया है, होगा। आखिर, पाँच आने का एक ऐंपुल पचास रुपए तक बिकेगा। यहाँ तक उसकी पहुँच नहीं होगी ! …और यहाँ का आदमी जीकर करेगा क्या ? ऐसी जिंदगी ? पशु से भी सीधे हैं ये इंसान। पशु से भी ज्यादा खूँखार हैं ये। …पेट ! यही इनकी बड़ी कमजोरी है। मौजूदा सामाजिक न्याय-विधान ने इन्हें अपने सैकड़ों बाजुओं मे जकड़कर ऐसा लाचार कर रखा है कि ये चूँ तक नहीं कर सकते। फिर भी ये जीना चाहते हैं। वह इन्हें बचाना चाहता है। क्या होगा ?

मौसी कहती है, "बेटा, तुम भागवत गीता नहीं पढ़ते ?"

डाक्टर मौसी की ओर अचकचाकर देखता है। जेल में उसने 'गीता-रहस्य' पढ़ने की चेष्टा की थी। ममता भी हमेशा 'गीता' तथा 'राम-कृष्ण कथामृत' झोली में लिए फिरती है। शायद समझती भी हो। ममता ने कई बार कहा है–"फुरसत के समय गीता जरूर पढ़ो, नहीं समझो, कुछ ढूँढ़ो। कुछ-न-कुछ जरूर मिलेगा।'

वह गीता पढ़ेगा !

"डाक्टर साहेब ! जय हिंद !"

"आओ कालीचरन ! क्या हाल है ? तुम भी पूर्णिया गए थे न ?"

"जी। अभी तुरत आ ही रहा हूँ। उम्मीद है, गाँव के सभी लोग छूट जाएँगे। हम लोगों को तो सत्तो बाबू वोकील ने जिरह में बहुत तोड़ना चाहा, मगर उनको भी मालूम हो गया। बालदेव जी की बात हम नहीं जानते, लेकिन सुना है वह भी खूब डटकर जवाब दहिन हैं। हमसे कहा कि आप पढ़ना-लिखना नही जानते, आप दसखत करना भी नहीं जानते। मैंने कहा, मैं पढ़ना लिखना भी जानता हूँ और दसखत करना भी जानता हूँ। दारोगा साहेब के सामने भी दसखत किया था। आप कहिए तो आपको भी दिखा दूँ। हाकिम ने कहा कि आप अपना दसखत चीन्हिए। हमको भी क्या चसमा की जरूरत है ? फटाक से चिन्हिए तो दिया !"

"लेकिन जिस कागज पर तुम लोगों ने दस्तखत किया था उसमे क्या लिखा हुआ था ?" डाक्टर पूछता है।

"क्या लिखा हुआ था ? सो तो सो तो नहीं पढ़ा। दारोगा साहेब ने तो

अंग्रेजी में लिखा था। सरकारी कागज पर कोई खिलाफ बात थोड़े लिखेगा !"

"हो-हो-हो-हो !" डाक्टर ठठाकर हँस पड़ता है, "और वालदेव जी ने भी वही कहा होगा !"

"हाँ, लेकिन इसमें हँसने की क्या बात है ?" कालीचरन जरा रूखा होकर कहता है।

"हाँ भाई, हँसने की बात नहीं। ...बात रोने की है कालीचरन ! मुझे तो कुछ बोलना नहीं चाहिए लेकिन ..! मत समझना कि संथालों की जमीन छुड़ाकर ही जमींदार संतोष कर लेगा। अब गाँव के किसानों की बारी आएगी। और तुमको तथा बालदेव जी को ही उन्होंने अपना पहला हथियार बनाकर इस्तेमाल किया है। यह रोने की बात नहीं ?" डाक्टर एक ही साँस में सब कह गया।

"लेकिन · लेकिन, आपने भी तो लिख दिया है कि संथालो की मार को देखकर पता चलता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए इन पर हमला किया है ?" कालीचरन तमतमा गया है।

"यह किसने कहा तुमसे ?" डाक्टर आश्चर्य से मुँह फाड़ते हुए कहता है, "ऐसा कहीं लिखा जाता है ? मैंने तो सिर्फ जख्म के बारे में लिखा है। संथाल अथवा गैर-संथाल मैं नहीं जानता। मैं तो रोग और घावों की जाति के बारे में ही जानता हूँ।" डाक्टर उत्तेजित होकर कहता ही जाता है, "काली, तुम लोगो को दोष भी तो नहीं दे सकता हूँ।'

"तहसीलदार साहब तो आपको खूब मानते हैं।" कालीचरन सीधी बात करना जानता है, "कमली दीदी · कमली दीऽदी· "

"क्या मतलब ?" डाक्टर बीच में ही टोक देता है।

"· क्या कहना चाहता है ? मौसी कहती हैं, कमली दीदी खूब मानती हैं। उसकी माँ भी इज्जत-खातिर करती हैं। यही न ?"

"हाँ।" कालीचरन को माना सहारा मिलता है।

"तो क्या हुआ ?" तहसीलदार साहब गाँव के रईस हैं। मुझसे उम्र मे बड़े हैं। कमला की बीमारी के चलते मुझे कुछ ज्यादा आना-जाना पड़ता है। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उन लोगों की इज्जत करता हूँ। लेकिन इसका यह मतलब नही कि मैं तहसीलदार साहब के अन्याय का भी समर्थन करूँगा अथवा पक्ष लूँगा !"

कमली बहुत देर तक मौसी के आँगन में खड़ी होकर सुन रही थी। डाक्टर की अंतिम बातों को सुनकर उसका कलेजा धक् धक् करने लगता है। वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। उस पर घटनाओं की प्रतिक्रिया बड़ी तीव्र गति से होती है। नाटकीय ढंग से वह प्रवेश करती है।

"इसीलिए आप आजकल मेरे यहाँ नहीं आते। इसीलिए आपने उस दिन कहला भेजा था कि तहसीलदार साहब कमली को पटना ले जाएँ, यहाँ इलाज नहीं होगा। क्यों ?"

सभी एक ही साथ चमक उठते हैं। मौसी हँसकर कहती है, "तू आज लड़ने के लिए कमर कसकर आई है ? पगली ! ...बैठ।"

डाक्टर कमली की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है—चेहरा लाल हो गया है कमला का। आँखें डबडबाई हुई हैं। गले के पास ही रग तीव्र गति से फड़क रही है। ...डाक्टर ने बहुत बड़ा अन्याय किया है। रक्त का दबाव जरूर बढ़ गया होगा। कमला के ओठ फड़क रहे हैं, थरथरा रहे हैं। ...वह रो पड़ती है—"मौसी !"

"कमला !" डाक्टर जोर से कहता है, "तुमनें तो कुछ समझा-बूझा नहीं और लगीं आकर बरसने। मैं तो कालीचरन को समझा रहा था कि यदि मैं किसी राजनीतिक पार्टी में होता तो ऐसा नहीं करता...।"

डाक्टर ने वातावरण को हल्का बनाने की पूरी कोशिश की। लेकिन अच्छा होता यदि कमला उससे रूठी रहती। इसी दिन के इंतजार में वह था। आज कमला को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता था। लेकिन अब वह चूक गया। ...अब परिणाम के लिए तैयार रहना था।

जब तक डाक्टर बोलता रहा, कमली चुपचाप सुनती रही। अचानक उसके मुख-मंडल पर छाए बादल फट गए। एक हल्की मुस्कुराहट उसके ओठों पर धीरे-धीरे जगने लगी, नाक के बगल की नीली रेखा धीरे-धीरे खिल रही है, मानो कमल की पंखुड़ियाँ धीरे-धीरे खुल रही हों।

मौसी चुपचाप कभी कमली की ओर, कभी डाक्टर की ओर देखती है। उसके ओंठों पर भी मंद मुस्कराहट खिंची हुई है।

"प्यारू मेरे यहाँ दो बार खोज गया है। शायद आज भी कोई खरगोश भाग गया है।" कमली मौन भंग करती गई। उसकी बोली सहज हो गई है।

कालीचरन कमली के चेहरे पर कुछ देखकर चमक उठता है। उससे बातें करते-करते, कभी-कभी मंगला के चेहरे पर भी ऐसे ही भाव आ जाते हैं। इसी तरह तुनुक-तुनुककर बोलती है। वह डाक्टर की ओर देखता है, फिर उठ खड़ा होता है, "अच्छा तो बैठिए डाक्टर साहब ! हम अभी चलते हैं। ...फिर कल भेंट करेंगे।"

मौसी भी उठकर जाते हुए कहती है, "तुम लोग चाय तो जरूर पीयोगे !"

कुछ देर तक दोनों चुप रहते हैं। ...कमली पास में पड़ी सीकी की बनी हुई फूलडलिया को उठाकर उसकी बुनावट देखने लगती है। डाक्टर मुस्कराते हुए पूछता है, "एक बात पूछूँ कमला, बुरा तो न मानोगी ? अपने बाप की शिकायत कोई नहीं बरदाश्त कर सकता है, क्यों ?"

"कैसे बरदाश्त कर सकता है कोई ?"

'मुझे क्या मालूम ? मुझे ...मुझको अपने बाप की याद नहीं।"

कमली मुस्कराती जाती है। कहती है, "विवाह के गीत में ...एक जगह शिवजी पार्वती के पिता की टोकरी-भर शिकायत करते हैं—

एक बेर गेलीं गौरा तोहरो नैहरवा से,
बइठे ले देलक पुआर,
कोदो के खिचुड़ी रँधाओल मैना सासू...!"

"हा-हा-हा-हा !"

"हा-हा-हा-हा !" दोनो ही एक साथ हँस पड़ते हैं। मानो पंछी का एक जोड़ा एक ही साथ दिल खोलकर किलक पड़ा हो। नर और नारी के पवित्र आकर्षण की रुपहली डोरी लकपक रही है। नर आगे बढ़ता है नारी को खींच लेता है.. ।

बड़ी-बड़ी, मद-भरी आँखों की जोड़ी ने मुस्कुराकर पूछा, "आप.. मेरी शिकायत बरदाश्त कर सकते हैं ?"

"रोज तो कर रहा हूँ।" दो लापरवाह आँखों ने मानो चुटकी ली, 'कमली दवा नहीं पीती है। कमली रात में देर तक बैठकर पढ़ती है कमली पगली है। पगली है कमली। तू पगली है ! तू मेरी पगली है ! पागल-पगली "

...अधरक मधु जब चाखन कान्ह,
तोहर शपथ हम किछु यदि जानि !

दूसरा खंड

एक

सुराज मिल गया ?

"अभी मिला नहीं है, पंद्रह तारीख को मिलेगा। ज्यादा दिनों की देर नहीं, अगले हफ्ता मे ही मिल जाएगा। दिल्ली में बातचीत हो गई। हिंदू लोग हिंदुस्थान में, मुसलमान लोग पाखिस्थान में चले जाएँगे।" बावनदास जी फिर एक खबर ले आए हैं। ताजा खबर !

दफा 40 की लोटस की तरह झूठ-मूठ कोई फाहरम तो नहीं लाया है। बावनदास ? झूठ नहीं सच बात है। डागडरबाबू के बेतार में भी बोला है, सुनते हैं।

"तहसीलदार साहेब भोज खिलाएँगे उस दिन," सुमरितदास बेतार घर-घर खबर फैला रहा है। "सब इसमिट[1] अभी-अभी हम पक्का करके आ रहे हैं। पूड़ी, जिलेबी, हलुआ, दही और चीनी !"

"जै हो ! जै हो !"

"महातमा गाँधी की जै !"

महंथ साहेब के भंडारा से भी बड़ा भोज होगा। तीन मेर[2] नाच होगा–बलवाही, बिदेसिया, कमला और महमदिया की नौटंगी कंपनी। कालीचरन का सुसील कीरतन भी होगा। पुरैनियाँ में अंग्रेजी बाजा आएगा।··· अरे ! अंग्रेजी बाजा नहीं जानते ? रौतहट मेला में सरकल के नाच में बजते नहीं सुना है–भेकर-भेकर भें-भें !·· धमदाहा-संकरपुर का बिदापद। बैंसगड़ा की बलवाही, औराही-हिंगना का भठियाली

1 एस्टिमेट। 2 दल।

भकतै[1]। सुध नारदी[2] गाते हैं औराहीवाले। कोयलू खोलवाहा और सीतानाथबाबू मुलगैन ! सीतानाथबाबू का गला बुढ़ारी में भी कितना तेज है !

"मुसलमानों का हिस्सा सुराज पाखिस्थान में चला जावेगा ? ...एकदम काटकर हिस्सा लेगा ?"

"हाँ, जब हिंदू-मुसलमान भाई-भाई हैं तो भैयारी हिस्सा तो रकम आठ आना के हिसाब से ही मिलेगा।"

"बावनदास ने सुराज को काटते देखा है या अंदाज से ही बोल रहा है। चलो, पूछें।"

बावनदास कहता है–"अरे सुराज क्या कद्दू-कोहड़ा है जो काटकर बँटेगा ?"

"...तब सुराजी कीरतन में जो कहा है कि 'जब तक फल सुराज नहीं पावे, गाँधी जी चरखा चलावें, मोहन हो ? गाँधी जी चरखा चलावें...' "

"कीर्तन की बात छोड़ो। सुराज माने..." बावनदास जी समझाते हैं, "सुराज माने अपना राज, भारथवासी का राज। अब अँगरेज लोग यहाँ राज नहीं कर सकते। ...'ए अँगरेजो। भारथ छोड़ो' क्यों कहा था गाँधी जी ने ? इसीलिए।"

"अपने गाँव का तो राज तहसीलदार साहेब को ही मिलेगा। राज पारबंगा के तहसीलदार हरगौरी तो अब हैं नहीं।"

बालदेव जी का दिमाग बहुत शांत हो गया है। जिस दिन उन्होंने परसाद उठाया[3], उसी दिन से माथा ठंडा हो गया। लछमी तीन-चार दिन तक सतसंग करती रही। आखिर बालदेव जी हार गए। बालदेव जी अब गृहस्थ नहीं रहे, साधू हो गए। ...मोछभदरा[4] करवाकर बालदेव जी का मुँह ठीक सोलह पटनियाँ आलू की तरह हो गया है।

"...साहेब बंदगी बालदेव जी !"

"साहेब बंदगी ! जाय हिंद !" बालदेव जी आजकल साहब बंदगी और जाय हिंद को एक साथ नत्थी करके बोलते हैं।

"जाय हिंद कौमरेड बालदेव जी !" कालीचरन मुट्ठी बाँधकर कहता है–कौमरेड !

"नहीं। हम कौमरेड नहीं है।" बालदेव जी ने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "हमको कौमरेड क्यों कहते हो ?"

"कौमरेड कोई गाली नहीं बालदेव जी ! कौमरेड माने साथी। जो भी देस का काम करे, पब्लिक का काम करे, वह कौमरेड है।" कालीचरन हँसते हुए कहता है।

"तुम नहीं जानते," बालदेव जी चिढ़कर कहते हैं, "तुम तो आज आए हो, हम सन् तीस से ही जानते हैं। टीक-मोंछ काटकर, मुर्गी का अंडा खिलाकर कौमरेड बनाया जाता है। कंफ-जेहल में कितने लोगों को कौमरेड होते देखा है। ...मोजफ्फरपुर के एक सोसलिस्ट नेता थे। उनका काम यही था–लोगों की टीक-मोंछ काटना।

1. भठियाली कीर्तन। 2. नारदी-सुर। 3. वैरागी धर्म स्वीकार करना। 4. क्षौर कर्म।

जेब में कैंची रखे रहते थे। जाति के बामन थे। ···और हमको कौमरेड का माने सिखाते हो तुम ?"

लगता है बालदेव जी फिर सनकेंगे।

सबों ने एकमत होकर कहा, "हाँ कालीचरनबाबू, यह गलती तुमसे हो गई। आज तुम लीडर हो गए हो, खुशी की बात है, लेकिन हो तो तुम बालदेव जी के ही चेला ! तुम मानो या नहीं मानो, बात वाजिब है।"

कालीचरन लजा जाता है। ··तब उस दिन सिकरेटरीसाहब जो कह रहे थे, बाप-बेटा दोनों कौमरेड हो सकता है ? ···शायद सुनने में ही गलती हो गई।··· वह अपनी गलती मान लेता है—"हाँ, अभिमन्नू-बध नाटक में अरजुन ने दुरनाचारज के पैर पर फूल का तीर मारा था।"

वाह रे कालीचरन ! अब बात समझता है ! पहले तो बात समझने के पहले ही लड़ाई कर लेता था।

बालदेव जी भी हँसते हैं। कहते हैं, "सुराज उतसब के लिए तुम लोगों की पाटी की ओर से क्या हुकुम आया है ?"

"ठीक है। सुराज क्या अकेले कँगरेस को ही मिला है ?"

"सुराज उतसब के दिन रहोगे या नहीं ?" बालदेव जी पूछते हैं।

"जरूर ! उस दिन हाथी पर भारथमाता की मुरती बैठाकर जुलूस निकलेगा," कालीचरन गर्व से छाती फुलाकर कहता है, "अपने गाँव का जुलूस, कटहा थाना में क्या, हौल इंडिया में फस्ट होगा। मुरती का औडर दे दिया है।"

बालदेव जी की आँखों के सामने भारतमाता के विभिन्न रूप आ रहे हैं—माँ, रूपमती, मायजी और लछमी।

··लछमी को हाथी पर नहीं बैठाया जा सकता है ? ··भारतमाता का रूप ? आजकल लछमी भी खद्धड़ पहनती है, चरखा कातती है। ···महीन सूत कातना तो वह पहले से ही जानती है।

जै ! भारथमाता की जै !

दो

मुकदमा में भी सुराज मिल गया।

सभी संथालों को दामुल हौज[1] हो गया है। धूमधाम से सेसन केस चला

1. आजीवन कारावास।

संथालों की ओर से भी पटना से बालिस्टर आया था। बालिस्टर का खर्चा संथालिनों ने गहना बेचकर दिया था। बालिस्टर पर भी बालिस्टर हैं। यदि इस मुकदमा में तहसीलदार साहेब जैसे कानूनची आदमी नहीं लगते तो इस खूनी केस से शिवशक्करसिंघ, रामकिरपालसिंघ और खेलावनसिंघ तो हरगिस नहीं छूटते।…खर्चा ? अरे भाई ! जान है तो जहान है ! जब फाँसी ही हो जाती तो जगह-जमीन, रुपैया-पैसा क्या काम देता ?

रामकिरपालसिंघ ने संथालटोली की नई बंदोबस्ती जमीन में से दस एकड़ तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद को लिख दी है…हाँ, सुमरितदास बेतार को भी चार कट्ठा जमीन मिली है। …खेलावनसिंह यादव को भी देन हो गया है… देन कैसे नहीं होगा भाई, पास में जितना कच्चा रुपया था वह तो दारोगा साहब के पान-सुपाड़ी में चला गया। पुराना पट्आ हाथ से पहले ही निकल गया था। इसीलिए करीब डेढ़ हजार हथफेर-पैंचा हो गया है। तहसीलदार साहेब ने कहा, कागज बनाने की क्या जरूरत है, जब सन-पटुआ बिके तो दे देना।

मुकदमा उतसब भी सुराज उतसब के दिन होगा ? …हाँ, सुराज उतसब दिन में, मुकदमा उतसब रात में।

तहसीलदार साहब ने कहा है, महमदिया की नौटंकी कंपनी जितना में हो, एक सौ, दो सौ, जो ले, मगर सट्टा करा लेना। सुमरितदास कहते हैं–"इसमें कनकसन है, पीछे बतावेंगे।"

…महमदियावाले भी पूरी तैयारी कर रहे है। नखलौ से बाई जी मँगाया है, चंदा करके। नौटंकी के कंपनी[1] हैं नितलरैन बाबू। लछमी महारानी ने उनको खूब निहारा हैं, अपनी आँखों से ही निहारा है।…

इस इलाके के मँझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूँजी हो गई, तंबाकू, धान, पाट और मिर्चा का भाव एक साल चढ गया, घर में शादी-गमी नहीं हुई तो वह तुरंत टनमना[2] जाते हैं। यदि मालिक जवान हो तो तुरंत औन-पौन करने लगता है। हरमुनियाँ, फर्श, शतरंजी, शामियाना, जाजिम, लैट, पंचलैट, पहाड़िया घोड़ा, शंपनी, टेबल-कुर्सी, बेंच खरीदकर ढेर लगा देता है। इससे भी जब गरमी कम नहीं होती है तब बन्नूक के लैसन के लिए आफिसरों को डाली देना शुरू करता है। …लालबाग मेला के समय रात-रात-भर मुजरा सुनता है और दिन-भर आफिसरों के साथ कचहरी में घूमता है। बन्नूक के लैसन के बाद नौटंकी कंपनी खोलता है। इससे भी मगज ठंडा नहीं होता तो कोई खूनी केस होकर समापत्तन[3]। …महमदिया के नितलरैनबाबू नौटंकी के कंपनी हैं। तहसीलदार साहब ने कहा है, महमदिया की नौटंकी कंपनी का सट्टा लिखा जाना चाहिए।

"बड़ा भारी कनकशन है जी इसमें !" सुमरितदास बेतार कब तक पेट में बात रखे, "एकदम प्राइबिट गप है। महमदियावाली को क्यों बुलाया जा रहा है,

1. मालिक। 2. खुशहाल हो जाना। 3. समाप्त।

समझे नहीं ? नौटंकी की बाई जी के बिलौज पर टका साटा जाएगा। अब समझे कुछ ?"

संथाल लोग इस सुराज उतसब में नाचेंगे ...कहीं नाचने के समय तीर चला दें, तब ? नहीं, नहीं, डागडर साहेब बोलते थे कि संथालिनें खुद आकर कह गई हैं–नाचबौ। तहसीलदार साहेब को भी इसमें एतराज नहीं होना चाहिए।... भाई, जो भी कहो, संथाली नाच देखते समय होस गुम हो जाता है। जूड़े में सादे फूलों के गुच्छे, कसमकस देह, उजले दाँत की पाँती की चमक ! सफेद आँचल ! जब झुमुर-झुमुर कर नाचने लगती हैं तो मन करता है, नाच में उतर पड़ें।

डा-डिग्गा डा-डिग्गा !
रिं-रिं-ता धिन-ता !

आज से ही वे पराटिस कर रहे हैं। ...लेकिन माँदर और डिग्गा की बोली सुनकर डर लगता है। हँसेरी के दिन तो ऐसा लगता था कि जमराज नगाड़ा बजा रहा है और जमदूत सब उसी ताल पर नाचकर तीर चला रहे हैं।

तीन

"खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना !"

आजकल सुमरितदास बेतार का बोलबाला है। हमेशा एक नई खबर ! आजकल किसी भी टोले के नौजवान से भेंट होते ही वह फिक् से हँसकर एक दिल्लगी कर लेता है, "खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना !"

"माने ?"

"माने सुनोगे ? गरम जिलेबी का तासीर बड़ा गरम होता है। सर्दी से नाक बद हो, सिर दुख रहा हो, गरम जिलेबी खा ली ! भक से नाक खुल जाएगी। इतना जल्दी असर करता है ! ...आज हम डागडरी में जरा दिनाय[1] की दवा लाने के लिए गए थे। जानते हो ? डागडरबाबू ने फुलिया–अरे वही महँगूदास की बेटी फुलिया–को क्या कहा है ? ...फुलिया को गरमी की बेमारी हो गई है। चेहरे पर फुसरी-फुसरी[2]-सा हो गया है। डागडर ने कहा कि पुरैनियाँ जाओ। ...इसीलिए लौजमान लोगों से कहते हैं कि खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना।"

1. दाद। 2 दाने-फुंसी।

"लेकिन दास जी ! लौजमानों से पहले बूढ़ों को सँभालिए।"

"चुप, चुप ! सभी बेपर्द हो जाएँगे।"

सुमरितदास बेतार जब फिक् से हँसता है तो उसके लाल मसूड़े दिखाई पड़ते हैं। लाल हँसी हँसता है बेतार ! बेतार फिर फिक् से हँसकर कहता है, "और कुछ मालूम है ? महंथ रामदास जी रमपियरिया को दासिन रखेंगे। कोठारिन ने हुकुम दे दिया है। · बालदेव तो कोठारिन के पीछे बैरागी ही हो गया।"

कालीचरन का चेहरा अचानक उतर जाता है। अब मंगला के बारे में तो कुछ नहीं बोलेगा बेतार ? लेकिन बेतार जानता है कि कहाँ कैसी बात करनी चाहिए। बात में उससे जीतना मुश्किल है।

चरखा सेंटर के मास्टरो और मास्टरनी में लडाई-झगडे हो गए हैं। टुनटुन जी इस्तीफा देकर चले गए। दूसरे मास्टर साहब का सूल उखड़ गया; देस चले गए। अब अकेली मंगलादेवी वहाँ चरखा सेंटर के नाम पर गाँव-घर में घूमती है, बातें करती है गाँधी जी की, जमाहिरलाल की और सुराज की · कालीचरन कहता है, "हाथी पर भारथमाता की मुरती के पास बैठकर मुरछल[1] डुलाने के लिए मंगलादेवी को ही कहना चाहिए।"

बालदेव जी तहसीलदार साहब से कहते हैं, "लेकिन यदि अपने गाँव में औरत नहीं रहे तब बाहरी औरत से कहना चाहिए। यदि गाँव में ही मिल जाए ! कमली दीदी ही क्यो न बैठेंगी ?"

"नहीं, कमली की बीमारी का बड़ा डर है। कब क्या हो जाए !"

"तब कोठारिनी जी से कहा जाए। अब तो खद्धड पहनती हैं। सूब नेमटेम भी करती हैं। रोज नहाने के बाद महतमा जी की छापी पर फूल चढ़ाती हैं।"

लो मजा ! मंगला देवी को हाथी का बड़ा डर ! हाथी को देखते ही उसका सब सरीर केले की भालर[2] की तरह थर-थर काँपने लगता है। कालीचरन ने कितना समझाया-बुझाया, 'बूध-भरोसा' दिया, मगर तैयार नहीं हुई। आखिर में कहने लगी, कालीचरन यदि साथ में रहे तब वह हाथी पर चढ सकती है। लेकिन कालीचरन को लाज हो गई, सायद। बोला, "धत् !

दुलरिया भी अलबत्त बात जोड़ता है। इधर-उधर देखकर, मटकी[3] मारकर, देह-हाथ फैलाकर कहता है—"मंगला देवी जी जब लीला सिलवार पहनकर निकलती हैं तो लगता है कि मोकनी हथिनी[4] झूमती चली जा रही है।"

"हो-हो-हो-हो ! हा-हा खी-खी !"

भौऔथ ! औ औ !

डाक्टर साहब की घड़ी में ठीक दोपहर रात का 'टैम' देखकर टीन के करनाल में मुँह सटाकर कालीचरन ने हल्का किया, "भौ औ थ ··औ औ !"

इसके बाद लौजवानों दे दोहराया—"भारथ आ जा द !"

1 चँवर। 2. पत्ता। 3. कनखी। 4 जवान हथिनी।

मठ पर खँजड़ी डिमक उठी—डिम-डिम-डिम-डिमिक ! बालदेव जी भावावेश में चौकीदार की तरह हाँक लगाई— 'ह-ह-ह-ह-ह-ह ! भारथ आजाद हो गया। ह-ह-ह-ह-ह-ह-हो-य ! महतमा गाँधी की जै !"

रिं-रिं-ता-धिन-ता !
डा-डिग्गा !

संथालटोली में माँदर और डिग्गा घनघना उठते हैं।

तू-ऊ-ऊ-ऊ। मौसी शंख फूँकती हैं—तू-ऊ-ऊ-ऊ !

सात माइल दक्खिन, कटिहार की पाँचों बड़ी-बड़ी मिलों के भौंपे एक साथ बज रहे हैं—"भौं औं ओं ··धू ऊ ऊ !" आवाज एकदम साफ सुनाई पड़ती है।

"···डिल्ली में बाँटबखरा करके सुराज मिल गया। जै ! जै ! इसलामपुर पाखिस्थान में रहेगा या हिंदुस्थान में ? पाखिस्थान में ? अभी पाखिस्थान में मारे खुशी के खचाखच गोरू काट रहा होगा। ··धत्, गोरू ने क्या बिगाड़ा है ?··· बड़े भाग सं मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाखिस्थान लेकर ही छोड़ता !"

चार

भौ औ थ ! औ औ !

कालीचरन का गला बैठ गया। नारा लगाते समय भाथी की तरह गले से आवाज निकलती है—फोयें-फोंये सोयें-सोयें ! सुबह से कामरेड बासुदेव और कामरेड सोमा जट बारी-बारी से नारा लगा रहे हैं। ···नारा बंद नहीं हो, जारी रहे—'अष्ठजाम कीरतन' की तरह ! सुराज-उतसब जब तक खतम नहीं हो, नारा बंद नहीं हो !

टन-टनाक्, टन-टनाक् ! सजाई हुई मोकनी हथिनी जा रही है।

ढन-ढन, ढनाँग-ढनाँग ! कीर्तनियों का घड़ीघंट बोल रहा है।

धू-ऊ-ऊ-तु-तू-तू ! शंखनाद।

भो-भो-पों !··भों-पों-पों ! अँगरेजी बाजा।

तक-तक तक-तक धिनाग-धिनाग ! अमहरा का चानखोल[1] बजा।

पीं पीं पीं ई ई ई पीं पीं पीं··· ! चानखोलवालों की पीपही गा रही है :

चाँदो बनियाँ साजिलो बरात ओ हो
एक लाख हाथी सजिलो, दुई लाख घोड़ा

1. एक तरह का बाजा।

चार लाख पैदल, दुलहा बाला लखिंदर !

पीपही पर बिहला[1] नाच का बरातवाला गीत बजा रहा है।

धू-धू-धृ-धू-धू-तु-धुतु-धुतु ! करनाल बोलता है।

हिं-हि-हिं-हिं-हिं-हिं-हिं ! पहड़िया घोड़ा हिनहिनाया। किसका घोड़ा है ? धरमनाथबाबू का या हरिबाबू का ?

भारत में आयल सुराज
चलु सखी देखन को…

वह नया सुराजी कीर्तन किसने जोडा है ? वाह ! एकदम ताजा माल है। सुनो, सुनो !

कथि जे चढ़िये आयेल
भारथमाता
कथि जे चढ़ल सुराज
चलु सखी देखन को !
कथि जे चढ़िये आयेल
बीर जमाहिर
कथि पर गधी महराज। चलु सखी…
हाथी चढ़ल आवे भारथमाता
डोली में बैठल सुराज ! चलु सखी देखन को
घोड़ा चढ़िये आये बीर जमाहिर
पैदल गधी महराज। चलु सखी देखन को।

वाह ! खूब कीर्तन जोड़ा है उजाड़ू दास ने। उजाड़ू दास को नही चीन्हते हो ? बारा-मानिकपुर मे घर है। यह भी सन् तीस से ही सुराजी मे है।

कू-कू ! मोकनी हथिनी ठीक[2] ताल पर कैसा कूकती है ! वाह !

अलबत्त सजाया है हाथी को फिलवान ने। ठीक कपाल पर पुरैन[3] का फूल बनाया है–फुलखल्ली से। कितना रग-टीप किया है ! भारथमाता की मुरती तो ठीक दुरगा माई की मुरती जैसी लगती है ! लछमी, सरस्वती, पारबती-गौग और भारथमाता सब सगी बहन हैं। ओ। इसलिए ! बालदेव जी देखते हैं–सदा खद्दड की साडी ! गले मे फूल की माला ! लंबे-लबे काले बाल बिखरे हुए पीठ पर ! ठीक भारथमाता के ठोर[4] पर जैसी हँसी है कोठारिन वैसी ही हँसी हँस रही है और धीरे-धीरे मुरछल डुला रही है।

धिन, तक-तक-तक, नाक धिनाधिन, भठियाली कीर्तन का खोल बोल रहा है–ताक धिनाधिन, तिन्नक तिन्नक !

1 सती बेहला। 2 सिंघा बाजा। 3 कमल। 4 ओठ।

हॉ रे मोरी रे ए ए ए ! हॉ ऑ ऑ
ऑ ऑ ऑ आरो हे !
बहु कस्टे सृ रा ज पैलो रे
भारऽऽथऽऽ सतान ओ रे
कोटि कोटि छइला पोयेला
दिलो बो लि दान आ रे
हॉ रे मोरी रे ए ए ए ! हॉ ऑ ऑ !

औराही-हिंगना का भकतिया है बाबू। खेल नही। सीतानाथबाबू ने पूबा बोली[1] मै कैसा भठियाली कीर्तन जोडा है, देखो। सीतानाथबाबू ने जाडा है कि उनका छोटका बेटा महेदर ने ? महेदरबाबू भी गीत खूब जोडते है, सुना है।

झरक झरक झर-झर्र ररर ! एकपूरिया ढाल तो सब बाजा को मात कर देता है। सभी बाजा को 'झॉप' लिया है।

ढमाक् डमाक् डिम ! एकपूरिया ढोल के साथ एक छोटी ढोलकी बोलती है।

भौ औ थ ! औ ओ !

"महतमा गॉधी की जे !"

"जमाहिरलाल नेहरू की जे !"

"रजिन्नर बाबू की जे !

"जयपरगास जिदाबाघ !"

'यह आजादी झूठी है !"

"दस की जनता भूखी है।" यह नया नारा कौन लगाता है ?

"ते ! ते ! नही हुआ।"

"सुन लो पहले !'

"आजादी झूठी। मारो माने को ! कोन बोला ?"

'जरूर गॉव का नही, बाहरी आदमी है।"

"ए ऐ ! बाजा वद करो !'

"हटो ! हटो !"

"ऐ कालीचरन ! ऐ बासुदे !"

"बालदेव ! साती करो !"

"अरे ! बात क्या हुई है ?"

"हर बात मे ऐसे ही कोई 'लेकिन' लगाएगा ये लोग ?"

"सुनिए तहसीलदार साहेब ! बात यह हुई कि'" बालदेव जी आज फिर

1 बँगला बोली पूरब की बोली।

सनके है, "बात यह हुई कि बाबू कालीचरन के पेट मे रहता है कुछ और, और कहता है कुछ और ! हम इससे पहले ही पूछ लिए थे कि तुम्हारी पार्टी की ओर से क्या हुकुम हुआ है सुराज उतसब के बारे मे। तो बोला कि सुराज क्या सिरिफ कॅगरेसी को मिला है ! अभी देखिए, सुभलाभ करके जब हम लोग जुलूस निकाला है तो बाहरी आदमी को मॅगा करके हम लोगो के उतसब को भंग कर रहा है। यह कैसी बात है ! अरे भाई, हिगना-औराही का सोसलिट है तो हिंगना-औराही मे जाकर अपने गॉव का नारा लगावे। यहाँ काबिलयती छॉटने का क्या जरूरत था। अपना मुँह है–बस, लगा दिया नारा–यह आजादी झूठी है !"

"ठीक बात ! वाजिब बात !" जनता एक ही साथ कहती है।

"ओऍ सोऍ मार्ग " कालीचरन क्या कहता है, समझा नही जाता है।

"अरे हॉ-हॉ गलती हो गई !" कामरेड बासुदेव समझा रहा है। यानी कालीचरन जी की बात को जोर-जोर से सुना रहा है–"अरे गलती हो गई। वह नही जानता था। चमड की जीभ है, लटपटा गई। कालीचरन जी का इसमे कोई दोख नही !"

यहॉ के सोसलिट पाटी वालो को भी यह बात अच्छी नही लगती है। दूसरे गॉव से आकर यहॉ नारा लगाने की क्या जरूरत थी ? कालीचरन जी का गला बझ गया था तो बासुदव और सोमा तो नारा लगा ही रहे थे। बीच मे फुटानी छॉटकर सब गडबडा दिया।

"अच्छा ! अच्छा ! माफ कर दो !"

"हॉ-हॉ, छोडो ! आज सुराज का दिन है।"

टन्-टनाक् टन्-टनाक् ! मोकनी हथिनी फिर चली। जुलूस आगे बढा ! सभी ढोल-बाजे एक ही साथ बजने लगे। डिम् डिम् झर्र-झर्र पी-ओ-धू-ऊ-तक-तक-धिन।

भो-ओ-धू-तू-ताक्-धिनाधिन।

कूई-कू ! कूई-कू ! मोकनी हथिनी ताल पर कूकती है।

बालदेव जी फिर सनके हे क्या ? हाथ मे झडा लेकर अब हाथी के आगे-आगे नाच रहे है। झडे को इस तरह भॉजते है मानो गाटसाहेब रेलगाडी को झडी दिखला रहे हो ! हॉ भाई, सुराज का असल हथियार है तेरगा झडा। पहले के जमाने मे तलवार से लडाई होती थी, इसलिए लोग हाथ मे तलवार लेकर नाचते थे। सुराज की लडाई का हथियार झडा है। इसलिए झडा नचा रहे है बालदेव जी। सनके है नही। जिसका जो हथियार !

किर्र र र घन घन धडाम धा, धडाम धा ! नौटकी का नगाडा बोल रहा है।

भोज तो दिन मे ही खाते-खाते मन अघ गया है। इधर देरी तो आगे मे जगह नही मिलेगी। चलो, जल्दी !

कि-र्र-र-र-घन-घन धडाम धा धडाम-धा !

अरे खिस्सा होता गुरु अब सुनहु पत्र भगवानो की,
गॉधी महतमा वीर जमाहिर के सदा कलियानो की !

किर्र-र-घन-घन-धड़ाम-धा, धड़ाम-धा !

…कौन खेला होगा ? क्या कहा ? मस्ताना भगतसिंघ ! वाह ! अभी जाकर रंग औट किया। दिन से पूछते थे तो बोलता था कि सुलताना डाकू का पाठ होगा।

जिसका जो हथियार ! …भगतसिंह का पाठ खुद नितलरैनबाबू लिए हैं। दाहिने हाथ में पिस्तौल है और बाएँ हाथ में बेल के बराबर गोल क्या है ? बम !… अरे बाप ! हाँ, जिसका जो हथियार ! भगतसिंह का हथियार तो बम-पिस्तौल ही था।

किर्र-र-घन-घन-धड़ाम-धा !

अजी बेटा हम मादरे बतन भारथ का
हमे डर नहीं फाँसी सूली का…!

किर्र-र-किर-किर-धड़ाम-धड़ाम-धड़ाम !

भगतसिंघ नाच रहा है। एक हाथ में बम और दूसरे में पिस्तौल। नाचकर स्टेट[1] के एक कोने से दूसरे कोने पर जाता है। खूब नगाड़ा बजाता है नगड़ची ! टीक पन्नालाल कंपनी के तरह ! इटहरा का नकछेदी है। और कौन ऐसा साफ हाथ बजावेगा ! सिरिफ ताल काटने के समय जरा डर लगता है। ताल काटने के समय धड़ाम-धा, धड़ाम-धा ताल पर भगतसिंह बमवाले हाथ को दो बार पवलि की ओर चमकाता है, मानो बम फेंक रहा हो। अब जब-जब वह ऐसा करता है आगे में बैठे सभी लोग जरा करबट होकर एक-दूसरे की पीठ के पीछे मुँह छिपा लेते हैं। कौन डिकाना, कहीं इधर ही फेंक दे तब ? कभी नकली तलवार से देह नही कटता है क्या ? तब नकली बम हो चाहे असली, हाथ से छूट जाने पर कुछ-न-कुछ घवैल तो जरूर करेगा ! अरे, नखलौ[2] की बाई जी कहाँ है ? उसको सामने लाओ ! डोली में क्या छिपाकर रखा है ? ताली बजाओ तब निकलेगी।

"आ गई ! ऐ, देखो नखलौ की बाई जी को !"

"आकर चुपचाप खड़ी काहे हो गई ?"

"गला से तो जरूर पकड़ी जाएगी। गाने तो दो जरा !"

"रोगन-पौडर लगाकर खपसूरत लगती है। दिन में देखना, खपरी की पेंदी की तरह ।"

"हो-हो-हो ! साला दुलरिया बात बनाने जानता है।"

बाई जी शुरू करती है :

खादी के चुनरिया रँग दे छापेदार रे रँगरेजवा
वहुत दिनन से लागल बा मन हमार रे रँगरेजबा !

धड़-धडाम, धड़-धड़ाम !

1 स्टेज। 2 लखनऊ।

"डाकडर साहेब ! बालदेव जी इधर कई दिनों से बहुत उदास रहा करते थे। रात में नींद, पता नही, आती थी या नहीं। एक सप्ताह पहले, एक दिन बोखार लगा था। बोखार की पीली गोली एक ही साथ सात ठो खा गए।"

"पीली गोली ? सातों एक ही बार ?" डाक्टर आश्चर्य से पूछता है।

"जी ! बोखार की पीली गोली बाँटने के लिए मिली थी न ? उसी में से सात ठो एक ही बार खा गए। बोले कि रोज कौन् खाए ! एक ही साथ सात दिनों का खोराक ले लेते हैं !"

डाक्टर ठठाकर हँस पड़ता है, "कितना बढ़िया हिसाब है। बालदेव जी, दस दिनों तक घोल का शर्बत पीजिए। ठीक हो जाएगा। कुछ नहीं है, दवा की गर्मी ही है।"

रामकिरपालसिंघ कहते हैं, "बिहदाना, अनार, संतोला का रस तो ठंडा होता है, गरमी को साती करेगा। जेहल मे हम सिरिफ बिहदाना-सतोला खाकर रहते थे। दो बिहदाना मेरे पास अभी भी हैं।"

बालदेव और कालीचरन के बयान पर ही सबकुछ है—जिसको चाहें फँसा दें, चाहे बचा दे। खुद दारोगा साहब कहते थे कि बालवेद की गवाही की बहुत कीमत है !

खेलावनसिंघ यादव आजकल कालीचरन का आगा-पीछा खूब करते हैं। पार्टी आफिस के बगल मे एक चौखड़ा घर बनवा देगे, सुनते हैं, 'साथी निवास' घर ! जैसा घर जिला पाटी आफिस मे है। मीटिंग के दिन जितने साथी आते हैं, उसी घर में रहते है। जो सिकरेटरी होगा, वह आफिस घर में रहेगा। कालीचरन ने खेलावनसिंघ से कहा तो वे तुरंत तैयार हो गए।

जोतखी काका ने कालीचरन का हाथ देखा है—"खूब नक्छत्तरबली है कालीचरन ! राजसभा में जश है। बेटा-बेटी भी है ! धन भी है ! मगर एक गरह बड़ा 'जब्बड़' है।"

सिंघजी बालदेव जी को बिहदाना-सतोला खाने के लिए मना रहे हैं—"खा लो बालदेव जी ! बड़ा पूस्टीकारी चीज है। दवा की गरमी दूर हो जाएगी।"

गवाही ने बालदेव जी की खोई हुई कीमत को फिर बहुत तेजदर कर दिया है।

बालदेव जी कहते हैं, "महतमा जी का रस्ता हम कभी छोड नही सकते।

झगड़ू न जाहू कचहरिया, दललवा के ठाठ जहाँ।"

लेकिन बालदेव जी को तो कुछ भी कहना नहीं पड़ेगा। उनसे पूछा जाएगा कि यह दसखत आपका ही है ? ये कहेगे कि—हाँ। बस, और कुछ कहना ही नही है। दसखत तो बालदेव जी ने किया था। यह तो झूठ बात नहीं। कालीचरन ने भी किया था।

चाहे जैसे भी हो, बालदेव जी को गवाही के लिए राजी करना ही होगा, नही तो सारे गाँव पर आफत है। कोठारिन लछमी दासिन को तहसीलदारसाहेब समझाकर कह दे तो बात बैठ जाएगी।

चवालीस

इधर कुछ दिनों से डाक्टर मौसी के यहाँ ज्यादा देर तक बैठने लगा है। मौसी के यहाँ जब तक रहता है, ऐसा लगता है मानो वह शीतल छाया के नीचे हो। काम में जी नहीं लगता है। ऐसा लगता है, उसका सारा उत्साह स्पिरिट की तरह उड़ गया। क्या होगा मानव-कल्याण करके ? मान लिया कि उसने कालाआजार की एक रामबाण औषधि का अनुसंधान कर लिया; अमृत की एक छोटी शीशी उसे हाथ लग गई। किंतु इसके बाद ? इसके बाद जो होता आया है, होगा। आखिर, पाँच आने का एक ऐंपुल पचास रुपए तक बिकेगा। यहाँ तक उसकी पहुँच नहीं होगी ! ···और यहाँ का आदमी जीकर करेगा क्या ? ऐसी जिदगी ? पशु से भी सीधे हैं ये इंसान। पशु से भी ज्यादा खूँखार हैं ये। ··पेट ! यही इनकी बड़ी कमजोरी है। मौजूदा सामाजिक न्याय-विधान ने इन्हें अपने सैकड़ों बाजुओ में जकडकर ऐसा लाचार कर रखा है कि ये चूँ तक नहीं कर सकते। फिर भी ये जीना चाहते हैं। वह इन्हें बचाना चाहता है। क्या होगा ?

मौसी कहती है, "बेटा, तुम भागवत गीता नहीं पढ़ते ?"

डाक्टर मौसी की ओर अचकचाकर देखता है। जेल में उसने 'गीता-रहस्य' पढ़ने की चेष्टा की थी। ममता भी हमेशा 'गीता' तथा 'राम-कृष्ण कथामृत' झोली में लिए फिरती है। शायद समझती भी हो। ममता ने कई बार कहा है–"फुरसत के समय गीता जरूर पढ़ो, नहीं · समझे, कुछ ढूँढ़ो। कुछ-न-कुछ जरूर मिलेगा।'

वह गीता पढ़ेगा !

"डाक्टर साहेब ! जय हिंद !"

"आओ कालीचरन ! क्या हाल है ? तुम भी पूर्गिया गए थे न ?"

"जी। अभी तुरत आ ही रहा हूँ। उम्मीद है, गाँव के सभी लोग छूट जाएँगे। हम लोगो को तो सत्तो बाबू वोकील ने जिरह मे बहुत तोड़ना चाहा, मगर उनको भी मालूम हो गया। बालदेव जी की बात हम नहीं जानते, लेकिन सुना है वह भी खूब डटकर जवाब दहिन हैं। हमसे कहा कि आप पढ़ना-लिखना नही जानते, आप दसखत करना भी नहीं जानते। मैंने कहा, मै पढ़ना-लिखना भी जानता हूँ और दसखत करना भी जानता हूँ। दारोगा साहेब के सामने भी दसखत किया था। आप कहिए तो आपको भी दिखा दूँ। हाकिम ने कहा कि आप अपना दसखत चीन्हिए। हमको भी क्या चसमा की जरूरत है ? फटाक से चिन्हिए तो दिया !"

"लेकिन जिस कागज पर तुम लोगों ने दस्तखत किया था उसमे क्या लिखा हुआ था ?" डाक्टर पूछता है।

"क्या लिखा हुआ था ? सो तो ·सो तो नहीं पढ़ा। दारोगा साहेब ने तो

अग्रेजी मे लिखा था। सरकारी कागज पर कोई खिलाफ बात थोडे लिखेगा !"

"हो-हो-हो-हो !" डाक्टर ठठाकर हँस पडता है, "और वालदेव जी ने भी वही कहा होगा !"

"हॉ, लेकिन इसमे हॅसने की क्या बात है ?" कालीचरन जरा रूखा होकर कहता है।

"हॉ भाई, हॅसने की बात नही। बात रोने की है कालीचरन ! मुझे तो कुछ बोलना नही चाहिए लेकिन ! मत समझना कि सथालो की जमीन छुडाकर ही जमीदार सतोष कर लेगा। अब गॉव के किसानो की बारी आएगी। और तुमको तथा बालदेव जी को ही उन्होने अपना पहला हथियार बनाकर इस्तेमाल किया है। यह रोने की बात नही ?" डाक्टर एक ही सॉस मे सब कह गया।

"लेकिन लेकिन, आपने भी तो लिख दिया है कि सथालो की मार को देखकर पता चलता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए इन पर हमला किया है ?" कालीचरन तमतमा गया है।

"यह किसने कहा तुमसे ?" डाक्टर आश्चर्य मे मुँह फाडते हुए कहता है, "ऐसा कहीं लिखा जाता है ? मैने तो सिर्फ जख्म के बारे मे लिखा है। सथाल अथवा गैर-सथाल मै नही जानता। मै तो रोग और घावो की जाति के बारे मे ही जानता हूँ।" डाक्टर उत्तेजित होकर कहता ही जाता है, "काली, तुम लोगो को दोष भी तो नही दे सकता हूँ।"

"तहसीलदार साहब तो आपको खूब मानते हैं।" कालीचरन सीधी बात करना जानता है, "कमली दीदी कमली दीदी "

"क्या मतलब ?" डाक्टर बीच मे ही टोक देता है।

" क्या कहना चाहता है ? मौसी कहती है, कमली दीदी खूब मानती है। उसकी मॉ भी इज्जत-खातिर करती हैं। यही न ?"

"हॉ।" कालीचरन को मानो सहारा मिलता है।

"तो क्या हुआ ?" तहसीलदार साहब गॉव के रईस है। मुझसे उम्र मे बडे है। कमला की बीमारी के चलते मुझे कुछ ज्यादा आना जाना पडता है। वे मुझे बहुत प्यार करते है। मै भी उन लोगो की इज्जत करता हूँ। लेकिन इसका यह मतलब नही कि मै तहसीलदार साहब के अन्याय का भी समर्थन करूगा अथवा पक्ष लूँगा !"

कमली बहुत देर तक मौसी के ऑगन मे खडी होकर सुन रही थी। डाक्टर की अतिम बातो को सुनकर उसका कलेजा धक धक करने लगता है। वह अपने को सँभाल नही सकती है। उस पर घटनाओ की प्रतिक्रिया बडी तीव्र गति से होती है। नाटकीय ढग से वह प्रवेश करती है।

"इसीलिए आप आजकल मेरे यहॉ नही आते। इसीलिए आपने उस दिन कहला भेजा था कि तहसीलदार साहब कमली को पटना ले जाएँ, यहा इलाज नही होगा। क्यो ?"

सभी एक ही साथ चमक उठते हैं। मौसी हँसकर कहती है, "तू आज लड़ने के लिए कमर कसकर आई है ? पगली ! बैठ।"

डाक्टर कमली की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है–चेहरा लाल हो गया है कमला का। ऑखे डबडबाई हुई हैं। गले के पास ही रग तीव्र गति से फड़क रही है। डाक्टर ने बहुत बडा अन्याय किया है। रक्त का दबाव जरूर बढ गया होगा। कमला के ओठ फडक रहे है, थरथरा रहे हैं। वह रो पडती है–"मौसी !"

"कमला !" डाक्टर जोर से कहता है, "तुमनें तो कुछ समझा-बूझा नही और लगीं आकर बरसने। मै तां कालीचरन को समझा रहा था कि यदि मै किसी राजनीतिक पार्टी मे होता तो ऐसा नही करता।"

डाक्टर ने वातावरण को हल्का बनाने की पूरी काशिश की। लेकिन अच्छा होता यदि कमला उससे रूठी रहती। इसी दिन के इतजार मे वह था। आज कमला को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता था। लेकिन अब वह चूक गया। अब परिणाम के लिए तैयार रहना था।

जब तक डाक्टर बोलता रहा, कमली चुपचाप सुनती रही। अचानक उसके मुख-मडल पर छाए बादल फट गए। एक हल्की मुस्कुराहट उसके ओठो पर धीरे-धीरे जगने लगी, नाक के बगल की नीली रेखा धीरे-धीरे खिल रही है, मानो कमल की पखुडियाॅ धीरे-धीरें खुल रही हो।

मौसी चुपचाप कभी कमली की ओर, कभी डाक्टर की ओर देखती है। उसके ओठो पर भी मद मुस्कराहट खिची हुई है।

"प्यारू मेरे यहाँ दो बार खोज गया है। शायद आज भी कोई खरगोश भाग गया है।" कमली मौन भग करती गई। उसकी बोली सहज हो गई है।

कालीचरन कमली के चेहरे पर कुछ देखकर चमक उठता है। उमसे वाते करते-करते, कभी-कभी मगला के चेहरे पर भी ऐसे ही भाव आ जाते हैं। इसी तरह तुनुक-तुनुककर बोलती है। वह डाक्टर की ओर देखता है, फिर उठ खडा होता है, "अच्छा तो बैठिए डाक्टर साहब ! हम अभी चलते हैं। फिर कल भेट करेगे।"

मौसी भी उठकर जाते हुए कहती है, "तुम लोग चाय तो जरूर पीयोगे !"

कुछ देर तक दोनो चुप रहते हैं। कमली पास मे पडी सीकी की बनी हुई फूलडलिया को उठाकर उसकी बुनावट देखने लगती है। डाक्टर मुस्कराते हुए पूछता है, "एक बात पूछूॅं कमला, बुरा तो न मानोगी ? अपने बाप की शिकायत कोई नहीं बरदाश्त कर सकता है, क्यो ?"

"कैसे बरदाश्त कर सकता है कोई ?"

"मुझे क्या मालूम ? मुझे मुझको अपने बाप की याद नही।"

कमली मुस्कराती जाती है। कहती है, "विवाह के गीत मे एक जगह शिवजी पार्वती के पिता की टोकरी-भर शिकायत करते हैं–

एक बेर गेलीं गौरा तोहरो नैहरवा से,
बइठे ले देलक पुआर,
कोदो के खिचुड़ी रँधाओल मैना सासू...!"

"हा-हा-हा-हा !"

"हा-हा-हा-हा !" दोनों ही एक साथ हँस पड़ते हैं। मानो पंछी का एक जोड़ा एक ही साथ दिल खोलकर किलक पड़ा हो। नर और नारी के पवित्र आकर्षण की रुपहली डोरी लकपक रही है। नर आगे बढ़ता है नारी को खींच लेता है...।

बड़ी-बड़ी, मद-भरी आँखों की जोड़ी ने मुस्कुराकर पूछा, "आप.. मेरी शिकायत बरदाश्त कर सकते हैं ?"

"रोज तो कर रहा हूँ।" दो लापरवाह आँखों ने मानो चुटकी ली, 'कमली दवा नहीं पीती है। कमली रात में देर तक बैठकर पढ़ती है कमली पगली है। .पगली है कमली। ..तू पगली है ! तू मेरी पगली है ! पागल-पगली..."

...अधरक मधु जब चाखन कान्ह,
तोहर शपथ हम किछु यदि जानि !

दूसरा खंड

एक

सुराज मिल गया ?

"अभी मिला नहीं है, पंद्रह तारीख को मिलेगा। ज्यादा दिनों की देर नहीं, अगले हफ्ता में ही मिल जाएगा। दिल्ली में बातचीत हो गई। …हिंदू लोग हिंदुस्थान में, मुसलमान लोग पाखिस्थान में चले जाएँगे।" बावनदास जी फिर एक खबर ले आए हैं। ताजा खबर !

…दफा 40 की लोटस की तरह झूठ-मूठ कोई फाहरम तो नहीं लाया है। बावनदास ? …झूट नहीं सच बात है। डागडरबाबू के बेतार में भी बोला है, सुनते हैं।…

"तहसीलदार साहेब भोज खिलाएँगे उस दिन," सुमरितदास बेतार घर-घर खबर फैला रहा है। "सब इसमिट[1] अभी-अभी हम पक्का करके आ रहे हैं। पूड़ी, जिलेबी, हलुआ, दही और चीनी !"

"जै हो ! जै हो !"

"महातमा गाँधी की जै !"

महंथ साहेब के भंडारा से भी बड़ा भोज होगा। तीन मेर[2] नाच होगा—बलवाही, बिदेसिया, कमला और महमदिया की नौटंगी कंपनी। कालीचरन का सुसील कीरतन भी होगा। पुरैनियाँ में अंग्रेजी बाजा आएगा।… अरे ! अंग्रेजी बाजा नहीं जानते ? रौतहट मेला में सरकल के नाच में बजते नहीं सुना है—भेकर-भेकर भें-भें !… धमदाहा-संकरपुर का बिदापद। बँसगड़ा की बलवाही, औराही-हिंगना का भठियाली

1. एस्टिमेट। 2. दल।

भकतै[1]। सुध नारदी[2] गाते हैं औराहीवाले। कोयलू खोलवाहा और सीतानाथबाबू मुलगैन ! सीतानाथबाबू का गला बुढ़ारी में भी कितना तेज है !

"मुसलमानों का हिस्सा सुराज पाखिस्थान में चला जावेगा ? ···एकदम काटकर हिस्सा लेगा ?"

"हाँ, जब हिंदू-मुसलमान भाई-भाई हैं तो भैयारी हिस्सा तो रकम आठ आना के हिसाब से ही मिलेगा।"

"बावनदास ने सुराज को काटते देखा है या अंदाज से ही बोल रहा है। चलो, पूछें।"

बावनदास कहता है–"अरे सुराज क्या कद्दू-कोंहड़ा है जो काटकर बँटेगा ?"

" तब सुराजी कीरतन में जो कहा है कि 'जब तक फल सुराज नहीं पावें, गाँधी जी चरखा चलावें, मोहन हो ? गाँधी जी चरखा चलावें··' "

"कीर्तन की बात छोड़ो। सुराज माने···" बावनदास जी समझाते हैं, "सुराज माने अपना राज, भारथवासी का राज। अब अँगरेज लोग यहाँ राज नहीं कर सकते। ··'ए अँगरेजो। भारथ छोड़ो' क्यों कहा था गाँधी जी ने ? इसीलिए।"

"अपने गाँव का तो राज तहसीलदार साहेब को ही मिलेगा। राज पारबंगा के तहसीलदार हरगौरी तो अब हैं नहीं।"

बालदेव जी का दिमाग बहुत शात हो गया है। जिस दिन उन्होंने परसाद उठाया[3], उसी दिन से माथा ठंडा हो गया। लछमी तीन-चार दिन तक सतसंग करती रही। आखिर बालदेव जी हार गए। बालदेव जी अब गृहस्थ नहीं रहे, साधू हो गए। ···मोछभदरा[4] करवाकर बालदेव जी का मुँह ठीक सोलह पटनियाँ आलू की तरह हो गया है।

"··साहेब बंदगी बालदेव जी !"

"साहेब बंदगी ! जाय हिंद !" बालदेव जी आजकल साहब बंदगी और जाय हिंद को एक साथ नत्थी करके बोलते हैं।

"जाय हिंद कौमरेड बालदेव जी !" कालीचरन मुट्ठी बाँधकर कहता है--कौमरेड !

"नहीं। हम कौमरेड नहीं हैं।" बालदेव जी ने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "हमको कौमरेड क्यों कहते हो ?"

"कौमरेड कोई गाली नहीं बालदेव जी ! कौमरेड माने साथी। जो भी देस का काम करे, पब्लिक का काम करे, वह कौमरेड है।" कालीचरन हँसते हुए कहता है।

"तुम नहीं जानते," बालदेव जी चिढ़कर कहते हैं, "तुम तो आज आए हो, हम सन् तीस से ही जानते है। टीक-मोंछ काटकर, मुर्गी का अंडा खिलाकर कौमरेड बनाया जाता है। कंफ-जेहल में कितने लोगों को कौमरेड होते देखा है। ···मोजफ्फरपुर के एक सोसलिस्ट नेता थे। उनका काम यही था–लोगों की टीक-मोंछ काटना।

1. भठियाली कीर्तन। 2. नारदी-सुर। 3. वैरागी धर्म स्वीकार करना। 4. क्षौर कर्म।

जेब में कैंची रखे रहते थे। जाति के बामन थे। ...और हमको कौमरेड का माने सिखाते हो तुम ?"

लगता है बालदेव जी फिर सनकेंगे।

सबों ने एकमत होकर कहा, "हाँ कालीचरनबाबू, यह गलती तुमसे हो गई। आज तुम लीडर हो गए हो, खुशी की बात है, लेकिन हो तो तुम बालदेव जी के ही चेला ! तुम मानो या नहीं मानो, बात वाजिब है।"

कालीचरन लजा जाता है। ...तब उस दिन सिकरेटरीसाहब जो कह रहे थे, बाप-बेटा दोनों कौमरेड हो सकता है ? ...शायद सुनने में ही गलती हो गई।... वह अपनी गलती मान लेता है–"हाँ, अभिमन्नू-बध नाटक में अरजुन ने दुरनाचारज के पैर पर फूल का तीर मारा था।"

वाह रे कालीचरन ! अब बात समझता है ! पहले तो बात समझने के पहले ही लड़ाई कर लेता था।

बालदेव जी भी हँसते हैं। कहते हैं, "सुराज उतसब के लिए तुम लोगों की पाटी की ओर से क्या हुकुम आया है ?"

"ठीक है। सुराज क्या अकेले कॉंगरेस को ही मिला है ?"

"सुराज उतसब के दिन रहोगे या नहीं ?" बालदेव जी पूछते हैं।

"जरूर ! उस दिन हाथी पर भारथमाता की मुरती बैठाकर जुलूस निकलेगा," कालीचरन गर्व से छाती फुलाकर कहता है, "अपने गाँव का जुलूस, कटहा थाना में क्या, हौल इंडिया में फस्ट होगा। मुरती का औडर दे दिया है।"

बालदेव जी की आँखों के सामने भारतमाता के विभिन्न रूप आ रहे हैं–माँ, रूपमती, मायजी और लछमी।

...लछमी को हाथी पर नहीं बैठाया ज़ा सकता है ?...भारतमाता का रूप ? आजकल लछमी भी खद्धड़ पहनती है, चरखा कातती है। ...महीन सूत कातना तो वह पहले से ही जानती है।

जै ! भारथमाता की जै !

दो

मुकदमा में भी सुराज मिल गया।

सभी संथालों को दामुल हौज[1] हो गया है। धूमधाम से सेसन केस चला

1 आजीवन कारावास।

संथालों की ओर से भी पटना से बालिस्टर आया था। बालिस्टर का खर्चा संथालिनों ने गहना बेचकर दिया था। बालिस्टर पर भी बालिस्टर हैं। यदि इस मुकदमा में तहसीलदार साहेब जैसे कानूनची आदमी नहीं लगते तो इस खूनी केस से शिवशक्करसिंघ, रामकिरपालसिंघ और खेलावनसिंघ तो हरगिस नहीं छूटते। ···खर्चा ? अरे भाई ! जान है तो जहान है ! जब फाँसी ही हो जाती तो जगह-जमीन, रुपैया-पैसा क्या काम देता ?

रामकिरपालसिंघ ने संथालटोली की नई बंदोबस्ती जमीन में से दस एकड़ तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद को लिख दी है ···हाँ, सुमरितदास बेतार को भी चार कट्ठा जमीन मिली है। ···खेलावनसिंह यादव को भी देन हो गया है··· देन कैसे नहीं होगा भाई, पास में जितना कच्चा रुपया था वह तो दारोगा साहब के पान-सुपाड़ी में चला गया। पुराना पटुआ हाथ से पहले ही निकल गया था। इसीलिए करीब डेढ़ हजार हथफेर-पैंचा हो गया है। तहसीलदार साहेब ने कहा, कागज बनाने की क्या जरूरत है, जब सन-पटुआ बिके तो दे देना।

मुकदमा उतसब भी सुराज उतसब के दिन होगा ? ···हाँ, सुराज उतसब दिन में, मुकदमा उतसब रात में।

तहसीलदार साहब ने कहा है, महमदिया की नौटंकी कंपनी जितना में हो, एक सौ, दो सौ, जो ले, मगर सट्टा करा लेना। सुमरितदास कहते हैं–"इसमें कनकसन है, पीछे बतावेंगे।"

···महमदियावाले भी पूरी तैयारी कर रहे है। नखलौ से बाई जी मँगाया है, चंदा करके। नौटंकी के कंपनी[1] हैं नितलरैन बाबू। लछमी महारानी ने उनको खूब निहारा है, अपनी आँखों से ही निहारा है।···

इस इलाके के मँझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूँजी हो गई, तंबाकू, धान, पाट और मिर्चा का भाव एक साल चढ गया, घर में शादी-गमी नहीं हुई तो वह तुरंत टनमना[2] जाते हैं। यदि मालिक जवान हो तो तुरंत औन-पौन करने लगता है। हरमुनियाँ, फर्श, शतरंजी, शामियाना, जाजिम, लैट, पंचलैट, पहाड़िया घोड़ा, शंपनी, टेबल-कुर्सी, बेंच खरीदकर घर लगा देता है। इससे भी जब गरमी कम नहीं होती है तब बन्नूक के लैसन क लिए आफिसरों को डाली देना शुरू करता है। ···लालबाग मेला के समय रात-रात-भर मुजरा सुनता है और दिन-भर आफिसरों के साथ कचहरी में घूमता है। बन्नूक के लैसन के बाद नौटंकी कंपनी खोलता है। इससे भी मगज ठंडा नहीं होता तो कोई खूनी केस होकर समापत्तन[3]। ···महमदिया के नितलरैनबाबू नौटंकी के कंपनी हैं। तहसीलदार साहब ने कहा है, महमदिया की नौटंकी कंपनी का सट्टा लिखा जाना चाहिए।

"बड़ा भारी कनकशन है जी इसमें !" सुमरितदास बेतार कब तक पेट में बात रखे, "एकदम प्राइबिट गप है। महमदियावाली को क्यों बुलाया जा रहा है,

1 मालिक। 2 खुशहाल हो जाना। 3. समाप्त।

समझे नहीं ? नौटंकी की बाई जी के बिलौज पर टका साटा जाएगा। अब समझे कुछ ?"

संथाल लोग इस सुराज उतसब में नाचेंगे ...कहीं नाचने के समय तीर चला दें, तब ? नहीं, नहीं, डागडर साहेब बोलते थे कि संथालिनें खुद आकर कह गई हैं–नाचबौ। तहसीलदार साहेब को भी इसमें एतराज नहीं होना चाहिए।... भाई, जो भी कहो, संथाली नाच देखते समय होस गुम हो जाता है। जूड़े में सादे फूलों के गुच्छे, कसमकस देह, उजले दाँत की पाँती की चमक ! सफेद आँचल ! जब झुमुर-झुमुर कर नाचने लगती हैं तो मन करता है, नाच में उतर पड़ें।

डा-डिग्गा डा-डिग्गा !
रिं-रिं-ता धिन-ता !

आज से ही वे पराटिस कर रहे हैं। लेकिन माँदर और डिग्गा की बोली सुनकर डर लगता है। हँसेरी के दिन तो ऐसा लगता था कि जमराज नगाड़ा बजा रहा है और जमदूत सब उसी ताल पर नाचकर तीर चला रहे हैं।

तीन

"खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना !"

आजकल सुमरितदास बेतार का बोलबाला है। हमेशा एक नई खबर ! आजकल किसी भी टोले के नौजवान से भेंट होते ही वह फिक् से हँसकर एक दिल्लगी कर लेता है, "खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना !"

"माने ?"

"माने सुनोगे ? गरम जिलेबी का तासीर बड़ा गरम होता है। सर्दी से नाक बंद हो, सिर दुख रहा हो, गरम जिलेबी खा ली ! भक से नाक खुल जाएगी। इतना जल्दी असर करता है ! ...आज हम डागडरी में जरा दिनाय[1] की दवा लाने के लिए गए थे। जानते हो ? डागडरबाबू ने फुलिया–अरे वही महंगूदास की बेटी फुलिया–को क्या कहा है ? · फुलिया को गरमी की बेमारी हो गई है। चेहरे पर फुसरी-फुसरी[2]-सा हो गया है। डागडर ने कहा कि पुरैनियाँ जाओ। ...इसीलिए लौजमान लोगों से कहते हैं कि खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना।"

1 दाद। 2 दाने-फुंसी।

"लेकिन दास जी ! लौजमानों से पहले बूढ़ों को सँभालिए।"

"चुप, चुप ! सभी बेपर्दे हो जाएँगे।"

सुमरितदास बेतार जब फिक् से हँसता है तो उसके लाल मसूड़े दिखाई पड़ते हैं। लाल हँसी हँसता है बेतार !··· बेतार फिर फिक् से हँसकर कहता है, "और कुछ मालूम है ? महंथ रामदास जी रमपियरिया को दासिन रखेंगे। कोठारिन ने हुकुम दे दिया है। ···बालदेव तो कोठारिन के पीछे बैरागी ही हो गया।"

कालीचरन का चेहरा अचानक उतर जाता है। ··अब मंगला के बारे में तो कुछ नहीं बोलेगा बेतार ? लेकिन बेतार जानता है कि कहाँ कैसी बात करनी चाहिए। बात में उससे जीतना मुश्किल है।

चरखा सेंटर के मास्टरों और मास्टरनी में लड़ाई-झगड़े हो गए हैं। टुनटुन जी इस्तीफा देकर चले गए। दूसरे मास्टर साहब का सूल उखड़ गया; देस चले गए। अब अकेली मंगलादेवी वहाँ चरखा सेंटर के नाम पर गाँव-घर में घूमती है, बातें करती है गाँधी जी की, जमाहिरलाल की और सुराज की··· कालीचरन कहता है, "हाथी पर भारथमाता की मुरती के पास बैठकर मुरछल[1] डुलाने के लिए मंगलादेवी को ही कहना चाहिए।"

बालदेव जी तहसीलदार साहब से कहते हैं, "लेकिन यदि अपने गाँव में औरत नहीं रहे तब बाहरी औरत से कहना चाहिए। यदि गाँव में ही मिल जाए ! कमली दीदी ही क्यों न बैठेंगी ?"

"नहीं, कमली की बीमारी का बड़ा डर है। कब क्या हो जाए !"

"तब कोठारिनी जी से कहा जाए। अब तो खद्धड़ पहनती हैं। सूब नेमटेम भी करती हैं। रोज नहाने के बाद महतमा जी की छापी पर फूल चढ़ाती हैं।"

···लो मजा ! मंगला देवी को हाथी का बड़ा डर ! हाथी को देखते ही उसका सब सरीर केले की भालर[2] की तरह थर-थर काँपने लगता है। कालीचरन ने कितना समझाया-बुझाया, 'बूध-भरोसा' दिया , मगर तैयार नहीं हुई। आखिर में कहने लगी, कालीचरन यदि साथ में रहे तब वह हाथी पर चढ़ सकती है। लेकिन कालीचरन को लाज हो गई, सायद। बोला, "धत् !"

दुलरिया भी अलबत्त बात जोड़ता है। इधर-उधर देखकर, मटकी[3] मारकर, देह-हाथ फैलाकर कहता है–"मंगला देवी जी जब लीला सिलवार पहनकर निकलती हैं तो लगता है कि मोकनी हथिनी[4] झूमती चली जा रही है।"

"हो-हो-हो-हो ! हा-हा खी-खी !"

भौऔथ !··औ औ !

डाक्टर साहब की घड़ी में ठीक दोपहर रात का 'टैम' देखकर टीन के करनाल में मुँह सटाकर कालीचरन ने हल्का किया, "भौ औ थ ···औ औ !"

इसके बाद लौजवानों दे दोहराया–"भारथ आ जा द !"

1. चँवर। 2. पत्ता। 3. कनखी। 4 जवान हथिनी।

मठ पर खँजड़ी डिमक उठी—डिम-डिम-डिम-डिमिक ! बालदेव जी भावावेश में चौकीदार की तरह हाँक लगाई— 'ह-ह-ह-ह-ह-ह ! भारथ आजाद हो गया। ह-ह-ह-ह-ह-ह-हो-य ! महतमा गाँधी की जै !"

रिं-रिं-ता-धिन-ता !
डा-डिग्गा !

संथालटोली में माँदर और डिग्गा घनघना उठते हैं।

तू-ऊ-ऊ-ऊ। मौसी शंख फूँकती हैं—तू-ऊ-ऊ-ऊ !

सात माइल दक्खिन, कटिहार की पाँचों बड़ी-बड़ी मिलों के भौंपे एक साथ बज रहे हैं—"भौं औं ओं ··धू ऊ ऊ ।" आवाज एकदम साफ सुनाई पड़ती है।

"···डिल्ली में बाँटबखरा करके सुराज मिल गया। जै ! जै ! इसलामपुर पाखिस्थान में रहेगा या हिंदुस्थान में ? पाखिस्थान में ? अभी पाखिस्थान में मारे खुशी के खचाखच गोरू काट रहा होगा। ··धत्, गोरू ने क्या बिगाड़ा है ?·· बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाखिस्थान लेकर ही छोड़ता !"

चार

भौ औ थ ! औ औ !

कालीचरन का गला बैठ गया। नारा लगाते समय भाथी की तरह गले से आवाज निकलती है—फोयें-फोंये सोयें-सोयें !· सुबह से कामरेड बासुदेव और कामरेड सोमा जट बारी-बारी से नारा लगा रहे हैं। ·नारा बंद नहीं हो, जारी रहे—'अष्ठजाम कीरतन' की तरह ! सुराज-उतसब जब तक खतम नहीं हो, नारा बंद नहीं हो !

टन-टनाक्, टन-टनाक् ! सजाई हुई मोकनी हथिनी जा रही है।

ढन-ढन, ढनाँग-ढनाँग ! कीर्तनियों का घड़ीघंट बोल रहा है।

धू-ऊ-ऊ-तु-तू-तू ! शंखनाद।

भो-भो-पों ! भों-पों-पों ! अँगरेजी बाजा।

तक तक तक-तक धिनाग-धिनाग ! अमहरा का चानखोल[1] बजा।

पीं पीं पीं ई ई ई पीं पीं पीं··· ! चानखोलवालों की पीपही गा रही है :

चाँदो बनियाँ साजिलो बरात ओ हो
एक लाख हाथी सजिलो, दुई लाख घोड़ा

1 एक तरह का बाजा।

चार लाख पैदल, दुलहा बाला लखिंदर !

पीपही पर बिहला[1] नाच का बरातवाला गीत बजा रहा है।

धू-धू-धू-धू-धू-तु-धुतु-धुतु ! करनाल बोलता है।

हिं-हिं-हिं-हिं-हिं-हिं-हिं ! पहड़िया घोड़ा हिनहिनाया। किसका घोड़ा है ? धरमनाथबाबू का या हरिबाबू का ?

भारत में आयल सुराज
चलु सखी देखन को…

वह नया सुराजी कीर्तन किसने जोड़ा है ? वाह ! एकदम ताजा माल है। सुनो, सुनो !

कथि जे चढ़िये आयेल
भारथमाता
कथि जे चढ़ल सुराज
चलु सखी देखन को !
कथि जे चढ़िये आयेल
बीर जमाहिर
कथि पर गंधी महराज। चलु सखी…
हाथी चढ़ल आवे भारथमाता
डोली में बैठल सुराज ! चलु सखी देखन को
घोड़ा चढ़िये आये बीर जमाहिर
पैदल गंधी महराज। चलु सखी देखन को।

वाह ! खूब कीर्तन जोड़ा है उजाड़ू दास ने। उजाड़ू दास को नहीं चीन्हते हो ? बारा-मानिकपुर में घर है। वह भी सन् तीस से ही सुराजी में है।

कू-कू ! मोकनी हथिनी ठीक[2] ताल पर कैसा कूकती है ! वाह !

अलबत्त सजाया है हाथी को फिलवान ने। ठीक कपाल पर पुरैन[3] का फूल बनाया है—फुलखल्ली से। कितना रंग-टीप किया है ! भारथमाता की मुरती तो ठीक दुरगा माई की मुरती जैसी लगती है ! लछमी, सरस्वती, पारबती-गौरा और भारथमाता सब सगी बहन हैं। ओ। …इसलिए ! बालदेव जी देखते हैं—सदा खद्धड़ की साड़ी ! गले में फूल की माला ! लंबे-लंबे काले बाल बिखरे हुए पीठ पर ! ठीक भारथमाता के ठोर[4] पर जैसी हँसी है मोटारिन वैसी ही हँसी हँस रही है और धीरे-धीरे मुरछल डुला रही है।

धिन, तक-तक-तक, ताक धिनाधिन, भठियाली कीर्तन का खोल बोल रहा है—ताक धिनाधिन, तिन्नक-तिन्नक !

1. सती बेहला। 2. सिंघा बाजा। 3. कमल। 4. ओठ।

हाँ रे मोरी रे ए ए ए । हाँ ऑ ऑ
ऑ ऑ ऑ आरो हे !
बहु कस्टे सू रा ज पैलो रे
भारऽऽथऽऽ सतान ओ रे
कोटि कोटि छइला पोयेला
दिलो बो लि दान आ रे
हाँ रे मोरी रे ए ए ए । हाँ ऑ ऑ ।

औराही-हिगना का भकतिया है बाबू। खेल नही। सीताराथबाबू ने पूबा बोली[1] मै कैसा भठियाली कीर्तन जोडा है, देखो। मीतानाथबाबू ने जोडा है कि उनका छोटका बेटा महेदर ने ? महेदरबाबू भी गीत खूब जोडते है, सुना है।

झरक-झरक झर-झर्र ररर ! एकपूरिया ढोल तो सब बाजा को मात कर देता है। सभी बाजा को 'झॉप' लिया है।

ढमाक्-डमाक्-डिम ! एकपूरिया ढोल के साथ एक छोटी ढोलकी बोलती है।

भौ औ थ ! औ औ !

"महतमा गॉधी की जै !"

"जमाहिरलाल नेहरू की जे !"

"रजिन्नर बाबू की जै !"

"जयपग्गाम जिदाबाघ !"

"यह आजादी झूठी है !"

"देस की जनता भूखी है।" यह नया नारा कौन लगाता है ?

"ए ! ऐ ! नही हुआ।"

"सुन लो पहले !"

"आजादी झूठी। मारो माले को ! कौन बोला ?"

"जरूर गॉव का नही, बाहरी आदमी है।"

"ऐ ऐ ! बाजा बद करो !"

"हटो ! हटो !"

"ऐ कालीचरन ! ऐ बासुदे !"

"बालदेव ! साती करो !"

"अरे ! बात क्या हुई है ?"

"हर बात मे ऐसे ही कोई 'लेकिन' लगाएगा ये लोग ?"

"सुनिए, तहसीलदार साहेब ! बात यह हुई कि" बालदेव जी आज फिर

1 बॅगला बोली, पूरब की बोली।

सनके हैं, "बात यह हुई कि बाबू कालीचरन के पेट में रहता है कुछ और, और कहता है कुछ और ! हम इससे पहले ही पूछ लिए थे कि तुम्हारी पार्टी की ओर से क्या हुकुम हुआ है सुराज उतसब के बारे में। तो बोला कि सुराज क्या सिरिफ कँगरेसी को मिला है !... अभी देखिए, सुभलाभ करके जब हम लोग जुलूस निकाला है तो बाहरी आदमी को मँगा करके हम लोगों के उतसब को भंग कर रहा है। यह कैसी बात है ! अरे भाई, हिंगना-औराही का सोसलिट है तो हिंगना-औराही में जाकर अपने गाँव का लारा लगावे। यहाँ काबिलयती छाँटने का क्या जरूरत था। अपना मुँह है—बस, लगा दिया लारा—यह आजादी झूठी है !"

"ठीक बात ! वाजिब बात !" जनता एक ही साथ कहती है।

"ओंएँ सोंएँ सोंएँ " कालीचरन क्या कहता है, समझा नहीं जाता है।

"अरे हाँ-हाँ गलती हो गई !" कामरेड बासुदेव समझा रहा है। यानी कालीचरन जी की बात को जोर-जोर से सुना रहा है—"अरे गलती हो गई। वह नही जानता था। चमड़े की जीभ है लटपटा गई। कालीचरन जी का इसमें कोई दोख नहीं !"

यहाँ के सोसलिट पार्टी वालों को भी यह बात अच्छी नहीं लगती है। ·· दूसरे गाँव से आकर यहाँ लारा लगाने की क्या जरूरत थी ? कालीचरन जी का गला बझ गया था तो बासुदेव और सोमा तो लारा लगा ही रहे थे। बीच में फुटानी छाँटकर सब गड़बड़ा दिया।

"अच्छा ! अच्छा ! माफ कर दो !"

"हाँ-हाँ, छोड़ो ! आज सुराज का दिन है।"

टन्-टनाक् टन्-टनाक् ! मोकनी हथिनी फिर चली। जुलूस आगे बढ़ा ! सभी ढोल-बाजे एक ही साथ बजने लगे। डिम्-डिम् झर्र-झर्र... पी-ओ-धू-ऊ तक-तक-धिन।

भों-ओं-धू-तू-ताक्-धिनाधिन।

कूई-कू ! कूई-कू ! मोकनी हथिनी ताल पर कूकती है।

बालदेव जी फिर सनके हैं क्या ? हाथ में झंड़ा लेकर अब हाथी के आगे-आगे नाच रहे हैं। झंडे को इस तरह भाँजते हैं मानो गाटसाहेब रेलगाड़ी को झंड़ी दिखला रहे हों ! हाँ भाई, सुराज का असल हथियार है तेरंगा झंडा। पहले के जमाने में तलवार से लड़ाई होती थी, इसलिए लोग हाथ में तलवार लेकर नाचते थे। सुराज की लड़ाई का हथियार झंडा है। इसलिए झंडा नचा रहे हैं बालदेव जी। सनके हैं नहीं। जिसका जो हथियार !

किर्र र र घन घन धड़ाम धा, धड़ाम धा ! नौटंकी का नगाड़ा बोल रहा है।·

·भोज तो दिन से ही खाते-खाते मन अघ गया है। ·इधर देरी तो आगे में जगह नहीं मिलेगी। चलो, जल्दी !

कि-र्र-र-र-घन-घन धड़ाम धा, धड़ाम-धा !

अरे खिस्सा होता गुरु अब सुनहु पंच भगवानों की,
गाँधी महतमा वीर जमाहिर करे सदा कलियानों की !

किर्र-र-घन-घन-धड़ाम-धा, धड़ाम-धा !

···कौन खेला होगा ? क्या कहा ? मस्ताना भगतसिंघ ! वाह ! अभी जाकर रंग औट किया। दिन से पूछते थे तो बोलता था कि सुलताना डाकू का पाठ होगा।

जिसका जो हथियार ! ···भगतसिंह का पाठ खुद नितलरैनबाबू लिए हैं। दाहिने हाथ में पिस्तौल है और बाएँ हाथ में बेल के बराबर गोल क्या है ? बम !··· अरे बाप ! हाँ, जिसका जो हथियार ! भगतसिंह का हथियार तो बम-पिस्तौल ही था।

किर्र-र-घन-घन-धड़ाम-धा !

अजी बेटा हम मादरे बतन भारथ का
हमें डर नहीं फाँसी सूली का···!

किर्र-र-किर-किर-धड़ाम-धड़ाम-धड़ाम !

भगतसिंघ नाच रहा है। एक हाथ में बम और दूसरे में पिस्तौल। नाचकर स्टेट[1] के एक कोने से दूसरे कोने पर जाता है। खूब नगाड़ा बजाता है नगड़ची ! ठीक पन्नालाल कंपनी के तरह ! इटहरा का नकछेदी है। और कौन ऐसा साफ हाथ बजावेगा !··· सिरिफ ताल काटने के समय जरा डर लगता है। ताल काटने के समय धड़ाम-धा, धड़ाम-धा ताल पर भगतसिंह बमवाले हाथ को दो बार पवलि की ओर चमकाता है, मानो बम फेंक रहा हो। अब जब-जब वह ऐसा करता है आगे में बैठे सभी लोग जरा करबट होकर एक-दूसरे की पीठ के पीछे मुँह छिपा लेते हैं। ··कौन डिकाना, कहीं इधर ही फेंक दे तब ? ···कभी नकली तलवार से देह नहीं कटता है क्या ? तब नकली बम हो चाहे असली, हाथ से छूट जाने पर कुछ-न-कुछ घवैल तो जरूर करेगा ! अरे, नखलौ[2] की बाई जी कहाँ है ? उसको सामने लाओ ! डोली में क्या छिपाकर रखा है ? ···ताली बजाओ तब निकलेगी।

"आ गई ! ऐ, देखो नखलौ की बाई जी को !"

"आकर चुपचाप खड़ी काहे हो गई ?"

"गला से तो जरूर पकड़ी जाएगी। गाने तो दो जरा !"

"रोगन-पौडर लगाकर खपसूरत लगती है। दिन में देखना, खपरी की पेंदी की तरह· !"

"हो-हो-हो ! साला दुलरिया बात बनाने जानता है।"

बाई जी शुरू करती है :

खादी के चुनरिया रँग दे छापेदार रे रँगरेजवा
बहुत दिनन से लागल बा मन हमार रे रँगरेजवा !

धड़-धड़ाम, धड़-धड़ाम !

---

1. स्टेज। 2 लखनऊ।

"नाचती है तो नाचती है, दाँत बिचकाकर हँसती क्यों है ?"

"ए राम ! दाँत और ठोर तो एकदम काला भुजुंग है !"

"अजी दाँत नहीं, काबली अनार के दाने हैं दाने !"

हो-हो ! हो-हो ! वाह, ठीक कहा दुलरिया ने !

बाई जी गा रही है :

कहीं पे छापो गंधी महतमा
चर्खा मस्त चलाते हैं,
कहीं पे छापो वीर जमाहिर
जेल के भीतर जाते हैं।
अँचरा पे छापो झंडा तेरंगा
बाँका लहरदार रे रँगरेजवा !...

किर्र-रि-रि-रि-रि-धड़क-धड़क, धड़क-धड़म-धा-धड़म-धा !

अजी अँगिया पर छापो...।

ऐ ! ऐ ! वाह ! हो-हो ! वाह-वाह !

"साटो इसके बिलोज पर टका !" एक आवाज आती है।

"जरूर साटो ?"

"अरे टका मत बोलो, मिडिल बोलो मिडिल। देहाती की तरह काहे बात करते हो ! चाँदी की चकती को 'मिडिल' कहते हैं।"

"सुनो भगतसिंघ फिर काहे स्टेट पर आया ?"

"प्यारे भाइयो, आप लोग हल्ला मत कीजिए। अब एक गाना होगा–'मोरा बाँका सिपैहिया टट्टू से गिरा जाय' !"

"अरे लचकर काहे झाड़ता है ? बजाओ नगाड़ा। रात-भर का सट्टा है। तेरी सिपैहिया की ऐसी तैसी ! खेला सुरु करो !"

"हाँ ये लोग तो यही चाहते हैं कि इसी तरह 'रिब-रिब' में ही रात काट दे। नाचो !"

"ए ! पचलैट में हवा दो ! भुकभुका रहा है !"

"हवा क्या देगा, आँधी आ रही है। पानी भी बरसेगा।"

"किर्र-घन घन-धड़ाम-धा धड़ाम धा ! नगाड़ा घनघनाया।

गुड़-गुड़म ! आसमान में बादल घुमड़े।

फटाक् ! पटाखा फूटा।

अजी भगतसिंह है नामी इनमें सरदार अजी
करना है उसको गिरिफदार !

किर्र-किर्र-घन-घन-धड़ाम-धा !

"मारो साले को ! यही साला सब असल देशदुरोहित है, पहचान रखो।"

"मारो ! मारो ! ...रे मार साले को !"

"हो-हो ! हो-हो !" आँधी आ रही है सायद... । गाय-बैलों को घर से निकालकर बाहर करना होगा। चूल्हों में आग छोड़कर ही जलाना[1] लोग सो जाती है। बहुत खराब आदत है। आग रखती है हुक्का पीने के लिए। रे चलो... । बाँस-फूस के घर का क्या ठिकाना ! आँधी आई, उड़ा ले गई। बरसा हुई तो टपकने लगी और चिनगी भी कभी उड़ी तो सोहा ! ...चलो। क्या देखेंगे अब नाच ! कटिहार की चवनियाँ माल को उठा लाया है और कहता है कि नखलौ की है। चलो !

गुड़गुड्डम ! गुड़गुड्डम !

कमली को डाक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया है ! ...तीन बजे दिन में ही संथाली नाच देखने अस्पताल आई थी कमली ! नाच खत्म हो गया, शाम हो गई, उधर नौटंकी कब शुरू हुई, कब खत्म हुई, शायद दोनों में से कोई नहीं बता सकेगा। ... जब बादल गरजे, बिजलियाँ चमकीं और हरहराकर वर्षा होने लगी तो कमली को डाक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया।

कमली ने बाँहें छुड़ाने की एक हल्की चेष्टा की।..

बिजली चमकी।

गुड़गुड्डम ! गुड़गुड्डम !

रिं-रिं-ता-धिन-ता !

डिग्गा-डा-डिग्गा !

संथाली नाच के माँदर और डिग्गा की ताल पर दोनों की धुकधुकी चल रही है। छम्म-छम्... आज कमली इस इलाके मे पहने जानेवाले सभी किस्म के गहनों से लदी है। ..बाँक, हँसुली, बाजू, कँगना, अनंत, चूर, झँझनी; अर्थात् झुनुक-झुनुक बजनेवाली बेड़ियाँ जिसे 'झँझनी-कड़ा' कहते हैं। ..और चूर तो देह के सिहरन पर भी खनकते हैं–टुन-टुन !

टुन-टुन !

छम्-छम् !

गुड़गुड्डम !

छम्म, जम ! छम्म्, म्म् !

टुन-टुन !

डाक्टर ! डा क ट र ! ओ !.. प्र शा न्त म हा सा ग र !

रा ज क म ल...!

1 जनाना।

पाँच

बावनदास को अब अपने पर भी परतीत नहीं होता है। ···बालदेव जी कहते हैं–चित्त चंचल हो गया है बौनदास का और थोड़ा 'भरम' भी गया है। बस, सिरिफ गाँधी जी पर भरोसा है बावन को। ··बापू सब पार लगावेंगे ! बहुत-बहुत कठिन परीच्छा में बापू अकेले सबको सँभाल लेंगे। जै ! बाबा ! बापू !

लेकिन उसके दिल में न जाने क्या समा गया है कि हर बात का खराब रूप ही पहले देखता है। संदेहात्मक दृष्टिकोण से ही वह सारी दुनिया को परखता है। बापू ने चिट्ठी का जवाब दिया है :

"भगवान बावनदास जी ! आप ही धीरज छोड़ दोगे तो भक्तजनों का क्या होगा ? ··बापू के प्रणाम !"

बावन कठहँसी हँसते हुए कहता है, "गंगुली जी ! बापू को देखिए ! ·अब हम क्या करें ! मन में संदेह होता है, दिल उदास हो जाता है। फिर आदमी को अपने काम पर भी बिसवास कैसे हो ! बापू से पूछते हैं तो दिल्लगी में ही टाल देते हैं। लिखते हैं कि आप धीरज छोड दीजिएगा। अरे ! छलिया रे ! जनम-जनम छल करके ठगा, कभी राम औतार तो कभी क्रिसना औतार और···"

"कभी बावन अवतार !" गाँगुली जी चट से कह देते हैं।

"धत् ! आप भी तो हो-हो-हो !" बहुत दिनों के बाद आज ही बावन ऐसा दिल खोलकर हँसा है।

बावनदास जब दिल खोलकर हँसता है तो उसकी आँखें खुद-ब खुद बंद हो जाती हैं, और तब ऐसा लगता है मानो एक बडा-सा सेलुलाइड का खिलौना हिल रहा हो। बावन अवतार !

रावन अवतार ! यह चलित्तर रावन का अवतार बनकर आया है। भाई, सुने हो या नहीं, हसलगंज के हरखू तेली के घर में डकैती हो गई !

··आँएँ ! कब ? सुराज उतसब की रात में ही बदूकवाले थे ? घवैल तो नही हुआ कोई ? दो खून ? एं ?

सुमरितदास बेतार अभी तुरत कटिहार मे आया है।

"बात यह है कि हसलगंज के हरखू तेली की कंजूसी के बारे में तो सभी जानते ही हो ! चलित्तर करमकार, या भगवान जाने कौन था सो, एक दिन ठीक दोपहर को उसके दरवाजे पर आया। पानी पीने के लिए माँगा तो, सुनते हैं कि पैसा माँगा। लेकिन सहुआइन कहती है, दूकान पर जलपान करके, हाथ-मुँह पोंछके जाने लगा तो हम पैसा माँगा। बोला कि तुम्हारे यहाँ एक गिलास पानी पिएँगे

तो पैसा माँगोगी ? भाई, हम भी सुनती-उड़ती बात कहते हैं, खाँटी हाल एक-दो दिन में खुद औट हो जाएगा। ···सुनते हैं कि सुराज उतसब की रात में एक दर्जन लोगों को लेकर, पहड़िया घोड़ा पर सवार होकर आ गया। आते ही बोला—कहाँ सहुआइन ! पूछी बनाओ !···नहीं बनाएगी कैसे ? हाथ में रैफल-बन्नूक लेकर दो-दो आदमी सहुआइन के अगल-बगल में एकदम तैयार। हरखू साह को चारों ओर से घेरकर चौकी पर बैठाया और कहा कि रमैन पढ़ो। गाँव में दो आदमी चले गए, लोगों से कहा कि हम लोग हरखू साह की लड़की को देखने आए हैं।·· सुबह होते-होते सब काम फिनिस ! जहाँ-जहाँ मिट्टी के नीचे घड़ा गाड़कर रखा था, सब खोद लिया। एक जगह खोदकर गिनता था और हिसाब करके कहता था—"नहीं, और है। बताओ बुड्ढे ! नहीं तो चढ़ाओ इसको चूल्हे पर, ढालो ऊपर से किरासन तेल।" सहुआइन तो रात-भर पूड़ी छानती रही और मिठाई बनाती रही। सुनते हैं, सहुआइन बीच-बीच में कहती थी—"ऐ बेटा ! तीरथ करे खातिर कुछ रखली है, कुछ छोड़ दिहऽऽ···।" उसको एक हजार रुपैया दे दिया। · हरखू साह को कहा कि तुम आठ साल से एक ही धोती पहन रहे हो, तुमको रुपए की क्या जरूरत है ?···जनाना लोगों को देह पर हाथ भी नहीं दिया, सुनते हैं ! मगर जाते-जाते दो खून कर दिया।"

सुमरितदास बात करते-करते चारों ओर देखते हैं। क्यों ? कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं ? आज फिक् से हँसते भी नहीं हैं। मुँह बड़ा चटपटाया हुआ देखते हैं। क्या बात है ? ऐसा तो कभी नहीं देखा ?··'सुनते हैं, सुनते हैं' की झड़ी लगाए हुए हैं। आखिर असल बात क्या है ?

"अरे दास जी ! कोई प्राइबिट बात ?"

"नहीं, प्राइबिट बात कुछ नहीं है ! ··दंगा हो रहा है। सुनते हैं कि डिल्ली, कलकत्ता, नखलौ, पटना सब जगह हिंदू-मुसलमान में लडाई हो रही है। गाँ-के-गाँव साफ !·· आग लगा देते हैं।" सुमरितदास हाथ में लोटा लेकर दिसा मैदान की ओर चले जाते हैं।

··बालदेव अनसन करेंगे। क्यों, क्या बात हुई इस बार ? बालदेव जी कहते हैं, "पियारे भाईयो ! हम अभी डाक्टर साहेब के बेतार में खबर सुनकर आ रहे हैं। अँधेर हो गया। एकदम सब पगला गए हैं, मालूम होता है। गाँधी जी खिलाफत के जमाना से ही कह रहे हैं—हिंदू-मुसलमान भाई-भाई हैं। तैवारी जी भी गीत में, आज से पंद्रह-बीस साल पहले कहिन हैं :

अरे, चमके मंदिरवा में चाँद
मसजिदवा में बंसी बजे !
मिली रहू हिंदू-मुसलमान
मान-अपमान तजो !

" सो, गाँधी जी की बात काटकर जो लोग यह सब अंधेर कर रहे हैं, वे

भी एक दिन अपनी गलती मान लेंगे। ···गाँधी जी अनसन करेंगे सायद।··· आजकल नूवाँखाली गए हैं। अभी बावनदास आया है पुरैनियाँ से। बोलता है कि गाँधी जी ने रामलालबाबू को नूवाँखाली बुलाया है। गाँधी जी ने सिवनाथ चौधरी जी को चिट्ठी दिया कि सन तीस में गाँधी आसरम में जो आदमी पुरैनियाँ से आया था, उसको नूवाँखाली भेज दो। रमैन पढ़ैगा। ···रामलालबाबू जब गा-गाकर रमैन पढ़ने लगते हैं तो सुननेवालों की आँखों से वह खुद ही लोर ढरने लगता है। ···"

जोतखी काका आजकल बहुत चुप रहते हैं। फिर भी इतनी बड़ी-बड़ी घटनाओं पर वह कुछ नहीं बोले, यह कैसे हो सकता है! उनकी राय है कि यह सब सिर्फ सुराज का नतीजा है। ··जिस बालक के जन्म लेते ही माँ को पक्षाघात हो गया और दूसरे दिन घर में आग लग गई, वह आगे चलकर और क्या-क्या करेगा, देख लेना। कलियुग तो अब समाप्ति पर है। ऐसे-ऐसे ही लड़-झगड़कर सब शेष हो जाएँगे।

अब लोग सोशलिस्ट पार्टी आफिस में भी दरखास-फरियाद लेकर आते हैं। जुमराती मियाँ रोता हुआ आया है। सुमरितदास ने उससे पाँच रुपया छीन लिया है। "कालीबाबू ! जुलुम··· अब गरीब लोग कैसे रहेंगे !"

"अच्छा-अच्छा ! आज साम को यहीं पाटी आफिस में रहिए। रात में आपकी पंचैती कर देंगे।" कालीचरन विश्वास दिलाता है।

"कामरेड बासुदेव ! · सुमरितदास को बुला लाओ तो !" शाम को कालीचरन गंभीर मुद्रा बनाए हुए हैं।

मच्, मच्, मच् ! बासुदेव कल पुरैनियाँ से लौटा है। भाटा कंपनी का जूता खरीदा है चौबीस रुपए में। चलने के समय मच्-मच् बोलता है। रात में भी, आँख पर धूप-छाँहा काला चसमा लगाकर, पैजामा-कुर्ता पहनकर, जूता मचमचाकर चलने के समय थोड़ा नसा जैसा लगता है। परेड करते हुए चलने का मजा आ जाता है। · बासुदेव स्टेशन पर पान-बीड़ी-सिकरेटवालों की तरह बात को ऐंठकर आवाज गहरी करके पुकारता है–"सो म रे ट डै स !"

सुमरितदास की पिल्ही चमक गई होगी। बासुदेव मन-ही-मन हँसता है–"स् यो म रे ट डैस !"

एक छोटी-सी छपरी मे किधर छिपेंगे दास जी ! बासुदेव ने पहले ही देख लिया है। वह उसे हाथ पकड़कर घसीट लाता है। सुमरितदास थरथर काँप रहे हैं। "ह जौ र, दुहाई···!"

"बेतार, बुलाहट !" बासुदेव हँसते हुए कहता है।

"कौ··· कौन, बा· बासुदेव ? हेत् ! हम समझे कि···दारोगा साहेब हैं। वाह ! खूब डराया ! अलबत्त बोली सीखे हो बाबू ! होनी ही चाहिए। देस-बिदेस घूमते हो तुम लोग। किसने बुलाया है ? ···कालीचरन ने ? अच्छा एक बात, बहुत दिन से, पूछते-पूछते भूल जाते हैं। कहो तो, तुम्हारी पाटी में भी दो पाटी है क्या ?"

"काहे ?"

"पहले बताओ तो," सुमरितदास फिक् से हँसता है।

"नहीं, पहले आप बताइए," बासुदेव कम जिद्दी नहीं।

"यही ...कालीचरन एक दिन बोल रहा था कि सिकरेटरी-साहेब बासुदेव पर विश्वास नहीं करते हैं। हम बोले कि बासुदेव में तो कोई डिफेट नहीं तो बोला कि दास जी आप क्या जानिएगा भीतरी बात ! ...इसीलिए पूछते हैं कि..."

"अरे हाँ-हाँ दास जी, हम समझ गए। असल में कालीचरन है धरमपुरी जी की पाटी का। धरमपुरी जी भी सोशलिट पाटी में ही हैं, मगर हमारा सकरेटरी साहब के सामने वह कुछ नहीं हैं। एकदम ठंडा खेयाल के आदमी हैं। सभी से हँस-हँसकर बोलेंगे, कौंगरेसियों के साथ बैठकर दुकान में दही-चूड़ा खाते हैं। अब सोचिए कि ...यह फलहार करने वाला आदमी, इस किरांती पाटी में कैसे ?... आप सोचिए दास जी !"

"ओ ! ओ... ओ ! यह बात है ?" सुमरितदास गंभीर होकर कहता है, "वाजिब बात है।"

"हाँ, और यह कालीचरन जी उन्हीं की पाटी में है।" फिर फिसफिसाकर कहा, "मंगलादेवी के साथ आजकल ऐसा रसलील्ला होता है कि क्या कहेंगे ! ...यही सब बात हम सिकरेटरी साहब से बोले। कालीचरन को सिकरेटरी साहेब ने डाँटा है। इसीलिए ऐसा बोलता होगा... देखिए न ! इसी बार मजा लगेगा, सम्मेलन में जाने के समय।"

"ओ-ओ-ओ। ...हाँ भाई ! हर जगह यह पाटीबंदी ठीक नहीं। ...लेकिन आखिर एक हद है। धरमपुरी जी के बारे में तुमने जैसा कहा, वैसा आदमी किरांती पाटी में कैसे रह सकता है ! वाजिब बात ! ...अलबत्त ...बोलता है तुम्हारा सिकरेटरी किसनकांत जी—गरमागरम ! बोलने के समय बाँह जब मरोड़ता है तो लगता है कि... अच्छा, हाकिम का परवाना क्यों जारी हुआ है ? क्यों बुलाहट है !"

"अरे, वही जुमराती मियाँ न जाने क्या-क्या कहा है जाकर। बोलता था कि रुपैया छीन लिया है।" बासुदेव आँख पर काला चश्मा चढ़ाते हुए कहता है, "मुसलमानों का क्या बिस्वास !"

"समझो जरा !" सुमरितदास फिक् से हँसकर कहता है, "समझने की बात है !"

"मैं जाकर कह दूँगा कि घर पर नहीं है। कोई लाट साहेब थोड़ी हैं जो लोग हाथ बाँधे खड़े रहेंगे। हम किसी का परवाह नहीं करते।" बासुदेव पैकेट से सिगरेट निकालकर दियासलाई के डब्बे पर ठोंकता है—"दिन-भर हम लेक्चर झाड़ते रहे हैं, सिगरेट मत पियो, अंडा मत खाओ। और भीतरे-भीतरे..." बासुदेव माचिस जलाकर सुलगाने लगता है।

...दियासलाई की रोशनी चश्मे के दोनों शीशों पर चमक उठती है। काले चश्मे पर जलती हुई माचिस ! सुमरितदास के सारे देह में एक सिहरन दौड़ जाती है, रोयें खड़े हो जाते हैं। ...लेकिन वह हँसते हुए कहता है, "डूबकर पानी पियो,

एकादसी का बाप भी न जाने।"

"हुँ !" बासुदेव धुएँ का गुबारा छोड़ते हुए खाँसता है।

...दारू की महक ! सुमरितदास की आँखें चमक उठती हैं, "बासुदेव-बाबू ! कुछ नेपलिया माल आया है क्या ? जरा हमको भी तो चखाओ !"

"औल रेट ! कल चखावेगा। लाल सलाम !"

मच्, मच्, मच्, मच्।

छह

तंत्रिमाटोली में आज घमाघम[1] पंचायत हो रही है।

बहुत दिनों की बंदिस है कि पंचायत में कोई भी घर की बोली नहीं बोले। काहे-कूहे, याने कचराही-मोगलाही[2] जितना बोल सको, अच्छा है। पंचायत में कोई हटा नहीं सकता। लौजमानों के दल ने रमपियरिया के दासिन होने का घोर विरोध किया है।

"खेल बात है ? जात है कि ठट्ठा है ? जब जिसका मन हुआ किसी की रखेलिन बन गई, दासिन बन गई, रंडी बन गई ?" आज गरभू भी गरम होकर बोलता है।

पंचायत में सबों को बोलने का हक है, इसीलिए घमाघम पंचायत हो रही है।

"कहाँ है रमपियरिया की माये ?"

सबों की निगाह अट्टी की आड़ में खड़ी औरतों पर जाती है। रमजूदास की स्त्री खखारकर गला साफ करती है, "रमपियरिया की माये को क्या कहते हैं ?"

"तुम मत बोलो !"

"धान न बोले, बोले भूसा टन !"

"हम बोलेंगे ही !" रमजूदास की स्त्री उ... खडी होती है। ...लगता है आज मारपीट भी होगी।

"कहाँ, उचित और नोखे ! छड़ीदार काहे बने हो ?"

"हाँ, मारने कहो छड़ी। ...जो न छड़ी से पीटे वह दोगला का बेटा !... रमपियरिया की माये के मुँह में बोली नहीं है तो आज घोघी का भी मुँह खुला है ! ...रमपियरिया

1 गरम। 2. कचहरी में बोली जानेवाली उर्दू।

जवान है, उसके जो जी में आवे कर सकती है।···पंचायत में तो बड़ा फड़फड़ करते हो गरभू, रमपियरिया तो तुम्हारी भतीजी लगेगी न , बोल, खोल दें बात ?··· सात बेटे का बाप है छीत्तन, इससे पूछिए कि रमपियरिया के माये के मचान पर दिन-रात, भूख-पियास भूलकर पेट के बल क्यों पड़ा रहता है ? यही निसाफ है ?··· अरे, जवान-जहान की बात हो तो कहा जा सकता है कि एक दिन पैर भँस[1] गया। इस घुर-घुर बूढ़े की यह चाल !"

"चुप रहो। ···ऐ ! चुप ! ···कहाँ छीत्तन ?"

"सिर में तो अब एक भी काला बाल खोजने पर मिलेगा नहीं और यह तेजी ? ···काहे जी छीत्तन, क्या कहती है रमपियरिया की माये ?"

छीत्तन का तोतरहवा[2] बेटा गरम हो जाता है, "मूँ स सँभाय कय बोओ !"

"मारो ! पकड़ो !"

"ऐ ! ऐ !"

"लगाओ गले मे कपड़ा ! मारों झाड़ू ऊपर से ! ···सान दिखाता है !"

नोखे और उचितदास छड़ीदार हैं। पंचायत जब घमाघम होने लगती है, तब वे दोनों छड़ी हाथ में लेकर नचाते रहते हैं। नोखे और उचितदास छीत्तन को पकड़कर गले में कपड़ा लगा देते हैं। मँहगूदास, चेथरू, मुसहरू, अनपू और घोतन बीच-बिचाव करते हैं–"मारो मत।"

"सभी बूढ़े एक तरफ हैं," एक आवाज आती है।

अब रमपियरिया की माये के बदले छीत्तनदास की पंचैती होती है। छिः छिः ! लाज से डूब मरने की बात है ! इस बार पाँच ही रुपैया जरिमाना हुआ। सस्ते छूट गए !

छीत्तनदास को पाँच रुपैया जुर्माना हुआ है और उसके तोतरहवा बेटा को पाँच बार कान पकड़कर उठने-बैठने की सजा। नोखे गिनता है–"एक, दो, तीन, चार, पाँच·· बस !"

रमपियरिया की माये को एक साम भोज देना होगा। महंथ साहेब जात ले रहे हैं तो भात दे। ···क्या कहती है रमपियरिया की माये ? ··देगी ? ··तब ठीक है। बोलिए पंच-परमेश्वर, क्या विचार ? ·जो दस का विचार !

दस का विचार हो गया–रमपियरिया दासिन बन सकती है। जाति का बंदिस मे जरा ढील देने से सब गड़बड़ा जाता है। इसी तरह बराबर पंचायत होती रहे तब तो ? अभी यह भोज तो फोकट में चला जाता हाथ से।

रमजू की स्त्री रमपियरिया की माये के आँगन में बैठी समझा रही है रमपियरिया को–"जब दूध की छाली और मालभोग केला खाकर आँख पर चरबी चढ़ जाएगी,

1. बहक जाना। 2 तोतला।

तब मौसी को पहचानोगी भी नहीं। महंथ से कहा देना, जोड़ा साड़ी से काम नहीं चलेगा। दही खिलाने से बाकी मोजर नहीं होगा। ···कठसर[1] लेकर छोड़ेंगे।"

रमपियरिया हँसती है–"उनको तो जो कहेंगे, करेंगे। मगर कोठारिन··"

"कैसी पगली है रे ! कोठारिन वह कैसी ! अब तो कोठारिन तूँ है। इसी मुँह से मठ पर रहेगी रे ! ··लछमिनियाँ को कम मत समझो। उसका जहरचौ आ[2] यदि नहीं उखाड़ सकी तब तो तुम्हारा महंथ सब दिन खँजड़ी बजाकर फटकनाथ गिरधारी गाता रहेगा। पगली ! इसी लूरमुँह से···"

"सुनती है रे ! रमपियरिया ! कहाँ गई उठकर ? ··सायद महंथ आया है···" उसकी माँ पुकारती है।

"साहेब बंदगी हो महंथ ! पिछवाड़े में अब काहे छिपे हो ? अब तो तुम अपने आदमी हुए·· इधर आओ !" रमजू की स्त्री आँख टीपकर मुस्कराती है।

महंथ साहेब रमपियरिया के साथ केलाबाड़ी से निकलकर आँगन में आते हैं।

"पीढ़ी दो रे ! बैठिए !"

"जातवाले तो भात माँग रहे हैं। हमने तो कबूल लिया है, "रमपियरिया की माये चिलम फूँकते हुए कहती है।

"लछमी से पूछेंगे," महंथ साहेब आँखें नीची करके कहते हैं। रमपियरिया की माये अब उनकी सास है। सास के सामने जरा लिहाज से बातें करनी चाहिए।

"क्या बोले ?" रमजू की स्त्री फटे कनस्तर की तरह झनझना उठती है, "लछमी से पूछेंगे ? रमपियरिया की माये ! सुनती हो ? हम कहा था न, उसने तो इनको भेंडा बना लिया है। अरे, महथ साहेब ! लछमी कौन होती है जो आप उससे पूछिएगा ?"

"नहीं, वह बोली है "

"महथ साहेब ! बुरा मत मानिएगा, आप हिजड़ा हैं।" रमजू की स्त्री जाने के लिए उठ खड़ी होती है, "रमपियरिया को लछमिनियाँ की लौंडी बनावेंगे महंथ साहेब, हम सब समझ गए।"

"नहीं, नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता। ड़मपियाड़ी जो कहेगी वही होगा।'"रामदास जी के दोनों हाथ जुड़ जाते हैं।

" ड़मपियाड़ी जो कहेगी !" महथ साहेब हर बात में अब कहते हैं।–"जाने डमपियाड़ी।"

"रमपियरिया क्या जानती है ?" लछमी कुढ़ जाती है, "सालभर तो उसे मठ के नेम-टेम सीखने में ही लग जाएगा। हाथ की सभी अँगुलियों को सही-सही गिन भी नहीं सकती है और उसके पास जन-मजूरी का हिसाब है। सतगुरु हो, सतगुरु हो !"

1 कंठसर, एक गहना। 2 विषदंत।

जिस दिन से रमपियरिया मठ पर दासिन होकर आई है, लछमी का मुँह हाँड़ी की तरह लटका रहता है। ···महंथ रामदास सबकुछ समझते हैं। रमपियरिया को मजूरों की मजूरी का धान नापने को कहते हैं महंथ साहेब, "नहीं जानती है हिसाब-किताब, तो समझा दो ! सिखावेगी-पढ़ावेगी तो कुछ नहीं, बस खाली लचकर झाड़ती रहेगी !"

"मैं लचकर झाड़ती हूँ ? सतगुरु हो ! मुझे अपने पास बुला लो.प्रभू ! अरे, अभी उसकी देह में एक मन साबून धँसो तब कहीं उसके सरीर में प्याज-लहसुन की गंध कम होगी। भोर को उठना सिखाओ। मुँह तो कभी धोती भी नहीं है। बीड़ी पीती है। डोलडाल[1] से आकर नहाती भी नहीं है। जूठे हाथ से बीजक उठाती है। मैं क्या सिखाऊँ-पढ़ाऊँगी ? तुम क्या कहते हो ? आँचल में चाबी लटकाए बिना कुछ नहीं सीख सकती, तो लो न चाबी अपने भंडार की। मुझे चाबी लटकाने का सौख नहीं है। जानते हैं। सतगुरु ! लछनी झन् से चाबी का गुच्छा फेंक देती है।

···महंथ रामदास देखते हैं, यह तो सिर्फ गोदामघर की चाबी है। संदूक की चाबी कहाँ है ?···"चाबी काहे फेंकती हो ! बात-बात में इतना गुस्सा होने से कैसे काम चलेगा।" महंथ साहेब गंभीर होकर कहते हैं, तुम मेरी गुरुमाई हो ! ···ड़मपियाड़ी को रास्ते पर लाना तुम्हारा काम है।"

"देह का मैल भी मैं ही छुड़ा दूँगी। कपड़ा मैं ही साफ कर दूँगी ! ···दस दिन भी नहीं हुए हैं, गद्दीघर[2] की दीवाल पर थूक-खखार की ढेरी लग गई। अधजली बीड़ी के टुकड़ों से घर भरा हुआ है। वह भी मैं ही साफ करूँगी ! ···अब यह मठ नहीं, सूअर का खुहार है खुहार।"

"तुमको ड़मपियाड़ी के देह का मैल छुड़ाने के लिए कहेंगे ! हम पागल नहीं हैं। तुम बाबू बालदेव की गर्दन की मैल छुड़ाओ···" महंथ रामदास क्यों छोड़ देंगे ! सच्ची बात तो लोग अपने बाप के मुँह पर भी कह देते हैं।

"बालदेव जी का नाम मत लो।"

"क्यों नहीं लेंगे ? ···मठ को सूअर का खुहार बनाया कौन ?"

"मैंने बनाया है ?"

"हाँ, तुमने बनाया है। मेरा भीतर जल रहा है। बात मत बढ़ाओ।"

"भीतर जलता है तो मारकर ठंडा कर लो।"

मारपीट का नाम सुनकर बालदेव जी कैसे चुप रहें ! हिंसाबात का डर है। "महंथ साहेब ! ···कोठारिन जी ! सांती ! सांती से सब बात कीजिए !"

"अहा-हा ! कोठारिन रे कोठारिन !" रमपियरिया को बचपन से ही झगड़ने की तालीम मिली है। वह किवाड़ की आड़ से निकल आती है और हाथ चमका-चमकाकर कहती है–"रोज आध पहर रात को कोठारिन की कोठरी खुलती

1. नित्यक्रिया। 2. बीजक और महंथ के रहने का कमरा।

है। ...संदूक की चाबी कहाँ है ? ...गुदामघर में है क्या ? सब तो बेंच-बाँचकर छुट्टी कर दिया।"

लछमी के नथने फड़कने लगते हैं। लगता है किसी ने बाँस की पतली छड़ से उसकी पीठ पर शपाक् से मार दिया। ...बारह बजे रात को कोठरी खुलती है ! ...सब बेंच-बाँचकर छुट्टी कर दिया ! ...सतगुरु हो, किस पाप का दंड रहे रहे हो प्रभू ?

"रामदास ! अपनी फेकसियारी[1] का मुँह बंद करो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। क्या चाहते हो तुम लोग ? ...संदूक की चाबी के लिए कलेजा ऐंठ रहा है तो ले लो !" लछमी संदूक की चाबी भी फेंक देती है।

रमपियरिया अब गद्दी से बकर-बकर कर रही है। ...अलबत्त बोल सकती है रमपियरिया ! लौंगी-मिरचा की तरह वह तेज है। उसकी बातें सुनकर देह लहरने लगता है। बात में भी ऐसा ...झाल ?

"लडि मरे बरदा, बैठल खाए तुरंग। दिन-भर बैठकर महतमा जी-महतमा जी कहता है बालदेव, कभी एक लोटा पानी भी किसी पेड में दे तो समझे कि हाँ ! सुबह से साम तक ऐना ककही लेकर महरानी सिंगार-पटार करेगी ! यहाँ कोई किसी का नौकर नहीं। ...मेरे देह में मैल है, मन में नहीं। ऊपर से तो गमकौआ साबून और चंपा-चमेली का तेल लगाती हो—भीतर ? राम-राम ! रात-भर मुँह में मुँह सटाकर सोनेवाली, भोर में मुँह धोकर सुध तो नही हो सकती। नट्टिन ! कसबिन !" रमपियरिया बड़बड़ा रही है।

"ड़मपियाड़ी ! बेसी मत बोलो, सिर में दरद हो जाएगा।" रामदास जी कहते है, "ऐसा जानता तो "

लछमी दासिन कुछ नहीं बोलती है। चुपचाप, टकटकी लगाकर नीबू के पेड़ की ओर देखती है।

रमपियरिया की एक-एक बात तीर की तरह उसके मर्मस्थल मे गुँथ गई है। गमकौआ साबून और चमेली का तेल ! महंथ सेवादास ने उसे यही एक बहुत खराब आदत लगा दी है, बिना साबून के वह नहा ही नही सकती है। मन पवित्र ही नहीं होता है बिना साबून के। केशरंजन तेल तो सिर-दर्द के दिन ही अब लगाती है वह। ...महंथ साहेब जब पुरैनियाँ कचहरी से लौटते तो झोरी में तेल, साबून, किसमिस-अखरोट और तरह-तरह का फल-मेवा ले आते थे। कोई भी नई चीज बिकते देखा, बस खरीद लिया।

...महंथ सेवादास के साथ सभी तीरथ कर चुकी है लछमी। ...क्या इसी नरक भोग के लिए ! उसकी तकदीर ही खराब है। अब मठ मे रहना नरकवास है ! है! छिः छिः, दस दिन हुए, परसाद जरा भी नहीं रुचता है, पानी में मछली की गंध पहले ही रोज लग गई, सो अब पानी पीते ही कै हो जाती है। ...मठ पर

---

1. लोमड़ी की एक जाति।

आने के समय रमपियरिया की माये ने ठूँस-ठूँसकर मछली खिला दिया था। सतगुरु हो ! ···सबकुछ करो, पंथ मत भरस्ट करना गुरु ! ···वह कल ही अलग हो जाएगी मठ से। महंथ साहेब उसके नाम से तीस बीघा जमीन और कलमी आमों का एक बाग लिख गए हैं। उस पर मठ का कोई अधिकार नहीं ! ···सब एक सप्ताह में ही, सतगुरु की कृपा से, ठीक हो जाएगा।

लछमी की आँखों के आगे सपनों-जैसी एक दुनिया बस रही है। ···कलमी आमों के बाग में, ठीक बंबई आम के पेड़ के पास, दो खूबसूरत झोंपड़ियाँ हैं। वह चरखा चला रही है ! बालदेव जी बीजक बाँच रहे हैं···

"बालदेव जी ! अब आसन तोड़िए !"

"बालदेव जी लछमी के चेहरे की ओर भकर-भकर[1] देखते हैं। जब-जब वह लछमी की आँखों में खोते हैं, उनका चेहरा ठीक ऐसा ही अर्थ-भावहीन हो जाता है। ···आसन तोड़ना होगा ?

हाँ, आसन तोड़ना होगा। यहाँ धरम नहीं बचेगा," लछमी की आँखें डबडबा आती हैं।

आ रे ! जोगिया के नग्र बसे मति कोई
ओहो संतो··· जा रे बसे सो जोगिया···होई !

डिम डिमिक-डिमिक्, डिम डिमिक-डिमिक् !

सात

कमली दिन-दिन खूबसूरत होती जा रही है।

गले में अब दो रेखाएँ ऐसी उभरती हैं जो उसके मुख-मंडल को और भी आकर्षक बना देती हैं। आँखो में चंचलता नहीं, एक मद है। अचानक देखने पर लगता है कि आँखों में काजल पड़ा है।

"माँ ! अब तुम्हारा डाक्टर खुद बेहोश होने लगा है। आध घंटे से दीवार की ओर एकटक देख रहा है।" कमली कमरे में बाल झाड़ रही है।

माँ डाँटती है, "कमली ! डाक्टर साहेब गोल कमरे में बैठे हैं।"

"तो क्या हुआ ?"

---

1. अर्थ–भावहीन दृष्टि से देखना।

कई दिनों से माँ चाहती है कि कमली को कहे, इतना हेल-मेल अच्छा नहीं। लेकिन, अभी उसकी ओर देखते ही माँ ने जाने क्या देखा कि मोम की तरह गल गई। ···दुधिया वर्ण और सुडौल बाँहें, लंबे-लंबे बाल, सुगठित मांसपेशियाँ, गौर आँखों में यह क्या ? ··काँप जाती है माँ। यह क्या रे अभागी ! हतभागिन ! आँचल को मैला मत करना बेटी, दुहाई ! नहीं, नहीं · वह भी कैसी है ! उसकी बेटी तो 'माँ कमला' है। ···वह जो चाहे, करे ! माँ के ओठों पर स्वाभाविक मुस्कराहट लौट आती है, "मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतारकर डाक्टर ने अपने ऊपर ले लिया है।"

"हो-हो !" डाक्टर अब हँसी जब्त नहीं कर सकता है, "हो-हो !" कमली पर्दे की आड़ से गला निकालकर इशारे से कहती है, "चुप ! आप बीमार हैं। मालूम ?"

तहसीलदार साहब की खड़ाऊँ खटखटाती है। हँसी सुनकर वे भला कोई और काम कर सकते हैं !

डाक्टर को तहसीलदार साहब के दोनो रूपों के दर्शन हो चुके हैं। जब वह घर-गृहस्थी, मामले-मुकदमे, लेन-देन, नफा-घटी वगैरह की बाते करते रहें तो उनका कोई और रूप देखिएगा। घर में, आराम से बैठकर दीन-दुनिया की बातें करते समय अथवा रामायण-महाभारत, देश-बिदेश से लेकर घरेलू चीजों पर टीका करने के समय, किसी और तहसीलदार साहब को आप देखिएगा। हास्यप्रिय, रसिक और कुशल गृहस्थ ! भोला-भाला इंसान !

डाक्टर को उनके प्रथम रूप से बेहद घृणा है, किंतु दूसरे रूप के इंद्रजाल में तो वह फँस ही चुका है।

"क्या बात थी ?" तहसीलदार साहब हँसी का टटका स्वाद लेने के लिए तुरत पूछ बैठते है—"कमली की माँ ! क्या बात थी ? ये दोनो नहीं बतावेंगे।"

"अरे, तुम्हारी पगली बेटी के मुँह में जो आता है बक देती है। तुम्हारी बहकाई हुई बेटी अभी कह रही थी कि डाक्टर साहेब अब खुद बेहोस हो जाते हैं।"

"अच्छा ! · तब ?" तहसीलदार साहब मुस्कराहट को रोकने की मुद्रा बनाकर, चाय के प्याले में चुस्की लेते हुए पूछते है, "तब फिर ?"

माँ हँसी को रोकते हुए कहती है, "तो मैंने कहा कि मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतारकर उन्होंने अपने ऊपर ले लिया है। डाक्टर साहेब भी सुन रहे थे· "

"हा-हा-हा-हा !" तहसीलदार साहब की ऐसी हँसी को कमली कहती है, "बाबा पछतिया[1] हँसी हँसते हैं।

तहसीलदार साहब भी देखते हैं, कमली के स्वभाव में बहुत परिवर्तन हुए हैं। ऐसी बेटी का बाप चुपचाप बैठा है; लाचार है। भगवान ! शंकर भगवान !

1 देर से फलने-फूलनेवाली।

कमली पर कृपा-दृष्टि फेरो !

डाक्टर तहसीलदार साहब की बुझती हुई हँसी को गौर से देखता है। ...यह शायद एक तीसरा रूप है जिसे देखकर पत्थर भी पिघल जाए। कितना करुण।

"डाक्टर साहेब !" माँ दो प्लेटों में जलपान ले आती है, "कमली रेडियो की दीदी से मटर-पोलाव सीखकर आई है उस दिन !"

"तो यह ऑल-इंडिया रेडियोवाला मामला है ! शुरू कीजिए डाक्टर साहब ! देखिए कि मटर की घुघनी को किस सफाई से मटर-पुलाव बना दिया है।"

"कुछ भी हो, खयाली-पुलाव से तो अच्छा है," डाक्टर कमली की ओर हँसते हुए देखता है।

"हो-हो-हो-हो !"

"हँसी-खुशी के इंद्रजाल में फँसकर डाक्टर अपने कर्त्तव्य की अवहेलना तो नहीं कर रहा है ? वह कभी-कभी रुककर सोचता है। वह जो कुछ भी कर रहा है, उसके विरोध में हृदय के किसी कोने का तार बेसुरा तो नहीं बज उठता है ? ...नहीं, वह जो भी कर रहा है, सही हो या गलत, अच्छा लगता है उसे !"

प्यारू ने कई बार कहा है, आँगन की ओर खुलनेवाली खिड़की पर भी पर्दा रहना चाहिए। नंगी-सी लगती है यह खिड़की ! डाक्टर प्यारू को इसीलिए इतना प्यार करता है। ...कमली अब रोज डाक्टर के यहाँ आती है।

"मौसी कहती थी कहती थी कि.. तू गलत कर रही है। तुम दोनों गलत कर रहे हो। ..इसके बाद क्या होगा, सोचा है कभी ? क्या होगा इसके बाद डाक्टर ? कहो तो !" कमली आम के फाँकों-जैसी आँखों से मधु ढालते हुए पूछती है।

"कहो तो डाक्टर ! क्या होगा ?"

"क्या होगा ! जो भी हो, बुरा न होगा।"

"तुम हमेशा मेरे पास नहीं रह सकते ?"

"फिर पागलपन ?"

"डाक्टर ! तुम जिन तो नहीं ?"

"जिन ! क्या जिन ?"

"जिन एक पीर का नाम है। वह कभी-कभी मन मोहनेवाला रूप धरकर कुमारी और बेवा लड़कियों को भरमाता है। गरीब-से-गरीब को धनी बना देना उसकी चुटकी बजाने-भर की बात है। जिस पर बिगड़े, बरबाद कर दे, जिस पर ढरे उसे निहाल कर दे।" कमली के गले की दोनों नई रेखाएँ जल्दी-जल्दी बनती-बिगड़ती हैं। .वह डर तो नहीं रही ? ..वह डाक्टर को पकड़ लेती है।

"क्यो झूठ-मूट डरने लगीं। फिजूल की बातें भरे रहती हो दिमाग मे।"

"नहीं, मुझे डर नहीं लगता है। यदि तुम जिन भी रहो तो मैंने तुमका जीत लिया है।"

"इतना भरोसा ?" डाक्टर कमली की आँखों में चमकते विश्वास का स्पष्ट रूप देख लेता है। कमला नीरोग है ! स्वस्थ है कमला !

"तुम बाँहों पर उस दिन कौन-सा जेवर पहनकर आई थीं ? अब क्यों नहीं पहनतीं ?"

"बाजू। ···क्यों, ग्वालिन-जैसी लगती थी न ? गोकुल की ग्वालिन !" कमली ठठाकर हँस पड़ती है।

इसी को रासलीला कहते हैं। ··देखते हो ? अभी दो पहर रात को डाकडर का नेंगड़ा नौकर लैट भुकभुकता हुआ, तहसीलदार की बेटी को घर पहुँचाने जाता है। सादी ही क्यों न करा देते हैं ? एकदम साहेब मेम ! डाकडर साहेब भी कैसे आदमी हैं !

"डाक्टर साहेब कैसा आदमी है ?" अगमू चौकीदार से कटहा थाना के नए दारोगा साहब पूछते हैं।

"हुजूर ! अच्छा आदमी है, मगर · "

"मगर क्या रे ? साला आधा बात बोलता है, बटचू आधा बात पेट में रखता है। साले, हमको चीन्ह लो। हम दूसरे जिला के नहीं, हमारा घर इसी जिला में है। जानते हो न ? हमसे साले बात छिपाते हो। क्या मगर ?" नए दारोगा साहब जलजल करते हैं। हवा को भी गाली देते हैं, "साला ! रात में बटचू···ऐसा हवा बहता था हवलदार साहब, कि नींद तो बूझिए कि बोझ दिया। हवलदार साहब। जरा वह फाइल दीजिए तो ! देखें, क्या सब पूछा है। नया-नया पार्टी होता है, साला हम लोगों को जान जाता है।"

दारोगा साहब नई उम्र के हैं। कहते हैं कि इस जिले के पहले पाँच दारोगों मे से एक हैं। बातें करते समय वह यह कहना नहीं भूलते—"साहब ! मैं बाहरी आदमी नहीं, इसी जिले का हूँ।" हर मौके पर इसका बढ़िया इस्तेमाल करते हैं—"मैं यदि एक पैसा खा भी लूँगा तो इसी जिले में रहेगा।" दारोगा साहब जबर्दस्त गलतफहमी से परेशान रहते हैं कि बाहर के जितने भी लोग यहाँ आए हैं, उन्हीं के हिस्से का सुख-मौज लूट रहे हैं। फारबिसगंज के नवतुरिया नेता छोटनबाबू जिला कांग्रेस के सिक्रेटरी हुए हैं। लिखा है यह डाक्टर कोमनिस्ट पार्टी का है।

दारोगा साहब ने अस्पताल को चारों ओर से एक दर्जन सिपाहियों से घिरवा रखा है।

"आपका घर ·असल में कहाँ है ?" दारोगा साहव हैरान होकर पूछते हैं।

"विराटनगर।"

"विराटनगर तो नेपाल में है। आप नेपाली है ?"

"नही।"

"तब ?"

"आप इतना हैरान क्यों हो रहे हैं, दारोगा साहब ? मै जो कुछ भी कहता

हूँ, लिखते जाइए !"

"सो ···लिखते जाइए ! वाह ! आखिर क्या लिखें ?"

"मैं जो कुछ भी जवाब देता हूँ।"

तहसीलदार साहब पसीने से तर-बतर हो रहे हैं। प्यारू का मुँह सूख गया है। ···लेकिन आश्चर्य ! कमली पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। "···'डाक्टर को कुछ नहीं हो सकता। कोई बात नहीं है," कमली को दृढ़ विश्वास है।

दारोगासाहब डाक्टर को दो बात में ही पहचान गए हैं–"अजीब किस्म का आदमी है यह डाक्टर !"

सुमरितदास बेतार से आज बच्चा-बच्चा पूछता है–"सुमरितदास ! डागडर साहेब ने क्या किया है जो दारोगा साहेब पकड़ने आए हैं ? ···घूस लेने की शिकायत तो नहीं किया है किसी ने ?"

"देखो न जी ! बड़ा खराब है यह दुनिया। किसी का बिसवास नहीं··· रमैन में कहा है न–बिस रस भरे कनक घट जैसे ! यह डाकडर तो सुनते हैं कि···जरमनवाला का आदमी है ! जोतखी जी ठीक ही कहते थे··· जरमनवाला का सी.आई.डी है यह डाकडर। यहाँ के लोगों को सूई भोंककर कमजोर करने का काम करता था। कुआँ में दवा डालकर सचमुच में हैजा फैलाया है। जरमनवाला का एक पाटी है यहाँ, कमसीन ···कौम-नीस पाटी सुनते हैं, उसी पाटी का आदमी है।"

इस दारोगा की हरकतों पर डाक्टर को ताज्जुब होता है। बार-बार कहता है, "हम इसी जिले के हैं।' बेवकूफों की तरह सवाल करता है, "आपको ··बहुत लड़कियों से ताल्लुक रहा है ?"

"रहा है। कम-से-कम चार सौ लड़कियों के साथ मैं दिन-रात रह चुका हूँ," डाक्टर मुस्कराता है।

"चार सौ !" दारोगा साहब को जब किसी बात पर अचरज होता है तो उनकी आँखें उल्लू की आँखों की तरह गोल हो जाती हैं, 'चार·· चार सौ ! बटचू इतनी लड़कियाँ कहाँ से मिलीं ?"

"मेडिकल काजेल हॉस्पिटल में।"

"ओ ! · नहीं, मेरे पूछने का मतलब है कि भले घर की लड़कियाँ···"

"क्यों, हॉस्पिटल में भले घर की लड़कियाँ नहीं जातीं ?"

"मेरा मतलब। खैर, छोड़िए इन बातों को। 'कौमनिस्ट पाटी' वालों से आपका कैसा रिस्ता है ?"

"मेरे बहुत-से दोस्त कम्युनिस्ट हैं।"

"आपने संथालों को भड़काया··· समझाया था कि जमीन पर जबर्दस्ती हमला कर दो ? संथालों ने अपने बयान में कहा है।"

"संथाल लोग समय-समय पर मुझसे पुराने कागजात पढवाने आया करते थे–जजमेंट वगैरह।"

"आप अपनी किताबें दिखला सकते हैं ?" दारोगा साहब उठकर किताबों

की अलमारी के पास जाते है।

साला, सब डाक्टरी किताबे हैं। चिल्ड्रेन ऑफ यू. एस. एस. आर.। लाल रूस, लेखक : बेनीपुरी। लाल चीन, लेखक : बेनीपुरी।

"ये सब तो रूस की किताब है।"

"रूस की नहीं, रूस के बारे मे।"

"दोनो एक ही बात है," दारोगा साहब उस किताब को निकालकर उलटते हैं—मानो किताब के पन्नो मे बम छिपा हो। बहुत सतर्क होकर पृष्ठ उलटते हैं।

डागडर साहेब गिरिफ्फ। जुलुम बात! सथालो को डागडर साहेब ने ही भडकाया था। गॉव मे हैजा भी उन्होने फैलाया था। गॉव के लोगो को कमजोर कर दिया। हॉ, हैजा की सूई लेने के बाद आज भी जब काम-धन्धा करने लगते हैं तो ऑखो के आगे भगजोगनी उडने लगती है। देखने मे कैसा बमभोला था! मालूम होता था, देवता है। भीतर-ही-भीतर इतना बडा मारखू[1] आदमी था सो कौन जाने! जोतखी काका ठीक ही कहते थे।

गोनौरी के यहॉ फारबिसगज का एक मेहमान आया है। कहता है, उसके गॉव के पास, मिझवा-गरैया मे एक डागडर है जो डकैती कराता है। डागडर तो घर घर मे जाता है, अगवार-पछवार सब देखता है, रुपैया का बक्सा भी वह देखता है। वह अपने दलवालो को पूरा नकसा बता देता है। घरवाले को सोने की दवा दे देता है, उधर चोरी-डकैती करवा देता है। गॉव के आसपास के लोगो को सूई भोककर डरपोक बना दिया है। जो उसकी बात से बाहर हुआ, उसका बैल गाय कटवा देता है, भैंस चोरी करवा देता है या घर मे आग लगवा देता है। कई बार बेल केस[2] उस पर चला, लेकिन रुपैया खर्च करके जीत जाता है। नाम भी अजीब है—डागडर नटखटपरसाद!

"हॉ भाई! किसी का बिसवास नही।"

"सोमा जट कल नामगज मेला मे गिरफ्फ हो गया।" मोमन मोची कहता है—"अभी मेला से जो लोग आए है, बोल रहे है। अब हम अखाडा मे ढोल नही बजाएँगे।"

1 बदमाश। 2 बी एल के केस।

आठ

जोतखी काका आजकल बहुत खुश रहते हैं।

गाँव के लोग आजकल दिन में पाँच बार परनाम करते हैं। ...अलबत्त बरमगियानी हैं जोतखी काका ! कलजुग में भी यदि कुछ तेज बाकी है तो बाभन में ही।... जोतिस बिद्दा हँसी-खेल नहीं। ...बरमतेज अभी भी है। सोना यदि कीचड़ में रहे तो उस पर काई नहीं लग सकती। ...परनाम जोतखी काका !

"जीयो, आओ बैठो ! क्या बात है ?"

"जोतखी काका, हम लुट गए। मेरा तोता कल उड़ गया। हँसते-खेलते चला गया जोतखी काका !" पोलियाटोली का हीरू जोतखी काका के पाँव पर लोटकर रोता है।

"ऐ हीरू क्या हुआ ? जोतखी जी पूछते हैं।

"मेरा बेटा ! मेरा बच्चा जीबानन, कल ही ...एक दिन के बुखार में ...कलेजा तोड़कर चला गया। मेरा सिखाया-पढ़ाया तोता उड़ गया जोतखी कका !" हीरू अब सिर पर हाथ रखकर झुककर बैठा हुआ रो रहा है।

"इतना जल्दी ! कल कौन दिन था–सोमवार ? हुँ ! सोम को मरा है न ?"

"हाँ, ठीक सूरज डूबने के समय !"

"करसामाँ[1] है। डाइन का करसामाँ है। समझे हीरू ! शुक्रवार को अमावस्या है। जिस पर तुमको संदेह हो, उसके पिछवाड़े में बैठ रहना। ठीक दो पहर रात को वह निकलेगी। उसका पीछा करना। वह तुम्हारे बच्चे को जिलाकर, तेल-फुलेल लगाकर, गोदी में लेकर जब नाचने लगेगी तो ...उस समय यदि उससे बच्चा छीन लो तो फिर उस बच्चे को कोई मार ही नहीं सकता। ...इंद्र का वज्र भी फूल हो जाएगा।"

"इसमें और संदेह की क्या बात है जोतखी काका ! ...सफासफी ऐना की तरह बात झलकती है। ...पाँच महीना पहले, दफा चासील के समय, जब सभी लोग दरखास देने लगे तो हमने भी दे दिया। मेरा साला कचेहरी में मोहर्रिल है। उसके पैरवी से जमीन हमको नगदी हो गई। सभी की दरखास नामंजूर हो गई और हमको जमा बाँध दिया। एक दिन पारबती की माँ गेहूँ हिस्सा माँगने लगी तो हम कह दिया कि अब बाँटकर नहीं देंगे। हमको नगदी हो गया है जमीन–दफा चालीस में। बस, तुरत आसीखसराप देने लगी। इसकी दसों बीधा जमीन हम जोतते थे बस, वही गोस्मा मन में पालती रही और कल हमको लूट लिया राच्छसनी ने।"

1. करिश्मा।

"ऐ हीरू ! रोओ मत। हल्ला मत करो। चुपचाप, अमावस्या की रात को, दो पहर रात का । याद रखना !"

अमावस्या की रात !

पारबती की माँ के पिछवाड मे मरद भर-भर भाँग की झाडी है। हीरू उसी झाडी मे बैठकर खैनी चुनता और खाता है। मोरगिया गाँजे का नशा बडा तेज होता है। कातिक महीने से ही रात मे मीत गिरने लगती है। हीरू का देह एकदम ठडा हो गया। खैनी खाकर गर्म हो लेता है। कहता है–"माली घर मे गुट्टुर-गुट्टुर कर बोलती है, बाहर नही निकलती है। निकलो आज ! कही घर मे ही तो नही नाचेगी ? यदि बाहर नहीं हो तब ? जोतखी काका ने भी नही बताया।"

मौसी को शाम से परेशान कर रखा है गणेश ने ! आज उसकी आँखो मे नीद गायब हो गई है। रह-रहकर वह ऐसी-ऐसी बात पूछ बैठता है कि मौसी को अच्छी तरह समझ-बूझकर जवाब देना पड़ता है।

"मामा को जेहल मे मारता होगा ?"

"नहीं रे ! तुम्हारा मामा चोर-डकैत नही।"

"तो फिर, पकडा क्यो ? जेहल काहे ले गया ?"

"सरकार की जो मरजी।"

"सरकार की जो मरजी ! सरकार से तुम क्यो नही पूछती ?"

"चुप रहो ! सो जाओ बेटा !"

"नानी !"

"बाबू !"

"हमको बाहर ले चलो ! पेसाब करेंगे।"

"चलो !"

खट् ! किवाड खोलती है मौसी। पिछवाड़े से भँग की झाडी हिलती है। हीरू बोतल मे दारू ले आया है, जल्दी-जल्दी बोतल मे मुँह लगाकर पीता है। हाँ, निकली तो राच्छसनी ! ठीक दो पहर रात है। रमटडी सिर पर आ गया है। सियार बोल रहे हैं। ठीक दो पहर रात है। कपडा क्यो सँभालती है ? नगी हो रही है ?

–सटाक् ! !

"आ ह ! बेटा ग ने स !"

"ना नी !"

–सटाक् ! सटाक् ! प ट सटाक !

"गि-गि गि-गि गि गि"

"नानी ! कमली दीदी ! नानी !"

सब शाति ! मगर जीवानद हीरू का बेटा कहाँ है ? हीरू का नशा अचानक

टूट गया। छर-छर बहती हुई खून की धारा को देखकर वह थर-थर काँपने लगता है। लाठी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है। खून ?

पुलिस-दारोगा··· जेहल ···फाँसी-सुल्ली ! हीरू भागता है।

सबसे पहले तहसीलदार साहब हल्ला करते हुए, बंदूक का दो-तीन फैर करते हैं। ठायँ-ठायँ !

सारा गाँव जग गया है। कुत्तों के मारे कुछ सुना भी नहीं जाता है कि हल्ला किधर हुआ, क्यों हुआ। क्या है ? क्या है ? सभी अपने आँगन से ही पूछते हैं। क्या है रामदेव ? अरे नागेसर ! क्या है ?··· पता नहीं ?

तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं, "अरे कालीचरन ! आवाज पारबती की माँ-जैसी लगी। तुम लोग घर से निकलते क्यों नहीं ?··· लगता है सारे गाँव के लोग मुर्दा हो गए हैं।"

पारबती की माँ···अरे बाप ! खून से नहा गई है। साँस देखो मरी है या···। हुक-हुक करती है ? तब अभी जान है। और···यह गनेस है ? ···दाँती लगी हुई है। पानी लाओ ! ···किसका काम है यह ? हे भगवान !···लाठी है ? तहसीलदार साहेब के जिम्मे लगा दो लाठी ! इसी से पता चल जाएगा।

"अगमू !" तहसीलदार साहब कहते हैं, "तुम अभी दौड़ जाओ थाना।··· कल पूर्णिया अस्पताल यदि ठीक समय पर पहुँच जाए···"

"नानी··· नानी ! मामा ! डाक्टर मामा !··· दीदी, दीदी !" गणेश रोता जाता है। कमली आँखों को पोंछते हुए गणेश को अपने घर ले आती है। बुद्धि यदि कम होती गणेश को तो अच्छा था। ···कमली के साथ वह आता है। ···बातें भी करता है। कमली कहती है, "भगवान हम सबों के बाप हैं···उन्होंने नानी को अपने पास बुला लिया।"

"हाँ·· यें " लंबी हिचकी पर गणेश कब्जा नहीं पा सकता है, "नानी !··कमली दीदी ! नानी !"

···हाय रे अभागा ! तेरी कमली दीदी किसके पास रोने जाए ! "बाबू गनेस ! ···तुम्हारे मामा आवेंगे। रोओ मत।"

हीरू पकड़ा गया है। ···पकड़ावेगा कैसे नहीं भाई ! गाँव में किसकी लाठी को कौन नहीं पहचानता ! हीरू की ठुट्ठी लाठी तो मसहूर है—हरहँसेरी में उसकी ठुट्ठी लाठी कमाल दिखाती थी न ! रात में ही लोगों ने पहचान लिया, मगर डर से नहीं बोला कोई ! ···इसके अलावे उसके दोनों पैर खून में लथपथ ! धोया भी नहीं था। ···लगता है, मारने के बाद लहास को थोड़ी दूर घसीटने की कोशिश की थी हीरू ने। सुबह को तो एकदम बघौछ[1] लगे हुए पागलों की तरह ! उसे देखकर डर लगता था।

1 मतिशून्य।

उसकी आँखें बताती थीं, वह अभी और भी कई खून कर सकता है। ··
मुँह से लार भी गिरता था। दारोगा ने गिरिफ़्फ कर लिया, मगर वैसा ही ! दारोगा ने दो लात मारी, हवलदार ने दो-तीन हंटर गर्म किए और सिपाही ने तीन-चार तमाचे जड़े, "साला ! बोलता काहे नहीं ? ···नाम गिनाव ऽऽअपन बाप के जे साथ र ह ल न। हौने मुँह का देखऽऽताड़ऽऽ–चच्चा के तरफ देखके बोलऽ ! साला हतियारा कहीं का ! ··नरक में भी जग्हा ना मिली ससुरे !"

मगर वह बकता रहा–"हम अकेले मारा।"

"ससुरे ! ई नीलगाय-जैसन औरत के तूँ अकेले मारा ! बन्नूक-उन्नूक··"

"ऐ सिपाही जी ! छोड़ दीजिए !" छोटे दारोगा साहब बड़े भले आदमी हैं। कहते हैं, "साले ! यदि फाँसी से बचने के लिए पागल हुए हो तो दो ही दिन की मार में मर जाओगे।"

लहास को एकदम ढँककर पालकी में ले जाने का बंदोबस्त करते हैं दारोगासाहब। एक उँगली भी नहीं दिखाई पड़े। अतर-गुलाब भी डलवा दिया। अरे ! लहास के साथ गनेस भी जाएगा ? साथ में प्यारू जा रहा है। पुरैनियाँ खजाँचीधरमसाला के पास ही गनेस की एक चाची रहती है। ··वह जब नहीं रखेगी तो अनाथालय मे

मौसी चली गई हमेशा के लिए।

कमली फूटकर रो पड़ती है।

जोतखी जी को लकवा मार गया–अरधांग ! मुँह टेढ़ा हो गया है। एक आँख एकदम पथरा गई है। पैखाना-पेसाब सब बिछावन पर ही होता है। रामनारायण उनके पास अकेले बैठने में डरता है। रामनारायण जानता है सारी बातें। ··पारबती की माँ की हत्या की रात से ही उनकी हालत खराब हो गई थी। पेट खूब चला ! खून का पैखाना होने लगा–एकदम टटका खन ! लाल-लाल · इसके बाद गाँव से लाश जैसी ही निकली, लकवा मार गया। भगवान के इस टटका न्साफ को देखकर रामनारायण डर गया था। इतनी जल्दी पाप को फलते बहुत कम देखा है। पैखाने में इतना दुर्गंध है कि चार बीघा आसपास के लोगों को कै हो जाए ! नरक-भोग और किसको कहते हैं ?

··लेकिन जोतखी जी ने कहा था ठीक। ··सुनते है जिस दिन पारबती की माँ के केस में दारोगासाहब आए, उस दिन भी बोले हैं, "अभी क्या हुआ है··· और भी बाकी है !"

भगवान जाने और क्या-क्या होगा !

जै बाबा 'जिन-पीर', गाँव की रच्छा करो महतमा !

नौ

कोठारिन लछमी दासिन बालदेव जी के साथ मठ से अलग हो गई।

कलम-बाग में बाँस-फूस के तीन सुंदर बँगले खड़े हो गए हैं। इस इलाके की यह भी एक बड़ी कारीगरी है—बाँस-फूस का चौखड़ा। एक ही डर होता है—आग का ! लेकिन होता है खूब ! मेहराव और जाफरी गूँथकर लगा दिया है। फूल तो पहले से ही लगे हैं ! बाग की खपसूरती तो अठारह गुना बढ़ गई है। वाह रे कोठारिन ! चार सौ रुपए में एक जोड़ा बाछा खरीदकर मँगवाई है—मोतीचूर हाट से। बड़ा तेज है। हल्की-सी बाछा-गाड़ी बनवाई हैं बाँस के पोर-पोर को छीलकर उसमें तरह-तरह के रंग लगाए गए हैं। हर बंधन को और खासकर बल्ला की डोरी को सतरंगे लड़ों में गूँथा है। छोटे-छोटे लटकन-फुदने—लाल, हरे, पीले, नीले। बाँछों के सर पर पीतल के पान हैं, गले में कौड़ी की लड़ियाँ और घंटी है। एक छोर मीढ़ी झुनकी भी है। झुन-झुन टुन-टुन, झुन-झुन टुन-टुन ! सुनो···वही ! बालदेव जी गोसाईं साहेब की बग्घी-सम्पनी निकली ! झुन-झुन टुन-टुन !

··· बालदेव जी अब कितने साफ-सुथरे रहते हैं ! बगुला के पाँखों की तरह खादी की लुंगी और मिर्जई दप-दप करती है। देह भी थोड़ा साफ हो गया है। लछमी अपने हाथों से सेवा करती है।··· मठ पर तो अब कौआ-मैना के 'गू' के साथ आदमी के बच्चों के भी पैखाने भिनकते रहते हैं। रमपियरिया की माये दिन-भर पड़ी रहती है; साथ में छोटे-छोटे तीन-चार बच्चे रहते हैं। भंडारी उस दिन आकर कलप रहा था—"दासिन, परसाद चित्त से उतर गया है। रोज रात को सपना देखते हैं कि पीने के पानी में मछली छलमला रही है··· सतगुरु हो !"

एक महीने में 'ड़मपियाड़ी' ने माया के जाल में महंथ रामदास के अंग-अंग को फाँस लिया है।

महंथ साहब इस जाल से निकल भागने के लिए छटपटा रहे हैं, मगर जाल की गिरहें और उलझती जा रही हैं।··· कल गाली-गलौज और मार-पीट हो गई। महंथ साहब ने रौतहट हटिया से सुबह को एक भरी गाँजा मँगवाया था; रात में सोने के समय ड़मपियाड़ी ने कहा, "महंथ साहेब, गाँजा फुरा गया[1] !"··· सुनते ही महंथ साहब चिढ़ गए, "ऐं, सुबह को ही न एक भर ला दिया है भंडारी ने !"

रमपियरिया महंथ साहब की मर्दानगी देख चुकी है ! वह चुप क्यों रहे ? दम लगाने के समय होस रहता है कि नहीं ?" दिन-भर घोड़ा के दुम की तरह चिलिम मुँह में तो लगा ही रहता है··· !"

"चुप चमारिन ! अखाड़ा को भरस्ट कर दिया। सतगुरु हो··· लछमी ठीक कहती

1. चूक जाना।

थी !"

इसके बाद रमपियरिया की माये और बच्चों ने मिलकर ऐसा हल्ला मचाया कि बात कुछ समझ में ही न आई।... महंथ रामदास चिल्ला रहे हैं, चिमटा खनखना रहे हैं, और रमपियरिया गा-गाकर सर चढ़ाकर रो रही है, "अरे ! तोऽऽरा हाथ में कोढ़ फूटे रे कोढ़िया ! अरे लछमिनियाँ के खातिर..."

... सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! बंद करो ! बंद करो !...

बालदेव जी को पारबती की माँ के खून के बाद से रात को बड़ा डर लगता है। रात-भर... कलेजा धड़-धड़ करता रहता है। जरा भी कुछ आवाज हुई कि बिछावन पर तड़क उठते हैं। लछमी कहती है—निरमल चित्त पर खराब छाप पड़ने से ऐसा ही होता है !... बालदेव जी की आँखें ही बता रही हैं।

डिम डिमिक-डिमिक्, रुन झुनुक-झुनुक् ! लछमी आज खुद खँजड़ी बजा रही है। बालदेव जी आसनी पर बैठे हुए हैं। खिड़की के कमरे में चाँदनी का एक टुकड़ा उतर पड़ा है। दीवारगीर की हल्की रोशनी में लछमी की आँखें स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ती हैं।...

ज्वाला बिरह वियोग की, रही कलेजे छा-य।
प्रेमी मन मानै नहीं, दरसन से अकुला-य !

बालदेव जी टकटकी लगाकर लछमी की ओर देख रहे हैं। खँजड़ी बजाकर गाने के समय लगता है कि लछमी की बोटी-बोटी नाच रही है। घुटने के बल बैठी है..! 'इंदर सभा' नाटक में 'हूर परी, मसहूर परी, सबुज परी' झँझनी बजाकर जैसे गाती थी, उसी तरह।... रह-रहकर पारबती की माँ की खून से लथपथ लाश की याद आ जाती है, एक पलक के लिए।...बालदेव जी आँखें मूँद लेते हैं।... लछमी की देह से जो सुगंधी निकलती है, वह आज और तेज हो गई है... लछमी की आवाज काँप रही है।... रो रही है लछमी ? ऐ ? गाल पर लोर ढुलक रहे हैं ?... लछमी !

"लछमी ! लछमी ! रोओ मत लछमी !" बालदेव जी की बाँहों में भी इतना बल है ?... लछमी को बाँहों में कसे हुए हैं। लछमी गाती ही जाती है।

गृह आँगन बन गए पराए
कि आहो संतो हो !
तुक बिनु कंत बहुत दुख पाए...!

डिम डिमिक-डिमिक् !
रुन झुनुक-झुनुक् !

एके गृह, एक संग में, हौं बिरहिण संग कंत
कब प्रीतम हँस बोलिहैं जोह रही मैं पंथ !

ढन-ढन रुनुक-झुनुक ! झन-न · खँजड़ी हाथ से छूटकर गिर पड़ती है। बालदेव जी के ओठों पर आज पहली बार ऐसी मुस्कराहट देखती है लछमी। गेहुआँ मुख-मंडल, छोटी-छोटी दाढ़ी-मूँछ···

· बालदेव जी के पाँव के अँगूठों से आँखें छुलाते हुए लछमी नजर मिलाती है, "सा··· हे · ब ब न्द गी !"

दस

कामरेड बासुदेव और सुंदरलाल भी गिरिफ्फ़।·· कैसे नहीं गिरिफ्फ़ होगा भाई ! एक साल पहले तक किसी ने कभी गंजी भी पहनते नही देखा सुनरा को, सो इस गरमी के मौसम में कोट, पेंट, गुलबन मोजा, जूता और चस्मा लगाकर कटिहार जक्सन के मुसाफिरखाना में बैठने से, लोग संदेह नहीं करेगा ? एक डिब्बा सिगरेट खरीदकर दसटकिया लोट तोडाते थे दोनों। सुनते हैं, आधा घंटा में ही दोनों ने करीब-करीब सभी फेरीवालों को बुलाया और सौदा किया, "ए चाहवाला, सुनता है नहीं ! देहाती समझ लिया है क्या चाह लाओ। बिस्कुट खाओगे जी सुन्नर ? अरे, थड़किलासी बिस्कुट क्या खाओगे जी !" कटिहार के फेरीवाले कैसा चाँई[1] होते हैं सो सबों को मालूम है। उन लोगो ने बहुत बड़े-बड़े लोगों को देखा है, पर ऐसा नही। भिखमंगे को चौअन्नी दे दिया, "जाओ, नास्ता कर लो !" लड़ाई के जमाना में अमरीकन साहेब लोग इसी तरह सिगरेट और बिस्कुट लुटाते थे। बस, सी-आई-डी कहाँ नहीं है ! तुरंत दोनों को गिरफ्फ कर लिया। भगवान जाने अब और किसका-किसका नाम गिनाता है !

जोतखी जी ठीक कहते थे—अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है !

"बासुदेव ने कालीचरन का भी नाम बताया है, सुनते हैं।"

"ऐ· ! कालीचरन है कहाँ ?"

"मंगलादेवी को कटिहार रखने गया है।"

मंगलादेवी कटिहार चली गई। गाँव का चरखा सेंटर टूट गया।·· कटिहार में मगला के दूर के रिश्ते के बहनोई रहते हैं। कालीचरन पहुँचाने गया है। पाटी आफिस में सुमेरन जी बोले, "सुनते हैं तुम पर भी वारंट है।"

"वारंट ?"

"हाँ, बासुदेव और सुनरा ने तुम्हारा भी नाम बताया है· · जरा होशियारी से

1. धूर्त

घर लौटना !"

"बासुदेव ! सुनरा ! बेईमान, झूठा !"

कालीचरन अँधेरे मे कोठी के बाग के पास छिपा हुआ है। जरा रात हो जाए तब घर जाएगा। बासुदेव और सुनरा को सोमा ने इतना आगे बढ़ा दिया। उसको ताज्जुब होता है। डकैती के तीन दिन बाद ही कालीचरन को सब पता लग गया था। सिकरेटरी साहब को चुपचाप कहने के लिए पुरैनियाँ गया वह, लेकिन सिकरेटरी साहब पटना चले गए थे। सिकरेटरी साहेब से सारी बाते कहनी होगी। चलित्तर कर्मकार से हेलमेल बढ़ाने का यही फल है। हम पर बिसवास नहीं हुआ उनका तो बासुदेव को चारिज दिए कि चलित्तर से मिलते रहो। बदूक-पेस्तौल चलित्तर देता है। काली को जेहल का डर नही, पार्टी की कितनी बडी बदनामी हुई ! अरे बाप, पटना के बडे लीडर लोग को कैसे मुँह दिखलाएँगे ? सब चौपट कर दिया। कोई आ रहा है सायद !

कोठी-बाग के पास ही अँधेरे मे चेथरू से मुलाकात हुई। जडी उखाडने आया था। उसने बतलाया, "गाँव म पुलिस-दरोगा कम्फु लेकर आए है।" कालीचरन ने चेथरू को दो रुपया दिया, "माँ को दे देना ! और यह तुम लो एक रुपया !"

जडी उखाडने के बदले चेथरू गाँव की ओर भागा। फिरारी किराती को पकडा देनेवालो को बहुत रुपैया इनाम मिलता है। तुरत ही उसने दारोगा साहब को चुपचाप खबर दी, "हम कालीचरन को कोठी के बगीचे मे देखा है।"

दारोगा साहब मलेटरी लेकर जब तक आवे, कालीचरन पवन[1] हो गया। चेथरू कहता है, "यही से पच्छिम की ओर हनहनाता हुआ चला गया, घोडपाडा की तरह।"

खेलावनसिंह यादव बेचारे का फिर एक चरन लग गया। इधर खेलावन जरा ज्यादे हेलमेल रखता था कालीचरन से। दारोगा साहब ने कहा, "[illegible]र डकैती का माल आपके यहाँ रहता है। आपने उन लोगो को चौखडा घर बनवा दिया है। क्यो ?"

लगता है, खेलावनसिंह यादव का दिन अब घटती पर है। जब चढती पर रहता है किसी का दिन, तब वह माटी भी छू देगा तो सोना हो जाएगा। दिन बिगडने पर चारो ओर से खराब खबर ही आती हैं। तहसीलदार साहेब का डेढ हजार मुँहजुबानी बाकी था। कमला किनारे की बदोबस्तीवाली जमीन मे से दस बीघा सूद-रेहन रखकर और भी एक हजार रुपैया तहसीलदार से लिया है खेलावन ने। कल अररिया-बैरगाछी से खबर आई है, सकलदीप नानी का दस भर सोना चुराकर न जाने कहाँ भाग गया है। सुनते हैं, मदनपुर मेला मे एक ठेठर कंपनी आई थी कलकत्ता से। उसमे "" लैला थी। उसी ने सकलदीप को फँसा लिया है। जवान तड-तड बहू घर मे है। सकलदीप के ससुर आसिनबाबू तो बडे आदमी हैं, खोज निकाल लेगे ! खेलावन की स्त्री कहती है, "जिन पीर बाबा के दरघा पर घर नही है, वहाँ एक झोपडी बनाने के लिए तीन साल से

1 हवा।

कह रही थी, आखिर नहीं बनाए। कालीचरन की बात पर फुच्च हो गए, चौखड़ा घर बनवा दिया।··· दुहाई बाबा जिन पीर ! भूल-चूक माफ करो। मेरे बच्चा का मति फेर दो महतमा ! सिरनी और बद्धी चढ़ाऊँगी, एक भर गाँजा दूँगी।"

मँहगूदास के यहाँ खलासी जी आए हैं !·· फुलिया की सारी देह में घाव हो गया है। पैटमान जी के पास कई बार संवाद भेजा फुलिया ने। एतबारी बूढ़ा को उस दिन भेजा तो मालूम हुआ पैटमान जी की बदली हो गई बथनाहा, नेपाल सीमा के पास। चौकी-खाट वगैरह सब बेच दिया है पैटमान जी ने। सरकारी नौकरीवाले की जब बदली होती है तो वह सभी चीज़ें बेच देता है। नई जगह में जाकर नई चीज़ें मिलती हैं ! इसलिए क्या जनाना को भी छोड़ देगा कोई ? खलासी जी ने सुना तो दौड़े आए हैं !··· कोई कुछ कहे, खलासी का कोई दोख नहीं। सारा दोख फुलिया का है !··· जो बेचारा इतना खरच करके तुमसे चुमौना किया, वह तुमको अगोरकर बैठा रहेगा तो चूल्हा कैसे जलेगा ? खलासी बेचारा दिन-भर रेलबी लैन पर काम करता था और इधर पैटमान जी लैन किलियर देकर, गाड़ी पास करने के बाद फुलिया के यहाँ आकर बैठे रहते थे। आखिर एक दिन लड़ाई-झगड़ा, मार-पीट करके फुलिया उनके यहाँ भाग गई। खलासी जी का इसमें क्या कसूर है ? पाप भला छिपे ?··· सारी देह गल गई है, मगर अभी भी होस नहीं हुआ है फुलिया को।··· रमपियरिया उसके यहाँ रोज आती है और फुलिया फुसुर-फुसुर करके उसको सिखाती है—महंथ से कोई चीज माँगने का कौन समय है··· कैसे क्या कहना चाहिए।

खलासी जी कहते हैं, "दुनियाँ-भर के लोगों की गरमी की बेमारी आराम करें हम, और हमारी घरवाली इस रोग से भोगे ?·· तीन गोली में ही ठीक हो जाएगी। एक बात है, गरमी निकलेगी तो एक अंग को लेकर—आँख, नाक, दाँत, अँगुली, इसमें कोई एक अंग झूठा हो जाएगा !"

गाँव के बारे में खलासी जी कहते हैं, "गाँव में बनरभुत्ता लगा है। बंदर का भूत ! गाँव-के-गाँव इसी तरह साफ हो जाते हैं। कोई बंदर मरा था इस गाँव में ?"

"ठीक बात ! एकदम ठीक ! डागडरबाबू तो तीन बंदर पालते थे। न जाने कौन सूई दिहिन कि दोनों बेचारा केंकाते-केंकाते मर गया।·· रात-भर किकियाया था, याद नहीं ?"

"ठीक बात ! ठीक बात ! एह, यह डागडर ऐसा जुल्मी आदमी था ! सारे गाँव को चौपट कर दिया।"

"कोई पर्वाह नहीं।" खलासी जी कहते हैं, "हम रात में चक्कर पूजकर, इस टोला के बाँध देंगे। कुछ नहीं होगा।"

रमजूदास के गुहाल में चक्कर पूजा है खलासी ने··· चावल, दूध और अड़हुल

के फूल से चक्कर बनाया है। बीच में माटी का एक बड़ा-सा दीया है और उसमें एक बड़ी-सी बत्ती जल रही है। एक बोतल दारू पीकर खलासी जी बैठे हैं, रह-रहकर दीया की जलती बाती को मुँह में ले लेते हैं।…अरे बाप ! अलबत्त ओझा है खलासी जी। अरे ! रे ! रे !… जीभ में सुई गड़ा लिए, इस पार से उस पार !

अरे आजु के रैनिगे मैया
बड़ा अन्हकाल लागे
दाहिने डाकिन, बामे पिचास बोले

हुँ… हुँ· हुँ· हुँ· हुँ !

दोहाय गौरा पारबती इसर महादेव
नैना जोगिन, जो सत से बेसत जाय
…अंग अंग फूट बहराय !

–फूत… फूत !
हिं-हिं-हिं-हिं…!
"अब गाइए आप लोग 'गोचर'।"
गाँव के 'भकतिया' लोग शुरू करते हैं–मृदंग पर देवी का गीत 'गोचर !
धि-धिनक् ति-धिनक् !

कँहवाँ के जे आ गे मैया आ आ…

खलासी जी दीया की बाती को नचा रहे हैं और मुँह में लेकर बत्ती बुझाते हैं, फूँक मारकर भक् से फिर दीया जलाते हैं… कबूतर को कच्चा ही चबाकर खा रहे हैं।… असल ओझा हैं खलासी जी !

ग्यारह

"कमली के बाबू ! कमली के बाबू !…"

नींद में तहसीलदार साहब की नाक बहुत बोलती है–खुर्र खुर-र… कमला की माँ पलँग के पास खड़ी है। उसके चेहरे पर भय की काली रेखा छाई हुई है–"कमली के बाबू ?"

"ऊँ यें !··· क्या है ?"

माँ धीरे-से पलँग पर बैठ जाती है।··· तहसीलदार साहब भी अचकचा जाते हैं, "क्या है ?"

"कुछ नहीं," माँ फिसफिसाकर कहती है, "कमली ने·· कमली ने तो आँचल में दाग लगवा लिया··· !"

"आँ यें ?··· आँचल में ?" तहसीलदार साहब को लगा कि कमली के कपड़े में आग लग गई है। कमली जल रही है।

"हाँ, चार महीना···!"

तहसीलदार साहब और माँ दोनों एक ही साथ लंबी साँस छोड़ते हैं।

"हे भगवान !"

"अब क्या होगा ?"

"समझो !"

"कैसे पता चला ?"

"मुझे तो पिछले महीने में ही थोड़ा संदेह हुआ था। आज पूछने लगी तो चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगी।· डाक्टर ने तो खूब इलाज किया ! अब मुँह पर कालिख जो लगी है, इसको कौन छुड़ावेगा ?"

तहसीलदार साहब का मुँह सूख जाता है। आखों के आगे भयावने दृश्य एक-एक कर आते-जाते हैं—उनके मुँह में कालिख पुती हुई है, और सभी लोग ताली बजाकर हँस रहे हैं, पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।

"मैं पहले ही कहती थी, इतना हेलमेल अच्छा नहीं। आग और फूस एक साथ कब तक रहें ?·· और तुम्हारी दुलारी पर तो मानो जादू कर दिया है डाक्टर ने। अभी भी कह रही है, डाक्टर ने कहा है ।"

"क्या कहा है डाक्टर ने ?" तहसीलदार साहब तिनके का सहारा ढूँढ़ रहे हैं।

"साफ-साफ कहाँ कहती है कुछ ! कहती है कि डाक्टर ने कहा है—जो होगा, मंगल होगा।"

"मंगल ! हुँह ! मंगल !· पाजी, सूअर, नमकहराम, कुत्ते का बच्चा, साला ! अब गले में रस्सी का फंदा लगाकर मरो कमली की माँ !·· क्या करोगी ?"

"लेकिन मैं सपथ खाकर कह सकती हूँ; मेरी बेटी का इसमें कोई दोख नहीं··· ।" माँ रो पड़ती है, "कमली का कोई कसूर नहीं। डाक्टर ने फुसलाकर उसका सत्यानास किया है।"

कमली भी अपने बिछावन पर लगी हुई है। आज उसे बार-बार डाक्टर की याद आती है। डाक्टर का हँसना, बोलना, रूठना-झगड़ना, मीठी-मीठी बातें करना और बाँहों में जकड़कर··· । उसकी आँखें भर-भर आती हैं। लेकिन डाक्टर ने कहा है, जो होगा, मंगलमय होगा !··· यदि डाक्टर को दामुल हौज[1] हो जाए तब ?

1. कालापानी, आजीवन कैद।

… माँ रोती क्यों थी ? महाभारत में कुंती, देवयानी, अहल्या, द्रौपदी, कौन ऐसी है जिसको…? डाक्टर ने कहा है, हम दोनों को कोई अलग नहीं कर सकता।

"डाक्टर ने क्या कहा है ?" तहसीलदार साहब, सुबह-सुबह चाय पीते समय पूछते हैं, "पूछो कमली से साफ-साफ, डाक्टर ने क्या कहा है ?"

"कहती है, डाक्टर कहता था, हम लोगों को कोई अलग नहीं कर सकता !" माँ धीरे-धीरे इधर-उधर देखकर कहती है।

"सो तो समझा !" तहसीलदार साहब का चेहरा फिर बुझ-सा जाता है, "लेकिन सवाल है कि वह तो जेल में है, अब क्या सजा होती है, सो कौन जाने ? · फिर मरद की बात का क्या ठिकाना ? · कमली के पास उसकी कोई चिट्ठी-पत्तरी है ?"

तहसीलदार साहब कानूनची आदमी हैं। कागज पर आपके हाथ का 'क' भी लिखा रहे तो उससे वह सारी दस्तावेज ऐसी बना दें कि पटना का इस्पाट[1] भी नहीं पहचान पाए कि असली है या जाली !

"चिट्ठी-पत्तरी यदि होगी भी तो वह देगी नहीं। वह कह रही थी कि हमको गुदाम-घर में बंद रखो। लोग तो जानते ही हैं कि कमली बीमार है। तब तक डाक्टर आ जाएगा।·· लड़की की बाते सुनकर कलेजा थिर नहीं रहता है। कहती थी, माँ, अपराध के लिए आखिर कोई सजा तो मिलनी ही चाहिए। हमको घर में जेहल दे दो !"

"इस्-इस् !" तहसीलदार साहब का भी दिल कसक उठता है, "कमली की माँ ! मेरी बेटी अब मेरे सामने नही आवेगी ? क्यों ? एक बार उससे बात करना चाहता हूँ। तुम क्या कहती हो ?"

उफ् ! कमली के चेहरे पर दिनों-दिन तेज आता जा रहा है। मुखमंडल चमक रहा है, लेकिन आज उसकी निगाहें नीची हैं। चुपचाप आकर पर्दे की आड़ में खड़ी हो जाती है।

"दीदी !"

"·"

"इधर आओ दीदी ! तुम्हारा कोई कसूर नहीं बेटा !"

"बाबू जी, मेरी सूरत मत देखिए ! मुझे गुदाम-घर में बंद कर दीजिए।" कमली रो पड़ती है, फफक्-फफक् !

और कोई उपाय भी तो नहीं।

कमली कहती है–"लगता है कि यह डाक्टर नहीं जिन है… एक बार गौरी मौसी ने जिन-पीर की कहानी सुनाई थी।"

"डर तो नहीं लगता ?"

"नहीं माँ ! डाक्टर अब मेरे पास हमेशा रहता है। मुझे डर नहीं लगता है। इसलिए मैं एकांत में, अँधेरे में रहना चाहती हूँ। माँ, डाक्टर का कोई कुसूर नहीं,

1 विशेषज्ञ, एक्सपर्ट।

वह सचमुच जिन है।"

सुनते हैं कि जिन जिस पर प्रसन्न हो उसको तुरत कुछ-से-कुछ बना देता है। रुपया-पैसा, जगह-जमीन, तुरत ढेर लगा देता है। और जिन जब लेने लगे तो धान के बखार-के-बखार में चूहे लग जाएँगे··· तंबाकू पर पत्थल गिर पड़ेगा··· किसी बड़े सेशन-केस में फँसना होगा।··· तहसीलदार साहब हिसाब करके देखते हैं, डाक्टर जब से उस परिवार में घुला-मिला है, रोज अलाए-बलाए की आमदनी होती ही रहती है। जिस बात से सारे गाँव का नुकसान हुआ है, उसमें भी नफा ही रहा तहसीलदार को। मुकदमे में मुल्ले फँस गए और इतना बड़ा सेशन केस दूसरों के सिर पर ही खेप लिया। अपने घर से तो एक पैसा गया ही नहीं, ऊपर से पाँच हजार के करीब फायदा ही हुआ। खेलावन, रामकिरपाल सिंघ वगैरह की जमीन मिली सो मुफ्त में ही। कमला ठीक कहती है—डाक्टर जिन है।

कमली ने एक सप्ताह बहुत मजे में काट दिया। कुछ किताबें पढ़ने को माँगी हैं—"विषवृक्ष, इंदिरा, राजसिंह, आनंदमठ, देवदास, श्रीकांत, रंगभूमि, गोदान और··· हरिमोहन बाबू की कन्यादान। बस, अभी इतना ही ! डाक्टर साहब की अलमारी में हैं किताबें।··· हाँ, हाँ, निकलवाइए।··· प्यारू से कहिएगा !"

गुदाम-घर की ऊपरवाली खिड़कियों से चाँद झाँकता है।··· शरत् की चाँदनी ! चाँद बादलों में छिप जाता है।··· माँ दुर्गा के आने की सूचना मिल गई है। इस बार देवी किस चीज पर चढ़कर आवेंगी, बाबा से लिखकर पूछना होगा ! जरूर हाथी पर आई होंगी ! जिस बार हाथी पर आती हैं माँ··

बारह

जै ! दुर्गा माता की जै !

चंपापुर के कुमार साहब ने इस बार फिर वड़े-बड़े पहलवानों को बुलाया है। कुश्ती, शिकार, संगीत और साहित्य, सबका एक सम्मिलित पीठस्थल रही है चंपापुर की ड्योढ़ी।

"बूढ़े राजा के समय की बात जाने दीजिए। अभी भी कुछ कम नहीं—विश्वकवि रवींद्र ने जिस ड्योढ़ी की साहित्य-गोष्ठी में अपनी प्रसिद्ध रचना 'राजा-रानी' की आवृत्ति की है, जहाँ की संगीत-मंडली में पूरे एक सप्ताह तक फैयाजखाँ की अमर स्वर-लहरी लहरा चुकी है। बूढ़े राजा ने शिकार पर कई किताबें लिखी हैं··· ।"

··पंजाबी पहलवान मुश्ताक का चेला 'चाँद' आया है, इस बार। जमेगा !···

कालीचरन बनमंखी के पास एक गाँव मे है। दूर के रिश्तेदार बहुत चालाक आदमी हैं। उसका नाम बदल दिया है–रुस्तम खाँ। लोगों से कहता है रुस्तमखाँ तंबाकू का दल्लाल है, पूबा[1] है। कल चाँद अखाड़े में जाँघिया लगाकर उतरा, मगर सुनते हैं कि कोई जोड़ा ही नही मिला। कालीचरन ऐंठ जाता है। वह जाएगा, ज़रूर-ज़रूर !

चंपापुर मेले का दंगल है बाबू ! देखनेवालो पर कभी-कभी ऐसा जाम सवार होता है कि आसपास के लोगो मे धक्कममुक्की शुरू हो जाती है। सिपाही जी लोग छडी नहीं चमकाते रहे तो हर साल एक-दो आदमी दबकर मर जाएँ !

आज भी चाँद जाँघिया लगाकर घूम रहा है। कालीचरन भीड में से देखता है, "वाह ! बलिहारी दोस्त ! शरीर को खूब बनाया है ! बलिहारी है दोस्त !"

ऐ ! आज भी चाँद का जोडा नही मिला ? जै-जै ! दुरगा माई की जै ! जोडा नही मिला ! जै !

भेंपों-भेंपों-भें-भें ! पों-पों-पों !

चटाक् चट-धा। चट-धा गिड-धा !

"अ ज-ज-जा। आ-आली !" हाफ कमीज और पाजामा फाडकर चित्थी चित्थी करते हुए कालीचरन मैदान में उतर पडता है।

"ऐ ! ऐ ! पागल है, मारो, मारो !"

"नही जी ! जाँघिया है अदर मे !"

अरे ! वाह ! यह तो असल जोडा है। कौन है ? अखाड़े मे उतरने का ढग ही कुछ ऐसा है कि सबकी आँखे चमक उठती है। सभी की निगाहें आपस मे मिलती है–हाँ, यही है चाँद की जोडी !

मंडल जी नाम-धाम पूछकर जल्दी से कुस्ती सुरू करवाने का हुकुम दे रहे हैं सरकार !

सभी बाजे-गाजे अचानक थम गए है। क्या हुआ ? कुस्ती होगी या नही ? पहलवान मुश्ताक अली हाथ [illegible] क्या कह रहा है बड़े कुमार साहेब से ? क्या नाम कहा ? रुस्तम अली ! जोगबनी का ? मोरगिया है ? नही-नही, देसिया ही है। वाह, अलबत्त जोडा है !

चटाक् चटधा ! चटधा गिडधा !

"अरे वाह रे उस्ताद ! ले-ले-ले बच गया। अरे, यह तो बिजली है–बिजली !" चाँद नाच रहा है। यह पजाबी पैंतरा है। रुस्मत चुपचाप मुस्करा रहा है मंगला उस्ताद ! आज की बाजी यदि हार गए तो समझेगे कि मगला को छूना पाप हुआ। यदि जीत गए तो यह परीच्छा है मेरी !" चाँद को क्या ऐब लगा दिया है उसके गुरु ने ? इतना पागल होकर टूटता क्या है ? काली रुस्तम मुस्कराकर एक छोटी दुलकी लेता है; चाँद ने अचानक ही फिर हमला किया।

"अ-जा-जा !" भैया, यह रुस्तमखाँ भी तो कमाल है ! कोई जादू जानता

---

1 पूरब का।

है क्या ? हाँ, चाँद को मालूम हो गया होगा।

"नहीं जी, कहाँ पंजाबी और कहाँ देसिया !"

··· कहीं दारोगा साहेब तो देख नहीं रहे हैं ?—क्या ठिकाना ! खेल दिखाने का समय नहीं। जल्दी फैसला हो जाना चाहिए···।

"अरे, ला-ला-रा-जा-हा-हा··· हा, हो-हो, जै-जै !"

पीछेवाले उचक-उचककर देखते हैं। पास के पेड़ की एक डाली टूट गई। क्या हुआ ?··· साफ ?··· कौन ? डेढ़ गज के एक-छोटे से चक्कर में रुस्तम घूमा और चाँद को आसमान दिखा दिया।

"कहाँ गया ? रुस्तम कहाँ गया ?" बड़े कुमार साहब भाव विह्वल होकर पुकार रहे हैं। शक्ति का पुजारी खोज रहा है—"रुस्तम !·· भीड़ को हटाइए। रुस्तम कहाँ गया ?"

··· लगता है, जौहरी को कीमती पत्थर हाथ लग गया है। नहीं, नहीं, हाथ में आते-आते खो गया। कहाँ गया।

रुस्तम लापता हो गया।

बहुतों ने कहा—चलित्तर कर्मकार ही नाम बदलकर अखाड़े में उतरा था। चलित्तर को सुनते हैं, लाल-धूजा, हनुमानी झंडा का महातम मिला है—वह कहीं हार नहीं सकता।

मेला में लाल फाहरम बाँट हुआ है। लिखा है—"कम्युनिस्ट पार्टी के लाल झंडा को बुलंदी से ढोनेवाले चलित्तर कर्मकार के ऊपर से वारंट हटाओ।"

कालीचरन वनमंखी के रिश्तेदार के यहाँ से फारबिसगंज की ओर चला जाता है। सिकरेटरी साहब उससे नहीं मिलना चाहते हैं। लेकिन वह मिलेगा। सुनते हैं, सिकरेटरी साहब ने कहा है, कालीचरन वगैरह पार्टी के मेंबर नहीं, किसान सभा के दुअन्निया मेंबर हैं। मिलकर वह सारी बातें समझाएगा। उस रात वह पाटी आफिस में था।··· धरमपुरी जी से भी भेंट नहीं हुई, बंबे गए हैं। कालीचरन अपनी पूरी सफाई देकर ही हाजिर होगा।

"अरे। तुम ! काली !" मंगला डरते-डरते सँभल गई, "क्या डफाली मियाँ की तरह सूरत बनाई है ! अंदर आ जाओ। कोई डर नहीं। अकेली हूँ।"

कालीचरन मंगला से मिलने आया है—अचानक।

कालीचरन को एक पुराने रेलवे क्वार्टर के अंदरवाले कमरे में बिटाकर मंगला लोटा-गिलास लेकर पानी के नल पर चली जाती है। कालीचरन देखता है—चरखा है, धुनकी भी है, खाट पर कंबल के ऊपर सफेद खादी की चादर है।··· उसकी आँखों में खुमारी है। रात-भर बैलगाड़ी पर जगा ही रह गया। रेल पर भी ऊपरवाली तखती पर लेटा आया है।··· लोटा-गिलास चकमक करता है। ठंडा पानी ! नींबू का शरबत !

मंगला गिलास बढ़ाते हुए मुस्कराती है, "मैं तो डफाली मियाँ ही कहूँगी। रुस्तम अली तो जोगवनी मिल का बूढ़ा सरदार है।"

कालीचरन हाथ मे गिलास लेकर मंगला की ओर टकटती लगाकर देखता है। मगला कितनी दुबली हो गई है ! रग भी जरा चरका हो गया है !

"खबरदार ! हैंडसप् !"

खट-खट-खट-खट !

दारोगासाहब, पिस्तौल ताने खडे हैं। आठ-दस सिपाही बदूक की नली को इस तरह ताने हुए खडे हैं।

"दारोगा साहब ! पानी पी लेने दीजिए !" मगला को थाना-पुलिस का क्या डर !

"आप तुम कौन हो इसकी ? तुम क्या करती हो, तुमको भी गिफ्तार किया जाता है।"

"दारोगा साहब, इनको पानी पी लेने दीजिए।"

मगला अपना सर्टिफिकेट देखने के लिए देती है।

"ओ ! आप चरखा सेंटर की महिला हैं " दारोगा साहब मगला के सर्टिफिकेट को देखकर वापिस देते हैं।

"हाँ, मेरीगज मे काम करती थी। जान-पहचान थी एक साथ काम किया था। इसीलिए !"

"तेरी मॉ साले की दाढ़ी ! तेरी मॉ को !"

'आह !" मगला झट मे दरवाजा बद कर लेती है।

ऊपर मे बदूक के कुदे जड रहे है काली के कधे पर ! वह शरबत का डकार लेता हुआ पुलिस लारी पर जा बैठता है। कातिक महीने के कागजी नीबू म कितनी सुगध होती है ! सर से झर झर खून गिर रहा है। लेकिन, उसका सारा शरीर सतुष्ट है, शून्य है।

दारोगा साहब उसके मुंह मे हटर डालते हुए कहते है–"साला ! मर जाएगा, मगर नही कबूलेगा। सोमा साला भी ठीक ऐसा ही है। अरे ! चलित्तर करमकार तेरी मां का भतार है, है न ?"

कालीचरन के हाथो की हथकडी एक बार झनक उठी। घायल पुट्ठो मे एक नया दर्द उभर आया, ऑखो म खून उतर आया। लेकिन नही। उसकी पाटी बदनाम हो रही है। वह सबकुछ सहेगा।

"भेज दो साले को ! बासुदेवा और सुनरा तो दो ही थप्पड मे बक बक उगलने लगा। उन दोनो को क्या है ? सरकारी गवाह हो गए है। रिहा हो जाएँगे दोनो। मरेगा यही दोनो। डकैती विद म[illegible] !"

नीबू का शरबत ! डकार अभी भी आ रहा है कालीचरन को !

–मगला, मुझे माफ करना !

तेरह

बालदेव जी रामकिसुन आसरम बहुत दिनों बाद आए हैं।··· एकदम बदल गया है आसरम ! लोग भी बदल गए हैं। थोड़ा चालचलन भी बिगड़ गया है आसरम का। अब तो लोग मछली और अंडा भी चौका ही में बैठकर खाते हैं। अमीनबाबू सिकरेटरी हुए हैं। कहते हैं, "मछली-मांस आश्रम में न तो बनाया-धोया जाता है और न चूल्हे पर पकता ही है। लोग शहर से पका-पकाया ले आते हैं, खाते हैं। इसमें हर्ज ही क्या है ?"

"हरज क्या है ?" बालदेव जी हक्का-बक्का होकर अमीनबाबू का मुँह देखते हैं, "लेकिन··· पहले तो आसरम के हाता में भी नहीं आता था।"

"यह जो नया रसोईघर बना है, वह आश्रम का जमीन में नहीं, कुबेर साह की जमीन में है। अब तो आप जगह-जमीनवाले आदमी हो गए, खाता-खतियान, नक्शा-परचा देखना तो जरूर सीखे होंगे।··· जाइए, जाकर कचहरी में नकल निकास करवाकर देख लीजिए। समझे !" फारबिसगंज के नवतुरिया नेता छोटनबाबू कहते हैं।

बालदेव जी कटमटाकर उनकी ओर देखते हैं। छोटन, फारबिसगज का यह लुच्चा लौंडा हर बात में फुच-फुच करता है। अमीनबाबू के साथ दिन-रात रहता है न, इसलिए मुँहजोर भी हो गया है।··· झूठा तो नंबर एक का ! फारबिसगंज का नाम फरेबगंज करेगा यह, इसमें कोई संदेह नहीं।

"छोटनबाबू ! खाता-खतियान, नक्शा-परचा देखकर हम क्या करेंगे। रामकिसूनबाबू के जमाने में ।"

"रामकिसूनबाबू का जमाना रामकिसूनबाबू के साथ चला गया।" छोटनबाबू का टंडेल-भोलटियर[1] मटरा भी बोलता है, यह काँग्रेस आफिस है, बाबा जी का मठ नहीं।"

बालदेव जी की अकिल गुम हो रही है।

खैनी से सड़े हुए दाँतों को निकालकर मटरा हँसता है। फिर मटकी मारकर कहता है, "कविराहा में तो 'सब धन साहेब का' ही होता है।· खँजड़ी बजाना सीखे हैं या नहीं ?"

"हा-हा-हा-हा !" सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं।

चन्ननपट्टी का गुदरू कहता है–"बालदेव ! अब अपने गाँव में आओगे तो जतियारी भोज से पकड़कर उठा दिए जाओगे।"

"बालदेव मेरीगंज का एकांती मजा छोड़कर गाँव क्यों जाएगा ?··· अधों में

---

1 किसी नेता का व्यक्तिगत नौकर।

काना बनकर मौज कर रहा है।"

"हा-हा-हा-हा-हा-हा।"

बालदेव जी की आँखो मे आँसू आ जाते है। यदि दोरिक सरमा नही आ जाते तो वह फूटकर रो पड़ता। सरमा ने आते ही कहा—"क्या है, क्या है ? बालदेव जी को तुम लोग क्यो चिढाते हो ?"

"चिढाते कहाँ है ? हम लोग सतसग करते हैं।" छोटनबाबू हँसकर बोले।

सरमा ने पास की खाली कुर्सी पर बालदेव जी को बैठाते हुए कहा "बालदेव जी ! यहाँ बैठिए, हम जवाब देते है। सतसग की बात कहते है छोटन जी ! यह बालदेव, दोरिक शर्मा, नेवालाल, फगुआ, महदेवा, बौनदास, उजाड़ू, चुन्नीदास, पिरथी, जगरनथिया, छेदी, गगाराम वगैरह के सतसग का ही फल है कि आपके जैसे लाल पैदा हुए है। अभी चेभर लेट गाडी पर लीडरी सीख रहे है आप ! आप क्या जानिएगा कि सात-सात भूजा फॉककर, सौ-सौ माइल पैदल चलकर गॉव गॉव मे कॉग्रेस का झडा किसने फहराया ? मोमेट मे आपने अपने स्कूल मे पचम जारज का फोटो तोड दिया, हेडमास्टर को आफिस मे ताला लगाकर कैद कर दिया, बस आज आप लीडर हो गए। यह भेद हम लोगो को मालूम रहता तो हम लोग भी खाली फोटो तोड़ते। गॉव के जमीदार से लेकर थाना के चौकीदार-दफादार जिनके बैरी ! कही-कही गॉववाले दल बॉधकर हमे हडकाते थे, जैसे मुडवलिया[1] को लोग सूप और खपरी बजाकर हडकाते है। आप नही जानिएगा छोटनबाबू ! आपका जन्म भी नही हुआ था। उस समय आपके बाबू जी दारू की दूकानो की ठेकेदारी करते थे। हम लोग उनकी गाली सुन चुके है। क्या बालदेव ! याद है ? वही कटफर भट्टी की बात ?"

गूदर तुरत रग बदलना जानता है वह भी तो नीमक कानून के समय से ही झोला टाग रहा है—"सरमा जी ! शिवास हाट पर !"

"चुप चाट्टा कही का !" शर्मा जी डॉटते है, "जिधर चॉद उधर सलाम ! बालदेव जी को सभी मिलकर चिढाना था, क्या रे ! बालदेव जी जरा साफ कपडा पहनने लगे है, यरवदा चक्र खरीदे है, चेहरा मोहरा पहले से जरा चिकना लगता है, पास मे पैसा है, इसीलिए तुम लोगो का कलेजा जल रहा है। चलिए बालदेव जी, गॉगुली जी के यहॉ हम भी बहुत दिनो से नही गए हैं।"

'अभी मिटिन जो है।" बालदेव जी कहते है।

"अरे, आप भी तो बालदेव जी सब दिन एक ही समान रह गए ! मिटिग मे रहकर क्या कीजिएगा। फारबिसगजवालो का कजिया फैसला होनेवाला है। महाशयबाबू एक घोडा गाडी मे भरकर का[illegible] पत्तर, फाइल-रजिस्टर, भौचर, डिबलूकट[2] और मुकदमो के कागज ले आए है। उधर फगुनीसिंघ भी एक सौ आदमी को भँजाकर ले आए। आज रात-भर खूब धमाधम होगा। चलिए, क्या देखिएगा

1 बिना सिरवाला प्रेत। 2 डुप्लिकेट।

राँड़ी-बेटखौकी का झगड़ा !"

बालदेव जी दोरिक शर्मा के साथ चले गए तो गूदर ने आँख टीपकर फिसफिसा के कहा, "अरे ! गाँगुली जी के यहाँ जाता है थोड़ो ! जा रहा है तिरपित भंडार में, अभी बालदेव जी को चोट पर चढ़ाएगा। रसगुल्ला झाड़ेगा।"

छोटनबाबू कहते हैं, "अमीनबाबू से कहना होगा। मेरीगंज में अब बालदेव से काम नहीं चलेगा। चरख सेंटर को चौपट कर दिया। घर-घर में सोशलिस्ट घरघराने लगे। अभी तो सब डकैती केस में ऐरेस्ट हैं। उस गाँव का डाक्टर कोमनिस्ट था, वह भी ऐरेस्ट है।... उसको तो हम्हीं ने ऐरेस्ट कराया है। कटहा का नया दारोगा हमारा क्लास फ्रेंड है।"

"लीजिए ! एक बरमगियानी गए तो दूसरे कठपिंगल जी आ रहे हैं।.. यह तो आजकल और भी काबिल हो गया है।"

बावनदास जी आ रहे हैं।... आश्रम के बूढ़े कुत्ते बिलेकपी (ब्लैक प्रिंस) ने बावनदास को दूर से ही पहचान लिया है। अशोक गाछ के नीचे वह इसी तरह लेटा रहता है और हर आने-जानेवाले को देखता है। बावनदास को देखके कान खड़ा कर गर्दन उठाकर देखता है। दुम भी हिला रहा है।... ससांक जी ने इस कुत्ते का नाम रखा था—ब्लैक प्रिंस। सोशलिस्ट पार्टी के चिनगारी जी ने 'लाल पताका' में, जिला के एक मारवाड़ी को ब्लैक प्रिंस लिखा था, अर्थात् जो ब्लैक करने में मशहूर हो। चूँकि मारवाड़ी एकदम नौजवान था इसलिए प्रिंस लिखा था। मारवाड़ी ने मुकदमा ठोक दिया था कि 'लाल पताका' के संपादक ने उसे कुत्ता कहा है।.. बिलेकपी ने ठीक पहचाना है।... बावनदास जी भी अशोक की छाया में बिलेकपी के पास आकर बैठ गए। अहा... हा !... प्यार का भूखा बिलेकपी ! खुशी से उछल-कूदकर, दौड़कर कभी बावनदास जी की झोली दाँत से पकड़कर खींचता है, कभी लाठी लेकर भागता है ! अ-हा-हा !

"अ-हा-हा ! बिलेकपी रे !—बाल झड़ रहे हैं। पहले तो रबिबार को निरजला-अनसन करते थे। तुम दूध-हलुवा भी नहीं सूँघते थे। सुनते हैं, आजकल मूर्गी की हड्डी चबाते हो। तुम्हारा क्या कसूर भैया ! घाव भी हो गया है।.. बदमासी मत करो। झोली में क्या है जो देंगे ! जाओ, झोली में कुछ नहीं है !"

"काऊँ-काऊँ-क्यूँ !" बिलेकपी धरती पर चित्त होकर लेटा हुआ काऊँ-काऊँ कर रहा है और बावनदास की झोली को दाँत से खींचता है।

बावनदास जी धीरे-से एक कागज की पुड़िया निकालते हैं। बिलेकपी और भी जोर-जोर से काऊँ-माऊँ करने लगता है। उसकी यही आदत है बावनदास जब आता है, उसके लिए एक आने का मंडा खरीदता आता है। दास एक टुकड़ा मंड़ा उसे देता है। बिलेकपी चट से खाकर मुँह देखता है बावनदास का।

"अब क्या लेगा, अंडा ?"

चौदह

तहसीलदार साहब अपने नए दोमंजिले की छत पर बैठकर देखते हैं–धान के खेतों में अब धानी रंग उतर आया है। बालियाँ झुक गई हैं। पचीस दिन कातिक के बीत गए हैं। अखता धान की अब कटनी शुरू हो जाएगी।···चारों ओर तहसीलदार साहब की जमीन ! पूरब, वह जो ताड का पेड दिखाई पड़ता है कमला के उस पार·· वहाँ तक और उत्तर, बूढ़े बरगद तक। दक्खिन में, सथालों की जमीन दखल करने के बाद, पिपरा गाँव तक तहसीलदार के पेट में चला आया है। घर के पच्छिम ततमाटोला के पास पचास एकड़ जमीन की एक ही जमा है। खजाना लगता है सिर्फ दस रुपया। तहसीलदार साहब के बाप ने भी इस जमा को दखल करने की हरचंद कोशिश की थी, मगर गोटी नहीं बैठी। तहसीलदार साहब ने भी अपनी तहसीलदारी के समय बहुत कलम चलाई, लेकिन तुम कैथ तो वह भूमिहार ! वह जमीन धरमपुर के भैरोबाबू की है। तहसीलदार साहब की आँख की किरकिरी वह जमीन ! इस दोमंजिले की छत पर बैठने से जमीन की भख और तेज हो जाती है। लिखा-पढ़ी, दलील-दस्तावेज, मरम्मत से लेकर, अकेले में बैठकर, तरह-तरह के पैंट भी यहीं सोचते हैं वह।·· नीचे उतरते ही उनका चेहरा बदल जाता है। तब पोखर में स्नान करने से लेकर भोजन पर बैठने तक वह न जाने कौन शास्तर का मंतर बुदबुदाते रहते हैं, ओं-ग-मिरिंग शिवा · आ य। ओं-ग-मिरिग· !

रोज खाने के समय तहसीलदार साहब धीरे से पूछते हैं, "दीदी कैसी है ?"

"आज बहुत खुश है तुम्हारी बेटी !"

"सच ? कमली की माँ, रात तो मुझे नींद हीं नहीं आई।" तहसीलदार साहब जिस दिन खाने के समय खुश हुए, उस दिन जो भी सामने जला-पका, मीठा-नमकीन रहा, सब खा जाते हैं।

"अभी कहती थी कि 'इंदिरा' को उसका स्वामी मिल गया। बहुत खुश है।"

"पगली !" तहसीलदार साहब हँसते है।

"रात को अचानक ·मली के कमरे से रोने की आवाज आई ! · कमली हिचकियाँ लेकर रो रही थी। माँ को तो जड़ैया-बुखार की तरह कँपकँपी लग गई। तहसीलदार साहब की आँखों से आँसू की झड़ी लग गई। माँ ने अपने को बहुत सँभालके पूछा, "क्या है बेटी, क्या हुआ ! बोल कमल ! कमली ! बेटी ! बोल बेटा ! मैना मोरी !"

"माँ ! मैं अपने लिए नहीं रोती हूँ।··· यह· देखो न ! इंदिरा के लिए ।" कमला कहते-कहते फिर हिचकियाँ लेती है।

"कौन इदिरा ?· · कौन है वह ?"

"कौन इंदिरा ?··· हाँ, तुम क्या जानो ! माँ, इस किताब की इंदिरा के लिए

रो रही हूँ। बेचारी पहले-पहल ससुराल जा रही थी, डोली पर चढ़के। मन मे कितने मनसूबे बॉधकर दुलहिन इदिरा ससुराल जा रही थी। एक पुराने तालाब के किनारे डोली रुकी। वह पोखर बिजूवन बिजूखड जैसे एक जगल के पास ही था। बहुत खुनियॉ जगह थी। इसीलिए साथ मे सिपाही लोग थे। लेकिन इदिरा को डकैत लोग डोली सहित उठाकर ले गए। दिन-दहाडे डकैती हो गई। लेकिन मॉ, उसकी सबसे बडी चीज बच गई है, उसकी इज्जत ! अभी वह उसी बिजूवन-बिजूखड जैसे घोर जगल मे है मॉ ! बेचारी इदिरा !"

कमला बॉकिमबाबू की पुस्तक 'इदिरा' पढकर रो रही थी। आज वह खुश है। इदिरा को उसका स्वामी फिर मिल गया।

तहसीलदार साहब कहते है—"यह पागलपन नही कमला की मॉ ! बेटी मेरी बडी समझदार है। मोम का कलेजा है ! बाबा विश्वनाथ ! मगल करना !'

"कल डाक्टर से भेट किए या नही ?" मॉ पूछती है।

"हॉ रात मे तो सुना ही नही सका। बडा झझट का काम है। दर्खास्त दिया तो पूछा कि डाक्टर आपके कौन है। मै क्या जवाब दूँ ? कहा, कोई नही। बस, नामजूर कर दिया दर्खास्त। किरानीबाबू बडे भले आदमी थे। वे बोले कि डाक्टर साहब नजरबद है इसलिए वे सिर्फ मॉ बाप, स्त्री और बहन से ही खत किताबत कर सकते या मिल सकते हैं। क्या कानून है ! बहन को चिट्ठी दे सकते है, बहनोई को नही। स्त्री से भेट कर सकते है लेकिन साथ मे ससुर रहे तो वह बेचारा अपने जमाई का मुँह भी नही देख सकता !" तहसीलदार साहब मुँह धोकर, बगल की कोठरी मे जाते जाते कहते है, "प्यारू वही पूर्णिया मे ही रहता है। ए क होटल मे खाता पीता है। जल के अदर से ही डाक्टर ने गनेश का इतिजाम कर दिया है, बरमो समाज मदिर मे। हर महीने दस्तखत करके चिक भेज देता है डाक्टर। प्यारू और गनेश के नाम से अलग अलग चिक देता है। जो भी कहो, आदमी बहुत अच्छा है यह डाक्टर ! प्यारू कहता था, एक दिन वह दूध के ठकेदार के साथ अदर चला गया। अदर जाकर, फाटक के पास ही, डाक्टर साहब से भेट हो गई। डाक्टर साहब जेल आफिस मे आ रहे थे। प्यारू को देखकर अचकचा गए डाक्टर साहब। फिर कहा, क्यो आए ? प्यारू ने कुछ जवाब नही दिया तो पूछा, मेरीगज से कब आए हो ? कमला कैसी है ?"

"ऐ ? पूछा ? डाक्टर ने पूछा था ? प्यारू ने क्या जवाब दिया ?"

कमली की मॉ एक ही सॉस मे उतावली होकर पूछती है, "न जाने क्या बता दिया उसने ?"

"नही, प्यारू बेवकूफ नही है। जवाब दिया, अच्छी है। आपका फोटो ले गई है, रोज सुबह उठकर देखती है।"

अच्छा ? कहा उसने ? कितना होशियार है प्यारू ! आ हा-हा ! भगवान भी कैसे है ? कोई नही है बेचारे को। तब डाक्टर ने क्या कहा ?"

"कहता था, हँसते हँसते चले गए।" तहसीलदार साहब ने मुँह मे पान डाल

लिया। अब बात फुरा गई।

मारे खुशी के कमली की माँ भरपेट खा भी नहीं सकती है। माँ-बेटी साथ ही खाती हैं रोज। आज कमली बार-बार टोकती है, "माँ, खाओ भी, पुरैनियाँ की कथा पीछे होगी।· बलैया मेरी किसी का फोटो देखेगी !"

आज से माँ बैटकर उपनियास सुनेगी। कमली फिर शुरू से इदिरा पढ़कर सुना रही है। कमली कहती है, "माँ शकुंतला, सावित्री आदि की कथा पढ़ने में मन लगता है, लेकिन उपन्यास पढ़ते समय ऐसा लगेता है कि यह देवी-देवता, ऋपी-मुनि की कहानी नहीं, जैसे यह हम लोगों के गाँवघर की बात हो।"

आज दो दिनों से खाने-पीने के बाद कमली के गर्भ में पलता हुआ शिशु हाथ-पाँव फडफडाता है। लाज से वह कुछ कहती नही है माँ को। लेकिन जब से उसे आनेवाले की आहट मिली है, कमली का मन किसी दूर में खो-सा गया है। एक ही साथ बहुत-से बच्चो के मुखड़े खिलखिला उठते हैं उसकी आँखों के आगे ! बच्चे उसके साथ आँखमिचौनी खेल रहे हैं ? कौन है वह ? सभी प्यारे ! ताजे कमल की तरह खिले हुए। वह किसका हाथ पकड़े ? वह एक चंचल बालक को उठाकर गोद में ले लेती है। कितने कोमल है उसके हाथ-पैर, कैसी मीठी मुस्कराहट ! कितना चंचल ! मेरा चुलबुला राजा रे ! कमली की छाती से दूध झरने लगता है।

"कमली की माँ !" तहसीलदार साहब दोमंजिले की कोठरी से पुकारते हैं।

"जरा इधर तो आना कमली की माँ !"

दोमंजिले पर पैर रखते ही तहसीलदार साहब की बुद्धि, उनके विचार, उनकी बोली-बानी सब बदल जाती है। जबड़े की हड्डियाँ खुद-ब-खुद चलती रहती हैं, मानो कोई चीज चबा रहे हो।

"कमली की माँ ! मैं अब फाँसी लगाकर मर जाऊँगा। मुझे नींद नहीं आती है। क्या होगा ? कुछ सोचती हो ! कोई उपाय ? दुश्मन को भी ये दिन कभी देखने न पडें ! तुम तो अब दिन-रात बेटी के पास रहती हो, मेरा जी अकेले मे घबगता है। तुम्हारी नागिन बेटी ने ऐसा डँसा है कि " तहसीलदार साहब आवेश मे आकर खड़े हो जाते हैं।

"छिः ! कमली के बाबू ! कैसी बाते करते हो ?"

"चुप रहो तुम ! तुम दोनों ने मुझे । हट जाओ !"

"कमली के बाबू, बैठ जाओ ! चिल्लाओ मत, लड़की सुन लेगी।"

"सुन लेगी ! हूँ, बडी लाट साहब की [illegible] आई है !"

"कमली के बाबू !"

"चौप !"

बूढ़ी नौकरानी आकर कहती है, "चाह पीयै ले बजबै छथिन दाय नीचाँ !"

"चलो !"

कमली अब भी रोज दोनों वक्त अपने हाथों से चाय बनाकर भेजती है अपने

बाप को। कमली कहती है, "बाबा एक सौ प्यालियों के बीच, सिर्फ रंग देखकर मेरी बनाई हुई .चाय पहचान लेंगे।"

नीचे के कमरे में बैठकर, चाय की प्याली में चुस्की लेते ही तहसीलदार साहब की तनी हुई रगें ढीली पड़ जाती हैं, चेहरा स्वाभाविक हो जाता है।

"सेबिया को रजाई भरवा दो इस बार, नहीं तो बूढ़ी इस जाड़े में गठिया से नहीं उबर सकेगी।" तहसीलदार साहब कहते हैं।

"तुम्हारी बेटी तुम्हारे लिए ऊनी गंजी बिन रही है।··· किताब खोलकर सामने रख लेती है, दोनों हाथों में सलाई लेकर किताब में देख-देखकर जब बिनने लगती है कमली, तो लगता है हाथ नहीं मिसीन है।"

"सच ? अहा ! बेचारी··· ! मेरे-जैसे अभागे के घर में जन्म लेकर बचपन से दुख-ही-दुख भोगती आ रही है दीदी मेरी ! कमली की माँ, तुमको याद है, जब सिर्फ एक साल की थी कमली, उसी समय मैंने कहा था कि मेरी बेटी संतोख की पुतली बनकर आई है।"

सेबिया हँसती हुई अधूरा स्वेटर ले आती है।

"यही देखो !" माँ हाथ में लेकर दिखलाती है, "अपनी बेटी की कारीगरी देखो !"

तहसीलदार साहब मुस्कराते हुए देखते हैं, फिर सेबिया को इशारा करते हुए कहते हैं, "यह तो बहुत बड़ा होगा मेरी देह में। मेरे लिए तो इतना छोटा (·· एक बच्चे के बराबर)··· चाहिए ! इ त ना छोटा !"

"ऊँ !" सेबिया गाल पर हाथ रखकर हँसते हुए कहती है, "बतहा[1] !"

माँ कहती है, "दे आओ ! कहना, बहुत बढ़िया है।"

बहुत पुरानी नौकरानी है सेबिया। कमली की माँ के बचपन की सहेली है वह ! साथ-साथ खेली है। बचपन में ही बेवा हुई, चुमौना की बात सुनते ही हफ्तों रोती रहती और नदी में डूबने जाती। कमली की माँ के साथ यहाँ आई और अब तक है। गठिया के कारण शरीर बहुत कमजोर हो गया है और एक कान से कम सुनती है।

कमली कहती है–सेबिया माई !

"ए ! सेबिया माई !"

बूढ़ी रोज चुराकर चूल्हे की लाल मिट्टी के टुकड़े दे आती है कमली को। कितनी सोंधी लगती है चूल्हे की मिट्टी !

"माँ, सेबिया माई पूछती थी, जमाई कब आवेगा ?"

तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर खड़े होकर देख रहे हैं। पच्छिम की ओर डूबते हुए सूरज की लाल रोशनी 'धरमपुर-मिलिक' के खेतों पर फैली हुई है। रंग धीरे-धीरे बदल रहा है। लाल धुँधला लाल, मटमैला··· ! अब अँधियारी

1. पागल।

बढ़ी आ रही है।··· तहसीलदार साहब की ड्योढ़ी, चहारदीवारी भी अब अँधेरे में डूब गई।

पंद्रह

बालदेव जी घोड़ागाड़ीवाले से कहते हैं—"देखो जी, आप यदि 'टैन' पकडा दो तो आठ आना बकसीस देंगे !"

"देखिए, अपने जानते कोसिस तो हम खूब करेंगे !··· चल बेटा ! कदम-कदम बढ़ाके।" घोड़ेवाला छोकरा घोडे को चाबुक लगाते हुए गाता है, "झगड़ा सुरू हुआ है सारे हिंदुस्तान में, हिंदू-मुसलमान में ना···"

बालदेव जी को आज मालूम हुआ कि महतमा जी दो महीने से लगातार पटना में थे। रोज प्रार्थना-सभा में 'भाखन' देते थे महतमा जी !··· आजकल 'डिल्ली' में हैं।

"·· ऐं ! कौन गाड़ी बिगुल दिया जी ?"

"अभी सिंगल डौन भी नहीं हुआ है। देरी है।"

"देरी है ? वाह बहादुर !"

स्टेशन पर बालदेव जी ने भाड़ा के अलावा एक अठन्नी बकसीस में दिया तो घोड़ागाड़ीवाले छोकरे ने बड़े 'कैदा' से हाथ चमकाके सलाम किया, "सलाम हजौर !"

किसी जवान स्त्री को देखते ही बालदेव जी को झट से लछमी की याद आ जाती है। मन-ही-मन सोचते है, यदि थोडी देर गाँगुली जी के यहाँ और हो जाती तो आज सरमा जी आने नहीं देते। चलते-चलते सरमा जी ने आखिर दिल्लगी कर ही लिया, "अच्छा तो बालदेव, जाओ . हम बेकूफ जो तुमको रोकेंगे ? तुमको यहाँ रोक लें और उधर तुम्हारी कोठारिन किसी से 'सतसंग' करने लगे तो हुआ !··· हा-हा-हा ! माफ करना, अच्छा तो जै हिंद !"

"जै हिन्न बालदेव जी !"

"कौन ? खलासी जी ! कहिए क्या हाल है ?"

"हम तो अभी आ रहे हैं मेरीगंज से।··· [illegible] रौतहट टीसन में आपकी बैलगाडी लगी हुई है। गए थे रोकसती[1] कराने के लिए। आज दस दिन के बाद लौटे हैं। हमारे जलाना को गरम हवा[2] लग गया था। झाड़-फूँककर साथ लेते आए हैं !···

1. रुखसत। 2. भूतप्रेत की हवा।

अ हा ! आज दस बजे हम आपके आसरम के तरफ गए थे, एक जड़ी खोजने के लिए। आसरम देखकर मन होता था कि यहाँ से कहीं नहीं जाएँ। आप तो थे नहीं, कोठारिन जी थीं। साहेब बनगी किया, सुपाड़ी-कसैली खाया। एक नवतुरिया साधू जी इतना बढ़िया गा-गाकर बीजक-पढ़ रहे थे कि जी होता था बैठे रहें। · अच्छा तो जै हिन्न !"

नवतुरिया साधू ?··· काशी जी का बिदियारथी जी है। महंथ सेवादास के समय से ही मठ पर आता है, साल-दो-साल के बाद। महंथ साहब जाने के समय धोती, चादर, किताब का दाम और राह-खर्चा देते थे।··· मोती के जैसा अक्षर लिखता है।· लछमी ने जो बीजक दिया था बालदेव जी को, इसी बिदियारथी जी का लिखा हुआ था। इस बार आए हैं तो कहते हैं कि मठ पर जी नहीं लगता है। लेकिन लछमी तो अब मठ की कोठारिन नहीं ! एक भले घर की 'इसतिरी' है।

· जब मैं घर में नहीं था तो वह क्यों गया ? आखिर लोग क्या सोचते होंगे ? नहीं, यह अच्छी बात नहीं ? लछमी को समझा देना होगा।

बालदेव जी की मौसी रोज सुबह ही उनके आसरम के सामने आकर बैठ जाती है और गिन-गिनकर गालियाँ सुना जाती है, "अरे भकुआ रे !··· एही दिन के लिए पाल-पोसके इतना बड़ा किया था रे !··· मुड़िकटौना रे ! लछमिनियाँ ने तो तुमको धोखा की माटी[1] खिलाकर बस कर लिया है। भेंड़ा बनाकर रख लिया है। रे वेलज्जा, मोटकी-घुमसी की सूरत पर कैसे भूल गया रे !" और लछमी कभी सेर-भर चावल, पाव-भर दाल अथवा गेहूँ, आलू वगैरह देकर उसे विदा करती है।

एक पहर साँझ हो गई है। सर्दी काफी पड़ने लगी है अब। बालदेव जी चादर से कान को ढँक लेते हैं लेकिन, कान तो गर्म है।·· बिदियारथी जी··

"अरे हाँ, हाँ ! ठहर ! साला ! आदमी देखकर भी भड़कता है ?" गाड़ीवान ने बैलों को रोकते हुए पुकारा, "गोसाईं जी !··· उठिए, आ गए घर।"

बालदेव जी जगे ही हुए हैं। उठते ही दूर पेड़ की छाया में किसी को जाते देखते हैं।· ओ ! विदियारथी जी अभी जा रहे हैं। इसीलिए बैल भड़के थे !

"साहेब बंदगी !" लछमी पैर छूकर साहेब बंदगी करती है।

बालदेव जी मिनमिनाकर कुछ कहते हैं और सीधे अपनी आसनी पर चले जाते हैं।

"मेरा कंबल कौन ओढ़ा था ?" बालदेव जी बिछावन पर पड़े हुए कंबल को नाक सिकोड़कर देखते हुए पूछते है, "मेरा कंबल क्यों ओढ़ा था वह ?"

"कौन ?"

'और कौन ? मालूम होता है सपना देखती हो !" बालदेव जी का माथा गर्म है।

1. बस में करने का एक टोटा।

"रामफल ! तुम लोग खा लो ! हमको भूख नही ! हम नही खाएँगे !" बालदेव जी जोर-जोर से कबल झाडते हुए कहते है, "दुनियाँ-भर का आदमी आकर आसन पर सोएगा !"

लछमी कई दिनो से देखती है, बालदेव जी बात-बात पर बिगड जाते हैं। वह आकर दरवाजे के पास खडी हो जाती है, "आसन झाडा हुआ है। बिदियारथी जी तो ओसारे पर बैठे थे।"

"क्यो ? ओसारे पर क्या थे ? घर मे क्यो नही बैठते हैं बिदियारथी जी मूने घर मे जैसा घर, वैसा ओसारा।" बालदेव जी के ओठ फडक उठते है।

"बिदियारथी जी आते है सतसग करने के लिए !"

"हा, हा ! खूब समझता है। सतसग ! हूं सतसग !" बालदेवजी घृणा से मुह सिकोड लेते है।

न जाने क्या, आज सतसग सुनते ही उनकी देह मे झरक सी लगती है। छोटनबाबू ने कहा था—"सतसग कर रहे है।" दोरिक सरमा ने आखिर कह दिया, औरतिन किसी के साथ सतसग !"

"सतसग ही करना है तो उनकी आसनी यही लगा दो। दिन रात खूब सतसग करती रहना।" बालदेव जी ओठ टेढा करके एक अजीव मुद्रा बनाकर, हाथ चमकाकर कहते है, 'सतसग !"

"गुसाई साहब !" लछमी के भी नथने फडक उठते है, "ऐसा क्यो बकते है !"

"तुम हमको टिरिकबाजी दिखाती हो ? हम सब समझते है।"

"क्या समझते हे ?"

बाँहे क्यो मरोडती है लछमी ? मारपीट करेगी क्या !

गुस्सा से थर थर कापती है, "बोलिए ! क्या समझते है रडी समझ लिया है क्या ? ठीक ही कहा है, जानवर की मूँडी को पोसने से गले की फॉसी छुडाता है मगर आदमी की मूँडी !"

"हम तुम्हारे पालतू कुत्ता नही। हम अभी चन्ननपट्टी चले जाएग, अभी !" बालदेव जी उठकर खडे होते है।

"गोरसा मत होइए गोसाई साहेब ! करोध पाप को मूल ! जाने-जाते देह मे अकलग[1] लगाकर मत जाइए।"

बालदेव जी कुछ सोचकर बेठ जाते है। लछमी की देह से गध निकलती है। चुपचाप लछमी की ओर देखते हैं वह। लछमी चुपचाप 'किवाड'के सहारे खडी ऑसू पोछते हुए सिसकती है, "मेरी तकदीर ही खराब है।"

लछमी रो रही है ! बालदेव जी का गुस्सा धीरे-धीरे उतर जाता है। वह उठते हैं, लछमी के सर पर हाथ फेरते हुए कहते है, "रोओ मत ! तुम पर भला सदेह करेगे ? रोओ मत ! लेकिन तुमको अब खुद समझना चाहिए कि तुम अब

1 कलक।

मठ की कोठारिन नहीं, मेरी इसतरी हो। लोग क्या कहेंगे···।"

लछमी बालदेव जी के पाँव पर गिर पड़ती है, "छमा प्रभू ! दासी का अपराध···।"

"छिः-छिः ! लछमी, उठो; चलो भूख लगी है।"

सोलह

डाक्टर नजरबंद है।

जेल अस्पताल के एक सेल में उसे रखा गया है। हर सप्ताह कोई-न-कोई ऑफिसर आकर उसे घंटों परेशान करता है, तरह-तरह के प्रश्न पूछता है।··· चलित्तर कर्मकार के दल से डाक्टर का कोई संबंध प्रमाणित करने के लिए पुलिस जी-तोड़ परिश्रम कर रही है।

"आप जानते हैं चलित्तर कर्मकार किसी पार्टी का मेंबर है ?"

"जी नहीं। मैंने चलित्तर कर्मकार का नाम भी नहीं सुना।"

"नहीं सुना ? जिले-भर के बच्चे तक जानते हैं।"

चलित्तर को कौन नहीं जानता ! बिहार सरकार की ओर से पंद्रह हजार इनाम का ऐलान किया गया है। हर स्टेशन के मुसाफिरखाने में उसकी बड़ी-सी तस्वीर लटका दी गई है। पुलिस, सी.आई.डी. और मिलिटरी का एक स्पेशल जत्था उसे गिरफ्तार करने के लिए साल-भर से जिले के कोने-कोने में घूम रहा है। नए एस. पी. साहब ने प्रतिज्ञा की है, या तो चलित्तर को गिरफ्तार करेंगे अथवा नौकरी छोड़ देंगे।·· घर-घर में चलित्तर की कहानियाँ होती हैं। नेताजी के सिंगापुर में आने के समय गाँव-घर, घाट-बाट, नाच-तमाशा में लोग जैसी चर्चा करते थे, वैसी ही चर्चा चलित्तर की भी होती है।··· कटहा के बड़े दारोगा से थाने पर जाकर, भेंट करके, बातचीत करके, पान खाकर और नमस्ते करके· जब उठा तो हँसकर कहा, हम ही चलित्तर कर्मकार हैं। दारोगा साहब को दाँती लग गई।··· कलक्टर साहेब दार्जिलिंग रोड से कहीं जा रहे थे, डंगरा घाट की नाव बह गई थी। कलक्टर साहेब लौटे आ रहे थे कि एक आदमी ने आकर सलाम किया और कहा कि "चलिए, उस पार पहुँचा देते हैं।" कलक्टर साहेब तो मोटर में बैठे ही रहे, उस आदमी ने मोटर सहित कलक्टर साहेब को नदी तैरकर पार कर दिया। सिरिफ मोटर का एक पहिया एक हाथ से पकड़े रहा। उस पार जाकर कलक्टर साहेब ने खुश होकर इनाम देने के लिए नाम-गाम पूछा तो बताया—चलित्तर कर्मकार।···

कलक्टर साहेब के हाथ से कलम छूटकर गिर गई।··· रोते हुए बच्चे को रात में माँ डराती है–आ रे ! चलित्तर, घोड़ा चढ़ी !

और डाक्टर कहता है कि उसने चलित्तर का नाम भी नहीं सुना ! कैसे विश्वास किया जाए ?· विराटनगर के बड़े हाकिम ने लिखा है, डाक्टर नेपाल की प्रजा नहीं।··· बंगालवालों का जवाब आया है, बंगाल से उसका कोई संबंध नहीं। तो आखिर कहाँ का आदमी है ? पुरानी फाइलों को उलटने से बातें और भी उलझ जाती हैं। अजब झंझट है ! उधर विधान सभा में सवाल पूछा गया है–डाक्टर को क्यों नजरबद किया गया है ? बड़ी मुश्किल है ! एस. पी. साहब बहुत कड़े आदमी हैं। कटहा के छोटे दारोगा को गलियाकर ठीक कर दिया है।

जेल में दाखिल होने के बाद डाक्टर को लगा, इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता थी। जेल ! अस्पताल का यह सेल ! ऑफिसरों का आना-जाना और पूछताछ पंद्रह-बीस दिनों के बाद ही बंद हो गई। गाँधी जी पटना की प्रार्थना सभा में रोज प्रवचन देते हैं। दैनिक पत्रों के ये पृष्ठ कभी पुराने नहीं होंगे। इन प्रवचनों पर बहस नहीं की जा सकती है, किसी सेल में बैठकर इसका अध्ययन किया जा सकता है।· अभी कल कुछ सप्रदायवादियों के एक बड़े जलमे का उद्घाटन किया है प्रांत के एक बड़े जग-जाहिर नेता ने।··· मालूम होता है चालबाजी बहुत दूर तक चली गई है। महात्मा गाँधी स भी काली-टोपी स्वयं-सेवक दल के लिए प्रशंसा के शब्द वसूलना हँसी-खेल की बात नही ! मन मे किसी ने कहा था, उन्हें धोखा दिया गया है। और तीसरे ही दिन बात स्पष्ट हो गई। गाँधी जी ने बयान मे कहा, "इस संस्था के सचालकों ने मेरे पास अपनी संस्था का उद्देश्य छिपाया, इसका मतलब हुआ, उनकी आत्मा कहती है कि वे असत्य मार्ग पर हैं। फिर कोई सही दिमागवाला आदमी उन्हें कैसे कहेगा कि वे सही रास्ते पर हैं !"· मेरीगंज की याद आती है ! कमला की बड़ी चिंता थी, मगर सुना है, वह ठीक है। कमला की याद आते ही जेल की सारी कुरूपताएँ सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। कालीचरन, बासुदेव वगैरह डकैती-केस में फँसकर आए है। बासुदेव, सुंदर और सोमा की बात नहीं जानता, लेकिन कालीचरन ? विश्वास नहीं होता। कुछ कहा भी नहीं जा सकता है।· तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की अब पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी। लेकिन यह अन्याय कितने दिनों तक चलेगा ?· तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद ने एक दिन हँसकर कहा था, "जिस दिन धनी, जमींदार, सेठ और मिलवालों को लोग राह चलते कोढ़ी और पागल समझने लगेगे उसी दिन, उसी दिन असल सुराज हो जाएगा। आप कहते हैं कि ऐसा जमाना आवेगा। जब जमाना आवेगा तो हमारी संपत्ति छीनी जाएगी ही। और अभी संपत्ति बटोरने पर तो कोई प्रतिबंध नहीं। तो फिर बैठा क्यों रहूँ ? तहसीलदार साहब भी अजीब आदमी हैं। लेकिन वह जेल से छूटकर मेरीगंज ही जाएगा। और कहाँ जाएगा वह ?··· नेपाल ? नेपाल के लोगों ने 'नेपाल राष्ट्रीय काँग्रेस' की स्थापना की है। नहीं, राजनीति में वह नहीं जाएगा। वह राजनीति के काबिल नहीं। एक बार ममता ने बातें करते हुए

राजनीति की तुलना डाइन से की थी। डाइन ! मौसी को लोगो ने मार ही डाला ! मौसी गणेश ! कमला ! लाख चेष्टा करने पर भी उसकी सूरत आँखों के आगे आ जाती है !

"डाक्टर साहब !" असिस्टेंट जेलर साहब आए है, "ब्रह्मसमाज मदिर के सेक्रेटरी आए हैं। आपका भाजा बीमार है। आपसे उसके इलाज के बारे मे कुछ सलाह लेने आए हैं। जेलर साहब आपको बुला रहे है।"

"ओ चलिए !"

सत्रह

डेढ महीने मे कालीचरन जेल मे है। वासुदेव, सुनरा, जगदेवा, सोमा और सोनमा सब एक ही केस मे नन्थी हैं। इस बीच एक तारीख को कचहरी के मजिस्टरी इजलास मे हाजिरी हुई है। एक गाडी मिलिटरी आगे और एक गाडी पीछे ! सभी को हथकडी और बेडी डालकर कचहरी लाया गया था। उस दिन कालीचरन की निगाह, पुलिस की लौरी से जितनी दूर जा सकती थी, चारदीवारी पर थी। कचहरी की हाजत मे पेशाब की गध इतनी तेज क्यो होती है। कालीचरन की निगाह सेक्रेटरी साहेब पर पडी, उनसे आँखे मिली। कालीचरन का चेहरा खिल गया। तीन महीनो से जिनकी सूरत आँखो के आगे नाच रही थी। "सेक्रेटरी साहेब ! कृष्णकात मिश्रजी !" कालीचरन ने चिल्लाकर कहा, "जय हिंद कामरेड !" सेक्रेटरी साहब ने तुरत कनपट्टी इस तरह फेर ली मानो कान के पास मधुमक्खी ने अचानक काट लिया। फिर उसी तरह गर्दन टेढी किए आगे बढते गए। कालीचरन को सिपाही ने डॉट दिया, "का हो ससुरे ! बिना हटर के बात न मनबऽ !" उधर सेक्रेटरी साहब कॉटेवाले तार के घेरे मे फँसते-फँसते बचे। एकमुँहा होकर जो चलेगा वह कॉटे मे तो जरूर फॅसेगा। तिस पर इधर सिपाही जी ने कालीचरन को डॉटा सुनरा तो खिलखिलाकर हँस पडा। लेकिन इसमे सिकरेटरी साहेब का क्या कसूर ! चोर-डकैतो से सभी भले लोगो को दूर रहना चाहिए। वासुदेव, सुनरा, सोमा, सनिचरा वगैरह आखिर डकैत ही तो है ! और सिकरेटरी साहेब उसे भी डकैत समझ रहे हैं। कोई उपाय नही।

कोई उपाय नही ? लेकिन आज मास का दिन है। जाडे के समय सप्ताह मे एक साम, कैदियो को मास मिलता है। साम को बैस्नव और साकट का खिलाते खिलाते काफी अँधेरा हो जाता है। अस्पताल के पिछवाडे के वाडर साहेब

मास जोगाड करने के लिए चले जाते है। आज कोसिस करके देखना चाहिए !

कालीचरन ने फैसला कर लिया है। यदि मौका मिला तो वह जरूर कोसिस करेगा। हॉ, वह भागेगा। और कोई उपाए नही। उसने सब पता लगा लिया है। जेल से भागने की सजा सिरिफ छः महीना है। डडा-बेड़ी और लाल टोपी पहननी पडेगी। लोग कहेगे ललटोपिया, और क्या ? लाल रग खराब तो नही। सिकरेटरी साहेब और धरमपुरी जी से मिलकर वह बात करना चाहता है। उसके बाद उसे फॉसी-सूल्ली जो भी मिले, वह खुशी-खुशी झेल लेगा। पाटी की इतनी बडी बदनामी कराके वह जीकर ही क्या करेगा !

बासुदेव, सुनरा और सनिचरा तो चोर-डकैतो के साथ इस तरह हिलमिल गए है कि उन्हे देखकर लाज आती है कालीचरन को। बासुदेव ने डाक्टर नटखट प्रसाद से दोस्ती कर ली है। डाक्टर नटखट ! नामी सिर्कचिल्ली[1] आदमी है यह डाक्टर। फारबिसगज की तरफ का है। डकैती केस मे आया है। अचरज की बात है ! उस डाक्टर को देखकर किसी को विश्वास ही नही होगा कि उसने आदमी को मारने के सिवा कभी जिलाने का भी काम किया है। चेहरा ठीक कसाई की तरह है। बासुदेव आ उसके साथ भी खूब हेलमेल देखते है। रात मे जूआ भी खेलता है। बासुदेव कालीचरन से नही बोलता है। वह दूसरे खटाल मे रहता है। उस दिन दाल कमान म थोडी देर के लिए भेट हुई। कालीचरन ने सिरिफ इतना ही पूछा, "बासुदेव तुमको यही करना था ?" बासुदेव के साथ एक कलकतिया पाकिटमार था। दोनो एक साथ खिलखिलाकर हॅस पडे। जाते समय बासुदेव ने कहा, "जिस समय सात सौ रुपैया का पुलिदा बॉधकर सिकरेटरी साहब को देने गए थे, उस दिन क्यो नही पूछा था कि चार दिन के भीतर कहॉ से इतना रुपैया वसूल हुआ ? " उसी शाम को पानी टकी के पास डाक्टर नटखट ने उसको रोककर कहा था, "कालीचरन, कोई रास्ता नही। तुम यदि चाहो तो तुम्हारा जमानतदार भी होगा और मुकदमा मे बेदाग छूट भी जाओगे। सोचना ! सोचकर देखना ! पाटीवाटी कोई काम नही देगी।"

थू ! थू ! जेल मे आकर काली को खैनी की आदत पड गई है। डाक्टर साहेब अपने गॉव के डाक्टर ने जमादार से उस दिन जेल गेट पर हॅसकर कहा था, "सिपाही जी ! कालीचरन का जरा खयाल रखिएगा।" देवता है डाक्टर साहेब ! जरूर देवता है ! सिरिफ खैनी ही नही, कभी कभी बीडी भी जमादार साहेब दे देते है। थू ! थू ! थूक है एस पैसे पर ! डाक्टर नटखटप्रसाद की बात वह नही मानेगा। सोमा ने भी एक बार दबी जबान कहने की कोसिस की थी, "उस्ताद !" "चुप उस्ताद का बच्चा !" कालीचरन ने डॉट बता दी थी।

उस्ताद ! जेल से बाहर, फिरार हालत मे चलित्तर करमकार से उसकी भेट हुई थी। कौन कहता है कि वह बडा भारी कलेजावाला आदमी है ! कुसियारगॉव

1. शखचिल्ली।

टीसन के पास बड़का-धत्ता के बीच दोगछिया की छाया में भेंट हुई थी। कालीचरन को देखते ही वह अपने साथियों के साथ हाल-हथियार लेकर खड़ा हो गया था। ··· हैंसप् ! दारोगा साहेब जिस तरह चिल्लाए थे, उसी तरह चिल्ला उठा था चलित्तर। ··· कालीचरन को हँसी आ गई थी। उसके मुँह से अनजाने ही निकल पड़ा था, "अरे ! हम हैं उस्ताद ! खाली-हाथ पाटीवाला कालीचरन !" चलित्तर ने एक बार कहा था, "इस खाली हाथवाली पाटी में रहकर सब दिन खाली हाथ ही रहोगे !" पीछे तो बहुत बहस किया। आखिर में चलित्तर ने कहा था, "तुमने हमको उस्ताद कहा है। गाढ़े बिपत में कभी जरूरत पड़ने पर याद करना।" कालीचरन ने हँसकर कहा था, "उसकी जरूरत नहीं होगी···" दुबारा उस्ताद कहते-कहते वह रुक गया था।··· आज भी चलित्तर की वह बात कान में गूँज रही है, "देखना है तुम्हारी उस्तादी !"

· लेकिन, आज बासुदेव और सोमा की मदद लेनी ही होगी। एक बार मिल तो जाए, वह पटिया लेगा।

गोटी बैठ गई।··· सोमा और बासुदेव को कालीचरन ने पटिया लिया है। अस्पताल के पिछवाड़े में··· !

ठीक है, अस्पताल के पिछवाड़े मे, दीवाल की छाया में बासुदेव और सोमा ही हैं। ठीक है ! दोनों ने कंधे की ओर इशारा किया।

· सब ठीक ! हत्तेरे की ! कालीचरन गिर पड़ा। तब बासुदेव और सोमा कंधा-से-कंधा भिड़ाकर खड़े हुए।··· ठीक है ! जरा-सा, जरा-सा और ! बस, चार अंगुल ! बासुदेव और सोमा के कंधों पर कालीचरन जरा उचकता है। दोनों के कंधों का भार जरा हल्का मालूम होता है। "ऐ, ठीक है।·· भागो !"

"भागा ! भागा !"

"टु-टू-ऊ-ऊ··· टु-टू-ऊ-ऊ ! जेल-अस्पताल के पिछवाड़े से सिपाही सीटी फूँकता है।

टु-टू-टू-टू ! बहुत-सी सीटियों की मिली हुई आवाज।

ढन-ढन, ढनाँग-ढनाँग··· ! जेल-फाटक का बड़ा घंटा घनघना उठा।

· कालीचरन पाँच मिनट तक जेल के बाहर, दीवार के पास जमीन पर बेसुध पड़ा रहा।·· सीटी और घंटे की आवाज ने उसे सजीव कर दिया।·· नहीं, ज्यादा चोट नहीं आई है। सिरिफ कमर में मोच आ गई है।·· ढनाँग-ढनाँग !·· जेल का घंटा घनघना रहा है··· वह भागता है।

फर्ड़-र्र-र्र-र ! एक साथ कई बंदूकें गरज उठीं।

अँधेरे में कुछ सूझता भी तो नहीं।· एक घड़ी रात भी नहीं हुई है। ओस से धरती-धरती पच-पच करती है, पैर फिसल जाते हैं ?···

भर्र-भर्रर-र-र, सामने दार्जिलिंग रोड पर पाँच-सात मिलिटरी-लौरियाँ दौड़ रही हैं।

कालीचरन, पाँचूबाबू वकील के घर के पिछवाड़े की एक झाड़ी में छिपकर

हाँफता है···सड़क कैसे टपा जाए ?··· किधर से जाना ठीक होगा ? दाहिने ओर भी लोग हल्ला करने लगे हैं। पास की गली होकर घुड़सवार लोग जा रहे हैं।···

कालीचरन तय करता है, सामने बाँसवाड़ी पार करके मोबरलीसाहेब की पुरानी कोठी की बगल से जाना ही अच्छा होगा। अब देर नहीं करनी चाहिए।

··· ऐं ? मोबरली साहेब की कोठी के पास कालीचरन को ऐसा लगा कि पीछे से कोई टार्च मार रहा है·· हाँ, यह तो टार्च की ही रोशनी है।·· वह जंगल में घुस जाता है। बस, थोड़ी देर यहाँ सुस्ताकर, टार्चवाले को देखकर, फिर एक दुलकी ! एक जूम[1] खैनी दिन में ही उसने चुनाकर, कपड़े के खूँट में बाँध ली थी। बहुत मौके पर अभी उस पर हाथ पड़ गया। खैनी खाकर वह झड़बेरी की झाड़ी से निकलकर साफ मैदान की ओर आता है ! कहाँ है टार्च की रोशनी ? बाप ! एकदम पास ही !··· कालीचरन भागता है। टार्च की तेज रोशनी उसका पीछा कर रही है और फिर जंगल की निःस्तब्धता को भंग करके राइफल की आवाज गूँज उठती है—फर्ड़-र-र-र !

जंगल-झाड़, काँट-कुस और अड्डा-खाई को टापता हुआ कालीचरन भाग रहा है। जंगल की लत्ती पैर छाद लेती है, मगर वह झाड़ देता है !·· जाँघ में, लगता है, खोंच लग गई है।

· पार्टी आफिस के पिछवाडे में जो घना जंगल है, वहाँ पहुँचकर उसे लगा, वह निरापद है।· अरे ! यह तो खोंच नहीं ! अरे बाप ! इतना खून ! आधा बित्ता माँस उधेड़ दिया है। खलरा लटक गया है। ओ ! गोली लगी है शायद ! खून बद नहीं हो रहा है।

"कौ औऽन ?· काली च र न ?" आफिस सेक्रेटरी राजबल्ली जी किवाड़ खोलकर सचमुच अवाक् हो गए । जीभी की नोक पर बोली चढ़ी ही नहीं।···

"ऐं ? कौन ! कालीचरन ?" सेक्रेटरी साहब भी फड़फड़ाकर कमरे से बाहर आते हैं—"ओ कालीचरन ! तुम हो ? इसीलिए शहर में इतना हल्ला हो रहा है ? जेल से भाग आए हो ?"

"जी ! लगता है, जाँघ में गोली लग गई है· ।"

"तुम्हारे कलेजे पर गोली दागी जानी चाहिए। डकैत ! बदमाश !"

"सिकरेटरी साहेब ! इसीलिए तो । इसीलिए तो आपके पास आए हैं। सुन लीजिए।·माँ कसम, गुरु कसम, देवता किरिया ! जिस रात· उस रात को हम··· यहाँ जिला पाटी आफिस में था।"

"राजबल्ली जी, आपको बघोछ लग गया है ? किवाड़ बंद कीजिए, हटाइए इसे।··· बाबू, मिहरवानी करो, चले जाओ। नहीं तो ।"

"आ आ आ प हल्ला काहे करते हैं ! आ आ प अंदर जाइए।" राजबल्ली जी मौन भंग करते हैं।

1. खुराक।

कालीचरन पत्थर की मूर्ति की तरह खडा है।

मोबरली साहेब की कोठी की ओर धडाधड फायर हो रहे है फर्ड-र्र-र्र !

साथी राजबल्ली जी ! सिकरेटरी साहेब को समझा दीजिएगा। मेरा कोई कसूर नही !

कालीचरन हिलता है। थोडी देर तक खडे रहने के बाद, अब तो चला भी नही जा रहा है। वह दोनो पॉवो को बारी-बारी झाडता है। सामने कच्चू के पत्तो पर कुछ झरझराकर गिरा। वह धीरे-धीरे फिर बगल के जगल मे चला जाता है। अब ? वह पुरानी धोती के एक खूँट को चीरकर घाव को बॉधते हुए सोचता है—अब ?

चलित्तर कर्मकार ने कहा था—"गाडे बिपद मे खबर करना, याद करना !"

चलित्तर कर्मकार।

अठारह

"भाग ! भाग ! मलेटरी, मलेटरी !"

अरे बाप ! लाल पगडीवाला पुलिस नही है, एकदम गोरखा मलेटरी ! सुनते है, गोरा मलेटरी से भी ज्यादा चामवाला होता है गोरखा। मारने लगता तो मारते मारते जान से ही मार देगा। हमनगज हाट पर कटिहारवाले बाबू साहेब की कचेहरी पर सुबह से ही आकर खडी है—दो मोटरगाडी—ठसमठस ! मोहर्रिलजी बोले कि गॉव मे रौन[1] देने आया है। रात म कौन देगा ? गोरखा मलेटरी ?

"अरे, क्या बात है ? कौन झठमूठ खबर लाया ?"

"झूठ नही ! ततमाटोली का बब्भन अभी दोडता हाफता आया है। उसको इमान-धरम सौर माय का किरिया खिलाकर पूछिए, तो !"

"ऐ ! सुनो ! मोटरगाडी की आवाज हुई न ?"

"हॉ पछियारीटोला के पास आ रही है मोटरगाडी।"

" भागे ! एकदम लाल इडहुल रग की मोटरगाडी आ रही है।"

" भागो किधर ? मोटरगाडी तो आ गई !"

भर्र-र्र केक्-केक् भर्र र ! मिलिटरी लारी लीक छोडकर बेलीक ही अड्डा-खाई-आल-गोडा टपते, तहसीलदार साहब के दरवाजे की ओर जाती है।

"कौन ? सुमरितदास बेता ?"

"सिस् ! चुप !" सुमरितदास फिसफिसाकर कहता है, "कलिया जेहल से भाग

1 राउड

गया है। इसीलिए मलेटरी आया है। खबरदार ? सुसलिट पाटी का नाम भी नही लेना। पूछे तो कहना, हम लोग कॉगरेस मे हैं। कालीचरन से कोई रिस्ता मत बताना। समझ ? लाल झडा जिसके घर से निकलेगा तुरत गिरिफ्फ हो जाएगा।"

सुमरित दास बेतार की देह मे इस बुढारी' मे भी कितना तेज है ! पुराना पानी पिया हुआ बुड्ढा है। कलिया तो अपने साथ अपने गर-गरामत, पर-परोसिया और गॉव समाज सबको ले डूबना चाहता है। क्या है, लाल सालू ? खबरदार ! झडा और सालू मे क्या फरक है ! फाहरम परचा सब जलाओ ! सब फॅसेगा !

"खबरदार ! कलिया 'घसकतोबाच' हो गया है। सुसलिट पाटी और कालीचरन का नाम हरगिस नही। लच्छन लगता है समूचे गॉव को 'कुरुक' करेगा।"

"ऐ ! कौन ?' कालीचरन की अधी मॉ हुक्का पीना बद कर पूछती है, 'कौन भाग गया ? सरसतिया, परमसरी, तगबत्ती अरे, कौन भाग गया बेटी ?'

"अरे कौन ? तुम्हारे फुलबोरन बेटा कालीचरन के चलते आज सारा गॉव बन्हा रहा है।"

"भाग ! भाग ! मलेटरी !'

गुरखा सिपाहियो ने कालीचरन के घर को चारो ओर से घेर लिया है। एस पी साहब कालीचरन की बूढी मॉ मे पूछते हैं, "हुँ अधी है या ढग करती है ? सुन बुड्ढी ! तेरा कलिया जेल से भाग आया है। अब रोना गाना छोडकर सीधे सीधे बता कि वह यहा आया है या नही ?"

'मेरा बेटा ! वह डकैत नही दारोगाबाबू ! दुसमन लगा हुआ है उसके पीछे हजूर ! जाने सुरुज भगवान।"

ठीक ठीक बताओ ? उसके साथ और कौन कौन उसके साथी-सगी का नाम बताओ !"

'हजूर हमरा कुछ नै मालूम।"

अच्छा, सब मालूम हो जाएगा। ले चलो बुढिया को !"

कालीचरन की मॉ को जडैया बुखार आ गया। जैसे ही नेपाली सिपाही ने उसकी कलाई पकडी, वह जोर जोर से डिकरने लगी—लोहे से दागने के समय बैल गाय वगैरह जैसे डिकरते है, उसी तरह।

अ य बॉ बॉ बा ऑ !"

माघ की सध्या ठिठुरते हुए गॉव को धीरे धीरे अपने ऑचल मे छिपा रही है। भयार्त पशु की ऑखो की तरह किसी-किसी घर म ढिबरी भुकभुका रही है। घूर के पास आज कौन बैठेगा ! सभी अपने-अपने घर के कोने मे छुपे हुए है। सन्नाटा ! और इस सन्नाटे को चीरकर कालीचरन की मॉ की यह दर्द-भरी पुकार गॉव के कोने कोने मे फैली !

"एह ! अरे बाप ! मालूम होता है बुढिया को कीरिच से जबेह कर रहा है। हे भगवान !"

कालीचरन की मॉ की डिकराहट मे कुछ ऐसी बात थी कि एस. पी. साहब

का दिल पसीज गया। उन्होंने कहा, "छोड़ दो !··· छोड़ दो बुढ़िया को !"

बुढ़िया अचानक चुप हो गई।

गाँव-घर, बगीचा-बाड़ी और अगवारे-पिछवारे में दम साधकर छिपे लोगों ने समझा–बुढ़िया को सचमुच जबेह कर दिया।

"किसकी बोली है, पहले पहचान लो।··· टट्टी में कान लगाकर सुनो।"

"अगमू चौकीदार है।··· सुमरितदास भी है।"

"जै भगमान ! जै भगमान !"

"ऐ भगमान भगत ! भगमान भगत··· दरवाजा खोलो जी !" सुमरितदास खखारते हैं, "अह-ख्-ख् !··· भगमान भगत ! डरने की बात नहीं।··· सिकरेट है, सिकरेट ? मलेटरी साहेब हैं··· पैसा देते हैं।"

पछियारी घर में संदूक के पीछे भगमान भगत दम साधकर घुसके हुए हैं। "आहि रे दादा रे दादा ! ई त हमरे नाम लेके··।" भगताइन फिसफिसाकर कहती है, "अरे जा न !·· कौनो बाघ थोड़ो बा !" भगत डाँटता है–"अरे, चुप !"

"अहूँख् !·· के ? दास जी ?" भगताइन खखारकर अंदर से पूछती है, "का नब हो ?"

"अरे खोलो भगताइन ! भगत जी कहाँ हैं ?"

भगताइन टीन की टट्टी खोलते हुए देखती है. "बाप रे बाप !· ई कौन देस के आदमी बा रे देबा ? हुँड़ार[1] जैसन मुँह बा।··"

"दास जी ! अंदर आके जे लेब से ले जा। बुढ़वा के बुखार बा, हमरो सिर बथता ।"

सुमरितदास टीन की टट्टी को ठेलकर अंदर जाता है, "इस्· ! तुम लोगों को लगता है कि कलेजा है ही नही। झूठ नहीं कहा है, बनियाँ का कलेजा धनियाँ ! 'इसपी' साहेब अभी तुरंत सबो को बुला रहे हैं तहसीलदार साहेब का दरवाजे पर। मिटिन है। इसमें जो नही जाएगा अभी, उसको कालीचरन की पाटी का आदमी समझा जाएगा। लाओ पाँच पाकिट असली कैंचीमार सिकरेट !· कलिया जेहल से भाग गया।"

"हैं-हैं-ख् !·· के ? सुमरित भाई ?" भगमान भगन काँखते हुए आता है, "अरे ! ई बुखार त जान लेके छोड़ी। का बात बा ?"

"बात का बा !" सुमरितदास हाथ चमका-चमकाकर कहते हैं, "··· चीनी पाँच सेर, गरम मसाला आठ आने का, चार पाकिट सिगरेट लेकर अभी तुरत तहसीलदार साहेब बुलाए हैं।··· इसपी साहब मिटिन बुला रहे हैं, सबों को।··· हाँ, सिपाही जी को पाँच पाकिट दिया, उसका भी पैसा लोगे ?"

"अरे ! हम का हुकुम से बाहर बानी !··· चलीं, हम आबतानी।" भगत बात चबाते हुए कान खुजलाता है।

1. भेड़िया।

'गोरखा मलेटरी' कहता है, "ऊँह ! नहीं !··· हम मुफ्त में नहीं लेगा। काहे लेगा ? हम पैसा तीरकर[1] चुरुट लेगा··· काहे लेगा ? हम बायर का मलेटरी नहीं, हम इसी देस का है। मुफ्त में काहे लेगा ?"

तहसीलदार साहब के दरवाजे पर लोग जमा हो रहे हैं। अगमू चौकीदार और अब्दुल्ला बक्सी सबों को हाँकते आ रहे हैं, "डेग बढ़ाओ !·· घसर-फसर काहे करते हो··· लगता है धान की दबनी करने के लिए बैलों को हाँककर लाया जा रहा है !··· बालदेव जी भी हैं, रामकिरपालसिंघ भी हैं। बहुत दिनों से रामकिरपालसिंघ, पर-पंचायत या सभा-मिटिन में नहीं जाते हैं। एकदम गुमसुम रहते हैं।··· पचास बीघा जमीन धनहर, एक लाटबंदी[2], एक ही जमा, और खजाना सिर्फ पाँच रुपए ! ऐसी जमीन जिसकी बिक जाए, या महाजन के यहाँ सूद-रेहन लग जाए तो दिल चकनाचूर होगा नहीं ?· खेलावनसिंघ यादव का कलेजा धकधक कर रहा है–जगह-जमीन, रुपैया-पैसा तो पहले ही मुकदमा में सोहा हो गया, अब एक कोरी भैंस है। तहसीलदार की नजर लगी हुई है।

एस. पी. साहब चाय पीकर खड़े हो जाते हैं। जै भगवान ! दुहाई काली माई !

"प्यारे भाइयो ! मैंने आप लोगों को एक बहुत बड़े काम में मदद के लिए बुलाया है। आप लोग डरिए नहीं। मै बदमाशों के लिए महा-बदमाश हूँ, और सीधे लोगों का सेवक !·· हाँ, हम तो आप लोगों के नौकर हैं।"

"जै हो ! जै हो ! धन्न हैं, धन्न हैं !" लोगों की देह में अब थोड़ी गर्मी आती है।

एस. पी. साहेब कहते हैं, "अभी इस जिले मे एक बडा भारी डकैत उत्पात मचा रहा है। उसका नाम आप लोगों ने जरूर सुना होगा· !"

"जी नहीं।· हम लोग तो कूपमंडूक हैं।"

"देखिए ! झूठ मत बोलिए ! डगरिन से पेट छुपाते हैं ? चलित्तर कर्मकार इस गाँव में कभी नहीं आया है ?"

"हाँ, हाँ, चलित्तर !"

"नहीं, नहीं· नहीं आया है।"

"··· देखिए ! जरा रोशनी और करीब लाइए। देखिए, यही है उसका फोटो।"

"हाँ, ठीक है। यही है। यही है।"

"तब देखिए। आप लोग झूठ काहे कहते थे। जानते हैं, डकैत से बढ़कर होता है डकैत का झँपैत[3], आप लोगों ने झँपैत का काम किया है।"

"नहीं हजूर, माये-बाप ! मालूम नहीं था।"

"··· खैर ! सुन लीजिए। चलित्तर कर्मकार को न तो देश से मतलब है, न गाँव से और न समाज से। उसका पेशा है डकैती करना, लूटना। वह समाज का दुश्मन है, देश का दुश्मन है।· अभी देखिए, हाल में ही कम्यूनिस्ट पार्टीवालो ने

1. पैसा चुराकर। 2. होल्डिंग। 3. छुपाने वाला।

एक पर्चा निकाला है। लिखा है, कामरेड चलित्तर पर से वारंट हटाओ। चलित्तर कर्मकार किसानों और मजदूरों का प्यारा नेता है।··· अब आप ही बताइए कि कोई हत्यारा और डकैत कैसे किसी का प्यारा नेता हो सकता है !··· खैर, मेरा भी नाम बजरंगीसिंह है। मैंने ऐसे-ऐसे बहुत-से हत्यारों को ठीक किया है, फाँसी पर लटकवाया है।··· ऐसा आदमी किसी की भी हत्या कर सकता है।···"

"बाबा !··· गाँधी जी मारे गए !" कमली अंदर हवेली से ही पगली की तरह चिल्लाती है–"गाँधी जी··· !"

"क्या हुआ ?"

"क्या हुआ ?"

तहसीलदार साहब अंदर हवेली की ओर दौड़ते हैं।··· सुमरितदास कहता है, "हुजूर, तहसीलदार साहेब की बेटी का मगज जरा खराब है।"

"अनर्थ हो गया हुजूर !" तहसीलदार साहब दौड़ते हुए आते हैं, "गाँधीजी मारे गए।"

"ऐं ?··· कहाँ ? कैसे ?"

"रेडियो में खबर आई है।"

"कहाँ है रेडियो। अंदर हवेली में ? मेहरबानी करके यहाँ ले आइए।" एस. पी. गिड़गिड़ाते हैं।

"अरे-रे-रे ! बालदेव जी को सँभालो !··· बेहोश हो गए।"

तहसीलदार साहब 'पोर्टेबल रेडियो सेट्' ले आते हैं, "हुजूर, इसके कल-काँटे का भेद हमको मालूम नहीं।··· डाक्टरसाहब का है।"

"इधर लाइए।" एस. पी. साहब जल्दी-जल्दी मीटर ठीक करते हैं।·· चारों ओर एक··· एक मनहूस अँधेरा छाया हुआ है·· हमारी आँखों के आगे अँधेरा है, दिल में अँधेरा है।··· ऐसे मौके पर हम किन लफ्जों में, कै···से, किन शब्दों में आपको ढाढ़स बँधाएँ ! गम के बादल में सारा मुल्क गर्क है।··· एक पागल ने बापू की हत्या कर डाली। जाहिर है, पागल के सिवा कोई ऐसा काम नहीं कर सकता। अब हमें अपने गम और गुस्से को दबाकर सोचना है··· ।"

"नेहरू जी बोल रहे थे सायद !"

नेहरू जी !··· जमाहिरलाल बोल रहे थे ! बीच में एक जगह गला एकदम भर गया था; लगा–रो रहे हैं।

"सुनिए ! अब पटेल साहब, सरदार पटेल बोल रहे हैं।" एस. पी. साहब का चेहरा एकदम काला हो गया है।

बेतार के खबर में क्या बोला ? गाँधी जी का हत्यारा पकड़ा जा चुका है ? ··· अरे ! कैसे नहीं पकड़ावेगा भाई ! हाय रे पापी। साला··· जरूर जंगली देश का आदमी होगा। हत्यारा !··· मराठा ? यह कौन जात है भाई ! मारा ढा ! अरे,

बाभन कभी ऐसा काम नहीं कर सकता, जरूर वह साला चंडाल होगा।

एस. पी. साहब हाथ जोड़कर कहते हैं, "भाइयो ! कहा-सुना माफ करेंगे। आप लोग जैसा समझें करें... लेकिन देखते हैं न ! अरे जिसने एक गरीब बनिया को बाल-बच्चा सहित मार डाला... वही हत्यारा गाँधी, जवाहर, पटेल की सबकी हत्या कर सकता है।... हत्यारा !... हम अभी जाते हैं। आप लोग कल शाम को, नदी के किनारे जल-प्रवाह कीजिएगा।... और खबर सब तो रेडियो में आती ही रहेगी; तहसीलदार साहब हैं, सबो को सुना देंगे ! अच्छा तो चलते हैं। जय हिंद !'

भर्र-र-र-र-र-र !

"रघुपति राघव राजाराम, पतीत पामन सीताराम... !" बालदेव जी आँखें मूँदकर गाना शुरू करते हैं।

आज आखर धरनेवाला भी कोई नहीं–काली, बासुदेव, सुनरा सनिचरा, कोई नहीं। जाड़े से दलक रहे हैं बालदेवजी।... जरा, यहाँ एक धूनी लगा दी जाती, तो अच्छा होता।

"अरे कोठारिन, लछमी दासिन।"

लछमी आई है। साथ में है रामफल पहलवान, लालटेन लेकर !... बालदेव आँखें मूँदकर गा रहे हैं–"इसवर अल्ला तेरो नाम, सबको संपत दो भगमान।"

"जै रघुनंदन जै घनश्याम, जानकीबल्लभ सीताराम।" लछमी दासिन अगला आखर उठाती है।

इस बार भीड़ के आधे लोगों ने साथ दिया।...

"रघुपति राघव राजाराम... !"

बावन ठीक ही कहता था, भारथमाता और भी जार बेजार रो रही है !... बालदेव जी का सारा शरीर सुन्न हो गया है। रास्ते में नाचते-नाचते गिर पड़ते हैं।

"सीताराम... सीताराम... जै रघुनंदन... !'

... 31 जनवरी, 48 की रात ! कमली सोचती है–सारा संसार अभी बस एक ही महा-मानव के लिए रो रहा है।... रेडियो पर गीतापाठ हो रहा है। लगता है, गीता के एक-एक श्लोक की सीढ़ी महात्मा जी को ऊपर उठाए लिए जा रही है–ऊपर–ऊपर–और ऊपर !

अंतवंत इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।।

अँधेरे में एक महाप्रकाश !... आँखें चौंधिया जाती हैं कमली की ! महात्मा जी

खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं–"रोती है क्यों माँ !··· माँ ! रोती क्यों है ?"

"मत रोओ बेटी !" माँ समझाती है, "बेटी रोओ मत !" अचानक डाक्टर की याद आती है–डाक्टर !··· डाक्टर को कौन ढाढ़स बँधाता होगा। मत रोओ डाक्टर ! मत रोओ !

कमली रेडियो की आवाज को और तेज कर देती है :

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णानि नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।
नैनं छिंदंति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः !···

उन्नीस

जोतखी काका के दरवाजे पर भीड़ लग गई है।

··ठीक कहते थे जोतखी काका। अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है। अच्छर-अच्छर सब बात फल गई।···ऐसे अगरजानी आदमी की बात काटने का नतीजा सारा गाँव भोग रहा है।

जंगली जड़ी-बूटी से ही जोतखी काका टनमना गए हैं। खुद उठ नहीं सकते, बोली साफ नहीं हुई है; घिघियाकर, मुँह टेढ़ा करके बोलते हैं, "छयअआँछ ! छयअआँछ !···आँ, आँ !"

अर्थात सर्वनाश ! सर्वनाश ! हाँ, सर्वनाश होगा।

"जोतखी काका, आज हुकुम हुआ है कि सारा दिन बासी-मुँह रहकर साम को कमला के किनारे जलपरवाह करना होगा।" खेलावन यादव अब जोतखी जी की बात कभी नहीं काट सकता। जोतखी जी ने कहा था, अट्ठारह साल की उमेर में सकलदीप को माता-पिता-बियोग लिखा हुआ है।· एकदम फल गई बात। सकलदीप दो महीने तक बिलल्ला की तरह कलकत्ते में भटकता रहा। ससुर पकड लाया है। उसका भी पराच्छित करना होगा।·· होटल में बर्तन माँजता था।

जोतखी जी इशारे से कहते हैं, "नहीं हरगिज नहीं ! ऐसा काम मत करो !"

जोतखी काका ने क्या कहा ? गाँधी जी काहे मारे गए। क्या कहते थे, अच्छा हुआ ! धेत्त् ! उनका मगज अब सही नहीं है।

दूसरे पहर को जुलूस निकला। बाँस की एक रंथी बनकर सजाई गई है–लाल, हरे, पीले, कागजों से। एक ओर बालदेव जी ने कंधा दिया है, दूसरी ओर सुमरितदास, जिबेसर मोची और सकलदीप ने।· खेलावन यादव नहीं आया है। सकलदीप को

बहुत समझाया, गाली दिया—मगर सकलदीप ने तो आकर रंथी में कंधा ही लगा दिया।

टन-टनाँग ! घड़ीघंट बजता है।

तिन्न तिरकिट-तिन्ना ! धिन्ना धा-धा-धिन्ना !

आँ रे ! काँ च हि बाँस के खाट रे खटोलना···

गाँव के भकतिया लोगों ने समदाउन शुरू किया। समदाउन की पहली कडी ने सबके रोएँ को कलपा दिया, सबके दिल गम्हड़ उठे और आँखें छलछला आई।

आँ रे काँचहि बाँस के खाट रे खटोलना
आखैर मूँज के र हे डोर !
हाँ रे मोरी रे ए ए ए हाँ आँ ऑ रामा रामा !
चार समाजी मिली डोलिया उठाओल
लई चलाल जमूना की ओर !
हाँ रे मोरी रे ए··· !

अब कोई अपने को नहीं सँभाल सकता है। सब फफक-फफककर रो पड़ते है। जुलूस आगे का बढ़ रहा है। धीरे-धीरे सभी जुलूस में आकर मिल जाते हैं, रोते हुए चलते हैं। बूढ़े रोते हैं, बच्चे रोते हैं, जवान रो रहे हैं, औरते रो रही हैं। सकलदीप की जवान बहू दहलीज से देखती है। उसके ओठ काँप रहे हैं। रह-रहकर ओठ थरथराते हैं और अंत में वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। वह दौड़ती है जुलूस के पीछे। खेलावनसिंह चिल्लाते हैं, "कनियाँ, कनियाँ !· ऐ कनियाँ !"

हॉ ऑ रे गोड़ तोरा लागों हम भैया रे कहरिवा से
घड़ी भर डोली बिलमाव !
माई जे गेवय···

माँ रो रही है। भारथमाता रो रही है।

रामदास हाथ मे खँजड़ी लिए चुपचाप रो रहा है। उसी के पाप से महात्मा जी मारे गए हैं। उसने साधू के अखाड़े को भरस्ट किया है। परसों रमपियरिया की माये गाँव से मछली का सालन माँगकर लाई थी : रमपियरिया रात मे उठकर चुराकर खा रही थी। महंथ रामदास ने रंगे हाथ पकड़ लिया था··बुआरी मछली की कुट्टा !

रमजूदास की स्त्री छाती पीट-पीट कर रो रही है। ठिठरा चमार की बारह साल की बेटी रो रही है—बाबा हो !· बाबू हो !

बापू !

··कमली रेडियो अगोरकर बैठी हुई है। उसकी आँखों से आँसू टप-टपकर

गिर रहे हैं। माँ आँचल से बेटी के आँसू पोंछती है और खुद रोती है, "वे तो नर-रूप धारन कर आए थे···लीला दिखाकर चले गए।"

रेडियो से आँखों देखा हाल प्रसारित हो रहा है। "अब·· अब चंदन की चिता तैयार है। बस, अब कुछ ही क्षणों में··देखिए, पंडित नेहरू देवदास गाँधी जी से ··· महात्मा जी के सुपुत्र से कुछ कह रहे हैं।·· नरमुंड··· नरमुंड, कहीं भी एक तिल रखने की जगह नहीं··· (कोलाहल की आवाज क्रमशः तेज हो रही है।··· जय··· जय !) अपार जन-समूह में मानो लहरें आ गई हैं; सभी एक बार, अंतिम बार महामानव की पवित्र चिता को अंतिम बार देखना चाहते हैं।··· एंबुलेंस गाड़ियाँ बेहोश लोगों को ढो रही हैं !··· औ··· औ··· आह ! अब··· पश्चिम आकाश में सूर्य अपनी लाली बिखेरकर अस्त हो रहा है और इधर···महामानव की चिता में अग्निशिखा ··· धरती का सूरज अस्त हो रहा है। क्षिति-जल-पावक··· पाँच तत्त्वों का पुतला ··· (गीता-वाणी सुनाई पड़ती है)—जन्मबंधविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यानामयम्··· ।

"माँ, माँ !"

"माँ, माँ···" कमली स्पष्ट सुनती है, कोई पुकार रहा है। कौन पुकारता है उसे माँ !

"क्या हुआ बेटी ?" माँ बाहर से दौड़ी आती है।

"मेरा बच्चा··· मेरा··· मेरा बेटा··· !"

ओं शांति ! शां··· ति··· !

बीस

"सेत्ताराम ! सेत्ताराम !"

"ओ बावनदास जी ! आइए !" लछमी मोढ़ा देती है।

"बालदेव जी कहाँ हैं ?"

"आइए, साहेब बंदगी, जै हिंद !" बालदेव जी आ गए।

"जै हिंद !"

बावनदास को देखकर डर लगता है—एकदम सूखकर काँटा हो गए हैं।··· बाल इतना ज्यादा कैसे पक गया ?··· ओ ! आज टोपी नहीं पहने हैं, इसीलिए। आवाज भी बदल गई है। बालदेव जी कहते हैं "आपको तो अब यहाँ समय ही नहीं है। ··· उस दिन हम अकेले जिस समय से रेडियो में सुने, उसी समय से लेकर दूसरे दिन जलपरवाह तक, सबकुछ किए। किसी तरह सँभाल लिया। सराध के दिन

तहसीलदार साहब भोज देनेवाले हैं; बामन-राजपूत, यादव और हरिजन सभी एक पंगत में बैठकर खाएँगे। अच्छा हुआ, आप भी आ गए। अकेले हम · ।"

"नही बालदेव जी, हम रहेंगे नहीं। हम जरूरी काम से जा रहे हैं।

सोचा, एक बार आप लोगों से भेंट करते चलें। हम तुरत · अभी चले जाएँगे।"

"अच्छा, उधर का हाल-समाचार क्या है, सुनाइए !"

"हाल क्या सुनिएगा ! अब सुनना-सुनाना क्या है ! रामकिसुन आसरम में भी हरिजन-भोजन होगा। ·· बिलेकपी कल मर गया। सिवनाथबाबू आए हैं पटना से। ··· ससांक जी परांती[1] सभापति हो गए हैं, वह भी पटना में ही रहेंगे। सब आदमी अब पटना में रहेंगे। मेले[2] लोग तो हमेशा वहीं रहते हैं। सुराज मिल गया, अब क्या है !· छोटनबाबू का राज है। एक कोरी बेमान, बिलेक मारकेटी के साथ कचेहरी में घूमते रहते हैं। हाकिमों के यहाँ दाँत खिटकाते फिरते हैं। सब चौपट हो गया ·" बावनदास कहते-कहते रुक जाता है।

"छोटनबाबू की बात मत पूछिए। अब तो घर-घराना सहित काँग्रेसी हो गए हैं।"

"नहीं बालदेव, छोटनबाबू-जैसे छोटे लोगों की बात जाने दो। यह बेमारी ऊपर से आई है। यह पटनियाँ रोग है। · अब तो और धूमधाम से फैलेगा। भूमिहार, रजपूत, कैथ, जादव, हरिजन, सब लड़ रहे हैं। अगले चुनाव में तिगुना मेले चुने जाएँगे। किसका आदमी ज्यादे चुना जाए, इसी की लडाई है। यदि रजपूत पाटी के लोग ज्यादा आए तो सबसे बड़ा मंतरी भी राजपूत होगा। · परसों बात हो रही थी आसरम में। छोटनबाबू और अमीनबाबू बतिया रहे थे—गाँधीजी का भसम लेकर ससांक जी आवेंगे। छोटनबाबू बोले, जिला का कोटाभसम जिला सभापति को ही लाना चाहिए। ससांक जी क्यों ला रहे हैं। इसमें बहुत बड़ा रहस[3]। हा-हा-हा-हा !" बावनदास विचित्र हँसी हँसता है। ऐसी हँसी तो कभी नही देखी—बालदेव जी ने भी नहीं।

"काहे ? हँसते काहे हैं दास जी ?"

"हा-हा-हा-हा ! · अरे, वही अमीनबाबू तुरत उठकर बैठ गए; बोले, आप ठीक कहते हैं छोटनबाबू। गाड़ी तो चली गई। कटिहार जाने से गाड़ी मिल सकती है। · तुरंत मोटर इस्टाट करके दोनों रमाना हो गए। सभापति-मंतरी ·· हो राम ! राम मिलाए जोड़ी··· । हा-हा ! चले दोनों··· हा-हा ! भसम लाने· हा-हा ! देस को भसम कर देंगे ये लोग ! भसमासुर !"

"दास जी, मालूम होता है कोई सोर्सालट ने आपको ·"

"सोसलिस ? सोसलिस ? क्या कहेगा सोसलिस हमको ?· सब पाटी समान। उस पाटी में भी जितने बड़े लोग हैं, मंतरी बनने के लिए मार कर रहे हैं। सब मेले-मंतरी होना चाहते हैं बालदेव ! देस का काम, गरीबो का काम, चाहे मजूरों

1. प्रांतीय। 2. एम. एल. ए.। 3. रहस्य।

का काम, जो भी करते हैं, एक ही लोभ से।··· उस पाटी में बस एक जैपरगासबाबू हैं। हा-हा-हा ! उनको भी कोई गोली मार देगा।··· फिर भसम लेने के लिए सभापति-मंतरी साथे-साथ··· !"

नया चूड़ा और नया गुड़ एक थरिया में ले आती है लछमी–"जरा बालभोग कर लीजिए।··· थोड़ा-सा है। दूध-दही तो भोज के लिए जमाया जा रहा है।"

बावनदास बगल की झोली का मुँह फैलाते हैं। लछमी कहती है, "यह क्या ? ·· जलपान कीजिए ! झोली में क्यों लेते हैं ?"

लछमी की आँखें न जाने क्यों सजल हो जाती हैं।··· इतने दिनों के बाद एक वैष्णव आया और बिना पत्तल जुठाए चला जाएगा ? ·· नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगी।

"नहीं। बालभोग तो आपको करना ही होगा", लछमी जिद्द करती है, "दास जी, बिनती करती हूँ··· !"

बालदेव जी देखते हैं, बावनदास को कुछ हो गया है·· बड़ा अटर-पटर बोलते हैं ! चेहरा भी एकदम बदल गया है, आँखें लाल हैं, कपड़ा कितना मैला हो गया है ! वह सोलह-सत्रह साल से बावनदास के साथ हैं, कभी तो ऐसा हँसते नहीं देखा।· अलमुनियाँ का लोटा और बाटी नहीं छोड़ते हैं कभी।

जलपान करके हाथ धोते हुए बावनदासजी कहते हैं, "बालदेव जी, अब हम चलेंगे। पुवरिया-लैन की गाड़ी कोदलिया टीसन में जाकर पकड़ेंगे। आपसे एक काम है।"

बावनदास झोली से लाल रंग का एक बस्ता निकालते हैं। बस्ता खोलकर कागज का छोटा-सा पुलिंदा निकालते हैं। "बालदेव जी !·· सब महतमा जी के खत हैं। गंगुली जी ने एक बार कहा था–जरूरत पड़ने पर हमें दीजिएगा आने के समय याद ही नहीं रहा। आप पुरैनियाँ कब तक जाइएगा ? चार-पाँच दिन के बाद ? तब ठीक है, आप रख लीजिए। गंगुली जी को दे दीजिएगा जरूर !"

परम श्रद्धा-भक्ति से सहेजी हुई पवित्र चिट्ठियों को बावनदास एकटक देख रहा है। फिर एक-एक कर अलग-अलग छाँटता है। हवा से एक चिट्ठी उड़कर बिछावन के नीचे चली गई, बावनदास ने चट से उठकर सर से छुला लिया। उसे एक अक्षर का भी बोध नहीं, लेकिन वह प्रत्येक चिट्ठी के एक-एक शब्द पर निगाह डालता है; लगता है, सचमुच पढ़ रहा हो।· आखिरी चिट्ठी खत्म कर वह एक लंबी साँस लेता है।

बस्ता हाथ में लेकर बावनदास थोड़ी देर तक बेकार ही उसकी डोरी को उँगलियों मे लपेटता और खोलता है। फिर एक लंबी साँस लेकर अचानक ही खड़ा हो जाता है, "लीजिए· सेत्ताराम-सेत्ताराम !"

बालदेव जी बस्ता लेकर लछमी के हाथ में दे देते हैं, "पौती-पिटारी में रख दीजिए !"

लक्ष्मी बस्ता लेकर सर से छुलाती है, फिर छाती से लगाती है। वह एकटक बावनदास को देख रहा है।·· इस चिरकुट खद्धड़ की दोलाई से जाड़ा कैसे काटते हैं बावनदास जी ?

"दास जी ! इस चादर से जाड़ा कैसे काटते हैं ? ठहरिए, एक पुराना कंबल है। ले लीजिए।" लछमी विनती के सुर में ही कहती है।

"नही माई !" बावनदास कंधे से झोली को लटकाते हुए कहता है, "नहीं माई, कंबल की जरूरत नहीं।"

लछमी चुप हो जाती है।·· बावनदास जी को अब कंबल की जरूरत नहीं। अब उन्हें किसी चीज की जरूरत नहीं। लछमी मानो सबकुछ समझ जाती है।

धरती फाटे मेघ जल
कपड़ा फाटे डोर।
तन फाटे की औखदी
मन फाटे नहीं ठौर !

"अच्छा तो अब जै हिंद !"

"जै हिंद !"

बावदास लुढ़कता हुआ जा रहा है। सोबरन का कटहा कुत्ता खिट-खिटाकर भूँकते हुए उस पर टूटता है। लेकिन, बावनदास उधर देखता तक नही है। कुत्ता भी आश्चर्य से चुप हो जाता है। जरा-सा धेत्त-धेत्त भी नहीं किया ? कैसा आदमी है ! कुत्ता बावनदास के पीछे-पीछे दुम हिलाते, मिट्टी सूँघते कुछ देर तक जाता है।

"बावनदास जी का मन एकदम फट गया है।" लछमी कहती है।

बालदेव जी कहते हैं, "अरे मन फटेगा क्या ! थोड़ा ढंग भी करता है। गंगुली जी चिट्ठी लेकर क्या करेंगे ?· दूसरे की चिट्ठी भले लोग नहीं पढ़ते हैं, दोख होता है।"

कोदलिया टीसन पर गाड़ी में बैठकर बावनदास को लगता है, वह कोई तीरथ करने जा रहा है। बहुत दिनों से उसके मन में लालसा है–एक बार जगरनाथ जी जाने की ! केदारनाथ, बदरिकानाथ वह गया है। उसकी आँखो के आगे जगरनाथ का पट–छाता और छड़ी–लिए तीर्थ से लौटे हुए बावनदास की मूर्ति आ खड़ी होती है।

जगरनथिया रौ भाय,
बाबा रौ विराजे उड़िया देस में।

एक यात्री ने कहा, 'अरे, माघ महीना मे कौन जगरनाथ से लौटा है भाई !"

दूसरे ने कहा जरा जोर से, "बावन गुसाईं जी !"

बावनदस खिड़की से बाहर की ओर देखता है। खेतों में लोग धान काट रहे

है। नदी मे मछली मार रहे है, भैंस चरा रहे है। बावन ने बहुत सफर किया है, लैन से—कलकत्ता कॉगरेस, लखनौ कॉगरेस, बैजवाडा, साबरमती आसरम, महात्मा गॉधी की जन्मभूमि काठियावाड, फिर बबै। रेलवे लैन के किनारे काम करते हुए लोगो के मुखडे, विभिन्न प्रदेश के लोगो के मुखडे, उसकी ऑखो के आगे इकट्ठे हो जाते है। खगडा टीसन पर उतरकर एक बार नन्थूबाबू के यहॉ जाने का विचार था, लेकिन नन्थूबाबू कलकत्ता गए है। खोखी दीदी और काकी जी भी गई हैं। खोखी दीदी ने एक बार बावनदास की तस्वीर बनाई थी। बोली, बस आप जैसे बैठे है, बैठे रहिए। एक कागज पर पेमिल से तस्वीर बनाने लगी।

काकी जी ठीक माये जी की तरह बोलती है। नाथबाबू रहते तो बावन को आज बहुत भारी मदद मिलती। बहुत कडे आदमी है। गेस्सा मे जब होत है तो किसी को कुछ नही बूझत है। कफ जेहल के साहेब की जिनगी भर याद रहेगा।

नाथबाबू का चेहरा लाल हो गया था उस दिन, एकदम लाल टेसु। पिछले साल नाथबाबू और चौधरी जी बबे जा रहे थे। बावन भी साथ मे था। मोगलसराय टीसन पर गाडी मे भीड देखकर होस गुम! इस छोर मे उस छोर तक घूम आए, मगर कही घुमने ही नही दिया। चौधरी जी हॅमते हुए बोले, "एहो गाडी छूटतः लच्छन लगैछेहो!" नाथबाबू ने एक डिब्बा के हैंडिल को जैसे ही पकडा कि अदर से एक आदमी ने गुस्मा होकर कहा, "देखता है नही, इम पर लिखा हुआ—बगाल के मेबर के वास्ते रिजप है।"

नाथबाबू ने भी गुमाकर जवाब दिया था—"खूब देखता है। बगाल मे अब आप लोगो के जैसा आदमी फलने लगा है, यह भी देखता है। हाम भी ए आई सी मी का मेबर है, आप भी उसी का मबर है, मगर आदमियत ।"

भीतर मे किसी ने रसिकता की थी, "आदमियत[1] तूने आर कोथा बालबेन ना मोशाय। आसून, आपनार तो देखची ऐकेबारे त्रिमूर्ति "

बात भी कुछ ऐमी ही हो गई कि सभी हॅम पडे—चौधरी जी भी, नाथबाबू भी ओर डिब्बे के सभी मबर। हॅमनेवाली बात नही है? चोधरी जी एकदम लबा, याने चौधरी जी की लबाई की बात तो सभी जानते ही है। पूरा उॅचे कद का आदमी भी उनके कधे क बराबर आता है। और, इधर नाथबाबू ठेठ-नाटे कद के! गोल चेहरा, चेहरे पर हरदम मुस्कराहट, वह भी छोटी सी! और तीसरा मूर्ति- सेवक बावनदास! विचार कर देखिए—हॅसने की बात है या नही! चौधरी जी ने ऊपर बेच पर अपना बिस्तर लबा किया था, नाथबाबू ओर बावनदाम नीचे।

"ए? खगडा आ गया? मनाराम! सेत्ताराम!"

खगडा स्टेशन पर उतरकर, बावनदास एक बार ऊपर आसमान की ओर देखता है। वह शाम तक पहुॅच जाएगा। नही, नाथबाबू से नही भेट होगी तो अब किमस भेट करने जाए वह!

1 कृपया आदमियत का प्रश्न मत उठाइए। आइए, हमे तो एक साथ ही त्रिमूर्ति के दर्शन का सौभाग्य मिल रहा है।

कलीमुद्दीपुर की ओर जा रहा है बावन ! कलीमुद्दीपुर पाकिस्तान मे जाते-जाते बच गया है। एक बार हल्ला हुआ कि पाकिस्तानवाले कहते थे कि गॉव का नाम इस्लामी है, इसलिए इसको ! क्या बच्चो-जैसी बुद्धि !

सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! बावनदास जल्दी-जल्दी डेग बढाता है, आज जैसे हो, शाम तक उसे पहुँचना ही है एक जगह । उस जगह का नाम भी अभी वह अपने मन मे नही लाएगा।

चलते-चलते वह कभी-कभी रुककर उसासे लेता है—बहुत देर तक रोने पर बच्चे जिस तरह उसॉसे लेते है, उसी तरह ! बावन की झोली म खॅजडी है। खॅजडी मे लगी हुई झुनकी उसकी गति को एक लय मे बॉध रही है—किन्न, किन्न, किन्न, किन्न ! खेतो की मेडो पर, मैदान मे, सडको पर, ऊँची नीची जमीन पर उसके चरण पडते हैं। मजिल करीब है अब। किन्न किन्न, किन्न, किन्न ! और थोडी दूर और आधा कोस ! किन्न, किन्न !

"जै महतमा जी ! जै बापू ! मॉ ! मॉ धन्न हो प्रभू ! एक परीक्षा से तो पार करा दिया प्रभू ! बस यही इसी सॉहुड के नीचे ! इसी कच्ची लीक के पास डाल दो डेरा रे मन !

नागर नदी के किनारे ! नागर को एक बहुत बडा गवाह बनाया है, दोनो देसवालो ने। नागर नदी ही सीमा-रेखा है। एक किनारा हिंदुस्तान, दूसरा किनारा पाकिस्तान ! इस पार हिंदुस्तान, दूसरी ओर पाकिस्तान। नागर बारहो मास बहती है, सूखती नही कभी। शायद इसीलिए !" रामडडी माथा पर आ गया।

माघ की ठिठुरती हुई सर्दी ! पछिया हवा भी चलती है। लगता है, आज की रात बदरीनाथ की तरह यहॉ भी बरफ गिरेगी। रामडडी सिर पर आ गया ! बावन निराश नही होता है। जब तक सूरज नही उगेगा, वह टलेगा नही। बात ही कुछ ऐसी है। यदि इस रास्ते म नही आई गाडी तो ! वह दूर, बहुत दूर किसी गॉव की रोशनी को देखता है। दोनो हाथो को मलकर गर्म हो लेता है।

हॉ, गाडियॉ आएँगी। पचासो गाडिया ! कपडे और चीनी और सीमट से लदी हुई गाडियॉ जिसने खबर दी है उसे—उसका नाम वह जान जाने पर भी नही खोलेगा। बावन ने गॉधी जी की कसम खाई है। बेचारा गरीब उसकी नौकरी चली जाएगी। कटहा के दुलारचद कापरा, वही जूआ कपनीवाला, जिसकी जूए की दुकान पर नेवीलाल, भोलाबाबू और बावन ने फारबिसगज मेला म पिकेटिंग किया था। जूआ भी नही, एकदम पाकिटकाट खेला करता था और मोरगिया लडकियो, मोरगिया दारू गॉजा का कारबार करता था। आज कटहा थाना कॉग्रेस का सिकरेटरी है। उसी की गाडियॉ हैं। सपलाई निसपिट्टर और कटहा थाना के दारोगा और यहॉ कलीमुद्दीपुर के नाकावाले हवलदार मिलाकर रकम आठ आना और इधर दुलारचद कापरा रकम आठ आना। गाडियॉ सदर चालू सडक से नही आएँगी। चोरपैडा[1]

1 चोर रास्ता।

होकर चोरघाट होकर पार करेंगी। फिर उधर के व्यापारी को उस पार पहुँचा देगा। उधर के हाकिम-हुक्कामों को भी इसी तरह हिस्सा मिलेगा। लाखों रुपया का कारबार है।·· वे आ गईं हाँ, गाड़ियाँ··· कच्ची लीक में पहियों की आवाज ! ··· हाँ गाड़ी ही है।

"जै भगवान ! जै महतमा जी ! सेत्ताराम ! सेत्ताराम !··· बल दो प्रभू ! परीक्षा में पार करो गुरु ! बापू ! बापू !··· माँ, माँ, ? झोली के अंदर वह कुछ टटोलता है।

वह झोली को कंधे से लटकाकर खड़ा हो जाता है।·· नदी किनारे कोई पखेरू बोला, टिंटिक्।··· किन्न ! खँजड़ी की झुनकी जरा झनकी ।

"भगवान ! महतमा जी !··· बापू ! माँ ! मुझे बुला लो अपने पास ! क्या करूँगा इस दुनिया में रहकर !·· धरम नहीं बचेगा।"

गाड़ियाँ आ गईं, एकदम करीब ।

"अरे बा-आ-आ-प रे-भू-ऊ-त।" अगला गाड़ीवान डरा और दबी आवाज में अपने साथी से कहता है, "भूत !"

"छिऊँ·"बैल भड़कते हैं। कचकचाकर गाड़ियाँ रुक जाती हैं।

"सेत्ताराम ! सेत्ताराम !"

कलीमुद्दींपुर नाका के सिपाही जी आगे बढ़ आते हैं, खखारकर पूछते हैं, "कौन है ?"

बगल की झाड़ी से सामने आकर बावन ने कहा, "हम हैं। सेवक बावनदास !"

"बा व न दा स !" सिपाही जी का मुँह खुला-का-खुला रह जाता है। इस आदमी को वह सन् तीस से ही जानता है। चान टरे, सूरुज टरे·· !

सिपाही जी मुरेठा की पूछरी से मुँह छिपाते हैं। बावनदास हँसकर कहता है, "मुह क्यों छिपाते हैं रामबुझावनसिंह जी ! आज खुलकर खेला होना चाहिए ! मुँह मत छिपाइए।"

"दास जी, हमारा क्या कसूर ! आप तो जानते ही है "

"सिंघ जी, बातचीत कुछ नहीं। गाड़ियाँ जाएँगी खगड़ा ! लौटाइए।"

गाडी त ना लौटी।"

"लौटी ना त ठाढ़ रही।"

अढ़ाई हजार रुपए हिस्से में मिल चुके हैं रामबुझावनसिंह को। क्या किया जाए ?

"दास जी टहरिए !··· हम तुरत आते हैं।"

"अच्छी बात। ले आइए आज जो लोग पर्दे में हैं। जाइए !"

कलीमुद्दींपुर में एक होटिल-बँगला[1] है।· हाकिम-हुक्काम लोग बराबर आते रहते हैं। बाँस-फूल का बड़ा-सा चौखड़ा है, गाँव के एकदम बाहर।

होटिल-बँगला में सप्लाई इंस्पेक्टर, दुलारचंद कापरा और कलीमुद्दींनपुर के

1. हाल्टिंग बँगला।

हवलदार साहब टेबल के चारों ओर बैठकर मोरंगिया माल पी रहे हैं। कलीमुद्दीनपुर होटिल-बँगला के वेरसपतिया बावर्ची के हाथ का मुर्ग-मुसल्लम जिसने खाया, उसी ने जी खोलकर बक्कीस दिया।

सप्लाई इंस्पेक्टर साहब गिलास में चुस्की लगाते हुए मुस्कराते हैं, "अरे धत्त ! इस मुर्ग-मुसल्लम से गर्मी थोड़ी आएगी ! हवलदार साहब ! अरे, कोई दो टाँगवाली मुर्गी ।"

"क्या पूछते हैं, आज महतमा जी के सराध की वजह से सभी भोज खाने चली गई हैं।"

दुलारचंद कापरा कहता है, "ऊँह ! ऐसा जानता तो कटहा से ही दो रेप्यूजिनी को उठा लाते। मब मजा किरकिरा कर दिया।"

कड़कड़–कडक् ! सप्लाई इसपेक्टर चतुरानदसिंह जी मुर्गी की टाँग चबाते है।

कडक्ड़ कडक् ! बाहर साइकिल की आवाज होती है।

"कौन ?"

"सलाम ! हम रामबुझावनसिंह।"

"क्या हाल है ?"

"सब चौपट ! बावनदास "

"आँ यें ! बावनदास ? कहाँ ?"

सभी गुम हो गए। बेरसपतिया बावर्ची इशारे से कहता है हवलदार साहब को, "मिल सकती है मुर्गी , मगर " रुककर दोनो हाथो की उँगलियाँ दिखलाता है।

हवलदार साहब कहते है, "अच्छा सभी ठहरो, तुम बाहर जाओ।"

"क्या हो अब ?" सभी एक साथ लंबी साँस लेते है।

"अकेला है या ?"

"एकदम अकला !"

"मगर इसका मतलब जानते है ?"

"दुलारचद कापरा जी !"

सबकी निगाहे मिलती हैं आपस मे। दुलारचद गिलास मे बोतल से शराब ढालकर गटगटाकर पी जाता है। सभी उसकी ओर आशा-भरी दृष्टि से देखते है–"मै पजाबी हूँ जी ! मगर आगे आप लोग जानो। मैं अपना फर्ज अदा करने जाता हूँ।"

सिटसिट कर पछिया हवा चल रही है। हवलदार साहब साइकिल का पैडल चलाते हुए कहते है, "कापरा जी, आसपास के गाँववालो का डर जरा भी मत कीजिए। ऐलान किया हुआ है कि सरहद के आस-पास रात-बरात जो निकलेगा, उसे गोली लग जा सकती है।"

बावनदास ठीक पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है–बीच लीक पर।

दुलारचंद कापरा देखता है–हाँ, बावन ही है।

"कौन ?··· कापरा जी ! गाड़ी के पीछे से क्या झाँकते हैं ? सामने आइए !" बावनदास हँसता है।

"बावन··· रास्ता छोड़ दो। गाड़ी पास होने दो।"

"आइए सामने। पास कराइए गाड़ी। आप भी काँगरेस के मेंबर हैं और हम भी। खाता खुला हुआ है; अपना-अपना हिसाब-किताब लिखाइए।··· आज के इस पवित्तर दिन को हम कलंक नहीं लगने देंगे।"

कापरा जानता है, इससे माथा-पच्ची करना बेकार है। वह हवलदार के कान में कुछ कहता है। फिर पुकारता है, "इसपिरिंग खाँ ! कहाँ··· "

यह इसपिरिंग खाँ कापरा का अपना आदमी है। नाम फर्जी है।··· एक गाड़ी पर से उतरता है, फिर चुपचाप अगली गाड़ी पर जाकर बैठ जाता है।

"बावनदास··· मान जाओ।"

"... "

"हाँको जी गाड़ी इसपिरिंग खाँ !"

गाड़ी में जुते हुए दोनों जानवर अचरज से चौंक पड़ते हैं। भड़कते हैं। छिऊँ, छिऊँ ! नाक से आवाज करके आगे बढ़ने से इन्कार करते हैं। कापरा एक बैल की पूँछ पकड़कर ऐंठता है। हड्डी पट् से बोली, मगर बैलों ने लीक छोड़ दिया और गाड़ी को बगल की ओर लेकर भागे।

दूसरी गाड़ी ! एक बैल को हवलदार और दूसरे को कापरा, पूँछ मरोड़कर आगे बढ़ाते हैं। गाड़ीवान अवाक् होकर हाथ में रास थामे हुए है।··· यह क्या हो रहा है ?

बैलगाड़ी पास हो गई।·· पास हो रही है। बावनदास बीच लीक पर खड़ा है और गाड़ियाँ ऊपर से आर-पार कर रही हैं। बैल भड़के जरूर, मगर···।

तीन-चार ! चार गाड़ियाँ ?

अब बावनदास ठीक बैल के सामने आकर खड़ा होता है। बैल उसे हुँत्था मारकर गिरा देता है। वह लीक पर लुढ़क जाता है।· ठीक पहिए के नीचे।

मड़-मड़-मड़ !

··· बापू ! माँ··· !

गाड़ी पास ! कट-कर्रर-कट !

गाड़ियाँ पास हो रही हैं। पचास गाड़ियाँ !

आखिरी गाड़ी जब गुजर गई तो हवलदार और रामबुझावनसिंह मिलकर, बावन की चित्थी-चित्थी लाश, लहू के कीचड़ में लथ-पथ लाश को उठाकर चलते हैं। ··· नागर नदी के उस पार पाकिस्तान में फेंकना होगा। इधर नहीं··· हरगिस नहीं।

दुलारचंद कापरा बावन की झोली लेकर उनके पीछे-पीछे जाता है।

नागर पार करते समय बावन के गले की तुलसी-माला नागर की बहती हुई धारा में गिर पड़ती है—सेत्ताराम !

चार बजे भोर को पाकिस्तान पुलिस ने घाट-गश्त लगाने के समय देखा—लाश !

"अरे यह तो उस पार के बौने की है। यहाँ कैसे आई ? ओ, समझ गए। ··· उठाओ जी, हनीफ और जुम्मन, ले चलो उस पार !"

बावन की ठंडी लाश झोली-झंडा के साथ फिर उठी।

बावन ने दो आजाद देशों की, हिंदुस्तान और पाकिस्तान की–ईमानदारी को, इंसानियत को, बस दो डेग में ही नाप लिया !

नागर नदी के बीच में पहुँचकर पाकिस्तान के पुलिस अफसरसाहब ने कहा–"नदी में ही डाल दो। इसकी झोलवी को उस पार दरख्त से लटका दो। जल्दी।"

नागर की धारा हठात् कलकला उठी। सिपाही खँजडी को पानी में फेंकते हुए कहता है–"डमरू बजाके रघुपति राघव गाते रहो !"

झनक !

इक्कीस

मेरीगज गाँव क एकमात्र मालिक, एकछत्र जमींदार, तहसीलदारबाबू विश्वनाथ मल्लिक का खम्हार देख लो ! जिस बडे चौताल पर एक पंक्ति में बैठकर, गाँधीजी के सराध के दिन लोगो ने सरबघटन भोज खाया, उसी को घेरकर खलिहान बनाया है तहसीलदार साहब ने। दस बीघे का घेराव है।

रामकिरपालसिंघ अपनी बची-खुची जमीन, फसल-सहित, तहसीलदार के यहाँ सूद-रेहन रखकर तीरथ करने जा रहे हैं–काशी, केदार जी, जहाँ तक जा सकें। तहसीलदार साहब ने कहा है, "बा५ ; रुपया जहाँ से लिखिएगा, मनीआर्डर से भेजते रहेगे।"

बाकी खजाना, घर-खर्चा, जाड़े का :पडा, सकलदीप के प्राच्छित और सतनारायण-पूजा के लिए खेलावन दो सौ रुपया माँगने लगा। तहसीलदार साहब ने साफ जवाब दे दिया–"हाथ में एक पैसा नहीं है।" घर के पिछवाड़े की जमीन, जिसमे धान करीब-करीब तैयार हो गया था, लिख दी तो तीन सौ रुपए दिए।

सब मिलाकर पाँच हजार मन से क्या कम होगा धान इस बार !

तंत्रिमा-छत्रीटोली, कुर्म-छत्रीटोली, कुसवाहा-छत्रीटोली, धनुषधारी-छत्रीटोली और गहलोत छत्रीटोली के जन मजदूरों की हाँड़ी माघ महीने में ही टँग गई है। खम्हार में जितना धान हिस्सा होगा, उससे चौगुना तो कर्जा है। सब काट लिया जाएगा·· और इस बार तो लगता है गाँव में गुजर नहीं चलेगा। खेलावन यादव

पाँच हल चलाते थे, इस साल एक ही हल चलावेंगे, एक हल अधहरी[1] पर चलेगा। रामकिरपालसिंघ ने तो खेती-बारी उठा ही दी। बुढ़िया को लेकर तीरथ चले गए। शिवशक्करसिंघ दो हल चलावेंगे।—तहसीलदार साहब इस बार टक्टर[2] खरीद रहे हैं। बेतार कहता था, "उसी में सबकुछ होगा—हल, चौंगी, विधा, कोड़कमान, कादी-गोरा और धनकटनी भी ! आदमी की क्या जरूरत ? पानी का पंपू आवेगा। इंदर भगवान् की खुशामद की जरूरत नहीं। कमला नदी में पंपू लगा दिया, मिसिन इसटाट कर दिया, और हथिया सूँड[3] की तरह सब पानी सोखकर खेत पटा देगा।" ··· जब इंदर भगवान को ही नून-नेबू चटा रहे हैं तहसीलदार साहेब, तो आदमी उनके हुजूर में क्या है ? कटिहार में एक जूट मिल और खुला है। तीन जूट मिल ?··· चलो, चलो, दो रुपैया रोज मजदूरी मिलती है। गाँव में अब क्या रखा है !

एक महतमा जी का भरोसा था, उनको भी मार दिया।··· बालदेव से पूछो न, महतमा जी की जगह पर अब कौन आवेंगे ! जमाहिरलाल ? मगर महतमा जी तो एक ही कोपिन पहनते थे।···

विरंची कहता है, जहाँ सभी जात भाई का, बारहो बरन का, ऊँच-नीच का पत्ता जूठा हुआ है, उस खम्हार में बरक्कत तो उधियाकर होगा।··· तहसीलदार साहेब आज कह रहे थे, इस बार सभी को अपने हिस्से में से औकाद मुताबिक धान देना होगा—एक कट्ठा, आध कट्ठा, एक सेर, आध सेर !··· महतमा जी का चन्ना हो रहा है।"

"महतमा जी का चन्ना ? क्या होगा चन्ना ? सराध तो हो गया !"

"नहीं !··· रहुआ के गुरुबंसीबाबू ने डिल्ली में आकर एक करोड़ या··· एक लाख··· पता नहीं एक हजार··· याद नहीं, मगर एक मोट रुपैया गुरुबंसीबाबू ने जमाहिरलाल को जाकर दिया है।··· महतमा जी का चन्ना ! सुनते हैं, और भी देंगे।"

"ऐं ! कौन हल्ला करता है उधर ?"

"अरे कौन, रमपियरिया है।"

रमपियरिया और रमपियरिया की माँ के गले की आवाज सुनी जाती है। ···मठ पर झगड़ा हो रहा है। आज लगता है, मारपीट ज्यादा हुई है।

"रामदास गुसाईं आजकल दिन-भर गाँजा पीता है। एक-न-एक दिन वह भी खून करेगा।"

"साला, इन्हीं लोगों के पाप से धरती दलमला रही है।··· भरस्ट कर दिया। अब वह मठ है ! लालबाग मेला का मीनाबाजार हो गया है। दस-दस कोस का लुच्चा-लफंगा सब आकर जमा होता है।"

1. आधा हल। 2. ट्रेक्टर। 3. इंद्रधनुष।

तहसीलदार साहब आजकल रात में ऊपर के कोठे पर सुमरितदास के साथ कागज-पत्तर ठीक करते रहते हैं। किसी-किसी दिन सुमरितदास सीढ़ी पर लड़खड़ाकर गिर जाता है।·· संथालों के घर में चुलाया हुआ महुआ का दारू बड़ा तेज होता है। गगाई माँझी रोज आधा कंटर दे जाता है। कभी-कभी तहसीलदार साहब भी नीचे उतरकर खूब हल्ला करते हैं; कमली की माँ को, कमली को, सेबिया बूढ़ी, सबको गोली से उड़ा देने की धमकी देते हैं।

· एक रात को तो इतना मात गए तहसीलदार साहब कि कमली की माँ डर से छाती पीटने लगी थी। ऐसी खराब-खराब गाली तो जिंदगी में कभी एक बार भी उनके मुँह से नहीं सुनी गई, कमली की बद किवाड़ के सामने आकर जोर-जोर से बकने लगे। कमली दरवाजा खोलकर बाहर आई और बोली, "बाबा ! मुझे जो सजा देनी हो दो। मगर माँ को गाली मत दो। उनका क्या कुसूर ?"

कमली को देखते ही तहसीलदार साहब का नशा उतर गया, वे ऊपर भागे।

उस दिन से माँ कमली को एक मिनट भी अकेली नहीं छोड़ती है। बिलार को देखकर बच्चेवाली बिल्ली की सतर्क आँखें कैसी तेज हो जाती हैं। कमली की माँ को डर है, तहसीलदार साहब किसी दिन कोई कांड करेंगे। एक सप्ताह पहले शराब में एक दवा मिलाकर दिया उन्होंने–"कमली को पिला दो। एकदम खलास हो जाएगी। बड़ी मुश्किल से जोगाड़ किया है।"

उन पर कैसे विश्वास किया जाए ! न जाने कब क्या कर दे।

गाँव के घर-घर मे 'हे भगवान' की पुकार मची हुई है। सुबह से शाम तक रात-भर धान-दबनी कर जो मजदूरी मिलती है, खलिहान पर रही बाकी मोजर हो जाता है। नाब-धोबी और मोची का खन भी नही जुड़ेगा इस बार।·· मिल का भोंपा बजता है रोज, सुनते नहीं ? बुला रहा है–'आओ-ओ-ओ-हो-हो-हो-हो !"

रात के सन्नाटे में जोतखी काका की खाँसी बड़ी डरावनी सुनाई पड़ती है–खाँयें-खाँये। दिन मे ठीक दोपहर को अमड़ा गाछ पर बैठकर कागा जिस तरह बोलता है, ठीक उसी तरह खाँएँ-खाएँ !

खाएगा ! सबको खा जाएगा। पिंगलवर्णा देवी क्रमशः बढ़ी आ रही है। उसके हजारों गण दाँत निकाले हैं, जीभ लपलपा रही है। खाएगा खाएगा !

भयार्त शिशु की तरह सारा गाँव कुहरे मे दुबका हुआ थर-थर काँप रहा है !

"खबरदार–हो-य-य-य-य–खबरदार !"

तहसीलदार साहब ने खलिहान जोगाने के लिए तीन संथालों को और ड्योढ़ी के पहरा के लिए पहड़िया सिपाहियो को बहाल किया है। एक नाल बदूक का लैसन फिर मिला है। चलित्तर कर्मकार जब तक पकड़ाता नहीं है, पैसेवालों को रात में नींद नहीं आएगी। पहरेवालों की बोली भी डरावनी मालूम होती है। आजकल कोठी के जंगल में शाम को ही एक रोशनी जलती है–बहुत तेज; फिर रात में और फिर भोर को।

बालदेव जी जगे हुए हैं। शाम को पुरैनियाँ से लौटे हैं·· उनको नींद नहीं आ रही है। पुरैनियाँ जाने के समय लछमी ने बावनदास का बस्ता, गाँधी जी की चिट्ठियोंवाला बस्ता देते हुए कहा था, लघुसंका करने के समय पॉकिट से निकाल-कर··· । गांगुली जी से वह भेंट करने गया था। गाँगुली जी ने पूछा था, "बावनदास ने कुछ दिया है आपको ?"

"जी, ऊँहूँ··· नहीं !" बालदेव जी इस जाड़े के मौसम में भी पसीना-पसीना हो गए थे।

न जाने क्यों गांगुली जी अचानक उदास हो गए।

··· बालदेव अब जान रहते इन चिट्ठियों को नहीं दे सकता। इन चिट्ठियों को देखते ही जमाहिरलाल नेहरू जी बावनदास को मेनिस्टर बना देंगे, नहीं तो डिल्ली जरूर बुला लेंगे।··· यों भी आज तक जितने लीडर आए, सबों ने बावनदास से ही हँसकर बातें कीं।

··· उस बार मेनिस्टर साहेब आए। बड़े-बड़े लीडरों, मारवाड़ियों ने, वकीलों, मुक्तियारों और जमींदारों ने दसखत करके दरखास दिया, "भगवतीबाबू सरकारी वकील को काँग्रेस का मेंबर बहाल कर लिया जाए।" मगर मेनिस्टर साहब ने बावनदास से पूछा, "क्यों बावनदास जी ?" भगवतीबाबू बहाल नहीं हुए। आखिर बावन की ही बात रही।·· भगवतीबाबू ने बियालीस में सुराजिया को फाँसी पर झुलाने के लिए खूब बहस किया था।

और ये चिट्ठियाँ !··· नहीं, वह हरगिस नहीं देगा।··· लछमी को न जाने क्या हो गया है ! जिस दिन से बस्ता मिला, दोनों बखत सतसंग के समय सिर छुलाकर सामने रखती थी।··· रोज चंदन और फूल चढ़ाती थी इस पर। कभी-कभी चिट्ठियों को खोलकर पढ़ती और रोती। पुरैनियाँ से लौटने पर कुशल-मंगल पूछना तो दूर, पूछ बैठी, "गांगुली जी को दे दिया न ?"

"हाँ-हाँ दे दिया। इतना ना-परतीत था तो मेरे हाथ में दिया ही क्यों था ?"

बालदेव जी को नींद नहीं आ रही है। बैलगाड़ी पर पुआल के नीचे बस्ता छिपाकर रख दिया है। धूनी तो धू-धू कर जल रही है।··

बालदेव जी उठकर बाहर जाते हैं।

"होये !··· खबरदार !" पहरू चिल्लाता है।

बालदेव जी धूनी के पास बैठकर लकड़ियों को जरा इधर-उधर करते हैं, फिर कनखी से लछमी के बिछावन की ओर देखते हैं। धीरे से बस्ता निकालकर खोलते हैं। उनका सारा देह सिहर रहा है, जीभ सूखकर काठ हो गई है, मुँह में थूक नहीं है।··· धूनी की आग लहलहा उठी है, लकड़ियाँ चिट्-चिट् बोलती हैं।··· बालदेव ने एक चिट्ठी निकाली···।

"दुहाई गाँधीबाबा ! बाब रे··· !" लछमी बिछावन पर से ही झपटती है–"गुसाईं साहेब ! छिः छिः यह क्या कर रहे हैं !···सतगुरु हो, छिमा करो ! बालदेव !··· पापी, ··· हत्यारा !"

धूनी की आग लछमी के कपड़े में लग जाती है। "लगने दो आग ! मुट्ठी खोलिए ! बस्ता दीजिए बालदेव जी ! मैं जलकर मर जाऊँगी, मगर...।"

बालदेव जी की कसी हुई मुट्ठी खुल जाती है। लछमी बस्ते को कलेजे से चिपकाकर खड़ी होती है। कमर से लिपटा हुआ कपड़ा खुद-ब-खुद गिर पड़ता है। बालदेव जी कमंडल से पानी लेकर छींटते हैं।

"हे भगवान ! सतगुरु हो ! जै गॉधी जी ! बाबा जै बावनदास जी ! ह। हः !" लछमी रो रही है।

वस्त्रहीन खडी लछमी रो रही है।

लछमी के हाथ-पाँव जल गए है; बडे-बडे फफोले निकल आए हैं।

बालदेव जी अपनी मसहरी मे आकर छिप जाते हैं। लेटकर सोचते हैं–नही, अब यहाँ रहना अच्छा नहीं। वह किस मुँह से यहॉ रहेगा ? लछमी की ओर अब यह निगाह उठाकर कभी देख नही सकेगा। वह पुरैनियाँ जाएगा, वहीं से चन्ननपट्टी चला जाएगा। वह अब अपने गाँव में रहेगा अपने समाज मे, अपनी जाति मे रहेगा। जाति बहुत बड़ी चीज है। जाति की बात ऐसी है कि सभी बडे-बडे लीडर अपनी-अपनी जाति की पाटी में हैं।–यह तो राजनीति है ! लछमी क्या समझेगी ? कासी जी का बरमचारी तो लगता है, अब यहीं खुट्टा गाड़ेगा ठीक है। नहीं, लछमी पर जाते जाते अकलंग लगाकर नहीं जाएगा वह

"गुसाई साहेब, उठिए ! सतसग का समय हो गया !" लछमी कराहते हुए उठती है। सारा देह जल गया है।

रोज की तरह लछमी उठती है, उठकर वालदेव जी के बिछावन के पास आती है। मसहरी हटाकर बालदेव जी के ॲगूठो मे ऑखे लगाती है, "सा हे ब–बदगी !"

बालदेव जी रोते है–सिसकियॉ लेकर, "ल छ मी !"

"उठिए, गुसाई साहेब !"

बाईस

तीन महीने बाद !

1948 साल के अप्रैल की एक सुबह।

इस इलाके में अखतिया पटुआ-भदै बानेवाले किसानों को चाहिए कि सूरज उगने के पहले ही खेत को चार चास कर दे ! भुरुकुआ तारा जगमग कर रहा है। कमला नदी के गड्ढे में उसकी छाया झिलमिला रही है। लगता है, नीलकमल

खिला है।

कंधे पर हल लिए मरियल बैलों को हाँकता हुआ जा रहा है विरंची··· कोयरीटोला के सोबरन का तीन बीघा खेत मनकुत्ता पर जोतता है। मगर इस साल टोटा पड़ेगा। उसकी सूरत, दियासलाई की डिबिया में जैसे हलवाहे की छापी रहती है–एकदम दुबला-पतला, काला-कलूटा, कमर में बिस्ठी–वैसी ही है।

खेलावन अब खुद भैंस चराता है। तीन बजे रात में भैंस जैसा चरती है वह दिन-भर में नहीं चरेगी। अब तो उसको अपना रमना[1] भी नहीं है, इसीलिए धत्ता की ओर ले जाता है। खेलावन यादव, यादवटोली का मड़र, भैंस चराकर लौट रहा है।

आसमान साफ हो रहा है। सबके चेहरों पर सुबह का प्रकाश पड़ता है–झमाई हुई ईंट जैसे चेहरे !

तहसीलदार साहब का ट्रैक्टर लेकर डलेवर साहब निकले–भट-भट-भट-भट-भट !

तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर खड़े, हाथों को पीछे की ओर बाँधे टहल रहे हैं। भट-भट-भट-भट-भट ! छत्त दलकती है। उसी के ताल पर उनका कलेजा धुकधुका रहा है।··· कौन आ रहा है ? कौन ? सेबिया ?·· चुप ! धीरे से ! क्या ?

"क्या ?" तहसीलदार साहब पूछते हैं।

ऊँ ! बतहा ! नाती भेलहौं !" सेबिया हँसती है।

"चुप ! जिदा है या··!"

"ऊँह ! गुजुर-गुजुर हेरैछै !"

··· उफ ! भगवान ! तहसीलदार साहब थरथर काँप रहे हैं।

कमला नदी के उस पार, अधपके रब्बी की फसल के उस पार, सेमलबाड़ी के जंगल के उस पार आसमान लाल हो गया है। दक्खिन· कोठी के बाग में गुलमुहर की लाल-लाल डालियाँ दमक उठती हैं।

ड्योढ़ी के उस पार बच्चे के रोने की आवाज नहीं जान पावे ! इतिजाम हो रहा है। कोई इंतिजाम जरूर हो जाएगा।· यदि बच्चा जोर से रोए ! ऐ, गला टी प दो। मार डालो !

दिल्ली में, राजघाट पर, बापू की समाधि पर रोज श्रद्धांजलियाँ अर्पित होती हैं। संसार के किसी भी कोने का, किसी भी देश का आदमी आता है, वहाँ पहुँचकर अपनी जिंदगी को सार्थक समझता है।

कलीमुद्दीपुर में, नागर नदी के किनारे, चोरघट्टा के पास सँहुड़ के पेड़ की डाली से लटकती हुई खद्दर की झोली को किसी ने शायद टपा दिया है।··· कौन लेगा ? दुलारचंद कापरा ने एक महीने के बाद जाकर देखा, झोली तो लटक रही

1. चरागाह।

है डाली से। जिला कॉंग्रेस का कोई भी वरकर देखते ही पहचान लेगा–बावनदास की झोली है। झोली कापरा ने टपा दी। मगर झोली का फीता अभी भी डाली मे झूल रहा है।

किसी दुखिया ने इसे चेथरिया पीर[1] समझकर मनौती की है, अपने ऑचल का एक खूँट फाडकर बॉध दिया है–"मनोकामना पूरी हो तो नया चेथरा बधाऊँगी !" बहुत बडी आशा और विश्वास के साथ वह गिरह बॉध रही है। दो चीथडे।

पूर्णिया जेल के सामने बडा पुराना वटवृक्ष है। उसके नीचे सूखी हुई पत्तियॉं हवा मे इधर-उधर उड रही है। वट के बॅधाए चबूतरे के पास एक युवती खडी है। साथ मे है प्यारू !

खाली देह पर एक पुराना गमछा रखे, सिर्फ जॉंघिया पहने एक वार्डर साहब बार-बार बारिक से निकलकर युवती को देखते हैं, "आप डाक्टर साहेब की वाइफ हैं ?"

युवती ने गर्दन हिलाकर कहा–"नही !"

वार्डर साहेब प्यारू की ओर देखते हैं। प्यारू इस वार्डर को जानता है–बडा बेकूफ है। हमेसा खराब खराब बात बोलता रहता है। वह मुँह फेर लेता है।

जेल का लौह कपाट झनझनाकर खुलता है। युवती के चेहरे पर से प्रतीक्षा की बेचैनी हट जाती है। उसके चेहरे पर हाल ही मे जो छोटी-छोटी झुर्रियॉं पड गई थी धीरे धीरे खिल पडती है।

डाक्टर इस तरह मुस्कराता, डेग बढाता, हाथ मे छोटा बैग लिए आ रहा है, मानो लेबोरेटरी से छुट्टी पाकर लौटा है।

प्यारू का चेहरा देखने काबिल हो रहा है। वह अपने अदर म उठनेवाले खुशी के आवेगो को दबाता है, किंतु उसका मुँह अस्वाभाविक रूप से खुला हुआ है।

"तुम भी किसी जेल मे थी क्या ?

"नही बाबा ! ऐसी किस्मत लेके नही आई। झुको ! बाबा विश्वनाथ का प्रसाद है !" युवती रूमाल से सूखे बेलपत्तर और फूल निकालकर डाक्टर प्रशात के सिर से छुलाती है।

"तब प्यारू क्या हाल है ? ममता ! प्यारू से बातचीत हुई है या नही ?"

"सुबह से और कर क्या रही हूँ !" ममता हँसते हुए कहती है, "घाडा गाडी बुलाइए प्यारिचॉंद सरकार !"

प्यारू हॅंसता लॅंगडाता कचहरी की ओर जाता है।

"तीन बजे रात मे पहुँची पूर्णिया स्टेशन। ज्योति-दी तो आजकल यही हैं

1 जिस पेड को पीर समझकर चीथडा चढाते हैं।

न ! उनके डेरे पर गई, सुबह उठकर कलक्टर साहब के बँगले पर गई। दस्ता आर्डर साथ में था तुम्हारी रिलीज का। ज्योति-दी ने कहा, यदि कलक्टर साहब टूर पर निकल गए तो फिर देर हो जा सकती है !· तो अभी कहाँ चलना है ?" ममता मुस्कराती है।

"तुम मेरीगंज नहीं चलोगी ?"

"क्यों नही ?·· मैंने पद्रह दिन की छुट्टी ले ली है।"

एस. पी. साहब का चपरासी खत लेकर आया है। एस. पी. साहब ने डाक्टर को अपने बँगले पर निमंत्रित किया है।

तेईस

तहमीलदार साहब अब नीचे नहीं उतरते हैं। ऊपर ही रहते हैं। दिन भर ताडी पीकर रहते हैं, रात में सथालटोली का महुआ का रम। कभी होश मे नही रहते हैं। सुमरितदास बेतार से रोज पूछते है, "सोचा उपाय ?"

"मेरा तो मगज नहीं काम कर रहा है।"

"नहीं काम कर रहा है, तो लो एक गिलास। पियो साले ! यदि कहीं बोले तो देख लो बदूक !"

कमली की माँ दरवाजा कभी नहीं खोलती। कुएँ की ओर खुलनेवाला दरवाजा कभी-कभी खोलती है। कमरे के अंधकार मे, एक कोने मे, एक छोटा-सा दीप जल रहा है। कमली की गोदी मं उसका शिशु कपडे मे लिपटा सो रहा है। कमली कजरौटी मे काजल पार रही है।

भट-भट भर्र-र्र

एक स्टेशन वैगन पूर्णिया-मेरीगंज रोड पर भागी जा रही है।

चलते समय ममता की नजर बचाकर प्यारू ने डाक्टर के हाथ में एक लिफाफा दिया है। आगे ड्राइवर की बगल में बैठा हुआ प्यारू कभी-कभी गर्दन उलटकर पीछे की ओर देखता है। डाक्टर साहब चिट्ठी पढ़ रहे हैं।

"प्राणनाथ !"

कमला की चिट्ठी है–एक सप्ताह पहले की चिट्ठी।

"प्राणनाथ !"

पता नही, समय पर यह पत्र तुमको मिले या नही। देर या सबेर, कभी भी मेरी यह चिट्ठी तुम्हे मिल ही जाएगी, मुझे पूरा विश्वास है। तुम मेरे पास दौडे आओगे ! तुम जानते हो, अब मुझे डर लगने लगा है। तुम्हारा तुम्हारा कैसे लिखूँ ? माँ कहती है, यदि तुम किसी तरह बाबा को लिख दो या मालूम करा दो कि मेरी होने वाली सतान के तुम पिता हो, तो मैं जी जाऊँ। विश्वास नही करती माँ ! बाबू जी अब एकदम पागल हो गए है। न जाने कब क्या हो ! तुम्हारी किताबो ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। मुझे कितना बडा सहारा मिला है तुम्हारी किताबो से ! लेकिन अब एक नई किताब चाहिए जिसके पृष्ठ पृष्ठ मे लिखा हुआ हो–कमला ! विश्वास करो ! डरो मत ! जो होगा, मगलमय होगा ।

डाक्टर एक ही साँस मे इतना पढ गया। इसके बाद उसने ममता की ओर निगाह डाली। रात भर की जगी ममता गाडी के हिचकोलो पर मीठी झपकी ले रही है। चोट लग जाएगी !

"और कितनी दूर ?" ममता जागकर पूछती है।

"और एक घटा," प्यारू कहता है।

डाक्टर आगे पढता है–" बाबा तुम्हारे बच्चे को मार डालेगे।'

"नही ! नही !"

"ऐ ?" ममता पूछती है, "क्या है ?"

डाक्टर ममता के हाथ मे पत्र देकर बाहर की ओर देखता है। प्यारू गर्दन उलट उलटकर डाक्टर साहब की ओर देखता है।

ममता आख मलते हुए पढती है–"प्राणनाथ ! किसकी चिट्ठी है ? कमला की ?"

ममता पढ रही है। डाक्टर ने एक बार ममता की ओर देखा-ममता की नीद से माती आँखे एक बार चमकती है। पत्र शेष करके वह पूछती है, "और कितनी दूर ?"

"अब और एक घटा। रास्ता कच्चा है !"

"और वह गणेश कहाँ है ?"

"उसकी तो एक लबी कहानी है। ब्रह्मसमाज मदिर मे उसे रखवा दिया था। न जाने कहाँ से उसके एक चाचा ऊपर हो गए। बहुत बखेडा हुआ, जाति-धर्म का बवडर उठाया। मैने भी कह दिया ले जाओ !"

"उससे भैस चरवाता है," प्यारू कहता है, "उसके गॉव का आदमी बराबर कचहरी आता है न !"

"मैंने मेडिकल गजट मे तुम्हारी रिपोर्ट दे दी है। एक सक्षिप्त रिपोर्ट है–जगली जडी-बूटी और यहाँ के गॉवो मे प्रचलित टोटको के बारे मे–तुम्हारी चिट्ठियो से सार्ट करके लिख दिया।"

"लेकिन, मैने तो फैसला कर लिया है, रिसर्च असफल होने की घोषणा कर दूँगा।"

"कोई रिसर्च कभी असफल नहीं होता है डाक्टर ! तुमने कम-से-कम मिट्टी को तो पहचाना है।··· मिट्टी और मनुष्य से मुहब्बत। छोटी बात नहीं।"

डाक्टर ममता की ओर देखता है–एकटक। ममता बाहर की ओर देख रही है–विशाल मैदान !··· वंध्या धरती !··· यही है वह मशहूर मैदान–नेपाल से शुरू होकर गंगा किनारे तक–वीरान, धूमिल अंचल। मैदान की सूखी हुई दूबों में चरवाहों ने आग लगा दी है–पंक्तिबद्ध दीपों-जैसी लगती है दूर से।··· तड़बन्ना के ताड़ों की फुगनी पर डूबते हुए सूरज की लाली क्रमशः मटमैली हो रही है।

भर्र-र-र्··

"सुमरितदास ! अभी ट्रैक्टर क्यों चला रहा है ? कहाँ ले जा रहा है, ड्राइवर से पूछो तो।" तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर से पुकारते हैं।

"ट्रैक्टर नहीं। मोटर है, मोटर !"

"मोटर ?··· कौन है ?"

"डागडर !"

"कौन डाक्टर ?"

सुमरितदास दौड़कर छत पर जाता है, "अपने·· डागडरबाबू। साथ में एक जलाना है।··· प्यारू भी है।"

तहसीलदार साहब हाथ में बंदूक लेते हैं। सुमरितदास थर-थर काँपते हुए कहता है–"दुहाई ! ऐसा काम मत कीजिए।"

"ऐसा काम नहीं करूँ ?··· तब क्या करूँ ?"

प्यारू पुकारता है, "मौसी !··· ओ मौसी !"

"कौन ? प्यारू ?" माँ दरवाजे की फाँक से कहती है, "क्या है ?"

"डागडरबाबू !"

'ऐहें-ऐहें-आँ-आँ,' सौर-गृह में कमली का नन्हा रोता है, "ऐं-हे-ऐं-हाँ !"

ममता जल्दी से किवाड़ के पास जाकर कहती है, "किवाड़ खोलो मौसी ! मैं हूँ ममता। खोलो पहले !"

किवाड़ के पल्ले खुल जाते हैं। ममता सौर-गृह के अंदर चली जाती है।··· डाक्टर अकेला, चुपचाप खड़ा है। सीढ़ी पर खड़ाऊँ की आवाज होती है–भारी-भरकम आवाज ! कोई जोर-जोर से पैर पलटकर चल रहा है।

"कौन है ? डाक्टर ?" तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं।

"आइए ! बैठिए डागडरबाबू।" सुमरितदास मसूढ़े निकालकर हँसता है, "आइए !"

"नहीं !··· सुमरितदास, इससे पूछो, कहाँ आया है ? किसके यहाँ आया है ? क्या करने आया है ? क्या लेने आया है ?··· पूछो !"

सुमरितदास बेतार डाक्टर के पास आकर कनखी और इशारों से समझाता है, "आजकल जरा ज्यादा ढलने लगी है न·· इसीलिए !"

सौर-गृह के दरवाजे की फाँक से कमली की माँ कहती है, "कमली के बाबू ! कैसे हो तुम ? जमाई को··"

"जमाई को क्या ? अपने जमाई को क्यों नहीं कहती हो ? वह मेरा पैर छूकर प्रणाम कहाँ करता है ?"

डाक्टर तहसीलदार की चरण-धूलि लेता है।

तहसीलदार साहब अचानक फूटकर रो पड़ते हैं, डाक्टर साहब को बाँहों में जकड़कर रोते हैं, "मेरा बेटा ! बाबू !··· मेरा बेटा !"

सुमरितदास बेतार ने रात में ही घर-घर खबर पहुँचा दी–"कमली की सादी तो पहले ही डागडर बाबू से हो गई थी।· तुम लोग तो जानते हो ! पाँच पंच को जानकर जब-जब सादी की बात पक्की हुई, एक-न-एक विघिन पड़ गया। इसीलिए कासी के पडितो ने गंधरब-विवाह कराने को कहा। गंधरब विवाह की बात किसी को मालूम नहीं होने दी जाती है। यदि बच्चा हो तो सबसे पहले बाप उसको देखेगा तब और लोग। डागडरबाबू आ गए हैं। अब कल छट्ठी के भोज का निमत्रण देने आया हूँ तुम लोगों को। कल सुबह से ही आनन-बधावा मचेगा।"

"इस्स् ! यह तो खिस्सा-कहानी जैसा हो गया ! एकदम किसी को पता नहीं !"

ब्राह्मणटोली के पुरोहित देवानन झा ने लोगों से कहा, "अँगरेजी फैसनवालों का सात खून माफ है।"

जोतखी जी के कानो में बात पड़ी; उन्होंने घृणा से मुँह सिकोड़ लिया।

खेलावन यादव ने कहा, "पैसावाला अधरम भी करेगा तो वह धरम ही होगा।"

लेकिन निमंत्रण अस्वीकार करने की हिम्मत किसी में नहीं।

सुबह को गाँव के चमारों ने आकर नाच-नाचकर ढोल बजाना शुरू किया। औरतें झुंड बाँध-बाँधकर सोहर गाती हुई आने लगीं। लेकिन सबके चेहरे पर एक उदासी एक मनहूस काली रेखा खिची हुई है।·· मन में रंग नही।

तहसीलदार साहब बहुत देर तक अपने कमरे में चुपचाप बैठकर कुछ सोचते है; फिर बाहर आकर कहते हैं, "सुमरितदास ! लोगों से कह दो·· हरेक परिवार को पाँच बीघा के दर से जमीन मैं लौटा दूँगा। साँझ पड़ते-पड़ते मै सब कागज-पत्तर ठीक कर लेता हूँ।... और सथालटोली में जाकर कहो··· वे लोग भी आकर रसीद ले जाएँ। एक पैसा सलामी या नजराना, कुछ भी नहीं ! अरे, मैं क्यों दूँगा ? दे रहा है नया मालिक ! मालिक साहब का हुकुम है, सुनते हो नहीं ! रो रहा है वह ! वह हुकुम दे रहा है। लौटा दो ! दे दो, खेलावन को उसकी जमीन का सब धान दे दो।"

डाक्टर प्रशांत और ममता की आँखें चार होती हैं।

"मुँह क्या देखते हो ? मुझे पागल समझते हो ? ठीक है, पागल क्यों नहीं समझोगे ?·· योगेश्वर कृष्ण ने अपनी सारी विद्याबुद्धि लगाकर कोशिश की, मगर

दुर्योधन ने साफ कह दिया—सूई की नोक पर जितनी मिट्टी चढ़ती है उतनी भी नहीं दूँगा।··· जमीन !··· धरती ! एक इंच जमीन के लिए हायकोठ तक मुकदमा लड़ते हैं लोग ! और मैं सौ बीघे जमीन दे रहा हूँ। पागल तो तुम लोग हो ! अरे, यह जमीन तो उन्हीं किसानों की है, नीलाम की हुई, जब्त की हुई, उन्हें वापस दे रहा हूँ। मैं कहता हूँ, ऐलान कर दो, मालिक का हुकुम है !"

जै ! जै !··· जै हो !

बोलिए प्रेम से—महतमा जी की जै !

डिग-डिग-डिडग।

रिंग-रिंग-ता-धिन-ता।

डा-डिग्गा-डा-डिग्गा !

झुमुर-झुमुर··· हुर्रर-हुर्रर-हुर्रर !

हाँ·· अब··· अब ठीक है। अब देखो, सब चेहरों पर, मुर्दा चमड़ों पर लाली लौट रही है। सैकड़ों जोड़ी आँखें खुशी से चमक उठती हैं, मानों दीप जले हों।

कुमार नीलोत्पल की आज बरही है।

हाँ, ममता ने कमला के पुत्र को नाम दिया है—कुमार नीलोत्पल। डाक्टर ने आज पहली बार अपने पुत्र को गोद में लिया और देखा है। दुबला-पतला, पीले रंग का रक्त-मांस का पिंड ! ममता कहती है, "पटना ले चलो। एक महीने में ही तुम्हारा बेटा लाल हो जाएगा !" डाक्टर ने सैकड़ों 'डिलिवरी' केस किए हैं। किंतु कुमार नीलोत्पल ! कमला का पीला चेहरा लाज से लाल हो गया था। डाक्टर की गोद में शिशु को देते वक्त उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें झुकी हुई थीं। उसके ललाट पर सिंदूर का बड़ा-सा टीप जगमगा रहा था· अँधेरे में खड़ी 'सिल्हुटिड' तस्वीर-सी खड़ी माँ हाथ बढ़ाकर एक भयावनी छाया के हाथ में अपने शिशु को सौप रही है। अँधेरा·· ! भयावनी छाया ! नहीं, नहीं। डाक्टर ने अपने बाएँ हाथ की उँगलियों से नीलोत्पल के 'हार्ट' की धड़कन का अनुभव किया था, "अहा ! नन्हा-सा दिल, धुक-धुक कर रहा है।"

सौर-गृह में, बारह दिन के शिशु की लंबी उम्र, सुंदर स्वास्थ्य, विद्याबुद्धि और धन-संपत्ति के लिए मंगलगीत गाए जा रहे हैं। डाक्टर जगा हुआ है।· उसका रिसर्च ? ममता कहती है, "असफल नहीं हुआ है। मिट्टी और मनुष्य से इतनी गहरी मुहब्बत किसी 'लेबोरेटरी' में नहीं बनती।"

लेबोरेटरी !· विशाल प्रयोगशाला। ऊँची चहारदीवारी में बंद प्रयोगशाला। साम्राज्य-लोभी शासकों की संगीनों के साये में वैज्ञानिकों के दल खोज कर रहे हैं, प्रयोग कर रहे हैं।·· गंजी खोपड़ियों पर लाल-हरी रोशनी पड़ रही है।· मारात्मक, विध्वंसक और सर्वनाशा शक्तियों के सम्मिश्रण से एक ऐसे बम की रचना हो रही है जो सारी पृथ्वी को हवा के रूप में परिणत कर देगा·· ऐटम ब्रेक

कर रहा है मकड़ी के जाल की तरह ! चारों ओर एक महा-अंधकार ! सब वाष्प ! प्रकृति-पुरुष·· अंड-पिंड ! मिट्टी और मनुष्य के शुभचिंतकों की छोटी-सी टोली अँधेरे में टटोल रही है। अँधेरे में वे आपस में टकराते हैं।

वेदांत·· भौतिकवाद सापेक्षवाद· मानवतावाद ! हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है। व्याध के तीर से जख्मी हिरण-शावक-सी मानवता को पनाह कहाँ मिले ? हा-हा-हा ! अट्ठहास ! व्याधों के अट्टहास से आकाश हिल रहा है। छोटा-सा, नन्हा-सा हिरण हाँफ रहा है। छोटे फेफड़े की तेज धुकधुकी !· नीलोत्पल ! नहीं-नहीं ! यह अँधेरा नही रहेगा। मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी गूँजती है—पवित्र वाणी ! उन्हे प्रकाश मिल गया है। तेजोमय ! क्षत-विक्षत पृथ्वी के घाव पर शीतल चंदन लेप रहा है। प्रेम और अहिंसा की साधना सफल हो चुकी है। फिर कैसा भय ! विधाता की सृष्टि मे मानव ही सबसे बढ़कर शक्तिशाली है। उसको पराजित करना असभव है, प्रचड शक्तिशाली बमो से भी नहीं पागलो ! आदमी आदमी है, गिनीपिग नही।· सबारि ऊपर मानुस सत्य !

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेक दिव्याभरण दिव्यानेकोद्यतायुधम् ।
दिवि सूर्यसहस्र··· ।

ममता गा रही है ! सुबह हो रही है। बगल के कमरे मे तहसीलदार साहब खर्राटे ले रहे हैं। डाक्टर उठकर खिडकियाँ खोल देता है। मटमैली, अँधियारी मे कोठी का बाग ठिठका हुआ किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। गुलमुहर, अमलतास और योजनगधा की नई कलियाँ मुस्कराने को तैयार हैं। नान्त न मध्यं न पुनस्तवादि ।

"प्रशात !" ममता मुस्कराती हुई कमरे मे प्रवेश करती है—सुबह को हौले-हौले बहानेवाली हवा-जैसी। सद्यःस्नाता ममता के भीगे-बिखरे केशगुच्छ को डाक्टर छू लेता है।

"अरे धेत् ! औरतों का भीगा केश नही छूना चाहिए। दोष होता है। पूछती हूँ, चाय पियोगे ? कुमार साहब का दूध गर्म हो रहा है। लगता है, रात-भर जगे रहे हो। कुल्ली कर लो। मैं चाय ले आती हूं।" ममता मुस्कराती हुई जाती है।

बेचारी ममता की जिंदगी का एकमात्र विलास—चाय ! शीला कहती थी एक बार, "ममता-दी चाय पीने का बहाना ढूँढती रहती है। दिन-भर मे दस-पंद्रह प्याली !"

चाय की प्याली प्रशांत के हाथ मे देते हुए ममता पूछती है, "पढ़ गए महात्माजी की आखिरी लालसा ? मैं तो कहती हूँ, यह वह महाप्रकाश है, जिसकी रोशनी में दुनिया निर्भय हजारों बरस का सफर तय कर सकती है।"

"ममता ! मैं फिर काम शुरू करूँगा—यहीं, इसी गाँव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाएँगे। मैं

साधना करूँगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले ! कम-से-कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ... ।"

ममता हँसती है—"मन करता है, किसी को आँचल पसारकर आशीर्वाद दूँ—तुम सफल होओ ! मन करता है, किसी कर्मयोगी के बढ़े हुए चरणों की धूलि लेकर कहूँ..." कहकर ममता प्रशांत के पैरों की ओर हाथ बढ़ाती है।

"ममता !"

"ममता-दी !... लो इसे। दूध फेंकता है।" कमली अपने शिशु को गोदी में लेकर हँसती हुई आती है।

"दो ! कैसे फेंकता है ? कैसे पिलाती हो ? बोतल दो।" ममता आलथी-पालथी मारकर बैठ जाती है और बच्चे को गोद में ले लेती है। "तुमने टेब्लेट खा लिया कमला ? खा लो !"

प्रशांत चुपचाप ममता को देख रहा है। शरतबाबू के उपन्यासो की यह नारी अपने विश्वास पर अडिग होकर आज भी आगे बढ़ रही है; रूप बदल दो, नाम बदल दो, समय बदल दो, जगह बदल दो, पर यह कभी बदल नहीं सकती।

कमली पूछती है, "प्यारू भी पटना चलेगा ?"

"हाँ", ममता संक्षिप्त-सा उत्तर देती है।

"आएँ-ऐं.. ऐं..," नीलू रोता है।

"ना-ना. । पी लो बाबू ! राजा ! सोना ! . मानिक ! नीलू ! रोओ मत ! अब रोने की क्या बात है प्यारे ?" ममता हँसती है।

कलीमुद्दींपुर घाट पर चेथरिया-पीर में किसी ने मानत करके एक चीथड़ा और लटका दिया।

●●●

परती : परिकथा

भैया महेन्दर,

तुम नहीं रहे, तुम्हारी कल्पना साकार हुई है !

सिमराहा की सपाट धरती पर

हजारों पेड़ लग गये हैं।

—भैया

प्रथम परिवर्त

धूसर, वीरान, अन्तहीन प्रान्तर।

पतिता भूमि, परती जमीन, वन्ध्या धरती ·।

धरती नहीं, धरती की लाश, जिस पर कफन की तरह फैली हुई हैं बालूचरों की पंक्तियाँ। उत्तर नेपाल से शुरू होकर, दक्षिण गंगातट तक, पूर्णिया जिले के नक्शे को दो असम भागों में विभक्त करता हुआ—फैला-फैला यह विशाल भूभाग। लाखों एकड़ भूमि, जिस पर सिर्फ बरसात में क्षणिक आशा की तरह दूब हरी हो जाती है।

सम्भवतः तीन-चार सौ वर्ष पहले इस अचल में कोसी मैया की यह महाविनाश-लीला हुई होगी। लाखों एकड़ जमीन को अचानक लकवा मार गया होगा। एक विशाल भू-भाग, हठात् कुछ-से-कुछ हो गया होगा। सफेद बालू से कूप, तालाब, नदी-नाले पट गये। मिटती हुई हरियाली पर हल्का बादामी रंग धीरे-धीरे छा गया।

कच्छपपृष्ठसदृश भूमि! कछुआ-पीठा जमीन? तन्त्रसाधकों से पूछिए, ऐसी धरती के बारे में वे कहेंगे—असल स्थान वही है जह· बैठकर सबकुछ साधा जा सकता है। कथा है··।

कथा होगी अवश्य इस परती की भी। व्यथा-भरी कथा वन्ध्या धरती की। इस पाँतर की छोटी-मोटी, दुबली-पतली नदियाँ आज भी चार महीने तक भरे गले से, कलकल सुर में गाकर सुना जाती हैं, जिसे हम नहीं समझ पाते।

कथा की एक कड़ी, कार्तिक से माघ तक प्रतिरात्रि के पिछले प्रहर में, सुनायी पड़ती है—आज भी! सफेद बालूचरों में चरनेवाली हंसा-चकेवा की जोड़ी रात्रि की निस्तब्धता को भंग कर किलक उठती है कभी-कभी। हिमालय से उतरी परी बोलती है—केंक्-केंक्-कें-एँ-एँ-गाँ-आँ-केंक्!

एक बालूचर से दूसरे बालूचर, दूसरे से तीसरे में—हजारों जोड़े पखेरू अपनी-अपनी भाषा में इस कड़ी को दुहराते हैं। दूर तक फैली हुई धरती पर सरगम के सुर में

'प्रतिध्वनि की लहरें बढ़ती जाती हैं—एक स्वरतरंग !

हिमालय के परदेशी पंछियों की टोलियाँ, नाना जाति-वर्ण-रंग की जोड़ियाँ प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पहाड़ से उतरती हैं—हहास मारती हुईं। फिर, फागुन-चैत के पहले ही लौट जाती हैं। भूली-भटकी एकाध रह जाती है जो कभी-कभी उदास होकर पुकारती और अपनी ही आवाज की प्रतिध्वनि सुनकर, विकल होकर पाँखें पसारकर उड़ती-पुकारती जाती है—कें‌क्-कें‌क्-कें-एँ-एँ !

परदेशी चिरैया की करुण पुकार से वन्ध्या धरती की व्यथा बढ़ती है। कौन समझाये भूली पहाड़ी चकई को ? तुत्तू—चुप-चुप !

वन्ध्या धरती की व्यथा को पण्डुकी ही समझती है, जो बारहों मास अपना दुख-दर्द सुनाकर मिट्टी के मन की पीड़ा हरने की चेष्टा करती है। वैशाख-जेठ की भरी दोपहरी में सारी परती काँपती रहती है, सफेद बालूचरों की पंक्तियाँ मानो आकाश में उड़ने की पाँखें तौलती रहती हैं। रह-रहकर धूलों का गुब्बारा—धूर्णिचक्र-सा—ऊपर उठता है !··· इस धूर्णिचक्र में देव रहते हैं।

परती पर बहुत-से देव-दानव रहते हैं। किन्तु, वन्ध्या धरती की पीड़ा हरने की क्षमता किसी में नहीं। पण्डुकी व्यथा समझती है, क्योंकि वह एक वन्ध्या रानी की परिचारिका रह चुकी है। वैशाख की उदास दोपहरी में वह करुण सुर मे पुकारती है—तुर तुत्तू-उ-उ, तू-उ, तु-उ तूः। अर्थात्, उठ जित्तू—चाउर पूरे, पूरे-पूरे !

वैशाख की दोपहरी और भी मनहूस हो जाती है। किन्तु, निराश नहीं होती पण्डुकी। अपने मृत पुत्र जित्तू को भूलने का बहाना करती है। आँसू पोंछ, उठ खड़ी होती है, फिर नाच-नाचकर शुरू करती है। सुर बदल जाता है और छोटे घुँघरू की तरह शब्द झनक उठते हैं :

> *तु तु तुर, तुरा तुत्त।*
> *बेटा भेल—लोकी लेल।*
> *बेटी भेल—फेंकी देल।*

क्या करोगी बेटा-बेटी लेकर, ओ रानी माँ, क्या होगा बेटा लेकर ? मुझे देखो, बेटा हुआ। कलेजे से सटा लिया। खुशी से नाचने लगी। इस खुशी में बेटी को फेंक दिया।·· बेटा को काल ले गया। अब ? सब बिध-विधाता का खेल है रानी माँ ! दुख मत करो। मुझे देखो, दुख से कलेजा फटता है, फिर भी कूटती हूँ, पीसती हूँ, कमाती हूँ, खाती हूँ, गाती हूँ, नाचती हूँ : तु तु-तुर, तुरा-तुत्त !

किन्तु, वन्ध्या धरती माता की पीड़ा और भी बढ़ जाती है—ओ पण्डुकी सखी ! कोखजली की ग्लानि तुम क्या समझो !

तब, पण्डुकी पुनः अपने प्यारे जित्तू को आतुर होकर पुकारने लगती है—उठ जित्तू-ऊ, चाउर पूरे, पूरे-पूरे !

··· वन्ध्या रानी माँ का धान कूटती थी पण्डुकी। जित्तू जब गोदी में ही था, डगमगाकर चलता था, थोड़ा-थोड़ा। उसी उम्र में जित्तू को कहानी सुनने का कितना

शौक था ! आँचल पकड़कर रोता फिरता। काम के बीच में कभी-कभी पण्डुकी उसे गोद में लेकर दूध पिलाती और एक कथा सुनाकर सुला देती। रोज-रोज नयी कथा कहाँ से आये ! रानी माँ के मुँह से सुनी रानी माँ की दुख-दर्द-भरी कहानी के एकाध टुकडे चुपचाप सुना देती। रानी माँ पण्डुकी से सत्त कराकर अपनी कहानी सुनाती। पण्डुकी सत्त करती–एक सत्त दो सत्त·· किसी और से नहीं कहूँगी, रानी माँ !··· जित्तू तो कोई और नहीं। उसे सुनाने में क्या दोष !

एक दिन ऐसा हुआ कि भरी दोपहरी में, काम के बेर जित्तू आकर रोने लगा–बिजूबन-बिजूखण्ड का पता पूछने लगा। वह देवी मन्दिर का खाँड़ा लेगा पंखराज घोडे पर सवार होकर बिजूबन-बिजूखण्ड जायेगा। राक्षस के घर में वन्ध्या रानी की सुख-समृद्धि एक कलस में बन्द है। वह लड़ाई करेगा । भोला जित्तू !

जित्तू वन्ध्या रानी माँ की उमड़ती हुई आँखों को पोंछना चाहता है। अपनी माँ के आँसुओं को भी वही पोंछा करता था। पण्डुकी बोली–देख बेटा ! रोज-रोज चावल घट जाता है। समय पर तैयार नही होता। चावल पुर जाये तो तुझे सब कथा सुना दूँगी। तब तक उस पाकर पेड के नीचे जाकर सो रहो। जित्तू चला गया, चुपचाप। सो रहा पेड की छाया मे–माँ के मुँह से सब कथा सुनने की आशा में। पण्डुकी धान कूटने मे मगन हो गयी। उधर काल ने आकर जित्तू की कहानी समाप्त कर दी।

चावल पूरा हो गया। धान कूटते समय ही पण्डुकी कथा की कड़ी जोड़ चुकी थी। जित्तू को पुकारा–उठ बेटा, जित्तू, चावल पूरा हो गया–तुर-तुत्तु-उ-उ···।

एक बार जित्तू उठ जाये, एक ही क्षण के लिए। पण्डुकी ऐसी कहानी सुनायेगी, ऐसी कहानी कि फिर । बेचारा जित्तू अधूरी कहानी के सपने देखता सोया हुआ है।

आँखें खोलो, पाँखें तोलो बोलो ! ओ जित्तू, ओ जित्तू ! उठ जित्तू ··· !

चिरई-चुरमुन की कहानी पर परतीत न हो, सम्भव है।

परती की अन्तहीन कहानी की एक पारकथा वह बूढ़ा भैंसवार भी कहता है। गँजेडी है तो क्या !

गुनी आदमी जरा अमल पाँत लेता ही है। एक चिलम गाँजा कबूलकर कितने पीर-फकीर और साई-गोसाईं से तन्त्र-मन्त्र और वाक् लेते हैं लोग !

कथा का एक खण्ड–परिकथा !

–कोसी मैया की कथा ? जै कोसका महारानी की जै !

परिव्याप्त परती की ओर सजल दृष्टि से देखकर वह मन-ही-मन अपने गुरु को सुमरेगा, फिर कान पर हाथ रखकर शुरू करेगा मंगलाचरण जिसे वह बन्दौनी कहता है : हे-ए-ए-ए, पुरुबे बन्दौनी बन्दौ उगन्त सिरुजे ए-ए···

बीच-बीच में टीका करके समझा देगा–कोसका मैया का नैहर ! पच्छिम-तिरहौत

राज। ससुराल–पुरुब।

कोसका मैया की सास बड़ी झगड़ाही। जिला-जवार, टोला-परोपट्टा में मशहूर। और दोनों ननदों की क्या पूछिए ! गुणमन्ती और जोगमन्ती। तीनों मिलकर जब गालियाँ देने लगतीं तो लगता कि भाड़ में मकई के दाने भूने जा रहे हैं : फड़र्र-र्र-र्र। कोखजली, पुतखौकी, भतारखौकी, बाँझ ! कोसी मैया के कान के पास झाँझ झनक उठते !

एक बार बड़ी ननद ने बाप लगाकर गाली दी। छोटी ने भाई से अनुचित सम्बन्ध जोड़कर कुछ कहा और सास ने टीप का बन्द लगाया–और माँ ही कौन सतवन्ती थी तेरी।··· कि समझिये बारूद की ढेरी में आग की लुत्ती पड़ गयी। कोसका महारानी क्रोध से पागल हो गयी : आँ-आँ-रे··· ए·· ए···

रेशमी पटोर मैया फाड़ि फेंकाउली-ई-ई,
सोना के गहनवाँ मैया गाँव में बैंटाउली-ई-ई,
आँ-आँ-रे-ए-ए, रु-उ-पा के जे सोरह मन के चू-उ-उर,
रगड़ि कैलक धू-उ-र जी-ई-ई !

दम मारते हुए, मद्धिम आवाज में जोड़ता है गीतकथाकार–रूपा के सोलह मन के चूर ? बालूचर के बालू पर जाकर देखिए–उस चूर का धूर आज भी बिखरा चिकमिक करता है !

सास-ननद से आखिरी लड़ाई लड़कर, झगड़कर, छिनमताही कोसी भागी। रोती-पीटती, चीखती-चिल्लाती, हहाती-फुफनाती भागी पच्छिम की ओर–तिरहुत राज, नैहर। सास-ननदों को पँचपहरिया मूर्छाबान मारकर सुला दिया था कोसी मैया ने !··· रास्ते में मैया को अचानक याद आयी–जा, गौर में तो माँ के नाम दीप जला ही न पायी !

गीत-कथा-गायक अपनी लाठी उठाकर एक ओर दिखायेगा–ठीक इसी सीध में है गौर, मालदह जिला में। हर साल, अपनी माँ के नाम दीया-बाती जलाने के लिए औरतो का बड़ा भारी मेला लगता है।··· महीना और तिथि उसे याद नहीं। किन्तु, किसी अमावस्या की रात में ही यह मेला लगता है, ऐसा अनुमान है।

–अब, यहाँ का किस्सा यहीं, आगे का सुनहु हवाल। देखिए कि क्या रंग-ताल लगा है ! कोसी मैया लौटी। गौर पहुँचकर दीप जलायी। दीप जलते ही, उधर सास की मूर्छा गयी टूट, क्योंकि गौर मे दीप जलाने से बाप-कुल, स्वामी-कुल दोनों कुल में इँजोत होता है। उसी इँजोत से सास की मूर्छा टूटी। अपनी दोनों बेटियों को गुन मारकर जगाया–अरी, उठ गुनमन्ती, जोगमन्ती, दुनू बहिनियाँ !

छोटी ने करवट लेकर कहा–माँ ! चुपचाप सो रहो। बीस कोस भी तो नहीं गयी होगी। पचास कोस पर तो मैं उसका झोंटा धरकर घसीटती ला सकती हूँ।

बड़ी बोली–सौ कोस तक मेरा बेड़ी-बान, कड़ी-छान गुन चलता है। भागने दो, कहाँ जायेगी भागकर ?

माँ बोली—अरी आज ही तो सब गुन-मन्तर देखूँगी तुम दोनों का। तुम्हें पता है, कोसी-पुतोहिया ने गौर में दीप जला दिया ? तुम्हारे जादू का असर उस पर अब नहीं होगा।

—एँय ? क्या-आ-आ ? दोनों बहनें, गुनमन्ती-जोगमन्ती हड़बड़ाकर उठीं। अब सुनिए कि कैसा भौचाल हुआ है। तीनों—माँ-बेटियाँ—अपनी-अपनी गुन की डिबिया लेकर निकलीं।

छोटी ने अपनी डिबिया का ढक्कन खोला—भरी दोपहरी में आठ-आठ अमावस्या की रातों का अन्धकार छा गया।

बड़ी ने अपनी अँगूठी के नगीने में बन्द आँधी-पानी को छोड़ा।

—उधर कोसी मैया बेतहासा भागी जा रही है, भागी जा रही है। रास्ते की नदियों को, धाराओं को, छोटे-बड़े नालों को, बालू से भरकर पार होती, फिर उलटकर बबूल, झरबेर, खैर, साँहुड़, पनियाला, तिनकटिया आदि कँटीले कुकाठो से घाट-बाट बन्द करती छिनमताही भागी जा रही है। आँ-ऑ-रे-ए·

थर-थर कॉपे धरती मैया, रोये जी आकास:
घड़ी-घड़ी पर मूर्छा लागे, बेर बेर पियास:
घाट न सूझे, बाट न सूझे, सूझे न अप्पन हाथ···

मूर्छा खाकर गिरती, फिर उठती और भागती। अपनी दोनो बेटियो पर माँ हँसी—इसी के बले तुम लोग इतना गुमान करती थीं रे ! देख, सात पुश्त के दुश्मनों पर जो गुन छोड़ना मना है, उसे-ए-ए छोड़ती हूँ—कुल्हड़िया आँधी, पहड़िया पानी !

कुल्हड़िया आँधी के साथ एक सहस्र कुल्हाड़ेवाले दानव रहते हैं, पहड़िया पानी तो पहाड़ को भी डुबा दे।

अब देखिए कि कुल्हडिया ऑधी और पहडिया पानी ने मिलकर कैसा परलय मचाया है : ह-ह-ह-र-र-र-र ! गुड़गुड़ुम-आँ-आँ-सि-ई-ई-ई-आँ-गर-गर-गुड़ुम !

गॉव-घर, गाछ बिरिच्छ, घर-दरवाजा कतरती कुल्हड़िया आँधी जब गर्जना करने लगी तो पातालपुरी में बराह भगवान भी घबरा गये। पहड़िया पानी सात समुन्दर का पानी लेकर एकदम जलामय करता दौडा। तब कोसी मैया हाँफने लगी, हाथ-भर जीभ बाहर निकालकर। अन्दाज लगाकर देखा, नैहर के करीब पहुँच गयी है। और पचास कोस ! भरोसा हुआ। सौ कोसों तक फैले हुए हैं मैया के सगे-सम्बन्धी, भाई-बन्धु। मैया ने पुकारा, अपने बाबा का नाम लेकर, वंश का नाम लेकर, ममेरे-फुफेरे, मौसेरे भाइयों को—भइया रे-ए-ए, बहिनी की इजतिया तोहरे हाथ !

फिर एक-एक भौजाई का नाम लेकर, अनुनय करके रोयी—"भउजी, हे भउजी, लड़िका तोहर खेलायब हे भउजी, ओढ़नी तोहर पखारब हे भउजी-ई-ई, भइया के भेजि तनि दे-ए !"

कुल्हड़िया आँधी, पहड़िया पानी अब करीब है। एकदम करीब ! अब ? अब क्या हो ?··· कोसी की पुकार पर एक मुनियाँ भी न बोली, एक सीकी भी न डोली।

कहीं से कोई-ई जवाब नहीं। तब कोसी मैया गला फाड़कर चिल्लाने लगी—अरे ! कोई है तो आओ रे ! कोई एक दीप जला दो कहीं !

कोई एक दीप जला दे, एक क्षण के लिए भी, तो फिर कोसी मैया से कौन जीत सकता है ? कुल्हड़िया आँधी कोसी का आँचल पकड़ने ही वाली थी··· कि उधर एक दीप टिमटिमा उठा ! कोसी मैया की सबसे छोटी सौतेली बहन दुलारीदाय, बरदिया घाट पर, आँचल में एक दीप लेकर आ खड़ी हुई। बस, मैया को सहारा मिला और तब उसने उलटकर अपना आखिरी गुन मारा।

पातालपुरी में बराह भगवान डोले और धरती ·ऊँची हो गयी।

गुनमन्ती और जोगमन्ती दोनों बहिनियाँ अपने ही गुन की आग में जल मरीं। ·· सास महारानी झमाकर काली हो गयी !

उजाला हुआ। कोसी मैया दौड़कर दुलारीदाय से जा लिपटी। फिर तो· आँ-आँ-रे-ए··

दूनू रे बहिनियाँ रामा गला जोड़ी विलखय,
नयना से ढरे झर-झर लोर !

गला भर आया है बूढ़े कथागायक का।

दोनों बहन गला जोड़कर घण्टों रोती-बिलखती रहीं।

हिचकियाँ लेती हुई बोली दुलारीदाय—"दीदी, जरा उलट के देख। धरती की कैसी दुर्दशा कर दी है तुम लोगों ने मिलकर। गाँव-के-गाँव उजड़ गये, हजारों-हजार लोग मर गये। अर्ध-मृतकों की आह-कराह से आसमान काँप रहा है।"

"मरें, मरें ! सब मरें ! मेरे पिता के टुकड़े पर पलनेवाले ऐसे आत्मीय सम्बन्धियों का न जीना ही अच्छा। जो मेरे वंश की एक अभागिन कन्या की पुकार पर अपने घर की खिड़की भी न खोल सके। धरती का भार हल्का हुआ—वे मरें !"

"धरती कहाँ है दीदी ! अब तो धरती की लाश है। सफेद बालूचरों के कफन से ढकी धरती की लाश !"· इस इलाके में सबसे छोटी बहन को बड़े प्यार से दाय कहकर सम्बोधित करते हैं। दुलारीदाय बहनो मे सबसे छोटी—सो भी सौतेली। बड़ी प्यारी बहन ! शील-सुभाव इतना अच्छा कि ।

"दीदी, अब भी समय है। उलटकर देखो। क्रोध त्यागो। दुनिया क्या कहेगी ?"

कोसी मैया ने उलटकर देखा—सिकियो न डोले ! कहीं हरियाली की एक रेखा भी न बची थी। सिहर पड़ी मैया भी ! बोली—"नहीं, धरती मरेगी नहीं। जहाँ-जहाँ बैठकर मैं रोयी हूँ, आँसू की उन धाराओं के आसपास धरती का प्राण सिमटा रहेगा। ··· हर वर्ष पौष पूर्णिमा के दिन उन धाराओं में स्नान से पाप धुलेगा। युग-युग के बाद, एक-एक प्राणी पाप से मुक्त होगा। तब, फिर सारी धरती पर हरियाली छा जायेगी।··· धाराओं के आस-पास सिमटे हुए प्राण नये-नये रंगों में उभरेंगे।"

दुलारीदाय ने चरण-धूलि ली और मुस्कराकर खडी हो गयी। कोसी मैया खिलखिलाकर हँस पड़ी—"पगली ! दुलारी !··· हँसती क्यों है ?" मैया हँसी—दुलारी

के आँचल में नौ मन हीरे झरे। हाँ, कोसी मैया हँसे तो नौ मन हीरा झरे और रोये तो दस मन मोती ! दुलारीदाय को वरदान मिला–"युग-युग तक तुम्हारा नाम रहे। तुम्हारे इलाके का एक प्राणी न भूख से मरेगा, न दुख से रोयेगा। न खेती जरेगी और न असमय में अन्न झरेंगे। गुनी-मानी लोग तुम्हारे आँगन में जनमेंगे।··· कछुआ-पीठा जमीन पर तन्त्र-साधना करके तुम्हारा मान बढ़ायेगी तुम्हारी सन्तान।"

आज भी देखिए–दुलारीदाय के आँचल-तले पलते जनपद को, गाँवों को, गाँव के लोगों को। उनकी एक परम्परा है।··· परानपुर की बात अभी छोड़िए–यह तो इस अंचल का प्राण ही है। हाँसा, बिसुनपुर, पानपत्ती, गीतबास कोठी, महेन्द्रपुर, मधुचन्दा, मधुलता, कँचनार टोली, पलासबनी,··· रानीडूबी।

सिर्फ रानीडूबी गाँव पुराकाल से अपनी बदनामी ढो रहा है। बाकी सभी गाँव किसी-न-किसी अंश में अपने नाम की लाज बचा रहे हैं।

दुलारीदाय के दोनों बाजुओं में पलते इन सुखी-समृद्ध गाँवों का प्राण है परानपुर ! दुलारीदाय के पूरबी महार पर बसा हुआ है यह गाँव। गाँव के पश्चिम-उत्तर कोण में है बरदिया घाट जहाँ दुलारीदाय आँचल में दीप लेकर प्रकट हुई थी।···

"अब तो बैमान जमाना आ गया है बाबू साहब ! किसी चीज का न धरम है और न है तेज। न रहे कोई देवता, नहीं रहे देव। जब से रेलगाड़ी आयी, सभी देव-देवी भागे पहाड़। एकाध पीर, फकीर, साईं-गुसाईं रह गये तो वे भी अब रेलगाड़ी में चढ़कर दूर-दराज हज, तीरथ करने चले जाते हैं। नहीं तो, दुलारीदाय के इलाके में लगातार चार साल सूखा पड़े भला ? अँधेर है ! पहले तो हर साल बरदिया घाट पर मानिक दियरा जलता था, किसी-न-किसी रात में। पिछले दस-बारह साल से वह भी जलना बन्द है। कलियुग जो समाप्ति पर है !"··· बूढ़े गीतकथाकार की वाणी पर विशेष ध्यान उचित नहीं। कोसी मैया की बातों पर भी हँसने की आवश्यकता नहीं।··· मैया के माँ-बाप का नाम ? जिसका कोई बाप नहीं, बाबा भोला उनका बाप; जिसकी कोई माँ नहीं, माता उसकी गौरा पारवती।

किन्तु, पण्डुकी का जित्तू आज भी सोया अधूरी कहानी का सपना देख रहा है। वन्ध्या रानी माँ का सारा सुख-ऐश्वर्य छिपा हुआ है सोने के एक कलस में, बिजूबन-बिजूखण्ड के राक्षस के पास। देवी का खाँड़ा कौन उठाये ? पंखराज घोड़े पर सवार होकर कौन जायेगा कलस लाने ?

कथा-गायक बूढ़ा भैंसवार सारे युग को बेईमान कह रहा है।··· एक-एक आदमी पाप-मुक्त जिस दिन हो जायेगा, सारी परती हरी-भरी हो जायेगी।···प्राणों के नये-नये रंग उभरेंगे !

परानपुर गाँव के पूरब-उत्तर–कछुआ-पीठा भूमि पर खड़ा होकर एक नौजवान देख रहा है–अपने कैमरे की कीमती आँख से–धूसर, वीरान, अन्तहीन प्रान्तर। पतिता

भूमि, बालूचरों की शृंखला। हिमालय की चोटी पर डूबते हुए सूरज की रोशनी चमकती है।

अर्धवृत्ताकार होकर चली गयी है ईस्टर्न रेलवे की एक ब्रांच लाइन। लाइन के किनारे के खम्भों की पंक्तियों के तारों पर बैठी हुई पंक्तिबद्ध किस्म-किस्म की चिड़ियों के मुँह लाइन की ओर !··· ठीक गाड़ी आने के समय, सिगनल के गिरते ही, परती पर चरती हुई चिड़ियों में एक हल्की चुनमुनाहट होती है और वे टेलीग्राफ के तारों पर जा बैठती हैं; चुपचाप बैठी नहीं रहतीं, अपनी बोली में कचर-पचर बोलती ही रहती हैं। युवक कैमरामैन श्री भवेशनाथ एम. ए. की परीक्षा देकर आया है—परती के विभिन्न रूपों का अध्ययन करने। कैमरे का व्यू-फाइण्डर उसकी अपनी आँख है, असली आँख है। वह मन-ही-मन सोचता है··· तीस साल ! बस, तीस साल और ! इसके बाद तो सारी धरती इन्द्रधनुषी हो जायेगी। तब तक रंगीन फोटोग्राफी का विकास भी हो जायेगा।··· झक-झका-झक-झका··· ! मालगाड़ी जा रही है। रोज तीन मालगाड़ियाँ !

गाड़ी परानपुर स्टेशन पर कुछ देर रुककर खुल जाती है।··· आश्चर्य ! गाड़ी जाते ही चिड़ियों की टोलियाँ भी फुर्र हो गयीं। मानो किसी की प्रतीक्षा में वे सामूहिक रूप से पंक्तिबद्ध होकर रोज बैठती हैं··· निराश भी नहीं होतीं कभी।

भवेशनाथ को वराहक्षेत्र की याद आती है। पिछले आठ-नौ साल से वह वराहक्षेत्र जाता है। पुरातन तीर्थ तो है ही—भवेश का वह नया तीर्थ है। वहाँ आदमी लड़ रहा है !··· बडे-बड़े टनल के अन्दर काम होते उसने देखा है; पहाड़ काटनेवाले कितने पहाड़ी जवानों के क्लोज़-अप उसके पास हैं। अरुण, तिमुर तथा सुणकोशी के संगम पर बैटकर पानी मापनेवाले, सिल्ट की परीक्षा करनेवाले विशेषज्ञों को वह भूल नहीं पाता है। पहाड़ों की कन्दराओं में तपस्या में लीन देवगण !··· प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर फैलते क्यों नहीं ? वह रंगीन फोटोग्राफी में दक्ष है।

भवेश ने देखा है, धरती पर रंग फैलते हैं।·· दस साल पहले, एक शुभचिन्तक व्यक्ति की कृपा से, रोटरी क्लब में, उसने एक छायाचित्र देखा था—टैनिसी वैली स्कीम का आयोजन ! बीसवीं सदी के अर्थनैतिक जगत् के महान् महाजन मुल्क के अन्तर्गत टैनिसी अंचल के किसानों की अवस्था देखकर वह अवाक् हो गया था। हिन्दुस्तान के अभागे किसानों से किसी भी माने मे कम नहीं। इसी तरह पुराने हल से खेती करते थे, टूटे-फूटे झोंपड़ों में रहते थे। राह-घाट-बाट की असुविधा, ठीक इसी तरह।··· इसके बाद दिखलाया गया टैनिसी योजना का सूत्रपात; इस सम्बन्ध में जनमत-ग्रहण !·· योजना के पक्ष में राय लेने, इसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में स्पष्ट धारणा पैदा करने का आयोजन !·· और छायाचित्र के अन्त में स्कीम के कामयाब होने के बाद, उस उजाड़, बंजर और बेकार अंचल में युगान्तरकारी परिवर्तन। दिन फिरे हैं किसानों के, खेतों में ट्रेक्टर चल रहे हैं, नयी-नयी मशीनों के द्वारा फसल काटी जा रही है। हाइड्रो-इलेक्ट्रिसिटी की सहायता से बड़े-बड़े कल-कारखाने खुल गये। सब मिलकर एक स्वप्नलोक की सृष्टि साकार···।

आसमान में पचमी का चाँद हँसता है—और परती पर भवेश की हल्की छाया डोलती है !

बैलगाड़ी पर जा रहे हैं सुरपतिराय। दरभंगा जिले से आये हैं। डॉक्टरेट की तैयारी कर रहे हैं। नदियों के घाटों के नाम, नाम के साथ जुड़ी हुई कहानी नोट करते हैं, गीत सुनते हैं और थीसिस लिखते हैं।

रानीडूबी घाट, नदी दुलारीदाय, परगना हवेली, थाना ।

रहिकपुर राज की रानी ने अपने वृद्ध राजा को पान में विष देकर खिला दिया और डोली में बैठाकर नवाबी दरबार में भेज दिया। रास्ते में कहारो ने देखा, राजा साहब निष्प्राण पड़े हैं। जवान कोतवाल साहब ने धोखेबाजी की। बोले, "रानी, राजपाट आधा दे दो, नही तो दरबार में भेद खोल दूँगा।" रानी के कोमल हृदय को इससे बड़ी चोट लगी, क्योंकि उसने जवान कोतवाल के प्रेम में पड़कर राजा को विष दिया था। रात में रानी उठी और गले मे घड़ा बाँधकर दुलारीदाय के एक कुण्ड में डूब मरी ! रानीडूबी ?

सुरपति अभी तक तीन ही घाटों की कहानियाँ बटोर सका है। सो भी भूली-बिसरी, आधी-पूरी कहानी के टुकड़े। आश्चर्य ! सभी कहानियों के सूत्र परानपुर की ओर ही ! · परानपुर के पण्डित, परानपुर के ओझागुणी, परानपुर की डायन, परानपुर का ब्रह्मपिशाच आदि आदि ! सात घाट का पानी पी चुकने पर सुरपति को भी विश्वास हो जायेगा—चिरई-चुरमुन और भैंसवार ही असल कथाकार हो सकते हैं। ·· सैकड़ों वर्षों की कहानियाँ, सोने की पुरातन मुद्राओं की तरह।

परानपुर बहुत पुराना गॉव है। 1880 साल मे मि. बुकानन ने अपनी पूर्णिया रिपोर्ट में इस गाँव के बारे में लिखा है—पुरातन ग्राम परानपुर। इस इलाके के लोग परानपुर को सारे अंचल का प्राण कहते हैं। अक्षरशः सत्य है यह कथन। गाँव से पश्चिम बहती हुई दुलारीदाय की धारा। तीन ओर विशाल प्रान्तर, तृण-तरुशून्य लाखो एकड़ बादामी रंग की धरती ! दुलारीदाय इसकी पश्चिमी रेखा है—जहाँ से हरियाली शुरू होकर पच्छिम की ओर गहरी होती गयी है। अपने दोनो हाथो से दोनों कछार की धरती पर सुख-समृद्धि बाँटती हुई दुलारीदाय, वन्ध्या धरती की संवेदना में बहती अश्रुधारा-जैसी !· गाँव के दक्खिन हजारो सेमल के पेडों का बाग है, सेमलबनी। फूलो के मौसम मे लाल आसमान को मैने देखा है—अपलक नेत्रों से, अचरज-भरी निगाहो से। लाल आसमान !

सेमल का बाग आज भी है। हर पाँच-सात साल के बाद नयी पौध। सात साल पहले एक दियासलाई कम्पनी का ठेकेदार आया और सेमल—जिसके फल को गिलहरी भी न खाये, जिसकी लकड़ी से कोई मुर्दा भी न जलाये—शीशम के दर बिकने लगा। लेकिन, इसी को कहते हैं तकदीर का खेल। सेमलबनी के जमींदार के अधपगले

पुत्र जित्तन बाबू ने साफ जवाब दे दिया—एक भी पेड़ नहीं बेचूँगा। साठ हजार रुपये की आखिरी डाक देकर कम्पनी का ठेकेदार चला गया।··· अब हाय-हाय करने से क्या होता है ? जमींदारी खत्म हो गयी। सेमलबनी पर सरकार का कब्जा हो गया है। सरकार जो चाहे करे। सुना है, जित्तन बाबू ने हाईकोर्ट में अरजी दी है—सेमल के बाग का सर्वनाश न किया जाये !

पागल आदमी को कौन समझाये ! किन्तु जित्तन बाबू का परिवार पुराना है। परानपुर गाँव के एक उजड़े खण्डहर-जैसे मकान की एक कोठरी में बैठकर जित्तन बाबू यानी श्री जितेन्द्रनाथ मिश्रजी एकटक खिड़की से देख रहे हैं—पोखरे में सुपारी, नारियल, साबूदाना तथा यूक्लिप्टस के वृक्षों की परछाइयों को। हल्की चाँदनी की चदरी धीरे-धीरे बिला रही है· । कमरे में हरिकेन का प्रकाश है। दीवार पर देगाँ की एक तस्वीर की कापी फ्रेम में लटकी है—आध दर्जन अर्धनग्न नर्तकियों की टोली—नृत्यरता नायिकाएँ ! स्वस्थ फ्रेंच युवतियों की इन रंगीन तस्वीरों की कृपा से जित्तन बाबू इधर काफी कुख्यात हो गये हैं, गाँव में।··· धौली की माँ ने गाँव-भर में प्रचार किया है, "हवेली में झाड़ू देने कौन जाये ? नहीं करती ऐसी नौकरी ! सारी कोठरी में मार नंगी मेम की छापी टाँगे हुए है। आँख मूँदकर कोई कैसे झाड़ू दे, कहो ?"

गाँव के प्रसिद्ध और पुराने लाल बुझक्कड भिम्मल मामा ने ग्राम पुस्तकालय के पठनागार में घोषणा की—"बुद्धि भ्रष्ट होने से आदमी सबकुछ कर सकता है।—जित्तन इज सफरिंग फ्रॉम सेक्सोलौजिया। मैलेरिया, फैलेरिया, डायरिया, पायरिया आदि रोगों से भी मारात्मक रोग है यह सेक्सोलौजिया।"

भिम्मल मामा जित्तन बाबू की ड्योढ़ी में रोज जाते हैं, किन्तु उनके कमरे में कभी पाँव नहीं देते। कहते हैं—"बूचड़खाने में लटकते हुए खस्सी बकरों की कटी-छिली हुई देह देखकर माथा चक्कर खाने लगता है। आइ काण्ट स्टैण्ड फ्लेश विद ब्लड· · बरदाश्त नहीं कर सकता मांस के लोथड़ों के बीच···।"

गाँव की सबसे फैशनेबल युवती जयवन्ती का कहना है—"उस दिन फिलिमकट ब्लाउज पहनकर हवेली के पिछवाड़े से जा रही थी। छिः-छिः, कितना असभ्य हो जाता है आदमी शहर में रहते-रहते ? एकटक देखता ही रहा, देखता ही रहा। मै डर गयी—आँखें हैं उसकी या ?"

जितेन्द्रनाथ रोज इन तस्वीरों की ओर देखकर मन-ही-मन बुदबुदाते हैं—"पिजारो, वैन गॉग, रेनोऑ, देगाँ ! तुम्हारी प्रेमिकाओं को प्रणाम ! मानुमेण्ट को एक क्षण भी प्यार करनेवाली भद्र महिलाओं को श्रद्धापूर्ण नमस्कार !"

गाँव के लड़कों ने जित्तन बाबू के पागल होने का बहुत-सा प्रमाण एकत्रित किया है; सिलसिलेवार सुनने को मिलता है पठनागार में।

किन्तु इस पागल अथवा सनकी को छोड़ने से काम नहीं चलेगा। इस गाँव के सामने फैली विशाल परती की डेढ़ हजार बीघे जमीन का मालिक अकेला वही है। दुलारीदाय के बीच प्रसिद्ध कुण्डों का स्वामी, बरदियाघाट से लेकर मीरघाट तक

की धरती का जमींदार !

दस-पन्द्रह वर्षों के बाद गाँव लौटे हैं जित्तन बाबू।··· परानपुर के पानी में अब फिर मिठास लौट आयी है शायद। छः महीने हो रहे हैं, गाँव में जमकर बैठे हैं। टूटते हुए गाँव में यह साबुत किन्तु सनकी आदमी··· ।

परानपुर ही नहीं, सभी गाँव टूट रहे हैं। गाँव के परिवार टूट रहे हैं, व्यक्ति टूट रहा है–रोज-रोज, काँच के बर्तनों की तरह।··· नहीं !··· निर्माण भी हो रहा है।··· नया गाँव, नये परिवार और नये लोग !

गाँवों का नवनिर्माण हो रहा है। टूटे हुए खण्डहरों को साफ करके नींवें डाली जा रही हैं। शिलान्यास हो रहा है। खूब धूमधाम से नयी इमारतों की बँधाई-गँथाई चल रही है। ·· नयी ईंट के साथ पुरानी किन्तु काम के योग्य ईंटों को मिलाकर दिवाल बना रहा है राजमिस्त्री। अपनी बसूली से वह पुरानी ईंटों को बजा-बजाकर कहता है–"इसी ईंट को असली सूरजमुखी ईंट कहते हैं।··· यह हमारे ठेकेदार साहब की ईंट नहीं कि मुट्ठी में मसलकर, आँख में झोंक दिया··· ।"

गाँव के बड़े-बूढ़ों का कहना है, कूप खोदते समय, नींव लेते समय मिस्त्री और मजदूरों की पीठ पर सवार रहना चाहिए। माटी के नीचे से न जाने कब क्या चीज निकल आये !

सतर्क दृष्टि से देखना होता है; चमकदार चीज को पैर के नीचे दबा रखते हैं ये। समय-समय पर इन गड्ढों में खुद उतरकर देखना बुद्धिमानी है। नयी इमारत की बुलन्द होनेवाली दीवारों की गँथाई देखिए–कच्ची ईंटों पर नजर रखिए !

जित्तू अधूरी कहानी के सपने देखता सोया पड़ा है। वह कैसे जगेगा ? वह नहीं जगेगा तो देवी मन्दिर का खाँड़ा कौन उठायेगा··· ? एक-एक आदमी पाप-मुक्त कब तक होगा ? उठ जित्तू ! तुर-तुत्तु-उ-त्त्-ऊ-तू-ऊ !

ग्राम परानपुर, थाना रानीगंज, परगना हवेली ।

जिले के अन्य परगनावाले हवेली परगनावालों पर व्यंग्य करते हैं। चुटकी लेते हुए कहते हैं–कहाँ घर है ? हवेली परगना ? · हवेली परगना में लड़का भी पैदा होता है ?

परानपुर के नौजवानों ने हमेशा मुँहतोड़ उत्तर दिया है–"परगना हवेली में होने से क्या हुआ ? हम लोग परानपुर के प्रतिष्ठित समाज के वंशधर हैं।" नौजवानों की बात में सच्चाई है। परानपुर की प्रतिष्ठा सारे जिले में है। सबसे उन्नत गाँव समझा जाता है। इस इलाके मे सबसे उन्नत गाँव है परानपुर। किन्तु, जिस तरह बाँस बढ़ते-बढ़ते अन्त में झुक जाता है, उसी तरह यह गाँव भी झुका है। ·· अब इस सब-डिविजन-भर के लोग यहाँ के दस वर्ष के लड़के से भी बात करते समय

अपना पाकेट एक बार टटोलकर देख लेते हैं। फारबिसगंज बाजार की किसी दुकान में चले जाइए, ज्यों ही मालूम हुआ कि परानपुर का ग्राहक आया है, दुकानदार अपनी बिखरी हुई चीजों को समेटना शुरू कर देता है।··· हाकिम हुक्काम भी यहाँ के लोगों से बातें करते समय इस बात का खयाल रखते हैं कि सिर्फ एक गाँव में, एक ही वर्ष के अन्दर सरकार के तीन-तीन विभागों के अधिकारियों की आँखों में धूल झोंकी गयी।··· ट्रेन के चेकर जानते हैं, परानपुर के लोग टिकट लेकर गाड़ी में नहीं चलते। चार्ज करनेवाले चेकर को रोड़े और पत्थरों से भाड़ा चुकाते हैं ये।

गाँव की आबादी है करीब सात-आठ हजार। विभिन्न जातियों के तेरह टोले हैं। मुसलमान टोली छोटी है, पचास घर रह गये हैं अब। परानपुर की पुरानी प्रतिष्ठा की रक्षा आज भी ये सामूहिक रूप से करने की बात सोच सकते हैं। पहले पढ़े-लिखे लोगों की ही बात लीजिए! आठ ग्रेजुएट, दो एम. ए., एक शास्त्री (काशी विद्यापीट), पचास मैट्रिक्युलेट, एक सौ मिडिल पास। डेढ़ दर्जन कवि, दो साहित्यालंकार और एक नाटककार। लड़कियाँ भी पढ़ी-लिखी हैं। जिले की एकमात्र साहित्यिक साप्ताहिक पत्रिका में एक कुमारी कवयित्री की रचनाएँ हमेशा सचित्र छपती हैं।··· और रग्घू रामायनी को क्या कहियेगा? एक अक्षर का भी बोध जिसे नहीं, किन्तु बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड तक क्षेपक सहित जिसके कण्ठ में है! गोस्वामी तुलसीदास जिसे स्वप्न में दर्शन देते हैं··· जो तुलसीकृत रामायण को गाँव की बोली में जोड़कर गाता है–सारंगी का गीत!

उस पुराने पोखरे के पास जो झण्डे का बाँस दिखलायी पड़ता है, वही है स्कूल–उच्चांगल विद्यालय। सन् 1929 में ही मिडिल वर्नाकुलर स्कूल की स्थापना हुई थी। उच्चांगल तो दस साल से हुआ है। हाईस्कूल के लिए पैसे जिस वृद्ध दाता ने दिये थे, उसके लड़कों ने अपने पिता के नाम पर स्कूल के नामकरण का विरोध किया था! 'चमरू चौधरी हाईस्कूल' नहीं, दि ब्राह्मण एच. ई. स्कूल'! 'दि' जोड़ा है भिम्मल मामा ने। गत पाँच वर्षों से इस स्कूल में कोई हेडमास्टर नहीं टिक पाते। जाति और पंचायत के झगड़े! गाँव की दलबन्दी के ऊपर चढ़े करेले की भुजिया स्कूल कमिटी की कड़ाही में भूँजी जाती है न! पिछले साल हेडमास्टर ने कई मास्टरों को अपनी पार्टी में कर लिया और दूसरे ही दिन असिस्टेण्ट हेडमास्टर साहब की मरम्मत कर दी। असिस्टेण्ट हेडमास्टर साहब को विरोधी दल के लोगों के अलावा स्वजाति के लोगों की मदद मिली। गाँव में 'मेजरौटी' शब्द का अर्थ सभी समझते हैं। जब मेजरौटी है तो क्या बात है! सारे स्कूल को घेरकर लाठी, ईंटों और पत्थरों से सभी को अच्छी शिक्षा दी थी।··· भिम्मल मामा ने इसलिए इस स्कूल के आगे 'दि' जोड़ दिया। एक कन्या विद्यालय है। उस केले के बड़े-बड़े पत्तों के बीच से जो नये मकान का हिस्सा दिखायी दे रहा है, वही है गर्ल-स्कूल। गाँव की ही अध्यापिकाएँ हैं। विद्यालय की लड़कियाँ कोरस में जन-गण-मन बहुत सुन्दर गाती हैं।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने प्रस्ताव पासकर परानपुर अस्पताल को बन्द कर दिया

है।·· भूमिहार डॉक्टर को राजपूतों ने मिलकर धमकी दी। कायस्थ डॉक्टर के खिलाफ दरखास्त दी गयी थी—पैसा लेकर भी दूसरी जातिवालों को बढ़िया दवा नहीं देता, और कायस्थों को मुफ्त में दवा और सूई देकर इलाज करता है।·· डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने अस्पताल को बन्द कर दिया, पाँच साल पहले।

पुस्तकालय भी है। 1930 में ही स्थापना हुई है। 1944 से सरकारी सहायता मिलती है। पाँच साल पहले रेडियो भी दिया गया, राज्य सरकार की ओर से। आजकल बन्द है। · पुस्तकालय के कुछ सदस्यों का कथन है—छित्तनबाबू के बड़े भाई साहब ने ही पुस्तकालय के लिए अपने बँगले की एक कोठरी दी थी। चार महीना पहले की बात है, छित्तनबाबू ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया—"यहाँ लायब्रेरी कहाँ है ? खबरदार, यदि बँगले की सीढ़ी पर किसी ने पैर भी रखा तो फौजदारी हो जायेगी। ट्रेसपासिंग का मुकद्दमा कैसा होता है, किसी वकील से जाकर पूछो।" छित्तनबाबू अन्यायी हैं, सार्वजनिक पुस्तकालय को इस तरह हथिया लेना छोटी बात नहीं ! निन्दा का प्रस्ताव पास · ।

छित्तनबाबू सुनाते हैं—"पिछले दस वर्षों से पुस्तकालयवाले सरकार से घरभाड़ा के नाम पर चालीस रुपये महावार वसूलते हैं। पूछिए, कभी एक पैसा भी दिया है मुझे ? चार-पाँच हजार रुपये की बात है, खेल नहीं। · कहाँ गये रुपये, कुछ हिसाब तो होना चाहिए ? सरकारी रेडियो बिकूबाबू की सुहागरात में बजने के लिए गया, उसी रात से उनके यहाँ खराब होकर पड़ा है। लेकिन, बैटरी का पैसा सरकार से बराबर वसूला गया है।"

बिकूबाबू और छित्तनबाबू के झगड़े में जातिवाद के पैंतरे। फिर से सेक्रेटरी-प्रेसीडेण्ट कलह-काण्ड।··· इसलिए, छित्तनबाबू का पंचवर्षीय पुत्र 'दीपशिखा' के पृष्ठों को काट-काटकर दीवार पर चिपकाता है, उसे कौन मना कर सकता है ?

पिछले साल 'नवीन परानपुर ग्राम पुस्तकालय' खुला है। नाट्यशाला का पक्का स्टेज आज भी है। टीन की ऊँची छत आँधी में उड़ गयी है। स्थापना—1920 में। 1921 में राजबनैली चम्पानगर के दरबार में कलकत्ता की लइडन कम्पनी को पानी-पानी कर दिया था परानपुर-नाटक-मण्डली ने। चार-पाँच साल पहले तक नाटक खेले गये हैं। अब तो · ।

बहुत उन्नत गाँव है परानपुर। सात-आठ हजार की आबादी है। प्रत्येक राजनीतिक पार्टी की शाखा है यहाँ। धार्मिक संस्थाओं के कई धुरन्धर धर्मध्वजी इस गाँव में विराजते हैं। पण्डित नेहरू तीन बार पदार्पण कर चुके हैं इस गाँव में। लाहौर कांग्रेस के बाद पहली बार, दूसरी बार 1936 में चुनाव के दौरे पर और पिछले साल कोसी प्रोजेक्ट देखने आये थे जब।

पिछले आम चुनावों में सॉलिड वोट कांग्रेस को नहीं मिला, इसलिए इस बार सॉलिड वोट प्राप्त करने के लिए हर पार्टी की शाखा प्रत्येक मास अपनी बैठक में महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास करती है।

पिछले आठ-दस वर्षों से जातिवाद ने काफी जोर पकडा है। राजनीतिक पार्टियाँ

भी जातिवाद की सहायता से संगठन करना जायज समझती हैं। राजनीति के दंगल में सबकुछ माफ है।

गाँव में अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध और अपभ्रंश रूप का धड़ल्ले से व्यवहार होता है—नामनेशन, मेजरौटी, पौलटीस, पौलीसी।

और सारे गाँव के मामा—भिम्मल मामा—पढ़े-लिखे पागल समझे जाते हैं। उनके गढ़े हुए शब्दों का प्रचलन हो रहा है धीरे-धीरे—दिमाकृषि, प्रद्युस, ट्रा—अर्थात् डेमॉक्रेसी, प्रोड्यूस, टेलीग्राम !

परानपुर गाँव के पच्छिमी छोर पर परानपुर इस्टेट की हवेली है।

पोखरे के दक्खिनवाले महार पर नारियल, सुपारी, साबूदाना तथा यूक्लिप्टस के पेड़ों में बया के सैकड़ों घोंसले लटक रहे हैं। महार से दस रस्सी दूर हैं कलमी आमों के बाग। पोखरे के पच्छिमी महार पर कचहरी-घर है; पच्छिम-दक्षिण कोण पर इस्टेट की हवेली की पुरानी इमारत का एक अंश आज भी टिका हुआ है। ढहती हुई हवेली की एक-एक ईंट पर नागरी अक्षर प. पु. ह. का मार्का है। प. पु. ह. अर्थात् परानपुर हवेली। परानपुर इस्टेट के मालिक की ड्योढ़ी—परानपुर हवेली। परानपुर इस्टेट।

करीब सत्तर-अस्सी साल पहले हवेली की नींव डालने के दिन इस्टेट के मालिक स्वर्गीय श्री शिवेन्द्रनाथ मिश्रजी ने काली-बाड़ी में प्रार्थना की थी—"पतनीदार से जमींदार, जमींदार से राजा, राजा से महाराजा का खिताब हासिल करा दो··· माँ तारा !"

पतनीदार शिवेन्द्र मिश्र ने मरने के दिन भी मान-भरे स्वर में कहा था—"माँ ! मेरी मनोकामना तुमने पूरी नही की। पतनीदार का पतनीदार ही रह गया सारा जीवन !"

शिवेन्द्र मिश्र की एकान्त मनोकामना भले ही पूरी न हुई हो, किन्तु परानपुर इस्टेट का नाम जिले के कोने-कोने में फैला हुआ है—आज भी। इलाके के मुकदमेबाज़ आज भी दीवानी तथा फौजदारी मुकदमों की राय सुनने के दिन शिवेन्द्र मिश्र के नाम का जाप करते हैं—पचास बार। अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए शिवेन्द्र मिश्र ने जो-जो करतब किये, वे कथा-उपकथा, परिकथा तथा किंवदन्तियों के रूप में आज भी सुने जाते है—घाट बरदिया का व्यवहार, करो बेगारी उतरो पार !

गाँव के उत्तर-पच्छिम कोण में, पाव कोस दूर जो अकेला ताड़ का पेड़ खड़ा है, वही है वरदिया घाट। वहीं, दुलारीदाय आँचल में दीप लेकर प्रकट हुई थी। इस घाट को पार करनेवालों को घटवारी नहीं लगती। लेकिन बेगारी ? पन्द्रह साल पहले तक चाहे लाट साहब की गाड़ी हो या राजा साहब की सवारी, घाट के दोनों ओर बरसात के पहले सड़क पर एक कुदाली मिट्टी जरूर डालनी पड़ती थी। आजकल, दोनों ओर की सड़कों में कमर-भर गड्ढे हो गये हैं।

बेगारी बन्द हो गयी है, किन्तु घाट पार करते समय अब भी दूर के

गाडीवान–हिन्दू हो या मुसलमान–हवेली की ओर माथा झुकाकर नमस्कार करते हैं।

हवेली के पिछवाडे मे पॉच रस्सी दूर मिट्टी का ऊँचा बुर्ज है, चालीस फीट ऊँचा। मिसर बुरुज!

बुर्ज पर मन्दिरनुमा एक छोटा-सा घर है–जो सदा से राही-बटोहियो को रहस्य-रोमाचपूर्ण परिकथाओ का सदावर्त बॉटता आया है।

और इस अकेले ताडवृक्ष पर ब्रह्मपिशाच रहता है। विशाल परती पर डेढ-डेढ सौ एकड की पॉच परिधियो पर इस ब्रह्मपिशाच का राज्य था। प्रत्येक वर्ष शरद की चॉदनी मे वह इन पॉचो चक्रो मे अपना रुपया पसारकर सूखने देता था। असली चॉदी के रुपये, सोने की मुहरे! मानो, आषाढ की पहली वर्षा मे दुलारीदाय की सारी पोठी मछलियॉ परती के बलुवाही पानी के लोभ मे धरती पर छटपटा रही हो! चॉदनी म चमकते हुए चॉदी के रुपये। छटपटाती हुई पोठी मछलियॉ! चितपट चितपट-छटपट!

ब्रह्मपिशाच तथा उसके रुपयो को बहुतो ने अपनी ऑख से देखा, पर किसी की हिम्मत नही हुई कि कभी उसे टोके भी। किसकी मॉ ने ऐसा अगिया बैताल पैदा किया है जो ब्रह्मपिशाच को देखकर भी होश दुरुस्त रख सके?

किन्तु, होश दुरुस्त रखा था शिवेन्द्र मिश्र ने। एक चॉदनी रात के दूसरे पहर मे एक बार ब्रह्मपिशाच मे उनकी मुठभेड हो गयी। एक ओर ब्रह्मपिशाच तो दूसरी आर देवी के दो दो पीठ का सिद्ध तान्त्रिक और उसका नीलवरन घोडा। शालिहोत्र मे कहा है–नीलवरन घोडा। खडक-खडक-खड-ड ड!

ताड के सूखे पत्ते हवा मे खडखडा उठते हैं!

ब्रह्मपिशाच का अन्त मे परास्त कर कैद किया मिश्र ने। सारे रुपये और सारी जमीन। डेढ डेढ सौ एकड के पॉच चक्र। आसामी बामाल! लेकिन पिशाच का धन जाता भी हे पैशाचिक ढग से ही। बाढ के पानी की तरह न आते देर और न जाते देर!

इस चादनी रात मे भी मिसर-बुर्ज पर पेट्रोमेक्स जल रहा है। बुर्ज की सीढियो की मरम्मत हुई हैं। मन्दिरनुमा घर को ताडकर नये तर्ज की एक मीनार बनायी गयी है। जितेन्द्र बाबू जब से गॉव आये हैं, सो दिन उस पर पेट्रोमेक्स जलता है। कुलदीपक प्रमाणित करने के लिए ही शायद!

कुलदीपक जितेन्द्रनाथ मिश्रजी दस पन्द्रह वर्षो के बाद गॉव लौटे है।

मुशी जलधारीलाल दास तहसीलदार और रामपखारन सिह सिपाही। परानपुर इस्टेट के इन दो कर्मचारियो ने मिलकर, कलम की नोक और लाठी के जोर से, जमीदारी की रक्षा की। जमीदारी उन्मूलन की [illegible] से इस्टेट को बचाने का सारा श्रेय मुशी जलधारीलाल दास को है। साबित कर दिया–परानपुर पट्टी पतनी है, जमीन खुदकाश्त है बकाश्त है रैयती हक है–आदि आदि!

इस लैण्ड सर्वे सटलमेण्ट की ऑधी म गाव आये है जित्तन बाबू। मुशी जलधारी के चक्षुकर्ण स देखते सुनते हे, ओर रामपखारन की विद्याबुद्धि से समझते-बूझते हैं।

किसी की कोई बात नहीं सुनते। किसी से मुँह खोलकर बात नहीं करते।

नया ट्रेक्टर खरीद हुआ है। बँटाई करनेवाले किसानों को जमीन से बेदखल किये बिना फार्म बनाना असम्भव है।

दुलारीदाय-जमा की जमीनों में पाट और भदई धान की खेती करने के लिए रोज निकलते हैं जित्तन बाबू। ट्रैक्टर पर सवार, आँखों पर धूपछाँही चश्मा तथा सिर पर ताड़ की पत्तियों का बड़ा कनटोप !

बेदखल किये गये किसान दल बाँधकर रोज नारा लगाते हैं, गलियाते हैं—जालिम, मक्कार, गिरगिट, शराबी, जुआड़ी, इत्यादि !

लैण्ड सर्वे सेटलमेण्ट !

जमीन की फिर से पैमाइश हो रही है, साठ-सत्तर साल बाद। भूमि पर अधिकार ! बँटैयादारों, आधीदारों का जमीन पर सर्वाधिकार हो सकता है, यदि वह साबित कर दे कि जमीन उसी ने जोती-बोयी है।

चार आदमी—खेत के चारों ओर के गवाह, जिसे अरिया गवाह कहते हैं—गवाही दे दें, बस हो गया। कागजी सबूत ही असल सबूत नहीं !

बिहार टेनेन्सी एक्ट की दफा 40 के मुताबिक लगातार तीन साल तक जमीन आबाद करनेवालों को मौरूसी हक हासिल हो जाता था, किन्तु कचहरी की करामात और कानूनी दाँव-पेंच से अनभिज्ञ किसानों की इसमें कोई भलाई नहीं हुई। जमींदारी की प्रथा को खत्म करने के बाद राज्य सरकार ने अनुभव किया—पूर्णिया जिले में एक क्रान्तिकारी कदम उठाने की आवश्यकता है।··· हिन्दुस्तान में, सम्भवतः सबसे पहले पूर्णिया जिले पर ही लैण्ड सर्वे ऑपरेशन का प्रयोग किया गया। जिले के जमीदारों और राजाओं की जमींदारियों का विनाश अवश्य हुआ। किन्तु, हिन्दुस्तान के सबसे बड़े किसान यहीं निवास करते हैं।·· गुरुबंशी बाबू जमींदार नहीं, किसान हैं। दस हजार बीघे जमीन है, दो-दो हवाई जहाज रखते हैं। दूसरे हैं भोला बाबू। पन्द्रह हजार बीघे जमीन है, डेढ़ दर्जन ट्रैक्टर रखते हैं। पर यह बात भी सच्ची है कि वे जमींदार नहीं। किसान सभा की सदस्यता से किस आधार पर वंचित करेंगे उन्हें ? यहाँ पाँच सौ बीघेवाले किसान तृतीय श्रेणी के किसान समझे जाते हैं और हर गाँव पर इन्हीं किसानों का राज है। भूमिहीनों की विशाल जमात ! जगती हुई चेतना !·· जमींदारी-उन्मूलन के बाद भी हर साल फसल कटने के समय एक-डेढ़ सौ लड़ाई-दंगे और चालीस-पचास कत्ल होते रहे तो फिर से जमीन की बन्दोबस्ती की व्यवस्था की गयी।··· सारे जिले में गत तीन वर्षों से विशाल आँधी चल रही

बौण्डोरी ! बौण्डोरी !··

सर्वे का काम शुरू हो गया है। अमीनों की फौज उतरी है !··· बौण्डोरी, बौण्डोरी !

बौण्डोरी अर्थात् बाउण्ड्री। सर्वे की पहली मंजिल। अमीनों के साथ ही गाँव में नये शब्द आये हैं—सर्वे से सम्बन्धित ! बच्चा-बच्चा बोलता है, मतलब समझता है।

सर्वे की पहली मंजिल—बाउण्ड्री। फिर, मुरब्बा, किश्तवार, तब खानापूरी, तनाजा, तसदीक, और दफा तीन, छः, नौ !

जरीब की कड़ी, तख्ती, राइटेंगल, गुनियाँ, कम्पास आदि लेकर अमीन लोग अपने टण्डैलों के साथ धरती के चप्पे-चप्पे पर घूम रहे हैं। जरीब की कड़ी खनखनाती हुई सरक रही है—खन, खन, खन ! सर्वे के अमीन साहब का कहना है—"यदि किसी प्लॉट पर कौआ भी आकर कह दे कि जमीन मैंने जोती-बोयी है, तो उसका नाम लिखने को हम मजबूर हैं। यही कानून है। यह मत समझो कि बौण्डोरी बाँध रहा हूँ।"

जिले-भर के किसानों और भूमिहीनों में महाभारत मचा हुआ है। सिर्फ भूमिहीन नहीं, डेढ़ सौ बीघे के मालिकों ने भी दूसरे बड़े किसानो की जमीन पर दावे किये हैं !··· हजार बीघेवाला भी एक इंच जमीन छोड़ने को राजी नहीं।

दुखरन साह के कुल में कोई रोनेवाला नहीं। अस्सी वर्ष की उम्र है। छोटी दुकान है और पचास बीघे जमीन। उसने सोचा—भूदान मे दो बीघे जमीन दान देने से अड़तालीस बीघे तो बच जायेंगे। जब हर चप्पे पर तनाजा पड़ने लगा तो पागल हो गया, दुखरन साह बेचारा बूढ़ा, सीधे विनोबाजी के पास रवाना हुआ—क्या बाबा ! तुरत दान देकर तो मेरा महाकल्यान हो गया ! लौटा दीजिए मेरी जमीन—मेरा दान-पत्तर ! ले लो अपनी कण्ठीमाला !

छै महीने मे ही गाँव का बच्चा-बच्चा पक्की गवाही देना सीख गया !

छै महीने में ही गाँव एकदम बदल गया है। बाप-बेटे में, भाई-भाई में अपने हक को लेकर ऐसी लड़ाई कभी नहीं हुई। अजीब-अजीब घटनाएँ घटने लगीं।

सरबन बाबू की ही बात लीजि[illegible]। सरबन बाबू इलाके के नामी-गरामी आदमी हैं। गाँव में अब भी काफी प्रतिष्ठा है। जवार-भर की पचायतों में जाते हैं। हाल ही में काशीजी से शिवलिंग मँगवाकर स्थापना करवायी है। उनके छोटे भाई लालचन बाबू को किसी ने बताया कि सभी पर्चो पर सरबन बाबू अपने लड़कों के नाम या स्त्री का नाम चढ़वा रहे हैं। लालचन बाबू का नाम कहीं भी नहीं—एक प्लॉट पर भी नहीं। जिन पर्चो पर सरबन बाबू का नाम चढ़ा है, लालचन बाबू का नामोनिशान नहीं। सरबन बाबू के नाम के साथ वगैरा भी नहीं है, जो लालचन बाबू कभी दावा भी कर सकें।

लालचन बाबू पढ़े-लिखे नहीं हैं तो क्या हुआ ? इतनी-सी बात उनको समझ में नहीं आयेगी ? उनके वकील साहब ने फीस लेकर सलाह दी है, मुफ्त में नहीं। आपको आगे बढ़ने—याने कानून-कचहरी करने—की कोई जरूरत नही; बड़े भाई को ही पहले आगे बढ़ाइए !

लालचन बाबू ने दूसरे ही दिन मार लाठी से सिर फोड़कर, सरबन बाबू को

यानी अपने बड़े भाई साहब को आगे बढ़ा दिया है।

धन्य हैं सरबन बाबू ! भरी कचहरी में हल्फ लेकर कह दिया—"लालचन मेरा कोई नहीं।... इसके बाप का ठिकाना नहीं। मेरे बाबूजी के मरने के तीन बरस बाद .. ।"

टेर्रिबल !— हाकिम ने अचरज से मुँह फाड़ते हुए कहा था—टेर्रिबल ! बड़े-बड़े इज्जतदारों की हवेली में बन्द, घूँघटों में छिपी बेवा औरतें पर्दे को चीरकर आगे बढ़ आयी हैं; अपने नाबालिग वंशधरों की उँगलियाँ पकड़े खड़ी हैं—"हुजूर ! देखा जाये।... जरा इन्साफ किया जाये हुजूर ! इसका बाप कमाते-कमाते मर गया। कोल्हू के बैल की तरह सारी जिन्दगी खटते-खटते बीती। और खाते में कहीं भी उसके लड़के का नाम नहीं ? नाम दरजकर लिया जाये हुजूर !"

कॉलेजों में पढ़नेवाले विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी छोड़कर दौड़े आये हैं। छोटे को प्राणों से भी बढ़कर प्यार करते हैं बाबूजी। छोटे के नाम से सारी उपजाऊ जमीनें लिखवा दे सकते हैं !... कोई भरोसा नहीं किसी का। खटा-खट, खटा खट-खट-खट ! —गाँव की अली-गली, अगवार-पिछवाड़ की ओर निकलनेवाली पगडण्डियाँ बन्द की जा रही हैं। डर है नक्शा बन जाने का। खेत के बीचोबीच पगडण्डी यदि दर्ज हो गयी नक्शे में, तो हो चुकी खेती !

तीन साल से चल रही है आँधी।

उधर, दीवानी कचहरियों में—बेदखली, फसल-जब्ती, टाइटल-सूट का बाजार गर्म है। ठलुवे वकीलों को भी दस रुपये रोज की आमदनी होने लगी है।

अमीन साहब कहते हैं—"असल चीज है बाउण्ड्री। अभी जिसका नाम दर्ज हो गया, समझो, पत्थर पर रेखा पड़ गयी।" इसीलिए जमीन के मालिक, बँटैयादार, सभी उन्हें हमेशा घेरे रहते हैं। न जाने कब कोई आये और तनाजा दे दे जमीन पर। तनाजा सर्वे का सबसे ज्यादा धारवाला शब्द है। तनाजे का फैसला कानूनगो साहब करते हैं। इनको अमीन से ज्यादा पावर है। सभी अमीन और सुपरवाइजर इनके अण्डर में रहते हैं।... दिन-रात कचहरी लगी रहती है कानूनगो साहब की। कानूनगो के चपरासीजी को इलाके के बड़े-बड़े जमीनवाले हाथ उठाकर जयहिन्द करते हैं—"जयहिन्द चपरासीजी ! कहिए, कानूनगो साहब को चावल पसन्द आया ? असली बासमती चावल है, अपने खर्च के चावल से निकालकर भेजा था। जी, जी, जी, हाँ !... घी आज आ जायेगा।"

कचहरी लगी रहती है देश-सेवकों की, समाज सेवकों की। कांग्रेसी, समाजवादी, कम्युनिस्ट, सभी पार्टीवालों ने अपने बाहरी वर्कर मँगाये हैं। गाँव के वर्करों की बात उनके अपने ही परिवार के अन्य सदस्य नहीं मानते। बहुत-से वर्करों का ट्रायल हुआ है, होनेवाला है। सेवकों की सेवाओं की परख हो रही है। सभी पार्टी के कार्यकर्त्ता सतर्क हैं, सचेष्ट हैं, बँटाईदारी करनेवालों के नाम पर्चा दिलवाने का व्यापार बड़ा टेढ़ा है।

किन्तु लुत्तो की बात निराली है ! शासक-पार्टी का कार्यकर्त्ता है—थाना कमिटी

के सभापति के प्रियजनों में से एक।· थाना कमिटी के सभापतिजी जाहिल हैं। उनका विश्वास है कि पढ़े-लिखे लोग काम कम, बात ज्यादा करते हैं। इसलिए थाने-भर की ग्राम कमिटियाँ एक-से-एक जाहिलों के जिम्मे लगायी गयी हैं। फिर, लुत्तो ने अपने एक-एक लीडर को खुश किया। वर्कर के ही बल पर लीडर, लीडर के बल पर मिनिस्टर! · बड़े लोगों की सेवा कभी निष्फल नहीं जाती।· सर्वे के समय लुत्तो की कीमत और बढ़ गयी है। सभी धीरे-धीरे जान गये हैं, सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट पार्टीवाले जिनकी मदद करेंगे, उन्हें जमीन हर्गिज नहीं मिल सकती, ब्रह्मा-विष्णु-महेश उठकर आयें, तब भी नहीं।··· इसमें बहुत बड़ा रहस्य है, जिसे सिर्फ लुत्तो ही जानता है।

ब्राह्मण-छतरी उसकी चरण-पूजाकर जाते हैं। बी. ए., एम. ए. को तो लुत्तो बाबू गाय-बैल समझता है—गोशाला का।

··· खेत-खलिहान, घाट-बाट, बाग-बगीचे, पोखर-महार पर खनखनाती हुई जरीब की कड़ी घसीटी जा रही है—खन-खन-खन !

नया नक्शा बन रहा है।

नया खाता, नया पर्चा और जमीन के नये मालिक।

तनाजा के बाद तसदीक। तसदीक करने के लिए कानूनगो से ज्यादा पावरवाले नये हाकिम साहब आये हैं। ए.एस.ओ. साहब—आसिस्टेण्ट सर्वे ऑफिसर। हर नया हाकिम नया एलान करता है—बाउण्ड्री-तनाजा हम कुछ नहीं जानते। हम फिर शुरू से जाँच करेंगे। यही सरकुलर आया है।

आठ वर्षो से जातिवाद के दीमकों का मुख्य आहार रहा है मनुष्य का हृदय। सर्वे की आँधी में छलनी-जैसा आदमी का दिल—पीपल के सूखे पत्ते की तरह उड़ रहा है।

पिछले डेढ़ साल से गाँव मे न कोई पर्व ही धूमधाम से मनाया गया है और न किसी त्योहार मे बाजे ही बजे हैं। इस दरम्यान, संसार में आनेवाले नये मेहमानों के स्वागत में—सोहर का गीत, सो भी कहीं नहीं गाया गया। लड़के-लडकियों के ब्याह रुके हुए हैं।·· गीत के नाम पर किसी के पास एक शब्द भी नहीं रह गया है मानो। मधुमक्खी के सूखे मधुचक्र-सी बन गयी है यह दुनिया !

सर्वे सेटलमेण्ट के हाकिम साहब परीशान हैं। परानपुर इस्टेट की कोई भी जमा ऐसी नहीं जो बेदाग हो। सभी जमा को लेकर एकाधिक खूनी मुकदमे हुए हैं; आदमी मरे हैं, मारे गये हैं।·· ऐसे मामलों में बगैर जिला सर्वे ऑफिसर से सलाह लिये वे अपनी कोई राय नहीं दे सकते।

सर्वे की कचहरी छित्तनबाबू के गुहाल मे लगी है। हाकिम इजलास पर बैठ गये।··· पुरानपुर इस्टेट के कारपरदाज मुंशी जलधारीलाल दास की सूरत से ही नफरत है ए.एस.ओ. साहब को।

"कहाँ-औँ-औँ जितेन्द्रनाथ मिसरा आ-आ-आ ! जितेन्द्रनाथ मिसरा हा-आ-आ-जिर हो ! कहाँ मीर समसुद्दीन···" सेटलमेण्ट ऑफिसर के चपरासी ने हाँक लगायी। दो हाँक लगाने के बाद, विरक्त होकर बड़बड़ाने लगा–"इस्टेट के कारकुन के कान के पास लौडपीसकर कौन लगाने जाये !"

मुंशी जलधारीलाल दास कान से कम सुनते हैं। कितना कम सुनते हैं, यह कहना कठिन है। अपने काम की बात सुनते हैं जल्दी, बेकाम की बातों के समय निपट बधिर बने मुस्कराते रहते हैं।

हाकिम को मुंशी जलधारी की यह मुस्कराहट जरा भी नहीं सुहाती। आज दुलारीदाय-जमा की नत्थी खुलेगी। दासजी कागजात की झोली लेकर कचहरी-घर में दाखिल हुए।

हाकिम ने देखते ही चिढ़कर कहा–"जितेन्द्रनाथ आज भी कचहरी नहीं आये ? मालूम है सब मिलाकर डेढ़ सौ रुपये जुर्माना हो चुका है।··· पहले जुर्माना दाखिल कीजिए।"

मुंशी जलधारीलाल दास झोली से डेढ़ सौ रुपये निकालकर पेशकार साहब के सामने गिनते हैं। तीस नत्थी का, पाँच रुपये के दर से–डेढ़ सौ रुपये !

हाकिम को भी जिद सवार है, देखें कितना जुर्माना भरते हैं जितेन्द्रनाथ बहादुर !

मुंशी जलधारीलाल को भरी कचहरी में मदारी के बन्दर जैसा नाचने में आनन्द आता है हाकिम को, कभी-कभी। मुंशी की चमड़ी निश्चय ही गैंड़े की चमड़ी-जैसी है। उनकी खिचड़ी मूँछों के अन्दर की मुस्कराहट को कभी मन्द नहीं कर सके हाकिम साहब !

"इस लकड़ी के डिब्बे में क्या ले आये हैं दासजी ? बुलबुलतरंग है क्या ?" हाकिम ने हँसते हुए पूछा।

"हा-हा-हा-हा-हा"–कचहरी के लोग ठटाकर हँस पड़े–"बुलबुलतरंग !"

"दस्तावेज है हुजूर। दुलारीदाय-जमा का सेलडीड–दानपत्तर।"

"दानपत्र ? डिब्बे में ?" हाकिम साहब पुनः मुस्कराकर कोई बात ढूँढ़ रहे हैं। डिब्बे को हाथ मे लेते ही बोले–"यह तो पूरा अलादीन का चिराग मालूम होता है।"

"हा-हा-हा-हा-हा–अलादीन का चिराग–अलबत्त दिलद्दार यार हैं हाकिम साहेब· !"

"चिराग गोल होता है, इसकी लम्बाई बारह इंच है हुजूर !" दासजी की दबी हुई बोली मूँछों की झुरमुट से निकली।

हाकिम जरा अप्रतिभ हो गये।··· चन्दनकाष्ठ का कास्केट। हाकिम ने कास्केट को नाक से सूँघते हुए पूछा–"दानपत्तर में इत्र लगाकर रखा गया है क्या ?"

"दानपत्तर–इत्तर–हा-हा-हा-हा !"

"नहीं हुजूर ! असली मलयागिरि चन्दनकाठ है।" दासजी अपनी मुस्कराहट को धीरे-धीरे खोलना जानते हैं।

कास्केट की कारीगरी पर हाकिम की आँखें हठात् स्थिर हो जाती हैं।... पेड़, पहाड़, झरना और काठ का मन्दिर। चित्रकला से थोड़ी-सी दिलचस्पी रखनेवाला पहचान सकता है, यह नेपाली कारीगरी है।

"पशुपतिनाथ मेला, नेपाल में खरीद हुआ था हुजूर !"

"अच्छा ?" हाकिम साहब कास्केट के कील-कब्जे को ध्यान से देखते हैं।

"असली सोना है।" कास्केट के अन्दर से गोल लपेटा हुआ दानपत्र निकालकर, जरीदार रेशमी डोरी और डोरी के झब्बों को कुछ देर तक देखते हैं। दानपत्र के प्रारम्भिक अंश में जापानी पद्धति से—कदलीवृक्ष, मंगलघट, जौ की बालियाँ अंकित हैं। सधे हुए हाथ के मोती-जैसे अंग्रेजी अक्षर !

हाकिम साहब ने पिछले साल आई. ए. एस. परीक्षा की तैयारी के समय ही नन्दलाल बसु का नाम सुना था—पहली बार। आजकल प्रश्नो में, साधारण ज्ञान की बातो मे यह सब भी पूछा जाता है—चित्रकार, गवैया, बजवैया, नचवैया ! आदमी कितने नाम याद रखे !

"क्या लिखा है ? लाइखाट... ?"

"लिखितम् है हुजूर। रोमन में लिखा हुआ है—लिखितम्।"

हाकिम ने मुंशी जलधारीलाल की ओर गौर से देखा—कौन कहता है यह आदमी बहरा है ?

"यह मिरोस रोजउड कौन थी ?"

कौन थी यह मेम, हाकिम साहब के सिर के छोटे-छोटे बाल अचरज से खड़े हो गये, मानो ! सुपुष्ट अंग्रेजी लिपि में संस्कृत वाक्य—देवपुत्रतुल्य मम प्राणाधिक चिरंजीवी जितेन्द्रनाथ—लिखनेवाली अंग्रेज महिला कौन थी ?

दुलारीदायवाली जमा में मुसलमान टोली के मीर समसुद्दीन ने तनाजा दिया है। ढाई सौ एकड़ प्रसिद्ध उपजाऊ जमीन ... एक चकबन्दी और पाँच कुण्डों मे तीन पर पन्द्रह साल से आधीदारी करने का दावा किया है उसने।

समसुद्दीन मीर मुसलमान टोली का मुखिया है। स्वराज होने से पाँच दिन पहले तक अपने चेले-चाँटियों के साथ ढोलक पर कव्वाली गाता था—'कांगरेसी मुस्लमाँ मक्कार हैं, गद्दार हैं, काफिरो के चन्द टुकड़ों पर पले ।' लेकिन, स्वराज्य होते ही—रातोंरात सिर्फ परानपुर गाँव की मुसलमान टोली में ही नहीं, आसपास के गाँवों के मुसलमानों में भी एक ऐसी कानाफूसी का प्रचार उसने किया कि एक तिहाई मुसलमानों ने पाकिस्तान भाग जाने में ही अपना कल्याण समझा। समसुद्दीन कहता है—"जो रह गये हैं, सब मीर समसुद्दीन के साथ नमाज पढ़ते हैं। जो मीर समसुद्दीन कहेगा, वही बाकी मुसलमान भी दुहरायेंगे।"

समसुद्दीन कुछ दिनों तक स्थानीय राजनीतिक दलों के बाजार का बिना बिका हुआ कीमती सौदा बनकर दल के नेताओं को सुनाता रहा—जिस तरह हिन्दुओं में ब्राह्मण, उसी तरह मुसलमानों में मीर-पीर-फकीर ! मैं तीन हजार साढ़े आठ सौ

मुसलमानों का मीर हूँ। जो कहूँगा, तीन हजार साढ़े आठ सौ मुँह से। जो करूँगा–तीन-दूना··· ।

थाना कांग्रेस के सभापतिजी यों ही लुत्तो को इतना नहीं मानते !··· लुत्तो में एक बड़ा गुण है, उसको बात बहुत जल्दी सूझती है। किसी भी समस्या की सदरी चाबी नहीं मिल रही हो तो लुत्तो से कहिए, तुरत एक चोरचाबी तैयार कर देगा। जब समसुद्दीन मीर ने अपनी कीमत एम. एल. ए., एम. पी. के रूप में बतायी तो सभी पार्टीवालों ने आपस में सोच-विचार करने के लिए बैठक बुलायी।··· सभी पार्टीवाले तैयार हुए। लेकिन थाना कांग्रेस के सभापति साहब के जिला सभापति साहब तैयार नहीं हो रहे थे।··· डिस्ट्रिक्ट बोर्ड-वोर्ड की मेम्बरी समसुद्दीन क्यों लेगा, जब दूसरी पार्टीवाले उसे तकदीर लड़ जाने पर मिनिस्टर तक बनाने को तैयार हैं। लुत्तो ने कहा–"सभापतिजी ! आप लोग तो बेकार परेशान हो रहे हैं। खुशामद करने की क्या जरूरत ? मैं जानता हूँ साफ बात ! वह पाकिस्तानी एजेण्ट है। कितना सबूत लीजिएगा आप ? हम देंगे, चलिए··· । अभी भी उसके घर में रजाकार-मार्का टोपी है।"

दोनों सभापति एक ही साथ मुस्करा उठे–"जाहिल ही है लुत्तो, लेकिन है असल राजनीतिक लंगीबाज !"

राजनीतिक लंगी लग गयी मीर समसुद्दीन को और तीसरे ही दिन मीर समसुद्दीन कांग्रेसी हो गया। थाना कमिटी का मेम्बर है वह। एम. एल. ए. या एम. एल. सी. नहीं बनायें कोई बात नहीं, सर्वे में पैरवी करके जमीन दिलवा देना कांग्रेस का कर्तव्य है। इसलिए, समसुद्दीन की ओर से पैरवी कर रहा है खुद लुत्तो !

दस्तावेज से प्रभावित होकर हाकिम टिफिन के लिए उठ गये हैं। इतनी देर में लुत्तो ने अपनी बुद्धि लड़ाकर बहुत-सी कटहा बाते तैयार कर ली हैं। हाकिम के आते ही लुत्तो ने कहा–"हुजूर ! भारी जालिया खानदान है मिसर खानदान ! कौन नहीं जानता, एक जमाने में ऐसे-ऐसे दस्तावेज मिसर के घर में रोज बनते थे। हुजूर, इस खानदान का तो गाना भी छापी होकर बिक चुका है, एक जमाने में !"

हाकिम मुस्कराने लगे। तब लुत्तो का कलेजा डेढ़ हाथ का हो गया। कचहरी-घर में जमी भीड़ की ओर देखकर कहा लुत्तो ने–"भाई, कोई बूढ़ा-पुराना नहीं है ? याद है किसी को वह गीत ?"

भीड़ में एक हल्की मुस्कराहट फैली–बालिस्टर का भी कान काट लीहिस लुत्तो ! क्यों ?" एक बूढ़ा गाने को तैयार है, बशर्ते कि··

हाकिम ने कहा–"गीत-भजन छोड़िए। कागजी सबूत दिखलाइए।"

इस बात पर लुत्तो अड़ गया··· । हाकिम को मालूम होना चाहिए कि लुत्तो भी कोई पोजीशन रखता है कांग्रेस में···जितेन्द्र बाबू के एक कागज के बक्से को एक घण्टे तक निहारा है हाकिम ने ! लुत्तो जनता का लीडर है। लुत्तो की ओर से पेश होनेवाले गीत की एक कड़ी सुननी ही होगी हाकिम को। क्योंकि इसी गीत से साबित होगा

कि मिसर खानदान कितना भारी जालिया खानदान है। जब जालिया खानदान एक बार साबित हो चुका है तो फिर सब कागज जाली ! शुरू करो जी भूलोटन मड़र !

"अरे, लोटवा जे जाल करि मोहर भँजउलऽ हो सिवेन्दर मिसिर··· ।"

हाकिम ने अपनी मुस्कराहट को समेटने की चेष्टा की। क्या किया जाये ? जिला-सर्वे-ऑफिसर ने चेतावनी दी है, वे चुपचाप गीत सुन रहे हैं।

लोटवा जे जाल करि मोहर भँजउलऽ हो सिवेन्दर मिसिर।
पड़लऽ मेमनियाँ के फेर हो सिवेन्दर मिसिर।
गीरकी मेमनियाँ जे बड़ी रे जोगनियाँ हो सिवेन्दर मिसिर।
हँसी-हँसी लेलक सब टेर हो सिवेन्दर मिसिर !

वाह ! लुत्तो ने तो हसन इमाम बालिस्टर को भी मात कर दिया। हसन इमाम ने कचहरी में गीत पेश करवाया था कभी ? नहीं, तब ? लुत्तो ने गीत पेश किया है, साक्षी-पक्ष की ओर से !

"वाह ! वाह ! खवास के खानदान में अलबत्त निकला लुत्तो बालिस्टर !" रामपखारन सिंघ के गले की आवाज खनखनायी–"वाह ! वह !" लोगों ने उलटकर रामपखारन सिंघ की ओर इस तरह देखना शुरू किया मानो गंगास्नान करके पवित्र हुए पुण्यार्थियों के बीच कोई कसाई घुस आया हो।

"देख रहे हैं न हुजूर, किस तरह हुजूर के सामने भी आँख लाल करके कूट बोली बोलता है ?"

हाकिम ने कहा–"वह तो आपकी तारीफ कर रहा है।"

"खवास का बेटा जो कहा !"

"लेकिन आपके बाप के नाम के साथ खवास सिरनामा लिखा हुआ है, लरेना खवास।"

"ऐं ! खवास लिखा हुआ है ?" सब बालिस्टरी सटक गयी लुत्तो की ! आज तक उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया था।

"हुजूर ! सब कारसाजी पहले के जमींदारी अमला लोगों की है। जो मन में आया लिख दिया। मेरे बाप का नाम नारायणराय है।"

"आखिर खवास से आप चिढ़ते क्यों हैं ?"

"हुजूर, खवास का माने हुआ जो जूठा बर्तन माँजता हो, उगलदान उठाता हो, चिलम सुलगाता हो"–मुंशी जलधारी ने दाद खजलाते हुए कहा–"तेलमालिश से लेकर कपड़ा-धुलाई और भंग-पिसाई··· ।"

लुत्तो इससे आगे नहीं सुन सकता। बोला–"हुजूर, जाति की बात लेकर बात बढ़ी तो बात बिगड़ जायेगी। समझा दीजिए मुंशी जलधारीलाल को। कायस्थों के बारे में मैं भी बहुत कटहा बात कह सकता हूँ।"

खवास टोली के एक अधेड़ आदमी ने तैश में आकर कहा–"हुजू-उ-उ-र ! मुंसीजी

को समझाय दीजिए। जात लेकर बात करेंगे मुंसीजी तो··· ।"

हाकिम ने इस झंझटवाली नत्थी में फिर दूसरी तारीख देते हुए कहा–"अगली तारीख को कागजी सबूत लेकर आइए समसुद्दीन मियाँ। मुंशीजी, सुन लीजिए। जितेन्द्रनाथ से कहिए, तारीख के दिन हाजिर होकर जो कुछ कहना हो कहें।···चपरासी, पुकारो–अनूपलाल दावेदार, रंगलाल जमींदार।"

"कहाँ अनुपलाल··· !"

लुत्तो को मरमचोट लगी है। मर्मस्थल में चोट लगती है उसके, जब कोई उसे खवास कह बैठता है। अपने पुरखे-पीढ़ी के पुराने लोगों पर गुस्सा होता है। दुनिया में इतने नाम रहते जाति का नाम खवास रखने की क्या जरूरत थी ? और, लगता है खवासी के सिवा और कोई काम ही नहीं था पुराने जमाने में। आज किसके मुँह में ताला लगावे लुत्तो !

शाम को भिम्मल मामा बात का बतंगड़ बनाकर सुननेवालों को सुना रहे थे। लुत्तो खून का घूँट पीकर रह गया। क्यों ? सिर्फ इसलिए कि वह खवास का बेटा है और भिम्मल मामा कोई गैरवाजिब तो नहीं कह रहे थे। बात भी तो सही ही है। लेकिन, उसको अपने ढंग से सुनाते हैं भिम्मल मामा !

खवास का अर्थ ? खा-वास ! पुराकाल के पुष्ट किसानों ने खैन नामक प्रथा प्रचलित की थी। कमार, कुम्हार, चमार आदि को खैन देते थे और बदले में सालभर काम लेते थे। हल के हिसाब से ही सभी किस्म के खैन की दर नियत होती थी। एक हलवाले को अगहनी धान एक मन, भदई एक मन। लेकिन, खवास तो दिन-रात आँगन से लेकर दरवाजे तक का काम करते थे, इसलिए उन्हें ऐसी जमीन दी जाती थी, जिस पर खेती-बारी मालिक के ही हल-बैल से होती। उपज काटकर खवास ले जाते। खा-वास का अर्थ हुआ–खाओ और वास करो।

खवासी जमीन ? नहीं चाहिए लुत्तो की ऐसी जमीन !

भिम्मल मामा से खवास का अर्थ सुनने के बाद लुत्तो की लंगीबाज बुद्धि मे एक बात आयी थी। जब खवास के माने खाओ और वास करो है तो क्यों न वह फिर से एक दावा करे, अलग से ? पच्चीस एकड़ पर उसने तनाजा दिया है, आधीदार हैसियत से। पच्चीस एकड पर और दावा कर दिया जाये, कि खवासी मे मिली थी जमीन। जगजाहिर बात है कि शिवेन्दर बाबू का खवास था लर· नारायणराय ! बगैर किसी कागजी सबूत और बिना किसी पैरवी के ही जमीन खट से मिल जायेगी। खवासी जमीन !

नहीं चाहिए लुत्तो को ऐसी जमीन, जिससे जाति की इज्जत माटी में मिल जाये ! और छोटी जाति के लोग तो अपनी जगह पर ठीक हैं। आजकल हरिजन भी कहलाने लगे हैं। लेकिन, खवास ? – न जलो, न थलो। बामनों की चालाकी खूब समझता है लुत्तो। समझकर मन-ही-मन कुढ़ता है। सियार पण्डित ! डोम, चमार, काछी-हाड़ी को तो गाँव से बाहर बसाया। शूद्रों में कुछ साफ-सुथरे घराने का पानी चला दिया,

नहीं तो पानी खुद भरकर पीना होगा। दही-चूडा का भार कौन ले जाता ढोकर—बीस कोस, पच्चीस कोस बँहगी में टाँगकर, दुलकी लगाते ? खवास ? भिम्मल मामा की आखिरी बात लुत्तो की समझ में नहीं आयी। अन्दाज से ही वह समझ गया कि कोई कटहा बात होगी।

—खवास सुरूप होते हैं। सवर्णो के सत्संग, सस्कार तथा आन्तर्मिलन के फलस्वरूप ·। जरूर कोई कटहा बात होगी। तो लुत्तो क्या करे अकेले ? जाति के लोगों की हालत तो है कुत्ते की दुम की तरह। सीधी हो, तब तो ! जूठन खायी हुई जीभ बूढ़ों की पनिया जाती है। इतना बन्दिश किया, फिर भी भगेलू की बहू, लँगड़ा बूढ़ा, मौलीदास वगैरह हैं जो चुराकर जूटन माँग लाते हैं, बबुआन टोली से। छिः छिः ! माना कि किसी-किसी मालिक के दरबार में खवासों की खूब चलती थी। मालिको की हवेली में, उनकी बहुएँ आधी मालकिन समझी जाती थीं। किसी खानदान मे आँगन की मलिकाइन अपने स्वामी के खवास पर जितना विश्वास करती उतना ! छट्टू-खवास का किस्सा कौन नही जानता है ! दही के ऊपरवाली मलाई छट्टू खाये, पॉति लेके पिठौरा जाये ! ऊपरली छाली छट्टू खाये ! छाली-मलाई के लोभ से ही पुरखो ने इस मलाईदार पेशे को अपनाया था। लुत्तो को मरमचोट लगती है।

"धरकट्ट कही के ! और कोई पेशा ही नहीं मिला ?"

"बासी बिछावन से किसको गाली दे रहे हो लुत्तो ?"

लुत्तो ऑख मलते हुए उठा, "जै हिन्द, जै हिन्द ! आइए। बैठिए।"

बीरभद्दर बाबू इतना भोर मे आये हैं तो जरूर कोई खास बात होगी। बीरभद्दर बाबू ने इधर-उधर देखकर कहा, "चाह पिलाओ तो बैठूँ। इतना सवेरे भैंस तो नहीं दुहवाया होगा ?"

लुत्तो ने अपने भांजे को पुकारकर कहा, "रे बॅगटा ! भैस दुह। और डेरा में जाकर कहो, चाह का पानी चढ़ाये।"

"बात यह है कि कुबेर बाबू की चिट्ठी आयी है पटने से।" बीरभद्दर बाबू ने जेब से एक लिफाफा निकालकर कहा, "कुबेर बाबू को मै भैया कहकर चिट्ठी लिखता हूँ न !"

लुत्तो की औघाई आँखें अचानक चमक उठीं। बोला, "चिट्ठी बन्द कीजिए। गरुडधुज झा आ रहा है। नम्बरी फोकट दलाल है।"

गरुडधुज झा अपनी लम्बाई का फायदा सोलकन्ह टोली मे खूब उठाता है। दहलीज की टट्टी से एक बालिश्त ऊपर ही उसकी गर्दन रहती है। उसने देखा, लुत्तो के ऑगन में बटलोही चढ़ी हुई है, चाह का पानी गरम हो रहा है।

"क्यों बीरो बाबू, कांग्रेसी चाहपाटी चुपेचाप होता है !" गरुड़धुज झा ने दूर से बात फेकी, राह चलते। बीरभद्दर बाबू गरुड़धुज को खुश रखना चाहते हैं, बीच-बीच मे चाह-चू पिलाकर। बोले—"आइए, आइए !"

गरुड़धुज झा हवा का रुख देखकर बात करना जानता है। उसने बैठते ही कहा,

"लुत्तो ! तुमने तो ऐलान किया था कि जित्तन को एक महीना के अन्दर ही गाँव छोड़कर भागना होगा। सो, पाँच महीने हो रहे हैं, जित्तन तो डटा हुआ है !"

"देख लीजिएगा। जल्दी काम शैतान का ! जित्तन को भागना ही होगा। शहर से आधा पागल होकर आया है, गाँव से पूरा पागल होकर जायेगा ! देखिएगा तमाशा !"

"तुम चाहो तो वह कल ही सिर पर पैर लेकर भाग जाये। तुमने ढील दे दी है। ऐसे-ऐसे हाफ-मैड आदमी गाँव में तीन-चार हो जायें तो सारा गाँव ही चौपट समझो।"–गरुड़धुज झा अंग्रेजी नहीं जानता। लेकिन उसका लड़का अंग्रेजी पढ़ता है। आजकल गरुड़धुज झा भी एकाध अंग्रेजी शब्द मिलाकर बात बोलता है। सभी बोलते हैं, फिर गरुड़धुज ही क्यों न बोले ?

लुत्तो भी आजकल फर्स्टबुक पढ़ता है, अर्जुनलाल के यहाँ जाकर–ए फैट कैट सैट ऑन दैट मैट। एक मोटी बिल्ली बैठी है उस चटाई पर। ·· लुत्तो को थाना और जिला कमेटी के सभापति ने मिलकर परानपुर गाँव का लीडर बनाया है। सभापतिजी ने कहा था, "जरा-सा अंग्रेजी कटर-मटर जानता लुत्तो तो थाना का सेक्रेटरी हो जाता।" लुत्तो ने गरुड़धुज झा को जवाब देने के लिए एक शब्द ढूँढ़कर निकाला, बहुत देर के बाद। याद ही नहीं आवे। आगे-आगे भागता हुआ शब्द–"झा जी ! इस 'डंजरस' आदमी को मैं पानी पिला-पिलाकर जिलाऊँगा और नाच नचाकर मारूँगा। आप लोग यदि सहायता ।" बीरभद्दर बाबू ने आँख मारकर मना किया। इससे आगे नही।

गरुड़धुज झा ने कहा, "मेरे गिलास में आधा पाव दूध डलवाकर चाह मँगाओ लुत्तो बाबू ! एक तो चाह मैं पीता नहीं। बीरभद्दर बाबू जानते हैं, जब पीता हूँ तो आध पाव से एक बूँद भी कम हुआ दूध कि तुरत मैण्ड चकराने लगता है।"

लुत्तो मन-ही-मन कहता है–'इतने ऊँचे आदमी का माथा नही चकरायेगा, भला ?'

किसी का माथा थिर नहीं। गाँव के एक-एक आदमी का माथा चकरा रहा है।

सर्वे का चक्कर पिछले डेढ़ साल से लट्टू की तरह हरेक आदमी को नचा रहा है। बीच में जो लड़खड़ाकर गिरते हैं, फिर डोरी में लपेटकर उन्हें फेंका जाता है। नाचते लट्टू-जैसे गाँव के लोग ! माथा थिर कैसे रहे !

रोशन बिस्वाँ गाँव का सबसे बड़ा महाजन है आजकल। जमीन कम थी। लेकिन इस सर्वे में वह भी पूरी हो गयी। बँधकी, सूद-रेहन जमीन के अलावा कवाला बनकर बहुत-सी जमीन खरीदी है। सारे गाँव में बस रोशन बिस्वाँ ही एक है जिसकी जमीन पर एक भी तनाजा नहीं पड़ा। असल में, उसके पास जितनी जमीन थी, सब रेहन और बँधकी। उस पर तनाजा देने से क्या फायदा ?··· सर्वे के समय हजार-बारह सौ रुपैया हमेशा घर में मौजूद रखने के लिए जमीनवालों ने रोशन बिस्वाँ से रुपया

माँगा। बिस्वाँ ने सबको एक ही जवाब दिया—"जमीन बँधकी कौन लेता है आजकल ? जेवर लाइए। नहीं तो जमीन फरोखतनामा लिख दीजिए।" तीन सौ बीघे जमीन खरीदी है उसने। रोज कर्ज लेनेवालो की भीड़ लगी रहती है।

रोशन बिस्वाँ का सिर भी चकराया हुआ है।

नट्टिनटोली की गेंदाबाई के घर बारह बजे रात तक वह गुलरोगन मालिश करवाता है। फिर भी । क्या करे बेचारा रोशन बिस्वाँ ! घरवाली दगा देकर दस साल पहले ही चली गयी। गेदाबाई के घर न जाये तो क्या करे माथा चकराने पर ? जवान बेटा-पुतोहु घर में हैं तो इससे क्या ? बेटा को नालायक कहता है, हमेशा। जब बात करेगा अपने बेटे से तो, साले से शुरू कर हरामजादा पर शेष करेगा। आज लड़के ने मुँह पर जवाब दे दिया है, उल्टाकर—"मैं आपका साला हूँ, मै हरामजादा हूँ ! आप क्या हुए तब ? विचारकर देखिए !" रोशन बिस्वाँ, जूता उठाकर मारने दौड़ा तो भाग गया। आधी रात बीत रही है, लौटकर नहीं आया है। बिस्वाँ ने अपने नौकर को पुकारकर कहा, "रे सगमाँ ! डेरा मे पूछ के आ, लेल्हू बाबू लौटे हैं कि नही।"

रोशन बिस्वाँ को अब अपने इकलौते लडके के लिए जरा भी दिल में मोह नहीं। उसने अपने लड़के को, अच्छे नाम से, पोसन बिस्वाँ कहकर कभी नही बुलाया। गुस्साने पर केल्हुआ या लेल वकलेल, खुश रहने पर लेल्हू बाबू! अब तो एक माशा-भर भी स्नेह नही रह गया है बेटे के लिए। लेकिन, बेचारी पुतोहु का क्या दोष ! माथा चकरा रहा है रोशन बिस्वाँ का। बेटा घर मे नही है। घर छोड़कर वह गेदाबाई के यहां कैसे जाये आज रात ?

बीरभद्दर बाबू और लुत्तो ! आस-पास नाचते हुए, एक ही गति से घूमते हुए दो लट्टू !

परानपुर इस्टेट के मैनेजर है—बीरभद्दर बाबू।

सबसे बड़े बलभद्दर। तब बीरभद्दर। सबसे छोटा—शिवभद्दर।

शिवेन्द्र मिश्र के मरने के बाद जमीदारी का काम-काज सँभालने के लिए बहुत लोग आये। शिवेन्द्र मिश्र की विधवा ने धीरे-धीरे सबको विदा किया। रह गये एक आदमी, दूर के रिश्ते के ननदोई—पण्डित सुखन चौधरी ! पण्डित सुखन चौधरी ने दस साल मैनेजरी की, किन्तु मुसम्मात ने कभी उन पर विश्वास नही किया। सुखन चौधरी से ज्यादा भरोसा करती मुशी जलधारीलाल दास पर। एक बार इलाके मे खजाना-वसूली के समय गये। तीस हजार रुपये वसूल हुए। मुशी जलधारीलाल दास दूसरे इलाके मे गया था। सुखन चौधरी ने हिसाब दिया, दस हजार का। दूसरे दिन मुंशी जब इलाके मे लौटा तो उसने कहा, "तीस हजार रुपये से एक पाई कम नही, बल्कि तीन सौ पच्चीस रुपये तीन आने ज्यादा। तीस हजार तीन सौ पच्चीस रुपये तीन आने !" और, तब एक भी सफाई नही सुनी मुसम्मात ने। बोली, "ठीक है। रुपया लौटाने की जरूरत नही। जो पेट मे गया उसे वमन नहीं कराऊँगी, लेकिन भले आदमी की तरह, कल सूरज उगने से पहले, हवेली से बच्चा-कच्चा झोली-डण्डा

के साथ निकल जाइए !"

"पखारनसिंघ ! कोई है नहीं ? कहाँ गये सब ?"

बलभद्दर बाबू कभी भूल नहीं सकते।··· गुस्सायी बाघिन की तरह, भोर होने के पहले कचहरी-घर की सीढ़ी पर खड़ी होकर गरजती हुई—मलिकाइन मामी··· मामी ! ··· धेत् ! कैसी मामी ?··· पिशाचिन की तरह चिल्लाती हुई जित्तन की माँ—"कोई भी नहीं। एक बच्चा भी नहीं रहे मेरी हवेली के अन्दर। मेरी चौहद्दी के अन्दर से निकाल दे। कोई नहीं मेरे अपने।·· अरे कैसा ननदोई ? मेरे स्वसुर इतने मूर्ख नहीं थे। उन्होंने बेटी पैदा ही नहीं की।··· राकस सबकुछ भकोस जायेगा।··· मेरे जित्तन को कल मार डालता कनेर फूल का बीज खिलाकर वह बलभदरा ! फुसलाकर कहा, बादाम है काबुली बादाम।·· साँप के बच्चों को पोसकर यही होता है।··· मेरा बेटा बादाम नहीं पहचानेगा, काबुली बादाम ?··· निकालो सबको। अभी-ई-ई-ई। बेइमानों को-ओ-ओ-ओ !··· "

बलभद्दर बाबू गर्दन हिलाकर भूलने की चेष्टा करते हैं। बलभद्दर बाबू को लगता है, अभी-अभी तुरत गाल पर तमाचे पड़े हैं··· "दुश्मन रे दुश्मन ! मेरे लाल को जहर खिला रहा था !" तड़ाक् ! तड़ाक् ! बलभद्दर बाबू ने जिस बिरवे को बचपन में ही काटकर साफकर देना चाहा था, वह आज तक उनकी छाती को जला रहा है।·· ठीक सर्वे के समय आकर हाजिर हो गया जित्तन। वर्षों के बाद गाँव आया है, आखिर किसलिए ? जमीन बचाने के लिए ही न !·· उसकी जमीन एक धूर भी नहीं बचने पाये। एक धूर भी नहीं—बीरभद्दर ! बीरभद्दर बाबू !

"क्या हुआ भाई साहब !" बीरभद्दर बाबू आकर अपने बड़े भाई को सँभालते हैं—"इतनी रात में क्या हुआ·· ?"

"एक धूर नहीं।··· समझे, बीरो ! यदि तुम अपने को अपने बाप का बेटा समझते हो तो सुन लो। जैसे भी हो, कंगरेस के जरिये नहीं हो तो किसी भी पार्टी की मदद से, जित्तन की धूर-धूर जमीन तितर-बटेर करवा दो। तब समझूँगा बाप का बेटा ! मरते समय बाप क्या कहकर गया है ?"

"हाँ, हाँ, याद है।" बीरभद्दर भूल जानेवाला बेटा नहीं··बाप ने जो कहा था, अक्षर-अक्षर पालन कर रहा है उसका बेटा। देख लीजियेगा !"

लुत्तो का बाप कुछ कहकर नहीं मरा है।

शिवेन्द्र मिश्र का दुलरुवा खवास था, उसका बाप लरेना खवास··· नारायण राय ! दुलारा खवास !

विश्वासपात्र इतना कि सपने में भी उस पर सन्देह नहीं करते थे शिवेन्द्र मिश्र।··· किन्तु, कोठीवाल प्लांटर्स ने उसे खरीद लिया, आखिर ! विश्वासघाती को अपने मरने से पहले सजा देकर मरे शिवेन्द्र मिश्र !··· लोहे की दगनी आग में तपाकर लाल हुई, और लरेना खवास को रामपखारन सिंघ ने उठाकर पटक दिया। मुंशी

जलधारी तपी हुई लाल दगनी से उसकी पीठ पर लिखने लगा–द··· ! आ ह रे बप्पा–आ-आ-आ !

गा··· ! चीं ही-ई-ई-रे-ए-ए ! बा··· ! रे-ए-बा-आ-आ ! ज··· !

दगाबाज !··· कैथी अक्षर में जलधारीलाल ने लिख दिया था, दगाबाज ! इसीलिए, आज भी मुंशी जलधारीलाल दास मौका पड़ने पर, दाद खुजलाकर व्यंग्य-भरी बोली बोलता है–"सिर्फ कागज-कलम से लिखनेवाला नहीं, दगनी से देह की चमड़ी पर भी लिखनेवाला मुंशी मैं हूँ।" तब लुत्तो चुपचाप अपने मन की जलन सहने के लिए दाँत-पर-दाँत बैठा लेता है। कभी-कभी जवाब भी देता है–"अच्छी बात, जमाना लौटकर आया है। तुम्हारी पीठ पर भी दगनी से लिखा जायेगा–नरक का कीड़ा !" किन्तु, जलधारी लाल बधिर हो जाता है।

आह रे-ए-ए-बप्पा-अ-आ-रे-ए-ए ! चीं-ई-हीं !

बैल या भैंस पर नम्बर चढ़ाने के लिए जिस तरह पटककर दागा जाता है। ठीक बैल की तरह गों-गोंकर उठा था लुत्तो का बाप ! पोखरे के महार पर, दूर खड़ी माँ छाती पीटने लगी थी–"हाय दैबा रे-ए !" लुत्तो माँ का आँचल पकड़कर खड़ा था। डर से वह भी चीख उठा था। माँ उसे गोद में लेकर कलेजे से सटाकर चीखने लगी।··· माँ की छाती में कान सटाकर लुत्तो ने रोते-रोते ही सुना था–'धमाधम, धमाधम !' लगता था, माँ की छाती के नीचे सैकड़ों ओखल धान कूटे जा रहे हैं। लुत्तो कभी भूल सकता है ? 'धमाधम, धमाधम !'·· दूसरे दिन सुबह को छटपटाकर उसका बाप मर गया, शिवेन्द्र मिश्र से पहले। मरने के समय शिवेन्द्र मिश्र ठठाकर हँसे थे–"हा-हा ! जा साले, जगह ठीककर रखना···मैं आ रहा हूँ, वहाँ भी तुमको दगवा दूँगा यदि··· !" लुत्तो भी दागेगा। शिवेन्द्र मिश्र की सन्तान को दागेगा–पटककर !

बीरभद्दर बाबू ने पुकारा, "लुत्तो ! लुत्तो हो घर में !"

"आइए, आइए। डेरा में ही आइए।"

"मार दिया छक्का हाथ !" बीरभद्दर बाबू ने हँसते हुए लुत्तो के आँगन में प्रवेश किया। लुत्तो की स्त्री ने घूँघट के अन्दर से मुस्कराकर बीरभद्दर बाबू को देखा और लुत्तो से कुछ पूछे विना ही बटलोई उठाकर चाय बनाने चली। लुत्तो ने हँसते हुए कहा, "आज एक सेर दूध में दो गिलास चाय बनाओ बिठैलीवाली !"

"सुनो, रोशन बिस्वाँ और गरुड़धुज झा ने भी कहा है, शालिग्राम और हरिवंश छूकर, तन-मन-धन से मदद देंगे। बिस्वाँ ने कहा, कहिए तो राह चलते पिटवा दें। मैंने कहा–अभी रहिए। देखा जायेगा !"

लुत्तो ने चुटकी बजाकर कहा–"छक्का हाथ !"

सुरपति राय सात घाटों का पानी पी चुका है।

कर्बला, रानीडूबी, संझा तथा गीतवास घाट के आसपास के गाँवों में पिछले छै महीने से घूम रहा है वह। बरदिया घाट का फाइल अभी अछूता है, किन्तु अधिकांश

लोककथाओं में बरदिया घाट की चर्चा है। इसलिए, उन सारी कहानियो को छाँटकर अलग रखना आवश्यक है। 'वेरिफाई' करना होगा !

गीतवास कोठी के पास, रजौड़ गाँव के ताँती परिवार में उसे कागजात का एक गट्ठर मिला है। परिवार की कोई स्त्री गीतवास कोठी की, 'मेड सर्वेण्ट' थी, चालीस-पचास साल पहले। आश्चर्य, भगवान् शकरखोरे को शक्कर ही देते हैं !

फटे-चिटे, दीमकभुक्त कागजों में लोकगीत तथा लोककथा संकलित है। कागज के बण्डल को खोलते समय सुरपति की देह रोमांचित हो उठती है। कागज के छोटे-छोटे पुर्जे को भी वह बड़ी सावधानी से स्पर्श करता है–डियर !

फटी हुई चिट्ठी का एक अंश : सिर्फ तीन पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं–"डियर ली, तुम्हारे अनुरोध पर इस अंचल के कुछ लोकगीत और परियों की कहानियाँ भेज रही हूँ। पता नहीं तुम्हारे किसी काम ।"

पत्रलेखिका का हस्ताक्षर अस्पष्ट है। किन्तु, सुरपति ने ठीक ही पढा–रोजउड। मिसेस रोजउड !

1910 ? पैंतालीस साल पहले–इसी अंचल में, दुलारीदाय की धारा के कछार पर बसे गाँवो मे ग्रामगीत तथा कथा के लिए उसी के जैसा कोई अन्य प्राणी भी भटका है ! यह सोचकर सुरपति के मन मे लहरे आती हैं। एक विदेशी महिला की मूर्ति ! लहरों से खेलती महिला ! मैथिली लोकगीत की एक करुण रागिणी सुरपति के कानो के पास मँडराने लगती है–"सखि हे-ए-ए-ए-ए। हमर दुखक नहि ओर ।"

"मिस्टर राय !"

सुरपति ने देखा, स्वय जित्तन बाबू हाथ मे चाय की प्याली लेकर उपस्थित है। पलॅग पर से उठते हुए सुरपति इतना ही बोल सका–"आप क्यो तकलीफ ।"

"बैठिए। आपने रात मे मेरी चाय की तारीफ की है, सुना। इसलिए, अभी आपको एक स्पेशल टी देने आ गया।" जित्तन बाबू ने बडी सतर्कता से चाय की प्याली तिपाई पर रखकर अपनी मुस्कराहट खोली। पास की कुर्सी पर बैठते हुए बोले–"रात मे आपकी छींक सुन रहा था। गलती हुई, रात मे ही आपको गार्गल के लिए गर्म पानी भेज देना उचित होता। खैर, यह इस्पेशल टी है। रॉ टी मे लेमन है, पाल्युड्रिन है ओर एक चम्मच रम है। जून की सरदी मैलेरिया की आगमनी समझी जाती है। वर्षा मे कहीं भीगना पडा है। है न ? आइ नो !"

सुरपति ने चाय म पहली चुस्की लेकर देखा–एक अनास्वादित पेय !

"बाइ द वे--आप वैष्णव तो नही ?"

सुरपति को न जाने क्यो बंगाल के वैष्णव सम्प्रदाय की याद आ गयी। उसने तुरन्त कहा–"जी नहीं, मैं मैथिल ब्राह्मण ।"

"हम लोग शाक्त हैं मिस्टर राय। शाक्त अतिथियों को कभी निरामिष भोजन हम नही देते।"

सुरपति ने लज्जित होते हुए कहा–"वैष्णव-शाक्त की बात मै नही जानता।

मांस-मछली अच्छी नहीं लगती। अण्डा खाता हूँ, क्योंकि··· ।"

"अच्छा लगता है। गू-उ-उ-ड !" जित्तन बाबू ने सिगरेटकेस बढ़ाते हुए कहा।

सुरपति ने दोनों हाथ जोड़कर माफी माँगी। जित्तन बाबू जरा अप्रस्तुत हुए। फिर अपने लिए सिगरेट निकालकर बोले—"गू-उ-उ-ड !"

खिड़की से बाहर तालाब का अंश दिखलायी पड़ता है—कमल के पत्तों से आच्छादित। उत्तर आकाश में उमड़ते हुए काले बादलों ने पूरब की ओर आकर सूरज को ढँक लिया है। हवा के हल्के झोंके के पीछे इठलाते हुए बादल ! परती प्रान्तर के प्राणियों के परमप्रिय बादलों पर जित्तन बाबू की आँखें गड़ गयीं।

दिलबहादुर जलपान का ट्रे ले आया। पर्वतिया भाषा में ही जित्तन बाबू ने कहा, "दिलबहादुर ! चिया दियेर अलि रामपखारन सिंघ लाय बुलाउ त ऽ ऽ। च्याँडै।"[1]

"होस ! होस !" दिलबहादुर ने दो बार धीमी आवाज में जवाब दिया और ट्रे रखकर भागा। जित्तन बाबू ने घी में भूना हुआ चूड़ा अपनी प्लेट में लेते हुए कहा, 'शुरू कीजिए रायजी ! अण्डा तो आपको अच्छा लगता है।" सुरपति चुपचाप, मुस्कराकर जलपान करने लगा। जित्तन बाबू की बातचीत, भोजन, टी-सेट, ड्रेसिंग गाउन आदि को गौर से देखने-सुनने के बाद सुरपति को बस एक ही शब्द सूझा—रिफाइण्ड आदमी !

रामपखारन सिंघ और दिलबहादुर के साथ एक कम उम्र का दुबला-पतला गोरा लड़का हाथ में एक कटोरदान लेकर प्रकट हुआ।

रामपखारन सिंघ ने अपनी लम्बी मूँछों में बात लटकाकर आँख की कनखी से कुछ कहा। लड़के ने एक बार सुरपति की ओर देखा, फिर कुरते के पॉकेट से एक पुर्जा निकालकर जित्तन बाबू के हाथ में दे दिया।

कटोरदान चाँदी का है शायद। उस पर खुदे हुए अक्षर घिस गये हैं। सुरपति ने अपनी प्लेट में निगाह झुका ली··· जित्तन बाबू पुर्जा पढ़ रहे हैं।

पुर्जा पढ़कर जित्तन बाबू ने अपनी लम्बी साँस को धीरे-धीरे छोड़ा और दिलबहादुर से कटोरदान खोलने को कहा।··· केसरिया दूध। दूध में आम का रस डालकर सेवईं बनायी गयी है। प्रत्येक कटोरे में आम के कतरे हुए चार टुकड़े रखे हुए हैं।

सुरपति से बगैर कुछ पूछे जित्तन बाबू ने एक छोटी कटोरी मे सेवईं डाल दी—"चखकर देखिए। याद रखने की चीज है। आम-पयास !"

एक चम्मच सेवईं मुँह में डालकर, कुछ क्षण तक अन्यमनस्क रहे जित्तन बाबू। फिर उस लड़के से पूछा, "ताजू अब कैसी है ?··· दवा खाती है न !··· ताजमनी कौन होती है तुम्हारी ?"

लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया। उसका ध्यान जित्तन बाबू के कॉकर स्पेनियल 'मीत' पर था, जो कटोरदान को सूँघता पीछे-पीछे आ गया था।··

1. चाय देकर जरा रामपखारन सिंह को बुलाओ तो। जल्दी !

"मी-ई-त !" जित्तन बाबू ने हल्की झिड़की दी। मीत ने अब जित्तन बाबू की ओर देखना शुरू किया।

लड़के की जान साँसत में थी। वह कटोरदान बन्द करता हुआ भागा।

सुरपति आँखें मूँदकर सेवईं में मिश्रित पदार्थों को पहचानने की चेष्टा कर रहा था। बाहर जोरों की झड़ी शुरू हुई। अब, आगे-आगे वेगवती हवा और पीछे-पीछे जल से लदे बादलों के दल !

"पखारन सिंघ, अब तो, आज चन्नीपाट की बोआई नहीं हो सकेगी।·· मिस्टर राय, माफ कीजिएगा, मैं जरा खेती-बारी की बात कर लूँ।···क्यों ? अब तो सोनाबंग, लालमेघ और जापानी पाट के पौधे रोज एक इंच बढ़ेंगे।··· हाँ, पानी रुकते ही जाकर केयटटोलीवालों से कह दो, कलमबाग होकर मवेशी न हाँकें। कलमबाग होकर डगर नहीं।"

"अभी तुरतै, एक मिलिट में तमासा देखा देते हैं हम। एही हुकुम तो हम आज पन्द्रह दिन से माँगता रहा, सरकार !"

"और·· ।" जित्तन बाबू ने रामपखारन सिंघ को चुपकर दिया—"ड्राइवर से कहो, ट्रैक्टर में मोबिल डाल देगा। आज परती की जोताई होगी।"

"परती की जोताई ?" रामपखारन सिंघ ने मुँह बाकर आश्चर्य प्रकट किया—"परती में का होगा बौवाजी ?"

"परती में ?·· परती पर गुलाब की खेती होगी !" जित्तन बाबू मुस्कराकर बोले।

"ओ !" रामपखारन सिंघ ने गम्भीरता से गर्दन हिलाकर कहा, "एहि बात तो हमहुँ·· ।"

टीकोजी के नीचे से टीपॉट निकालकर, प्यालियों में चाय डालते हुए बोले जित्तन बाबू—"क्यों मिस्टर राय ! गुलाब की खेती का आइडिया कैसा है ? · चीनी आप खुद डाल लें।"

सुरपति ने मुस्कराने के सिवा कोई जवाब नहीं दिया। रामपखारन सिंघ चला गया।

जित्तन बाबू ने इतनी देर के बाद पलँग पर तितर-बितर कागजो को देखा।

"अच्छा, घाट हाकिम · ह्वाट्स दिस घाट हाकिम ?"

"घाट हाकिम ?"

"हाँ, पखारन सिंघ ने रात में कहा, घाट हाकिम साहब आये हैं। आपको इस इलाके के लोग घाट हाकिम ही कहते हैं। आप इस गाँव में एक बार पहले भी आ चुके हैं ?"

"जी हाँ, मैं नदियों के घाटों के नाम, घाटों के आसपास के अंचल में प्रचलित लोकगीत, कथा, कहावत··· ।"

"ओ-हो-हो-हो-हो !" जित्तन बाबू कलेजा खोलकर ठहाका लगाते हैं—"डॉक्टरेट की तैयारी हो रही है। यों कहिए।···हाँ तो रोज नये डिपार्टमेण्ट खुलते हैं, नये हाकिम बहाल होते हैं। मैंने समझा घाटों की बन्दोबस्ती के लिए कोई हाकिम आये हैं।

हो-हो-हो-हो ! मछली हाकिम, मुर्गा हाकिम, शीशम हाकिम ! कितने किस्म के हाकिम आते ही रहते हैं। ओ-हो-हो-हो प्रोफेसर शशाक के शिष्य हैं आप ?"

"जी हाँ !"

"प्रोफेसर शशाक मेरे अतिप्रिय मित्र हैं।–तब तो सिर्फ एक रात की मेहमानी से काम नही चलेगा। महीनो रहना होगा आपको। आपके सब्जेक्ट से मुझे भी दिलचस्पी है। अच्छी बात। गू-उ उ-ड !"

सुरपति की ऑखे अचरज से चमकने लगी।

"अच्छी बात। आप निश्चिन्त होकर अपना काम कीजिए। दिलबहादुर ! साहब के लिए बरामदे पर कुरसी डाल दो और इधर कोई हल्लागुल्ला न हो।" "होस ! होस !'

सनकी ? सुरपति ने जित्तन बाबू के बारे मे सैकडो बाते सुन रखी थी ! सिनिक या सनकी समझकर अब तक उसने जित्तन बाबू से भेट नही की थी। इतना जल्दी कुछ समझ सकना भी सम्भव नही। तब एक बात है, ऑखो की पुतलियॉ अस्वाभाविक ढंग से थरथरा उठती हैं। कुछ क्षण के लिए कही खो जाते हैं शायद। बातो का सूत्र ढूँढते हैं मैं क्या कह रहा था ? उम्र अपनी बतलाते है, पैंतालीस साल। स्वास्थ्य की सुन्दरता मुखमण्डल पर निखरी हुई है। बाते भी कोई ऐसी नही करते। तब फिर, क्यो पागल कहते हैं लोग ?

भट भट-भट-भट-भट-ट्-ट ! ड्राइवर ट्रैक्टर ले आया।

जित्तन बाबू ने बाहर निकलकर आसमान की ओर देखा। बादलो का अन्तिम दल अभी तुरत बरस गया है। दूर उत्तर आकाश मे काले-काले बादलो के दल, जो अभी बहुत दूर हैं। जित्तन बाबू ट्रैक्टर पर सवार हुए। लाल गमबूट, वाटरप्रूफ कोट की जगह घासी रग का एक वाटरप्रूफ-शॉल, जिस पर रासायनिक रग से ऑके सुनहले बेलबूटे चमकते हैं। क्या कहा जाये इस वाटरप्रूफ को ? वाटरप्रूफ कैप, स्कार्फ या दुशाला ?

सुनहले घुघराले बालो से लदा मीत कूदकर ट्रैक्टर पर जा बैठा, अपनी जगह पर। हॉ, ट्रैक्टर कम्पनी के इजीनियर से मीत के लिए जगह बनवायी है जित्तन बाबू ने।

मीत हवा मे अपनी थूथनी ऊँची कर इधर उधर कुछ सूँघता है।

दिलबहादुर अपनी सुनहरी दन्तपक्तियो की आभा बिखराकर हँसा परर्वातिया बोली मे बोला–"पानी मा भ्यागुते हरेर कॉऊ कॉऊ कराउँ छ मीत ! मऽतऽ छक्क पर्ने !" अचरज से घुडकती हुई ऑखे दिलबहादुर की । पानी मे मेढको को देखकर, मीत उत्तजित होकर चेन खुलवाने के लिए कॉऊँ-कॉऊँ चिल्लाता है। दिलबहादुर अचरज मे है। बेचारा मीत पहली बार गॉव की वर्षा देख रहा है। पोखरे मे नहाते समय जब तैरता है मीत, ठीक सुनहले बत्तक जैसा !

बॉख-बॉख !! दिलबहादुर की हँसी से चिढ़ गया, मीत शायद—छक्क पर्ने !

"दिलबहादुर। मेरो हैट ?"

दिलबहादुर दौड़कर ले आया।··· तालपत्र तथा बाँस की खप्पच्चियों का बना हलवाही हैट। मालदह की ओर से आये हुए मलदहिया और पाकिस्तान से भागकर आये हुए पूर्वी बंगाली किसानों ने इसका प्रचार किया है। पहिराव-पोशाक देखकर ही गाँववालों ने पागल कहना शुरू किया है शायद ?

—भट-भट-भट-ट-ट्-ट ! भट-भट, भट-भट ! चले जित्तन बाबू, परती की जोताई करने।

··· आज शुक्रवार ता. 8 जुलाई ' 55 को, न जाने कितने सौ वर्षों की पड़ी हुई वीरान धरती पर, पुरानी परती पर, ट्रैक्टर चलाने जा रहे हैं, जित्तन बाबू। ऐसी जमीन, जिस पर सिर्फ बरसात में क्षणिक आशा की तरह हरियाली छा जाती है।···

सुरपति अपनी डायरी में लिखता है लाल रोशनाई से !

सैकड़ों वर्षों से पड़ी हुई धरती !

ट्रैक्टर का फाल धरती उधेड़ रहा है—भट-भट-भट-भट !

दूब की जड़ो के झब्बे, बनलहसुन के उजले-उजले बल्ब—लहसुन की तरह।··· बनलहसुन, लिली जाति का एक जंगली पौधा, जिसके फूलने का मौसम है अभी !

फैली हुई हरियाली पर तितलियों जैसे सफेद फूल—यहाँ, वहाँ··· ।

झर-झर-झहर-झहर-झर-र-र ! गड़-गड़-गुडुम !

बादल दूर थे किन्तु हवा तेज थी। मूसलाधार वृष्टि शुरू हुई।

अब, दूर तक दृष्टि नहीं जाती है परती पर। धीरे-धीरे, चतुर्दिक एक सफेद पर्दा छा जाता है।··· गाँव-घर की वर्षा और परती की वर्षा में अन्तर है। धरती और आकाश का सीधा सम्बन्ध।

भट-ट-ट-ट भड़भड़-भड़भड़ भर्र-र र !

ट्रैक्टर रोककर उतर पड़े जित्तन बाबू। उनसे पहले, कूदकर उतरा मीत। झर-झर-झहर-झहर-झर-झर !

झूमकर बरस रहे हैं बादल। हिमालय से उतरे हुए बादलों को पहली विशाल परती मिली है। जित्तन बाबू देखते हैं—असंख्य नर्तकियाँ, झीनी-झीनी जलछाँही चुनरियों में मोती बाँधकर नाच रही हैं। मोती झर रहे हैं—झर-झर, झहर-झहर।

मीत आनन्द से कुलाचें मारकर दौड़ रहा है, पैंतरे दिखला रहा है। जित्तन बाबू के पास आकर भूँकता है—चलो, तुम भी दौड़ो ! बॉख !

"मीत !" जित्तन बाबू पुकारते हैं। किन्तु, मीत आज मगन है।

भीगने के बाद भी मीत सुन्दर दीखता है। सुनहले घुँघराले बाल सीधे हो गये

हैं। कान के बाल और लम्बे मालूम होते हैं। दौड़ते समय मुँह से जीभ निकालकर एक ओर कर लेता है।

कड़-कड़-कर्र-र-र-घड़-घड़-कर्राक्! बिजली कड़की।

मीत का नाचना-कूदना अचानक बन्द हो गया। उसने अचरज से आसमान की ओर देखा। फिर, चुपचाप मुँह लटकाकर जित्तन बाबू के पास भाग आया—बॉख, बॉख!

जलते हुए पावरिन की गन्ध ने मिट्टी की सोंधी सुगन्ध को आत्मसात् कर लिया है। इस मौसम में दुलारीदाय की जोती हुई जमीन से खसखस की टटकी खुशबू आती है, गहरी सुगन्ध! जित्तन बाबू एक मुट्ठी गीली बलुआही मिट्टी लेकर सूँघते हैं—"उँहु, कोई गन्ध नहीं। गन्धहीन माटी!"

विशाल परती पर डेढ़-डेढ़ सौ एकड़ की पाँच परिधियाँ! परानपुर गाँव के नक्शे में, परती पर पाँच वृत्त बने हुए हैं। लोग कहते हैं, किसी जमाने में पंचचक्र सिद्धि के लिए इन वृत्तों की रचना की थी, किसी तान्त्रिक ने।·· गाँव के लोग कहते हैं, चक्कर-परती!

जित्तन बाबू को बचपन के एक खेल की याद आती है—

चक्कर-परती चक्कर-परती
नाचे रे चिरैया,
हाथी चढ़ी राजा जाये
दौड़े रे सिपैहिया!

सभी लड़के-लडकियाँ एक-दूसरे का हाथ पकड़कर घेरा बनाते। बीच में एक लड़की आँखें मूँदकर नाचती। नाचते-नाचते किसी को छू देती।· ताजमनी बार-बार अपने जिद्दा को छू देती—आँख मूँदकर मिपाही की तरह मेरे पीछे-पीछे दौडिए जित्तन बाबू!"

मुंशी दरबारीलाल ने अमीन की सहायता से बाँस की छोटी-छोटी खुट्टियाँ गड़वायी हैं। बाँस की खुट्टियों को लाल रंग से रँग दिया गया है।

वृत्त के घेरे की लाल-लाल बिन्दियाँ ।

जित्तन बाबू वाटरप्रूफ चादर को झाड़कर फीता बाँधते हुए एकटक परती की ओर देख रहे हैं। बरसा रुक गयी है।

दूर सन् ' 32-33 मे हिमालय एक्सपिडीशन के समय निर्मित हवाई अड्डे पर पानी चमक रहा है। पास, लाल-लाल बिन्दिय. क वृत्त!·· ताजमनी भूली नही है, 'बम्बई' आम पकते ही उसने आम-पायस बनाकर भेज दिया। जित्तन बाबू की माँ चिट्ठियों में लिखती थी—"बम्बई आम का पेड़ लग गया है। तीन दिन से गछपके आम आ रहे हैं। तुम आ जाओ, आम-पायस करके खिला दूँगी। तब तो कोई मुँह में आम देगा! तेरा बाप जो कह गया है मरते-मरते··· ।"

जित्तन बाबू चक्करपरती पर हुई जुताई को देख रहे हैं। मीत अपनी जगह

पर जा बैठा है और ठिठुरता हुआ कातर दृष्टि से देख रहा है जित्तन बाबू की ओर !

एक एकड़ धरती की जुताई हो चुकी है। आज मुहूरत के दिन पाँच एकड़ जरूर जोतना चाहिए··· । भट-भट-भट-भट ! जित्तन बाबू ने ट्रैक्टर स्टार्ट किया।

सारे परानपुर गाँव में ट्रैक्टर की भटभटाहट की तरह बात फैल रही है, भटभटाती हुई। अली-गली में। घर में, चुल्हसार से घैलसार तक, बाहर सरकारी कुएँ के पास और रूदल साह बनिया की दुकान पर··· बबुआन-टोली के बैठकखाने में और सोलकन्हटोली के मचान पर—बस, एक ही चर्चा :

"पगलवा को यह क्या सनक सवार हुआ है ?"

"राम जाने !··· गुदड़ी उधेड़कर सी रहा है।"

"बड़े-बड़े गये तो बड़गज्जू आयेवाली बात ! क्या कहते हैं, लाट साहब खुद आकर मिट्टी ले गये। बड़े-बड़े आलिम-फाजिल जिनियर से लेकर सैनियर खोपड़ीवाला जरमनियाँ जिनियर तक ने, अमरीका, चीन, जापान भेजकर मिट्टी इसपारमिन किया ! सभी देश का बड़ा-बड़ा माथावाला, माटी परेखनेवाला माथा लड़ाकर हार गया। मतरकि, सभी देश का आदमी एक ही बात बोला—'इसमें कुछ भी नहीं हो सकता।'··· और, अब यह पगलैण्ट साहब इसमे बासमती धान उपजायेगा ! इह् ! बड़ा आया है·· !"

"बासमती धान नहीं, रामपखारन सिंघ अभी कह रहा था, बौवाजी कहते है गुलाब की खेती करेंगे !"

"हो-हो-हो-हो ! हा-हा-हा-हा !"

"अब पैण्ट खोलकर चलना शुरू करेगा, देखना !"

"अरे, मुबलग जमा एक पगलैण्ट भिम्मल मामा से ही तो सारा गाँव परेशान था। अब इस नये पागल के नये-नये उत्पातों से भगवान् बचावें ! पाँच भाषा में बकेगा। ओ बाबा !!"

• "जो कुछ भी कहिए, आदमी है काबिल।" पोस्टमास्टर कह रहा था, "इंग्लैण्ड, अमरीका, रूस, चीन, दुनिया-जहान से चिट्ठी आती है।"

"अरे चलो, चलो ! दो रुपया खर्च करो, तुमको भी देश-विदेश से पँतिया पर पँतिया लिख-लिख "

"हो-हो-हो-हो !"

"बुर्ज पर चाँदनी रात में पेट्रोमेक्स जलाने का तो एक मतलब भी हो सकता है। ठीक है, सिवेन्दर मिसर का बेटा जितेन्दर मिसर आसमान में बत्ती जलाता है तो अपना जलाता है, गाँव में भी थोड़ी रोशनी हो जाती है। मगर, इस ऊसर जमीन को तोड़कर किसलिए बरबाद कर रहा है, समझ में बात नहीं आती।··· कुछ आमदनी क्यों नहीं होती है ? हर साल, कोसी की बाढ़ से मारे हुए इलाके के लोग, सहरसा

जिला के मवेशीवाले किसान अपनी गाय-भैंस लेकर आते हैं। दो रुपया फी गाय और तीन रुपये हर भैंस का तो बँधा हुआ है। दस हजार की आमदनी हर साल होती थी, जित्तन को !"

"सुना नही आपने ? उसका सिपाही-कम-ए-डी-कौं रामपखारन सिघ कह रहा था–गुलाब की खेती मे खूब फायदा है। बौवाजी गुलाब की खेती करेगे।"

"हा-हा-हा-हा-हा !"

–घर्र-घर्र-घर्र-घर्र-र-र ! ड-बॉ-क् ! सरकारी कुएँ की जजीर घरघराती हुई कूप के अन्दर गयी।

"मार परती तोड़ के छोड दिया मिसर के बेटे ने !" पनघट पर आकर किसी ने सनसनाती हुई खबर दी।

"हैं-हैं, क्या कहा ? परती तोड दिया ? हाय रे दैया ! अब तो निपट्ट पगला हो गया दीर्दी ई तो। ठीक पगला गया अब कि ! ठीक, ऐसे ही कीहिन थे, आकि देखो, टीकापट्टी के सूरतदाग। गॉव का लॅंगटा-लुच्चा से लेकर भला-पुराना लोग मना करते थक गये। कुछ नही बूझे। बोले कि हम मण्डिल-उण्डिल कुछ नही मानता है, मण्डिल अपने जगह पर है, इतना जमीन काहे फाजिल रहेगा ? हम उसमे हॅंसपताल खोलेगा। खोलेगा तो खोलेगा ! खोलने से ही तो नही होता है। हॅंसपताल खोल दीहिन, डॉगडर बैठा दीहिन, मारे कण्टर-के-कण्टर दवा लाके ढेर कर दीहिन। आकि देखो, ऐसा हुआ दी-दी-ई ई, कि एक्को रोगी नही बचा हॅंसपताल के डॉगडर के हाथ से ! अरे आराम नही हो, नही होवे। सब-के-सब रोगी मर कैसे जायेगा ? आकि देखो, इसी को कहते हैं नीयत। दस आदमी के मन के खिलाफ देवता भी नही चलता है। आकि देखो, देख लेना इसका भी वही हवाल होगा हाँ-ऑ-ऑ !" गगोलाटोली की फेकनी की माय की आवाज परानपुर के लोग दो कोस दूर से ही सुनकर 'सुवाद' लेते हैं। यदुवशी टोली के भिखारी ..घ की बेटी सेमियॉ इस बार मिडिल मे गयी है। स्कूल मे खेल-कूद मे बराबर फर्स्ट होती है। लेकिन, इस टोली के लोग जानते हैं कि वह नामी बतकट्टी है। बतकट्टी ? ... बात को घास की तरह काटकर अपनी गाय को खिला दे। बात काटने का ऐसा मौका कैसे छोड दे ! झनकती हुई बोली–"जजीर छोड के गला भॉजा करो फेकनी की माय ! एक तुम्ही पानी भरनेवाली तो नही ? तुमको घर मे कोई काम न हो, मुझे तो अभी जाकर तीन पेज हेण्डरैटिग लिखना है। पत्तरचन्निरका रटना है ! परती तोडते हैं जितेन्द्र बाबू अपने बाप की। उनका भैंसा है, वह कुल्हाडी से ही नाथेगे। दूसरे की छाती क्यो फटती है–मेरी समझ मे नही आती बात !"

–घर्र-घर्र-घर-घर-ड-बॉ-क !

"अरी पलटा की मॉ, सुनती है ? तू उस समय पूछ रही थी न, कि गुलाब की खेती करके क्या करेगे जित्तन बाबू ? देखती नहीं कि गुलाबबाग लगाने के पहले ही 'चल-चल चमेली बाग मे फुलगेन्दा चढाऊँगी' जैसी उँचली एड़ियावाली छौड़ियाँ

सब तैयार हो रही हैं।" भूमिहारटोले की बिधवा फुहा दी ने मीठी चुटकी ली।

और, बात लग गयी जाकर ब्राह्मणटोली की बिमला की मौसी को। उसकी बेटी भी जूता पहनती है, स्कूल जाती है। सेमियाँ से बहिनापा है उसकी बेटी का। गन्दे कपड़े में साबुन लगाती बोली–"तुम्हारी ससुराल तो गुलाबबाग मेले के पास ही थी। तकदीर में गुलाबबाग का शौक लूटना लिखा रहे तब तो ?"

उधर फेकनी की माँ नागिन की तरह फुफकार उठी–"आब ऊ जमाना नहीं कि बाभन-छतरी मनमानी करे और सोलकन्ह लोग–आकि देखो, छोड़ के बात कहे ! इनकिलाफ तो इनकिलाफ।" कमर से घड़ा उतारकर, अपने बँधे हुए बालों को खोल लेती है। फिर कमर पर दोनों हाथ रखकर नाचने का अभिनय करती हुई कहती है–"आकि देखो, सलीमा-ठेठर का डानस ऐसा डँसेगा बाभन-छतरी की बेटी-पुतोहु को-ओ-ओ-ओ, कि एक तो ऐसे ही–एके बहुरिया पाँच तोहर बर, कोई सूते दुआरदालान कोई-कोहवर··· ।"

अन्तिम चरण कहते समय फेकनी की माँ ने ठीक ताल पर ही धरती पर पैर पटका–एके बहुरिया के बाद–धम्म, पाँच तोहर बर के बाद–धम्म !

"खबरदार, बाभन-छतरी की बेटी-पुतोहु का नाम मत लो !"

फत्तू खलीफा की दूसरी घरवाली नवविवाहिता, फारबिसगंज के बाजार के पास की लड़की है। ओढ़नी में बधना छिपाकर बहुत देर से खड़ी थी। आजिज आकर बोली, ओढ़नी के अन्दर से ही–"आ-अल्ला ! बाहर आओ तो बाहर भी कच-कच कजिया और भीतर मियाँ की बोली और कैंची का कच-कच। इस कच-कच से अल्ला कसम·· ।"

भट-भट-भट-भट-भट··· !

उत्तर में नये बादलों के दल तैयार हो रहे हैं। जित्तन बाबू ने पाइप सुलगायी, घड़ी देखी और टैक्टर की चाल तेज की–और एक घण्टा !.··· इस मूसलाधार वृष्टि में लोग अपने मन के हुलास को किस तरह दबाकर चुप हैं ? कहीं कोई गीत की एकाध कड़ी भी सुनायी पडती है ? जेठ के बादलों को देखते ही जहाँ के लोग सुख-दुख को भूलकर अलाप उठते थे, वहाँ रिमझिम का सुर सूना पडा हुआ है।··· भट-भट-भट-भट !

जित्तन बाबू ट्रैक्टर के ताल पर गुनगुनाने लगे, गाँव का बरसाती गीत। अभी भी याद है कुछ पंक्तियाँ, एक करुण, मायामय गीत की–

मचिया बैसली-ई-ई··· मालिन बेटी रे मोहनियाँ-यौं-यौं !
राम रे-ए-ए-ए,ओरमल लामी-लामी केशिया-रे-काहे तो रे-ए··· !
भट-भट-भट-भट-भट-भट, भट-भट-भट-भट-भट-भट···
डाली भरी फूलवा-बा-बा-रे मौलिये गेल अँखियाँ-या-यौं

राम रे-ए, हेरि-हेरि केकर पन्थ रोवई रे मोहनि-यों-यौं !

भट-भट· !

"हु-जू-उ-उ-र ! बौवाजी !"

मीत ने उलटकर देखा। जित्तन बाबू की भी आँखें मुडीं–रामपखारन सिंघ बेतहासा दौड़ा आ रहा है। जित्तन बाबू ने इंजन को बन्द कर दिया। भट-भट-भर्र-र्र-र !

"क्या है ?"

"केयटटोली के लठैतों को लुत्तो ने कलमबाग के पास जमा किया है। कहता है, लाश गिरे तो गिरे, लेकिन मवेशी कलमबाग होकर ही हाँकेगे !" रामपखारन सिंघ हाँफने लगा।

"तो मेरे पास क्यो दौड़ आये !" जित्तन बाबू ने विरक्त होकर कहा।

"हुकुम !"

"हुकुम-उकुम कुछ नही। तुम लोग सिर्फ बात बनाना जानते हो।" जित्तन बाबू ने ट्रैक्टर स्टार्ट किया–भडर्र-र्र-भट-भट·· ।

ट्रैक्टर गाँव की ओर चला।

कुँजड़ाटोली के पास एकत्रित लड़कों ने नारा लगाया :

–जमींदार का बिख का दाँत,
–तोड़ेंगे–तोडंगे !
–जमींदार का माथ-हाथ,
–तोड़ेगे–फोड़ेंगे !

जित्तन बाबू का ट्रैक्टर जब करीब आया तो लड़को ने और जोर-जोर से नारे लगाये। सिर्फ अन्तिम लाइन कहने की हिम्मत नहीं हुई–'जमीदार का माथ-हाथ, तोड़ेगे-फोड़ेंगे !' ट्रैक्टर आगे बढ जाने के बाद सबसे बड़े लड़के ने टीन के भोंपे में मुँह लगाकर एलान करना शुरू किया–"जा रहा है, जा रहा है। केयटटोली पर जुलुम करने जा रहा है। इसी तरह यह हर टोले पर जुलुम करेगा। आज केयटटोली पर हमला किया है, आज ही मुकाबला करके दाँत खट्टा कर दो। चलो !" हवेली के दक्खिनवाले कलमबाग में काफी लोग जुटे हैं। हर आदमी के हाथ मे लाठी, भाला, गँड़ासा अथवा झण्डा है। कागज का ही सही, मगर झण्डा है। ट्रैक्टर पहुँचते ही सबके चेहरे एक साथ तमतमा उठे। जित्तन बाबू ने ट्रैक्टर में बैठे-बैठे सामने के आदमी से पूछा–"क्या बात है ? क्यों भीड़ लगा रखी है तुम लोगों ने ?"

लुत्तो आगे बढ़ आया। उत्तेजित होकर बोला–"आपने क्या समझ लिया है, गरीबों का कोई माय-बाप नहीं है ?"

"तुम कौन हो ?" जित्तन बाबू ने पाइप से धुआँ निकालते हुए कहा, "मैं तुमसे बात नहीं कर रहा।"

"मैं··· मैं··· कौन हूँ ? वाह रे ! आप इतना भी नहीं जानते। मैं जनता का लीडर

हूँ।"

"जनता के लीडर को मालूम होना चाहिए कि किसी के कलमबाग में दल बाँधकर लाठी-भाला लेकर घुस आना गैरकानूनी है।"

"कानूनी-गैरकानूनी हम लोग कुछ नहीं जानते। कलमबाग होकर मवेशी हम हाँकेंगे, हाँकेंगे।" भीड़ से एक आवाज आयी।

"इसके चलते एकाध लहास गिरे तो गिरे।" दूसरी आवाज !

"कलमबाग भी हमारा है।" तीसरी आवाज !

"हमारा है, हमारा है !" सम्मिलित आवाजें।··· कुछ नौजवानों ने कूद-फाँद करना शुरू किया। एक बूढ़ा ताल ठोककर नाचने लगा।

लुत्तो के ओठों पर कुटिल मुस्कराहट खेलने लगी। उसने हँसते हुए हाथ उठाकर कहा–"अभी हल्ला नही। · ए ! औडर, औडर !"

लुत्तो की 'जनता' शान्त हो गयी। जित्तन बाबू ने बाग के माली को पुकारा, "शिवसरन ! शिवसरन !"

"हम यहाँ हैं।" भीड़ के बीच से शिवसरन ने जवाब दिया।

"अरे ?" जित्तन बाबू ने जरा हँसकर कहा–"जनता में तुम भी हो !"

"अचरज काहे लगता है आपको ? हाँ, हाँ, है 'जनता' में, सभी गरीब 'जनता' के साथ हैं।" लुत्तो ने कहा।

"और 'जनता' तुम्हारे साथ है ?"

"जरूड़।"

"इसलिए 'जनता' को लेकर दिनदहाडे डकैती करने आये हो ?"

"गरीबों के लीडर को तुमताम मत कहो।"

"हम भी आपको 'जितना' कहेंगे।"

"तुम-तुम, जितना मिसर, तुम तुम !"

"दुम-दुम, घोड़े का दुम-दुम।"

"एक बार बोलो, कलेजा खोलकर–गरीबो के नेता लुत्तो बाबू की-ई-ई "

"जै, जै, जै !"

गाँव के नाका पर हवलदार साहब रहते हैं। साथ मे एक कॉन्स्टेबल को लेकर हड़बड़ाये हुए आये–"का जी, का बात है ? ई भीड़ काहे खातिर लगाया है ?"

"हवलदार साहब, इस हिटलरसाही का कोई जवाब है ?" लुत्तो से हवलदार की पुरानी साँठ-गाँठ है–"दादा आदम के जमाने से इस बगीचे के बीच रास्ता है। आज बन्द कर रहे हैं। चारों ओर के खेत में फसल लगी है, लोग मवेशी किस रास्ते से हाँकेंगे ?"

जित्तन बाबू ट्रैक्टर पर चुपचाप बैठकर पाइप खींच रहे हैं। हवलदार ने ट्रैक्टर के पास आकर जरा मद्धिम आवाज में कहा–"बाबू साहेब ! बेकार का बखेड़ा काहे करते हैं ! जमाना नाजुक है। जब जैसी हवा चले ।"

"क्या मतलब ? आप देख रहे हैं न ! इतने लोग लाठी-भाला लेकर मेरे कलमबाग

में जुटे हुए हैं। मैं अकेला हूँ, निहत्था हूँ, अपनी जमीन पर खड़ा हूँ।... बखेड़ा मैं कर रहा हूँ ?"

"रास्ता बन्द करना मुनासिब नहीं है।" हवलदार को जित्तन बाबू की बोली से ही पता चल गया कि इस आदमी को एक 'पुलीसी घुड़की' में ही किनारे किया जा सकता है।

जित्तन बाबू हँसे—"गैरमुनासिब, नाजायज या गैरकानूनी काम करनेवालों के लिए हमारी सरकार के पास बहुत-से यन्त्र-तन्त्र हैं।"

हवलदार साहब पगड़ी की जुल्फी को ठीक करते हुए यन्त्र-तन्त्र का मतलब ढूँढने लगे। जित्तन बाबू के बारे मे इतना ही मालूम था कि गाँव के जमीदार का आवारा बेटा है, जो शहर में रहकर खूब रुपैया उड़ाता है। इस हाथी को फँसाने के लिए पिछले डेढ महीने से थाना काग्रेस के प्रेसिडेण्ट साहब, बडे थानेदार साहब से सलाह-मशविरा कर रहे हैं। उधर, अब तक चुपचाप भीड मे एक हल्की हँसी लहरायी—"वाह रे हमारी सरकारवाला! इसी का सरकार है, बपौती! हा-हा-हा-हा !! पण्डित प्रेममिलिस्टर का मुँह देखो जरा ! ही-ही-ही-ही ? हवलदार साहब, बेकार क्यों देरी कर रहे हैं !"

"तऽ आप कनूनिये कर्रवाय चाहते हैं ?" हवलदार साहब ने मानो बहुत गम्भीरता से सोचकर चुनौती-भरा सवाल कियाा—"कर द कानूनी कर्रवाय ? हमको का है ? अभी दन्न दने टीशन मे जाकर टेलीफोक कर देते हैं। बडा दारोगा साहब आकर दफा एक सौ चौआलिस लागू कर देगे। ठीक है !"

जमाना वास्तव मे नाजुक है। दस मिनट मे ही लुत्ता ने एक 'पैण्ड'[1] तैयार कर लिया। बोला—"हवलदार साहेब, बगीचा शिवसरन को अधिया है। हाँ, हाँ—बटैयादारी है !"

"तनाजा दिया है शिवसरन ने ?" हवलदार साहव ने पूछा।

"नही दिया है तो क्या ? तनाजा देने में क्या लगता है ? अभी तुरन पड़ जायेगा। मेरे लिए सर्वे कम्फ का दरवाजा कभी बन्द नही हो सकता। हाकिम ने खुद कहा है—रात में बारह बजे भी यदि कोई तनाजा देना चाहेगा, हम लेगे।"

"अब का कहते हैं आप, मिसरजी ?" हवलदार ने आँख चमकायी।

"मैं आपसे पूछता हूँ, आप क्या कर रहे हैं ?" जित्तन बाबू की आवाज तेज हुई।

"आँख लाल मत करिये बाबू साहेब !.. आपको पुलिस से मोलाकात नहीं हुआ है।"

"ठीक है, आप आज भेंट-मुलाकात करा दीजिए। बड़ी मेहरबानी !"

जित्तन बाबू उछलकर ट्रैक्टर से उतरे। मीत अब तक सिर्फ जित्तन बाबू की जबर्दस्ती से चुप था। कान पकड़े रहने का अर्थ ही है, एक शब्द नहीं, चूँ नहीं !

1 प्वायण्ट

··· जित्तन बाबू से पहले ही वह धरती पर कूद चुका था—बॉख-बॉख-बॉख !

हवलदार साहब पीछे की ओर हटे और उनकी साइकिल झड़झड़ाकर गिर पड़ी। साथ ही, दिलबहादुर की किकियाहट शुरू हुई—"छिँ-उँ-उँ-उँ छिँ-उँ-उँ-उँ !"

दिलबहादुर, न जाने कब, ट्रैक्टर के पीछे आकर खड़ा हो गया था। जित्तन बाबूके उछलते ही वह खुकरी निकालकर नचाने लगा—"काट-छूँ ?··· काटी दिन्छूँ। जय पशुपतिनाथ, जय दन्तऽकाली। मऽतऽकाटि दिन्छूँ-उँ··· छिँ-उ-उ-छिँउ !"

हवलदार साहब की साइकिल गिरी, दिलबहादुर विकट आवाज में कचकचाकर काट देने को टूटा। मीत तब तक दो-तीन से भिड़ चुका था। छत्रभंग···! लोग एक-दो कर भागने लगे और लुत्तो को भागते देखकर उसकी 'जनता' उससे पहले भागकर—पाट के खेत में जा छिपी।

हवलदार साहब के साथ जो कॉस्टेबल आया था और अब तक चुपचाप खड़ा था, जित्तन बाबू के पास दौड़ गया—"जित्तन बाबू ! कुत्ते को क्यों बुलाते हैं ? दाजू को सँभालिए पहले ! वह मुफ्त में दो-तीन को काट देगा, एकदम साफ खतम कर देगा खुखड़ी से ·।"

"छिँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ !" दिलबहादुर पागलों की तरह चिल्ला रहा था, हाथ की नंगी भुजाली चमचमाती थी, उसके सुनहले दाँत की पंक्तियों से मानो आग की चिनगारी छिटककर निकल रही थी—"म-त-काटछूँ-ऊँ-ऊँ ! त्यो लुते लाय काटछूँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ !"

"हँम जानता है। अकेला मान्छे को घेरकर मारने को वास्ते आया ! जै दन्तकाली ! रगत पीयेंगा। काटछूँ-ऊँ-ऊँ !"

हवलदार साहब साइकिल के पैडल पर पॉव रखते हुए चिल्लाये—"अभी-अभी, तुरत हम टेलीफोक करते हैं। एसपी, डीएसपी सबको फौरन फोर्स लेकर··।"

मीत मान गया, लेकिन दिलबहादुर पर जित्तन बाबू की पुकार की कोई भी पतिक्रिया नहीं हुई।

नारे गूँज रहे हैं—खवासटोली में, कुर्माटोली में, केयटटोली मे ! हो-हल्ला हर टोले में बढ़ने लगा, बढ़ता ही गया। जित्तन बावू ने दिलबहादुर को पुचकारकर कहा—"दाज्यु। अस्तो न गर न मेरो दाज्यु।·· भने को कुरा सुनऽ-ऽ !· ऐसा मत करो। बात सुनो, दाज्यु। भाई !"

प्यार-भरी बोली सुनते ही दाज्यु सहज हो गया। गम्भीर होकर बोला—"अगाड़ी आप हबेली तिर फर्केगा। पहले आप हबेली की ओर जाइये।"

सुरपति ने देखा, जित्तन बाबू का चेहरा सिंदुरिया आम की तरह लाल हो गया है। आरक्त मुखमण्डल ! ललाट पर कई नयी रेखाएँ खिंच आयी हैं। वक्र ओठों से घृणा मानो टप-टप चू रही है।·· सुरपति को घटना की पूरी खबर लग चुकी है। उसकी इच्छा हुई कि दौड़कर जाये और कुशल पूछे। किन्तु, कुछ सोचकर वह गेस्ट-हाउस की खिड़की से चुपचाप देखता रहा।··· अभी जाना अच्छा नहीं !

जित्तन बाबू अपने बँगले के बरामदे में पड़ी कुर्सी पर बैठकर मडबूट उतार रहे हैं। गोबिन्दो ने आकर कुछ पूछा और कोई संक्षिप्त उत्तर पाकर अन्दर भागा। खाना कितना अच्छा बनाता है गोबिन्दो ! सुरपति अपनी तलहथी सूँघता है–शुद्ध घी में फ्राय किया हुआ बासमती चावल का भात, मूँग की दाल, डिमझोल ! कागजी नीबू-पुदीना के हरे कतरे पत्ते। दही, मिठाई और आम ! गोबिन्दो ने आज तक ऐसा आदमी नहीं देखा, जो मुर्गी का अण्डा खाता है, लेकिन मांस-मछली नहीं।

"रात मे पानी पोड गया कि नेहीं। इसी वास्ते पुकुर का माछ नेहीं पकडने सका ! फिन रात में माछ। आप माछ नेही खाता ? माँस भी नहीं ? आर डीम खाता है ?"

· गोबिन्दो के ओठ बाहर की ओर निकले हुए हैं, चोच की तरह। आश्चर्यित होने पर और भी नुकीला हो जाता है, उसका चेहरा।

जित्तन बाबू गेस्ट-हाउस की ओर आ रहे हैं। रेशमी बर्मी लुगी, कपडे के फीते से बगल बँधा हुआ कुर्ता और पॉव मे खड़ाऊँ !

"भोजन हो चुका, मिस्टर राय ?" जित्तन बाबू ने बाहर से ही पुकारकर पूछा।

"जी हाँ। अब आप भोजन करें।·"

"गोबिन्दो से बातचीत यानी जान-पहचान हो चुकी है आपकी ? तब ठीक है।" जित्तन बाबू हँसकर बोले।

सुरपति अवाक् होकर देखता रहा जित्तन बाबू हमेशा इसी तरह मुस्कराते रहते हैं क्या ?

जित्तन बाबू बोले–"गोबिन्दो की सूरत देखकर आपको कुछ पता चला ? बासठ साल उम्र बतलाता है अपनी। बचपन से ही चूल्हा फूँकने और रसोई करने के सिवा उसने और कोई काम नहीं किया। दस वर्ष की उम्र से ही हमारे यहाँ है। हा-हा-हा ! उसकी पैनी नुकीली नाक और चोच, मैं समझता हूँ पाक होते हुए पदार्थों को सूँघते-सूँघते ही शायद ।"

सुरपति अपनी हँसी को जब्त करने में व्यस्त था। अचानक ठठाकर हँस पड़ा–"हा-हा-हा-हा !" ठठाकर हँसता है सुरपति। तब जित्तन बाबू से दोस्ती होने में देर नहीं, अब।

"जित्तन बाबू का पहडिया नौकर नंगी भुजाली भाँज रहा है ! अभी भी ?"

"सुनते हैं, उसके हाथ से भुजाली छूटती ही नहीं !"

दिलबहादुर की नाचती हुई तस्वीर ! हाथ मे नंगी भुजाली ! सुनहले दाँत से आग की चिनगारी छिटकती मऽतऽकाटछूँ। काटी दिन्छूँ ! सभी टोली की आँखों के आगे नाच-नाच जाती है वह तस्वीर ! हर जगह इसी बात की चर्चा है।

"क्या कहा रूदल साह ने ? पगला गया परबतिया ?"

"हाँ, हाँ। उसको हवेलीघर में बन्द करके रखा गया है ताला-चाबी में !"

"कहाँ ताला-चाबी ? हम अभी अपने चसम से देख आये हैं। नंगी भुजाली हाथ

में लेकर, कलमबाग में उत्तर से दक्खिन, फिर दक्खिन से उत्तर, पलटनियाँ-परेड कर रहा है।"

यों, गाँव में ऐसी-ऐसी घटनाएँ हमेशा होती रहती हैं। किसी की जमीन की मेंड़ एक इंच इधर-से-उधर हो जाये, सिर पर खून सवार हो जाता है, तुरत। बात पीछे, पहले काम।··· खेत की सीमा या मेंड़ तोड़नेवाले किसान को लोग सींगवाला आदमी कहते हैं। सींगवाला आदमी हमेशा लड़ने की चुनौती देता है : 'जिसकी मेंड़ टूटी है, वह अमीन बुलावे और खर्चा देकर खेत की पैमाइश करवाये !' और अमीन लाकर खेत की मेंड़ का फैसला करवानेवाले को सभी मन-ही-मन, बिना मूँछ का आदमी समझते हैं। 'सीधा रास्ता है, उसने एक बालिश्त मेंड़ तोड़ी है तो तुम मेंड़ को ही उड़ा दो।··· घर आकर लाठी में तेल लगाओ !'

सर्वे के समय मेंड़, आल, पगडण्डी, डगर तथा निकास के झगड़े बेतरह बढ़े हैं। हर सप्ताह दो-तीन फौजदारियाँ होती हैं। किन्तु, कलमबाग की घटना ने सारे गाँव को हिला दिया है। 1934 वाले भूकम्प के दिन भी गाँव में ऐसा कुहराम नहीं मचा था।

"लुत्तो ने तार दिया है पटना ?"

"जरूर दिया होगा। वह भी छोड़नेवाला बेटा नहीं है।"

"हवलदार साहब को भुजाली से काटने दौड़ा ! खेल है ?"

"दाजू को··· साले परबतिया को कालापानी होगा।"

"परती को जोतने का फल हाथों-हाथ, मिलेगा मिसिर के बेटे को।"

लुत्तो शहर फारबिसगंज से लौटा है, सायकिल पर। हवलदार साहब भी चार बजेवाली गाड़ी से थाना में खबर देकर लौटे हैं।

लुत्तो के सभापतिजी ने कहा—"असल में काम का सिडूल ही खराब कर दिया तुम लोगों ने। आखिर सिडूल का क्या माने हुआ ? पहले से ही जिस काम के सभी रास्ते साफ कर लिये जाते हैं, उसी को सिडूल किया हुआ काम कहते हैं। सिडूल कर दिया था कि लुत्तो कुर्माटोली और खवासटोली के लोगों को लेकर कलमबाग में जायेगा और हल्ला मचायेगा, नारा लगायेगा।"

"सो तो किया !" लुत्तो ने कहा।

"अच्छा, तब सिडूल था कि बालगोबिन हरिजन अपने टोले के हरिजनों को लेकर दूर से ही कुहराम मचाता हुआ आवेगा।" सभापतिजी ने कहा।

"पूछिए, बालगोबिन से। इसलिए, उसको भी ले आये हैं। हमारा जो फरज था, जो धरम था, सो हम किया।"

बालगोबिन मोची ने थूक निगलते हुए कहा—"मैं जब-जब आऊँ, लुत्तो बाबू हवा हो गये थे।"

"हट्ट !" लुत्तो कड़ककर कहता है–"झूठा आदमी कहीं का ! हमको खूब पता है सभापतिजी ! यह अपने घर में घुसा हुआ था। गाँव के लोगों से कह दिया, यह हरिजनों का मामला नहीं। इसमें बेकार जान देने कोई क्यो जायेगा ? झूठा कहीं का ! आखिर जात का असर··· । हमको कहता है कि हवा हो गये !"

"देखिए, सभापतिजी ! यह इसी तरह हमेशा हट्ट-हट्ट कर धोपता है, हमको। जात का नाम लेकर मसखरी करता है। समझा दीजिए !" बालगोबिन मोची ने हाथ जोड़कर विनती करते हुए कहा–"हमेशा चमार-चमार कहता है। कहता है, यह राजनीयत की बात है, ढोल-पोंपी बजानेवाले क्या समझें··· !"

सभापतिजी बोले–"तब सिड्यूल था, बीरभद्दर बाबू अपने दल के साथ कलमबाग पर हमला बोल देंगे। इसके बाद नाका के हवलदार साहब जाकर दफा 144 लगा देंगे। इस सिड्यूल की सफलता से तत्काल फायदा तो यह होता कि जनाब जित्तन साहब क्या, हवेली का एक कौआ भी मुँह में आम नहीं लगा सकता। एक फसल की बरबादी होती। असफलता का कारण··· !"

थोड़ा-थोड़ा दोष तीनों के मत्थे थोपकर सभापतिजी ने समझाया–"आप तीनों की गलती है, थोड़ी-थोड़ी। भविष्य में ऐसा नहीं हो। कोई परवाह नहीं, बहुत मौका है सामने। घबराने की बात नहीं। तीनों जने मिलकर काम कीजिए, कन्धा से कन्धा लगाकर !"

"सो, लुत्तो बाबू कन्धा में कन्धा भिड़ाने दें, तब तो ? केंहुनाठ कर रखते हैं हमेशा हमको !" बालगोबिन मोची ने फिर अरजी की।

सभापतिजी ने आँख की कनखी मारकर लुत्तो को संकेत दिया···फुसला-चुमियाकर रखो इसको ! लुत्तो ने कहा–"तुम कायरता की बोली बोलना छोड़ो तब तो !··· जो बात बोलने कहेंगे सो तो बोलोगे नहीं। राजनेतिक बात को ढोल बजा-बजाकर सारे गाँव में पहले से ही परुपगण्डा करने से काम बिगड़ेगा नहीं ?"

लुत्तो ने बालगोबिन मोची से रास्ते में कहा–"यह मत बोलना कि सभापतिजी ने कहा है कलमबाग के मामले में जान नहीं है, आगे बढ़ने का !···कहना होगा, खबर दिल्ली तक चली गयी है–नेहरूजी के पास ! तब, वहाँ से खबर अखबार में छप जायेगी। इतना-सा झूठ बोलने में क्या लगता है ! नहीं तो, टोले के लोगों को तो जानते ही हो। तुरत, धोती ढीली हो जायेगी !"

धोती ढीली हुई उस दिन बहुत लोगों की। भरी बैठक में !

सोशलिस्ट पार्टी के जयदेवसिंह और रामनिहोरादास का आपसी मतभेद इतना बढ़ गया कि भरी बैठक में ही दोनों के दलवाले लड़ पड़े।··· जयदेवसिंह परानपुर पार्टी का इनचार्ज है और रामनिहोरादास ऑफिस सेक्रेटरी। जयदेवसिंह से उसकी हमेशा लड़ाई हुई है–बचपन से ही। स्कूल के मास्टर साहब ने नाम रखा था–सुन्द-उपसुन्द !··· सो जयदेवसिंह को विश्वासी साथियों से पता चला कि

रामनिहोरादास के पास पार्टी की पुरानी रसीदबही है जिस पर वह चुपचाप चन्दा वसूलता है, खाता है। बात खुली, जब सिरचन बढ़ई ने आकर जयदेवसिंह के पास फरियाद की–"बावन रुपये का है पलँग, बाबू साहेब ! पलँग बनवाकर ले गये रामनिहोरा बाबू। एक महीना दौड़ने के बाद, दाम के नाम पर एक डिबलूकट रसीद काटकर दीहिन हैं। रसीद लेकर हम क्या करें ?"

बैठक के दिन जयदेवसिंह को खबर मिली–रामनिहोरादास ने अपने शिष्य-साथियों में भी जिल्द वितरण की है। वे लोग, हाट-बाजार में रुपया-अठन्नी का सामान खरीदकर हाथ में रसीद थमा देते हैं। जयदेवसिंह ने इतना सुन लेने के बाद भी रामनिहोरादास पर कोई सीधा चार्ज नहीं लगाया। जयदेवसिंह रोनी सूरत बनाकर प्रार्थना-भाषण की भाषा में पार्टी मोरेल पर प्रवचन की तैयारी करने लगे कि रामनिहोरादास मुट्ठी बाँधकर खड़ा हो गया–"कमानेवाला खायेगा !"

उसके शिष्य-साथियों ने दुहराया–"इसके चलते जो कुछ हो !" रामनिहोरादास को भी मालूम है, सबकुछ। वह बोला–"पार्टी किसी की बपौती जमींदारी नहीं। इनचार्ज बेईमानी करे, रुपया हड़प जाये। चाहे पार्टी को जहन्नुम में भेज दे, कर्ज चढ़ाकर। कोई बात नहीं। अपने पॉकेट-कॉमरेडों की बीवी-दीदी-फुफुओं के लिए चुनाव-फण्ड से पैसे निकालकर दिये जाते हैं। साड़ी-सेमिज-ब्लाउज के लिए·· हाँ, हाँ ! रामनिहोरादास प्रूफ देगा। चौबीसों घण्टे काम करनेवाला साथी यदि चार-आठ आने पैसे बतौर मदद के ले लेता है तो बात हाय कमाण्ड तक पहुँच जाती है–पटना !"

इसके बाद छड़ी, छाता, झोली, टार्च, थप्पड़, खड़ाऊँ आदि से सबकुछ फैसला हो गया और बैठक की कार्यवाही समाप्त हो गयी !·· गाँव के लड़के आपस में बात करते समय कहते हैं–उस दिन से दोनों दल के बाबुओं की धोती ढीली ही है। पार्टी में फूट होने से यही होता है। सूद के साथ मूल भी पार !

लुत्तो अपनी पार्टी को मजबूत करने के लिए बालगोबिन मोची की बात सह लेता है। बालगोबिन मोची कहता है–"राजनीयत ·!"

लुत्तो समझाकर कहता है–"राजनीयत नहीं, राजनेति कहो।"

"दाजू", ताजमनी दिलबहादुर को बैठाकर समझा रही है–"जित्तन बाबू पर हमेशा नजर रखना। गाँव के लोगों के सिर पर शैतान सवार है। क्या जाने, कब क्या कर गुजरें !"

दिलबहादुर ने अपनी सुनहली मुस्कराहट को समेटते हुए कहा–"हुन्छ ! त्यो मूजी लुते···। उस मूजी लुत्तो को मैं खूब पहचानता हूँ।"

दिलबहादुर ने अच्छी तरह समझ लिया है, ताजमनी के सिवा इस गाँव में जित्तन बाबू को प्यार करनेवाला कोई नहीं।··· माया को कुरा ! प्रेम की बात भला छिपी रहे ? किन्तु, दिलबहादुर की समझ में यह बात नहीं आ रही कि ताजमनी हवेली

के अहाते मे पैर क्यो नही देती !

कटोरदान मे चन्द्रपुडी बन्दकर ताजमनी बोली—"ठहरो दाजू, पकवान जरा चख लो, तब जाना।"

दिलबहादुर चुपचाप बैठा ताजमनी की ओर देखता रहा कस्तो राम्री ! कितनी प्यारी है यह ताजमनी ! उँहूँ, वह ताजमनी नही कहेगा ताज्दी कहेगा—"ताज्दी, मेरो भाग भी इसी मे डाल दीजिए। जितूदाजु कभी अकेले कोई चीज नही खाते। थोडा भी हो, लेकिन बाँटकर खाते हैं।"

जितूदाजु ! दिलबहादुर नौकर नही। जित्तन बाबू ने बहुत समझा बुझाकर दिलबहादुर से भाईचारे का रिश्ता कायम किया है।

बारह-तेरह साल से जित्तन बाबू के साथ है यह। आज भी दिलबहादुर कभी कभी उस दिन को याद करता है। अपने देश की सीमा पार कर जोगबनी स्टेशन के प्लेटफार्म पर बैठा, अचरज से भौचक्का होकर सबकुछ देख रहा था। चारो ओर अचरज ही-अचरज ! मालगाडी के इजन ने सीटी दी और दिलबहादुर की आँखे आश्चर्य मे चित्ती कौडी-जैसी हो गयी। और, थोडी देर के बाद उसे हँसी आयी. इतना बडा जानवर और बोली इसकी—कू कू ! दिलबहादुर ने इजन की ओर देखकर नकल करते हुए कहा—'कू कू !' प्लेटफार्म पर टहलते हुए एक बाबू साहब उसकी चेष्टाओ को बहुत देर से ध्यानपूर्वक देख रहे थे। पास आकर बोले—"बहादुर कता ?डे को ? कहाँ जा रहे हो बहादुर ?"

"तलऽतिर !" दिलबहादुर ने अपनी भाषा मे ही सक्षिप्त उत्तर दिया। नीचे की ओर ! पहाड पर रहनेवाले, समतल भूमि को तलऽ कहते हैं। दिलबहादुर तीन नम्बर पहाड पर रहता है। नेपाल की तराइयो के उत्तर, तीन पहाडियो के बाद ! तीन नम्बर पहाड ! नीचे उतरने मे चार दिन लग जाते है ।

एक छोटा सा झरना। किनारे पर बसा पाँच घरो का गाँव, दिलबहादुर का गाँव। गाँव मे सिर्फ बूढे, औरते और बच्चे ही रहते है। लडके जवान होते ही, तलऽतिर मधेश की ओर चले जाते है। हर साल लफ्टनबाजे दिलबहादुर के गाँव मे जाते। हाल ही मे जवान हुए पहाडी लडके उन्हे हमेशा घेरे रहते। अचरज भरी कहानियाँ सुनते सुनते उनके दिल तडप उठते, तलऽतिर उतरने के लिए। जहाँ नमक की कोई कमी नही है ! बिना तेल की रोशनी जहाँ जलती है ! टरेनगाडी, पानी जहाज, हवाजहाज। लफटनबाजे का सिखाया हुआ गीत मिल जुलकर गाने मे कितना आनन्द आता था ! दिलबहादुर की देह के भी रोय खडे होते हैं !

धन-धन अँगरेजऽ स-र-कार
पानी मा जहाज चलाये को
धन धन देवता सरकार
आकाश मा जहाज उड़ाये को !

—लड़ाई मा मर्नाले सोझै स्वर्ग पुगिंछ ! लफटनबाजे कहते, लड़ाई में मरने से सीधे स्वर्ग पहुँच जाता है आदमी। यदि कोई पलटन में नहीं भर्ती होना चाहे, कोई बात नहीं। लफटनबाजे दूसरे किस्म के भी काम दिलवा सकते हैं।

किन्तु, उस बार लफटनबाजे ने कहा, "सिर्फ पलटन में भर्ती होनेवाले नौजवानों को ही ले जाऊँगा।" यों किसी ने पलटन में भर्ती होने की अनिच्छा नहीं प्रकट की थी, आज तक। दिलबहादुर पलटन में भर्ती होने से क्यों घबराये ! घबरायी थी उसे प्यार करनेवाली लड़की कांछीमाया—"दिले ! पलटन मा किन भर्ना हुने ?... पलटन में क्यों भर्ती होने जाओगे ? मुगलान में बहुत तरह के काम हैं। धनमानबहादुर, जापला, मांगला, पिछले साल जो गये हैं—कोई भी पलटन में नहीं गये।... पलटन में मत जाओ, दिले !" इसीलिए, दिलबहादुर ने लफटनबाजे से कहा—"पलटन में नहीं भर्ती होऊँगा !"

लफटनबाजे ने साफ जवाब दे दिया—"तब तुम हम लोगों के साथ नहीं जा सकते। क्योंकि, इस बार मैं उन्हीं लोगों को साथ ले जाने के लिए आया हूँ, जो पलटन में भर्ती होंगे।...जिसका नमक खाओ, उसका बदला तो देना होगा ? रास्ते में रक्सी[1], ऊख की शराब, रम, अंग्रेजी, दारू में नहाते हुए जायेंगे मेरे नौजवान। भेड़-बकरी का ताजा गोश्त, मन लाग्ने कुरा, छोरी-केटी राम्री राम्री ! जिसके पैसे से स्वर्ग का सुख धरती पर भोगते जाओगे, उसका बदला तो देना ही होगा।"

कांछीमाया को सुन्तुला[2] के पेड़ तले, अँधेरी रात में समझाते-समझाते थक गया, दिलबहादुर। किन्तु, कांछीमाया उसको कलेजे से सटाकर बोली—"मेरो रगत खाने...मेरा खून पीयो यदि पलटन में जाओ !"... दूसरा नौजवान होता तो कांछीमाया की चिपटी नाक पर एक घुस्सा मारकर बेहोश कर देता और पलटन में चला जाता। किन्तु, दिलबहादुर ऐसा नहीं कर सका। कांछीमाया का खून वह नहीं पी सकता।

गाँव के नौजवानों ने दिलबहादुर को चिढ़ाया, "नाक में बुलाक पहन लो, दिले !" लड़कियों ने हँसी उडायी—"दिले ! तुम हम लोगों के साथ सुन्तुला चुनने को चलो। और क्या कर सकते हो तुम ?" गाँव के नौजवानों ने अपनी माताओं, बहनों, स्त्रियो और प्रेमिकाओं से विदाई ली। गाँव के बाहर झरना के किनारे तक पहुँचाने गये सभी। दूर से उनके गीत की कड़ी स्वर-तरंगों पर लहराती हुई आयी :

खुकरी भिरे-र जान्छौं,
हामी हरू जर्मन को धावै माँ-आँ-आँ !

—खुकरी से लैस हम जर्मन की लड़ाई में जा रहे हैं· पलटनियाँ नौजवानो के जाने के बाद, दिलबहादुर भी एक दिन तिलऽतिर हिन्दुस्तान की ओर चल पड़ा !· सुन्तुला की डाली पकड़कर खड़ी कांछीमाया की धुँधली तस्वीर, घने कुहरे में खो गयी ! वह ढलान की पगडण्डी से नीचे उतरता गया—अकेला ! राह में साथी मिले, बिछुड़े। पहाड़ी के घने जंगलों में, लकड़ी काटती हुई पहाड़िनों के झाउरे[2] का जवाब खूब रसा-रसाकर दिलबहादुर ने दिया। चीसापानी झोरा के पास सुनी झाउरे की एक कड़ी :

---

1 नेपाली देसी शराब 2. सन्तरा।

3. एक पहाड़ी लोकगीत, जिसमें राही से प्रश्न पूछे जाते हैं। राही भी गा-गाकर जवाब देता है।

मधेश तिरऽ हिंड़े को मांछे
शहर लख्नो कैले जाने-ऐं-ऐं-ऐ
गारद मा बस्ने मेरो लोग्निलाई··· !

—ओ, मधेश की ओर जानेवाले ! यदि तुम कभी लखनऊ शहर जाओ, तो वहाँ के गारद में रहता है जो भला आदमी, उससे कहना—तुम्हारा बेटा दौड़ना सीख गया है और काली बाछी को तीसरा बाछा हुआ है।··जंगल में लकड़ी काटते समय मेरे हाथों में सोने के चूर झनकेंगे—झनक-झनक ! सुनकर तुम निश्चय ही मुझे पहचान लोगे। कोई ऐसा काम न करना, लाज ले मरन गराई—लाज से मैं इसी जंगल में मर जाऊँगी ! ·

जंगल, जंगल ! ढलान, उतार ! उतरती राह, उलटकर कोई पन्थी नही देखता। दिलबहादुर उतरता गया। समतल में बसे नेपाली कस्बो के कुछ देशवासियों ने उसे अटकाने की कोशिश की; फुसलाया, डराया, मोगलान में लड़ाई हो रही है। बन्दूक की लड़ाई नही, ऊपर से बम गिरता है हवाईजहाज से।· दिलबहादुर बम से क्यों डरे ! वह लड़ाई में भर्ती होने नही जा रहा। उस पर कोई क्यों बम गिरायेगा ? उसकी प्रेमिका, कांछीमाया ने सौगन्ध देकर कहा है, 'मेरो रगत खाने। चाँदी-सोने का पहाड़ भी मिले, पलटन में मत जाना ओ मेरो दिले ! कल से मैं तुम्हारी बाँसुरी नहीं सुन सकूँगी। मैं बैठी रहूँगी। तीन बार सुन्तुला की डाली में फूल लगेंगे। तीन बार सुन्तुला की डाली झुक-झुक जायेगी फलों से। सुन्तुला तोड़ते समय तुम्हारे गालो की याद आयेगी मुझे। तुम नही लौटोगे तो मेरी माँ मुझे उस नमक के बूढ़े व्यापारी के हवाले कर देगी। सुंगठी[1] की गन्ध उस बूढ़े की साँसों में बसी है।'

तीन साल ! तीन साल तक प्रतीक्षा मे खडी रही होगी कांछीमाया। इसके बाद ? दिलबहादुर मन-ही-मन कहता है, इसके बाद क्या ? एत्रो ! चार साल तो जेल मे ही कट गये। काछीमाया उसके लिए क्यो बैठी रहेगी ? उसका बच्चा दौड़ता होगा। उसका बूढा बाप उसको परेड करना सिखाता होगा, लेफ्टऽ । दिलबहादुर क्या करे, पहाड से उतरकर उसने मधेश में पैर रखा ही था कि !

हाँ, दिलबहादुर पोलिटिकल सफरर है। और, पीडित-राजनीतिक-सहायता-कोषवाले उसकी क्षतिपूर्ति नहीं कर सकते। जित्तन बाबू अपने दिलबहादुर के बारे में सुना रहे हैं—"उसे मेरा नौकर मत समझिए ! वह मेरा बन्धु !"

सन् बयालीस के फरार जित्तन बाबू से दिलबहादुर की भेंट जोगबनी स्टेशन पर हुई। शंटिंग करते हुए इजन की सीटी की नकल करते समय। जित्तन बाबू ने पूछा—"क्यों बहादुर, नौकरी करेगा ?"

"पलटन को काम छाडेर सब काम कर सकता है।"

जित्तन बाबू को अपनी साहबी पोशाक के उपयुक्त एक अगरक्षक मिला। किन्तु

1 सूखी मछली

कटिहार पहुँचकर जब दिलबहादुर को विदा करने लगे, वह तन गया—"किन ?·· क्यों, काम में क्या गलती हुई ?" जित्तन बाबू ने समझाकर कहा—"मुझसे अच्छे साहब मिलेंगे तुमको।" किन्तु, दिलबहादुर तो उनके ही साथ रहेगा··· "दया करके दो-तीन दिन अपने साथ में और रखिए, फिर आपकी जैसी मर्जी।" और उसी रात को कटिहार धर्मशाला पर पुलिसवालों ने छापा मारा। सुबह को, गिरफ्तार आसामियों के बीच दिलबहादुर की उपस्थिति···जाल में फँसी मछलियों के बीच एक फौकचा मछली-जैसा !

दारोगा ने पूछा—"क्यों बहादुर ! तुम कैसे ? तुम भी आजाद दस्ता में है ?"

"होस ! होस !" दिलबहादुर ने कहा—"पलटन छाड़ेर—सब दस्ता में है।"

"पलटन में नहीं जायेगा ?" दारोगा ने पूछा—"जाओ तो छोड़ दूँ !"

दिलबहादुर ने दृढ़तापूर्वक कहा—"नहीं, हम पलटन में नहीं जायेगा। हम अपने साहब के साथ रहेगा।"···दिलबहादुर के साहब को सुबह की रोशनी में गौर से देखकर दारोगा साहब खुशी से चीख पड़े—"हैलो ! तो आप नेपाल से आ रहे हैं ? कहिए, हनुमाननगर रेड के बाद चले हैं आप ?"

पुराने परिचित पुलिस इन्सपेक्टर ने सफल शिकारी के उत्साह में कहा था—"लेते जाइए बहादुर को भी। वह आपको छोड़ना ही नहीं चाहता।"···राजनीतिक बन्दियों के वार्ड में पहुँचकर जित्तन बाबू ने नया रिश्ता जोड़ा दिलबहादुर से—दाजुभाई !

जित्तन बाबू का तबादला हुआ। जाते समय कह गये—"दाजुभाई ! फिर भेंट होगी। तुम्हारी भी बदली होगी। सम्भव है, मैं आ ही जाऊँ। किसी मुकदमे की पेशी में मुझे जरूर लायेंगे यहाँ।"···रिहा होकर जेल के बाहर हलवाई के यहाँ साल-भर नौकरी करता रहा दिलबहादुर—जीतभाई की बदली कभी-न-कभी इस जेल में होगी।

जेल से लौटकर सीधे गांगुली मोशाय के घर जाने की नियत से जित्तन बाबू पूर्णिया स्टेशन पर ही उतर गये। उनका रिक्शा जेल के सामने से गुजरा और इसके बाद दोनों भाई फिर मिले।

"जित्‌दाज्यु, जिद्दायो। होय-होय। पर्ख, पर्ख। ऐय रिसकावाला, रिसका रोको !" ··दिलबहादुर ? दाजुभाई ?"··· जित्तन बाबू ने दिलबहादुर को गले से लगाया ! भरत-मिलाप हो गया मानो !

और, तब से दिलबहादुर अपने भाई जिद्दाजु के साथ छाया की तरह है। उसको कोई जित्तन बाबू का नौकर नहीं समझे !—कड़ी हिदायत है जित्तन बाबू की।

रामपखारन सिंघ दो-तीन बार दिलबहादुर के क्रोध का शिकार हो चुका है। आज भी, चारों ओर एक बार देखकर तब कुछ बोलता है, रामपखारन सिंघ—"अरे ई परबतिया का कुछ मत पूछो ! बिलाड़ के लेखा, अचानक खखुआकर टूटता है। उससे होशियार रहना गोबिन्दो !"

"गोबिन्दो को आर समझाने नेंहि होगा। वो हमारा बोंधू दाजू हो गिया है। मतरिक, तुम्हारा ऊपर भारी खफ्फा है, बहादुर ! तुम हुशियारी से रहना सिंघजी !" गोबिन्दो हँसता है।

खपसूरती में तजमिनियाँ की जोड़ी नहीं, गाँव में !

थोड़ा-थोड़ा मलारी में उसके चेहरे का काट आया है। है कि नहीं ? सारे परानपुर गाँव के लोग मानते हैं, ताजमनी अद्वितीय सुन्दरी है। सुडौल शरीर और सुघड़ बनावट। चम्पई रंग और बालिका-सुलभ चेहरा। मेघवर्ण कुंचित केशपाश ! आँखों में परिपूर्ण प्राण की गम्भीर छाया·· अजान-सुजान उसे षोडशी समझते हैं। किन्तु, गाँव की सोलह-वर्षीया कन्याओं से वह बीस साल बड़ी है। गाँव के कई नये नौजवान, कभी गलती से उसको कमसिन समझकर ठिठोली कर बैठे। ताजमनी ने मुस्कराकर जवाब दिया–"भैयाजी, तुम्हारी सबसे बड़ी बहन और तुम्हारे साथी की माँ मुझसे दो साल छोटी है उम्र में। और, आजकल स्कूल-कॉलेज में सिनेमा के गीत ही पढ़ाये जाते हैं क्या ?"

"रूप के घमण्ड में हमेशा चूर रहती है। किसी को कुछ समझती ही नहीं।"

"रूप ही नहीं। धनवाले की चहेती ठहरी। किसी को एक तिनका क्यों लगायेगी ?"

"किसी से भर-मुँह बोलती नहीं।"

"बोली का मोल है, बाबू ! उसकी बोली की कीमत दे सकोगे ?"··

"किसकी चर्चा कर रहे हो ? लेकिन, याद रहे ! ऑल राइट्स रिजर्व्ड ··सर्वाधिकार श्री जितेन्द्रनाथ मिश्र के अधीन है।"

"अहा-हा ! इसी बात पर मुझे दुज्जी की वह पंक्ति याद आ गयी–बिका हुआ धन हूँ सौदागर, मोल-तोल करते क्या हो, पा न सकोगे जिसे व्यर्थ उसके खातिर मरते क्या हो ?"

"वाह ! वाह ! पूरनियाँ कॉलेज मे पैर रखते ही लड़के को काव्य की सपनौती होने लगती है। मलारी पर कुछ शेर-ओ-शायरी हो अब ! क्यों ?"

कालेज पहुँचे हुए नौजवानों और हाई-इंगलिश-स्कूल के कुछ जुवाये हुए विद्यार्थियों में खूब पटती है। वे आपस में दिलखोल व्यवहार रखते हैं। स्कूल के एक रसिक किन्तु भुसकोल विद्यार्थी ने कहा–"हर दूसरे दिन एक छोटा-सा लड़का हाथ में टिफिन-केरियर भरकर माल ले जाता है, नट्टिनटोले से हवेली की ओर। सेवा में, श्री जित्तन बाबू तर माल ! हमारे हेड पण्डितजी रोज उसके बारे में पूछते हैं, राह में देखकर। कल तो क्लास में ही दोहा-कवित्त जोड़ने लगे–'प्रेम-कटोरी रस-भरी, लखि रसना सरसाय··· ।"

"कौन ? तुम्हारे मुच्छन पण्डितजी ? अच्छा ? –हा हा-हा !"

"किन्तु, सच कहूँ। ताजमनी सचमुच ब्रजभाषा का · कालीन नायिका जैसी लगती है, कम-से-कम मुझे तो !"

"और मलारी ? दि हरिजन ग्लोरी।"

ताजमनी नट्टिन की बेटी है। और मलारी मोची-कन्या ! हरिजन।

परानपुर के बबुआन टोले की औरतें सुनकर मुँह बिदकायेंगी, नाराज होंगी।

किन्तु यह बात सच है कि ताजमनी और मलारी-जैसी सुन्दरी कन्याएँ उनके घर नहीं पैदा हुई, आज तक। दो दीपों की तरह जगमगा रही हैं, दोनों। एक नट्टिनटोली में, दूसरी मोचीटोले के बीच।... मलारी ने गाँव के स्कूल से मिडिल पास किया है। हाई-इंगलिश-स्कूल में नाम लिखाकर तीन महीना क्लास में भी गयी। इसके बाद, कुछ शिक्षकों और सहपाठियों की कृपा से उसकी पढ़ाई रुक गयी।... महीचन रैदास की बेटी को कौन नहीं जानता ?

"डिस्टिकबोट के चेयरमैन से मुँहामुँही बतियाती है। कन्या पाठशाला की मिसट्रेसी धरी हुई है मलारी की।"

"उसका बाप बड़ा कटहा किस्म का आदमी है और उसका कुत्ता भी बड़ा बदमाश है। उसके दरवाजे पर कभी गये हो ? सबसे पहले तो उसका बाप तुमको इस तरह देखेगा मानो तुम कुछ छीनकर भागते आये हो। इसके बाद उसका कुत्ता ! दोनों तुमको सूँघने लगेंगे। और फिर दोनों... ।"

"तो, आप भी अछूतकन्या में पार्ट कर रहे हैं ? मलारी की गली में भटक चुके हैं ? लेकिन, मलारी किसी के नाम पर जवानी निछावर करके बैठेगी नहीं। वह ताजमनी नहीं, सो जान लो प्यारे भाइयो !"

"ताजमनी यों ही नहीं बैठी हुई है। जित्तन बाबू ने नथिया उतारा था, सुनते हैं।"

"सदरी नहीं, चुराकर उतारा था जित्तन बाबू ने। ढोल-ढाक बजाकर नहीं।... इसलिए सच्ची बात क्या है, कोई नहीं जानता।"

"ताजमनी हवेली में नहीं जाती है, लेकिन... ।"

"कौन कहता है, नहीं जाती है ? कोई पहरा करता है किसी का ? वह नहीं जाती होगी तो जित्तन बाबू जाते होंगे नट्टिनटोली।"

नट्टिन की बेटी है, ताजमनी।

किन्तु, पली है परानपुर इस्टेट की हवेली में। स्वर्गीय शिवेन्द्रनाथ मिश्र के गुरुभाई की रक्षिता थी ताजमनी की माँ।... परानपुर में हिन्दू नट्टिनें तीन पुश्त से बसी हुई हैं। जितेन्द्रनाथ मिश्र की विधवा माता ने ताजमनी को नट्टिनटोली से बुलवाकर पालना शुरू किया था। ताजमनी की माँ राजमनी को भागलपुर में गंगा-लाभ हुआ। कहाँ जाती बेचारी ताजू ? हवेली की बेटी की तरह पली है, ताजमनी।.. ताजमनी अन्तिम समय तक बूढ़ी के मुँह के सामने रही। काशी में मरते समय ताजमनी के हाथ की गंगोतरी प्राप्त हुई। हँसकर बोली थी जित्तन की बूढ़ी माँ—"तेरे दिल में बैठा है जित्तन ! वही मुझे पानी पिला रहा है। मैं अपने बेटे के हाथ का पानी पी रही हूँ।"

ताजमनी बैठकर याद कर रही है, अपनी मालकिन माँ को !... काशी की गलियाँ, घाट और सीढ़ियाँ ! दशाश्वमेध पर श्यामकल्याण छेड़ती शहनाई ! रामनगर किले की रोशनी उस पार झिलमिलाती। राजघाट पुल से गुजरती हुई गाड़ी... रामपखारन

सिंघ और जलधारीलाल दास मुंशी लौटे हैं, खाली हाथ ! पेरोल मंजूर हुआ जितुदा का। लेकिन नाम जिद्दा नहीं रहे तब तो ? पत्थर ! नहीं आये अपनी माँ का मुँह देखने। जिद से जले हुए बेटे ने भागलपुर जेल से फुफकारकर जवाब भेजा—"शर्त लिखकर माँ का मुँह देखने जाऊँ, मुझे मंजूर नहीं !"

"ताजू बेटी ! नहीं आया न ? मैं जानती थी। अब क्या देखती है ? चन्द्रायनव्रत का ओरियावन करो मेरे लिए।"··· शरीर रखने को आतुर हंसा को जिसने नहीं देखा, वह कैसे समझेगा ? ताजमनी ने देखा है, रोज-रोज, तिल-तिलकर स्थिर होती हुई काया को। मृत्यु के पूर्व मालकिन-माँ के मुखमण्डल पर एक अपूर्व रोशनी छा गयी थी। डेढ़ घण्टे तक बोलती रही थीं ताजमनी की मालकिन-माँ ! बातें याद करके ताजू रो लेती है, घड़ी-दो-घड़ी !···

राजघाट पुल पर गाड़ी की गड़गड़ाहट··· ताजमनी काशीविश्वनाथ को लौटती बेर प्रणाम करते समय रो पड़ी। मणिकर्णिका पर जलती हुई चिता की लपलपाती रोशनी !—मालकिन-माँ·· तेरे लड़के को कौन समझाये ? वह तो खुद पढ़ा पण्डित है। तुमने काशी में बैठके इष्टनाम जाप किया है माँ, तेरे बेटे का अमंगल नहीं होगा। अक्षर-अक्षर पालूँगी तुम्हारी बात। माँ अन्नपूर्णा··· ! तारा-तारा !

सुधना जब लौटकर आया तो ताजमनी के कलेजे की धड़कन धीरे-धीरे सहज हुई।

"झूठ तो नहीं बोलते, सुधो ! मिट्टी तुमने किधर फेंकी ?"

"नहीं दिदिया, झूठ नहीं कहता। असल में, मुझे कुत्ते का बड़ा डर है, इसलिए पहले राजी नहीं होता था।" सुधना ने हँसते हुए पॉकेट से यूक्लिप्टिस के सूखे पत्ते निकालकर कहा—"तुझे सर्दी लगी है, चाह बनाकर पी ले, गुड डालकर।"

सुधना यूक्लिप्टिस के पत्ते चाय के लिए नहीं लाया है। इसको कहते हैं, चिह्नवानी ! सुधना हवेली तक पहुँचकर वापस आया है, इसका प्रमाण है—पत्ता।

"सुधो भैया, आज तुमको चीनीवाली चाय पिलाऊँगी। पैर में काँटा-वाँटा तो नहीं गड़ा है ?" ताजमनी ने सुधना के सिर के बालों पर हाथ फेर दिया। फिर सकुचाती हुई बोली—"तुमको किसी ने देखा तो नहीं ? टोका तो नहीं ?"

"एक पंछी ने भी नहीं। मैं सीधे पोखरवाले बाग के पास गया, फिर दक्खिनवाली राह पकड़कर हवेली के पिछवाड़े।"

"च: च: ! बेचारा !··· अँधेरे में डर तो जरूर लगा होगा ?"

"तुमने बताया था न 'सिव सिवेन्दर भाग कलन्दर' मन्तर पढ़ना, डर लगे तो ?" सुधना ने बात का प्रसंग बदलते हुए कहा—"कल फिर सेवईं बनाकर नहीं भेजेगी जिद्दा को ?"

"क्यों ?" ताजमनी मुस्करायी। सुधना ने उसके मन की बात कैसे जान ली ? अभी-अभी वह सोच रही थी, कल कमलगट्टे का हलवा बनाकर भेजेगी। "सेवईं, खीर और हलवा बनाकर भेजने के सिवा और कोई काम नहीं मुझे, क्यों ?"

सुधना अप्रस्तुत हुआ। बोला—"मैं मीत से दोस्ती करना चाहता हूँ। देखने में

भोला-भाला झबरा, कितना प्यारा कुत्ता है ! उसका केश कितना चमकता है दिदिया !"

सुधना अपनी किताब ले आया और लालटेन के पास पढ़ने बैठा। ताजमनी उठी और घर के अन्दर जाकर माँ काली की तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी—"श्यामा ! माँ ! उसका एक रोम भी न कलपे। जिद्दा का अमंगल न हो। मुझे जितना भी दुख देना है दे, उसके बदले।" सुधना, फुफेरा भाई है ताजमनी का। अनाथ भाई को ले आयी है लहेरियासराय से। सुधना को स्वर्ग मिला है। जन्म लेने के बाद इतना प्यार उसे कभी न मिला। अपने प्यार के भागीदार जित्तन बाबू के प्रति अपने असली मनोभाव को कभी प्रकट नहीं होने देता। इतना चालाक लड़का !·· किन्तु, मीत से मिताई करने के लोभ में पडकर उसने समझौता कर लिया है, मन-ही-मन। नही तो, माँ तारा और जित्तन बावू, उसकी दिदिया के प्यार के भागीदार !· कोई बात हो, दिदिया अपने जिद्दा का उदाहरण दे बैठती है—"जिद्दा जब तुम्हारी उम्र के थे तो रामायण का सुन्दरकाण्ड से लेकर किचकिन्धाकाण्ड तक··· !" जिद्दा-जिद्दा-जिद्दा ! माँ तारा, तारा माँ, श्यामा-श्यामा ! काली !

अब सुधना भी हमेशा मीत की बात करेगा—'दिदिया, दिदिया। मीत, मीत, मीत। जीत ·· !'

सुधना जैसा ही भोला-भाला लड़का—जीत !

रेशमी कुरता और लाल धोती पहने, सम्पनी गाड़ी पर बैठकर ताजमनी की ओर देख रहा है, मेले में। ताजमनी भी उस समय बच्ची थी। उसकी माँ ने पहली बार रंगीन घाघरीवाला कुरता खरीद दिया था। ताजमनी अपनी सम्पनी गाड़ी पर गयी थी।··

बैलगाडियों की दौड ! ताजमनी की बैलगाड़ी हर साल मेले मे जीतती। उस बार भी उसके बैल घुँघरू झनकारते, पूँछ ऊपर उठाये सबसे आगे निकल आये ! बेचारा भोला-भाला लड़का जीत रोने लगा—उसकी बैलगाड़ी क्यों हार गयी ?

बच्ची थी ताजमनी भी। किन्तु जीत को रोते देखकर वह हँस पड़ी थी—"वाह रे लड़का ! इतना बड़ा हो गया है, बैल हार गया है तो रोता है ! बैलों को कभी अपने हाथ से गरम रोटी गुड़ के साथ खिलाते हो ? फिर बैल हारेंगे नही ?"

ताजमनी अपनी सम्पनी-गाड़ी मे बैठकर जरमनियाँ बाजा मुँह से बजाने लगी थी। एक साथ सात सुर बोलते—हैं-सैं-रैं-अँ-गँ · !

रोता हुआ जीत चुप होकर ताजमनी की ओर देखने लगा। जीत की भीगी पलकें·· ! लम्बी मूँछ और बड़ी लाठीवाले एक आदमी· रामपखारन सिंघ ने पत्ते में मिठाई लाकर दी। जीत ने पत्ते के दोने को बैलों के आगे फेंक दिया था, गुस्से में ! ताजमनी बाजा बजाना बन्दकर मन-ही-मन बोली—'वाह रे दुलरुआ ! इतना गुस्सा !'

घर लौटते समय, ताजमनी अपने गाड़ीवान कारू मियाँ से बोली थी—"उस सम्पनी गाड़ी को आगे-आगे रहने दो।··· बेचारे की गाड़ी दौड़ में हार गयी है।"

गाड़ीवान कारू मियाँ ने हँसकर कहा था—"हाँ-आँ-आँ !··· दुलहा पसन्द है ?

कारू मियाँ के विरुद्ध उसने माँ के पास नालिश की थी–"मेले में रोनेवाले लड़के को मेरा दुलहा कहता है कारू मियाँ !"

"कारू-उ-उ ! ऐसी ठिठोली ठीक नहीं।"

आज ताजमनी ने सपने में अपनी मालकिन-माँ की नौंड़ी, जिवछी फुआ को देखा है·· ! "ओ मालकिन-माँ ! तुम्हारे गुरुदेव की समाधि की माटी से मैंने हवेली की चौहद्दी बाँध दी है। तुम्हारे पुत्र का अकल्यान नहीं होगा !"

होल्डिंग डाँग-ओ-सॉवजेवाह्नः !

भिम्मल मामा की इस पेटेण्ट पंक्ति का अर्थ आज तक कोई नही बता सका। जो बतायेगा, उसको एक अँगरेजी डिक्शनरी से पुरस्कृत करेंगे, मामा। भिम्मलीय पुरस्कार !

भिम्मल मामा, सारे परानपुर के मामा !··परिवार के हर व्यक्ति के मामा ! मामा ग्रामवासी योगी हैं। तीस साल पहले नारी मुई उनकी, मुकदमेबाजी में घर की सम्पत्ति नाशी। दोनों बड़े भाई तो हिम्मत बाँधकर गृहस्थी में लगे रहे। किन्तु, भिम्मल मामा तीस साल की उम्र मे ही बिना मूड़ मुड़ाये संन्यासी हो गये।

लगातार, आठ वर्षो तक उन्होंने अपनी मेट्रिकफेल विद्याबुद्धि से बहुत किस्म के उद्योग किये, धन्धे फैलायें; मगर हाथ कुछ न आया। पिछले बीस वर्षों से उनके आचरण और दिमाग के बारे मे तरह-तरह की फुलझड़ी कहानियाँ सुनी-सुनायी जाती हैं। गाँव के हर टोले के लोग कुछ-न-कुछ जानते हैं, मामा के बारे मे।

"इन्दरजाल पढ़ते-पढते पगला गये मामा !"

"नः नः, वह सब लग्गो बात है। असल बात है कि मैटरी में तीन बार लगातार फैल करने के बाद भिम्मल मामा की स्त्री ने··· ।"

"दुत्त। क्या बेबात की बात बोलते हो ! आदमी बड़े काबिल हैं भिम्मल मामा। जरा सनकाहा हैं। ज्यादा काबिल होने से ऐसा ही होता है। सच्ची बात मुँह पर कहते हैं, इसीलिए किसी से पटरी नहीं खाती।"

"अजी, किस महामूर्ख कुकाठ की बात कर रहे हो ? सुसरा पागल है। सीधी बात ! परानपुर की मिट्टी मे यही एक ऐब बड़ा भारी है।"

साठा हैं भिम्मल मामा, किन्तु पाठा नहीं। इसलिए नयी पीढ़ी से नहीं पटती है। हिसाब लगाकर देखा गया है, पिछले बीस साल मे गाँव से पढ़ुआ लोगों के सात-आठ दल निकले। जित्तन बाबू, मनमोहन बाबू, जयदेव, रामनिहोरा, मकबूल, परमा, प्रयागचन्द आदि के दल। हर दल में एक-दो काबिल लड़के निकले। किन्तु किसी काबिल को भिम्मल मामा ने कबूल नहीं किया–"कोच्छ नहीं, कोच्छ नहीं, ऑल अडेल्ट्रेशन विदाउट लिमिटेशन· ! बनस्पतिया नौजवान हैं, सब !"

"रामायण की सिर्फ तीन चौपाइयो की शंका का समाधान कहाँ कर सका कोई ?

एक चौपाई के एक पैर का भी नहीं। 'होल्डिंग डॉग-ओ-सॉवजेवाद्ध' का अर्थ नहीं बता सका कोई। तो, क्या किया ? तो क्या पढ़ा-लिखा ? कोच्छ नहीं, कोच्छ नहीं··· !"

नवीन परानपुर पुस्तकालय में पठनागार है, जिसे कभी-कभी गप्प-घर बना दिया जाता है।···छुट्टियों में स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी गाँव आते हैं। पठनागार में बैठकर नाटक-ड्रामा का रिहर्सल करते हैं। अथवा सभी बारी-बारी से अपने कॉलेज की उन शहरू लड़कियों की कहानी कहते-सुनते हैं, जो, हिम्मत बाँधकर, कमर कसकर उनके साथ, एक साथ बैठकर पढ़ने के लिए कॉलेज में उतर पड़ी हैं··· ।

"गजब की इण्टेलिजेण्ट हैं मिस चटर्जी। एक-से-एक प्रोफेसर के दुलरुवा मेल स्टूडेण्ट की नाक काट ली उसने ! फर्स्ट क्लास फर्स्ट ?"

"देखने में कैसी है ? यह तो बताओ। उसमें कौन क्लास ?"

भिम्मल मामा पठनागार के एक कोने में बैठकर किसी बासी मासिक पत्रिका में डूबे रहते हैं। श्रवण-शक्ति को क्षीण करने के लिए बटुए से देव-कपास निकालकर कानों में डाल लेते हैं। क्योंकि, ऐसी बातों में पड़ने का अर्थ है, बनस्पतिया नौजवानों से खटपट खड़मंगल !

"केन यु से ह्वाट पाकिस्तान वाण्ट्स ? कह सकते हो तुम, क्या चाहता है पाकिस्तान ?··नो, नो। नहीं, नहीं–कह नहीं सकते तुम, कह नहीं सकता वह। जाने और कहे तो कहे भिम्मल !" अनवरत बुदुर-बुदुर बोलते रहते हैं। राह चलते लोगो से प्रश्न करते हैं, परिभाषा माँगते हैं और विभिन्न भाषाओं में अभिवादन करते हैं। गाली, सिर्फ मैथिली भाषा में ही देते हैं।

मामा दैनिक अथवा साप्ताहिक पत्रिका नहीं पढ़ते। बासी मासिक पत्रिका ही पढ़ते हैं। उपन्यास नहीं पढ़ते, क्योंकि उपन्यास की सही परिभाषा आज तक किसी ने नहीं सुझायी है। और किसी बात को बगैर परिभाषा के गाँव में चलाना चाहे कोई, चला ले। लेकिन भिम्मल मामा अपने सामने उसको नहीं चलने देंगे।–"धूल किसी अन्य के अक्षिगोलकों में झोंकना ! प्रताप से सैनिक और मतवाला से हिन्दूपंच कण्ठगत है अभी भी। हिन्दूपंच का बलिदान-अंक और चाँद का फाँसी-अक जब जप्त हुआ तो मैंने ललकारकर कहा था–कर लो जप्त ! परवाह नहीं। दोनों अंक हैं मेरे कण्ठ में !"

तीन साल पहले जिला साहित्य-सम्मेलन के मन्त्री को तीन लेख सुनाये थे भिम्मल मामा ने। बीच-बीच में कुछ टूट पड़ गये थे–शेषांक अमुक पृष्ठ पर पढ़िए, तथा कई विज्ञापनों के साथ रट गये थे विशेषांकों को।· उसी दिन से गाँव में यह बात फैली थी कि भिम्मल मामा शुद्ध पगलेंटी नहीं करते, कुछ रखते भी हैं। किन्तु इधर जब से दिमाग गड़बड़ाया है, ज्यादा पगलेंटी ही करते हैं। उपन्यास की परिभाषा ?

"अजी, उपन्यास की परिभाषा किसी और के सामने पसारना।··· चन्द्रकान्ता के

बाद हिन्दी में कोई उपन्यास निकला ही नहीं। ऑल··· बनस्पतिया। उपन्यास की गलत परिभाषा क्यों मान लूँ तुम्हारी ? जबरदस्ती है कोई ?"

सब कोई माने, माने—माने सुरज चानवाँ,
तबहूँ ना माने रामाँ—हमर भिम्मल मामवाँ-आँ !

गाँव के लड़के आज भी उपर्युक्त गीत की कड़ियों को दुहराते हैं।

भिम्मल मामा राजनीति में भी रह चुके हैं, कुछ दिन।

बहुत दिनों तक कांग्रेस के सदस्य रहे। मतान्तर हुआ, खटपट खड़मंगल के बाद कांग्रेस से खड़ाऊँ खटखटाते हुए निकल आये। मुस्लिम लीग की मेम्बरी के लिए दरखास्त की। जिला के रजाकार से लेकर सदर तक का पसीना छूटने लगा था।··· भिम्मल मामा अपने अकाट्य तर्कों से भरा तरकस लेकर बोले—"क्यों ? मैं बगैर अपनी जाति को बदले लीग का सदस्य होना चाहता हूँ। देश में कोई ऑपोजीशन पार्टी ऐसी नहीं, जिसके सिद्धान्तों से मेरा मत मिलता हो। मुस्लिम लीग मे अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए आना चाहता हूँ।

पता नहीं, बात कहाँ तक सच है। लेकिन, भिम्मल मामा का कथन है कि मरहूम कायदे-आजम ने विशेष नियम बनाकर सूबाई मुस्लिम लीग के सदर को लिखा था—"मिस्टर भिम्मल को लीग का मिम्बर बना लिया जाये !"

गाँववालों को याद है·· सिर पर नीली टोपी, हाथ में चाँद-सितारा मार्का झण्डी एक लाठी में फहराते हुए जब भिम्मल मामा ने पहली बार गाँव में प्रवेश किया था। गाँव के अधिकांश लोग उनके इस पागलपन से दुखी हुए। किन्तु आर. एस. एस. के कुछ लड़कों के खून में बहुत गर्मी आ गयी। गाँव की सीमा पर जाकर रोका। समरेन्दर के भाई अमरेन्दर ने चेतावनी दी—"खबरदार ! एक कदम भी आगे बढ़ने की कोशिश मत कीजिए।"

भिम्मल मामा ने बड़ी लापरवाही से हाथ की झण्डी हिलाकर कहा—"तो तुम लोगों ने मुसोलिनिज्म का प्रयोग शुरू कर दिया ? गाँव के आदमी को गाँव में लौटने नहीं दोगे ?"

"मुसलो·· मुसोलिनिज्म क्या बकते हैं ?"

"मुसोलिनी की पार्टी भी स्यापोश और तुम्हारे दल में काले··· !"

"स्याहपोश का क्या अर्थ ?"

"तुमको अब किस भाषा में समझाऊँ ? जरमनियाँ भाषा में ? क्योंकि वाइड मैन कैम्फ आर्यभाषा तो जरमनियाँ भाषा ही हो सकती है।"

भीड़ बढ़ गयी थी। गाँव के कई बड़े-बूढ़े आ गये। कुछ शान्त प्रकृति के शीतल शब्द कहे—"परमा ! जरा उम्र का खयाल करो। जाने दो मामा को।"

किन्तु भिम्मल मामा ने इस तरह जाने में अपना अपमान समझा—"नो, नो ! होल्डिंग डॉग-ओ-सॉवजेवाह्‌ ! अपनी काष्ठपादुका को एक तिल भी आगे नहीं जाने

दूँगा। लेट कायदे-आजम डिसाइड··· । हाँ-हाँ ! आइ वाण्ट पाकिस्तान। मैं चाहता हूँ पाकिस्तान, विदाउट एनी एडल्ट्रेशन एण्ड विद सम लिमिटेशन।"

"आप हिन्दू होकर भी पाकिस्तान क्यों चाहते हैं ?"

"हाँ, मैं चाहता ही नहीं, आइ ट्राई, मैं चेष्टा करता हूँ। आइ क्राई, मैं रोता हूँ या चिल्लाता हूँ। क्योंकि, पाकिस्तान बनने के बाद जो बचा रहेगा–वह स्वयं मुसल्लम हिन्दुस्तान बन जायेगा। इसलिए, जितना जल्दी पाकिस्तान बने, आइ ट्राई, आइ क्राई !"

एक-एक शंब्द के लिए लड़नेवाले भिम्मल मामा ने बहुत-से शब्दों की रचना की है। उनके साथ उन्हीं के शब्दों में बातें करने से बहुत प्रसन्न होते हैं।

दुखान्त नहीं दुखदाएण्ड। सुखान्त नहीं, सुखदायक। टेलीग्राम शब्द से बहुत चिढ़ते हैं–"नो-नो, इतना बड़ा नाम नहीं चलेगा। इसके लिए उपयुक्त है–ट्रा। टक्वा ट्रा, ट्रा-ट्रा !··· प्रोड्युस और प्रस्तुत को मिलाकर प्रद्युरय क्यों नहीं ?"

भिम्मल मामा की 'साइकिल्स' में सैकड़ों कहानियाँ हैं। उनके नाम की भी कहानी है। सही नाम–विजयमल्लसिंह। सिंह को मामा ने सन् उन्नीस सौ बीस मे कतरकर फेंक दिया। तब लिखने लगे–व्ही. मल्ल., म. म.। चूँकि भिम्मलकृत भानुमती पेटिका के एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका कोई, एक माल तक प्रतीक्षा करने के बाद भिम्मल मामा ने अपने नाम के साथ महामहोपाध्याय जोड़ना शुरू कर दिया। संक्षेप में–म. म. ! व्ही. मल्ल, म. म.। कालान्तर में भिम्मल मामा। वे किसी के मामा नही, कोई उनका भांजा नहीं।

खटम-खड़म, खटम-खड़म !

भिम्मल मामा सार्वजनिक सर्वदलीय सभा में जा रहे हैं–"चलो, चलो ! परानपुर के पीड़ितो, पतितो, दलितो, गलितो··· ।"

"अच्छा ? तो भिम्मल मामा ने भी अब जित्तन बाबू का साथ छोड़ दिया ?"

"आज की सभा तो जित्तन बाबू के खिलाफ हो रही है, उसमें इस तरह उत्साहित होकर लोगों को गुहारते जा रहे हैं। इससे तो यही अर्थ निकलता है।"

"हाँ भाई, दो पागलों में और कितने दिनों तक दोस्ती रह सकती है ?"

"चलो, चलो। परानपुर के पीड़ितो, पतितो, दलितो ! अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो–अर्थात् जो अश्वत्थामा को मारे वह आदमी, नहीं तो हाथी–हा-हा-हा। चलो, चलो !"

लुत्तो सभामंच पर खड़ा होकर देख रहा है, एकत्रित भीड़ में खोज रहा है–उँहु। एक भी सोसलिस्ट नहीं, कौमलिस्ट का एक बच्चा तक नहीं आया है सभा मे ! ठीक है, इसी बार रंग डिकलियर हो जायेगा।

"ए मिस्तरीजी, सिनेमा का गानावाला रिकाट मत चढाइए। हाँ, हाँ, सभापतिजी का ही हुक्म है, सिनेमा का एक भी गाना नही।"

लाउडस्पीकर का ऑपरेटर कहता है—"लेकिन, रास्ट्री गीत तो एक्के गो है। वही 'माता के सिर पर ताज' वाला। सो भी थोडा कटा हुआ है।"

"जो भी है, जैसा भी, उसी रिकाट को बजाइए। जानते हैं नही, उस बार क्या हुआ था ? गॉव कौन है, सो याद है ? परानपुर है। हाँ !"

उस बार क्या हुआ था ? चार महीना पहले की बात, जिला सभापतिजी का प्रोग्राम था, परानपुर मे। लुत्तो ने बहुत मेहनत की थी। खूब बड़ी सभा हुई थी। इस मैदान में तिल धरने की जगह नही रह गयी थी। दो घण्टे तक बोलते रहे थे सभापतिजी ! मुँह से झाग उडने लगी थी। उसी सभा के बाद से लुत्तो को कांग्रेसी लोगो ने लुत्तो बाबू कहना शुरू किया। क्योकि, खुद जिला सभापति ने कहा था—"वाह ! लुत्तो बाबू ! आपने तो इस गॉव को पूरी तरह कैपचर कर लिया है !"

सोशलिस्ट लोग चिढकर बैगन का भर्ता हो गये, उस सभा के बाद ! गॉव में इतनी बडी सभा कभी नही हुई, पण्डित जवाहरलालजीवाली सभाओ को छोडकर। सो, कम्युनिस्ट पार्टीवालो को और कुछ नुक्स नही मिला तो हारे हुए बच्चे की तरह मुँह चिढाकर सन्तोष किया। जिले की एक काग्रेस-विरोधी पत्रिका मे उस सभा की एक व्यंग्यपूर्ण रिपोर्ट प्रकाशित करवायी—जिला सभापति ने इस सभा की कार्यवाही, 'आ जा मोरे बालमा तेरा इन्तजार है' गीत से शुरू की। और सभा समाप्त हुई—'हल्ला-गुल्ला ला ए-ला' भजन से !

ताज-ताज-ताज ताज !

'मेरी माता के सर पर ताज' वाला कटा हुआ रेकर्ड ताज पर आकर 'ताज-ताज-ताज' कर रहा है।

"ए मिस्तरीजी ! रिकाट ठीक कीजिए !"

"ए मिस्तरीजी ! अब गाना रहने दीजिए अभी। जरा-सा इनका भासन होगा। लौडपीस्कर का कलकॉटा टीक कीजिए।'

"ऐ ? जयमगल तॉती भी लेक्चर देगा ? क्यो नही देगा ? कॉलेज मे पढता है। तिस पर सरकार के पैसे से पढता है। कहॉ लिखा हुआ है, किस कानून की किताब मे लिखा हुआ है कि भासन-लेक्चर सिर्फ ऊँची जातिवाला ही देगा ? तॉतीटोलीवालो को कम सताया हे इसटेटवालो ने ? वाह, जयमगल तॉती लौडस्पीकर के सामने कितना शोभता है, देखो-देखो !

"इस सभा मे समवेत समादरडीय सन्तप्त साथियो ! तथा, मैयो मॉम्-भाइयो-बहिनो !"

"सुधार लीहिस ! हमको तो डर हुआ कि शुरू मे ही मेमियाने लगा। खूब लम्बा घेर बॉधा है जयमगल तॉती ने !"

केयटटोली की बहरी बूढी को उसकी जवान पोती ने समझाया—"जयमगल कहता

है कि इस सभा में जो आये हैं, सबको एक साथ रहना होगा। माँ-बहन की सौगन्ध देकर जयमंगल··· ।"

लाउडस्पीकर के भोंपे से निकली अपनी आवाज को सुनकर जयमंगल की देह रोमांचित हो उठी। उसके खून में एक लहर आयी–"भाइयो! आप लोगों ने ब्रमपिचाश या ब्रह्मपिशाच का नाम जरूर सुना होगा! और, यह भी सुना होगा आपने कि बरदिया घाट के ताड़ पर एक पुराना ब्रमपिचाश रहता है। आप लोगों ने सिर्फ सुना है। किसी ने आँख से देखा नहीं।··· आपने, एक-एक आदमी ने उस ब्रमपिचाश को देखा है! आपने कभी पहचानने की कोशिश ही नहीं की!"

"देखा है? किसने देखा है? सबने देखा है, कहता है!" सभा में एकत्रित अधिकांश लोगों के मुँह अचरज से खुल गये?··· भिम्मल मामा अपनी बही पर पेंसिल रोककर, रुके हुए भाषणकर्ता की अगली बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं। गत बीस वर्षों में गाँव में जितनी सभाएँ हुईं, किसी भी दल या पार्टी की ओर से भाषण हुआ, भिम्मल मामा ने इसी मोटी बही में नोट किया है। तीन-तीन बार थानेदार साहब ने उनकी इस बही को जप्त किया है। अभी भी मोहर मारा हुआ है।

जयमंगल ने श्रोताओं में ब्रह्मपिशाच का भय दो मिनट तक फैलने दिया। इस अवधि में उसने अपनी बात माँज ली। फिर, उसने नाटकीय ढंग से अपना दाहिना हाथ उठाया–"जिन्हें देखना हो, अभी भी जाकर देख सकते हैं। बरदिया घाट पर जाकर देख सकते हैं। लम्बे-लम्बे बाल! आँख पर कोल्हू के बैलोंवाला काला चश्मा! साथ में कुत्ता, हाथ में छड़ी और मुँह में··· पैपचुरुट!"

भिम्मल मामा मंच के पास ही बैठे हैं। धीरे से कहते हैं–"पैप-चुरुट क्या? सीधे नलचिलम कहो।···वाह! जयमंगल ने खूब रसीला लेक्चर देना सीखा है, कॉलेज में!···बात कहाँ से शुरू कीहिस और कहाँ-से-कहाँ फेंक दीहिस! समझे? ब्रमपिशाच!"

"लेकिन!" जयमंगल ताँती ने अपनी बड़ी उँगली उठाकर कहा–"याद रखिए, साधारण ओझा-गुनी इस ब्रमपिचाश को काबू में नहीं ला सकते। यह उसी ब्रमपिचाश का बच्चा है, जिसके जुल्मी बाप ने गाँव को ही नहीं, सारे सबडिवीजन को तबाह किया था···!"

"फुलस्टाप प्लीज!" भिम्मल मामा अपनी बही वन्द कर खड़े हुए–"कृपया पूर्णविराम! सभा के प्रधान महोदय, क्या मैं इस गाली-गलौज-सभा का विधि-विधान जान सकता हूँ?"

"बैठ जाइए, बैठ जाइए।··· पागल आदमी है। अजी, उसको बैठाओ! ऐ स्वयंसेवक!"

"अरे भाई, बोलने दो न! क्या कहता है, जरा सुनो भी तो!"

"दिमाकृषि! दिमाकृषि के दामन में दाग मत लगाइए प्रधान महोदय! व्यक्तिगत विद्वेषपूर्ण···", भिम्मल मामा की आवाज क्रमशः तेज होती गयी–"देन, आइ से·· । इसका कोई विधि-विधान नहीं तो, मैं कहता हूँ, दिस मोबोकृषि विल स्वीप यु आउट। लीप-पोतकर बराबर कर देगा यह भेंड़-भिड़ौवल गुण्डावाद दैट इज

मोबोकृषि !"

"परानपुर गॉंव के बॅटैयादार ! जिन्दाबाद !"

लुत्तो ने जयमगल को एक ओर हटाकर, माइक पर नारा लगाना शुरू किया। वह जानता है, सभा मे किसी किस्म की गडबडी फैलने लगी तो तुरत जोर-जोर से नारा लगाना चाहिए।

"लगाइए, आप लोग जोर से नारा—इतने जोर से कि सुनकर दुश्मन का कलेजा कॉंप उठे और हाट फैल हो जाये !"

भिम्मल मामा खडाऊँ खटखटाते हुए चले—"गॉड सेव पण्डित नेहरू, भगवान् बचाये। काग्रेस की बढी हुई प्रतिष्ठा को ये मूडने पर तुले हुए हैं दे' ल शेव दि लॉग एण्ड ग्रीन प्रेस्टिज ऑफ दि रूलिग पार्टी, क्लीनली। सीलपट चौपट सफाचट्ट !" खडम-खटक खडम-खटक !

लुत्तो ने जयमगल तॉंती को बैठने का इशारा किया और माइक मे फूॅंक मारी—'फूॅं-ऊॅं ऊॅं-ऊॅं !'

'फुस-टक-टक-टक !'

लाउडस्पीकर के भोपे मे लुत्तो की फूॅंक और उॅंगली की खटखटाहट की आवाज को सुनकर सभा मे बैठी एक औरत ने कहा—"देखो, गुनमन्तर फूॅंककर, चुटकी बजाकर भिम्मल पगलवा को किस तरह भगा दिया लुत्तो ने ! खवास होने से क्या हुआ, बाभनो का सभी गुन सीख लिया है उसने।"

लुत्तो ने दो तीन गर्म नारे लगाने के बाद कहा—"जमींदारी के एजण्ट को देख लिया न आप लोगो ने ? इसी को कहते हैं—दलाल। गॉंव मे ऐसे ऐसे बहुत दलाल हैं। होशियार ! आज की सभा मे जो लोग नही आये हैं, वे लोग भी दलाल हैं। ऑखो के सामने, दिन दहाडे जुल्म होता है और हमारे सोसलिस्ट और कौमलिस्ट भाई कमलिया तानकर सोये रहते हैं। अभी भी, जिन्हे देखना हो, जाकर देख सकते हैं—परानपुर स्टेशन पर। आमो के पचास टोकरे पारसल से पटना, भागलपुर और हजारीबाग भेजे जा रहे है। जरा विचारकर देखिए, परानपुर के बाग का आम परानपुर के एक बच्चे को भी नसीब म नही और कानपुर की कोकलाबाई और हजारीबाग की क्या नाम है, बेगम हजारा, तो पटने की मेमिन के नाम पारसल पर पारसल भेजे जा रहे हैं, सो भी ट्रेन से नही, पूर्णिया से हवाईजहाज मे उडेगे, आम के टोकरे। जरा गौर से सोचिए, परानपुर के आदमी ने कभी टमटम तक नही देखा और साला आम—क्या नाम है, एलोप्रेम से उडता है। देखिए भला ! जुल्म की एक हद होती है !"

"ह ह, आम के टोकरे हवैया जहाज मे उडे ! अन्याय बात है। आदमी से बढकर साला आम का टोकरा हो गया ? अधेर कर रहे हैं जित्तन बाबू !"

लुत्तो ने चुनौती के शब्द निकालने से पहले अपनी मुट्ठी बॉंध ली। फिर, मुॅंह मे ऐठती हुई बोली निकाली—"याद रखिए, शिवचरन के दादा-परदादा ने आम के बगीचो की मालीगीरी की है। की है या नही ? कानूनन, शिवचरन आधीदार ही

नहीं, बगीचे का असल मालिक है।"

"ठीक है। माली नहीं, मालिक है।"

चेतावनी दी लुत्तो ने आम जनता को, हाथ की उँगली दिखाकर—"इस बदचलन आदमी से होशियार ! गाँव के सीधे-सादे भाइयो, सावधान ! आपकी बहू-बेटियों की इज्जत खतरे में है। क्या आप चाहते हैं कि शहर से हरकाया हुआ एक कुत्ता··· ?"

"लुत्तो बाबू, जरा गुस्सा पर कण्ट्रोल !" प्रेसीडेण्ट साहब ने दबी हुई आवाज में कहा। लेकिन, लुत्तो आज किसी की बात नहीं सुनेगा। उसके जी में जो कुछ है, कह डालेगा।···बीरभद्दर बाबू ने भी आँख की कनखी दी, चलाये चलो ! गरुड़धुज झा पत्थर का दाँत चमकाकर हँसा और रोशन बिस्वाँ ने जीभ से ओठ चाटकर देखा लुत्तो की ओर। उस दिन से, बागवाली घटना के बाद से, जनता में लुत्तो की इज्जत कम घटी है ? फिर मिसिर के बेटे को दागने के लिए ही तो वह कांग्रेस में आया है। बोली से हो, चाहे गोली से, वह भी दागेगा, इस आदमी के बाप के बारे मे दुनिया-जहान को मालूम है कि कितना बड़ा···बदमाश आदमी था ! बदमाश का बेटा बदमाश ही नहीं, नम्बरी बदमाश होकर शहर से आया है। रण्डियों मे जमीन बाँटी जाती है और किसान-मजदूरों पर गोरखा सिपाही की भुजाली चलती है !

लुत्तो बाबू भी अब बड़ा सैनियल लेक्चर देते हैं। देखते नही, खोज-खोज़कर पाताल से एक-एक बात निकाल रहे हैं ?··· बाप का बदला लेगा। जरूर लेगा।

लुत्तो ने आखिरी नारा दिया—"होशियार ! तैयार !"

थाना कांग्रेस के सभापतिजी ने इस सर्वे ऑपरेशन को गंगा और पूर्णिया जिला कांग्रेस के सभापति को भगीरथ प्रमाणित किया। जिले-भर के कांग्रेसी—सगरपुत्र। अब, जनता खुद फैसला करे कि किसानों और मजदूरों का असल साथी कौन है ? कांग्रेस के लोग या वे लोग जो सुबह उठकर मक्खन और अण्डा चाभते हैं, दिन मे चार बार दाढ़ी बनाते हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए किसान-मजदूर-राज की दुहाई देते हैं ? वे अपने को बामपन्थी कहते हैं। बामपन्थी नहीं समझा ? सभापतिजी ने बामपन्थी का अर्थ समझाया—"आपका सही रास्ता दाहिनी ओर है तो ये लोग आपको बायें रास्ते से ले जायेंगे। बाममार्गी के बारे में किसी पढ़े-लिखे लोग से पूछ लीजिएगा।" सभापतिजी के पास समय नहीं है, दूसरी पार्टी की निन्दा करने को। वे इस सर्वे में जमीन हासिल करने का एक मूल-मन्त्र बताने आये हैं, "लोग सुन लें कान खोलकर—कांग्रेस के झण्डे के नीचे एकत्र होकर कसम खाइए। एक भी गरीब अपने गरीब भाई के खिलाफ गवाही नहीं देगा। पक्ष मे एक बच्चा भी गवाही नही दे, तो क्या मजाल है कि जित्तन बाबू एक धूर जमीन भी रख ले !"

"जै हो ! जै हो ! 'चढ़ो बहादुर गढ़ महुए पर चाहे जान रहे या जाय', साले को अल्हा-उदल मचा दो !"

धोबी, चमार, नाई, बढ़ई, और खवासों को विशेष रूप से संगठित होने को कहा है, सभापतिजी ने।··विशेषरूप का अर्थ समझाता है लुत्तो, "माने, अपनी-अपनी

जात की बैठक करो और परसताब पास करो कि हम लोग, बाल-बच्चा समेत कांगरेस की कुमेटी में हैं, समझे ? धोबी, चमार, नाई और बढ़ई और खवासों ने काम बन्द किया, कि देखना, अजगर साँप खुद-ब-खुद छटपटाकर खत्म हो जायेगा।"

"परसताब पासे-पास समझिए। अजगर! जित्तन बाबू शाम को जो लम्बा कुरता पहनकर निकलते हैं, अजगर साँप के खाल का तो नहीं ? चित्ता-चित्ता छापवाला कुरता ?"

सभा के दूसरे दिन, सूरज उगने से पहले ही छित्तन बाबू के गुहाल-घर के पास भीड़ लग गयी।··गुहाल नहीं, सर्वे-कचहरी है। कचहरी की मिट्टी से कपाल पर टीका लगाकर, देवी-देवता को सुमरकर तनाजा फेक रहे हैं लोग। दिन-भर तनाजे पड़ते रहे। डेढ़ सौ तनाजे।

—चप्पे-चप्पे पर, धूर-धूर पर !

बाग, पोखरा, कलमबाग और पिछवाड़े की फुलवारी पर भी दावे किये गये हैं।

"दावे किये हैं तो क्या होगा ? जमीन ही लेंगे। जान तो नहीं लेंगे लोग ?" ताजमनी कहती है, गंगा काकी से, "और नाई-धोबी बन्दकर जित्तन बाबू का क्या बिगाड़ेंगे ? जिसके बाप को सारे तिरहुत के ब्राह्मणों ने मिलकर अजात कर दिया, अभी तक जाति में लिया नहीं है।·तो क्या हुआ ?"

गंगा काकी समझाने आयी थी ताजमनी को। गंगा काकी जानती है, ताजमनी मीठी बोली से ही बस मानती है। काकी की आँखें छलछला आयीं—"बेटी ताजू, सिर्फ जमीन की बात रहती तो क्या बात थी, कहते हुए कलेजा सहस्सर टुकड़ा हो रहा है।"

"क्या-या-या-या ?" ताजमनी के मुखमण्डल पर भय की हल्की छाया दिखलायी पड़ी।

"हाँ बेटी ! लुत्तो नहीं छोड़ेगा। अब वह भी बहुत पावरवाला आदमी हो गया है। वह अपने बाप का बदला लेगा, छोडेगा नहीं। देख लेना।" गगा काकी ने आँखों को आँचल में पोंछ लिया—"देने को तो तनाजा मैंने भी दिया है। जमीन लेकर भाग तो नहीं जाऊँगी ? लेकिन जित्तन बाबू के चेहरे को देखकर तो कलेजा फट जाता है।"

"काकी, रोती क्यों है ?" ताजमनी के चेहरे पर अब जरा भी कोई काली छाया नहीं, "लुत्तो यदि दुलारीदायीवाली जमीन लेकर बाप का बदला लेना चाहता है, ले बदला। जमीन ।"

"जमीन भी लेगा और जान भी।" गंगा ने खखासकर गला साफ किया। ताजमनी के ओठों पर मानो उसकी मालकिन-माँ आकर बैठ गयी ! जित्तन बाबू की माँ ऐसी

बातों से डरानेवाली औरतों की फजीहत करती थी।

"क्या सुना रही है गंगा काकी ! जान लेने और देने की बात लुत्तो के हाथ नहीं। जिसने उसको बित्ते-भर का कपाल देकर भेजा है, वही सबकुछ कर सकता है।" गंगा काकी ने अपनी आँखों की सौगन्ध देकर कहा–"इस बात में मेरा नाम मत लेना। सारा गाँव एक तरफ है। मेरा नाम मत कहना कि गंगा काकी बोल रही थी। खवासटोली के खच्चरों को जानती नहीं तू।··· बिना लैसन का बन्नूक-पेस्तौल रखता है···।"

साँझ देने की बेला हो गयी है। ताजमनी ऐसी-ऐसी बातें सुनने के लिए बैठी नहीं रह सकती। चिराग जलाने को अन्दर चली गयी।

गंगा काकी ने नाक-भौं सिकोड़कर एक भद्दी मुद्रा बनायी और अपने आँगन की ओर चली।··· "देखबो कोयली तोहर अण्डा। खूब सेवो अण्डा !"

ताजमनी तीन पहर रात तक काली की मूर्ति के सामने बैठकर रोती रही थी :

पद तले-ए-ए चिरकाल
लोटय जेकर महाकाल-अ-अ-आ,
की-ई-ई-ई करे तुच्छ काल,
कालोँ-ओँ-ओँ-त का-आ-आ-ली माय के-ए-ए-ए-
शरणे।
तोहर चरने जँबा-रंग प्रान
तोहर रँगल जँबा चरने ऐँ-ऐँ··· ।

भोर को उसने सपना देखा, मालकिन-माँ आकर उसे उठा रही हैं–"उठ बेटी, फूल लोढ़ने नहीं जायेगी ? आज जित्तन का जन्म-दिन है।"

"सुधो ! भैया सुधो !" ताजमनी जगकर बोली–"आज फूल लाने नहीं जाओगे ?"

मुंशी जलधारीलाल दास अठारह वर्ष की उम्र से ही जमींदारों के दरबार में काम कर रहा है। राजपारवंगा, गुनवन्ती इयोढ़ी, सुलतानपुर स्टेट तथा राज नैनगंज की कचहरियों में कलम के हजार करतब सीखकर दिखा चुका है।

–रेड स्लेव !··· अंग्रेजी जाननेवाले लड़के भिम्मल मामा का दिया हुआ नाम ही व्यवहार करते हैं–रेड स्लेव। यानी, लाल दास। बिना पढ़े-लिखे लोग कहते हैं–सरबसोधनलाल दास। जिस कचहरी में रहा, उसका सबकुछ सोध लिया।··· इसका भी सोधेगा। सिर्फ पाँच रुपये माहवार पानेवाले इस कलमजीवी ने जिस वफादारी से अपने मालिकों का काम किया है, वह इस युग में दुर्लभ है।

साठ साल से ज्यादा उम्र। लहीम-सहीम देह, साँवला रंग, नाटा कद और खिचड़ी

दाढ़ी-मूँछवाली सूरत पर भेद-भरी मुस्कराहट हमेशा खेलती रहती है। दोनों कानों पर सफेद बालों के घुँघराले गुच्छ, गरदन पर दाद के बड़े-बड़े चकत्ते और ताम्बूल-रंजित काले दाँत।

·· कागज लिखते समय जलधारीलाल दास कान के बालों को बार-बार चुटकी से पकड़े तो समझो किसी रैयत का हक हड़पा जा रहा है। दाद के चकत्तों को आँखें बन्दकर कलम के पिछले हिस्से से खुजलाते समय कानूनी दाँव-पेंच सुलझाता है। और हठात् मुस्कराये तो समझो, मन-ही-मन कह रहा है—हा-हा-हा-हा ! वः मारा !

परानपुर स्टेट के संस्थापक शिवेन्द्र मिश्र एक दुख को कफन में लपेटकर गये—पतनीदार का पतनीदार ही रह गया। माँ तारा !··· पतनी, खुदकाश्त करनेवाला छोटा जमींदार, पतनीदार। छिः ! मरते समय उन्हें अपनी छोटी-सी हैसियत पर लाज हो आयी थी। मुंशी जलधारीलाल ने इसी पतनी शब्द के बल पर प्रान्तीय सरकार के रेवेन्यू डिपार्टमेण्ट की आँखों में धूल झोंकी। सन् 1937 की कांग्रेसी मिनिस्टरी के समय ही उसने सारे स्टेट को तेरह टुकड़ों में बाँटकर छोड़ दिया था। इस बार जमींदारी-उन्मूलन के समय बड़े-बड़े हाकिम सिर पटककर रह गये। लेकिन, मुंशी जलधारीलाल की कलम की मार और मार की बारीकी को वे नहीं पकड़ सके। परानपुर स्टेट बेदाग बच गया। इससे छोटी हैसियत के जमींदारों की जमींदारी चली गयी। सर्वे की आँधी में इसे बचाना असम्भव है। फिर भी, मुंशी जलधारीलाल दास अपनी जान रहते अपनी कलम की लाज तो नहीं जाने देगा।

पिछले दस-ग्यारह वर्षो से उसने, एकमात्र मालिक होकर स्टेट को चलाया है। कागज-कलम के अलावा खेती-गृहस्ती मे भी निपुण है मुंशी। उसकी कीमत सिर्फ जित्तन बाबू ही जानते हैं। और जित्तन बाबू के सिवा यह बात कोई नहीं जानता कि मुंशी जलधारीलाल दास छद्मवधिर है, रामपखारन सिंघ भी नहीं।

"दासजी, सुना है आपने ! एक-एक चप्पे जमीन पर तनाजा दिया गया है ?"

"देने दीजिए सरकार ! आप सिर्फ बैठै रहिए, सब ठीक हो जायेगा।" जलधारीलाल दास धीमी आवाज में पूछता है—"सरकार का जी कैसा है ?"

"ठीक है। क्या काम है ?" जित्तन बाबू ने पूछा—"आप कुछ पूछना चाहते हैं ?" मुंशी जलधारीलाल ने अपनी मिर्जई के पॉकेट से एक मुड़ा हुआ अखबार निकालकर जित्तनबाबू के सामने रख दिया, 'हुआ सवेरा'।

—मेमने की खाल के अन्दर खूँखार भेड़िया !· हिटलर मर गया लेकिन उसकी औलाद जिन्दा है ! परानपुर गाँव के हजारों किसानों के गले पर छुरी··· ।

'हुआ सवेरा' प्रान्त का प्रमुख गालीबाज साप्ताहिक पत्र। साल में जिसके दो या तीन अंक ही निकलते हैं। प्रान्तीय चीफ मिनिस्टर से लेकर अदना बस-कण्डक्टर के घर की भद्दी कहानियाँ छापकर उसके सम्पादक ने नाम कमाया है। लोग उसके नाम से आतंकित रहते हैं। दर्जनों मुकदमे, दीवानी और फौजदारी कचहरियों में चल रहे हैं, किन्तु इन मुकदमों से भी सम्पादक 'हुआ सवेरा' को लाभ ही होता है।··· पिछले साल उसके सम्पादक ने टेलीफोन विभाग के सुपरिण्टेण्डेण्ट मि. नारायनम

से कहा—"कृपया टेलीफोन का दो सौ रुपया आप चुका दें।" मि. नारायनम की समझ में कोई बात नहीं आयी, वे न तो 'हुआ सवेरा' पत्र को जानते थे और न उसके एडिटर-इन-चीफ श्री निडर पटनियाँ से उनकी जान-पहचान थी। निडरजी ने अकड़कर कहा—"वन-टू-थ्री।... मैं कहता हूँ, पीछे दोष मत दीजिएगा मिस्टर नारायनम !"

मि. नारायनम ने झल्लाकर रिसीवर रख दिया और डाइरेक्टरी खोलकर देखा—'हुआ सवेरा', सम्पादक श्री निडर पटनियाँ। उन्हें आश्चर्य हुआ, एक पत्र का सम्पादक ऐसी गैर-जिम्मेदारी की बातें कैसे कर सकता है। उन्होंने अपने असिस्टेण्ट को बुलाकर पूछा—"मामला क्या है ?" पूछताछ के बाद मालूम हुआ—ट्रंक कॉल के पूरे साढ़े पाँच सौ रुपये का बिल उनके नाम बकाया है। नोटिस दिया गया है।...दूसरे ही दिन 'हुआ सवेरा' का हॉकर चिल्लाता हुआ निकला—"पढ़िए, पढिए !" शराब के नशे में धुत्त कुमारी नारायनम · मेजरबाग में पड़ी पायी गयी। पढ़िए, पढ़िए ! मिस नारायनम ने महिला कॉलेज के उत्सवों में 'भरतनाट्यम्' प्रस्तुत कर जो प्रसिद्धि प्राप्त की थी, उसे 'हुआ सवेरा' के एक ही अंक ने मिट्टी में मिला दिया। समाचार में कहा गया था—'मिस साहिबा के कपड़े फटे थे, बाल अस्त-व्यस्त थे। लगता है, उसके किसी प्रेमी ने रात्रि-विहार... ।' मिस्टर नारायनम ने नौकरी छोड़ दी। उन्होंने देखा, 'हुआ सवेरा' के सम्पादक से सभी भय खाते हैं और फैलायी गयी खबर पर लोग अविश्वास नहीं करना चाहते।... श्री निडर पटनियाँ अपनी जुबान के पक्के हैं। डेढ़ हजार रुपया लेकर उसने दूसरे अंक के एक कोने मे प्रकाशित कर दिया :

'पिछले सप्ताह मेजरबाग में बेहोश पड़ी लड़की का नाम मिस नारायनम नही, मिस राय है। पाठक सुधारकर पढ़ें।'

जित्तन बाबू अच्छी तरह जानते हैं 'हुआ सवेरा' वालो को। उन्होंने पढना शुरू किया—'यह आदमी पटना में, बिहार की राजधानी में भी रह चुका है। पटना के सम्भ्रान्त परिवार की लड़कियाँ आज भी अपनी बर्बाद जिन्दगी ढो रही हैं। राजनीति, साहित्य तथा पत्रकारिता को बारी-बारी से कलंकित करने के बाद यह आदमी गाँव के पवित्र दामन को कलंकित करने पहुँचा हुआ है।· वेश्याओं और बदमाशो के जरिये भले घर की भोली-भाली लड़कियों को अपने बँगले पर लाना और गुलछर्रे उडाना, यही एकमात्र पेशा है इसका। गाँव की जनता त्राहि-त्राहि कर रही है ।' जित्तन बाबू का चेहरा लाल हो गया। उन्होने मुंशी जलधारी की ओर देखा। मुशी ने मुस्कराकर कहा—"अभी छपा नहीं है, अखबार का आदमी आया हुआ है। कहता है, जित्तन बाबू यदि चाहें तो खबर नहीं छपेगी।"

"कहाँ है वह आदमी ?"

"वह तो फारबिसगंज डाक-बँगले में है। स्टेशन के बाजार मे मुझसे मिला... ।"

"क्या कहता था ?... कितना रुपया माँगता था ?" जित्तन बाबू ने अधीर होकर पूछा।

"उसने कुछ बताया तो नही; लेकिन मेरा जहाँ तक अन्दाज है, हजार-बारह सौ ।"

"एक कौडी भी नही। कानी कौड़ी भी नही।" जित्तन बाबू उत्तेजित होकर बोले–"मैं चाहता हूँ यह समाचार प्रकाशित हो।"

मुशी जलधारीलाल मुँह देखने लगा। जित्तन बाबू ने कहा–"ब्लैकमेल का मतलब समझते हैं आप ?"

"जी नही। पजाब मेल, बम्बई मेल का नाम तो सुना है, लेकिन ।"

जित्तन बाबू हँस पडे। बोले–"भिम्मल मामा से पूछ लीजिएगा। और, याद रहे ! एक कौडी भी नही । वह यहाँ आयेगा ?"

"जी नही। मैंने बहुत कहा कि सरकार से मिलकर सब तय कर लीजिए। मगर उसने लापरवाही से जवाब दिया–जिसको मिलना हो फारबिसगज डाकबँगले मे आकर मिले।" मुशी जलधारी ने गरदन का दाद खुजलाते हुए कहा–"हुजूर, ये लोग तो बस टुकडे चाहते हैं। मेरी राय है कि कुछ ले-देकर इनका मुँह बन्द कर देना ।"

"मुशीजी, कल के मुकदमों की नत्थी दे जाइए।"

"अभी दे जाता हूँ।" जलधारीलाल ने मुस्कराकर कहा।

प्रसन्नवदन जलधारीलाल ने देखा–बमभोलेनाथ को बात लगी है। पहले तो रोज कहते थे, 'दासजी मुझे माफ कीजिए। मैं भीख माँगकर खाऊँगा, पेड के तले सोऊँगा। मुझे नही चाहिए जमीन। मैं इस गाँव मे एक दिन भी नही रहना चाहता।'

"होय, होय दास्बाबू ! साब आपको फिर बुलाता है।" दिलबहादुर ने पीछे से आवाज दी।

"दासजी। छबीला की बेवा आकर रो रही थी। कितनी जमीन है उसके पास ?"

"हुजूर, छबीला की बेवा को कम मत समझिए। हजार बार कहा कि तनाजा मत दे जमीन मे। तुमको रसीद काट दूँगा। अब तिरिया-चलित्तर पसारे फिरती है।"

"उसको कबूल कर लीजिए। छबीला जिन्दगी-भर इस्टेट की नौकरी करते-करते मरा। क्या हर्ज है ?"

"हर्ज तो कुछ नही है सरकार ! तब बात यह है कि छबीला की जमीन उसकी बेवा नही, लुत्तो का चाचा लेना चाहता है। छबीला की बहु को तो बेकार खडा किया गया है। फर्जी ।"

"जो भी हो, मैं चाहता हूँ ।"

"ठीक है, कबूल कर लिया जायेगा।"

"मुशी जलधारीलाल दाद खुजलाने लगा। जित्तन बाबू ने कहा–"अब आप जा सकते हैं।"

जित्तन बाबू कुछ देर तक 'हुआ सवेरा' के पृष्ठो को उलटते रहे। सिर्फ दो समाचारो से ही उन्होने पता लगा लिया कि श्री कुबेरसिह 'हुआ सवेरा' के सम्पादक

की पीठ ठोंक रहे हैं। कुबेरसिंह · ! जित्तन बाबू के सामने एक भोंडी सूरत आकर नाचने लगती है—कुबेरसिंह !··· पन्द्रह साल पहले की बात। काशी विद्यापीठ में पढ़ते थे जित्तन। परीक्षा देकर आये तो अपने फूफाजी के यहाँ कुबेरसिंह से पहली मुलाकात हुई थी। फूफाजी हाथी का कारबार करते थे। आसाम से हाथी खरीदकर लाते, खगड़ा तथा सोनपुर के मेले में बेचते।··· कुबेरसिंह से उनकी दोस्ती सोनपुर मेले में हुई थी। कुबेरसिंह हाथी के अच्छे दलाल थे।

···हाथी के उस दलाल ने जित्तन बाबू को बड़ी चालाकी से फाँस लिया। कुबेरसिंह हाथी की दलाली के साथ राजनीतिक कारबार भी करते थे। खद्दर पहनते थे, गर्म-गर्म बातें करते थे; बिहार के कुछ गर्म-पन्थियों और कई आतंकवादियों के नाम इस तरह लेते थे मानो वे सब-के-सब कुबेरसिंह के शिष्य हों—"समझे जित्तन, मुजफ्फरपुर बम-केस में तो लोटनराय ने ऐसी गलती की थी कि क्या बताऊँ। दल के सभी लोग एक ही साथ गिरफ्तार हो जाते। लेकिन, किस्मत की बात, मैं हाजीपुर से वापस आ गया था। "··· कुबेरसिंह अपने बैग में 'जाग्रतकिसान' का एक अंक हमेशा रखते थे। खजूरी किसान-सम्मेलन का विशेषांक ! कुबेरसिंह उस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। उनकी तस्वीर छपी थी, उनके भाषण के ठीक बीच में—समझे जित्तन। मैं इस बार किसान सभा के काम से ही इस जिले में आया हूँ। अब पढ़ाई-लिखाई छोड़ो। तुम्हारे जैसा नौजवान, शास्त्री-फास्त्री के चक्कर में पड़ रहे, यह मैं बरदाश्त नहीं कर सकता।·· मारो गोली। कूद पड़ो। बिहार प्रान्तीय किसान सभा ही एक ऐसी संस्था है जिसमें तुम्हारी सही कीमत आँकी जायेगी।"

··· लगातार एक पखवारे तक बातें करके कुबेरसिंह ने जित्तन को किसान सभा का सदस्य बना लिया। शास्त्री की परीक्षा दे आया था। माँ ने बहुत समझाया। किन्तु, उन्होंने फैसला कर लिया था—"माँ, इस बार मत रोको। सन् तीस में मैंने तुम्हारी बात रख ली। इस बार यदि तुमने रोका तो समझ लो · ।"

माँ ने आँसू पोंछते हुए कहा था—"अपनी माँ तेरे लिए कुछ नहीं ? दुनिया की माताओं के दुख-दर्द से तू छटपटा रहा है और मैं तीन दिन से रो रही हूँ, सो कुछ नहीं !· कहाँ का लुच्चा-लफंगा आया और तू इसकी बात में भूल गया ! तुम अपने फूफा को नहीं जानते ? वे तो चाहते हैं कि किसी तरह तुम घर से निकल जाओ, बेटा !"

··· माँ के साथ खड़ी थी चुपचाप, ताजमनी। छाया की तरह माँ के साथ रहती थी ताजू। माँ जब रोने लगी तो ताजमनी के होंठ भी फड़कने लगे थे। उसने एक बार आँखें उठाकर जित्तन बाबू की ओर देखा था·· और जित्तन की जिद्द में एक गिरह और लग गयी थी—बचपन से ही माँ ने उसकी इच्छाओं को अपनी जिद्द से कुचला था।··· आखिर क्या चाहती है माँ ? वह इस बार कुछ भी नहीं सुनेगा।

उस रात को किसी ने पत्तल भी नहीं जूठा किया। जित्तन कमरा बन्दकर लेटे थे। माँ अपनी पूजा की कोठरी में जाकर रोती रही थी।···

··· दरवाजे पर किसी ने हल्का धक्का दिया था। पैर की आहट से जित्तन ने

पहचान लिया था, ताजमनी ! अँधेरी रात का तीसरा पहर। ताजमनी उससे मिलने आयी थी। माँ की सौगन्ध को काटकर जित्तन से एकान्त में बात करने आयी थी—"जिद्दा ! तुम्हें जरा भी दया नहीं आती ?"

ताजमनी कुछ देर तक चुप खड़ी रही। कमरे के अन्धकार में भी वह जित्तन से आँखें नहीं मिला सकती थी। माँ की सौगन्ध को काटकर वह बात करने आयी थी।···उसने अपनी मालकिन-माँ के पैर छूकर सत्त किया था। तीन सत्त।···एक सत्त, दो सत्त, ब्रह्मा-बिसुन सत्त, जो सत्त से बेसत्त जाय, रौरव् नरक सिधाय।··· जिद्दा से कभी एकान्त में नहीं मिलेगी, जिद्दा से कभी आँखें चार नहीं करेगी। नजर उठाकर उसको देखेगी भी नहीं। वह एक सत्त से बेसत्त हुई थी, लेकिन दूसरे सत्त को भगन नहीं करेगी। कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोली थी—"आपको देश का काम करने से रोकती नहीं हैं मालकिन-मैया। घर में रहकर, गाँव में रहकर क्या देश का काम नहीं हो सकता है ? दरभंगा, मुजफ्फरपुर या पटना में ही देश का काम··· ?"

जल उठा था जित्तन ! माँ ने इस लड़की की बुद्धि हर ली है। इसे क्या समझाया जाये—"देखो ताजू ! माँ को समझाओ। मैं कल ही जाऊँगा। हर बात में इस तरह जिद्द करती है माँ, यह अच्छी बात नहीं। मैंने उनकी हर बात मानी है।···अब नहीं। और, घर में रहने की बात ? माँ और तू जिस घर में एक साथ रहेंगी उसमें जित्तन का वास नहीं हो सकता, साफ-साफ सुन लो।"

ताजमनी के कुछ कहने के पहले ही कमरे के बाहर से माँ ने पुकारकर कहा था—"चली आ ताजू ! पत्थर पर माथा पटकने से कोई फायदा नहीं। तू किससे बात करने गयी है ? कसाई के आगे रोने गयी है ? चली आ !" ताजमनी हड़बड़ाकर कमरे से बाहर भागी थी। माँ की आवाज और तेज हो गयी थी—"जिसे जाना है, अभी चला जाये घर छोड़कर।···मैं देश का काम करने से नहीं रोकती। लेकिन, उस बिलार-मुँहा बदमाश कुबेर के साथ अपने लड़के को जाने का हुक्म नहीं दे सकती। कोई बढ़कर ताड़ का पेड़ भले ही हो जाये, पढ़कर विद्यासागर हो जाये, लेकिन आदमी को पहचानना और बात है !··उस मुँहझौंसे का गुलाम मेरा बेटा हो, यह मैं बरदाश्त नहीं कर सकती।· ताजमनी और माँ को क्यों रहने देगा घर में? वाह रे साहस ! ··जिसे जाना हो चला जाये, अभी !"···सारी हवेली काँप उठी थी। हवेली के सभी कमरे थरथरा उठे थे—चला जाये। चला जा !

दालान के आँगन में कोई अजनबी पंछी अचानक केंक-केंककर उठा। केंक ! केंक !··कर्कश आवाज हवेली को कँपा गयी। मीत ने अचानक भूँकना शुरू किया। जित्तन बाबू को लगा, दरवाजे के पास से कोई हौले-हौले पाँव भागा जा रहा है—कौन ?··· कौन ? जित्तन बाबू ने पुकारा—"कौन है ?"

बाहर, दिलबहादुर ने मीत को विश्वास दिलाया—'चुप गर-ऽ-ऽ- ! मीत।' कचहरीघर की दीवाल-घड़ी में दो घण्टा बजा। पोखर में एक बड़ी-सी मछली कूदी। जित्तन बाबू ने 'हुआ सवेरा' पर निगाह डाली, लालटेन की मद्धिम रोशनी में एक

समाचार का हेड लाइन स्पष्ट पढ़ा जा सकता है—'प्रान्तीय कांग्रेस के उपमन्त्री श्री कुबेरसिंह को मिनिस्टर बनाओ।'

जित्तन बाबू ने लालटेन की रोशनी को और तेज कर दिया⋯ 'प्रान्तीय शासन में उलट-फेर होना आवश्यक है। वर्तमान मन्त्रिमण्डल में हेर-फेर किये बिना बिहार की जनता का दिल जीतना असम्भव है। यह हर्ष की बात है कि कांग्रेस में अभी भी ऐसे-ऐसे त्यागी, तपस्वी तथा कर्मठ लोग हैं जिनकी ईमानदारी पर बिहार की जनता का भरोसा है। ऐसे लोगों में श्री कुबेरसिंहजी क़ा नाम सबसे पहले आता है। किसान-मजदूरों के प्रिय नेता के रूप में⋯।'

जित्तन बाबू के मुखमण्डल पर एक अपूर्व आभा चमकने लगती है।⋯ठीक है। मैदान में कुबेरसिंहजी हैं। तब ठीक है।⋯ताल ठोककर मैदान में उतरेगा वह। लड़ना चाहता है वह, कुबेरसिंह को दिखलाना चाहता है⋯।

पोखरे के पास, मन्दिरवाले बाग में कोहबर रौंड़ी किलकिलाकर कूक पड़ी ⋯ घेर-घेर-घेर⋯ घेर⋯ पकड़-ले-ले-आ तो ! पकड़-ले आ तो !

पीले रंग के पाँखोंवाली एक चिड़िया, कोहबर रौंड़ी ! बरसात में, इसी तरह वह रह-रहकर रात में किलकिला उठती है अचानक ! तुर-तुर-तुर-तुर-तुरा-तू-तू-तू ! घेर-घेर-घेर-पकड़-ले-आ तो !

बचपन में माँ ने इस कोहबर रौंड़ी की कहानी सुनायी थी। जित्तन और ताजमनी ने एक साथ सुनी थी यह कहानी—कोहबर रौंड़ी सत्त से बेसत्त हो गयी थी, इसलिए वह कोहबर में यानी वासर-घर में ही रौंड़ हो गयी। बाहर सुहाग रात की शहनाई बजती ही रही। इधर वर ने ज्योंही दुलहिन के घूँघट को उठाया, देवी की शराप लग गया।⋯ कोहबर रौंडी ने जिस लड़के के हाथ अपने सत्त को लुटाया था, वह पहले से ही पलँग के नीचे छिपकर बैठा था। खाँड़ा निकालकर टूट पड़ा और कोहबर रौंड़ी के दुलहे का गला काटकर भागा। कोहबर रौंड़ी चिल्ला उठी—घेर-घेर-घेर-पकड़-ले-आ तो !

जित्तन और ताजमनी ने कहानी को सुनकर एक-दूसरे को देखा था—दोनों की आँखें छलछलायी हुईं !

कोहबर रौंड़ी किलकती हुई दूसरे बाग की ओर उड़ी। नट्टिनटोली की एक झोंपड़ी में करवटें लेती हुई ताजमनी सुधना को डाँट रही है—"हाँ-हाँ ! कोहबर रौंडी यही है। तू चुपचाप सो जा। इतनी रात तेरी नींद कैसे खुली ?"

"कोहबर रौंड़ी की बोली सुनकर जग गया।"

इस्स ! रत्ती-भर के लड़के को कहानी चुभी है ?⋯ जीत भी तो रोज पूछता था मालकिन-मैया से—तब क्या हुआ माँ ? कोहबर रौंड़ी ने क्या किया तब ?

जब-जब बरसात की रातों में कोहबर रौंड़ी बोलती, ताजमनी को जित्तन की आँखों की याद हो आती है। भोला-भाला मुँह, आँखों में उमड़ते आँसू !

ताजमनी की आँखों से आँसू ढुलक पड़ते हैं।

"धेत्त ! तू तो रोती है दिदिया।··· रोती है दिदिया फिर ?"

"नहीं रे, रोती नहीं।"

"फिर रोती है ? अच्छी बात। मैं कल अपने काका को चिट्ठी लिख देता हूँ। वह आकर मुझे ले जायेगा। तू रायेगी, तो तेरे पास कौन रहेगा ?"

आँचल से आँख पोंछती ताजमनी कहती है—"ऐं-हे ! बड़ा चिट्ठी लिखनेवाला बना है ! सभी को चिट्ठी लिखकर बुलाता है। चुपचाप सो रहो।"

"और तुम रात-भर मा-त-रे-मा-त-रे करती रहो !" सुधना ने मुँह बिदकाकर कहा—"कौन है यह मा-त··· ।"

"देख सुधना, हर बात में टाँग नहीं अड़ाते। गाँव के पके हुए अरियासमाजी लड़कों की बोली सीखी है तूने। कुछ समझता भी है ? खबरदार, जो कभी माँ तारा के नाम ठिठोली की !" ताजमनी ने आँखें मूँदकर मन-ही-मन काली की मूर्ति को स्मरण करके कहा—'माफ करना माँ ! बच्चे की बुद्धि ही कितनी !'

सुधना ने भी मन-ही-मन फ्रेम में मढ़ी, रक्त-चन्दन के छींटों से धुँधली काली माँ की तस्वीर को याद किया—'जीभ निकालकर खड़ी है, तो खा लो न मुझे !··· दिदिया इतने दिनों से रो रोकर पूजा करती है, मान-मनौती करती है। लेकिन, माँ तारा तो और रुलाती ही है।··· रोज पण्डितजी के बाग से अड़हुल फूल लाकर देता हूँ·· और क्या चाहिए ? मुझे ही खा लो न·· !' सुधना लाल-लाल अड़हुल फूलों का सपना देखने लगा।

ई-ई-ई · ल-ल-ल-ल-ल-रा-रा ! हो-ओ-ओ-ला-रा-रा-आ-आ··· ।

गहलौटा टोले के निरसू पर परती का परमदेव सवार हुआ है। हाथ-भर जीभ बाहर निकालकर निरसू हाँफता है, दौड़ता है और किलकिलाता है—ई-ई-ई · ल-ल-ल !

पाँच-पाँच तगड़े जवानों को झाड़कर गिरा देता है और परती की ओर भागता है—"ई-ई-ल-ल·· बलदान लेगा, बलदान लेगा, लहू पियेगा, बलदान लेगा।"

गहलौटा, केयट, खवास और गंगोलाटोली के लोग परती के परमदेव को पूजते हैं। साल में एक बार पूजा दी जाती है। घर-घर से लोग पान-सुपारी, कबूतर और बत्तक लेकर पहुँचते हैं।··· सवर्णटोले के लोग इस देव को नहीं मानते। वे कहते हैं—"परमा तो छोटी जातिवालों का देवता है !"

लेकिन, ठाकुरबाड़ी के पण्डित सरबजीत चौबेजी कहते हैं—"देव तो आखिर देव ही है। चाहे वह बड़ी जाति का हो या छोटी जाति का। परमादेव हमारे पुरखों के देव हैं। परती के जाग्रत देवता हैं; आपद-विपद में सारे गाँव की रक्षा करते हैं। ··· उनके गहवर को ट्रैक्टर से जोत रहा है जित्तन ! परमादेव को माननेवाले यदि चुपचाप परती उधेड़ना देखते रहेंगे तो सारे गाँव पर गुस्सा उतारेंगे परमादेव। सब मिलकर सोचो, विचारो और इसके लिए उपाय करो।"

लुत्तो ने भी कहा—"आज तीन दिन हो गये। लोगों को समझा रहा हूँ। हर

टोलेवालों से कहता हूँ—सभी मिलकर ट्रैक्टर की भटभटी बन्द करो। लेकिन, हर टोले में मालूम होता है जमींदार का दलाल अपनी दलाली कर रहा है। कोई कहता है, परती जोतते हैं जित्तन बाबू अपनी, इसमें हम लोग क्यों पड़ने जायें ! किसी ने जवाब दिया—परती में झगड़ा-फसाद खड़ा करने से असल जमीन का मुकदमा खराब हो जायेगा। अपने देवता-पित्तर को हम लोग भूल गये हैं। कहावत है न, पहले भीतर, तब देवता-पित्तर··· ।"

गहलौटा, केयट, खवास और गंगोलाटोली के लोगों के दिल में परमादेव की भक्ति उमड़ आयी। तय किया, निरसू भगता को फूल उठाने के लिए न्योता दिया जाये।—हर टोले के लोग पूजा-परसाद के लिए आना-दो आना हर घर से चन्ना वसूलें। फिर, परमादेव से पूछें कि क्या किया जाये। परमादेव जो फरमायेंगे, सभी मिलकर वही करेंगे।

पन्द्रह-बीस वर्षों से भगता की असवारी नहीं हुई है।··· याद है, आखिरी असवारी हुई थी बहलियापीर की। गंगोलाटोली के फटकन भगता ने फूल उठाया था। उस पर बहलियापीर की असवारी हुई थी। बहलियापीर ! वह भी बड़ा भारी अगियाबैताल देव था भाई ! सो, बाबूटोले के अरियासमाजी लड़कों ने उस बार ऐसी ठिठोली की, ऐसा बखेड़ा उठाया कि बहलियापीर नाराज होकर चले गये।··· उसके बाद से फिर कभी भगता की असवारी नहीं हुई।··· हँसी-ठिठोली भला देवी-देवता बरदाश्त करें ? आखिर, जो शराप देकर बहलियापीर गये वह अच्छर-अच्छर फला। देख लो, सभी अरियासमाजी को। सभी बेजात हो गये। कोई टीक-जनेऊ कटाकर सोसलिस में जात दे दिया, तो कोई मुर्गा-मुर्गी खाकर कौमनीस में अपना धरम दे दिया।··· लेकिन, याद रखो ! इस बार यदि बाबूटोला का कोई हँसी-ठिठोली करे या बेबात करे तो सभी मिलकर पीटो··· इसके चलते जो कुछ हो। देव है, हँसी-खेल नहीं !

चौबेजी ने भी कहा—"ठीक बात। किसी के देव-पित्तर को कोई अपमानित नहीं कर सकता।··· मुसलमानों के मसजिद के पास जरा ढोल बजाकर या शंख फूककर देखो कि क्या होता है। तुरत, दंगा-फसाद शुरू हो जायेगा।···और, सरकार भी इसका कानून मानती है। किसी को हक नहीं है कि किसी देव-देवी की पूजा में बिघिन डाले।

निरसू भगता ने फूल उठाने का न्योता कबूल किया। गाँव के भगतिया लोगों ने गोचर परमादेव को गुहारा। आध पहर रात से गुहराते रहे, लेकिन एक बार का भड़का हुआ देव बहुत मुश्किल से असवारी पर आता है। एक ही घण्टे में तीन जोड़ी कबूतर की बलि दी गयी और भगतिया लोगों ने गोचर छोड़कर ओरहना गाना शुरू किया। जब गोचर से देव नहीं सुनते, तब ओरहना गाते हैं भगतिया लोग :

कोई नाँहि पूजतउ रे परमादेव तोहरो चरनवाँ है-ऐ-आ-आ-आ !
कोई नाँहि पूछतउ रे परमादेव तोहरो जे नमवाँ है-ऐ-आ-आ-आ !

कोई तुम्हारी पूजा नहीं करेंगे ! कोई तुम्हारा नाम भी नहीं लेंगे। यदि तुमने कृपा

करके भगत पर असवारी नहीं की, तो फिर कभी कोई तुम्हारे गहवर पर न एक फूल देगा और न एक अक्षत चढ़ायेगा। निरसू भगता के हाथ का फूल जरा-सा काँपकर रह गया। भगतिया लोगों का हौसला बढ़ा। मिट्टी की धूपदानी में लोहबान जलाकर मूलगैन भगतिया गोबर पासवान उठ खड़ा हुआ ।

परानपुर के मशहूर मिरदगिया जनकदास ने मृदंग पर चलती बजाकर नाचना शुरू किया—धिरिंग-धिरिंगा-तावत-बरतन, तावत बरतन !

—ई-ई-ई-लॅं-लॅं-ल-रा-रा ! दधि नेनु ला रे-ए-ए-ए-ए।

निरसू भगता अचानक किलकिलाकर घर से बाहर भागा—ई-ई-ई-लँ-ल ! गहलौटा, केयट, खवास और गंगोलाटोली के सभी—औरत-मर्द-बूढ़े-बच्चे जगकर दौड़े—आ गये ! आ गये बाबा ! जै हो परम बाबा ! चल-रे-ए-ए !

—बलदान लेगा। बलदान लेगा। खून पियेगा, लहू पियेगा-आ-आ-हा-हा-हा-रे-ए ! करमू गहलौटा की भौजाई, धरमू गहलौटा की बेवा ने गले में आँचल डालकर परमादेव के गहवर मे पाँवलागी की और धरती पर लोट गयी—"दुहाय परमा बाबा ! दूध से तुम्हारा गहवर लिपवा दूँगी बाबा ! करोध को सान्ती करिए। भूल-चूक माफ करिए !"

दूध के लोटे को परमा बाबा ने ठोकर मारकर उलटा दिया। दूध धरती पर बहने लगा।

—ई-ई-ल-ल। भूल-चूक ? हँसी-मसखरी ? छाती पर हल चला दिया रे-ए-ए ! लकडी का हल नहीं, लोहे का ! बलदान लेगा ।

औरतों की टोली एक ही साथ रो पड़ी—"दुहाई परमा बाबा ! ऐसा तो कभी नहीं गुसाये थे बाबा !"

—दधि नेनु ला रे-ए-ए !

"दही की मटकी ले आ छोटकी बहू। नयी मटकी का दही। देखना, किसी खरछुताही की देह से न छू जाये !"

एक बूढ़ी औरत ने धरमू की बहू के कान में कहा—"गर्भवालियों को हटा दो धरमू की बहू ! बड़ा रिसियाये हैं बाबा। हाँ ! मैंने अपनी जवानी में देखी है इनकी रीस।"

"जिसने छाती पर हल चलाया है, उसका कलेजा चबाकर खाइए बाबा ! हम लोगों का कोई दोख नहीं। इस्स, हाय रे दैब ? बाबा की छाती से लहू निकल रहा है ! दही की मटकी लेकर निरसू भगता ने मुँह में दही कोंचना शुरू किया।

"खबरदार ! निरसू भगता दही खा रहा है, मत कहो। बोलने का ढंग नहीं ? कहो, परमा बाबा खा रहे हैं।" निरसू भगता के मुँह के मारफत परमा बाबा भोग लगा रहे हैं। गीत गानेवाली औरतों ने भगतिया लोगों को दम लेने की छुट्टी दी। गोसाईं का गीत गाने लगीं औरतें :

बन्दिबऽ बन्दिबऽ हो बाबा चरना तोहार !
पहिले पहर बाबा-राकस के रूपे
आगाँ-आगाँ डाकिन चले पाछाँ-पाछाँ भूते !

बबुआनटोली में भी पुकार पहुँचती है।

सूरज की किरणों के साथ घर-घर में परमादेव के आगमन की कहानी फैलने लगी। घर की बड़ी-बूढ़ी पूजा-प्रसाद की सामग्री जुटाने लगी।—देव आखिर देव ही हैं। पूजा देने में जाति नहीं जाती।

भूमिहारटोली के मनमोहन बाबू की चाची गला फाड़कर चिल्ला रही है, मनमोहन बाबू से झगड़ रही है—"तुम देवी-देवता नहीं मानते, मत मानो। भोर-भोर मुँह से अंग्रेजी गाली क्यों निकालते हो ? जानती कि इस घर के पान-फूल पर भी मेरा कोई हक नहीं तो मैं क्यों मरने जाती ? आग लगे मेरे हाथ में, मैं क्यों फूल तोड़ने गयी ! दो साल से मेरा बेटा बिछावन पर पड़ा है। दवा-दारू की बात को कोई पूछता नहीं। परमादेव से बाक लेने जा रही थी···।"

मनमोहन बाबू क्रोध से थर-थर काँप रहे हैं। कितने जतन से आस्ट्रेलियन जिनिया के कुछ पौधों को लगाया था ! कल ही तीन फूल खिले थे। सुबह को चाची ने सभी पौधों के फूल और कलियों को नोचकर ठूँठकर दिया।

कामरेड मकबूल अपनी भाभी को समझा रहा है—"परमा बाबा के बाप भी उठकर आये, बिना ऑपरेशन के बच्चा होना असम्भव है। बिना डी एण्ड सी कराये···

मकबूल के बड़े भाई नीलाम्बर झा को बुरी लगती है बात—"अरे, कितना भिटामिन खायेगी और ? डाक्टरों के पास जितने किस्म के भिटामिन हैं, ए-बी-सी-डी, सब खा चुकी है।··तुम्हारे कहने से बेचारी ने मुर्गी का अण्डा खाकर धर्म भी भ्रष्ट किया, लेकिन कहाँ हुआ कुछ ?"

मकबूल अपने बड़े भाई को समझाने की चेष्टा करता है—"भैया ! मैं विटामिन की बात नहीं कहता। डी एण्ड सी माने डाइलुटेशन एण्ड क्युरिटेशन··।"

मकबूल की भाभी अपनी मौसी के साथ पूजा-प्रसाद की डाली लेकर गहलौटाटोली की ओर निकल पड़ती है, सन्तान माँगने !

—दुहाय परमा बाबा !

सभी काम-काज छोड़कर लोग गहलौटाटोली की ओर दौड़ रहे हैं।

"सुनते हैं, शुद्ध संस्कृत में बोल रहा है निरसू !"

"सच ?"

"सच नहीं तो क्या ! जाकर देखिए, बाभनटोली के पण्डितों से, ठाकुरबाड़ी के चौबेजी से बेदपुरान बतिया रहा है।"

"आश्चर्य की बात है !"

स्कूल-कॉलेज में पढ़नेवाले लड़के भी दौड़ रहे हैं। सन्तूसिंह का बेटा गुरबचनसिंह जिले की साप्ताहिक पत्रिका का निजी संवाददाता है··· ऐसा न्यूज हमेशा हाथ नहीं लगता ! गुरबचन इस संवाद को भारत-भर के पत्रों में भेजेगा। कहीं, उसके पहुँचने के पहले ही न उतर जायें परमादेव ! जित्तन बाबू कहते हैं—"मिस्टर राय। डोण्ट मिस इट। जरूर जाइए।··· आग पर चलेगा। खौलते हुए दूध की हाँडी में हाथ डालेगा। घी और सिन्दूर पुते हुए बाँस पर चढ़ेगा !"

भवेश को सलाह देते हैं, जित्तन बाबू—"तुम्हारी मूवी किस दिन के लिए है ? ले जाओ घबराते क्यो हो ?"

सुरपति और भवेश भागे गहलौटाटोली की ओर।

"सभी मनोकामना पूरी कर सकते है परमादेव ? तब तो जमीन की कामना भी पूरी करेगे ? ठीक बात ! चलो। मन की बात मन मे ही रखो !"

घी और सिन्दूर पुते हुए बॉस पर चढकर परमादेव एक पॉव के सहारे खडा है।—"ठट्ठा समझते हो ? चढे तो कोई ऐसे चिकन बॉस पर ! बॅसचढी नाचवालो को छोडकर और कोई चढ ही नही सकता।"

"मनोकामना अपने मन मे रखकर पूजा प्रसाद की डाली चढा दो। फिर ऑचल फैलाकर ऊपर की ओर देखो। परमादेव पूजा की डाली अपने माथे पर रखकर माथा हिनायेगे। ऑचल मे सिर्फ अच्छत गिरे तो समझो कपाल खराब है। यदि फूल या फल गिरे तो मनोकामना पूरी समझो। बारह बारह साल की कागबॉझो को बच्चा दिया है परमादेव न ! अब तो लोगो को किसी बात पर परतीत नही। बैजू की बहू को याद है, ऑचल मे केला और अमरूद गिरा। दूसरे दिन सुबह से ही उसको मिचली आने लगी, उलटी होने लगी। गले हुए कोढी करिया सामू को परमादेव के बाक ने आराम किया।"

आतक और कौतूहल भरी खबरे गॉव मे बहुत तेजी से फैलती हैं। एक मुॅह से दूसरे कान मे, दूसरे से तीसरे तक पहुॅचते पहुॅचते बात मे एक हाथ की बढोत्तरी हो जाती है।

भगता के गहवर मे जब किसी बडे देवता की असवारी होती है, तो उस गहवर मे दूसरे देव दवी के आगमन की सम्भावना सदा रहती है।

महीचन रैदास की बेटी मलारी की देह रह-रहकर सिहर उठती है। सुवशलाल एकटक उसको देख रहा है।

मलारी की मॉ ने पूछा—"ऐसा कछमछ क्यो कर रही है रे ?"

"कुछ नही, मेरा माथा चर्खी की तरह चक्कर दे रहा है मैया !"

"ऐय ?"

मलारी बाल खोलकर सिर हिलाने लगी हठात् !

"ऐ, ऐ ! देखो, क्या हुआ उसको ? क्या उस पर भी सवारी हुई ? कौन देव ? देव नही, देवी। देवी परमेसरी।"—"लेकिन देवी परमेसरी रैदास की बेटी पर कैसे सवार हुई ?"—"रैदास है तो क्या हुआ ? आजकल आदमी तो छुआछूत मानता नही, देव-देवी क्यो मानेगे ? कोई सॅभालो उसको ? पूछो, कौन देवी है ?"

"आ-गे मइयॉ-ऑ ऑ !"

"रो रही है ? तब देवी परमेसरी नही, दुलारीदाय है, जरूर। दुलारीदाय को छोडकर और कोई देवी रोती हुई नही आती गहवर मे। सुनो-सुनो रोदन का पद

सुनो। क्या कहती है ?"

आगे-माइयो-ओ-ओ !
कोई नाहिं बरजे, कोई नाहिं दूसय
कोई नाहिं डाँटय कोई नाहिं रोकय
कोई नाहिं जाई के समुझावय गे-मा-इ-ओ !

"हाय, हाय ! रो रही है ! दुलारीदाय। मिसर खानदान की कुल-लछमी है। इसी देवी के प्रताप से हर साल मानिक दियरा बलते हुए देखता था। मिसर के मरने के बाद से ही रो रही है दुलारीदाय ! लेकिन ऐसा रोदन तो कभी नहीं पसारती थी ?"

आगे-माइयो-ओ-ओ !
केकरा लाये राखब सोना के कलसवा
केकरा लाय जोगब रूपा के मण्डिलवा
केकर पुन्न से मानिक दियरा-आ-आ
लेसब गे माइयो-ओ-ओ !

एक-एक कर सभी औरतें रोने लगीं। परमादेव को भगतिया लोग दिशा-मैदान कराने के लिए ले गये हैं। औरतें रो रही हैं। बड़ी करुणा-भरी रोदना कर रही है दुलारीदाय ! ... "मिसर खानदान में जब से यह पगलवा हुआ है, तभी से सब धरम-करम चला गया हवेली का। रोयेगी नहीं ? हाय-हाय ? कुकर्म से कुकर्म करने पर तुल गये हैं जित्तन बाबू। परमादेव का गहवर जोत रहे हैं। चक्कर परती ही तो परमादेव की आसनी है। उसी को टकटर लेकर...।"

मलारी की माँ ने अपनी बेटी को सँभालने की चेष्टा की। देह झाड़कर दुलारीदाय ने उसको दो रस्सी दूर फेंक दिया। तब, सेमियाँ कमेर कसकर आगे बढ़ आयी। दुलारीदाय को अकबार में समेटकर, काबू में लाती है सेमियाँ। मलारी के घुँघराले लटों को चेहरे पर से हटा दिया उसने। झुकी हुई गर्दन को ऊपर कर दिया—दुलारीदाय, मलारी ! गौर मुखमण्डल, आरक्त कपोल, झुकी पलकें, लाल-पतले ओठ। आँखों की बारीक बंकिम...।

—क्रि-रि-रि-रि-रि-रिं-रि-रि.. कचक् !

"फोटू हो रहा है, फोटू ! ऐ, सब कोई मुँह बन्द करो। नहीं तो, सब दिन दाँत निकला रहेगा फोटू में। परमादेव का फोटू नहीं होगा ? क्या कहता है, होगा ? आग में चलने के समय ? ठीक है, ठीक है !"

दूर के गाँवों से लोग बैलगाड़ियों पर लदकर आये हैं। गाड़ी रखने की जगह नहीं है, करमू गहलौटा के दरवाजे पर।

"ऐ सुनो। अब जल्दी से अगिनसागर खोदो। परमा बाबा के पीछे-पीछे आग

पर कौन-कौन चलेगा ? नहा-धोकर तैयार हो जाओ। फोटू होगा।"

अगिनसागर ! साढ़े पाँच हाथ लम्बा, डेढ़ हाथ चौडा और सवा हाथ गहरा अगिनसागर। काठ की चैलियों को एक बूढ़ा अगिनसागर मे सजा रहा है।—परमा बाबा आते ही इसमे अपने हाथ से आग लगायेंगे। जब आग धू-धू कर लहकने लगेगी, वे इस अगिनसागर मे खाली पाँव प्रवेश करेंगे । फिर उसके बाद मान-मनौती !

सभी लोग मान-मनौती करने आये हैं। एक हजार डालियाँ—पूजा की सामग्री से भरी डालियाँ—जमा हुई हैं। गहवर मे अब जगह नही। अच्छत, चन्दन, फूल-पान, केला-अमरूद, दही-दूध, सिघाडे, मखाने ! जिसने डाली नहीं दी है, वह डाली की कीमत, आठ आना, चार आना, हाथ मे लेकर मनौती कर सकता है।—"दुहाय परमादेव ! दस बीघे जमीन का पर्चा यदि मिल जाये तो अगले साल दस सेर अच्छत से भरी डाली गहवर में लेकर हाजिर ।"

"पॉ-ऑ-बिडेसिक-रे-ए-ए-ट ! बीड़ी पाँ-ऑ !"

गाँव के पनवाडियो को खूब फायदा है। फोकट मे एक मेला जैसा मजमा हाथ लग गया है। कैसा खिल्ली पान पर लोग टूट रहे हैं।

—अरे बाप ! अब तो बिजली छटकाकर फोटू ले रहा है। छटक् ! छटक् !

"बीरभद्दर बाबू, बस समझ लीजिए इस काम मे भी छक्का हाथ मार दिया।"

"अलबत्त दिमाग है, तुम्हारा। मैं मान गया लुत्तो ! अब लुत्तो नही, आज से मैं भी तुमको लुत्तो बाबू कहूँगा। इसी को कहते हैं कूटनीति ! वाह, लो पान खाओ !"

"आज मैं खाली पान नही खाऊँगा, भाभी के हाथ की मिटाई ही-ही-ही !"

"अच्छा, अच्छा। आगे सुनाओ, और क्या-क्या हुआ ?"

—होगा क्या ? जो 'सिड्डल' था, उसी के मुताबिक काम हुआ। जो-जा सिखा दिया था निरसू को, वही-वही भखा। कमेसरा को क्या कहा, जानते है ? कहा, तुम दुतियाकार हो। सोलकन्ह होकर तुम बाबू-बबुआन के पच्छ मे हो। तुम्हारा नाश होगा ! गहवर से जाने के पहले परमादेव ने साफ-साफ कहा—परती तोडकर मेरी आसनी को जिसने बरबाद किया है, मेरी म्रानी पर जिसने हल चलाया है, उससे बदला लो। ठाकुरबाडी मे रामलला हैं। रामलला की पूजा करनेवाले पुजारी की बात सुनो, कल्याण होगा।

"लुत्तो बाबू, बहुत अफसोस की बात ! मैं ऐसा जानता तो आज फारबिसगज नहीं जाता। यह तो देखने-सुनने जोग तमाशा था। लेकिन, ठाकुरबाडी के पुजारी पण्डित सरबजीत चौबे को 'टैट' कर दिया है या नही ?"

"इसके लिए आपको कहना नही होगा। उस पर पक्का पालिस चढ गया है !"

थप-थप ! दूसरे कमरे से ताली बजाकर अन्दर बुलाया बीरभद्दर बाबू की स्त्री ने—"हलवा तो खिलाइयेगा, उसकी जूठी कटोरी कौन धोयेगा ?"

"चुप-चुप ! धीरे-धीरे, लुत्तो बा वह सुन लेगा।"

"सुन लेगा तो क्या होगा ?"

"आजादी देवी, देखो। समझो जरा। बहुत इम्पौटें··· ।"

"मुझे आजादी देवी मत कहिए। मुझे उलटी होने लगती है, इस नाम से।"

"छिः !"

"तो धोइएगा आप झूठी कटोरी ?"

"आजा दी··· ।"

ताजमनी !

सुरपति राय कल ही किसी बहाने नट्टिनटोली की ओर जायेगा। ताजमनी के बारे में उसने अजीब-अजीब बातें सुनी हैं। सुरपति उसको देखना चाहता है। एक झलक ! भवेश कह रहा था उस दिन, पवित्र सुन्दरता की साकार प्रतिमा है···। इसके बाद भवेश बुरी तरह तुतलाकर चुप हो गया।

पवित्र सुन्दरता ?

–उँ-याँ-याँ ! हुँआँ-हुँआँ-आँ-हुँआँ !

सियार बोलते हैं। दो पहर रात बीत गयी ?··· दूर-दूर तक प्रतिध्वनित होती हुई बोली, सियार की।

तारा मन्दिर की घन-अन्धकार अँगनाई में खड़ी है, ताजमनी। चार घण्टों से खड़ी है। और एक पहर रात कटे, तब वह यहाँ से टलेगी। पिछली तीन-चार रातों से बुरे सपने देखती है।–जै माँ तारा ! मन्दिर में चिराग की मद्धिम रोशनी में माँ तारा की मूर्ति–काली-काली-काली !

काले रंग का सागर ! घनघोर अन्धकार ! लाल जीभ माँ तारा की ! अड़हुल फूल की लाली !··· माँ हँसती है ?–जै माँ तारा।···

"माँ ! तुम्हारी उल्लासिनी मूर्ति ? यह मैं क्या देख रही हूँ ? इतने दिनों का सपना पूरा हुआ ! माँ हँसती है ?" किन्तु, ताजमनी कैसे हँसे ? हँसते-हँसते रोना पड़ा है, बार-बार।···

"ओ माँ ! माँ गो-ओ-ओ ! मालकिन-माँ ने अपना पहला बच्चा तुझे चढ़ाया था, क्या इसी दिन के लिए। तुम्हारा दिया हुआ बेटा, मालकिन-माँ का। उसका अमंगल कैसे देख सकेगी तू ? और तुम तो सबकुछ जानती हो, जगत्-जननी ! मेरे जिद्दा को धन-दौलत, जमीन-जमींदारी का एक राई लोभ नहीं !··· बारह साल से इस पिटारी को कलेजे से सटाकर मैं अपने जिद्दा की मंगल-कामना कर रही हूँ। मेरे माथे पर भेज दो सब दुख···! साक्षी हो तुम। मालकिन-माँ के आगे सत्त करने के बाद, जिद्दा के चरन भी नहीं छू सकी हूँ, आज तक। मैं आज जिद्दा की चरनधूलि लेने जा रही हूँ। बारह साल के बाद सत्त तो बज्र सत्त हो जाता है। मालकिन-माँ की पिटारी आज उसके बेटे को सौंपने जा रही हूँ।··· तू भी अपना आशीष भर दे

इस पिटारी मे !"

मौलश्री का एक पीला पत्ता टूटकर गिरा। ताजमनी अँधेरे मे उस पत्ते को ढूँढ़ने लगी—"हाँ, यही पत्ता है ! पत्ता नही, तुम्हारा आशीष है ! बल दो, जिद्दा के सामने मै पत्थर की मूरत बन जाऊँ !" सीक की बनी हुई एक छोटी-सी पिटारी, जिसके अन्दर भोजपत्र पर एक मन्त्र लिखा हुआ है। दूसरे पत्रे पर पाँच चक्र अकित हैं— श्रीचक्र 1, श्रीचक्र 2। एक गोमुखी रुद्राक्ष का दाना, सिन्दूर की डिबिया मे। और, चाँदी का एक सिक्का, जिस पर टेढ़ी-मेढ़ी अरबी लिपि में लिखा है—अलिफ, लाम, मीम !

टप्पा-टप्पा-टः टः ट. टप्पा-टा-ट्रि ! क्रेक !

जितेन्द्रनाथ अपने कमरे मे बैठकर टाइप कर रहा है। खिडकी के फ्रेम मे एक टुकड़ा नीले आकाश का, दो तारे जडे ! ट्रैक्टर चलाने से उँगलियो की बनावट जरा बदल गयी है। इसलिए टाइपराइटर की चाबियाँ उसके गलत चाप की छाप ज्यादा आँक रही हैं, आज। पिछले पाँच महीने से उसने एक पंक्ति भी नही लिखी है। कुछ-एक पत्र भी नही। फिर, उसके श्रद्धेय बन्धु प्रोफेसर मिश्रा द्वारा प्रस्तुत कीबोर्डवाला हिन्दी टाइपराइटर आया है। जितेन्द्रनाथ आज प्रसन्न है उसके अन्य मित्रो की बात गलत निकली। प्रोफेसर मिश्रा का सपना पूरा हुआ। जितेन्द्रनाथ को बल मिला है। प्रोफेसर मिश्रा के नाम एक संक्षिप्त और सन्तुलित बधाई पत्र टाइप किया है उसने—पहले-पहल ! मात्र तीन गलतियाँ। पुनश्च मे लिख दिया—मात्र तीन गलतियाँ हुई हैं जिनको रबर से इरेज किया जा सकता था। मैंने रहने दिया है। टप्पा टप्पा-टः ट-ट्रि !

—सेवा म. सम्पादक पाटलीपुत्र टाइम्स ! गत पाँच महीने की लम्बी चुप्पी के बाद अवसरवादी को पत्राचार का अवसर प्राप्त हुआ है। क्या कहिए, अवसर की बात ! आप अवसरवादी द्वारा परिचालित स्तम्भ की घोषणा कर सकते है। मैं फिर से अवसर की बात को चालू करना चाहता हूँ। ट ट-ट !

टप्पा टप्पा ट-ट. !

—सेवा म सम्पादक राजकाज इत्यादि ! तटस्थ राजनीति वार्ता के लाउडस्पीकर साहब फिर हाजिर है, हुजूर के आगे ! टः टः !

ट्रि !

—सम्पादिका, सचित्र सुन्दरी नारी ! आपका पत्र, भटकने के बाद ही सही, मिल गया है। मे गाँव आ गयी हूँ। अपने नैहर मे हूँ। पत्रान्तर में विलम्ब के लिए क्षमा । प्रसन्न हूँ। आप 'सोलह सिंगार-विशेषांक' निकाल रही है। सचित्र (अपनी तस्वीर नही !) रचना शीघ्र भेज रही हूँ, विशेषाक के लिए। मेरे छोटे भाई भवेश को फोटोग्राफी मे दिलचस्पी है। उसके कुछ छायाचित्र है। नवनीता आपकी। टप्पा-टप्पा ट्रि ! क्रेक

सेवा मे !

बॉख, बॉख, बॉख !

मीत अपने मोढ़े से उछलकर अपने कमरे से बाहर, हवेली की ओर भागा। हवेली के पिछवाड़े में जाकर भूँकने लगा—बॉख, बॉख !

"अहा, चः चः ! मीत ! मुझे तुम नहीं पहचानोगे बाबू ?··· काटोगे ? काट लो भैया। लेकिन, मुझे एक बार हवेली के अन्दर जाने दो। सूँघता क्या है ? चः चः ! सुनती हूँ, तू बहुत समझदार है ! सुधना कहता था, तुम अंग्रेजी बोली समझते हो।"··· मीत पाँव चाटने लगा ताजमनी का। ताजमनी की देह बार-बार रोमांचित हुई।

घुप्प अँधेरा !··· वह तुलसी चौरा ! तुलसी चौरा के पास माथा टेकती है। उसकी आँखें बरस पड़ीं। झड़ी शुरू हुई, सावन भादों की !··· तुलसी-चौरा पर एक बिरवा भी नहीं ? कल ही एक लगवाना होगा। यह क्या ? कोई दीया-बाती भी नहीं देता होगा ! ताजू ने आँखों को पोंछकर बायीं ओर की कोठरी की ओर देखा, मालकिन-माँ जहाँ बैठकर रोज रामायन-महाभारत पढ़ती थीं, रेहल पर रखकर। मालकिन-माँ ! खटक् ! कौन ? तू आयी है ताजू ! दे आ पिटारी पहले जित्तन को। फिर आकर मेरे पास बैठना। तेरा मुँह सूखा क्यों है बेटी ? रोती है ? छिः छिः, तू रोती है ताजू··· ?

—कूँई ! ईं ! बॉख, बॉख, बॉख ! मीत भूँकता है, खड़ी क्यों है चुपचाप ? चलो, बॉख ! ताजू ने मालकिन-माँ के बैठने की जगह की मिट्‌टी ली, सिर से छुलाकर आँचल में बाँधने लगी।··· और अब वह बेसुध हो गयी। तन्मय ! भण्डारघर !··· यहाँ बैठकर ताजू नौकर नौकरानियों को सीधा बाँटती थी—रामपखारन काका आज रोटी नहीं खायेंगे, भात खायेंगे। चावल कितना दूँ माँ ?··· देगी कितना, जानती नहीं ? डेढ़ सेर तो सिर्फ कलेवा···।

यह ड्योढ़ी ! यहाँ बैठकर मालकिन-माँ चिक की आड़ से अपने अमला कारिन्दों से बातें करतीं··· ! टप्पा टप्पा-टा-टा-ट्रिं ! क्रेंक !

मीत कमरे के अन्दर हाँफता आया—बॉख··· कमरे से बाहर देखो, कौन आयी है !

"मी-ई-त !" जितेन्द्रनाथ ने झिड़की दी।

—बॉख !

"आज क्या हो गया है तुझे ? बाँध दूँगा !"

मीत कमरे से बाहर भागा, दरवाजे के पास खड़ा कटी हुई दुम हिलाने लगा।

चाकलेट कलर के पर्दे की ओट से ताजू प्रकट हुई।

"ता-जू ?"

परिचिता आँखों के बीच एक जोड़ी आँख, मीत की ! दो कदम आगे बढ़कर ताजू झुकी। घुटने के बल बैठकर पाँवलागी की उसने। उसके गले में लटकती ताबीज फर्श पर बज उठी—खट् !

मीत प्रसन्न मुद्रा में बैठा देख रहा है—कभी जित्तन बाबू की ओर, फिर ताजू

को। उसकी निगाह हाथ की पिटारी पर है। क्या है उसमें ? मिठाई की गन्ध तो नहीं आ रही ! माँ की पिटारी ? जितेन्द्र को याद आती है··· पिताजी कहीं जा रहे हैं। माँ हाथ में पिटारी लेकर खड़ी है। सिर से छुलाकर चले गये बाहर !

ताजू के हाथ से पिटारी लेकर जितेन्द्रनाथ ने अपने सिर से छुलाया—माँ का विश्वास, निर्मल गंगाजल !

हरिकेन लालटेन की रोशनी जरा-सी तेज हो गयी।··· सामने की दीवार पर युगों बाद एक जोड़ी मूक छाया प्रतिबिम्बित हुई है, फिर ! मंगलकामना में तन्मय नारी की प्रतिमूर्ति और श्रद्धा से अवनत पुरुष का प्रतिबिम्ब !

ताजू ?··· निस्तब्ध वातावरण में परती पर चलते हुए पंछी की बोली झंकृत होती है—कैं-ऐं ! सामने खड़ी ताम्रमूर्ति-जैसी ताजमनी। चेहरे पर रोशनी चमकती है। अपलक नेत्र के कोरों पर दो मोती जगमगाये !

सामने की दीवार पर प्रतिबिम्बित छाया ! मिकी-माउस की आकृतियाँ ?··· लालटेन की जगह बदल दी गयी। आँख के मोती झर चुके थे। ताजू का विश्वास, अन्धविश्वास बढ़ा है। वह जानती थी, जितेन्द्रनाथ श्रद्धापूर्वक स्वीकार करेंगे इस पिटारी को।··· मालकिन-माँ कहती, नहीं-नहीं।··· ताजमनी माँ के कहे हुए शब्दों को, माँ की बातों को दुहराने की शक्ति बटोर रही है—दुर्गे-दुर्गे !

—कहना, इसे जादू-टोना नहीं समझें। हँसी-खेल में न उड़ावें। बड़ा पढ़-लिखकर विद्यासागर हो गये हैं आप ? भोजपत्र पर लिखे पंच चक्र, श्रीचक्रों के पास लिखे मन्त्रों का अर्थ निकालिए। यही कुलगुरु ने कहा है। देख ताजू, दिल को बाँधकर, मेरी तरह कहना। समझी ?·· बाप ने उसका मतलब नहीं समझा। बड़े-बड़े जतन किये। मुझे भरोसा है, मेरा बेटा इसका कोई सही अर्थ निकाल लेगा, ढूँढ़कर। और, उसी दिन मिश्रवंश की पाँच पीढ़ियों के प्यासे पितरों को पहली बार पानी मिलेगा, मेरे बेटे के हाथ से। उसी दिन मुझे भी नसीब होगा !

ताजू के ओठ फड़के।

"इसे खोलूँ ?"

ताम्रमूर्ति के ओठों पर एक वक्र मुस्कराहट अंकित हो गयी, ताजू की मुस्कराहट !··· वही वक्रता !

—पंचचक्र ? श्री पंचचक्र ! भोजपत्र पर अंकित पंचचक्रों को देखकर प्रफुल्ल-वदन हुआ जितेन्द्रनाथ ! ताजमनी की आँखें अब उसके चेहरे पर टँग गयीं। मुस्कराहट की वक्रता बिला गयी।·· ताजमनी के दाँत झलकते हैं—"जानते हैं इसका अर्थ ?"

"क्या ?··· अर्थ ? नहीं। क्या अर्थ है ?"

ताजमनी के चेहरे पर फिर आकर लटक गयी, वक्र मुस्कराहट।··· लगाम से कसी हुई मुस्कराहट।

"पाँच पीढ़ी के प्यासे पितरों को पानी कब मिलेगा ?" ताजमनी की आँखें नहीं झुकीं।

जितेन्द्रनाथ के कानो के पास माँ की बातें स्वयं ही मँडरा गयीं··· मेरे जित्तन

ने अपने पिता को मरते समय गंगाजल पिलाया है, तीन घण्टे तक ! मेरे स्वामी को छोड़कर, आज तक इस मिश्रवंश में किसी को मरते समय अपने पुत्र के हाथ का पानी नहीं मिला। मरकर आग नहीं मिली, पुत्र के हाथ से ! जित्तन ने तो...।

जितेन्द्रनाथ को अचरज हुआ, ताजमनी के कण्ठ में बैठकर माँ बोल रही है ? ताजू के चेहरे पर स्पष्ट छाप, माँ की एक परिचित मुद्रा की ! ताजू की ठुड्डी में भी गड्ढा पड़ जाता है बोलते समय ? आश्चर्य !

"दुलारीदाय में पाँच कुण्ड हैं। और, परती के पाँचों चक्कर...।"

जितेन्द्रनाथ की आँखों के आगे पहिये-ही-पहिये, चक्र नाच रहे। कुल-व्यवहार में पंचचक्र पूजन की विशेष विधि मिश्रवंश में... तारा मन्दिर के बगल में पंचकन्याओं की पत्थर की मूर्तियाँ आज भी गड़ी हैं... मिश्रवंश की पाँच कुमारी कन्याएँ दुलारीदाय के कुण्डों में डूब मरी हैं ! चक्र... ताजमनी के कानों में हाथी-दाँत के चक्र, जिस पर सोने के बुन्दे !

"किन्तु आपको सुनना मना है, क्यों डूबी थीं कुमारी बेटियाँ !"

"जितेन्द्रनाथ के ललाट पर तुरत तीन रेखाएँ त्रिशूल की तरह उभरीं—सुनना मना है ! ऐसी सड़ी-गली मनगढ़न्त कहानियाँ हजारों सुन चुका हूँ। कोई गले में घड़ा बाँधकर डूबी होगी। कोई फूल के लोभ में पड़कर कुण्ड में गयी होगी, पुरइन के फूल में सोये हुए किसी देवपुत्र ने उसका सत्त-भंग कर दिया होगा। फिर · मैं जानता हूँ ऐसी-ऐसी कहानियाँ... !"

मुस्कराहट को समेटकर मुँह देखने लगी ताजमनी जिद्दा ! यही है उसके जिद्दा का सही सरूप ! ऐसे में, छोटी-सी बात भी चिढ़ा देगी। ताजमनी चिढ़ाने में चूकती नहीं है—"सुन्नरि नैका की गीत-कथा जानते हैं ? सुन्नरि नैका के डीह पर तो बचपन से खेल चुके हैं।"

"सुन्नरि नैका की गीत-कथा है ?"

"यह भी नहीं मालूम आपको ?"

फिर भड़केंगे जिद्दा !· नहीं। त्रिशूल कपाल पर नहीं, बेचारा सुरपति !

"वह एक हाकिम आया है न, उसको ऐसी कथाओं की जरूरत है !"

"मैं जानती हूँ, कथा-हाकिम साहेब को। लेकिन, आपकी एक हजार कहानियाँ लिखते-लिखते ही पाँच साल बीत जायेंगे, उनके !"

मात खाये जितेन्द्रनाथ की सूरत नहीं देख सकती ताजू। तुरत कहती है—"सुरपति बाबू से कहिए रघ्घू रामायनी को बुलाकर सुन्नरि नैका की गीत-कथा सुनें। पाँच रात में समाप्त होगी कहानी।"

"रघ्घू रामायनी जिन्दा है ?"

अब ताजू हँस पड़ी... जिद्दा को क्या मालूम कौन मरा, कौन जिया !

—बॉख-बॉख-बॉख ! मीत इस तरह खड़ा होकर बातें करने में कोई तुक नहीं देखता। बाहर से आये हुए आदमी के सामने, घर का आदमी इस तरह आमने-सामने

खड़ा होकर बाते करें ? ऐसा उसने कम ही देखा है, नहीं देखा है ! दो में से एक भी बैठे तो मीत उसकी गोदी में अपना मुँह रखकर । कानों के पास कोई सहला क्यों नहीं देता—बॉख-बॉख !

"ताजू, बैठो !"

ता-आ-जू-उ-उ-उ ! ता-आ-जू-उ-उ-उ।

मालकिन-माँ की आवाज गूँज रही हवेली में। ताजू सिहर पडी।

सचित्र साप्ताहिक मे तस्वीरे छपी हैं—परमा बाबा की, भगतिया लोगो की—झाल-मृदंग के साथ ! आग पर चलते हुए लोगों की कतार ! दुलारीदाय मलारी। बड़ी-बड़ी, काजलवाली ऑखे, नशे मे माती। दोनों गालों पर रोशनी पडी है। घुँघराले काले केश बिखरे, लरजते बादलो की तरह !

पुस्तकालय के वाचनालय में, फोटो देखने के लिए भीड लग गयी। अपढ़ लोग भी आये, दर्जनो ! देखें जरा परमादेव की मूरत ! श्रद्धा से झुककर पॉवलागी की—जै हो बाबा परमादेय ! हमारी मनोकामना पूरी हो गयी, किसी की हो या न हो। दर्द उभरा सुवशलाल का। भिम्मल मामा ने ठीक ही कहा, इस फोटोमाला का सिरोनामा यदि 'आग से खेलनेवाले और आग' दिया गया होता ! आग ही है मलारी का रूप, सुवश के लिए। छः महीने से सुलगती हुई आग भडक उठी है दिल की। सुवशलाल छटपटा रहा है आज। पुस्तकालय के वाचनालय का कार्यालय-मन्त्री है वह। वाचनालय मे मलारी की तस्वीर, वह देखकर भी नही देख सका। घर ले आया है, सचित्र पत्रिका। दो प्रतियॉ आती हैं, एक स्त्री सदस्याओ के लिए। कन्या पाठशाला मे सचित्र साप्ताहिक पत्रिका वह स्वयं देने गया था। हेडमिस्ट्रेस उसकी अपनी फुफेरी बहन है। मलारी अपनी तस्वीर देखकर मुस्करायी थी; लजाती हुई मुस्कराहट !

लेकिन, मलारी के मन मे भी ऐसी ही छटपटाहट लगे अब तो ? कैसे लगेगी ? मर्द के मन की बात तो ऑखो मे उतर आ गी है। मलारी पढी-लिखी लडकी है। नही पढ सकती ऑख की भाषा ? सुवशलाल अब तक कहने का साहस बटोर नहीं सका था।

अभी, रात म कोई रैदासटोली जाना चाहे तो उसके लिए कौन-सा बहाना ठीक होगा ? कमेसरा ने कैयटटोली और रैदासटोली के बीच एक दूकान खोली थी बीडी-सिगरेट, तेल-नून की। दूकान बन्द हो गयी। नहीं तो सिगरेट लेने के बहाने अभी वह जा सकता था रैदासटोली की ओर। एक बहाना है—हरिजन-सन्देश की पुरानी प्रतियाँ तीन महीने से पडी हैं। सुवशलाल की बड़ी भाभी कह रही है अपनी सास से—"मइयाँ, सुनती हैं ?" सुवश की बूढी मॉ हाथ मे माला लेकर बैठी जापकर रही है। बडी पतोहू की बात सुनकर ध्यान भंग करना पड़ता है। माला सिर से छुलाकर कहती है—"हाँ, अभी बहरी नहीं हुई हूँ।"

"दिन-दिन सुबो बाबू का खोराक कमते जाता है। एक मुट्ठी भात भी तो नहीं खा सकते हैं। मैं कहती हूँ मइयाँ, कि एक बार पूछकर देखिए न कोई बेमारी-सेमारी तो नहीं...।"

"रात-बेरात, बेर-कूबेर का कुछ खयाल तो करो। बेमारी-सेमारी हो उसके दुश्मनों को! पूछूँगी क्या? बेचारा रोज बोलता है–मैया! अपने जिला में कॉलिज खुल गया लेकिन बी. ए. पास करना मेरी तकदीर में नहीं लिखा।"

मँझली पतोहू रसोईघर में दाल छोंकती बीच में ही बोल पड़ी–"रोज, बस एक ही बात? कौन मना करता है किसी को पढ़ने से? भैंसुर उस दिन कह रहे थे, जाकर नाम लिखा ले। सान्ती के बाबू भी कहते हैं, घर में बैठकर क्या करता है? जाय पढ़ने·।"

"पढ़ने जाओ कह देने से ही तो नहीं होता है? पढ़ने का मसाला कहाँ से आयेगा?" सुवंश की माँ धीरे-धीरे बडबडाकर उठती है।

मँझली बहू चुप नहीं रहती–"मसाला? भागलपुर कॉलिज में सिर्फ दो साल में जितना रुपया खर्च किया है सुवंश बाबू-उ-उ ने कि, सान्ती के बाबू कहते थे, उतने खर्चे में एफे-एमे-एले सब पास कर जाता।"

बड़ी बोली–"सुराज के बाद से तो स्कूल-कॉलिज में पढ़ने की फीस नहीं लगती है, सुनती हूँ। ताँतीटोली का जयमंगल! उसके घर पर तो फूस भी नहीं है। कैसे पढ़ रहा है? राधेसाम को, सुनती हूँ, सरकार से पनपियाई के पैसे भी मिलते हैं, पचास रुपैया या कितना··! सुबो बाबू तो अब बच्चा नही हैं। कोशिश करने से क्या नहीं होता है?"

मँझली बहू तरकारी के लिए तेल लेने आयी तो बड़ी बहू को टीपकर बोली–"सान्ती के बाबू तो कहते हैं, काझा-गनेसपुरवाला कालिस से लेकर नन्दन तक पढ़ने का खर्च दे रहे हैं। घर की हालत छिपी-छिपायी नहीं, फिर भी इतना देते हैं। सुबो बाबू मंजूर कर ले। वह तो खुद जानते हैं, अस्सी रुपैया महावारी खर्च करने की औकाद अब इस गृहस्थी से उम्मीद नहीं।"

"सुबो! रे सुबो!" सो गये क्या? सुवंश के कमरे के चौखट के पास बैठकर माँ ने पुकारा–"जगे हो?"

"क्या है मैयाँ!" सुवंश जगा हुआ है।

"जी खराब है तेरा? खाना-पीना, भौजी कहती है ।"

"बड़ी भौजी अपने खुराक से ही सबका पेट नापती है। पेट-भर तो खाता हूँ।"

"भौजी कह रही है, सरकार से पनपियाई और भत्ता की कोशिश नहीं करते?"

सुवंश बात नहीं काटता माँ की। बोला–"कहाँ किसको पनपियाई और भत्ता मिलता है! बडी भौजी को एसपेसल रेडियो से खबर मिलती है।· ब्राह्मण-क्षत्रिय के लड़कों को कुछ नहीं मिलता-उलता है। कहार, धोबी, चमार, हरिजनों को पढ़ने के लिए पैसा देती है सरकार।"

दोनों भाभियाँ ओसारे पर आकर बैठ गयी थीं।··· मँझली बहू आधा घण्टे के

लिए निश्चिन्त होकर आयी है, तरकारी में एक लोटा पानी डालकर। बड़ी भाभी बोली–"और भूमिहार बाभन को ?"

"तुम्हारे मौसेरे भाई श्यामसुन्दर चौधरी ने अपने को भूइयाँ लिखाकर सौ रुपये महीना ठग लिया था··· सरकार मुकदमा चला रही है। अब मालूम होगा तुम्हारे सेमसुन्नर भैया को।"

मँझली हँसती है–"हाय रे दैव ! तब तो सेमसुन्नर भैया की सब फुटफुटी निकल जायेगी ?"

बड़ी भाभी पान की पीक फेंककर बोली–"क्या किया-आ-आ ? जात के नाम पर लिख दिया भूइयाँ-आँ ?··इसी से कोठ-पतलुम मार टोपा-अचकन-फौण्टन जाने क्या-क्या खरीदकर ढेर लगा दिया था सेमसुन्नर ने ?" ऐं·· कोठ-पतलुम, टोपा-अचकन-फौण्टन सुनकर सुवंश हँसा। ऐसी बहुत बातें बड़ी भाभी की अपनी जोड़ी हुई हैं। नेपाल की सीमा के पास नैहर है, इसलिए हाकिमों को करनल-जनरल-सुब्बा-पलटन कहती है।

बड़ी भाभी को भवेश की याद आयी–"और एक ऊ आया हुआ है। पीठ पर झोला-झप्पा, आला-फुदना बगल में लटकाकर फोटू छापी उतारता फिरता है। उसको भी सरकार से पैसा मिलता है क्या ?"

मँझली को याद आयी, दिन में सुनी हुई बात–"हाँ, सुबो बाबू, एक बात तो पूछते-पूछते भूल गयी थी साँझ से। सुनती हूँ, भवेश ने मलारी का फोटू लेकर अकबार में छापी कर दिया है ? बात ठीक है क्या ? अबेर में जयवन्ती आयी थी। लेकिन, उसकी बात का क्या परतीत !"

सुवंशलाल का कलेजा धड़क उठा–"ऐं ? हाँ, हाँ। परमादेव के गहवर फोटो ली थी उसने। पत्रिका में छपी है। देखोगी ?"

"कहाँ है ? तुम्हारे पास है क्या ?"

दोनों भाभियाँ उठकर सुवंश के कमरे में आयीं। माँ भी माला-जाप बन्दकर आयी। लालटेन की मद्धिम रोशनी को तेज करते हुए सुवंशलाल ने सचित्र साप्ताहिक के पृष्ठ उलटे।

"पहचानो तो ?"

सुवंश की माँ लालटेन की तेज रोशनी में भी तस्वीरें स्पष्ट नहीं देख सकती। मँझली बहू चहक उठती है–"यही तो मलारी है न !"

"अरे ! यह तो सिलेमा की लड़की-जैसा लगती है !"

सुवंश ने मन-ही-मन अपनी बड़ी भाभी की नजर की प्रशंसा की। उसे डर था, भाभी कुछ ऊटपटाँग न बोल बैठे।

मँझली बहू की अष्टवर्षीया बेटी शान्ति भी उठकर आयी और हँसकर बोली–"हाँ, हाँ। इसी में चमाइन मास्टरनीजी का फोटो है। स्कूल में··· !"

सुवंश ने अप्रसन्न होकर कहा–"बेटी, चमाइन मास्टरनीजी मत कहो।"

"तो क्या कहेगी ?" मँझली बहू मुँह बनाकर बोली–"अकबार में फोटू छापी

हो गया तो वह जात में भी बड़ी हो जायेगी क्या ? इस चमारिन ने चार अच्छर पढ़ क्या लिया है, आकाश में छेद ।"

बड़ी भाभी बोली–"पढ़ने का सुफल तो हाथों-हाथ मिल रहा है। जवान होकर पड़ी हुई है, कोई बर मिलता ही नहीं है। और, फैशन कितना करती है !"

सुवंशलाल ने सचित्र साप्ताहिक समेटते हुए कहा–"हाँ भाभी ! पढ़कर आकाश में छेद किया है उसने। उसके लिए आकाश से ही बर टपकेगा। देखना !" "अच्छा, अच्छा ! देखूँगी।"

मँझली ने कहा–"खाना-पीना भी होगा या फीटू निहारकर ही पेट भरेगा ? हँ-हँ-हँ-हँ-हँ !"

"बेसी हँसो मत।"

"छापीवाली रे छापीवाली !" मलारी का छोटा भाई रमदेवा उँगली नचा-नचाकर कहता है–"छापीवाली रे छापीवाली !"

"देखती है मैया ! रमदेवा बदमाशी कर रहा है। बात नहीं सुनता।" मलारी अपनी झोपडी के अन्दर से बोली।

मलारी की माँ चुन्नी मछली मे झोल दे रही थी–"क्या बदमाशी करता है ? जरा फुसलाकर पढ़ाओगी सो तो नहीं। हमेशा दुरदुराती रहती है।"

"देख मैया ! मलारी मुझे अपने बिछावन पर बैठने नही देती। कहती है, देह महकती है तुम्हारी, भाग ! मुझे छापी नहीं देखने देती।"

माँ-बाप के अतिरिक्त दुलार से रमदेवा उद्दण्ड हो गया है। मलारी को भद्दी गालियाँ देता है। चूल्हे मे जलावन झोंकती बोली, उसकी माँ–"बडा बाभिन बनी है हरजाई तू ! छोटे भाई की देह की महक लगती है तुझे ?"

"हरजाई, हरजाई ! छापीवाली हरजाई !"

मलारी का बाप महीचन खखारकर गला साफ करते हुए बाहर से आया–"कहाँ है छापी ? सारे गाँव मे हल्ला हो रहा है। मुँह दिखलाना मुश्किल हो गया है। कहाँ है छापी ?"

रमदेवा ने झपटकर सचित्र साप्ताहिक ले लिया और बाप के पास दौडा–"यही देखो !" ढिबरी की रोशनी में मलारी की तस्वीर देखकर दाँत पीसने लगा महीचन। सचित्र साप्ताहिक को एक ओर फेकते हुए, वह चिल्लाया–"रमदेवा की मैया-या-या ! देख ! आके देख जरा। उस दिन मैं मार रहा था तो कहती थी । देख, आके खुद देख !"

मलारी की माँ चूल्हे के पास से ही बोली–"क्या हुआ ? क्या देखूँ ?"

मलारी के बाप ने पास में पड़ी हुई लाठी उठाकर मारते हुए कहा–"तुम दोनो, माँ-बेटी दोनों हरजाई हो। जैसी माँ, वैसी बेटी !" सटाक, सटाक !

"अरे बप्पा रे-ए-ए ! जान गयी रे-ए-ए-ए ! मर गयी !"

झोपडी के अन्धकार मे बैठी मलारी सबकुछ सुन रही थी। माँ की रुलाई सुनकर दौड आयी–"क्या है ? क्या हुआ बप्पा ?"

"पूछने आयी है कि हुआ क्या बप्पा आ-आ ! मारते-मारते !" लाठी फेंककर मारते हुए बोला मलारी का बाप–"तुम दोनो के कारन मैं जहर-बिख खाकर मर जाऊँगा।"

लाठी, मलारी की गोरी बाँह पर लगी। बाँह सहलाती वह बोली–"फोटो छाप दिया है तो क्या हुआ ?"

"और पूछती है कि क्या हुआ ?" मलारी का बाप अब खाँसने लगा–खाँय खाँय-अक्खाई-हि।

मलारी की माँ पद जोड-जोडकर रो रही है–"अगे मइयाँ-याँ-याँ-गे ! नही हम चोरनी, नही रे छिनारनी-अँ-अँ-अँ, नही हम केकरो, कुछ-ओ बिगाडनी-ई-ई ! अरे, बिना जे करनवाँ हमरा मारल रे-मुँह-झौं-ौं ौं सा आ ! अरे बाप !"

"चुप्प। चुप रहती है कि लगाऊँ लात ?"

"बप्पा, गाँजा दारू पीकर रोज मारपीट करते हो !'

"तू चुप रह ! बडी मास्टरनी बनी है !"

"अरे, क्या हुआ ? मलारी ? रमदेवा ?"

"अरी मलारी की माँ, चुप रह !"

रैदासटोली की औरते आकर जमा हो गयी–"क्या है ? काहे मारा ? क्या हुआ ?"

मर्द पुरुख भी एक एक कर आ जुटे–"क्या है काका ! आज ज्यादे ढल गयी है क्या ?"

'होगा क्या ? कहावत है न !" मलारी के बाप ने एक भद्दी गँवई कहावत दुहरायी–"रोज सुनते सुनते मन घिना गया है मेरा। कोई कहेगा, अपनी बेटी पर नजर रखो, तो कोई कहेगा–तुम्हारी बेटी बडी चचल है, तो यह तो वह। मैं कितना समझाऊँ ? कहाँ तक बात से अब दखो कि फोटू छापकर अकबार मे बाँट दिया है, बबुआनटोली के लडको ने।"

बालगोबिन को ऐसी ऐसी बाते सुनकर बडा गुस्सा आता है, अपनी जाति पर। अपने पर भी। वह क्यो चमार होकर जन्मा इस मिरतूभूबन मे ? इसीलिए, लुत्तो उसको रोज ठोकर देता है, कूट बोली बोलकर चिढाता है। इन्ही लोगो के चलते बालगोबिन का माथा हमेशा झुका रहता है। वह झुँझलाकर बोला–"फोटो छापकर अकबार पत्र मे दिया तो क्या हुआ ? इसमे क्या खराबी हुई ? बडे-बडे लीडरो का फोटो अकबार पत्र मे छपता है !"

"आखिर, लाज-शरम नाम की भी कोई चीज होती है या नही ?' एक बूढे चमार ने कहा। अब बालगोबिन बुरी तरह बिगडा–"बात तो बूझते नही और टाँग अडा देते हो हर बात मे ! क्या जानते हो तुम राजनीय राजनेती की बात ? बडे-बडे नेताओ मे भी सबका फोटो नही छपता अकबार-पत्र मे। मुँह जरा खराब हुआ कि काली रोशनाई पोत देता है।"

एक नौजवान चमार बहुत देर से कुछ कहना चाहता था। बालगोबिन की झिड़की सुनकर संकोच में पड़ गया। पूछा–"कहाँ है फोटो ?"

रमदेवा ने सचित्र साप्ताहिक उठाकर दिया–"ढिबेरी के पास जाकर देखो न !"

एक-एककर उपस्थित नर-नारियों ने सचित्र साप्ताहिक की तस्वीर देखी। तस्वीर देखने के बाद सबने मलारी को एक नजर देखा। उस नौजवान चमार की आँखें गड़ी रहीं कुछ देर तक मलारी पर। वह बुदबुदाया–"ठीक ! दुलारीदाय !"

बालगोबिन ने फिर समझाया–"महीचन, अब तुम्हारी बेटी गाँव के गरल स्कूल की मास्टरनी हो गयी है। जवान है। अब तो मुँह सँभालकर बोलो। अभी तो एकटंग नौकरी है, सालटन होते ही सरकारी पिनसिल मिलने लगेगा। लेकिन, लोकलबोट के चेयरमैनजी यदि सुनेंगे कि इस तरह निन्दा की बात करते हैं लोग··।"

मलारी की माँ अब चुप होकर नाक-आँख पोंछ रही थी। मलारी बाँह सहलाती बोली–"और, उस बार तो चेयरमैन साहेब के नाम झूठमूठ··।" बालगोबिन को भी याद आयी–"हाँ, उस बार चेयरमैन जी के नाम शिकायत तुमने खुद फैलायी। निन्दा की बात !"

"झूठ बात थी वह ?" महीचन दाँत कटकटाकर पूछता है मलारी से–"मुझे झूठा कहती है ?"

"झूठ नहीं तो और क्या ?"

"तुमने नहीं कहा था कि ·।"

मलारी समझाकर कहती है–"सबसे अच्छा, तुम्हीं लोग विचार करो। चेयरमैन साहब ने परीच्छा लेने के लिए बुलाया था। परीच्छा में मौखिक कोसचेन किया। मैंने कोसचेन का एनसर दिया। चेयरमैन साहेब के कमरे से बाहर आयी तो बप्पा ने पूछा–क्या हुआ ? मैं बोली, मौखिक कोसचेन किया और··।"

"तुझे लाज-धरम कुछ भी नहीं मलारी ?" इस बार मलारी की माँ नाक झाडकर बोली–"बोलते शरम भी नहीं आती ?"

महीचन तुतलाया–"देखो, अभी भी बोलती है कि मुख के··!"

"क्या किया ? मुख में क्या किया ?"

"मुँह में क्या करेगा, मौखिक कोसचेन, क्या समझा ?" बालगोबिन ने दाँत पीसते हुए कहा।

"अब, उसी दिन बप्पा सारे गाँव में ढोल पीट आये, मलारी को चेयरमैन बाबू ने मुख में कलम से खोंच दिया और मलारी ने सर्र-से थप्पड़ मार दिया।"

बालगोबिन थर-थर काँपता है, गुस्सा से–"लोग ठीक कहते हैं, जैसी जात वैसी बात !"

जाति की बात ! जातिवाद ! जाति का सवाल–जात-पाँत !

है हिम्मत ? सुवंशलाल अपने मन को तौलता है, तीसरी पहर रात में। नींद नहीं आ रही। प्रेमी की जाति··· ?

सामबत्ती पीसी आयी है।

"हे-य ! मनका की माय !"

वही ! लौडपीसर का भोंपा बोला। जरूर सामबत्ती पीसी लौट आयी है। सामबत्ती पीसी !

गाँव में, एक किस्म की औरत होती है जिसे गाँव की बोली में 'घरघुमनी' कहते हैं। सामबत्ती पीसी भी घरघुमनी है। सामने में कोई नहीं कहता। पीठ पीछे, अपनी बहू-बेटियों को घर की बड़ी-बूढ़ी डाँटती है-"सामबत्ती की तरह घरघुमनी बनी है !"

सामबत्ती पीसी इसी गाँव की बेटी है। घर-घर घूमने की आदत बचपन से ही लगी है। इसी आदत के मारे ससुराल मे नही बस सकी। गौना में गयी, तीन महीने में ही घुटने में गठिया-वात हो गया। वैद्यजी ने कहा-"बैठने से रोग बढ़ेगा।" ससुराल में घर-घर कैसे घूमती ? सामबत्ती पीसी के घरवाले ने बहुत सोच-विचारकर देखा। आखिर, सामबत्ती पीसी के बदले उसका घरवाला ही ससुराल में आकर बस गया। सुननेवाले परतीत नहीं करेंगे, लेकिन, यह बात सवासोलह आना सच है कि नैहर आने के तीसरे ही दिन बाद सामबत्ती पीसी भली-चंगी हो गयी। फिर घर-घर घूमने लगी। घर-घर घूमना खेल नहीं। हर घर की सास-पतोहू से मन मिलाकर रखना, माँ-बेटी के मन की बात बोलना, इस घर की बात को चतुराई के साथ उस घर में शपथ खिलाकर खोल आना और आग लगने पर दूर खड़ी होकर तमाशा देखना सबके बूते की बात नहीं। इस सर्व के घनघोर दिन-काल में भी सामबत्ती पीसी का एक घर न छूटा है और न किसी से दिल टूटा है। उस दिन, कन्याविद्यालय की मास्टरनीजी को मुरारी बाबू की लड़की ने एक सवाल पूछकर चुपकर दिया-"दीदीजी ! आपने अभी बताया कि टहलने से देह की चरबी नहीं चढ़ती, मोटाई घटती है। तो सामबत्ती पीसी तो घर-घर घूमती है ?"... क्लास की सभी लड़कियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ी थीं, एक साथ। और, मास्टरनीजी दाँतों से ओठों की हँसी दबाकर गुमसुम खड़ी रहीं।

दस बजे दिन में ही रसोई-पानी के झमेले से छुट्टी पाकर, घर से निकल पड़ती है सामबत्ती पीसी। घरवाला, सरफलाल बडे शरीफ मिजाज का आदमी है। दोपहर को काम करके वापस आता है। घर की छिटकनी खोलने का भेद पीसी ने बता दिया है, सीके पर टँगी हुई हँडियों को उतारकर, जो बना मिला, खा-पी लेता है। शाम को जब जोगबनीवाली गाड़ी लौटकर कटिहार की ओर चली जाती है, उसके एक घण्टा बाद सरफलाल की झनकवाली आवाज गाँव में गूँज उठती है-"हे-य ! मनका की माय ! गाड़ी गेला-ऽ-ऽ-आ-व-ऽ-ऽ, आ-व-ऽऽ !

झनकवाली बोली ! सरफलाल के गले में, एक अनार के बराबर घेघ एक ओर निकला हुआ है। गले की गुठली !... मनका बेटा है। और वह बेटा सामबत्ती पीसी के गले की गुठली है। पीसी ने अपने बेटा को अपनी बहन के घर भेज दिया है। बाँझ-मौसी ने मनका को स्कूल में भरती करवा दिया है-खरैहिया बोर्डिंग में रहता

है ! बेटे के जन्म से पहले, सरफलाल पुकारता–"हे-य ! परानपुरवाली-ई-ई-ई ! गाड़ी गेला-ऽ-ऽ, आवऽ !" और, उसकी इस पुकार को सुनकर सारे परानपुर गाँव की बेटियाँ अपने-अपने घर में सरफलाल के खाते एक गाली जमाकर देतीं–"ऊँ ! मुहझौंसा ! गाँव-भर की औरतों को पुकार रहा है। परानपुरवाली · !"

रिश्ते मे साली लगनेवाली, जाति-परजाति की लड़कियों ने मिलकर, पहले उसका नाम दिया था–सरीफा जमाई ! जब से गाँव की सभा में पहली बार लाउडस्पीकर का भोपा बज गया, नाम बदलकर पड़ा–लौडपीसर।

–जो भी कहो, आदमी बड़ा अच्छा मिला सामबत्ती पीसी को ! घर-घर घूमकर आती है और रोज सरफलाल से किसी-न-किसी सवाल का जवाब तलब करती है–"मैं पूछती हूँ, जरा-सी देर होने पर तो 'मनका की माय' की गुहार पड़ती है। आज पाँच दिन हुए कहते-कहते मैं थक गयी। अपनी मलकियाइन के सामने मुँह में बकौर लग जाता है क्या ?"

सरफलाल ताजमनी की खेती-बारी देखता है। हल जोतता है। टोले के लोगो ने इस नौकरी पर जरा नाक-भौं सिकोडने की चेष्टा की। लेकिन, सामबत्ती पीसी की बातों का जवाब देनेवाले गाँव मे कितने लोग है–"क्यो ? तजमनियाँ की नौकरी मे क्या हुआ ? गाँव के एक भी गृहस्थ किसान ने जिसको नहीं पूछा कभी, उस आदमी को तजमनियाँ ने पैंतीस रुपैया महीना पर बहाल किया है। देता है कोई गृहस्थ-किसान इतना अपने हलवाहे को ? दस रुपैया महीना देते हैं। सो भी समय पर कभी नही। पन्द्रह दिन दौडाने के बाद, एक रुपैया ! तजमनियाँ तो !"•

"सामबत्ती पीसी आयी है।"

"आओ, आओ ! हम लोगो ने तो सोचा कि तू जाकर इस बार ससुराल मे बस गयी। तीन-चार महीने से तो ज्यादा रही ?"

"हाँ चाची, क्या बताऊँ ! औरत आखिर औरत ही है ! कर-कचहरी तो मर्दो का काम है चाची। एक तो मैं औरत की जात और उधर देखो कि ससुरालवाली बात ! तिस पर गाँव के जमीदार से मुकाबला। मुँहामुँही बहस करना ठट्टा है ?" पीढी पर बैठती हुई बोली–"बोलो ठट्ठा है ?"

"अरे बप्पा ! हाँ, हाँ ! बताओ, क्या हुआ आखिर ?"

"होगा क्या ? मनका के बाप को तो जानती ही हो। कोई छिपाने की बात नही। कलेजा तो पुदीना के पत्ता बराबर है। पहले ही दिन सर्वे-कचहरी से थर-थरिया बुखार बोझकर वापस आया मरद मेरा। अब मै मिला-जुलाकर देखने लगी मन मे, हे भगवत्ती ! जमीन-जगह, कर-कचहरीवाली बात, घरवाला मेरा ऐसा ! कैसे क्या होगा ? आखिर, भगवत्ती मेरी बात मान गयी। जै भगवत्ती ! दूसरे ही दिन क्या मति-गति हो गयी मेरी-ई-ई कि अब क्या बताऊँ ! छापी साडी पहिर के, रेशमी चादर ओढ़कर पहुँच गयी सर्वे-कचहरी। हाँ, हाँ ! सामबत्ती इतनी बेहया नही ! नाक तक घूँघट लटका रखी थी मैंने !"

सामबत्ती पीसी ने बात में गिरह लगा दी–"जिसे जल्दी सुनना हो, पान-पत्ता नहीं तो कटिहारी-बीड़ी निकाले। बिना कोयला-पानी के दिन-भर··।"

"अच्छा, सामबत्ती पीसी, घूँघट तो लेती थी, समझी। कचहरी में बीड़ी पीती थी या नहीं ?" एक कमअक्किल लड़की पूछ बैठती है।

सामबत्ती पीसी हँसकर बोली–"सुना है, तेरा घरवाला दुकान करता है। गौना के पहले ही चिट्ठी लिखकर पूछ, अक्किल भी बेचता है या नहीं ! चार आने का अक्किल मँगा लो पारसैल करके ! बीड़ी नहीं, सिगरेट पीती थी मैं ! घूँघट मे माचिश की एक भी काठी बरबाद नही होती। मनका का बाप सीधा-सूधा जरूर है, लेकिन चीज खरीदेगा सबसे फैशनी !"

"फैशनी नही पीसी, फैसी।"

"चल, चल। वडी आयी है सामबत्ती को अरथ बुझाने ! फैशन की चीज को क्या कहेगे ?"

"फैशनेबुल।"

"यह बुलबुल तुम्ही पढ़ी-लिखी लडकियाँ आपस मे बोलो-बतिआओ। सामबत्ती फैशनी ही कहेगी। हमको भी कोई इम्तिहान देकर पास होना है ? पान-पत्ता यदि हो घर में तो निकालो। सामबत्ती पीसी नखलौआ पत्ती जर्दा लेती आयी है, खास पुरनियॉ मीटी के दाढीवाले दुकानदार से ! दुकानदार ने कहा है, नकली नलखौआ पत्ती साबित होने से नौ-नौ टका इलाम !"

पान खाकर, जर्दा घुलाकर पहली कुल्ली फेकने के बाद सामवत्ती पीसी ने अपनी अधूरी कहानी शुरू की–"सो, जब मैं बहस करने लगी तो जमीदार तो जमीदार, सर्वे के हाकिम से पेशकार मय कानूनगो से अमीन टण्डैल तक का कान कनकन ठण्ढा ! आखिर मे लोगो ने कहा, परानपुर गॉव की लड़की है, ठट्ठा नही।"

"कितनी जमीन लिखा आयी, पहले यह बता।"

"सो, चाची बहस किया तो हासिल भी किया। तीन एकड़ तेरह डिसमिल तो पट्टीदार लोग ही दबा रहे थे। उसको ऊपर किया। तब, देखो जो-ओ-ओ गाँव के जमीदारो का एक एकड तीन डिसमिल ।"

आज सामबत्ती पीसी ज्यादे देर तक नही बैठैगी, किसी आँगन मे। बहिनापा के यहाँ जाकर उसकी बहन का संवाद देना है सामबत्ती पीसी को। चार महीने से गॉव से बाहर गयी हुई थी। इस बीच गॉव में क्या हुआ, नही हुआ, सो वह कुछ नही जानती। किन्तु, गाँव से बाहर ही उसे नयी बात की गन्ध मिल गयी, ट्रेन पर ही। "तजमनियाँ की बात नहीं, नहीं ! तजमनियॉ की बात कोई नयी बात हुई ?" शपथ खिलाकर, ॲगनाई के चौकठ के पास खडी होकर कहने लगी सामबत्ती पीसी, गला दबाकर–"सुवशलाल को क्या समझती हो ! मुँह मे न बोल, न ऑख मे लोर ? सभी यही समझते है ? मैंने अपनी आँखो से देखा है !"

इसके बाद सामबत्ती पीसी ने अचानक गले की आवाज को इतना मद्धिम किया कि बात की फुसफुसाहट और ओंठो की पटपटाहट को परेखनेवाला ही समझे !

मात्र एक पंक्ति के बाद उसकी आवाज साबिक सम पर आ गयी।

"गाड़ी अररिया कोठ टीशन आयी। दोनों आकार उसी कोठली में चढ़े, जिसमें मैं पुरनियाँ टीशन से ही बैठी आ रही थी। मुझे तो पहले परतीत नहीं हुआ। वैसे, मनका के बाप को जो कुछ समझो, टैन की भुकभुक रोशनी में भी उसने ठीक ही पहचाना।" मैं धीरे से उठकर, घूँघट खींचकर, चदरा ओढ़कर बगलवाली सीट पर सरक गयी और दोनों का चलित्तर देखने लगी।

"अच्छा आ-आ ! इसीलिए मलरिया छौंड़ी कह रही थी कि रैदास हैं तो क्या, बाभन-छतरी से पानी भरवाकर पीऊँगी। ओ-ओ-ओ !"

"अरी, चाची ! क्या बताऊँ। सुनो भी तो, पहले। गिदरिया टीशन पर हिन्दू चा-गरमागरमवाले से दो कुल्फी चाह लिया छौंड़वा ने। दोनों कुल्फी छौंड़िया के हाथ में देकर, जेब से पैसा निकालने लगा।··फिर छौंड़िया के हाथ से कुल्फी लेकर इस तरह पीने लगा जैसे अमरित हो अमरित !"

"इसका माने हुआ कि खिचड़ी बहुत दिनों से पक रही है ?"

"सो, तुम लोग जानो। मैं तो गाँव में थी नहीं।"

चलते-चलाते समय की गप को चलन्ती गप कहते हैं। चलन्ती गप में सामबत्ती पीसी बोली—"एक, जित्तन बाबू और तजमनियाँ की बात से ही गाँव में छुट्टी नहीं अब तक। यह नया खेला क्या-क्या दिखाये-सुनाये··।"

औरतों में तेतरटोली की सामबत्ती पीसी और मर्दों में ब्राह्मणटोले का गरुड्धुज झा !

गौना के पहले ही एक बार सामबत्ती पीसी की बदनामी गरुड़धुज झा के साथ उड़ी गाँव में—जहाँ-जहाँ सामबत्ती, वहाँ-वहाँ गरुड़धुज झा। दोनों ने सारे गाँव में घूम-घूमकर लोगों का मुँह बन्द किया। दोनों मुँहजोर ? लेकिन, आजकल सामबत्ती पीसी ने गरुड़धुज झा के नाम पर कुत्ता पाल रखा है। उसके कुत्ते का नाम है गरुड़ा। टोले-मुहल्ले में गरुड़धुज की बोली सुनते ही सामबत्ती पीसी अपने कुत्ते को नाम लेकर पुकारने लगती है—"आ रे ! गरुड़ा-आ-आ ! तू-तू !"

लाख गाली दे सामबत्ती पीसी गरुड़धुज को, एक भी नहीं लगेगी गरुड़धुज की देह में। वह ब्राह्मण है। बबुआनटोले का बाबू है। उसके सात खून माफ हैं।· आजकल जमाना उलट गया है, तो क्या ? एक जमाने की बात नहीं, हाल-साल की बात है; परानपुर की बबुआनटोली के बाबू लोग सलाम करने पर आँख की पलकों को जरा-सा झुकाते भी नहीं थे; बात करना तो दूर की बात ! अब तो सोलकन्ह लोग भी बाबू की दावी करने लगे हैं। धन की ऊँचाई जाति के बुर्ज से भी ऊँची होती है। पैसा होते ही लोग बाबू कहलाने लगते हैं। बुनियादी बबुआनटोली को अब कौन पूछता है ?

न रहे बाबू, न रही बुनियादी पुरानी बबुआनी !

भिम्मल माम की बात ठीक है—यह गिरगिटिया जमाना है ! रंग बदलने में देर

नहीं लगती। बीस साल पहले, गाँव-समाज की सभी सोलकन्ह जाति को रजपुताई-बीमारी लग गयी थी। सब अपने को राजपूत प्रमाणित करने के लिए राजपूताना से नेपाल तक की पोथियों का हवाला देते। दो साल बीतते-बीतते जनेऊधारी नये क्षत्रिय, घाट-बाट, अली-गली में कुरुक्षेत्र मचाने को तैयार ! मैथिल ब्राह्मण, भूमिहार ब्राह्मण, राजपूत और कायस्थ आदि बुनियादी बाबुओं ने देखा—लाठीवाले भैंस हाँककर ले जा रहे हैं। वे चुप रहे—ले जाने दो !

आजकल दूसरा ही रंग है।

तीन साल पहले तक जो क्षत्रिय अपने को खास मानसिंह के वंशज बतलाते थे अथवा आल्हा-ऊदल की सन्तान बताकर दंगा-फसाद करते थे—देख लीजिए उन्हें ! उनके लड़के शिड्यूल्ड कास्ट और एबॉरिजिनल कम्युनिटी की फहरिस्त में अपना नाम लिखाने के लिए धक्कम-धुक्की कर रहे हैं। सोलकन्ह ही नहीं, कुछ बुनियादी बाबुओं ने भी तिकड़म-जोगाड़ करके परिगणित जाति में अपनी जाति का नाम दर्ज करवा लिया है—नहीं, नहीं ! कौन कहता है कि हम लोग राजपूत हैं। देख लीजिए गाँव में जाकर, हमारी जाति के लोग भेड़ चराते हैं। औरतें साल में तीन ही बार नहाती हैं, आज भी !

गरुड़धुज झा महापात्र है—महाब्राह्मण। ब्राह्मण लोग भी उसके हाथ का छुआ हुआ नहीं खाते। गरुडधुज झा ने दो-तीन महीने तक कचहरी की दौड-धूप की—किसी तरह 'हरिजन ब्राह्मण' की लिस्ट में नाम लिख लिया जाये—हाँ हुजूर, डोम से भी गया-गुजरा समझते हैं लोग हमारी जाति को। कण्टाहा ब्राह्मण..।

बबुआनटोली की भिम्लीय नाम है—बाबलोनियन ! गॉन दि डेज ऑफ बाबलोनियन, लद गये वे दिन जबकि बीबं बाबू तेतं राय राज करते थे, भंग घोटते थे, शतरंज खेलते थे और मोरे पियरवा गीत के बोल पर चुटकियाँ बजा-बजाकर रातें काटते थे। अब तो क्या हाकिम-हुक्काम, क्या लीडर-लीडरान, जो भी इस गाँव में आते हैं, सीधे सोलकन्ह लोगों के टोले में जाकर खड़ा होते हैं। लघुजातन्त्र का अर्थ ? जनतन्त्र कहो, प्रजातन्त्र कहो लेकिन असल में है यह लघुजातन्त्र ! गरुड़धुज कहो या गगनचुम्बी झा, दोनों का एक ही अर्थ है !

"सारे परानपुर गाँव में ही नहीं, सब-डिवीजन-भर में गरुडधुज झा की लम्बाई का एक भी आदमी नहीं।" —खरैहिया के एम. डी. ओ. साहब की कही हुई बात है।

गरुड़धुज झा आजकल बहुत व्यस्त है। सर्वे के समय उसको रात-भर छुट्टी नहीं मिलती। दिन-भर सोता है, अबेर में उठकर भाँग पीता है, और अँधेरा होते ही 'जैगड़ेस' कहकर निकल पड़ता है। काम ही ऐसा है कि दिन में नहीं किया जा सकता।

सर्वे-कचहरी में एक ही हाकिम नहीं, चपरासियों को जोड़ा जाये तो तैंतीस हाकिम हैं। तैंतीसों हाकिमों से खूब पटती है गरुड़धुज झा की ! कानूनगो साहब

के कान मे गरुडधुज ने ही मन्त्र फूँककर बतलाया—"वाइफ को मँगा लीजिए कानूनगो साहेब ! हर तरह की सुविधा तो होगी ही। फिर, इतना रुपैया घर कैसे भेजियेगा ? वाइफ आयेगी तो !" सभी हाकिम हँसकर बतियाते हैं उससे। ऑख की कनखी मारकर अपने सोने के कमरे मे ले जाते हैं। कानूनगो साहेब की स्त्री तो बिना खिलाये छोडती ही नही कभी। बिना वकालत पास किये ही गरुडधुज झा को सैकडो मुवक्किल घेरे रहते है। तब, एक बात है ! गरुडधुज झा अपने मुवक्किल से काम बनाने के पहले ही फीस ले लेता है। हाकिमो की पूजा मे जा हिस्सा मिलता है, उसका हिसाब अलग है। गरुडधुज झा बिगडा काम बनानेवाला आदमी है। दूसरी बात, गरुडधुज झा के मार्फत कोई काम बनवाना हो तो उससे सीधे बात मत कीजिए। काम खराब हो जायेगा। केयटटोली का रोशनबिस्वॉ है न, उससे कहिए। पैसावाला आदमी है। देह का रग पक्का है तो क्या हुआ ? काला-गोरा तो भगवान् ही बनाकर भेजते हैं। रोशनबिस्वॉ को बाबू कहना ही होगा। वह ऐसा आदमी नही कि बाहर मे कुछ और है, भीतर मे कुछ और। बाहर-भीतर एक-रग ! गरुडधुज झा से काम वनवाना है ता रोशनबिस्वॉ को सलाम करना होगा, पहले !

"गगनचुम्बी झा, कलकप्रूफ बिस्वॉ दोनो मेरीगोल्ड कप होल्डर हैं !"

"मेरीगोल्ड कप ?" भिम्मल मामा समयाभाव मे है। शब्दाभाव बाद मे बतायेगे !

वॉ ऑ-ऑ-ऑ !

ठाकुरबाडी के सामनेवाले मैदान मे खडी जनता ने, पण्डित सरबजीत चौबे के आदेशानुसार मिलकर गो ध्वनि की—वॉ-ऑ-ऑ-ऑ ! बीस बार। ठाकुरवाडी के पुजारीजी भी अव लीडर हो गये। आज, चार हजार सोलकन्ह के नेता हैं। लुत्तो और बीरभद्दर बाबू उनकी पीठ पर है। लुत्तो न राजनैतिक लगी लगायी है। जित्तन बाबू को गॉव से भगाने के लिए सबकुछ कर सकता है वह। पण्डित सरबजीत चौबे को उसने फुसलाकर ठीक कर लिया है—ग्राम पचायत का चुनाव होनेवाला है। आपको सरपच बना देगे, थाना सभापतिजी से कहकर।

ब्राह्मण देवता से पहले, परमादेव के भगता निरसू को भी लुत्तो ने सरपची का लोभ देकर ठीक किया था। गहवर से जाने के पहले परमादेव ने साफ साफ शब्दो मे कहा—"इस जमाने मे किसी का परतीत मत करो। ठाकुरवाडी मे रामलला की मूरत है। उसकी पूजा करनेवाले पुजारीजी को रामलला सपना देगे। पुजारीजी जो कहे, सब लोग उसी के मुताबिक काम करना। सबका भला होगा !" आग पर चलते हुए कहा था परमादेव ने !

पण्डित सरबजीत चौबे को रामलला ने सपने मे कहा है—मिसर खान्दान अब जै-पन्थी के रास्ते पर है। यानी चीटी को अब पख लगा है। इसीलिए पुरानी चक्कर परती को तोडने पर तुला हुआ है। मगल के दिन सुबह नहा धोकर ठाकुरबाडी मे बाल-बच्चा सहित जमा हो जाओ। परती तोडकर गौमाता के पेट पर छुरी चला

रहा है जित्तन !

पण्डित सरबजीत चौबे ने कहा–"बाँ-आँ-आँ ! हँसने की बात नहीं। यह हमारी भूखी गौमाता की आवाज है। दुख से छटपटाती हुई गैया विलाप कर रही है–बाँ-आँ-आँ ! यही हमारा नारा है ! जितनी बार हम लोग मिलकर यह नारा लगायेंगे, उतनी बार जित्तन के सिर पर गौहत्या का पाप सवार होगा। एक बार बाँ-आँ करन पर चार हजार गौओं की हत्या का पाप ! अस्सी हजार गौहत्या का पाप चढ़ते ही वह खुद-ब-खुद पागल हो जायेगा। लगाइए नारा–बाँ-आँ-आँ-आँ !"

"बाँ-आँ-आँ-आँ !"

"और जोर से !·· बीस बार लगाना है–बाँ !"

लुत्तो, बीरभद्दर बाबू, रोशनबिस्वाँ और गरुड़धुज झा ठाकुरबाड़ी के चबूतरे पर खड़े होकर नारा लगा रहे हैं।·· "बस, बीस बार हो गया ? अब, एक बार परबतिया दाजू के नाम पर, एक बार मुंशी जलधारी और एक बार रामपखारिन सिंघ के नाम पर आवाज दीजिए–बाँ-आँ-आँ !"

गरुड़धुज झा ने अपनी लम्बाई का फायदा उठाते हुए कहा–"ठाकुरटोने का बौबजन मुँह नहीं खोलता है। क्यों, क्या बात है ?"

"ढोल बोल रहा है, बबुआनटोली की ओर। कान लगाकर सुनिए न !" बौबजन ठाकुर ने कहा।

डिग-डिग-डिडिग !

"हाँ, ढोल ही है। किस बात की ढोलाही है ?"

"सरकारी डोंडी ?"

डिडिग-डिडिग-डिग !

–हर आम-ओ-खास को बजरिये ढोलाही के आगाह किया जाता है : तारीख तेईस अगस्त को जिला मैजिस्ट्रेट साहब परती जमीन दखल करने आ रहे हैं। परती जमीनवाले, अपना कागज-पत्तर, दलील-दस्तावेज लेकर सर्किल कर्मचारी की कचहरी मे उस दिन हाजिर रहे। डिडिग !

"ऐं ? परती जमीन सरकार दखल करेगी ? यह कानून कब बना ?"

"आ गया। नया कानून बनकर आ गया। अब बाँ-आँ करने से क्या होगा ?"

"देखा ? इसीलिए एक महीना पहले से ही, मार ट्रैक्टर से परती उधेड़कर रख दिया जित्तन बाबू ने। कितना चालाक है ?"

"परती उधेड़ देने से क्या हुआ ? कानून तो सबके लिए बराबर है।"

"टीसन पर जाकर देखो। पाँच हजार गाछ पारसल से आये हैं ! सचमुच में गुलाबबाग लगायेंगे क्या ?"

· डिग-डिग-डिडिग !

लुत्तो कहता है–"सारी बदमाशी जित्तन की है। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि

कलक्टर साहब को गुमनामी चिट्ठी लिखकर यह सब कार्रवाई करवा रहा है वह।"

"परती जमीन छिनवाकर क्या फायदा हुआ ?"

"मन की खुजली, और क्या ?"

"यह जित्तन बाबू का विजय-डंका बोल रहा है ?"

"दो चक्कर परती बचा लिया पगलू ने ! अहा-हा, बेचारे जित्तन बाबू को जाकर देखो। माथे पर हाथ धरकर बैठे हैं। बारह सौ बीघे परती पार हो गयी।"

"मारो गोली ! परती जमीन जाती है तो जाने दो ! देखना, सरकार को घाटा लगेगा। उसमें क्या उपजेगा भला ?"

"असल में इस सरकार को अकिल-बुद्धि कुछ भी नहीं है। एक पागल आदमी के कहने पर मुफ्त में परती छीन रही है।"

"अब करो खूब बाँ-आँ-आँ !"

... डिडिग !

ढोल की बोली लुत्तो को जरा भी नहीं सुहा रही है। लगता है, ढोल बजानेवाला उसकी पीठ पर लकड़ी मारकर बजा रहा है—डिडिग ! थोड़ा कसूर इसमें थाना सभापतिजी का भी है। यदि पहले ही लुत्तो को मालूम होता तो बेकार । परती क्या, सरकार धनहर जमीन भी ले ले लोगों की, इससे लुत्तो का कुछ आता जाता नहीं। लेकिन, गाँव में यह बात घर-घर फैल रही है कि जित्तन के कहने पर ही सरकार ने यह कानून बनाया है। लोग जो कहते हैं, ठीक है शायद ! कानून-कचहरी में कोई जीत नहीं सकता मिसर खानदान से, फिर वह कैसे दाग सकेगा मिसर के बेटे को ? कल एक बार थाना सभापति से जाकर पूछना होगा। यदि थोड़ी ही गुंजाइश हो तो इसमें अड़ंगा लगा दें सभापतिजी। लुत्तो जिन्दगी-भर बिना पैसा की गुलामी करेगा। सब किये-कराये पर पानी फिर रहा है। आखिर लुत्तो का भैलू ।

जित्तन बाबू के तीनों फुफेरे भाई मुँह लटकाकर बैठे हैं। सबसे बड़े भाई बलभद्दर चौधरी खेती-बारी देखते हैं। मोटी बुद्धि के आदमी हैं। मँझला बीरभद्दर मैट्रिक पास करने के बाद तम्बाकू का कारबार करता है और आजकल कांग्रेसी भी हो गया है, लुत्तो की पैरवी से सभापतिजी ने क्रियाशील सदस्य चुन लिया है; सबसे छोटा, शिवभद्दर निरक्षर भट्टाचार्य है, भैंस चराता है। जित्तन बाबू के पीछे तीनो भाई हाथ धोकर पड़े हैं। लेकिन, जाल में फँसता ही नहीं !

बलभद्दर चौधरी बोले—"तुम लोग कुछ नहीं कर सकते। देख रहे हो न, जित्तन ने दो चक्कर परती बचा ली।"

"भाई साहब, इस लुतवा साले का कोई भैलू नहीं।.. मैं सामने इसलिए नही होता हूँ कि मामी ने बाबूजी पर तीन-तीन मुकदमे किये थे। कोई बात होते ही जित्तन तुरंत मुकदमे का कागज दिखाकर कहेगा कि पुरानी दुश्मनी साध रहा है।"

"तुम्हारी भी बात पर मुझे भरोसा नहीं। गाँठ से पूरे सात सौ रुपये भी खर्च

हुए। न तो आम के बागवाले मामले मे कुछ हुआ और न परती और उसने घर बैठकर ही ऐसी चरखी चलायी कि आज गॉव मे ढोल डिगडिगा रहा है।"

शिवभद्दर बहुत देर से कुछ कहना चाहता था। अचानक उत्तेजित होकर बोला—"मेरी बात तो आप लोग मानते नही। मुझे हुकुम दीजिए, एक बात मे ।"

"तू चुप रह शिवा !" बलभद्दर चौधरी ने डॉट बतायी।

"भाई साहब, मेरे दिमाग मे एक बात आयी है। लेकिन, इसमे भी थोडा खर्च-बर्च करना पडेगा।" बीरभद्दर अपने बडे भाई के पास खिसक जाता है—"तजमनियॉ को किसी तरह काबू मे ले आये तो सब झझट माफ हो जाये।"

"अजी, कोशिश करने से क्या नही होता है ?" बलभद्दर चौधरी ने मुँह विकृत करते हुए कहा—उधर मुशी जलधारी रोज सर्वे कचहरी मे मुझसे कूट करता है—"कहिए चौधरीजी, हम लोगो को इस गॉव मे बसने दीजियेगा या नही ? सुनकर देह लहरने लगती है।"

बीरभद्दर प्रतिज्ञा करने के अन्दाज मे कहता है—"अच्छी बात है। गॉव मे बसना चाहता है। मिट्टी के नीचे बसा देगे। 'हुआ सवेरा' मे खबर छपने तो दो, जरा। आज मै कुबेर भैया को फिर चिट्ठी लिखता हूँ, पटना।'

डिग डिग डिडिग !

"अरी, काहे का ढोल बजता है ?"

"शादी का।"

"किसकी शादी ? बात पूछती हूँ तो दिल्लगी क्या करती है"

"कौन करती है दिल्लगी ! तजमनियाँ की सीथ मे सिन्दूर देकर शादी करेगे, जित्तन बाबू !"

"ऐ ? गगा सपथ ?"

"सुनो, दीदी, मैं अभी देखकर आ रहे हूँ। जित्तन बाबू का झबरा कुत्ता है न उसको गोदी मे लेकर, बग्घी से केश सवार रही थी। मेरे साथ मे जयवन्ती भी थी। जयवन्ती ने क्या कहा, जानती है ? तुम्हो कहो जयवन्ती, ऐसी बेशर्मी बोली मुझसे नही बोली जाती।"

"मैने कहा कि लैला मजलुम ठेटर मे तो लैला के कुत्ते को मजलुम प्यार करता था। तुम तो उलटी रीत कर रही हो ताजमनी ! इस पर वह बोली, ठेटर मे जो बात होती है सो गॉव-घर मे नही होती।"

"खूब खुश है तजमनियाँ आजकल, क्यो ? मैंने बहुत दिनो से देखा नही है। मेरी ही उम्र की है।"

"तुम्हारी उम्र की है ? लेकिन देखने मे तो लगती है जैसे हम लोगो के बैस की है।"

"रण्डी-पतुरिया के बैस का पता थोड़ो लगता है, ऊपर से !"

"दवा खाती होगी !"

"जरूर खाती होगी।"

"लगता है, मलारी छौंड़ी भी कोई दवा खाती है।"

"खाती होगी।"

"जो भी कहो, जित्तन बाबू मुझे बड़े अच्छे लगते हैं।"

"हाँ दीदी, हम लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ा है। बेकार क्यों दोख दूँगी। क्यों री जयवन्ती ?"

"मुझे भी अच्छे लगते हैं।"

"तब, उस दिन क्यों कह रही थी बड़े खराब आदमी हैं। अलान हैं तो फलान हैं ?"

"तू भी तो कहती थी !"

"देख, मैं तुम दोनों से उम्र में बड़ी हूँ। समझा देती हूँ। हवेली के पिछवाड़े होकर आती-जाती है। याद रखना ! जित्तन बाबू की फुलवारी का अड़हुल फूल कभी मत तोडना। हाँ !"

"क्या होगा ? बोलो, न फूल तोड़ने से क्या होगा ?"

"होगा क्या ? न मरेगी, न जायेगी, दिन-रात हाय-हाय करेगी।"

"तुमन कभी तोडा था क्या ?"

"चल भाग !"

डिडिग !

गॉव मे ढोल, हन-हन बोल !
लाख टका खोल, लाल कन्ना मोल !
लाल कन्ना डोली मे, मुँदरी राखल खोली में !
मुॅदरी जे हेराय गेल, कन्ना जे झमाय गेल !
कॉदे रे कहरिया, दौड़े रे पहरुआ··· !

–बॉंख, बॉंख !

मीत आजकल मौज मे है। रोज सुबह को दिलबहादुर ताजमनी के पास पहुँच जाता है–"कराउँ छः तपाई लाई, आपके पास आने के लिए सुबह से ही चिल्लाना शुरू कर देता है। जिद्दाज्यु ने कहा, दे आओ !"

सुधना अब माँ तारा की ठिठोली नहीं करता। उसने मन-ही-मन मनौती की थी, यदि मीत उससे दोस्ती कर ले तो माँ तारा को वह सचमुच माँ समझेगा; दिदिया के साथ वह भी कीर्तन गायेगा ! मीत ने उससे दोस्ती कर ली है। दौड-दौड़कर गेंद खेलता है उसके साथ। ताजमनी ने मीत के गले में रेशमी फीता बाँध दिया

है।

"ओ माँ ! मैं कहाँ जाऊँ ? यह तो सचमुच बोली बूझता है, रे सुधना ! देख, कैसा चिढ़ गया है। अच्छी बात, नाराज मत होओ मीत बाबू ! तुम्हारी दुलहिन मुँदरी नहीं खोयेगी ! अब तो हुआ न ! लाख रुपैया की दुलहिन· ।"

–बॉख ! बॉख !

"वह तुमको भी दौड़ने कहता है अपने साथ !" सुधना मुग्ध है मीत पर।

"मैं नहीं दौड़ती !"

गंगा काकी केयटटोली से लौट रही थी। ताजमनी के दरवाजे के पास ठिठककर खड़ी हो गयी· वाह रे सुहाग ! कुत्ते से खेलती है ! खखासकर बोली–"तजमनियाँ !"

"आओ काकी ! गाँव में किस बात की ढोलाही दी जा रही है ?"

"जान-बूझकर अनजान बनती है तू ? मैं भी तो वही बात पूछने आयी हूँ कि लोगों की परती जमीन छिनवाकर जित्तन बाबू को क्या मिला ?"

"किसने परती जमीन छिनवायी किसकी ?"

"देख तजमनियाँ, डगड़िन से पेट छिपाती है ? जिसका कुत्ता तेरी गोदी में खेलता है, उसके दिल की बात भला नहीं जानेगी तू ? मुझसे पूछती है !" ताजमनी चुप हो गयी। गंगा काकी आजकल हमेशा झगड़ने का बहाना ढूँढ़ती रहती है। गूँगे का दुश्मन नहीं। लेकिन, गंगा काकी क्यो चुप रहे ? बीरभद्दर बाबू और लुत्तो ने मिलकर कहा है–'तजमनियाँ को इतना तग करो कि उसकी ऐंठन दूर हो। जित्तन कुछ नहीं बोल सकता। उसकी हिम्मत नही· ।'

"तू मेले में तम्बू लेकर नही जायेगी तजमनियाँ ? दशहरा का मेला तो अब करीब है। इस बार तो सभी जायेंगी।"

ताजमनी के ओठ थरथराये। वह कुछ जवाब नहीं दे सकी।

"कोंहड़े को घोड़े का अण्डा समझकर से रही है तू ! किस गुमान मे है तू ? जित्तन तुमको हवेली में बहूरानी बनाकर रखेगा ? गंगाजल से मुँह धोकर रखो। मैं धरती पर तीन रेख खीचकर कहती हूँ- कभी नहीं, कभी नही·"

–बॉख, बॉख, बॉख।

"मीत !"

गंगा काकी आँगन के बाहर जाकर बोली–"जैसा मालिक वैसा कुत्ता !" ढोल की डिगडिगी पर सारा गॉव रह-रहकर डगमगा उठता है, मानो ! पुरानी परती पर जिसकी एक इंच भी जमीन नहीं, वह भी सरकार के इस कानून से क्षुब्ध है।

"जित्तन बाबू की तरह, पहले से ही लोग अपनी परती को तोड़ देते तो आज यह बात नहीं होती।"

"परती तोड़ने से क्या हुआ ? है तो आखिर परती जमीन ! जित्तन की जमीन कैसे बच सकती है ?"

"कर्मचारी अभी कह रहा था, जिस पर हल की रेफ भी पड़ गयी है उसको हम नहीं ले सकते। वह परती तो नहीं रही !"

भिम्मल मामा कहते हैं–"कौमार्य भंग ! जिस परती का कौमार्य भंग हो चुका हो, उसको नहीं लेगी सरकार !· बस, अब तो तीन ही दिन बाकी हैं। तीन दिन भी काफी हैं।"

"क्या बोले भिम्मल मामा ? कुमारी सधवा को भी··· ?"

"भैया, पागलों की बात पर क्या बहस करना ? एक-से-एक पगलैण्ट जमा हुए हैं गाँव में। भिम्मल मामा, मनमोहन बाबू और जित्तन बाबू !"

"अच्छा, एक बात तो कहो ! क्या ज्यादा पढ़ने-लिखने से आदमी पागल हो जाता है, सचमुच ?"

"ज्यादा गूड़ तीता होता है न !"

किन्तु, गॉव में ऐसे लोग भी हैं जिन्हें भिम्मल मामा की बात से प्रेरणा मिली।·· तीन दिन भी काफी हैं ! सिर्फ दिन ही नहीं, दिन-रात !

"आज ही रात से क्यों नहीं ? अच्छा, साँझ होने दो !"

साँझ हुई।

एक करवट बुद्धि किसान ने अपने हलवाहों को बुलाया। हठात्, अपने मालिक को कृपालु होते देखकर हलवाहे सतर्क हुए। उन्होंने आपस में कानाफूसी की। आँखों-ही-आँखों में बातें भी हुईं। क्या बात है ? रात में खस्सी-बकरा काटकर भोज क्यों खिला रहा है ? मामला संगीन समझ, बहाना बनाकर वे भाग खड़े हुए।

गाँव के दमनक बुद्धि किसान अपने प्रतिद्वन्द्वी के हलवाहों, चरवाहों तथा नौकर-मजदूर से बहुत प्रेम का बरताव करते हैं। घर की बात, खेती-गृहस्ती की भीतरी बातें तो ये ही बतला सकते हैं।

"क्यों घोतना, आज मालिक की बुलाहट शाम में क्यों हुई है ? सुना, खिलाने-पिलाने का भी प्रबन्ध है !"

"हाँ, कह रहे हैं कि खा-पी लो और रात-भर परती पर हल चलाओ, सिर्फ रेफ देते जाओ !"

"ऐं ? ठीक बात ! ठीक ही कहते हैं तुम्हारे मालिक !"

"कोई हरज तो नहीं ! कोई डण्ड-जुरमाना तो नहीं होगा ?"

"नहीं। मैं भी अपने हलवाहों को बुलाता हूँ।"

हींग की छौंक की तरह बात फैली गाँव में !

एक पहर रात बीतते-बीतते परती पर हल चलने लगे। सभी अपनी परती जमीन बचा रहे हैं, तोड़कर।

"ए ! चुपचाप ! कर्मचारी को मालूम न होने पाये, नहीं तो कोई बखेड़ा खड़ाकर बैठेगा। लहरों को गिनकर भी आमदनी करनेवाला आदमी ही सरकारी कर्मचारी हो सकता है ! वह पहले से ही साइकिल लेकर चक्कर काट रहा है परती पर ! दो-तीन सिपाही हैं साथ में। कुछ कहता नहीं है, किसी से। किसानों का नाम और हलों को गिनकर नोट कर लेता है।"

रोशनबिस्वाँ के साथ गरुड़धुज झा साइकिल पर, हर गिरोह के पास जाता है।

"घबराने की बात नहीं। बात तय हो गयी है। दो रुपैया फी हल !... कोई अड़गा लगा दे तो इससे ज्यादा खर्चा हो सकता है !"

"कोई बात नहीं, दो रुपैया फी हल लगे तो लगे। कोई गैरकानूनी कार्रवाई तो नहीं करेगा पीछे !"

रोशनबिस्वाँ जीभ से ओठ चाटकर मुस्कराते हुए गरुड़ झा की ओर देखता है। गरुड़ झा कहता है—"नया कानून की पूरी बात तुमको कोई बालिस्टर भी नहीं बता सकता, अभी। अन्दर में और कौन-कौन नोक्स है सो कौन जाने ! लेकिन, खाया हुआ मुँह चुप तो रहेगा। बाद में जो हो सो हो !" गरुड़धुज झा इतना बेवकूफ नही कि सारी जिम्मेदारी अपने सिर ले। असल में गरुड़धुज झा चाहता है कि इस सिलसिने में दो-चार मुकदमे हो जायें तो अच्छा ! लेकिन, कर्मचारी ने कहा—"नहीं, झा जी जिसका खायेंगे, उसके साथ नमक-हरामी नहीं करेंगे !"

कर्मचारी इतना कच्चा नहीं कि अपना पोल खोल दे। जब तक परती छीनी नही गयी है बजाप्ता, वह कोई कानूनी कैसे कर सकता है ! लेकिन, इसी को कहते हैं लहरों को गिनकर भी चाँदी काटना ! एक हजार रुपैया तो सिर्फ छित्तन बाबू दे रहे हैं जो रमईवाले बाबुओं का ट्रैक्टर भाडा पर लाने गये हैं। नये कानून की लहरे आती हैं, जाती हैं—चाँदी के रुपये मछलियों की तरह छटपटाते हैं ! कागज के नोट पंछियों की तरह फड़फड़ाकर उडते हैं ! ब्रह्मपिशाचवाली बात झूठ नहीं।

ग्राम पुस्तकालय के पठनागार में भिम्मलीय ठहाका लगाते हुए कहते हैं भिम्मल मामा—"परती पर जाकर देवगणों को देखो ! हल जोत रहे हैं। हा-हा-हा ! पोप द फोर्थ—चौबे भी हल मँगनी करके गया है 'रामलला' की परती बचाने ! बाँ आँ-आँ ! सहुआइन को जब किसी ने हल मँगनी नहीं दिया तो उसने अपनी तीनों जवान बेवा बेटियों को ललकारकर कहा चल री नीत्तिया-रीतिया-सीतिया ! ले एक-एक कुदाल हाथ मे। ई नीलगाय-जैसी देह किस दिन काम आयेगी ? सिर्फ देवगण ही नही, देवियाँ भी... । हा-हा-हा ! बोलो—बाँ-आँ-आँ !"

सुरपति भी ढेउ को गिनकर ऊपरी मुनाफा कर रहा है—यहाँ तो कहानियाँ बन रही हैं। यहाँ की औरतें रोते समय भी पद जोड़कर, गा-गाकर रोती हैं ! पद्यमय रुदन ! अभी उस दिन एक औरत रो रही थी, सुरपति ने नोटकर लिया है—बाबा हो बाबा, सेमरी 'क फूल फूलल देखि भ्रमाउलऽ-ऽ-भरम गमउल-ऽ-ऽ-बेटिया बिहउल-ऽ-ऽ-नदि में भँसउल-ऽ-ऽ ! रोई-रोई बेटिया गँमावति... । सेमल के फूल की लाली देखकर भूले हुए बाप को कोस रही है उसकी बेटी ! पतिदेव ने लाठी से पीट की चमड़ी उधेड़ दी है। वह अपने बाप को गुहारकर कहती है—सेमल के फल अब फरफराकर फट गये हैं। मन की सारी लालसा—मनकेर ममोला मनहि में रहल-ऽ-ऽ-सेमरिक फलवा सूखि के फुटाईल-सेमरिक रूई उड़त—सेमल की रूई की

तरह उड़ती हुई मन की आशाएँ !

भवेश ने कहा—"आप तो चाहेंगे कि उसका पति उसको रोज इसी तरह प-ति-प-ति-पी··· !" तुतलाहट को समेटकर वह मुस्कराया।

"और तुम चाहोगे कि सहुआइन की तीनों लड़कियाँ रोज रात में कुदाल लेकर परती कोड़ने को निकलें ?"

"ताजमनीजी कह रही थीं, सुन्नरिनैका की गीत-कथा में दन्ताराकस ने इसी तरह धरती को खोदा था। किसी दिन रघ्घू रामायनी को बुलाइए न !"

"टेप रेकार्डर आ रहा है।"

भवेश और सुरपति की मुस्कराहट एक ही मिकदार में दोनों के ओठों पर खिली।

कॉमरेड मकबूल और लुत्तो में राह चलते झगड़ा हो गया।

मकबूल कम्युनिस्ट पार्टी का कनफर्म्ड मेम्बर है, परानपुर किसान कौंसिल का जनरल सेक्रेटरी है। किन्तु, इस सर्वे के समय उसकी पार्टी के सभी सिम्पथाइजर किसान लुत्तो के साथ हो गये। इसलिए कामरेड मकबूल के मन में लुत्तो से लड़ने के लिए हमेशा द्वन्द्व चलता रहता है। यदि वह पार्टी की जवाबदेह जगह पर नहीं होता तो आज फिर· ! मनमोहन बाबू के यहाँ परामर्श लेने जाता है लुत्तो।

गाँव में, सबसे पहले मनमोहन बाबू ने ही कम्युनिस्ट पार्टी की लता लाकर लगायी, पटना शहर से। आज भी उन्हें बहुत लोग 'आदि-कम्युनिस्ट' कहते हैं। हाँ, भिम्मलीय नाम··· ! तीन साल में गाँव के तीन ही लड़कों को कम्युनिस्ट पार्टी के प्रोग्राम से प्रभावित कर सके, जिसमें सबसे पहला है पीताम्बर अर्थात् मकबूल ! इसके बाद, संख्या में क्रमशः वृद्धि होती गयी। बालिग और नाबालिग लड़कों का एक छोटा गिरोह कम्युनिस्ट पार्टी के नाम पर मर-मिटने को तैयार मिलेगा, आज।·· मकबूल की जवाबदेही बढ़ गयी है। वही अब इस गिरोह का एकमात्र पुराना कॉमरेड है।·· खूब मन मोहना जानते थे मनमोहन बाबू। चुन-चुनकर हर टोले के एक-दो लड़कों के सिर पर हाथ फेरा। जिसके सिर पर हाथ फेरें मनमोहन बाबू, वह न तो घर में रहेगा और न घाट पर जायेगा, सीधे मनमोहन बाबू के बैठकखाने में ! मनमोहन बाबू के बनाये हुए कॉमरेड हैं सभी। लेकिन, अब खुद मनमोहन बाबू गैर-कॉमरेड हो गये हैं।··· मनमोहन बाबू अब कम्युनिस्ट पार्टी में नहीं। —बात ? बात क्या होगी ? स्तालिन की मृत्यु ने मनमोहन बाबू के मन को इतना मार दिया कि उन्होंने पार्टी के प्रोग्रामों में दिलचस्पी लेनी बन्द कर दी। जिले तथा प्रान्त के कॉमरेडों ने बहुत समझाया-बुझाया। मनमोहन बाबू ने साफ-साफ जवाब दिया—नहीं, कॉमरेड नहीं ! तवारिस स्तालिन की मृत्यु के बाद अब कम्युनिज्म की बातें करना फिजूल है। कम्युनिज्म गॉन विद कॉमरेड स्तालिन।·· पार्टी के लोग कितने दिनों तक बरदाश्त करते ? ठीक काम करने का समय आया था कि लद्दू घोड़े की तरह

बैठ गये। गाँव के किसी भी कम्युनिस्ट नौजवान से पूछिए, एक ही जवाब देगा—अरे भाई, मौत पर किसका बस है ! स्तालिन मर गया। बड़ा बुरा हुआ। एकाध दिन शोकसभा करके सिनथिसिस करो मामले को। सो नहीं, महीनों स्तालिन की तस्वीर सामने रखकर रो रहे हैं तो रो रहे हैं। जब उनकी हरकत से पार्टी के उसूलों की सीमा टूटने लगी तो एक्शन कमेटी ने बजाप्ता मीटिंग करके पार्टी से निकाल दिया।

मनमोहन बाबू की जगह पर साथी मकबूल यूनिट का सेक्रेटरी हुआ है।

कनफर्म्ड है··· पैतृक नाम पीताम्बर झा को अनकन्फर्म्ड करवाकर नया नाम रखा है—मकबूल !

नुकीले नाम और नुकीली फ्रेंचकट दाढ़ी ने उसके ब्राह्मणत्व को खोंचकर मीलों दूर भगा दिया है, उसकी बनावट से !··· भिम्मल मामा के शब्दों में, डुपलिक्युलेट है। दो बार फेल करने के बाद मैट्रिक पास करनेवालों को डुपलिक्युलेट कहते हैं। कॉलेज में नाम लिखाने की बात होते-होते भी नहीं हो सकी। गौना के बाद तुरत भागलपुर कॉलेज जानेवाले लड़कों को देख चुका था वह। कोई फायदा नहीं।··· स्वाध्याय करके ही उसने बहुत-कुछ किया है। मनमोहन बाबू का पढ़ाया हुआ डाइलेक्टिकल उसकी बही में नोट है, आज भी !··· उर्दू पढ़ना सीख रहा है। सिर्फ उच्चारण के समय खाँसी-उकासी करने लगता है। प्रत्येक ज को ज़, हर क को क़, ख को ख़ कहता है !

लुत्तो को मनमोहन बाबू के बैठकखाने में जाते देखा, मकबूल ने।—जरूर जित्तन बाबू के खिलाफ कुछ कहने गया है लुतवा ! नीम की छाँह में, सहुआइन के दरवाजे के पास टहलता रहा मकबूल ! कॉमरेड मकबूल जानता है, और कुछ हों या नहीं हों, जित्तन बाबू हमसफर तो जरूर हैं। 'पीपल्स एज' के रेगुलर ग्राहक हैं। 'जनयुग' के चेतगंज-किसान-फण्ड में गुमनाम मनीआर्डर भेजा है जित्तन बाबू ने। पोस्टमास्टर के लड़के कॉमरेड पंचू की रिपोर्ट है। लुत्तो अपनी खानदानी दुश्मनी पर राजनीतिक रंग चढ़ा रहा है।

लुत्तो की प्रतीक्षा करते-करते कॉमरेड मकबूल मनमोहन बाबू पर क्रोधित हो उठा—मेनसेविक मनमोहन बाबू।

मनमोहन बाबू के बैठकखाने से बाहर निकलते ही लुत्तो की कॉमरेड मकबूल से भेंट हो गयी। मकबूल ने पूछा—"जंग लगी तलवार लाने गये थे क्या लुत्तो ?"

लुत्तो ने अपनी धारवाली बुद्धि से कॉमरेड मकबूल की नुकीली दाढ़ी छाँटने की सोची। कॉमरेड मकबूल उसकी हर बात पर हँसिया चलाकर हथौड़ा बैठाता गया। आखिर में बात यहाँ तक बढ़ी कि कॉमरेड मकबूल को मजबूर होकर कहना पड़ा—"देख लुतवा ! मैं कम्युनिस्ट हूँ, इसका मतलब यह नहीं कि मेरा जन्म रूस में हुआ है ! इसी गाँव में जन्म हुआ है मेरा !··· समझे ! मेरे सामने फुटफुटी नहीं !"

जगदम्बी झा के मँझले लड़के पीताम्बर के हाथ दर्जनों बार पिट चुका है लुत्तो, बचपन से ही !··· दस साल पहले, फुटबॉल मैच खेलते-खेलते जो लड़ाई हुई थी, लुत्तो ने उसमें बदला लेने की कोशिश की थी। लेकिन, उस बार भी···।

दाढ़ी और नाम रखने के बाद पहली बार मुकाबला हुआ है, मकबूल से। आधी बात निगलकर लुत्तो ने अपनी राह लगने की चेष्टा की। मकबूल की आँखें एक बार घुड़क उठी थीं, हाथ की तलहथी भी खुजलायी थी। लेकिन, कुछ सोचकर वह दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ चुप रहा।

लुत्तो खून का घूँट पीकर रह गया—बड़ा कौमलिस्ट बना है। तीनों भाई मिलकर उधर गरीबों का गला घोट रहे हैं। इधर मियाँ साहब बनकर किसान-मजदूर की लीडरी करना चाहता है मकबूल। नौकरों को बड़ा भाई मारता है तो कौमलिस्ट भाई चुप नहीं रहता। कहता है, और मारिए साले को ! बड़ा काबिल हो गया है ! बात का जवाब उलटाकर मुँह पर देता है ! मारिए साले को !·· लुत्तो अच्छी तरह जानता है। सभी बाभन-छतरी-भूमिहार बाभन एक तरफ हैं। इसका भी कारण है। लुत्तो, कुर्मीटोली से लेकर खवासटोली तक का अकेला लीडर है। उसने गाँव में बन्दिश की है, नौकरी करने में हर्ज नहीं। करो नौकरी, लेकिन शान से करो। रविवार को काम करने मत जाओ। गाली दे तो पहले चेता दो। दूसरी बार गाली दे तो कहो कि गाली का जवाब गाली से देंगे। जो गाली सहेगा, उसको जुरमाना देना होगा !·

दाढ़ी रखकर, नाम बदलकर मकबूल ने परानपुर के मुसलमानटोले में काम शुरू किया। परानपुर के चार सौ गाड़ीवानों में साढ़े तीन सौ उसकी पार्टी में आ गये, तुरत ! मीर समसुद्दीन ने कांग्रेस में जाने के पहले मकबूल को वचन दिया था—"ओझाजी ! खुदा कसम· हम आपका साथ देंगे !" मकबूल दिन-रात मुसलमान-टोली में रहता। तीन सौ गाड़ीवान, सिर्फ मुसलमानटोली में ही रहते हैं। फारबिसगंज बाजार से जूट-ढुलाई का भाड़ा लेकर जिस दिन लौटते गाड़ीवान, यूनियन के नाम पर रुपैया, अठन्नी, चवन्नी और दुअन्नियों के ढेर लग जाते मकबूल के सामने !

दो-दो बार, इस गाँव में अपनी पार्टी के भारी-भरकम लीडरों को बुलाया है मकबूल ने। एक बार दक्खिन के प्रसिद्ध कॉमरेड घोडपण्डेजी और दूसरी बार कलकत्ता के साथी बनर्जी को इस गाँव में मँगाया, मकबूल ने। घोडपडे साहब के भाषण की नकल मलारी आज भी करती है, कभी-कभी—'हमेरे कमरेड : पुरडिंयं : आँड़े वास्तं, पराँडपुरम गाड़ीवाँड़ सघ !'

मकबूल पर मुसलमान गाडीवानों का बडा एतबार था। मकबूल उन लोगो के घर मुरगी का अण्डा खाकर दिखला देता, बधना से पानी ढालकर पीता। उनके घर की बनी हुई रोटी भी खाता। मकबूल के घरवाले क्या कहेंगे ? राजनीतिक संगठन करनेवाले को कोई दोष नहीं लगता, यह बात गाँव का छोटा-सा बच्चा भी जानता है।··· बड़ा क्रान्तिकारी काम किया मकबूल ने ! लेकिन, महाक्रान्तिकारी साबित हुआ मीर समसुद्दीन !

एक जुम्मा को, नमाज पढ़ने के बाद समसुद्दीन मीर ने नमाजियों को कुरान की कसम खिलायी और बताया—"मैं सभी मुसलमानों की ओर से कांग्रेस कमेटी में जा रहा हूँ। तुम लोगों की क्या राय है ?"

एक बूढ़े गाड़ीवान ने कहा–"मकबूल बाबू से पूछकर कहेंगे, हम लोग !"

"मकबूल कौन होता है ?" मीर समसुद्दीन ने कहा–"गाँव का मीर मैं हूँ या मकबूल ? यदि मकबूल से पूछकर ही चलना है तो मकबूल से ही कहो, अगले जुम्मा से नमाज पढ़ायेगा !"

मकबूल के घरवालों को खबर मिली कि मुसलमानटोली के लोग मकबूल को मुसलमान बनाना चाहते हैं। मकबूल ने अपने भाइयों को समझाकर कहा–"रामलला का मन्दिर हो या बिसमिल्ला की मसजिद, कम्युनिस्ट पार्टीवाले उसमें पैर नहीं दे सकते ! अफीम की दूकान समझता हूँ, मैं··· !" इसके बाद से सभी गाड़ीवानों को मीर समसुद्दीन की बात पर पूरा-पूरा यकीन हो गया, काम निकालने के लिए दाढ़ी रखी थी मकबूल ने। मुसलमानों को अफीमची कहता है !

गाडीवान यूनियन के सिर्फ चार हिन्दू गाड़ीवानों के नाम पर आज भी मकबूल गाड़ीवानों के हित की बात करता है। कौन सुनता है ?

सर्वे के समय मकबूल के बड़े भाइयों ने, खासकर नीलाम्बर झा ने ऐसी-ऐसी बेईमानी की कि लोग सुनकर दाँतों तले जीभ दबाते हैं। मकबूल क्या करे ? बड़ा भाई कुछ बोलने दे, तब तो !

सोशलिस्ट पार्टी के जयदेव से ज्यादे घाटे में है, मकबूल ! फिर भी उसका दाढ़ीवाला चेहरा सबसे ज्यादा चमकता है।

डी. डी. टी. ने जयदेव बाबू को सलाह दी–"जित्तन बाबू के विरुद्ध अभी कुछ कमिट मत कीजिए। आइ थिंक ही'ज़ मोर नियर टु अस !"

"सच ?" जयदेव बाबू ने प्रफुल्लित होकर कहा–"लेकिन, मकबूल कह रहा था उस दिन ।"

"नही, नही। जित्तन बाबू फेलो ट्रेवलर नहीं। मैं आज ही उनसे मिलने जाऊँगा। रामनिहोरा के पहले ही हम लोग कण्टैक्ट कर लें जित्तन बाबू से।"

डी. डी. टी. !

कॉमरेड दीनदयाल तिवारी को अपना डी. डी. टी. नाम बहुत पसन्द है। नाम के अनुसार काम बहुत कम लोग कर पाते है। कॉमरेड रामनिहोरादास के पत्ते को तीन महीने तक प्रान्तीय पार्टी के दफ्तर में बैठकर उसने जिस तरह काटा है, वह डी. डी. टी. नाम के गुण से ही सम्भव हुआ है। रामनिहोरा के एक-एक साथी को उसने पार्टी से एक्सपेल करवाया है। डी. डी. टी. पर जयदेव बाबू को बहुत भरोसा है।

"हमारे सर्किल इंचार्ज कॉमरेड जयदेवसिंह ने आपको एक गुप्त संवाद भेजा है।" डी. डी. टी. ने कहा।

"प्रकट कीजिए !" जित्तन बाबू ने मुस्कराकर जवाब दिया।

"आपके साथ किये गये व्यवहार के लिए, परानपुर गाँव-निवासी की हैसियत से कॉमरेड जयदेवजी लज्जित एवं दुखित हैं। लुत्तो की गुण्डई का प्रतिकार करना

आवश्यक है। दिन-दिन उसकी बदमाशी बढ़ती जाती है। उन्होंने आपके नाम, मेरे मुँह से विशेष संवाद भेजा है–जित्तन बाबू यदि चाहें तो इसके प्रतिकार की व्यवस्था की जा सकती है।"

'जित्तन बाबू यदि चाहें' का अर्थ समझते हैं जित्तन बाबू ! उन्होंने दीनदयाल तिवारी उर्फ दीनू, एलियास डी. डी. टी. की उचित खातिर की और जवाब दिया–"जयदेव बाबू-जैसे भद्रजनों की भद्रमानुसी के भरोसे ही एक दशक बाद मैं अपने गाँव लौट आया हूँ। किन्तु, गुण्डई का प्रतिकार बड़ा कठिन व्यापार है। जयदेव बाबू की नेक नजर में मैं भला आदमी हूँ। ·· लुत्तो बाबू मुझे गुण्डा समझते हैं और मेरी गुण्डई का प्रतिकार कर रहे हैं।"

डी. डी. टी. को जित्तन बाबू की भाषा की गुदगुदी लगी, भिम्मल मामा के गढ़े हुए शब्दों का प्रयोग करते हैं ! भद्रमानुसी ? अचरज में डालनेवाली दूसरी बात · लुत्तो बाबू। व्यंग्य से नहीं, बहुत सीरियसली कहते हैं··· लुत्तो बाबू !

"लेकिन, गाँव में कुर्मीटोली और खवासटोली के लोगों को छोड़कर, सभी उसे लुतवा ही कहते हैं !"

"आप मेरे नाम के साथ बाबू क्यों लगाते हैं ? मुझे तो सोलकन्ह टोली के लोग जित्तना ही कहते हैं !"

इसीलिए कोई जित्तन बाबू के पास नहीं आता ! कौन-सी बात नॉनसीरियसली बोलते हैं, पकड़ना मुश्किल है। लोग, बात का गलत अर्थ लगाकर, बेबात-की-बात फैलाते हैं। कामरेड डी. डी. टी. ने पॉलिटिकल थर्मामीटर लगाया–"कुछ लोग आपको कम्युनिस्ट पार्टी का सिम्पथाइजर समझते हैं !"

"कुछ लोगों की इस अज्ञानता से कम्युनिस्ट पार्टी बदनाम हो रही है। मुझे दुख है। मेरा क्या दोष है ?"

"मेरा खयाल है, एक बार जिसको पॉलिटिक्स का चस्का लग चुका है, वह तटस्थ होकर नहीं रह सकता। कम-से-कम मौजूदा हालत में ! ·· "

जित्तन बाबू की भेद-भरी मुस्कराहट देखकर डी. डी. टी. अप्रतिभ हुआ। उसने अन्तिम अस्त्र का प्रयोग किया–"जयदेवजी कह रहे थे, जित्तन बाबू से चन्दा की बात भी पूछते आइएगा।"

"कल ही तो एक सज्जन सोशलिस्ट पार्टी के लिए इक्यावन रुपये ले गये हैं।"

"सोशलिस्ट पार्टी के लिए ? क्या नाम है उसका ? कैसा है देखने में ?"

"रामनिहोरादास।"

"वह सोशलिस्ट नहीं। उसको पार्टी में निकाल दिया गया है।"

"लेकिन, जिसको पॉलिटिक्स का चस्का लग गया है, उसको पार्टी से निष्कासित करने पर भी··· । और, पार्टी से निकलकर भी सोशलिस्ट रह सकता है आदमी !"

बाबूटोला के नये नौजवानों को लुत्तो रोज राजनीतिक लंगी लगाकर फुसला आता है। मकबूल से झगड़ने के बाद लुत्तो छत्रीटोली के प्रेमकुमार दीवान के पास गया।

मकबूल और प्रेमकुमार दीवाना में साँप और नेवले का बैर है !—प्रेमकुमार दीवाना कल ही लौटा है, गाँव।

दीवानाजी का असल नाम मंगनीसिंह है; गाँव का एकमात्र नाटककार है। आजकल उसने अपने को प्रेमकुमार दीवाना के नाम से मशहूर किया है। कई शहरों का चक्कर काटकर लौटा है। प्रसिद्ध साहित्यिकों से सम्पर्क स्थापित करने के बाद उसका आत्मविश्वास बढ़ा है—हर जगह गुट्टबाजी है। बिना गुट्ट बनाये कुछ नहीं हो सकता !

लुत्तो खुश है। प्रेमकुमार दीवाना ने कहा है, "यदि सोलकन्हटोलीवाले अलग नाटक-मण्डली खोलें तो मैं आप लोगों के गुट्ट में आ जाऊँ।"

बीरभद्दर बाबू ने पूछा··· "कौन प्रेमकुमार ?"

"सन्तोखी सिंघ का बेटा मंगनीसिंह। नाटक-डिरामा, दोहा-चौपाई खूब बनाता है !"

"मँगना ? लेकिन, वह बड़ा लुच्चा है।"

"लुच्चा है तो हमारा और आपका क्या लेगा ? कह रहा था, जित्तन के खिलाफ एक डिरामा लिखेंगे।··· जित्तन के बाप का गाना छापी होकर बिका था। इसके नाम से डिरामा-नौटंकी लिखवाकर बाँट करेगे। देख लीजिएगा !· मकबूलवा को जोकर बनवाऊँगा ! दाढ़ीवाला !"

हाकिमों का मेला लग गया है मानो !

जिला मैजिस्ट्रेट के साथ आये हैं—लैण्ड एक्विजीशन ऑफिसर, रेवेन्यु ऑफिसर, जिला लैण्ड सर्वे सेटलमेण्ट ऑफिसर, फारेस्ट ऑफिसर, लैण्ड रिक्लेमेशन ऑफिसर, पब्लिसिटी ऑफिसर, सुपरिण्टेण्डेण्ट ऑफ पुलिस, उनके अलग-अलग छोटे ऑफिसर ! सेक्रेटरी, पी. ए., रीडर, स्टेनो, अर्दली, चपरासी ! थानेदार साहब अपने दल-बल के साथ पहले से ही आकर, प्रतीक्षा कर रहे थे।

"पॉच गाड़ी हाकिमों का चालान उतरा है।"

दि ब्राहमिन एच. ई. स्कूल के हेडमास्टर साहब का मुँह सूखकर गमबॉटल की रबर की जीभी-जैसा हो गया है !··कलक्टर साहब बहुत नाराज हैं इस स्कूल से। पिछले दो साल से लगातार रिजल्ट हुआ है—नील ! जीरो !

हेडमास्टर ने तीन-चार लड़कों को तैनात कर दिया है—हाकिम हवेली से निकलकर किधर जाते हैं, दौड़कर खबर दे जाना ?

"सर्र !"

"ऐंय ! आ रहे हैं। ऐंय ? सिस—कौन लड़का झाँक रहा है ? ईडियट !"

"नहीं सर ! वहाँ चाय-पानी का प्रबन्ध हो रहा है। अभी देर है।"

हेडमास्टर साहब की धुकधुकी तेज होकर धीरे-धीरे शान्त हो रही थी कि उनकी नजर बरामदे पर मुस्कराते हुए एसिस्टेण्ट हेडमास्टर पर पड़ी। दिल की धड़कन

फिर तेज हो गयी—साँपवाले घर में वास कर रहे हैं हेडमास्टर साहब, और क्या ?

एसिस्टेण्ट हेडमास्टर प्रसन्न हैं।

इस बार उन्होंने लिखकर रट लिया है, जो कहना है उन्हें। अंग्रेजी में—योर ऑनर, व्हाट एन एस-एसिस्टेण्ट हेडमास्टर केन डू एलोन व्हेन दि फेट ऑफ स्कूलडूम्ड बाइ · नहीं, नहीं· दि हेडमास्टर हिमसेल्फ इज ए बिग साइफर··· !

लिखा हुआ जवाब फिर एक बार पॉकेट से निकालकर पढ़ लेते हैं।

लैण्ड रिक्लेमेशन ऑफिसर साहब ने पूछा—"अच्छी बात ! अब बतलाइये कि आपको कितनी परती जमीन पर उज्रदारी करनी है ?"

जित्तन बाबू ने रिक्लेमेशन ऑफिसर की मुद्रा परखी। बोले—"मुझे कोई उज्रदारी नही करनी है।"

"तो, आपने लिखा था क्यों · ?"

फॉरेस्ट ऑफिसर साहब चुप क्यों रह सके—"सुना है, सेमलबाग के लिए आप पागल हो गये हैं !"

हाकिमों के ओठों पर मुस्कराहट खेल गयी। जित्तन बाबू गम्भीर हो गये। फॉरेस्ट ऑफिसर ने स्टेनो के फाइल से एक कागज निकालकर कहा—"यही है उज्रदारीवाला कागज !"

"उज्रदारी नहीं, उसे स्मरण-पत्र कहिए।" जित्तन बाबू ने पाइप सुलगाते हुए कहा।

मिस्टर वर्मा, फॉरेस्ट ऑफिसर साहब हिन्दी मे टाइप किये हुए स्मरण-पत्र को पढ रहे हैं। अन्दर-ही-अन्दर राष्ट्रभाषा होनेवाली भाषा की कड़वाहट का अनुभव कर रहे है—'मैं नही जानता, पंचवर्षीय परिकल्पना के परिकल्पको को पूर्णिया की पुरानी परती ने आकर्षित किया है अथवा नही। मिट्टी की परीक्षा-निरीक्षा करके मुझे सन्तोष हुआ है। मेरे विश्वास को बल मिला है। इस परती पर—यत्र तत्र-सर्वत्र—एक विशेष प्रकार की मिट्टी है जिसमें जंगल लगाना सम्भव है ।'

लैण्ड रिक्लेमेशन ऑफिसर ने पूछा—"आपको मालूम है मिस्टर, एट लीस्ट हण्ड्रेड टाइम्स इस परती के सॉयल्स का केमिकल एनालिसिस किया जा चुका है।"

जित्तन बाबू मुस्कराये—"देखिए हाकिम साहब (एग्रिकल्चर पोटेंशियैलिटीज (assess) या एग्रि-इर्रिगेशनल पोटेंशियैलिटीज की स्टडी मेरे बूते की बात नही। मेरे पास कोई केमिकल लेबोरेटरी नहीं जो मैं, एनालिसिस आफ सिमेण्ट, एग्रिगेट्स, लाइम स्टोन्स, पोजोलोना ककर, हाइड्रालिक्स लाइम, सॉयल्स एण्ड रिवर वाटर की बातें करूँ। सिल्ट इनवेस्टिगेशन अथवा ·· ।"

रिक्लेमेशन ऑफिसर कुछ आतंकित हुए। जित्तन बाबू की कंकड़दार खिचडी भाषा का प्रभाव हाकिमों पर शीघ्र ही पडा। फॉरेस्ट ऑफिसर ने कहा—"देखिए, तीन-तीन केमिकल सेक्सन की रीपोर्ट है।"

अब जिला मैजिस्ट्रेट ने बातचीत का सूत्र अपने हाथ मे लिया—"आपने स्मरण-पत्र

क्यो दिया था ?"

"मेरा काम हो चुका है। स्मरण-पत्र को आप रद्दी के टोकरे मे फेक सकते हैं।"

"मैं नही समझा।"

"करीब डेढ सौ एकड परती को तोडकर मैंने जगल लगाने की बात सोची है। कल से शुरू करूँगा।"

"जगल ? इस परती पर ?" फॉरेस्ट ऑफिसर ने कहा–"आपके पास फाजिल पैसा है। आप जो चाहे, कर मकते हैं। लेकिन, अच्छा होता कि आप नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट खरीदकर थोडा देश का भी उपकार करते।"

"वन-महोत्सव का महा आयोजन करके हमारे मन्त्रियो ने जितने वृक्ष रोपे, उनमे मे नब्बे प्रतिशत सूख गये है। आप अपने कटु अनुभव से ही ऐसा कह रहे है, मुझे मालूम है।" जित्तन बाबू ने अपनी फाइल खोलकर नक्शा निकाला।

डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट साहब ने अपना चश्मा उतारकर साफ किया।

"देखिए, यह है दुलारीदाय की धारा। इसके पूर्वी महार पर जो यह वृत्त है, यही है वह मेमलबाग। इसके बाद, उत्तर-पूरब की ओर परती पर ऐसे-ऐसे पॉच चक्र बने हैं।"

"इन चक्रो का क्या मतलब ?"

"मतलब, मैने अपने मन से निकाला है। और, यह आवश्यक नही कि मेरे मतलब म सभी सहमत हो।'

"आप बतलाइए।"

"मुझे ऐसा लगा है, कभी हमारे पूर्वजो ने इस परती की मिट्टी की परीक्षा की होगी। जिन चक्रो को मैने जोता है, उनकी मिट्टी सेमलबाग की मिट्टी से मिलती है। सेमलबाग मे जो घास है, वही इन चक्रो मे भी उगती है। बनलहसन नाम का एक फूल मेमलबाग की जमीन के बाद, इन्ही चक्रो मे जन्मता और फूलता है। मुझे विश्वास है, मेरा एक भी पौधा नही सूखेगा।"

हाकिमो ने एक दूसरे का मुँह देखा। [illegible] मैजिस्ट्रेट साहब दिलचस्पी ले रहे है, नही तो फॉरेस्ट ऑफिसर तुरत एक ऑफिशियल दिल्लगी कर सकते थे।

जित्तन बाबू ने अपना वक्तव्य समाप्त करके दराज से भोजपत्र निकाला।

भिम्मल मामा ने खडाम खटखटाते हुए प्रवेश किया–"हाकिमो को करबद्ध वन्दना तथा भैरव नमस्कार।"

भोजपत्र पर अकित चक्रो को देखकर आश्चर्यित हुए मामा। बहुमूल्य प्राप्ति!

कहाँ से प्राप्त किया जित्तन ने ? इसी के लिए भिम्मल युगो से पागल बना हुआ है। उसके घर मे भी एक भोजपत्र है। पॉच चक्रो के आस-पास बीजगणित की दो पक्तियॉ लिखी हुई है–तिरहुताक्षर मे। असली इन्द्रजाल पढकर भी जिसका कोई अर्थ नही प्राप्त किया जा सकता है। गुप्त धन, मिट्टी के नीचे गडे जवाहरातो के घडे भी हो सकते है। पचग्रह का सकेत भी हो सकता है।

थाना के दारोगा साहब अंग्रेजी में बोले—"प्लीज ! टर्न हिम आउट जित्तन बाबू !... "

"दारोगा साहब, मैं टर्नेबल नहीं।"

जिला मैजिस्ट्रेट ने भोजपत्र पर से निगाह हटाकर भिम्मल मामा को देखा, "क्या चाहिए ?"

"ये मेरे एक श्रद्धेय ग्रामवासी हैं।... क्यों, इन्होंने आपका क्या बिगाड़ा ? क्यों भिम्मल मामा, आपने दारोगा साहब के साथ कुछ बुरा व्यवहार तो नहीं किया ?"

दारोगा साहब ने अपनी मद्धिम आवाज में कहा—"सर, ही इज मैड के.. ।"

"दारोगा साहब !" जित्तन बाबू की आवाज जरा तीव्र हुई—"यह जुल्म है ! एक भले-चंगे आदमी को आप पागल कह रहे हैं।... गाँव के लोगों की बात आप मत कीजिए। गाँववाले मुझे भी पगलू जित्तन कहते हैं। और यदि आप समझते हैं कि हम पागल हैं तो कृपया हम लोगों का केस रेफर कर दिया जाये। अभी इतने होश में हूँ कि पागलखाने में रहने का खर्च जुटा सकता हूँ।"

भिम्मल मामा ने जित्तन बाबू को समझाया—"जित्तन, तुम अपना काम करो। एस. पी. साहब हैं, अपने मातहत की बात सुन रहे हैं।. इन चक्रों के बारे में कुछ जानते हो तो श्रीमान् जिलाधीश से कहो !"

"आप जानते हैं ?"

"तरह-तरह के मत हैं। यह भी आनुमानिक कथा हो सकती हैं।.. कभी इस भूमि पर बिरजा-होम किया गया था। बिरजा-होम की परिभाषा मैं पीछे दूँगा, पहले सुन लिया जाये। पंचभूत-शुद्धि के लिए इस कश्चप पृष्ठ-सदृश भूमि पर पंचकोष का निर्माण हुआ। पंचकोष ! अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय !" जिला मैजिस्ट्रेट ने घड़ी देखकर कहा—"अच्छी बात ! एक चक्र में आप बाग लगा रहे हैं। चार चक्रों की ममता छोड़िए !.. आपका बाग लग गया तो हम भी सरकार से सिफारिश करेंगे !"

सभी हाकिमो ने अपनी-अपनी घड़ियों को देखा।

फॉरेस्ट ऑफिसर ने जित्तन बाबू पर एक घुडकीली किन्तु डरी हुई निगाह डाली।

दि ब्राह्मीन हाई इंगलिश स्कूल के हेडमास्टर साहब प्रसन्न हैं—कलक्टर साहब को जित्तन बाबू ने इस तरह फँसाया कि डेढ़ घण्टे के बाद कोठी से निकली हाकिमों की गाड़ी, सीधे परती की ओर ! परती पर पाँच मिनट रुके हाकिम !

"भाई, छीनना का माने लाठी-डण्डा से छीनना नहीं है। कलम का जमाना है। कर्मचारी के कागज पर दस्तखत कर दिया हो गया। रुकमे की क्या जरूरत ?"

हेडमास्टर के साथ सभी मास्टर खुश हैं, एक एसिस्टेण्ट हेडमास्टर को छोडकर। इस बार उन्होंने लिखकर रट लिया था—योर ऑनर.. !

"जो भी कहिए, आदमी काबिल है जित्तन बाबू।" हेडमास्टर साहब का सूखा

हुआ मुँह, पान-जरदा से जरा हरिया गया !

वीरभद्दर बाबू और लुत्तो जहाँ उपस्थित रहें, वहाँ जित्तन बाबू की तारीफ नहीं चल सकती। लुत्तो ने बी. ए., बी. टी. हेडमास्टर को भी राजनीतिक लंगी लगायी—"ऐसा मत सोचिए हेडमास्साबजी ! जित्तन ने आपके स्कूल के बारे में कलक्टर साहब से कहा, इस स्कूल के मास्टर साहब लडको के दिमाग को चाटकर साफ कर देते हैं ! और, आपके बारे मे तो कह रहे थे कि ।"

"अरे पागल मतिच्छन्न आदमी की बात सुनकर क्या कीजिएगा मास्टर साहब !" बीरभद्दर बाबू कहते हैं।

"हाँ-हाँ, पागल तो हैं ही !"

लुत्तो और बीरभद्दर बाबू ने मिलकर सोलकन्हटोली के लोगों मे प्रचार किया—कलक्टर साहब ने जित्तन और भिम्मल मामा को खूब डाँटा है।

"पागलपन्थी करना हो तो पागलखाना में भेज देंगे ! दारोगा साहब बोल रहे थे। गरुड़धुज झा से पूछ लो ! प्रेमकुमार दीवानाजी भी थे।"

ताँतीटोली के जयमंगल ने कहा—"पागल आदमी वोट नही दे सकता ! दो आदमी गाँव से पागलखाना चले जाये, तो भी कोई घाटा नहीं।"

"ग्रामपंचायत के मुखिया के लिए कनटेस करेगा जित्तन !"

"नामनिसान दाखिल करने के दिन मालूम होगा जब हाकिम को कि पागल है, तुरत नामनिसानी का कागज फाडकर फेक देगा।"

"हाँ-हाँ, पागल आदमी मुखिया होगा जिस गाँव का उसका मालिक राम !"

"बोलो सिर सित्ताराम !"

"हा-हा-हा-हा !"

नट्टिनटोली में कुहराम मचा हुआ है।

वहुत दिनो के बाद नट्टिनटोली मे ऐसा लहरदार झगड़ा शुरू हुआ है। गंगा नट्टिन की आवाज फटे कनस्तर की तरह झनझना रही है—"जो जात की बात काटेगी, जात भी उसको सहस्सर टुकड़ा काटेगी ! हाँ-हाँ, काटेगी !"

नट्टिनटोली में जब कभी झगड़ा सुलगता है, सभी टोले के लोग दम साधकर, कान लगाकर सुनते हैं। अगल-बगल बाग-बगीचा मे अन्धकार में खड़ा होकर नट्टिनटोली का झगड़ा सुनने का रोग भी बहुत लोगो को है। मुख्य झगड़ा के अलावा खुदरे झगड़े चनाचूर की तरह चुरमुरे लगते हैं।

चुनमुनबाई महीन बोली बोलती है, सारगी की तरह। बात पर लय चढ़ाकर कहती है—"हम मेला मे कमाकर नही खायेंगी तो कहाँ खायेंगी ? डिब्बा की मिठाई और सुडाबाटन हमें भी मिले तब तो ?"

यह लल्लनबाई की बोली है—"जरूर करेगी, मेले में कमाई-ई-ई !"

"इह, बड़ी आयी है, कमाय बन्द करने ! हमको भी क्या दुलारीदाय का कुण्डा मिला है ? छलमल मछलियावाला कुण्डा !"

"बड़ी आयी है जात की सरदारिन बनने ! चुराकर नथिया उतरवायी, नट्टिनटोली का परेवा-पंखी तक को नहीं मालूम !"

"अब्ब मालूम होगा, अब्ब ! फल फलबे करेगा, लोग देखबे करेगा।"

"हाथ का छुआ पानी तक नहीं पीती ! छिनाल ! ऐं-हें, हँटो, हँटो !"

"हमारी पूजा भेरस्ट हो जायेंगी। वह गीत चुनमुनिया गाती है जो भला-सा–ना छुओ, ना छुओ मोरी गंगा-जमुनवाँ की धोई चुनरी !·· बाभनी बनी है !"

"बड़ा हवेली का डर दिखाती है ! जित्तन बाबू अपने घर में बाबू हैं। अपनी नट्टिन को हवेली में रखे। नट्टिनटोली की पर-पंचायत में पड़ने की क्या जरूरत !"

"और ऊपर से मुझे कहती है कि तू डाइन है ! हाँ, हाँ, हूँ डाईन। सुन ले सब नटिनियाँ कान खोल के ! गगा डाइन है। हवेली परानपुर की पटरानी का हुकुम हुआ है, कोई मेला में कमाई करने मत जाओ !· पटरानी रे पटरानी ! गंगा डाइन है ? पहले जन्मा के देख कि किस तरह, कद्दू की तरह कचकचाकर चबा जाती हूँ तेरे बच्चे को !" गंगाबाई का दम फूलने लगा। आज अफीम की एक गोली कम गयी है। लुत्तो काग्रेसी आदमी है ! जहाँ झगडा-फसाद होता रहे, वहाँ पहुँचना उसका धर्म है। कम्परमैज करना जानता है लुत्तो !

"अरी गंगाबाई, क्या है ? तुम लोगों के मारे गाँव मे एक भी भला आदमी नही रहेगा।"

"हाँ, आप ठीक कहते हैं लुत्तो बाबू ! नट्टिनटोली का यही रवैया रहा तो गाँव का एक आदमी भी भला नहीं बच्चा रहेगा।"

"तँ, विचार कीजिए ! मिटिन कीजिए !" गगाबाई अपनी फूलती साँसों पर छोटे-छोटे वाक्यो का व्यवहार करती है। हाथ भी नचाती है–"विचार कीजिए।" गगा जोर से कहती है, "हडताल कर दीजिए, झण्डा फहराकर। कह दीजिए, गंगा से सब बैकाट ! एक गाछ अरहर। गाँव से बाहर। बाहर रहेगी गगा !" लुत्तो ने शान्ति स्थापित की।

चुनमुनबाई बोली–"हम लोगों का भी ओनियन बना दीजिए, लुत्तो बाबू। बिना ओनियन के कुछ नही होगा। जो ओनियन से बाहर हुआ कि धरो पचास का जरिमाना। कटिहार में, कटिहार मे ललबेगिया डोम का भी ओनियन है।"

झगड़ा-फसाद मे बीच-बचाव करते-करते, लुत्तो झगड़े की असल बात की छोर पकड़ना जान गया है–"किसने कहा कि मेला में तम्बुक लेकर मत जाओ ?"

"और कौन ? परगना हवेली की पटरानी ताजमन्नी !"

"वह जो कहेगी उसको मानना ही होगा। उसकी माँ तो नट्टिनटोली की सरदारिन थी। सरदारिन की बेटी ही सरदारिन होगी।"

"आप तो खूब निसाफ करते हैं लुत्तो बाबू ! मेला में तम्बुक लेकर नहीं जायेंगे तो खायेंगे क्या ? गाँव क्या वही गाँव है कि बबुआनटोली के एक-एक घर में

चार-चार नट्टिनें गुजर करती थीं।· अब तो बबुआनटोली का लड़का कब जवान होता है, नट्टिनटोली की परेवा-पंखी भी नही जानती।"

"घर की बहू की फरमैश पुराते-पुराते बाबू लोगों की हालत, पुराने फलालेन कपड़े की तरह हो जाती है। शौख-मौज कौन करता है अब ? वह जमाना चला गया !"

"तो लुत्तो बाबू ! हम लोगो का भी कोई कानून कँगरेसी-कचेहरी क्यों नही बनवा देते हैं कि सभी नट्टिन भोरे उठकर नहायेंगी, फूल तोड़कर पूजा करेंगी·· !"

"और, बन्द कोठलिया में डिब्बे का रसगुल्ला खायेंगी !"

"हेँ-हँ-हेँ-हँ ! बिजलीबाई रसदार बात बोलती है, हमेशा !"

गेंदाबाई एक बोतल दारू पीकर झगड़ा में आयी है। गीत का एक टुकड़ा तोड़कर गाने लगी :

अरे, जो मोरे सैयाँ को भूख लगेगी,
पूड़ी-कचौड़ी रसगुल्ला बनी जाऊँगी।
सैयाँ तोरे गोद मे फुलगेंदा बनी जाऊँगी··· ।

"वाह री गेंदा ! क्या तोड़के मारा है फुलगेंदवा की मार, कलेजवा पे !"

"देखो, लड़ाई-झगड़े से कोई बात बनती नहीं, बिगड़ती ही है !" लुत्तो ने भाषण की भाषा में कहा, जोर-जोर से–"ताजमनी पढ़ी-लिखी है। जो भी कहो, इतनी बात तो माननी ही पड़ेगी कि बुद्धि-ग्यान में बडी है नट्टिनटोली में। वह तो खुद विचार कर देखेगी। सारी नट्टिनटोली एक तरफ और वह एक तरफ कैसे रह सकती है ? अपना भला-बुरा सभी समझते हैं। अभी उस दिन, कल ही तो कलक्टर साहब ने पूछा कि जित्तन बाबू, आप नट्टिन रखेली क्यों रखे हैं ? तो जित्तन ने क्या कहा, जानती है ? उसने कहा, हुजूर ! रण्डी किसकी होकर रही है जो मेरी होकर रहेगी ? उसको मैंने रखेलिन नहीं रखा है। अब सोचो, यह सोचकर देखने की बात है या नहीं, क्यों गेंदाबाई ?"

लुत्तो ने चुप होकर ताजमनी की झोंपड़ी की ओर देखा।

गंगाबाई अपने दम पर कब्जा कर चुकी थी। बोली–"कौन कहता है कि बुद्धि-विचार में कोई उससे बेसी है ? नट्टिनटोली की लड़कियों की क्या, गाँव के बड़े-बूढ़े भी उसकी अक्किल का मुकाबला नहीं कर सकते। लेकिन, इतना समझ-विचारवाली होकर भी अबूझ बनती है तो गुस्सा चढ़ता है।··· आखिर, जात का नेम-धरम भी तो कोई चीज है ?"

एक नयी जवान हुई नट्टिन मिनमिनाकर कुछ बोली। गेंदाबाई चिहुँककर बोली–"अच्छा ! तो, तूने बताया क्यों नहीं ? सुन लो ! हीरिया छौंडी क्या कह रही है; सुन लो, कान खोलकर !"

"क्या है री हीरा, बोल न ! लजाती है क्यों, मेला में तम्बुक लेकर जायेगी

और अब भी लाज करती है ?"

हीरा लाज से कुछ बोल न सकी। बोली गेंदाबाई। दारू पीने के बाद बोलने को जीभ फड़फड़ाती रहती है, उसकी। बिना किसी गीत का टुकड़ा जोड़े, कोई बात नहीं बोल सकती—"क्या बोलेगी हीरिया बेचारी ! मर्दों की आदत तो जानती ही हो। लड़कियों को देखते ही बनबिलाड़ की तरह आँखे गोलकर इस तरह देखेगा, मानो नोचकर भागेगा। हीरिया मधुलता-हाट से गाड़ी पर आ रही थी, उस दिन। बरदियाघाट के उस पार, क्या भला-सा नाम है, मस्तानाजी या बेदानाजी··· !"

"दीवानाजी !"

"प्रेमकुमार दीवानाजी !"

"वही, वही दीवानाजी ! हीरिया को देखकर सिलेमा का गाना गाने लगा। कौन गाना री ? वही, सुनो ! मोरा दिलवा पुकारे आजा, आजा ! अब कहो, आजकल के लड़कों को क्या कहा जाये ! पहले के जवान-जहान लोग ऐसा तो नहीं करते थे ?··· तो तू क्यों चुप रही ? तू भी गाती :

मेरा हीराबाई नाम,
मेरा लाख रुपैया दाम !
लाख रुपैया खोलो, मन की बात बोलो,
धोखे में रहियो न स्याम !"

"हैं-हैं-हैं-हैं !" सभी नट्टिनें कचपचिया पंछी की तरह कचपचाकर हँस पड़ीं। लुत्तो ने लालटेन की रोशनी में हीरा का लजाया हुआ मुँह देखा। गम्भीर होकर बोला—"दीवाना खराब लड़का नहीं। बड़ा चानसवाला लड़का है ! नाटक-डिरामा लिखता है, इसलिए सिनेमा का गाना हमेशा रियाज करता है।"

'सु-सु-सु-सु, सू-ऊ-ऊ-सू · ! काछीं मैयाँ सझना मा तिम्रो हाँसाछिन यो जुनेली राती।' मलाई मामा गर्ने काछी। दिलबहादुर सीटी पर पहाडी गीत गाता हुआ आया—ओ कांछी माया, तुम्हारी याद दिलाकर यह चाँदनी रात हँस रही है। मुझे प्यार करनेवाली काछी !

दिलबहादुर को देखते ही नट्टिनों के झुण्ड मे डर समा गया। गगाबाई बोली—"देखो, फिर यह ढकनमुँहा पहाड़िया आया !"

"खुखरी भी है ?" फिसफिसाकर बोली कनेलीबाई।

"बिना खुखरी के कभी नही निकलता !" चुनमुनबाई उठकर चली परबतिया का क्या परतीत ? कब, क्या कर बैठे !

गेंदाबाई को बड़ा भला लगा है यह दिलबहादुर ! गेंदा ने इसको एक बार टोका भी है।··· कौन कहता है कि दिलबहादुर पर हमेशा पहडिया किरातदेव सवार रहता है ? गेंदा ने दिल्लगी करके देखा है। दिलबहादुर कैसी मुस्कुराहट मुस्कुराता है, यह सिर्फ वही जानती है। गेंदा टोकती है—"ऐ दाजू ! मोर बात सुन्छः पहिले, तब ताजू दीदी को घर जान्छः।"

गेंदाबाई अपनी बोली में छः जोड़कर नेपाली बोली की नकल करती है। दिलबहादुर खड़ा हो गया। गेंदा ने मुँह-अँधेरिया रोशनी में भी देखा, वही मुस्कुराहट ! सुनहले दाँत पर लालटेन की रोशनी चमक गयी–"क्या बोलता है ? बोलो ! हामको फिन अब्बी टीशन में जाना पड़ता है। भब्बी बाबू रात में आवेगा !" लुत्तो को दिलबहादुर का डर, कम नहीं–ज्यादा ही है। और, यह गेदाबाई मुफ्त में इसको खोंचा दे रही है। लुत्तो ने गाँव की बोली मे धीरे से कहा–"मार, जाबे दे भुच्च के !"

दिलबहादुर की आँखे टार्च के बल्बों की तरह अचानक जल उठीं–"हेर-ऽ-ऽ, लुत्ते मुजी ! न राम्रो कुरा न गर-ऽ-ऽ ! नत्र ।"

"बॉख-बॉख ! ताजमनी के ऑगन मे मीत ने भूँकना शुरू किया। दिलबहादुर की गुस्सई बोली को पहचानता है वह !

"बहादुर भैया-आ-आ !" ऑगन से ही चीख़ पड़ी ताजमनी–"बहादुर भैया !" दिलबहादुर का बढ़ा हुआ कदम रुक गया। खुकरी की बेंट पर हाथ जाकर लौट आया।

लुत्तो थर-थर कॉपने लगा। उसने चिल्लाकर कहा–"देखो देखिए ताजमनी यह मुझ पर बेकार बिगड गया। मैंने कुछ कहा है ? आँगन से बाहर आकर सबसे दरियाफ्त कर लीजिए।"

"तुम कुछ नही बोला ? नहीं बोला कुछ ? हम नही समझा ? लुत्ते मुजी ! तुम अब्बी भुच्च नहीं बोला ? तुम कुछ नही बोला तो हमपनि कुछ नही बोला, लुत्ते मुजी !"

दिलबहादुर अपनी भाषा में बडबडाता हुआ ताजमनी के आँगन की ओर जाने लगा।

ताजमनी ने आँगन की दहलीज से पुकारकर कहा–"बहादुर भैया, मीत को ले जाओ। भूख लगी है, इसे।"

"हम तो चुपचाप मीत को लेने आया उधर मे।" दिलबहादुर ने रुककर कहा–"फिन हमको काहे वास्ते बुलाया इधर मे ?"

गेदा ने फुर्ती से उठकर, बडी मीठी बोली मे कहा–"दाजू भाय ! मोर कसूर हुन्छः ले, मेरी गर्दन खुकरी से काटिन्छः तो काटिन्छः ! ले !"

गेदा अपनी गर्दन झुकाकर दिलबहादुर के करीब चली आयी। गेंदा के बाल नीचे की ओर लरज गये। कस्तो लुती ? दिलबहादुर ने सोचा, कैसी लुच्ची है ? छक्क पर्ने ! अचरज की बात ! इस बार, दिलबहादुर की मुद्रा बदली। भ्रू हीन आश्चर्य !

दिलबहादुर, ताजमनी के साथ ऑगन मे चला गया तो गेंदाबाई मद्धिम आवाज मे बोली–"आप भुच्च क्यों बोले लुत्तो बाबू ? पहड़िया बोली में भी भुच्च को भुच्च ही कहते हैं।"

सभी नट्टिनों ने एक-दूसरे को देखकर ऑखों-ही-आँखों मे बातें कीं–'अपनी-

अपनी झोंपड़ी के अन्दर चलो।··· दरवाजा मजबूती से बन्द करना। लुत्तो की बात लुत्तो जाने !"

लुत्तो कम चालाक नहीं। नट्टिनों के उठने के पहले ही बिल्ली की तरह बिना कोई आहट किये उठ खड़ा हुआ। रबर का जूता हाथ में लेकर अँधेरे में गायब हो गया।

रघ्घू रामायनी सुन्नरि नैका की गीत-कथा नहीं गायेगा ?

दोपहर को जित्तन बाबू ने रामपखारन सिंघ के मुँह खबर भेजी—रघ्घू रामायनी सुन्नरि नैका की गीत-कथा गाने को तैयार नहीं हो रहा है। क्या उपाय है ?· जिद्दी हो जाता है आदमी बुढ़ापे में !

रामपखारन सिंघ को रघ्घू रामायनी का नखरा जरा भी पसन्द नहीं—"जे-बा-से, भर रात रिब-रिब सरंग्गी बजाई और गवले गीत को बेर-बेंर गावेगा। इसी के खातिर इतना खुशामद ! सुबहे से पाँच-हाली हमको घाट-हाकिम ने दौड़ाया है ! वही जो कहावत है नूँ—कहला से बरेठा गधा पर नहीं चढ़ता है !"

ताजमनी ने रामपखारन सिंघ की बुद्धि पर पड़े झोल को झाड़ते हुए कहा—"रघ्घू रामायनी न तो तुम्हारे इस्टेट का रैयत है और न वह इस्टेट का नमक खाता है। उसके यहाँ लाठी लेकर बुलाहट भेजनेवालों की बुद्धि की बलिहारी ! मुंशीजी ने परवाना लिख के नहीं भेजा ?··· बजरिये इस परवाना के तुमको हुकुम दिया जाता है ! · मेरे पास क्यों आये हो ? गाँव के गुनीमानी के साथ कैसा व्योहार करना चाहिए, यह मैं बता दूँगी ?"

रामपखारन सिघ की कड़वायी हुई सूरत को देखकर ही समझ गये जित्तन बाबू, खूब झालदार बातें सुनकर वापस आया है। · माँ जब कभी रामपखारन सिंघ पर बिगड़ती तो ऐसा ही चेहरा हो जाता था, इसका !

रामपखारन सिंघ को अपनी मूँछों में बात लटकाते देखकर जित्तन बाबू ने कहा—"पाँच टीन घी का प्रबन्ध कर सकते हो ? मुंशीजी से जाकर कहो, कम-से-कम आधा मन घी जट्टटोली से ले आयें !"

"पाँव लागी रघ्घू काका !"

"कौन ? जित्तन बाबू !··· हो रामजी, यह क्या किया आपने ?"

रघ्घू रामायनी की माँड़ी पड़ी हुई आँखें छलछला गयीं। थरथराती हुई आवाज में बोला—"मैंने कौन कसूर किया है कि मरने के पहले आपने इतनी बड़ी गठरी लाद दी ! ब्राह्मण-सन्तान होकर आपने मुझको पाँवलागी की ?"

"नहीं, रघ्घू काका ! आप ब्राह्मण हैं, ब्राह्मणों में भी श्रेष्ठ !"

रघ्घू रामायनी ने कहा—"घी का प्रबन्ध कीजिए, मैं तैयार हूँ।"

रघ्घू रामायनी ने बात मान ली।

भौंटटोली से वापस होते समय, जित्तन बाबू की नजर ताजमनी पर पड़ी।··· सुधना के साथ, फिरंगी राय के दरवाजे के बगलवाली पगडण्डी पकड़कर भौंटटोली की ओर आ रही है ताजमनी !

लोरिक, कुम्मर विज्जेभान, सुरंगा सदाबृज, होरिलसिंह, घुघली घटवार, ढोलामारू अथवा चन्ननियाँ की गीत-कथा नहीं। सुन्नरि नैका की गीत-कथा ! गीत-कथा की कथाभूमि या कथांचल परानपुर गाँव में सौभाग्य से एक गीत-कथाकार का दर्शन ? · सुरपति राय का टेपरिकॉर्डर आ गया है। दुलारीदाय के पाँचों कुण्डों की बहुत-सी कहानियाँ हैं। किन्तु, कुण्ड-खुदाई की असली कथा है–सुन्नरि नैका !··· गाँव से दक्खिन-पूरब कोने में सुन्नरि नैका की डीह है। नैकाडीह ! सुन्नरि नैका की गीतों-भरी कहानी तो रघ्घू को सपने में मिली है। कोई नहीं जानता। जानेगा कैसे ? पूरी गीत-कथा किसी ने सुनी ही नही !

पच्चीस-तीस साल पहले रोशन बिस्वाँ के दरवाजे पर सुन्नरि नैका की अधूरी गीत-कथा सुनायी थी रघ्घू ने। रोशन बिस्वाँ के हाड़कंजूस बाप ने बेईमानी की थी। शर्त थी–पाँचों रात पाँच चिराग जलेंगे नैकाडीह पर और पाँच दुलारीदाय के किनारे, पाँचों कुण्डों के सामने ! घी देने में कंजूसी की। पहली रात को आधी कहानी भी नहीं हुई थी कि दीप बुझ गये।· रघ्घू ने गीत बन्द कर दिया। उसकी बोली ही बन्द हो गयी। इसके बाद, दूसरे महीने में ही उसको अर्धांग मार गया। आधी कहानी कहकर उठा हुआ गीत-कथाकार !

रोशन बिस्वाँ के बाप को कथा-कहानी या गीत से क्या मतलब ! डकैती के भय से अपने दरवाजे पर, पाँच रातों तक गाँव-भर के लोगों को बटोर रखने का हिला लगाया था। कथा-कहानी से क्या मतलब कुकाठ को ! बेचारा रघ्घू रामायनी !

ताजमनी साँझ होने के पहले ही हवेली पहुँची, एक-एक कमरे में पाँच-पाँच प्रतीप जलाना होगा ! व्यासगादी के लिए चन्दन की चौकी निकालकर बाहर भेजनी होगी।

"पखारन काका ! रघ्घू रामायनी के साथ कौन जा रहा है ? वह अभी कुण्ड में नहाने जायेगा !" ताजमनी दीप जलाती बोली। तुलसी-चौरे पर युगों बाद दीप जले ! छोटा-सा तुलसी का बिरवा ! इतने दीपों की रोशनी में उसके पत्र-पत्र पुलकित हुए ! मीत ने अचरज-भरी मुद्रा मे शंखध्वनि सुनी–तु-उ-उ उ-उ-य ! तु-ऊ-ऊ-ऊ-ऊ !

मीत आज परम आनन्दित है। सुधना जितनी बार दीप लेकर रखने जायेगा, साथ जाता है। दौड़कर सुधना से पहले ताजमनी के पास आ जाता है। जित्तन बाबू ने एक झलक देखी, खिडकी से–ठीक, माँ की तरह साड़ी पहरती है ताजू !

"दिदिया ! कथा होने के समय मीत को बाँध दिया जायेगा ?" सधना ने धीरे से पूछा।

"कौन कहता है ? क्यों, मीत को क्यों बाँधेगा ?"

आँगन की सीढ़ी से उतरते हुए जित्तन बाबू ने कहा–"रामपखारन सिंघ कहता है·· ।"

ताजमनी ने माथे पर कपड़ा डालने की चेष्टा की। मीत ने आँचल खींच लिया दाँत से। प्रसन्नावस्था में ही कभी-कभी रामपखारन सिंघ की रखी हुई पगड़ी को दाँत से पकड़कर खींचता-दौड़ता है और, रामपखारन सिंघ दोनों हाथ जोड़कर आरजू करता है–"ए, महाराज ! ई कून अंग्रेजी दिल्लगी बूढ़ा आदमी से काहे करते हैं ! मीत महाराज !"

मीत की हरकतों को देखकर ताजमनी के ओठों पर एक मीठी-सी मुस्कराहट कढ़ आयी !···जित्तन बाबू को याद आयी, वह भी बचपन में माँ का आँचल खींच-खींच लेता था !

सामबत्ती पीसी को हवेली के अन्दर जाने का पूरा हक है। लेकिन, मीत किसी को नहीं आने देगा। बॉख, बॉख, बॉख !

सामबत्ती पीसी ड्योढ़ी के बाहर जाती हुई बोली, "परसाद-उरसाद चढ़े तो हमारा हिस्सा रखा रहे। हाँ जितना-सा देखा है, वही काफी है सामबत्ती पीसी के लिए। चार दिन का खुराक !"

ताजमनी, सीढ़ी पर खड़े जित्तन बाबू के सामने बैठकर पाँच दीप सजा रही थी। जित्तन बाबू अचरज से देख रहे थे । लेकिन, सामबत्ती पीसी के मुँह से उपर्युक्त दृश्य का वर्णन सुनकर जयवन्ती ने चहारदीवारी के एक छेद से झाँककर देखा–"सुन्नरि नैका का पाट तो अन्दर में हो रहा है !"

मलारी ने कहा–"छेद से जरा हटो तो मैं भी देखूँ ? ठीक कहती है तू। पैर-पुजाई कर रही है, सुन्नरि नैका !"

गेस्ट हाउस के सामने, बरामदे पर अँगनाई में दर्जनों लोग खडे हैं !

औरतें दल बाँधकर आ रही हैं–"गाँव मे किसको नौ मन तेल होगा, जो राधा का नाच देखेगा, दिखायेगा ?"

"नौ मन तेल हो भी तो क्या, मन मे हुलास नही किसी के !"

"आखिर, रोशनबिस्वाँ के बाप का, रेड़ी के तेल से जमाया हुआ पैसा डकैत ही ले गया !"

"रघ्घू बूढ़ा नेम-टेम करके व्यासगादी पर बैठेगा। कुण्ड में नहाने गया है।"

व्यासगादी सजी हुई–आसपास बलते दीपों की माला ! सामने धूपदानी मे धूपकाठ की घुण्डी सुलग रही है।

जित्तन बाबू के मन के पर्दे पर एक ऋषि की मूर्ति उभरती है और मुखर हो उठती है· 'ग्राम्य गीति-कथा के काव्य हिसाबे ग्रँहण करिते गेले, ताहार संगे-सगे, मँने-मँने; समग्र गाम, समँस्त लोकालय के जेंड़ाइया लँइया पाठ्य कँरा परमावश्यक ! तारपरे, देखबे–तोमार अँन्तरे-अँन्तरे जन्तर बाजिया उठिबे ! बर्बर-संगीते सहज सुरेर सन्धान··· !'

नहा-धोकर, हल्दी से रँगा हुआ नया कपड़ा पहन आया है रघ्घू रामायनी ! जित्तन बाबू ने हाथ का सहारा देकर व्यासगदी पर बैठा दिया। गले में माला डाल दी। ·ललाट पर गोपी चन्दन ! पटसन की तरह सुफेद दाढ़ी ! आधी देह अर्धांग की मारी हुई ! सन्तों की-सी सूरत ! अर्धांगवाली बाँह से सटी लटक रही है, छोटी-सी सारंगी ! आधे अंग की पूर्ति करती हुई, काठ और चाम की बनी सारंगी !

नैकाडीह पर पाँच बड़े-बड़े चिराग जल रहे हैं। गाँव से पच्छिम, दुलारीदाय के किनारे··

"आँख मूँदकर गुरु को सुमर रहा है शायद !"

हुँ-ऊँ-ऊँ ! रघ्घू ने गुरु-मन्तर गुनगुनाया। सूखी सारगी ने गुरु-मन्तर के सुर पर एक मोटी कारीगरी की—कुँ-हुँ-ऊँ-कुँ-कुँ-ऊँ !

अन्तर के जन्तर झंकृत हो उठे !

"जै, मैया सरोसती !" रघ्घू के मुँह से पहली वाणी निकली।

साठ साल से साधुओं के सत्संग में रहकर उसने जो भाषा सीखी है, उसी में कथा का गद्यभाग सुना रहा है !

ट्रिप-टि-रि-रि-रि-रि ! सुरपति ने टेप-रिकार्डर का बटन ऑन किया। ट्रि-रि-रि-रि-रि ·!

"कि-ई, सज्जन-दुरजन सब समतूल—मैया सरोमती के दरबार में क्या तुलसी और क्या रघुआ जैसा गाँव का गड़री का फूल ! कि-उ, साँच-झूठ मैं कछुओ ना जानू, जो गुरु सपने में सिखा गये, सोहि अच्छर-अच्छर बखानूँ !· बहुत पुरानी बात रे भाई, जाने गंगा माई। और, जाने परानपुर गाँव की प्यारी नदी दुलारीदाई ! ऐसा दुरदिन कभी न आवे ! ऐसे दुरदिन की चर्चा भी है पा-ा-ा-प ! मगर गुरु के हुकुम से सबकुछ माफ ! ऐसा दुरदिन !"

सुरपति ने बगलवाले बरामदे पर पड़े चिक की आड़ मे बैठी ताजमनी पर एक नजर डाली। नाक के कीन्न का पत्थर झलका। मीत ताजमनी की गोद में बैठा है—चुपचाप !

"·ऐसा दुरदिन आया भाई, कि अचानक इस धरती को लकवा मार गया ! नदी-तालाब-कूप, सभी गये सूख। पानी चला गया पाताल ! गाछ-बिरिच्छ सब झुना के गिर पड़े। देश में महाकाल पड़ गया। हाहाकार मच गया एतराफ में। हजारों-हजार लोग रोज मरने लगे। अरे, धरती खोदे धरती का बेटा, धरती में मिल जाये। फिर भी पानी का पता नहीं। पानी कहाँ मिले रे दैवा ?"

रघ्घू रामायनी ने दम बाँधने के लिए विराम दिया। सुरपति ने टेपरिकॉर्डर का बटन ऑफ किया ! पिट्-क्रिक !

भीड़ बढ़ती जा रही है। लालटेन हाथ में लटकाये, खड़ाऊँ खटखटाते आ रहे हैं भिम्मल मामा। दक्खिनवाले महार पर कोई टार्च भुकभुकाता आ रहा है। आम के बाग में कोई पुकारकर कह रहा है—"रेडियो नहीं, रेडियो नही। रघ्घू दास सारंगी पर महराय गा रहा है, महराय !"

ट्रिप-टि-रि-रि-रि-रि–

"कि, तीसरे दिन इस हवेली इलाके के नायक सुन्दर नायक ने, जल बिनु तड़पते लोगों को पुकार के कहा–हो जैवार ! सुनो, कान पसार ! मोरी छोटी बहिनियाँ सुन्दरि नैका रोज गुनबले पाताल से पानी मँगाकर जैवार-भर के लोगों को पिलावेगी। लेकिन, पहले उसको आशीख दो सब मिलकर कि देवकुल में उसका ब्याह हो-ओ-ओ-ओ !... "

सुननेवाले के चेहरे पर प्रसन्न आतक की रेखाएँ अंकित हैं ! पातालपुरी के एक चुल्लू पानी से क्या हो ? सुनो न, कैसी लीला रचायेगी !

"...सुन्दर नायक ! बडा भारी गुनियाँ। नेपाल में किरात मन्तर सीखकर आया हुआ गुनी ! और, भाई से बढ़कर गुनवन्ती, उसकी बहिनियाँ–सुम्दरि नायका ! कामरूप कामख्या से गुन सीखकर आयी हुई ! उसको देवकुल का दुलहा चाहिए ! सुन्दर नायक ने जिला-जैवार के लोगों से कहा–हो, पंचो ! मोरी बहिनियाँ सुन्दरि नैका ने किया है एक उपाय ! दन्ता राकस को फुसलाकर प्रेम की डोरी मे बाँधा है। इस इलाके के एक सहस्र सुन्दरियों में सुन्दरि नैका मोरी बहिनियाँ–एक ! भगवान उसकी रखें टेक ! भला, उसको राकस-कुल में जाने दूँगा ?... पाँच रात मे पाँच कुण्ड बनवायेगी, पाँच महापोखरों से पुरइन मँगवायेगी, पाँच महानदियों की मछलियाँ। सहस्रों पुरइन फूल में से एक पर आकर बैठेगा कोई देवपुत्र। फिर उसी देव के साथ मेरी बहिनियाँ ब्याही जायेगी हो-ओ-पंचो !... "

पिट-क्रिक !

परानपुर हवेली के अहाते में, गेस्टहाउस के सामने पहली बार इतनी बडी भीड जमते देख रहा है सुरपति।.. यहाँ तो कोई दिन में भी नहीं आता !

रामपखारन सिंघ बडी दरी बिछाकर, खड़े लोगों को इशारे से बैठने को कह रहा है–"चुपचाप सुनो। बोलो-भूँको मत ! फिलिंग-रिकाट हो रहल बा।"

ट्रिप-टि-रि-रि-रि· !

" सो, हो पंचो ! राकस कुल में नही जाने देंगे बहिनियाँ को। धोखा से काम लेंगे। पहले, दन्ता राकस को प्रेम के बज्जर-बाँध में फँसने तो दो ! इसलिए, कुछ देखो भी अपनी आँख से तो मोरी बहिनियाँ का कुचाल मत मानना हो लोगो ! फँस गया दन्ता सुन्दरि नैका के फाँस में ! गाँव से पूरब ! परपट परती पर ! चाँदनी रात मे ! बालूचर के किनारे दन्ता के दाँत चमकें–ही-ही-ही-ही-ई-ह ! हम हारल रे-ए-ए-ए–हारला आ ! आँखमिचौली, लुकाचोरी खेल में दन्ता गया हार। हार कबूलकर हँसता है दन्ता–ही-ही-ही-ही-ई-ह ! हम तैयार रे-ए-ए मानुस छोरी मोहनियाँ–सुन्नरि नैका ! सत्त करके बोला–ठीक्के बात, ठीक्के बात ! कुण्डा खोधैया करबे-करबे, पानी से भरबे। तार परपट परत्ती धरती पर पानी कलबुल बोले-हे-हे-हे-ए-ऐसा पानी भरबे ! · कुँ-ऊँ हुँ... ।

"नम्मौं नैका सुन्नरि सुन ले मोर बचनियाँ रे नाम्,
नम्मौं पाताल फोड़ी आनब हम पनियाँ रे नाम्,
नम्मौं पाँच किसिम के लायब पुरइनियाँ रे नाम्,
... नामौं पूरन करब आपनो कहनियाँ रे नाम्,
सुन्नरि नैका रे-ए-ए, जोड़लो पीरित जनि तोड़े रे-ए,
हम्हुँ मरि-जा-य-बा-रे-कि-इ-इ !
कुहुँ कुँ का-आँ-आँ !

" अब, चला है दन्ता सरदार उत्तर राज गढ़दन्ता की ओर ! गढ़ में पहुँचकर अपनी राकसनी हिरन्नि रानी का मुँह भी न देखा और न बेटे की तुतलाती हुई बोली सुनी। दिया है सिंघा उठा के फूँक—ई-हिं-ई-ई ! हुँय-हुँय-हुँय-हुँय-हुर्र हर्र-र्र-र्र ! धू धू-धू-धू-धू-धु र्र-र्र-र्र-र्र-र्र ! कुँय-कुँय-कुँय-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ .. !"

सारंगी के झनक तारों पर सिंघा की बोली, मानो चालीस जोजन दूर से आकर हनहना गयी-कुँ-हुँ-हुँ-हुँ !

जित्तन बाबू और सुरपति की आँखे आपस में मिलीं अपूर्व।

रघ्घू रामायनी सुननेवालो को चेतावनी दे देता है—"छोटे-छोटे बच्चे-बुतरू को सँभालिए ! जंगल-पहाड़, खोह-खन्धकों मे शिकार करते हुए दो सहस्र राकसो के कान खड़े हुए—गुहार सुर्र-र्र-र ? रे-ए-ए ! गुहार-सुर्र सिघ्घा बज्जा रे बज्जा ! साहुर्र-र्र, साहुर्र-र्र-र्र करते सभी राकस गढ़दन्ता में आ पहुँचे।

"रे-सर्रदार-रे सर्रदार
की दरकार, की दरकार ?
कुँहुँ-कुँक्कुँ... कुँहुँ-कुँक्कुँ... !

"बोला दन्ता सरदार—रे-भैर्रा-आ-आ-ह ! दन्ता सरदार के घर में ना भया खटपट, ना घटी खर्ची। दन्ता सरदार पर नहीं तानी किसी ने बर्छी ! दन्ता का तो छूट रहा है परान, मानुस-छोरी मोहनियाँ के लागला मोहनबान ! रे भैर्रा-आ-ह ! सभी राकसों ने एक-दूसरे को देखकर सूँघा—हुँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ ? मानुसगन्ध ! मानुस-गन्ध !

"कुँ हुँ-कुँक्कुँ...
भैर्रा परानपुर के नैका सुन्नर गुनियाँ रे नाम्,
भैर्रा तेकरो से तेजी तँ बहिनियाँ रे नाम्,
भैर्रा पाताल खोदि रोज पीये पनियाँ रे नाम्,
... भैर्रा दाँत छटके बदरा के बिजुरिया रे नाम्,
भैर्रा सुन्नरि छहके सोना के मछरिया रे नाम्,
भैर्रा मोरा पर मारली मोहनियाँ रे नाम्,
सुन्नरि नैका रे-ए-ए, जोड़लो पीरित जनि तोड़े रे-ए,
हम्हुँ मरि जा-इ-बा-आ-रे-कि !

"··मत रोये सरदार, मत रोये। गढ़दन्ता के राकस के रहते सरदार रोये ? पाँच कुण्ड केर क्या बात ? परानपुर परती खोदि के समुद्दर बनैबै रे-ए-ए ! चल रे भैर्रा आ-आ ? धुर्र-धुर्र-धुर्र-धुतु-धुत-धुत-तू-उ-उ-उ-उ।··· कुँ-हुँ-ऊ !

"रोती रह गयी हिरन्नि रनियाँ, हुलसता रहा बेटा दन्ता का—हाथी का बच्चा जैसा ! बाप ने उलटकर देखा भी नहीं। रो-रोकर बोली हिरन्नि रानी अपने बेटे से—मत रोये ! मानुस-छोरी मइयाँ लाने गया है पिता तोरा ! सोने के कटोरे में खीर भरकर—चकमच चान को बुलावेगी आकाश से तेरे लिए, तोर मानुस-छोरी मइयाँ···।

"इधर, एक ओठ आकाश और दूसरा पाताल—मुँह बाकर दौड़े एक सहस्र राकस। धरती डोल गयी भाइयो · धर-धर-पट-पट, धडिंग-धडिंगा गिंड़पतगंगा :

"कुहाँ-कुक्कों···
'जी, धड़-धड़ धड़के धरती माय,
धड़क-धड़ा-धड़—हाय रे वाप,
थरक-थरा-थर थारिया जैसन—
थर-थर काँपे चान;
'कि, पातालपुरी में लुकनियाँ पनियाँ रे-ए-ए,
'कि रे रघुआ रे-ए-ए, जगहो खोजि न पावे !
कुँक्कों-कुहाँ··· "

सुरपति ने मशीन का बटन ऑफ किया। रघ्घू रामायनी के लिए जित्तन बाबू अपने हाथ से चाय तैयार कर रहे हैं। भिम्मल मामा प्रसन्न हैं—"गुड-बेटर-बेस्ट, अच्छा-बेहतर, सर्वश्रेष्ठ ! पूछो मुझसे, आस्क मी ! मैं गाँव में चक्कर लगा आया हूँ। सारे गाँव का बच्चा-बच्चा जग गया है। गाँव में पेनिक पनपना गया है मिस्टर कथा-कलक्टर ! हर दरवाजे के पास कुछ मर्दों का झुण्ड, हर पिछवाड़े में खड़ी औरतों का गोल ! सारंगी की बोली तो ओ ? तुमने ढकनकल भी लगा दिया है ? धुनफीताबन्दी हो रही है ?"

सुरपति ने मुस्कराकर कहा—"जिद्दा ! मामा हर पोर्टेबल मशीन के लिए ढकनकल शब्द दे रहे हैं और टेपरिकॉर्डर के लिए—धुनफीताबन्द !"

बाहर, भीड़ से किसी ने कहा—"बाबू ! अभी खतम मत करवाइए; हर टोले का लोग दौड़ा आ रहा है।"

दूसरे ने हिम्मत करके कहा—"बन्द मत करवाइए !"

औरतों की टोली से सामबत्ती पीसी ने कहा—"एको कुण्ड तो खोदाइए !"

रामपखारन सिंघ को सरदारी करने का मौका मिला—"चुप ! फिलिंग रिकाट में बोली चल जाई ।"

ट्रिप-टि-रि-रि-रि···।

'कि पहुँचे सभी राकस ! दुलारीदाय के बरदिया घाट के पास—सुन्दरि नैका

ने पाँच जगह दीप जलाकर पहले ही रख दिया था। इधर धरती डोलती रही, आकाश में चाँद चाँदी के थाल जैसा नाचता रहा। उसी ताल पर, सुन्दरि नैका हवेली के पिछले दरवाजे से नाचती हुई आयी और अपनी एक झलक दिखा दी, सभी राकसों को ! किलकिला उठे खुशी से एक सहस्र राकस—मानुसखोरी मोहनियाँ रे-ए-ए ! आँख मारे-ए-ए !" खुशी से जयडम्फ बजाकर नाचने लगे एक सहस्र राकस। ताल पर एक साथ एक सहस्र राकस धरती पर दाँत मारते—खच्चाक् ! पातालपुरी में कच्छप भगवान की पीठ पर दाँत बजते—खट्टक् ! पानी को ऊपर आना ही होगा :

"ढाक ढक्कर-ढाक् ढक्कर...
कोड़ भैर्रा-र्रा-आ-ह ! फोड़ भैर्रा-आ-ह !
भरी राति में खोदाय, पनियाँ छह-छह छहाय
नदिया देबो बहाय-य-य !
भोर में फेर देखवो सुन्नरि कन्ना—
हेय-आँख मारे ?
होय दाँत मार-रे-ए-ए... खच्चाक् !
खट्टक् ! ढाक्-ढक्कर, ढाक्-ढक्कर...
कुँह कुँक्कों, कुँह कुँ क्कों !"

"कृपया पूर्णविराम ! बटन ऑफ कीजिए कथा-कलक्टर-साहब ! उधर देखिए क्या हुआ।"

"कोई बेहोश हुई, शायद !"

एक औरत चिल्लाकर बोलने लगी—"बाबू ! बन्द करिए। दु-तीन कम कलेजावाली लडकी के कलेजे में डर समा गया है। बोलती है, हवेली के चारों ओर दैत्त दौड़ रहा है किलबिलाकर ! इन लोगो को बरण्डा पर जगह कर दीजिए !"

भूमिहारटोली की एक औरत ने कहा—"केयटटोली की दो-तीन छेंहकबाज छौंडी और रैदासटोली की मलारी ! जहाँ जायेंगी सब, एक-न-एक ढंग पसारेगी ही।"

"कितना बढिया गा रहा था ! हर जगह ढग देखकर देह जलने लगती है।"

"बरण्डा पर काहे, अरामकुर्सी पर जाकर बैठो न !"

औरतो की मण्डली मे लड़ाई शुरू हुई। केयटटोली की घंघी फुआ और गगोलाटोली की पनबतिया ने एक ही साथ जवाब दिया—"छंहकबाज छौड़ी हर टोले में है। टोला-टोली मत करो, नहीं तो आज उघारकर रख देगे !"

ब्राह्मणटोली की आनन्दीदाय बोली—"कॉय-काँय क्यो करती है ?"

भिम्मल मामा साष्टाग दण्डवत् कर धरती पर लेट गये, औरतों की टोलियो के सामनेवाले बरामदे पर। हाथ जोड़े उठ खड़े हुए—"हे देवियो ! दुर्गाओ ! कालियो ! करालियो ! करौंतियो ! शान्तियो, कृपया शान्त हो !"

"हि-हि-हि ! हा-हा-हा-हा ! दूर, भिम्मल मामा तो हर जगह भगल पसारते हैं। अटर-पटर बोलते हैं। चुप-चुप, नहीं तो ऐसा नाम चुनकर रख देगे कि गाँव

में मशहूर हो जाओगी। किसी को नहीं छोड़ेंगे, किसी भी टोले का क्यों न हो। चुप मलारी ! सेमियाँ !"

"सुनो, शुरू हो गया। चुप ! फिलिंग·· !"

"रात-भर खोदते रहे दन्ता सरदार के राकस ! कोड़ भैर्रा-र्रा-आ-ह ! भोर में नाचती आयी सुन्दरि नैका। देखा, एक कुण्ड पानी से लाबेलाब है। कुण्ड के पानी में पूरनिमाँ का चाँद, सोने-चाँदी को एक साथ घोलने के लिए रुक गया थोड़ी देर–उस ताड़ की फुनगी के पास। नाची सुन्दरि नैका–छम्म-छम्माँ-आँ ! रात-भर के थके राकसो को मानो महुए के रस में मधु घोलकर पिला दिया गया ! झूम उठे–छम्म-छम्माँ !

"करिके सोलहो सिगार
गये मोतियन के हार
केशिया धरती लोटाय
चुनरी मोती बरसाय
चुन्नी-पन्नों बिखराय-य, छम्म-छम्मों नाचे सुन्दरि नैका !
आँख मारे !··· रे भैर्रा-आ-ह-दाँत मा रो-ओ !

"कुलबुलाकर पानी के सोते परती पर दौड़े–कलकल-कलकल ! कुल-कुल-कुल-कुल !" सारगी पर एक महीन कारीगरी की रघ्घू रामायनी ने, पानी की कुलबुलाहट को स्वर मिला। झनक तार पर लहरे आयी !

'कि देस-बिदेस के किसिम-किसिम के, रंग-बिरंग के पुरइन सूरज की किरनो के परस से खिल उठे। कुण्ड में सोने की मछलियाँ छहकने लगी। जल बिनु तडपते लोगों ने कुण्ड में नहा-नहाकर जलपान किया। तृप्त होकर आशीर्वाद दिया जैवार-भर के पंचों ने–"तोहर सब दोख माफ। देवकुमर दुलहा मिले सुन्दरि नैका को !"

"रघ्घू रामायनी की सारंगी स्पष्ट आखर बोलती है ! राकसो का गीत गाते समय उसके चेहरे की ओर गौर से देखा था ? लगता था, उसके पोपले मुँह मे दो बड़े-बडे दाँत उग आये हैं ! अर्धांग से अधमरी उँगलियों की कारीगरी ! 'दाँत मार रे' कहने के बाद खच्चाक, फिर खट् की आवाज ! सारंगी के काठ पर उँगली मारकर ध्वनि पैदा करता था। पातालपुरी मे कच्छप महाराज की पीठ पर दाँत बजते–खट् ! सारंगी के तारों पर नौ सौ घुँघरू झनकते थे–सुन्दरि नैका के नाच के साथ !"

"दाँत मारे ? उसकी याद मत दिलावे कोई। देह सिहर उठती है।"

"भोर मे फेर देखिबो सुन्नरि कन्ना। राकसों को भी सुन्दर चीज सुन्दर ही लगती है। अहा-हा ! कितनी लालसा ! मानुस-छोरी सुन्नरि कन्ना उनकी सर्दारिन होकर जायेगी !"

"एम्माँ-आँ-आँ ! तूत-गाछ-तले कौन खड़ा है ?"

"तू हमेशा ढंग पसारती है मलारी ! अपने भी डरती है, दूसरों को भी डराती

है। कहॉं है कोई ?"

"मलारी को भी कोई दन्ता राकस लुका-चोरी खेलने के लिए बुला रहा है, शायद !"

"अब, कल से तुम भी पॉच कुण्डा खोदाओ मलारी !"

सेविया दीदी जब बोलती है तो साफ बात—"यह मलारी छौंडी जहॉं जायेगी वहॉं आगे-पीछे ऐसे ही भूत-पिशाच, देब-दानब चक्कर मारेगे। तूत-तले तो सचमुच कोई है !"

"मुझे क्यो दोख देती है सेवियादी ? मै खुद डर से मरी जा रही हूँ। देखा न !"

तूत-तले खडे व्यक्ति ने टार्च जलाया।

"ए ! कौन भलामानुस है ? छौडी सबकी ऑंख पर लैट मारकर चकचौधी लगाता है ?"

एक लडकी ने दबी आवाज मे कहा--"जरूर बाबू-टोली का कोई कलेजवा बाबू होगा।"

"मामा ने ठीक नाम रखा है, कलेजवा बाबू !"

तूत तले खडा आदमी बोला—"इस झुण्ड म मलारी भी है ?"

"वही देखो !"

"कौन हे ?" मलारी बोली। आवाज सुवंश की तो नही !

"मैं प्रेमकुमार दीवाना ! बात यह है कि !"

"जो बात है सो दिन म नही हो सकती ?"

"तुम भी याने पढी लिखी होकर भी तुम थर्डक्लास गीत, महराय सुनने जाती हो ?"

"अकेले मैं ही पढी-लिखी हूँ गॉव मे ? आप लोगो के मारे अब !"

सेविया दीदी ने कहा—"क्प कहता है सो सुन ले पहले। रात मे रास्ता रोक के जब कहने आया है तो जरूर कोई जरूरी बात होगी।"

मलारी हनहनाती हुई, पगडण्डी पर बढ़ गयी—"कल ही मैं इन्साफ करवाती हूँ, पॉच पच मे। क्या समझ लिया है लागो ने !"

दो कदम आगे बढकर, बगीचे से बाहर जाकर मलारी ने आवाज दी—"बप्पा-आ-आ-हो ! बप्पा !"

सभी औरते खिलखिलाकर हॅंस पडी—प्रेमकुमार दीवाना तो तुरत ॲंधेरे मे बिला गया—"ही-ही-ही ! हा-हा-हा ! नाम भी खूब रखा है अपना "

"परेमकु-मार दीमाना !"

"ए, मलारी-ई, घोडपाडा भागा। चुप रह !"

"मॅंगनी सिघ दीमाना रात भर सपना देखेगा—ऑंख मारे !"

सुरपति की डायरी मे कई पृष्ठो पर लाल रोशनाई से लिखी हुई पक्तियॉं :

—आज परानपुर की पुरानी परती पर डेढ सौ पौधे रोपे गये पहली बार ! अमलतास, जोजनगन्धा, गुलमुहर, छोटानागपुर ग्लोरी, सेमल, आसन। तरह-तरह के पौधे !

एक पृष्ठ पर कटी हुई पंक्तियाँ : आज पहली बार ताजमनी दी से बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लिखा गया है : पवित्र सुन्दरता की प्रतिमा का मधुर मायामय स्वर सुना ! अन्तिम पृष्ठ पर रघ्घू रामायनी और सुन्दरि नैका गीत-कथा से सम्बन्धित बाते।··· ताजमनी दी को कितना धन्यवाद दूँ बहुमूल्य प्राप्ति के लिए !

लुत्तो हैरान है !

·साला, क्या कहते हैं कि छोटे लोगो की बुद्धि भी छोटी ! उस दिन महावीरजी का धुजा छूकर कसम खायी सबने। और, रघ्घू बूढ़े ने सारंगी पर रिब-रिब-रें-रे किया कि सब जाकर हाजिर हो गये, बालबच्चा-सहित ! लुत्तो ने लक्ष्य किया है, जित्तन को एक बार नजदीक से देख लेने के बाद लोगों को न जाने क्या हो जाता है ! आज सुबह से ही वह गाँव मे घूम-घूमकर सुन आया है—चुपचाप। ·अहा-हा, टूअर हो गये हैं जित्तन बाबू ! हाय-हाय, कैसा सुन्नर सरीर था, अब कैसा हो गये हैं !

लुत्तो मन-ही-मन कहता है—होगा क्या ! रोज, साला मुर्गी का अण्डा खाता है। मछली की मूड़ी चाभता है। ब्राण्डील भी ढालता होगा। तब न ऐश करता है तजमनियाँ का हवेली में बुलाकर ! साला

गाँव की टोलियों में, खासकर सोलकन्हटोली में फिर से राजनीतिक लगी लगाने की बात सोच रहा है लुत्तो—साला ! लाज-लिहाज धोकर पी गया। दिन-दहाडे तजमनियाँ को हवेली में रखने लगा, अब तो !

··· सारे परानपुर के लोग हहाकर उसकी हवेली पर टूटते नहीं क्यों ? हवेली के चारों ओर लुत्तो की 'जन्ता' हाथ मे लोहा-लक्कड़, ईट-पत्थर, आसा-सोटा लेकर चिल्ला रही है। लुत्तो हुकुम देता है—पकड लाओ साले जित्तन को ! हम लाल दगनी से दागेगा।· दागेगा !

"रे बँगटा ! अभी· हवेलीवाला सिपाही पकड़कर पीठ दागेगा। भैंस कहाँ है तेरी ? परती पर बगिया लगाया है कि आफत है ! जल्दी दौड़ के जा, नही तो पीठ दागेगा ! लुत्तो की स्त्री अपने बँगटा को पुकारकर कह रही है, अबेर में।"

लुत्तो आज पहली बार दिन मे सो गया, अलसाकर। कितना बढ़िया सपना था !

लुत्तो ने पुकारकर कहा—"ए, बिठैलीवाली ! तुम्हारी यह आदत बहुत बुरी है। पीठ दागेगा लबेज कहाँ से सीखी है ! कौन साला दाग सकता है ? रे बँगटा ! आज से तू भैंस खुल्ला रख। देखें तो कौन क्या कर लेता है !"

बिठैलीवाली आजकल अपने पति लुत्तो से दूर-दूर रहती है। छोटी-छोटी बात पर तमककर माँ-बाप लगाकर गाली देता है। ·कौन ठिकाना ! रोशनबिस्वाँ और गरुड़ झा के साथ नट्टिनटोली जाने लगा है। कल, दिन में पेट-दर्द का बहाना बनाकर रूठी सोयी पड़ी रही बैठलीवाली। लुत्तो पूछने भी न गया। रात में, आँखें तरेरकर कहा लुत्तो ने—"तुम क्या जानो कि मैं किसलिए नट्टिनटोली जाता हूँ ? राजनेति की बात तुम क्या जानो ! खबरदार ! मैं कहाँ जाता हूँ, नहीं जाता हूँ, क्या करता हूँ, यह सब पूछना है तो सीधे नैहर का रास्ता नापो !··· तुम्हारे मगज में भगवान ने उतनी बुद्धि नहीं दी है। हॉ-हाँ, चली जाओ ! बड़ा नैहर का गुमान दिखाती है, तो चली जा ! लेकिन, याद रखो, यदि किसी दिन हम मिनिस्टर हुए, और भाई-बाप को लेकर कभी आओगी तो हमारा चपरासी तुमको अन्दर आने ही नहीं देगा !"

बिठैलीवाली डर से चुप हो गयी।

लुत्तो को अब किसी पर विश्वास नहीं। बीरभद्दर भी सुथनी आदमी है ! किसी से कुछ नही होगा। लुत्तो अकेला ही सबकुछ करेगा। ग्राम-पंचायत का चुनाव सामने है। यदि यही हालत रही तो जित्तन मुखिया हो जायेगा, दिन-दहाड़े। नहीं, इस तरह काम नही चलेगा।

"जै हिन्द !"

"कौन ? बालगोबिन ! आओ। मैं अभी तुम्हारे घर की ओर जा रहा था। क्या लीडरी करते हो जी ! अपनी जाति की औरतो पर भी तुम्हारा कोई परभाव नही। कोई परवाह ही नही करती है ? कोई भैलू नही तुम्हारा ?" एक साथ परभाव, परवाह और भैलूवाली बात न बालगोबिन के मुँह का थूक सुखा दिया। मुँह चटपटाकर वह बोला—"सब टोले का यही हाल है।"

"लेकिन, तुम्हारे टोले की मलारी तो जित्तन पर फिदा है। जित्तन पर ही क्यों, बाभन, रजपूत और भूमिहारटोली के लड़कों से जाकर पूछो। सबको लेटर पर लेटर लिखती है। उसको सँभालो पहले। प्रेमकुमार दीवानाजी से पूछो जरा।"

बालगोबिन को लुत्तो की बात बुरी लगती है। कोई भी बात हो, औरतों पर बात फेंक देता है। पहले अपने टोले की लड़कियों को छान-पगहा लगावे। बालगोबिन बोला—"उसके बाप को कहिए !"

"तब कर चुके तुम लीडरी ! बाप की बात बडी या लीडर की ? बोलो ! जवाब दो, किसकी बात का ज्यादे पोजीशन है ? इसीलिए जब कुछ कहते हैं तो कहते हो कि लुत्तो बाबू कूट करते हैं हमेशा !"

बालगोबिन को कबूल करना पड़ा—लीडर की बात बडी !

हर टोले के लीडर को बुलाया है लुत्तो ने। अरजण्टी मिटिंग है।

केयटटोली का इंचार्ज गोधनलाल ने कुर्ता खोलकर उतारते हुए कहा—"ले लीजिए इंचारजी ! नही करेंगे इंचारजी !··किसको समझावें ! बड़े-बूढ़े तो और भी बेवकूफी करते हैं। रात में रोकता रह गया कि मत जाओ कोई ! लेकिन।"

"आज, अभी से सब रसोई-पानी बनाकर तैयार हैं। घर-घर। फिर जायेंगे सभी।" गंगोलाटोली का कार्यकर्ता बोला।

"सभी कहते हैं, नाच-तमाशा, गीत-भजन सुनने जाने में क्या हरज है !"

लुत्तो ने बीरभद्दर की ओर देखा–देखिए, कितना कठिन काम है सोलकन्ह लोगो का संगठन करना ! गैर-सोलकन्हटोली के तीन-चार व्यक्ति-विशेष निमन्त्रण पर उपस्थित हैं–अरजण्टी मिटिंग में। बीरभद्दर बाबू, रोशनबिस्वाँ, गरुड़धुज झा और प्रेमकुमार दीवाना ! दीवाना बोला–"जब तक सोलकन्ह-नाटक-मण्डली नहीं बनाते, लोगों को समझाना मुश्किल है।"

लुत्तो ने दीवाना की उलझाई बात को मानो सुलझाते हुए कहा–"सब कोई जरा गौर से सुनिए। बात यह है कि ग्राम-पंचायत का चुनाव होनेवाला है। बबुआनटोलीवाले तो हम लोगो से ज्यादा नही हैं, मैजरोटी में। ग्राम-पंचायत की मुखियागिरी, सोलकन्ह लोगों की रखी हुई है। यहाँ बबुआनटोली के भी कई बाबू बैठे हैं, किसी से छिपाकर नहीं कहता कोई बात। इनके मुँह पर कहता हूँ कि हम लोग अब इन लोगो को रास पकड़कर चलावेंगे। "

गरुड़धुज झा ने खैनी थूकते हुए, पत्थर का दाँत चमकाया–"बात तो ठीक कहते हो, लुत्तो बाबू ! लेकिन, मुखियागिरी करेंगे बबुआनटोलीवाले ही।"

"हरगिज नहीं।"

"तुम देख लेना ! रात में ही तो देखा, रघ्घू बूढ़े की सारंगी की बोली पर लोग इस तरह टूटे मानो परसाद बँट रहा है। दुश्मनी साधने के लिए आदमी सबकुछ कर सकता है। यदि वह थाना में पकड़कर चालान कर देता कि चोरी या डकैती किया है, तब मालूम होता गीत सुनने का मजा !"

"रघ्घू बूढ़े को बैकाट किया जाये पहले !" एक सोलकन्ह लीडर ने उत्तेजित होकर कहा–"सोलकन्ह होकर वह हमारी बन्दिश से बाहर कैसे जा सकता है ?" लुत्तो अपनी मिटिंग में किसी दूसरे को बोलने का मौका नहीं देना चाहता, कभी। लेकिन, गरुड़धुज झा को उसने कहा–"और जो कुछ बोलना है, बोल लीजिए आप पहले।"

"बोलना क्या है ! आज फिर देख लेना। दो घण्टे के बाद ही। ज्यो ही सारगी कुँकवायी कि··।"

"हरगिज नहीं, हरगिज नहीं !" लुत्तो ताव में आ गया–"झाजी ! देख लीजिएगा आप भी आज रात, बीच चौबटिया पर खड़ा होकर। एक चेगड़ा भी नहीं जायेगा।" लुत्तो ने अपनी सोलकन्ह समिति के सदस्यों की ओर मुड़कर कहा–"क्यों जी ! बोलते क्यों नहीं तुम लोग ?·· जायेगा एक चेंगड़ा भी ?"

समिति में सन्नाटा छा गया। तब, लुत्तो ने फिर समझाना शुरू किया–"सर्वे के समय इस संगठन का मीठा फल हम चख चुके हैं और चखनेवाले हैं। इस सगठन में जिन लोगों ने थोड़ा भी लामकाफ किया, कांग्रेस छोड़कर सोसलिस्ट में गये, मिली जमीन उन्हें ? देखा ?"

बालगोबिन ने कहा–"जरा हमको फुर्सत दीजिए सभी पंच। हमारे टोले में न जाने क्यों बड़ा जोरावर झगड़ा शुरू हुआ है। सुनिए !"

सभी ने कान लगाकर सुना–"हाँ। रैदासटोली में ही है यह झगड़ा !"

"मलारी की आवाज है !"

दीवाना ने कहा–"लड़की बरबाद हो गयी। थी खूब चान्सवाली, लेकिन !"

बालगोबिन की स्त्री, मलारी के पड़ोस की सुखनी मौसी के यहाँ कड़ाही माँगने गयी–"सुन्नरि नैका सुनने के लिए जाती हो क्या ? अब तो अपने टोले में ही सुन्नरि नैका की लीला होगी। देखना !"

बालगोबिन की स्त्री से चमारटोली की सभी औरतें डरती हैं। बिना गन्दी बात निकाले वह कुछ बोल ही नहीं सकती। सुखनी मौसी बोली–"लीला कहाँ होगी, तुम्हारे मचान के पास ?"

"मेरे मचान के पास क्यों ! तुम्हारे पड़ोस में ही होगी लीला। तुमको नहीं मालूम ? अरे ! बगल मे ही चुह-चुहकर हिन्नूचा गरमागरम पीते हैं लोग। तुमको एक भी कुलफी नहीं मिली क्या ?"

सुखनी मौसी ने कुछ नही समझा। बालगोबिन की स्त्री अभी-अभी कामेसर की दुकान गयी थी, नून लाने के लिए। दुकान मे गरमागरम चाह की बात चल रही थी, गरमागरम !

मलारी ने बालगोबिन की स्त्री की धारवाली बोली को परख लिया। वह मन-ही-मन कछमछाकर रह गयी। मलारी की माँ अब कैसे चुप रहे ! सुखनी मौसी के बगल मे, पडोस में तो उसी की झोंपड़ी है ! "बगल में कौन चाह की दुकान है, यहाँ ? क्या बकती है ?"

कड़ाही लेकर सुखनी मौसी के आँगन से निकलती हुई बोली बालगोबिन की बहू–"खाली चाह नही, हिन्नूचा गरमागरम !"

मलारी की माँ को बालगोबिन की बहू की बात में मांस की गन्ध लगी, मानो। इस टोली में वही सबसे गयी-गुजरी है, क्या ? उसकी बेटी को कल ही पचास रुपये मिले हैं, मुसहरा के। बालगोबिन को जब कोई कांगरेसी बात समझ में नहीं आती है तो वह भी दौडकर मलारी के पास आता है–कागज पढ़वाने। और उसकी बहू कमर में साड़ी लपेटकर झगड़ा का बहना ढूँढ़ती है ? आँगन से निकलकर बोली मलारी की माँ–"ए ! बालगोबिन नहीं है घर में क्या ?"

"नहीं है घर में। मिटिन में गया है।" बालगोबिन की स्त्री अपनी झोंपड़ी की ओर जाती हुई बोली–"मैं बकती हूँ तो अपनी मास्टरनी बेटी से कहो न, हाथ में बेंत लेकर आयेगी मारने ! अब तो शहर की हवा खा आयी है।"

मलारी की माँ की समझ में नहीं आयी बात। बात का छोर पकड़ने के लिए उसने मलारी से कहा–"क्या है री मलरिया ? क्या कहती है बालगोबिन की बहू, जरा बूझ तो !" मलारी इंगलिश-टीचर खोलकर 'वह मेमना मेरा है' रट रही थी।

बोली—"मैया ! उस दिन मैं एक टैन से शहर अररिया-कोठ गयी थी। जीवन बीमा करवायी हूँ न ! सुवंश बाबू बीमा कम्पनी के एजेण्ट हैं। अररिया-कोठ अस्पताल की डॉक्टरनी से जाँच करवाकर तब जीवन बीमा होगा। इसलिए… !"

मलारी की माँ ने पूछा—"किसके साथ गयी थी ?"

मलारी का बाप महीचन दारू पीकर लौटा—"साला ! कलाली में हिन्नूचा गरमागरम सुनते-सुनते मिजाज गरम हो गया। कहाँ, मलारी की माँ ! कहाँ है मलारी ?"

मलारी का मुँह पीला पड़ गया ! अब, तीन दिन वह क्या पढ़ाने जा सकेगी ! हल्दी और चूना गरम करके तैयार रखे। मलारी थर-थर काँपने लगी। ‥ बप्पा का हाथ तो ढोल बजाया हुआ हाथ है।

मलारी की माँ, तब तक एक चाँटा जड़ चुकी थी मलारी के गाल पर—"मैं बूढ़ी हो गयी, लेकिन आज तक टीशन के बाजार पर भी बिना किसी को संग लिये नहीं गयी। और तू मास्टरनी होते ही उड़ने लगी ?… बाप को जवाब दो जाकर !"

"कहाँ रमदेवा ? कहाँ है तुम्हारी माँ ? बुलाओ सभी को। इधर चोट पर लाओ, अभी !"

मलारी की माँ को हठात् अपनी बेटी पर दया उमड़ आयी; गला दाबकर बोली—"बोल, अब क्या जवाब देगी बाप को ?"

"क्या कहते हो मलारी की माँ को ? क्या हुआ ?"

"झोंपड़ी के अन्दर से पूछती है कि क्या हुआ ? बाहर निकल जरा, दोनों को अभी हिन्नूचा पिलाता हूँ, गरमागरम !"

मलारी की माँ झोंपड़ी से बाहर निकलकर बोली—"तुम बड़े अबूझ हो ! बे-बात की बात… !"

"बे-बात की बात ? लगाऊँगा अभी ऐसा लात कि‥ !"

"धीरे-धीरे बोल नहीं सकते ?"

"क्यों गयी थी अररिया-कोठ ? पूछ, अपनी बेटी से। किसके हुकुम से गयी थी ? किसके साथ गयी थी, पूछ !"

"सरकारी काम से गयी थी। सरकारी नौकरी करती है, सरकारी हुकुम नहीं मानेगी ? गाँव के लोगों का कलेजा जलता है। बे-बात की बात नहीं बोलेंगे, तो कलेजा ठण्डा कैसे होगा ?"

बालगोबिन अरजण्टी मिटिंग छोड़कर दौड़ा आया है—"क्या है महीचन ? मलारी की माँ ! तुम लोगों के चलते मेरी मेम्बरी मारी जायेगी, देखता हूँ।"

महीचन ने, नशे में, मलारी की माँ की आँख के इशारे का कोई मतलब नहीं समझा। मलारी की माँ चुप रहने को कह रही थी। लेकिन, महीचन ने चिल्लाना शुरू किया—"ए बालगोबिन, बड़ा जात का लीडर बने हो ! दूसरी जात के लोग इज्जत खराब कर रहे हैं।"

"दूसरी जाति के लोगों को दोख मत दो ! बालगोबिन आज साफ-साफ कह देगा—कहाँ है मलारी ? सामने आकर सवाल का जवाब दो !"

टोले के लोग महीचन के आँगन में आकर जमा होने लगे। बजाप्ता पंचायत बैठ गयी तुरत।··· हाँ, हाँ, मार-पीट, हल्ला-गुल्ला नहीं। जब मजारी अपने माँ-बाप के कस-कब्जा में नहीं, तो जात की पंचायत को अब सोचना चाहिए उसके बारे में ! महीचन बेचारे का क्या दोख ? उसने तो साफ कह दिया कि उसकी बेटी अब उसकी बात में नहीं ! पंचायत का सरदार झल्लू मोची है। लेकिन वह क्या बोले, बालगोबिन के सामने ! उसने बालगोबिन पर बात फेंक दी–"कंगरेसी झमेला है, यह तुम्ही बूझो।"

बालगोबिन ने एक ही साथ कई सवाल किया–"पहला सवाल यह है कि मलारी क्यों गयी अररिया-कोठ, अकेली ? दूसरी बात, गयी तो गयी–सुवंशलाल के साथ क्यों गयी ? हिन्नूचा गरमागरम क्यों पी ? दो जवाब !"

मलारी की माँ ने अपनी बेटी की ओर देखा। मलारी बहुत देर से चुपचाप खडी, लोगों की बात सुन रही थी। ओसारे से नीचे आँगन में गयी। पंचायत के सामने खड़ी हो गयी। क्यों डरे वह ?–"मैंने जीवन-बीमा करवाया है। सुवंश बाबू बीमा कम्पनी के एजेण्ट हैं। अररिया-कोठ की डाक्टरनी के यहाँ तन्दुरुस्ती की जाँच कराने गयी थी। सुवंश बाबू ने मेरा जीवन बीमा किया है···।"

"क्या-क्या बोल रही है, तुम्हीं बूझो बालगोबिन ! जौबन बीमा की तन्दुरसती क्या है ?"

"हाँ-हाँ, पहले बोलने दो क्या-क्या जवाब देती है।"

"सुनोगे और क्या ? हम लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं तो क्या एकदम जानवर हैं ? इतनी-सी बात नहीं बूझेंगे ? साफ-साफ कह रही है कि सुवंशलाल ने उसका बीमा उठा लिया है जैसे तजमनियों का बीमा जित्तन··।"

"चुप रहो ! सभी कोई लीडरी मत करो। सवाल उससे किया है, जवाब देते हो तुम लोग। अच्छी बात। तुमने सुवंशलाल को जिनगी का बीमा क्यो दिया ? इस बात का जवाब दो।"

"पहले, अपने सभापति से जाकर जीवन बीमा का मतलब समझ आओ। सुवशलाल ने गाँव मे बहुत लोगां का बीमा किया है। स्कूल की सभी मास्टरनी ने जीवन बीमा करवाया है।" मलारी ने झिड़की दी।

बालगोबिन के कान लाल हो गये–"सुनते हो जी महीचन ! पंच लोग ! सुन रहे हो न सब ? औरत-मर्द, बाल-बच्चे सभी हैं। कैसी बोली बोल रही है मलारी !"

"क्या बोल रही हूँ ! जीवन बीमा ।"

"रखो, जीवन बीमा ! हमको भी मालूम है कि जीवन बीमा क्या होता है। जब हर जात के अलग-अलग लीडर होते हैं तो अपनी जाति का एजण्ट भी कहीं-न-कहीं होगा, जरूर ?· परजात से जीवन बीमा करवायी है और बढ़-बढ़कर बोलती है ?"

"और, एक सवाल का जवाब तो दिया ही नहीं। हिन्नूचा गरमागरमवाला सवाल !" एक नौजवान चमार ने कहा।

मलारी बोली–"चाय तो दारू नहीं ?"

बालगोबिन ने कहा–"चाय पीने में कोई हरज नहीं है। मगर, सुवशलाल ने इसके हाथ का छुआ चाय क्यों पिया, सवाल यह है !"

"सुवंश बाबू जात-धरम नहीं मानते। गाँव में बहुत-से लोग हैं जो छुआछूत नहीं मानते।"

"साफ-साफ क्यों नहीं कहती कि चिकनी-चुरमुनी चमारिन छौंड़ी के हाथ का छुआ खाने को सभी ललचते हैं !" बालगोबिन की स्त्री की बात कभी भोथरी नहीं निकलती ! औरतों ने अपनी मण्डली में टीका-टिपकारी शुरू की तो मलारी की माँ से चुप नहीं रहा गया। बोली–"जात-धरम की बात पीछे करना। पहले यह फैसला करो कि मलारी सरकारी नौकरी करे या नही ? जात से फाजिल पढकर हमारी बेटी ने मास्टरी पास किया है। परजातवालों की छाती जलती है। तरह-तरह की बात उड़ावेंगे वे !"

"और दीवानाजी ने रात में रास्ता रोककर दिल्लगी किया है। सो भी सरकारी दिल्लगी है क्या ?" बालगोबिन ने दाँत कटकटाकर बात गडायी।

"लुत्तो बाबू कह रहे थे कि लेटरबक्कस में सबके नाम चिट्ठी डालती है। ऐसे में सरकारी नौकरी नही रहेगी, सो जान लो ! हाँ !"

जातिवालों ने एक स्वर से कहा–"मलारी की माँ जोर बात बोलती है।"

मलारी की माँ अब सचमुच में जोर-जोर से बोलने लगी–"मेरी बेटी पर अकलग लगाने के पहले अपना-अपना मुँह देख लो ! क्योकि, बात जब उकट रहे हो, तो मैं भी जानती हूँ उकटना ! पहले बालगोबिन यह जवाब दे कि जब बालगोविन घर में नहीं रहता है तो लुत्तो आकर उसके ऑगन मे, कभी झोपड़ी के अन्दर, घण्टा-पर-घण्टा क्यों बैठा रहता है ? उस समय जब कोई उसके आँगन में जाता है तो उसकी बहू क्यों झगड़ा करने पर उतारू हो जाती है ? और ।"

"ए, ए ! मलारी की माँ। चुप रहो। चुप रहती है या लगाऊँ लात ?" महीचन ने नशे में झूमते हुए कहा–"कहाँ रमदेवा ?"

… कुँहुँ-ऊँ ! हवेली की ओर से सारगी की आवाज आयी ! मलारी का ध्यान भग हुआ। वह झोपड़ी के अन्दर जाने लगी। बालगोबिन ने मलारी को रोका–"सुन लो मलारी ! सभी औरत-मर्द, बूढे-बच्चे–सुन ले। आज हवेली मे नैका की कथा सुनने कोई नही जायेगा। सुन लो ! मिटिग मे पास हुआ है, अभी !"

मलारी झोपडी के अन्दर चली गयी। मिटिग मे पास हुई बात सुनकर सभी सोच में पड गये। यह क्यों पास हुआ रे दैव। बालगोबिन ने समझाने के लिए भूमिका तैयार की। मलारी झोंपड़ी से बाहर निकली–हाथ में डण्डा लेकर। उसने साडी के खूँट को कमर में बाँध लिया था। बाहर आकर बोली–"गाँव में अठारह पार्टी हैं और रोज अठारह किसिम का प्रस्ताव पास होता है। हमारे स्कूल मे भी प्रस्ताव पास हुआ है। आज हेडमिस्ट्रेस ने नोटिस दिया है, गर्लगाइड की लड़कियाँ, रात में, हवेली में तैनात रहेंगी। मैं कैसे न जाऊँ ? वही सुनो, सीटी बजा रही

है। मेरी ड्यूटी है !"

—टु-टु-टू-ऊ-ऊ !

मलारी ने कमर में खोंसी सीटी निकालकर जवाब दिया—टु-टु-टू-ऊ-ऊ ! रैदासटोली के नर-नारियों ने हाथ में लाठी लेकर सीटी फूँकते देखा मलारी को तो उन्हें दुलारीदाय की याद आ गयी। चेहरे की तमतमाहट देखते हो ? मुँह कैसा बदल गया !

मलारी ने आँगन से निकलने के पहले कहा—"रात मे गाँव के कुछ बाबुओं ने हर टोले में कुछ हरकत की है। आज गर्लगाइड की ड्यूटी रहेगी। न झगड़ा, न हल्ला-गुल्ला और न रास्ते में भूत का डर !" बालगोबिन अवाक् होकर देखता रहा ! उसकी स्त्री ने उठते हुए कहा—"सीट्टीबाजी सुन लिया न, सबने अपने-अपने कान से ? मैं कहती थी न, कोई मीटी बजाता है रोज। जौबन बीमावाली जो-जो न सुनावे !"

मलारी की माँ अपनी बेटी को अकेले कैसे जाने देगी ! वह भी चल देती है।

" ओ-ओ-मानुस-छोरी मोहनियाँ आँ-ऑ पीरीतियो जनि तोड़े-ए-ए !" रघ्घू रामायनी के गीत की कड़ी मँडराने लगी। टूटी, अधूरी, पूरी कडी— मोहनियाँ ! पीरीतियो !

बालगोबिन ने देखा, उसकी बहू भी जाने को तैयार है। कह रही है, "जो कानून पास होगा, सभी के लिए। नही तो, किसी के लिए भी नहीं। दो जनि जा रही हैं तो हम लोग क्यों नहीं जायें !"

बालगोबिन ने कहा—"इस तरह सीट्टीबाजी करने से नौकरी नहीं रहेगी। सुन लो महीचन ! गॉव की बन्दिश, जाति की बन्दिश पहले तुम्हारे घर से ही टूट रही है।" महीचन का कुत्ता अचानक भूँकने लगता है।

रात मे सोलकन्ह टोले की हर टोली में, सीटी की आवाज सुनकर ड्यूटी पर दौडनेवाली लडकियों ने जाति की बन्दिश को तोड़ा। केयटटोली, गगोलाटोली और खवासटोली की लड़कियो का नाम दर्ज कर लिया है, लुत्तो ने ! लुत्तो गर्ल-स्कूल की मास्टरनियो को भी राजनीतिक लंगी लगायेगा क्या ?

छित्तन बाबू के गुहाल में कभी इतना मवेशी भी नहीं जमा हुआ होगा। आज सर्वे-कचहरी मे ज्यादा भीड है। दुलारीदाय जभावाली नत्थी में जित्तन बाबू बयान देने आ रहे हैं। तीन कुण्ड का दावेदार समसुद्दीन मियाँ खरैहिया के जमील बाबू मुख्तार से मिसिल बनवाकर ले आया है। दो कुण्ड पर केयटटोली के सुचितलाल ने दावा किया है। नकबजना सुचितलाल !...सारे परानपुर में पाँच सुचितलाल हैं। केयटटोली का नकबजना सुचितलाल अपने को सौ कानूनची का एक कानूनची

समझता है। लल्लू बाबू या अनिल बाबू वकीलों से क्या पूछने जायेगा, वह ! उसने जिरह करने के लिए ऐसा-ऐसा चुनिन्दा सवाल–"सँमझें ! ऐंसाँ चुनिन्दाँ जिरँह।" आज कचहरी की भीड़ में रह-रहकर सुचितलाल की पतली आवाज कूक उठती है। पान की दुकान पर, चायवाले के मचान पर–हर जगह, हर किस्म के लोगों से सुचितलाल अपनी कानूनी बुद्धि की बात सुनाता है–"अँभीं देख लींजियेंगाँ !

"आ गया ! जैण्टुलमैन साहब आ गया !" गरुड़धुज झा ने चाय की दुकान पर बैठे लोगों की ओर देखकर कहा–"आज तो जमीनवालों से तमाशबीनों की ही जमात बड़ी है !"

रोशनबिस्वाँ ने जीभ से ओठ चाटते हुए कहा– "देखो-देखो लुत्तो, गिरगिट को, कचहरी में एकदम सुदेशी डिजैन में आया है, धोती, कुर्ता, चादर पहन-ओढ़कर।"

लुत्तो ने कहा–"टहलने के समय जो ट्रेटमार्क पोशाक पहनकर निकलता है, उसमें आता तो आज कचहरी में मजा आ जाता !"

पेड़ों के नीचे बैठे लोग उठकर कचहरी-घर की ओर जाने लगे–जित्तन बाबू आ गये ! मीर समसुद्दीन और सुचितलाल ने माचिस की एक ही काठी में बीडी सुलगाकर बारी-बारी से धुआँ फेंका–"सुचितलाल मड़र ! पेशकार को पान-सुपाड़ी खाने के लिए कुछ देकर, पहले तुम अपनी नत्थी ही ऊपर करवाओ।"

सुचितलाल पुराना कचहरिया नहीं, लेकिन पुराने मुकदमाबाजों और मामलातगीरों के साथ वह रह चुका है। उसकी बोली महीन है तो क्या हुआ ? गरुड़धुज झा भी तो लम्बा है। रोशनबिस्वाँ काला है। सुचितलाल आज कचहरी में तमाशा लगा देगा। देखने-सुननेवाले भी याद रखेंगे कि गाँव में कभी सर्वे की कचहरी लगी थी। उसने इशारे से मीर समसुद्दीन को कहा–वह काम हो चुका है। पतली आवाज को मद्धिम करने पर भी उसकी बोली गनगनायी–"तँमाँशाँ लँगाँ देंगें। जराँ फुँकॉर तो होंने दींजियें।" गरुड़धुज झा ने हँसते हुए दूर से बात फेंकी–"अरे सुचितलाल मड़र, भोज में कुण्ड की मछली एक मन ऊपर करवाओगे तो ?"

"अँकबाँल आँप लोंगों काँ। साँलाँ एँक मँन क्याँ, एँकदँम फिरिं ईं-ईं। जिंतनीं मंछलीं चाहें··।"

"कहाँ-आ-आ-रूदल साह बनियाँ-आँ-आँ ! रूदल साह बनियाँ, हा-जि-र-हैय !"

"हाजिर है, हाजिर है। जरा सबुर करिये, लघुसंका करने गया है।"

"कहाँ सुचितलाल मड़र दाबेदार, जितेन्दरनाथ···।"

वटवृक्ष के नीचे, पीपल के पेड़ों के पास जमी हुई चौकडियाँ टूटीं। लोग बिखरे। कचहरी-घर की ओर चले।

आज हाकिम का रुख एकदम बदला हुआ है !

"चपरासी ! बेकार लोगों को अन्दर से निकालो। मछलीहट्टा बना देता है।" हाकिम साहब का दम घुट रहा है, मानो। रह-रहकर जित्तन बाबू की ओर नजर

फेंककर देख लेते हैं, हाकिम साहब।

पेशकार साहब कागज पर लिखते हुए पूछ रहे हैं–"नाम ? बाप का नाम ? उम्र ?"

कचहरी-घर शान्त है।

लुत्तो फिसफिसाकर समसुद्दीन के कान में कुछ कह रहा है। भिम्मल मामा चुपचाप खड़े हैं। मुंशी जलधारीलाल दास, बस्ता के कागजों को निकालकर छाँट रहा है। जित्तन बाबू के ओंठों पर फैली मुस्कराहट न घटती है, न बढ़ती है। हाकिम साहब बार-बार नजर फेंककर देख लेते हैं, जितेन्द्रनाथ मिश्र को।··· इस आदमी को कहीं देखा है ? कहाँ ?··· कहीं देखा जरूर है। ओ ! प्रोफेसर हालदार के बँगले पर ! पटना में।··· ठीक !

हाकिम ने मामले की सुनवायी शुरू की–"दुलारीदाय के पाँच जलकरों में से तीन पर मीर समसुद्दीन का दावा है। और बाकी दो पर ?"

"हँजूँर-मेंराँ-आँ-आँ !" सुचितलाल की बोली कचहरी-घर में गनगना उठी।

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"हँजूँर, बाँबूँ सुँचिंत्तँर लाँल भँड़ँर ! पेंसँर बाँबूँ बिंचित्तँर··· !"

लगता है, सुचितलाल की बोली कण्ठ के बदले नाक से निकल रही है। बबुआनटोली के लड़के जापानी-पोंपी कहते हैं उसको। अमीन साहब ने पर्चे पर लिखा है–सुचितलाल मडर। ब्रेकेट में–पोपी। पाँच-सात सुचितलाल हैं गाँव में।

"तुम्हारा एक नाम पोपी भी है ?" हाकिम ने पूछा।

"जीं नँहीं !··· हँजूँर उँसमें पोंपी लिंखाँ हुआ हैं ? एं ?"

भीड़ में से किसी ने कहा–"अब क्या ! अब तो नाम सर्वे के पाँच-पाँच रेक्ट में दर्ज हो गया। अब तो पोंपी ही !"

हाकिम ने जित्तन बाबू से पूछा–पाँचों जलकरों के मामले को एक साथ टेकअप करें ?"

जित्तन बाबू ने गर्दन हिलाकर सम्मति दी।

सुचितलाल मड़र को भारी धक्का लगा है। पोंपी नाम सर्वे के रिकाट में चढ़ गया ? जरूर यह काम मुंशी जलधारी ने करवाया है। सुचितलाल बार-बार जलधारीलाल दास को देखता है। जलधारीलाल दास की मुस्कराहट ! निर्विकार मुस्कराहट ! जिसका अर्थ सुचितलाल ने ठीक लगाया–कलम की मार है, पोंपी ! लुत्तो के कान में मीर समसुद्दीन कहता है–"लुत्तो बाबू ! मामला बड़ा गड़बड़ लौक रहा है। हाकिम इतना मोलायमियत से क्यों बतिया रहे हैं जित्तन से ?"

"आपका बयान ! लिखकर दीजिएगा ?"

"नहीं महोदय ! मुझे विशेष कुछ नहीं अर्ज करना है।"

जितेन्द्रनाथ ने बयान शुरू किया–"दुलारीदाय के पाँचों कुण्डों के अलग-अलग कागज हैं।·· पहले, बाबू सुचितलाल मड़र ने जिन कुण्डों पर तनाजा दिया है, मैं उन्हीं के बारे में बताऊँ। राज पारबंगा के मालिक ने किसी यज्ञ के उपलक्ष में

मेरे पितामह को दान मे दिया था। इन दोनो कुण्डो मे, मेरे पितामह ने लगातार दो महीने तक सहस्रो कमल की पखुडियो पर रक्त-चन्दन से नवग्रह शान्ति-यन्त्र लिखकर प्रवाहित किया था। महाराजा पारवगा ने दक्षिणा मे दोनो कुण्ड दे दिये। कागज पेश कर दिया गया है। और मेरे पिता ने इन दोनो कुण्डो का पट्टा कबूलियत मोसाम्मत राजमनी के नाम बना दिया। इन दोनो कुण्डो की मालकिन मोसम्मात राजमनी की बेटी ताजमनी है।"

"हॅजूॅर ! हॅमॉरी ॲरजी सुॅनिएॅ। मॅब खिलॉफ बॉत !"

जित्तन बाबू रुक गये। हाकिम ने सुचितलाल मडर को समझाया—"देखो जी, सुचितलाल मडर ! आज की तारीख सिर्फ जितेन्द्रनाथ के बयान के लिए रखी गयी है। तुम लोगो को जो कहना था, लिखकर दे चुके हो। बयान भी हो चुके हैं। फिर "

"हॅजूॅर ! ऍक जिॅरह कॅरने दीजिएॅ। हॅजूॅर जिरह कॅरने दियॉ जॉये।"

जित्तन बाबू ने कहा—"सुचितलाल मडर को जिरह करने का मौका दिया जाये !"

"मैं पहले आपका बयान ले लूॅगा, इसके बाद जिरह।"

"हॅजूॅर ! बॅस ऐक मॅवाल शुॅरू मे ।"

"पूछो, क्या पूछना है ?"

सुचितलाल मडर ने कठघरे मे खडे जितेन्द्रनाथ की ओर मुखातिब हाकर पूछा—"तॉजमॅनी ऑपकी कोन लॅगती हैं—ऍं ?"

"ताजमनी की मॉ के नाम रैयती हक लिखा है, इमलिए उसकी बेटी हमारी रैयत ।"

"रैयत वॉलॉ ऑ रिश्तॉ नॅही-ई ई !"

बडा कसकर पकडा है नकबजना सुचितलाल ने ! मुॅह पर हवाई उडने लगी जितेन्द्रनाथ की। वाह रे, सुचितलाल मडर ! एक ही सवाल मे पोपी बन्द कर दिया जित्तन का ! लुत्तो और रोशनबिस्वॉ की मुस्कराती हुई ऑखे मिली। बिस्वॉ ने जीभ से बार-बार ओठ चाटे।

"बीरभद्दर बाबू कचहरी नही आये हैं। नही तो, देखते आज !"

हाकिम साहब कागजो मे उलझ है—"मुसम्मात राजमनी गन्ध र-गन्धर्व ?"

"जी हॉ !"

लुत्तो ने मुस्कराते हुए कहा, हाकिम मे—"हुजूर ! गन्धरव-उन्धरव कुछ नही, राजमनी नटिटन को हम लोग जानते हैं।"

जितेन्द्रनाथ की मुस्कराहट कायम रही, ओठो पर—"ताजमनी मेरी रक्षिता है।"

"और राजमनी ?"

"मेरे पिताजी के गुरुभाई की रक्षिता थी।"

"ऐ ? क्या ? क्या कहा जित्तन ने ? रच्छिता का क्या मतलब ? रक्षिता माने रखेली ?"

"ऑपने तॉजमॅनी कॉ नॅथियॉ उॅतारॉ थॉ-ऑ-ऑ ?"

"हाँ-आँ ! तीसरा सवाल हाकिम को लिखा दीजिए।"

सुचितलाल मड़र अचरज से मुँह फाड़कर देखता है, देखता ही जाता है। उसने बस इसी नोक्स के भरोसे दोनों कुण्डो पर दावा किया था। जित्तन को ताजमनी के बारे में, बस एक ही सवाल पूछकर चुप कर देगा। बोली ही बन्द हो जायेगी जित्तन की। जवाब क्या देगा ? सो, दाल-भात की तरह कबूल कर लिया जित्तन ने ! अब वह क्या पूछेगा ?

जित्तन बाबू ने कहा—"बाकी तीन कुण्ड हमारे कब्जे में हैं। गीतवास कोठी की मालकिन ने मेरे अन्नप्राशन मे मुँहदिखाई दी थी—तीन जलकर, एक फलकर, एक बाँसबन, एक गोचर।"

"कोठी की मालकिन आपकी कौन ?" इस बार लुत्तो ने पूछा। अब समसुद्दीन के मामले की ओर बात आ रही है, लुत्तो को पूछने का हक है। वह पैरवीकार है !

"वह मेरी माँ थी !"

हाकिम ने चौंककर देखा—"माँ ? कैसी माँ ?"

"महोदय ! श्रोत्रिय मैथिल ब्राह्मणो मे बहु-विवाह की प्रथा थी। मेरे पितामह की पन्द्रह उप-पत्नियाँ थी। पिताजी ने सिर्फ दो।"

"मिसेस रोजउड आपकी सौतेली माँ थी ?"

"हाँ ! श्रीमती गीता मिश्रा।"

"नहीं हुजूर ! वह मेम रखेलिन थी।"

जितेन्द्रनाथ के मुखड़े पर मानो किसी ने अबीर मल दिया। आँखो के लाल डोरे स्पष्ट हो गये। किन्तु, मुस्कराहट बनी रही ओठों पर। हाकिम की ओर देखकर बोले—"पेश किये गये कागजो मे विवाह पत्र भी है। दोनो के हस्ताक्षर मे स्वीकृत दलील !"

हाकिम ने कल ही रख दी फैसले की तारीख। सभी मुकदमों की आखिरी तारीख !

आज की सुबह का सूरज जरा देर करके उगा, शायद ! गाँव के लोग, तीन बजे रात से ही उठकर प्रतीक्षा करते रहे। आज सर्वे-कचहरी में फैसला सुनाया जायेगा !

सुचितलाल के लड़के ने बहुत रोका। लेकिन, नाक की नोक पर आयी छींक भला रुके—ऑछी-ई !

"बँड़ाँ हँड़ाशंख हैं साँलां !" सुचितलाल ने अपने हडाशख और अभागे लडके की ठीक नाक पर थप्पड़ मारा। लड़का चीख-चीखकर रोने लगा और सुचितलाल की घरवाली आँगन से दौड़ती आयी—"हाय रे दैव ! बेटा को तो मारकर बेदम कर दिया। हैत्तेर हाथ में मारने की और कोई जगह नहीं मिली देह में ? नाक में मारकर मेरे बेटे को भी नकबजना बनाना चाहता है ?"

"खँबंरदाँर !"

"तूँहूँ खबरदाँर !"

दही, मछली देखकर, शुभ-लाभ के नेम-टेम करके, जै-गनेश करके घर से निकले हैं लोग। और, सुचितलाल का घर ठीक रास्ता के किनारे है ! सुचितलाल अपनी डेरावाली को धमकी दे रहा है, कचहरी से लौटकर बाप का बिहा आँख से दिखायेगा दोनों को। लड़का धरती पर लोट-लोटकर चिल्ला रहा है।

"अपने साथ गाँव-भर के लोगों की यात्रा खराब कर रहा है, सुचितलाल। ऐसा जानता तो इस रास्ते से क्यों आता ?"

"क्या कहावत है, कर-कर, कट-कट बाँस'क बानि, धरती लोटाय जौं बुतरू कानि। कहे घाघ सब कारज फूसि ।"

"क्यों सुचितलाल, झगड़ा-लड़ाई करने के लिए आज का ही दिन था ?"

"बड़ा मड़र मुखिया बनते हो और औरत पर कण्टरौल करना नहीं जानते !"

"अँरें-चँलो-चँलों। तुँम्हाँरीं घँरवाँलीं कों भीं जाँनताँ हूँ ·।"

"चलो भाई, जापानी हरमुनियाँ-पोपी को बजने दो।"

"तीनों चारों परानी बोल रहे हैं। साली, बकरी भी उसकी अभी ही मेमिया रही है।"

"हरमुनियाँ के भाथी में हवा दे रही है, उसकी जोरू और बेटा पटरियों पर अँगुली टीप रहा है, हरमुनियाँ चुप कैसे हो ?"

"हा-हा-हा-हा ! चलो, पेट भर हँस लिया, सब दोख कट गया।"

"चलो, चलो ! राय सुनने चलो, आज ही तो देखना है कि ऊँट किस करवट· !"

·टिड़िंग-टिड़िंग ! गरुड़धुज झा सायकिल की घण्टी बजाता हुआ आगे बढ़ गया। साथ में रोशनबिस्वाँ भी है–टिडिग-टिड़िग !

"यात्रा पर महाजन का मुँह देख लो, सब काम पक्का !" गरुड़धुज झा ने बात फेंकी।

बस, अब तीन-चार दिन का मेला है। सब चलाचली की बेला है। फारबिसगंज शहर से आये हुए चाय और पानवाले अपने नौकरो को हिदायत दे रहे हैं–"बकाया हिसाब की बही सामने रख देना !·चाय माँगे तो पहले मेरी ओर देखना। कुछ लोगों की नीयत अच्छी नही। रोशनबिस्वाँ को कल हिसाब देखने दिया तो गुम हो गया। फिर, बाद मे बोला–गरुड़ झा से पूछेंगे। पैंतीस रुपैया पानी में गया समझो !"

चपरासीजी आज जयहिन्द लेते-लेते परीशान हो गये हैं; पान खाते-खाते ओठ काले पड़ गये हैं। हाकिम के मन की बात थोड़ी चपरासी भी जानता होगा ! उसके मुँह पर ही लोग तारीफ कर रहे हैं–"बड़ा भला आदमी है चपरासीजी। वैसे तो बहुत-से चपरासी आये। लेकिन, सुभाव ? इतना अच्छा किसी चपरासी का

नहीं।·· भला-बुरा तो हर जगह होता है।"

पेशकार साहब निकले।

पेशकार साहब परानपुर के सभी टोलों के लोगों को पहचानते हैं, अलग-अलग, नाम-बनाम। आदमी को चराकर खाने का पेशा किया है। आदमी को नहीं पहचानेंगे पेशकार साहब ! बरामदे पर खड़े लोगों को झिड़की देते हैं—"भीड़ क्यों लगा रहे हो, अभी से ?"

"तो, इसका मतलब हुआ कि हाकिम आज देर से कचहरी में आयेंगे। मुंशी जलधारीलाल दास आज रेशमी कुरता पहनकर आया है। रामपखारन सिंघ ने पुरानी पगडी पर नया रंग चढ़ाया है।"

"अच्छा ! और लोगों को जमीन मिलेगी; खुशी से नाचेंगे। नहीं मिलेगी तो रोयेंगे। लेकिन मुंशीजी और सिंघ को क्या मिलेगा ? तिस पर भी देखो, पित्तपानी एक कर लगे रहे सर्वे में दोनों। जरा भी हिले नही।"

"सर्वे ने गरुड़धुज झा का दिन फेर दिया।"

"वाह, वाह रे सर्वे का जमाना ! अररिया-कोठ के बदले गाँव में ही छित्तन बाबू के गुहाल में तीन साल तक लोगों ने कचहरी का मजा लूट लिया। बिना हाकिमी पास किये ही गरुड़ झा को हाकिमों से ज्यादा कमाते देख लिया।"

"छित्तन बाबू भी मौज मे रहे। पुराने गुहाल का भाड़ा एक सौ रुपैया के दर से, छत्तीस महीने का भाड़ा जोड लो।"

"उसमें भी आधा गरुड़धुज झा का। सौदा उसी ने पटा दिया था न !"

"मुझे तो मालूम हुआ है कि सरकार से हाकिम लोग तीन सौ रुपैया फी-महीना भाड़ा वसूलते हैं !" एक आदमी ने मद्धिम आवाज में कहा।

"उसमें भी गरुडधुज झा का आधा !"

तीन साल के छत्तीस महीने से, ''रइन के पातों पर पानी की बूँदों-जैसे ढुलकते आदमी के विश्वास !

अमीनों का पहला जत्था जिस दिन आया, लोगों के दिलों की धड़कन उसी दिन अस्वाभाविक हुई। और, आज तो दो घण्टे पहाड़ हो रहे हैं। कलेजा जूट मिल की तरह धड़कता है।

"सिंगेसर को देखो ! मैंने मार्क करके देखा है, बीस बार उसने वाटरमेक किया है, उस पेड़ के पास बैठकर।" अर्जुनलाल ने कहा। तेतरटोली का एकलौता मैट्रिक-पास अर्जुनलाल के जैसा अंग्रेजी गाँव में कोई नहीं बोलता। लुत्तो को रोज एक घण्टा अंग्रेजी पढ़ाता है। तीन हिस्सा अंग्रेजी और एक हिस्सा गाँव की बोली मिलाकर बोलता है, वह। भिम्मलीय नाम—ओरिजनल। ओरिजनल कहता है—"इतना टाइम कैसे किल किया जाये ? प्लेइंग कार्ड नहीं लाया है कोई ? दो गेम !"

खवासटोले के टेटन बूढ़े को क्या हो गया है ? लोगों की भीड़ के पास जाकर, बारी-बारी से सबको हाथ जोड़कर पाँवलागी कर रहा है। दो शब्द बोलते-बोलते

आँखो मे आँसू झरने लगते हैं। अजीब आदमी है, यह टेटन !

"ए टेटन ! कहाँ से सुन आये तुम अपनी राय ? कचहरी तो अभी बैठी भी नही है, रो क्यो रहे हो ?"

टेटन बूढ़ा आँसू पोछकर कहता है—"यो ही। विचार हुआ कि सबसे हिल-मिलकर पॉवलागी कर लिया जाये। कहा सुना माफ !"

"तुम कोई तीरथ करने जा रहे हो ?"

"नही, यो ही मन मे हुआ कि जरा ।"

लुत्तो कडककर कहता है—"ऐ टेटन ! सट्टप ! काहे रोते हो ?"

इन्ही लोगो के चलते लुत्तो को खवासटोली मे रहने का मन नही करता। जाकर, सभी जात के लोगो को पॉवलागी कर रहा था ! पागल !

टेटन का बेटा भेटन बोला, समझाकर—"मत कहिए कुछ ! जब से हवेली से गीत सुनकर आया है, इसकी मति गति एकदम बदल गयी है।"

"लो, मजा !"

"जयदेव बाबू भी आये हैं ? मकबूल भी ?"

इस सर्वे मे सोशलिस्ट पार्टीवाले मात खा गये। प्रस्ताव पास कर दिया कि पॉच सौ एकड तक जमीनवाले किसानो की जमीन पर किसी किस्म का दावा नही किया जाये। गॉव मे पॉच सौ एकडवाले किसान बबुआनटोली मे भी इने-गिने ही हैं। सो, हलवाहा चरवाह भी बहुत मुश्किल से रख सके हैं, जयदेव बाबू। कुल पन्द्रह मेम्बरो मे पॉच रामनिहारा के साथ निकले या निकाले गये। बाकी दस मेम्बरो के घरवालो ने एक दूसरे मेम्बर की जमीन पर तनाजे दिये हैं, दावे किये हैं। पार्टी मे घरेलू झगडा होने लगे तो हुआ ! जयदेव बाबू हमेशा खुश रहते हैं, लेकिन।

"एमेले-टिकट के लिए लैनकिलियर हो गया जयदेव बाबू का। बेखटक टिकट मिल जायेगा पाटी का ! रार्मनिहोरा को निकालकर निष्कण्टक हो गये।"

"कहाँ-ऑ-ऑ बरकत मियाँ ! जितेन्द्रनाथ मिसरा जमीदार हा आ आ-जिर है य !"

"लो, पहले मुसलमानटोली से ही शुरू किया ?"

"बिसमिल्लाह !"

"कितनी जमीन पर दावा किया था ?"

"पॉच एकड, तीन डिसमिल।"

"जाओ ! जमीन तुमको हुई।"

"या अल्ला ! या अल्ला "

चपरासी ने बरकत मियॉ को बाहर करते हुए कहा—"अल्ला-खुदा मसजिद मे जाकर करो। भीड मत लगाओ !"

"चपरासी ! पुकारो, मुसम्मात राजो।"

"राजो का बेटा आया है, हजूर !"

एक दस ग्यारह साल का लडका कठघरे मे जाकर खडा हो जाता है।

हाकिम ने पूछा–'कितनी जमीन पर तनाजा दिया था तुम्हारी माँ ने ?"

लड़के ने रटे हुए तोते की तरह कहा–"एक पर्चा तीन एकड़, दूसरा दो एकड़ !"

"जाओ ! जमीन मिली !"

"ईमान से ? लड़के ने पूछा। सभी हँस पड़े।

हाकिम साहब नाराज हुए–"चपरासी, भीड़ हटाओ ! जल्दी-जल्दी पुकारो !"

सर्वे-कचहरी में ऐसी लहर कभी नहीं आयी। तीन साल तक रंग-बिरंगे आशाओं के गुब्बारे, रेशमी डोरियों मे बँधे, हवा में फूले-फूले उड़ते रहे। आज रह-रहकर गुब्बारे फटते हैं, फट्टाक् !–आछीं-इ-क् !

"कहाँ सुचितलाल मड़र !"

"हाँजिर हैं, हाँजिर हैं !"

हाकिम ने कहा–"सुनो जी सुचितलाल, मैंने जोड़कर देखा है, तुमने पूरे तीन सौ एकड़ जमीन पर तनाजा दिया है। तुम्हें अपनी जमीन भी दो सौ एकड़ है।· गाँव के सभी जमींदारो की आधीदारी करते हो ?"

सुचितलाल को छींक लग गयी। हाकिम ने फैसला सुनाया–"दुलारीदाय जमा के दोनों कुण्डों पर तुम्हारा दावा गलत साबित हुआ। डिसमिस !"

बैलून की हवा निकली, मानो–सिस-सिस ! सुचितलाल सुसुआने लगा–"इस्स !·· अँपील करेंगाँ !"

"चपरासी ! जिसका फैसला हो जाये, तुरत उसको निकालो उस दरवाजे से ! पुकारो, मीर समसुद्दीन !"

"हाजिर हैं, हुजूर ! किस जमा का· ?"

"नड़हा बाँध जमावाली नत्थी जमीन हुई आपको !"

"मार दिया !··· नहीं, नहीं। नडहा बाँध जमावाली जमीन समसुद्दीन की अपनी है। घर की मुर्गी दाल-बराबर। दुलारीदायवाली जमा का क्या होता है ?"

"दुलारीदाय जमा की नत्थी ?" पेशकार साहब ने समसुद्दीन की ओर इस तरह देखा मानो किसी पुरानी बात की याद दिलाकर कह रहे हैं–देखा ?

"हाँ, हुजूर !"

"दावा गलत साबित हुआ।"

"या खुदा !"

एक गुब्बारा फिर फटा–फट्टाक् !

"कहाँ खुदाबक्कस मियाँ !"

"जमीन मिली।"

"कहाँ धथुरी हजरा !"

"जमीन मिली।"

"कहाँ अघोरी मण्डल !"

"जमीन मिली।"

"कहाँ फगुनी महतो !"

"दावा गलत साबित हुआ।"

—फट्टाक् !

फगुनी महतो ने छाती पर मुक्का मारकर कहा—"हाय रे बाप !"

"कहाँ !"

रात में दो बजे तक कचहरी में पुकार होती रही।

तीन साल से अविराम बजता हुआ नगाड़ा अचानक रुक गया। नगाड़े के ताल पर बजती हुई अजानी रागिनी बन्द हो गयी। नाचता हुआ लट्टू निष्प्राण होकर लुढ़क गया। लुढ़ककर थिर हुए लट्टू जैसा गाँव ! आखिरी फैसला सुनाने के बाद ही हाकिमों ने कैम्प तोड दिया।

"अब जिसको लड़ना हो, अपील करनी हो—जाये पुरनियाँ कचहरी ! लड़े दीवानी !"

नही, इस लट्टू पर फिर से डोरी लपेटनेवाले लोग हैं !

"अभी क्या हुआ है ! ग्राम-पंचायत का चुनाव बढ़िया हो जाये। देखो, फिर न जाना पड़ेगा पुरनियाँ, न दीवानी करने की जरूरत होगी। पंचायत का मुखिया यदि अपनी पार्टी के आदमी को चुनोगे तो, समझो कि गयी हुई जमीन फिर मिलकर रहेगी। ग्राम-पंचायत चुनाव की तैयारी करो !"

समसुद्दीन मीर कहता है—"सभी मुसलमानो के दस्तखत और अँगूठे का टीप लेकर कलक्टर साहब के पास जायेंगे। साफ कहेंगे, यदि हिन्दुस्तान में नही रहने देना है तो साफ-साफ जवाब दे दीजिए। हम लोग पाकिस्तान चले जायेगे। एस. ओ. ने मुँहदेखी करके मुकदमा डिसमिस कर दिया।"

"लेकिन, उन कुण्डों पर तो कभी आपका कब्जा नहीं था। आपने तो जबरन ही दावा किया था।"

"इससे क्या ! कितने लोग हैं जिन्होंने सोलहो आने सही दावा किया था ? नही था कब्जा तो क्या हुआ ? आप लोग हजार घर हैं, हम लोग तो बस एक ही टोले में हैं। बात यह है कि ।"

लुत्तो कहता है—"ठीक है ! यह तो पौलटीस है। जरूर दीजिए दरखास्त ! साफ-साफ कहिए कलक्टर साहेब से। आपने ठीक ही सोचा है। कहिए कि हम लोग पाकिस्तान भागने के लिए मजबूर हैं। जरूर फत्तेह होगा, आपका !"

"जाने खुदा !"

"खुदा जो करता है, अच्छा ही करता है।" बीरभद्दर बाबू ने लुत्तो को समझाकर कहा—"समझे लुत्तो बाबू ! समसुदिया को एक भी कुण्ड नहीं मिला। चलो, यह भी अच्छा हुआ।"

लुत्तो ने कहा—"भला, मैने अपना काम पहले ही बना लिया था। तीन बीघा

जमीन अपने नाम से रजिस्ट्री करवाने के बाद मैंने पैरवी शुरू की थी।... डर है कि कहीं ग्राम-पंचायत के चुनाव में समसुद्दीन कुछ गड़बड़ न करे। चलिए, गड़बड़ करेगा तो सभापतिजी से कहकर कांग्रेस से इसपेल्ट करवा देंगे।"

"देखो लुत्तो ! बहुत सोच-विचारकर, बहुत माइण्ड खर्च करने के बाद एक जोजना तैयार किया है मैंने। एजेण्ट भी मिल गया है। यदि सिड्यूल से काम किया जाये तो समझो कि एक ही बार में चार शिकार !"

लुत्तो दाँत निपोरकर देखता रहा। बीरभद्दर बाबू हर बार इसी तरह पहले चुटकी बजाकर कहते हैं–'मिल गया ! छक्का हाथ मार दिया !' लेकिन, कोई भी तीर निशाने पर नहीं लगता।–"कौन एजण्ट, जरा नाम भी सुने ?"

"मनका की माय, सामबत्ती !"

–हाँ, ठीक ! लुत्तो ने मन-ही-मन मान लिया, बड़ी जातिवालों का मैण्ड सचमुच मे थोड़ा तेज होता है। आज तक उसके दिमाग में यह बात नहीं आयी। लुत्तो अब उछलने लगा। दौड़कर सामबत्ती पीसी के यहाँ पहुँचने के लिए उसका पैर चुलचुलाने लगा।

श्री कुबेरसिंह ने पटना से पत्र दिया है, अपने दोस्त-भाई बीरभद्दर को।

" 'हुआ सवेरा' का पूरा एक पेज रिजर्व है, तुम लोगों के लिए। और भी तेज खबर भेजो। तुम लोग सिर्फ फैक्ट लिखकर भेजो। स्टोरी यहाँ बना ली जायेगी। और एक काम जरूरी है ? तुम्हारे गाँव मे नट्टिनटोली है। उनमें से किसी एक की नगी फोटो नही खिंचवा सकते ? तुम्हारे गॉव मे एक हरिजन लड़की पढ़ी-लिखी है। उससे यह नहीं लिखवा सकते कि उसके साथ...?"

दोनो काम कठिन हैं। लेकिन, करना ही होगा। फोटोवाला काम पीछे, पहले मलारी का सिड्यूल बना लिया जाये !

बीरभद्दर बाबू कांग्रेस कमिटी के लैटर-पैड पर सिड्यूल बनाने लगे। आजकल शिवा, न जाने क्यो, कांग्रेसियों और कांग्रेस के खिलाफ बोलने लगा है। बीरभद्दर बाबू अपने छोटे भाई शिवभद्दर की मूर्खता पर दुखित रहते हैं। महामूर्ख है ! इसलिए, अपने कमरे मे भी फुसफुसाकर बोलना-बतियाना पड़ता है।

"लुत्तो, क्या बतलावें ! हमारा शिवा इतना डोल्ट है कि क्या बतावें ! विभीषण है। कल से क्या बोल रहा है, जानते हो ? कहता है, जित्तन भैया बहुत भला आदमी है। नेनू की तरह मन है, उनका। दूध की तरह दिल सादा है। आप लोग उससे पार नही पा सकते। सुनो भला !"

लुत्तो ने आँखें नचाकर चेतावनी दी–"उस पर आँख रखिए ! बड़ा डंजरस बात है यह !"

बीरभद्दर ने पैड पर सिड्यूल बनाना शुरू किया ! = चिह्न लगाकर जयहिन्द, फिर = चिह्न। नीचे–दूसरे काम का सिड्यूल। नम्बर एक को गोल घेरे में डालकर बोला–"क्या लिखा जाये ?"

"सबसे पहले, जाना सामबत्ती के पास। सुनाना उसको देश-दुनिया, जात-धरम

वगैरह का हाल-चाल। फुसलाना सामबत्ती को एक सौ रुपया देकर। भेजना उसको मलारी के पास, रोज एक बार या दो बार। जब जैसी जरूरत पड़े। फुसलाना सामबत्ती का मलारी को, दिखलाना लोभ स्कूल की हेड-मिस्ट्रेसी का। दिखलाना लोभ, कांगरेस की लीडरानी बनने का… ।"

बिना सिड्डूल किये काम का क्या भरोसा ? इस बार देखना है !

काम जल्दी हो, इसका भी उपाय है। डबल फीस ! जब कचहरी में डबल फीस दाखिल करने से एक ही दिन में दस्तावेज निकास होता है तो सामबत्ती की क्या बात ?

लुत्तो के उठने की देरी है, काम हुआ जाता है, अभी !

कवैयावाली जगी हुई है। सपना देखकर जग पड़ी है।

"आप लोग हवेली के देवर के पीछे क्यों लगे हैं ? सर्वे तो खतम हुआ।" अपने आँगन के कमरे में प्रवेश करते ही बीरभद्दर बाबू की मिडल पास स्त्री ने पूछा—"क्या जरूरत ?"

बीरभद्दर बाबू अवाक् होकर कुछ देर तक अपनी स्त्री की ओर देखते रहे। फिर बोले—"देवर के लिए दिल में बड़ा दर्द है !… देखो, सभी काम में तुम लोग इण्टरफियर मत करो।"

"आज नहीं लाये वह किताब ?" नुनुदाय यानी बीरभद्दर बाबू की आसन्न-प्रसवा स्त्री कवैयावाली ने पूछा।

आजकल, बीरभद्दर बाबू एक अंग्रेजी सचित्र मासिक पत्रिका ले आते हैं, रात में। डिक्शनरी की मदद लेकर, चित्रों की सहायता से अपनी स्त्री को समझाते हैं—प्रायमी केस माने पहिलौंठी अवस्था में क्या-क्या, नियम-कानून पालना चाहिए।·· दही खाने में हर्ज नहीं। बिलायती बैंगन खूब खाये··।

बीरभद्दर बाबू चौकी पर बैठकर बोले—"क्यों, कुछ खाने का मन डोला है ?"

नुनुदाय को अपने पति की कांग्रेसी किस्म की रसिकता पसन्द नहीं। वह चिढ़ जाती है। वह, अपनी माँ की ही नहीं, चाचियों की सभी बेटियों से भी छोटी है अपने मैके में। मैके का नाम लेते ही बीरभद्दर बाबू चिढ़कर अंग्रेजी में गाली देने लगते हैं, उसके भाई-बाप के नाम ! जेठानी को अपने आठ-नौ बच्चे-बच्चियों से छुट्टी नहीं मिलती। उसके पति बीरभद्दर बाबू को तो खुद सोचना चाहिए कि··। नुनुदाय आजकल डर के मारे सो नहीं सकती। आये हैं, बड़ा प्रेम से पूछने, कुछ खाने को मन डोला है ?

"मन डोले भी तो क्या ! फारबिसगंज के गाजीराम की दुकान से उधार लिया हुआ बासी गाजा खाने के लिए मन का हाल नहीं सुनाती किसी को !"

बीरभद्दर बाबू अपनी बात को वजनी बनाने के लिए अंग्रेजी शब्द ढूँढ़ने लगे। बोले—"तुम मेरी एक छोटी-सी दिल्लगी से भी टेम्पर लूज कर देती हो। आजादी देवी… !"

"मुझे आजादी मत कहे कोई ! मेरा अपना नाम है।"

"नुनुदाय नाम भी कोई नाम है ! और कवैयावाली कहकर देहातियो की तरह पुकारना तुमको अच्छा लगता है ? कैसी बाते करती हो ! आजादी देवी नाम मे क्या बुराई है ?"

"मुझे पसन्द नही। आजादी देवी, जैहिन्दी देवी ! अपनी झोली मे रखिए ऐसे नाम !"

"क्यो ?"

शादी के पहले ही, सौ नामो मे से एक नाम चुनकर डायरी मे नोट करके रखनेवाले बीरभद्दर बाबू को ठेस लगती है—"तुम देख रही हो गॉव मे तीन आजाद है। परानपुर कोई छोटा गॉव नही, तुम्हारी नैहर कवैया की तरह। एक आजाद तो घर के बगल मे ही है, सोशलिस्ट, सीताराम आजाद ! दूसरा केयटटोली का, राष्ट्रीय गीत गवैया, अजबलाल आजाद। तीसरा बगट प्रसाद आजाद। लेकिन, बता तो दो। एक भी लडकी का नाम आजादी देवी है ? ढूँढकर देखो !"

"मै पूछती हूँ कि रोज रात मे खराब सपना देखने से क्या करना चाहिए, यह उस किताब मे नही लिखा हुआ है ?'

"क्यो ?"

'मैं रोज रोज एक ही सपना देखती हूँ। बडा डर लगता है।'

"क्या ?" बीरभद्दर बाबू आतंकित हुए।

"एक बूढी औरत रोज ऑखे तरेरकर डराती है !"

'सपने मे ?"

"हॉ, इसीलिए कहती हूँ कि तुम लोग हवेली के देवर के पीछे हाथ-धोकर क्यो पडे हुए हो ?"

बीरभद्दर बाबू चिढकर बोले—"क्यो ? इसमे पीछे लगाने की क्या बात है ? रघुकुल रीत सदा चलि आई प्रान जॉहि बरु बचनो न जॉहि। वर्ड का भैलू होना चाहिए, इन्सान का। तुम नही जानती ? उसकी मॉ ने, बाबूजी को किस तरह बेइज्जत करके, नगाझारी करके, चोरी का चार्ज लगाकर बदनाम किया ? तीन-तीन झूठे मुकदमे किये ?"

"जिसका जमा बुडावेगा कोई उस पर मोकदमा नही होगा ?" नुनुदाय ने बात गडायी, अपने पति की देह मे। वह जानती है, सबकुछ !

बीरभद्दर बाबू के मन मे आया कि एक फुलपावर का थप्पड मुँह पर लगाकर मुँह लाल कर दे। लेकिन कुछ सोचकर गम खा गये—"देखो, एक तो अपनी फैमिली मे कहॉ से एक डोल्ट डम्फास विभीषण पैदा हुआ है। अब तुम भी ऐसी बात करती हो ? अपने फादरइनलौ के नाम पर झूठा तोहमत लगाती हो ? कौन कहता है ? किसका जमा बुडाया ?'

"बच्चा बच्चा जानता है बोलता है।"

"बोलने दो !"

अब बीरभद्दर बाबू ने मौन-सत्याग्रह की तैयारी की। कुछ नहीं बोल सकते, ऐसी जाहिल औरत से !

सुचितलाल मड़र अपनी जाति का मड़र है। गाँववाले मानें या नहीं मानें, वह मड़री करने में नहीं चूकता कभी। कोई भी बात हो, उसे पंच की दृष्टि से देखता है सुचितलाल। वह भी सोलकन्ह है, लेकिन सोलकन्हों ने ही उसके साथ दगाबाजी की।

"हाँ-हाँ। जँदिं लुँत्तों नें थोंड़ीं भीं मँदँदँ दीं हों, साँबिंत कँर दें कोईं !"

"तो, तुम कांग्रेस का मेम्बर काहे नहीं बने ? जिस दिन चौअन्नियाँ रसीद-बही लेकर आये लुत्तो बाबू, तुमने लम्बे बाँस से ठेल दिया। हम सभी पाटी का मेम्बर हैं !"

"सोशलिस्ट लोगों के साथ में रहने का फल भोगो ! तुमने तो अपना दावा अपनी मड़री के शान में खो दिया। यह मैं हजार बार कहूँगा।"

"सोंसलिंस ? सोंसलिंस क्यों, अँब हँम कौंमलिंस कें साँथ रँहेंगे और कुँण्डा दँखल कँरकें दिंखलाँ देंगे !"

"अच्छी बात !"

"अँच्छी बाँत नँहीं तो बुँरीं बाँत ? अँब हँम भी झँण्डों लेंकें खिलाँफँत कँरेंगे।"

"देखो सुचितलाल !" —मकबूल समझा रहा है सुचितलाल को—"यदि तुम कुण्ड दखल करने के लिए पार्टी का मेम्बर होना चाहते हो तो, घर बैठो। समझे ! पार्टी की मेम्बरी मामूली चीज नहीं है।"

सुचितलाल मड़र ने बार-बार ईमान-धरम खाकर कहा—"धँर्मांस्तीं,[1] मेंरे मँन मे कुँण्ड कों कोंईं लोंभ नहीं।"

मकबूल ने बात टालते हुए कहा—"हठात् तुमको पार्टी की मेम्बरी का धुन क्यों सवार हुआ ? इस सवाल पर हम कल की बैठक मे एकजूट होकर गौर करेंगे।" मकबूल के साथ चालाकी ! द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद जिसने पढ़ा है, सुचितलाल उसको चकमा देकर ठग ले ? मकबूल और मकबूल के साथी सभी समस्या और सवालो को काट-पीटकर परखते हैं, ऊपर से टटोलकर अटकल नहीं लगाते। प्रश्न है : सुचितलाल मडर हठात् कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य क्यों होना चाहता है ?

बैठक से एक दिन पूर्व ही, बजरिये गश्ती-चिट्ठी के, मकबूल ने इस प्रश्न को चारों-पाँचों कौमरेडों के सामने पेश किया। बैठक के दिन सभी इस महत्त्वपूर्ण सवाल पर सोचकर गौर करेंगे।

"मुझे तो इस वात में हृदय-परिवर्तन के लक्षण नहीं दिखायी पड़ते हैं। और,

1. धर्मास्ति = धर्म से कहता हूँ।

यदि मेरा अध्ययन और अनुमान सच हो, तो सुचितलाल मड़र को पार्टी-प्लेज देना हमारे उसूलों के खिलाफ होगा।" रंगलाल गुरुजी ने बैठक में अपनी राय जाहिर की। रंगलाल गुरुजी ने पन्द्रह साल तक विभिन्न खानगी प्राइमरी स्कूलों में गुरुवाई की है। उसको गौरव है–फलाने बाबू, चिलाने सिंह और अमुक वकील ने उसके चटसार में ही खल्ली पकड़कर 'ओनामासिधं' लिखा !··· उसके चेहरे को देखते ही लोगों की समझ में आ जाता है–यह आदमी गरीबी से बजाप्ता लड़ता रहा है, ढाल-तलवार लेकर। ढाल उसकी ईमानदारी, तलवार उसकी खरी-खोटी बोली। तीन साल पहले उसने पार्टी की मेम्बरी ग्रहण कर ली। किन्तु, अपने हथियार को नहीं छोड़ा है अब तक।··· दो पैसा का वाउचर बनवाने के लिए, जगिया ग्वालिन का पैर तक पकड़ लिया रंगलाल गुरुजी ने–"जगिया दाय ! पार्टी के काम में दही खर्चा हुआ है, वौचर तो देना ही होगा।"

रंगलाल की बात सुनकर बाकी कौमरेडों ने एक-दूसरे की ओर देखा। मकबूल ने दूसरे सदस्य से पूछा। मिडल-फेल लड़के ने पिछले साल पार्टी में प्रवेश किया है। वह रंगलाल गुरुजी की तरह बात में छोआ-गुड़ लपेटना नहीं जानता–"सुचितलाल अपनी जाति का मड़र है। उसके कब्जे में कम-से-कम पचास-साठ घर हैं। इतने घर सिम्पथाइजर हो जायेंगे, तुरत !··· "

तीसरा सदस्य, शहर से आकर गाँव में बसे हुए, लोहार का लड़का है। मकबूल के बाद खाँटी साम्यवादी रहन-सहन, चालचलन बस उसी के व्यक्तित्व में पाया जाता है। विश्वकर्मा ने कहा–"गाड़ीवानटोली में कितने सिम्पथाइजर थे ? कहाँ हैं वे ? इसीलिए तो हम लोगों की पार्टी ने यह फैसला किया है। भेड़िया-धसान मेम्बरी नहीं। एक-एक सदस्य का पोस्मार्टम करके ठोक-बजाकर मेम्बर बनाना होगा।"

चौथे सदस्य ने वैधानिक दर-सवाल उपस्थित किया। कांग्रेस से आया हुआ उन्तिमचन्द है–"सिर्फ, कनफर्म मेम्बरों की बैठक नहीं। जनरल मीटिंग करके, पन्द्रहों-बीसों कौमरेडों को मिलकर तय करना चाहिए। और, जल्दी ही।"

मकबूल ने बारी-बारी से सबकी बात सुन ली। बात सुनने के समय वह बीच में टोक-टाक नहीं करता है। चुपचाप अपनी दाढ़ी को चुटकी से कीला बनाता रहता है। बात, मीटिंग के बीच हो या किसी सदस्य से, पेश करना जानता है, मकबूल। किसी बात को धीरे-धीरे भूमिका बाँधकर समझाने को वह धूर्तता समझता है। बात को धमाके के साथ धड़धड़ाकर पेश करता है वह–"साथियो ! मैंने इस बात के हर पहलू पर जुदा-जुदा, नुक्तेनिगाह से गौर किया है। अभी हमारे एक कॉमरेड ने रिमार्क किया कि गाड़ीवानटोली में कितने सिम्पथाइजर थे ! मैं कबूल करता हूँ, यह हमारी और खासकर मेरी करारी हार का एक मजार है। किन्तु, हर बात के अन्दर समाजवादी सत्य का कुछ मिकदार होता है। उस चीज को हमने पकड़ना सीखा है, अपनी हारों से।··· सुचितलाल मड़र के पार्टी-प्रेम को परखने में हम गलती कर सकते हैं, यह बात नहीं। मेरा मकसद है कि पार्टी के प्रति उसकी

सदिच्छा के समाजवादी सत्य को हमें ग्रहण करना चाहिए।"

सुचितलाल ने बीच मीटिंग में दही-चुडा और माल-भोग केला का भार भेज दिया। उसके नौकर ने कहा—"मड़र बोले, बीच मीटिंग में जलपान पहुँचा दो जाकर।" जलपान करने के पहले ही यह तय रहा कि सुचितलाल के समाजवादी सत्य को ग्रहण कर लिया जाये।

विश्वकर्मा खूब समझता है ! मकबूल उसकी बात को काटकर हथौड़े की चोट दे रहा है। इसका कारण है। 'जनयुग' में फारबिसगंज की गन्दी सड़कों के बारे में और हरिजन-क्वार्टर में जलकष्ट पर सम्पादक के नाम पत्र विश्वकर्मा ने अपने नाम से प्रकाशित करवाया है। तभी से मकबूल मन-ही-मन विश्वकर्मा से असन्तुष्ट रहता है। बात-बात में, बात को काटता है मकबूल, विश्वकर्मा की बात को, बस एक ही धार से—'तुम शहर के नुक्तेनिगाह से देखते हो।…शहरी मजदूरों की समस्या नहीं, खेतिहर मजदूर की समस्या है। तुम्हारा अध्ययन ऊपरी है' इत्यादि।

शाम को सुचितलाल मड़र पुस्तकालय के पठनागार में गनगना आया—"सुँचिंतलाँल मैंडर नैंहीं, आँज से कौंमरैंड सुँचितलाँल ! जिंन साँलो नें अँमीन कीं बँही में पोपी लिंखायाँ हैं, सुँन लें। आँज सें सँफ्फासँफ्फी कौंमरैंड !"

भिम्मल मामा ने कहा—"लो ! अरुणोदय हो गया साँझ ही, मुर्गे ने बाँग दी !"

मकबूल जानता है, और बातें बाद में हों, कोई हर्ज नहीं। किन्तु, पार्टी के संगठन के लिए, गाँव में जनबल आवश्यक है। सुचितलाल के हाथ में जनबल है। और, यही है सुचितलाल का समाजवादी सत्य ! मान लिया जाये, सुचितलाल कुण्ड दखल करने के लिए ही हमारी पार्टी में आ रहा है। तो, क्या हर्ज है ? सामाजिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह हमारे साथ आ मिला है।…

नहीं, वह कुण्ड के लोभ में पड़कर नहीं आया है। फिर भी, मकबूल का फर्ज है, उसके लिए पैरवी करके कुण्ड हासिल करवा देना।

—बॉख ! बॉख ! मीत ने मकबूल की नुकीली दाढ़ीवाली सूरत देखकर भूँकना शुरू किया।

"अन्दर आइए !"

"जय जनता !"

मकबूल के मुट्ठी-अभिवादन का उत्तर जित्तन बाबू ने हाथ जोड़कर दिया—"नमस्कार !"

मकबूल की निगाह सामने खड़ी पत्थर की औरत पर गयी। पत्थर की मूर्ति के अंग-अंग से जिन्दगी टपक रही है, मानो। किन्तु, इसका समाजवादी सत्य… ?

"क्या मँगाऊँ आपके लिए ? चाय या कॉफी ?"

"काफी मुझको सूट नहीं करती। नींद मर जाती है।"

जित्तन बाबू के सिगरेट-केस से सिगरेट लेकर सुलगाते हुए, मकबूल ने

पूछा–"आपने अभी तक पार्टी-प्लेज क्यों नहीं लिया है ?"

"पार्टी-प्लेज ? क्या करूँगा पार्टी-प्लेज लेकर ?"

"करना क्या है ? आप प्लेज लेकर घर में इसी तरह बैठे रहिए, कोई बात नहीं। आपको फील्डवर्क करने नहीं कहूँगा।"

जित्तन बाबू मुस्कराये।

"खैर ! प्लेज, जब आपके जी में आवे लीजियेगा। मैं आज एक महत्त्वपूर्ण काम से आया हूँ।"

"कहिए !"

"सुचितलाल मड़र को जानते हैं न ? बड़ा कनसस किसान है।"

"जी !"

"कम-अज-कम कनसस किसानों के लिए कनसेसन करना आपका कर्तव्य है ! कुण्ड का तस्फिया कर दीजिए।"

"समसुद्दीन से क्यों नाराज हैं, आप ? वह भी काफी चैतन्य किसान है। उसके बारे में भी कहिए। कम-से-कम मुसलमान के नाते भी···।"

मकबूल ने जित्तन बाबू की बात काट दी–"मैं मुसलमान नहीं हूँ। आपने मुझे पहचाना नहीं ? मैं पीताम्बर झा, तखल्लुस मकबूल !··· मैं नीलाम्बर झा का छोटा भाई।"

जितेन्द्रनाथ मुँह फाड़कर देखते रहे, मकबूल को–"पीतू ?··· तुम्हारे स्वास्थ्य में काफी परिवर्तन हुआ है। वर्जिश भी करते हो ?··· एण्ड हू.शेव्स सच क्यूबिस्ट ? गाँव के नाई फ्रेंचकट बनाना जानते हैं क्या ?"

जित्तन बाबू के उत्साह को देखकर मकबूल जरा चिन्ता में पड़ गया।··· शायद दाढ़ी अच्छी नहीं कटी। कौन बनायेगा गाँव में ऐसी दाढ़ी ? मकबूल खुद कैंची और रेजन से तराशता है, लेनिन की फोटो सामने रखकर, उससे एकदम मिलाकर। फिर भी खोंट ?

फिर, असल बात की ओर मुड़ने की चेष्टा की मकबूल ने–"आप जनयुग में लेख क्यों नहीं लिखते ? प्रोविंसियल पार्टी के अछैवट कामरेड कह रहे थे कि जित्तन बाबू का अध्ययन···।"

"आप · माफ करना, तुम शायरी उर्दू में करते हो या हिन्दी में ?"

"मैं हिन्दी में कभी-कभी तुक मिलाकर कुछ सुनाता जरूर हूँ। उर्दू पढ़ना जानता हूँ। जहाँ तक लिखने की बात है··· ।"

"बाइ-द-वे, तुम अंग्रेजी क्यू से तो अपनी पार्टी का नाम नहीं लिखते ?"

"नहीं।" मकबूल अचानक भड़का।··· क्या समझ रहे हैं जित्तन बाबू ? ग्रेजुएट नहीं हूँ तो क्या हुआ, मैट्रिक पास करके 'आइ-ए' में पढ़नेवाला भला क्यू से लिखेगा–"भला क्यू से कौन लिखेगा !" मकबूल अप्रतिभ होकर मिनमिनाया।

जित्तन बाबू ने अति अचरज-भरी मुद्रा में पूछा–"क्या ! क्यूक्लसक्लान ?"

"क्यू से कौन लिखेगा !" इस बार मकबूल ने अपनी बात को जरा रुखाई

से पेश किया।

जित्तन बाबू ने अपने को धिक्कारा मन-ही-मन। इतनी-सी आत्मीयता बरदाश्त नहीं कर सके जो, उसको सबसे पहले चाय की प्याली देनी चाहिए। जित्तन बाबू भूल ही गये थे। हठात्, उठ खड़े हुए—"चाय के लिए कह दूँ !"

बात उखड़ी।

मकबूल भी इसी बात का ताना-बाना जोड़ रहा है। जित्तन बाबू हमेशा ऐसी ही उखड़ी-उखड़ी बातें करते हैं, सबसे शायद ! सचमुच पागल हैं !

लेकिन, अछैवट कॉमरेड ने कहा था कि काम का आदमी है ! काम की बात तो हुई ही नहीं अभी, कोई। नहीं, वह बात को उखड़ने नहीं देगा। जित्तन बाबू हवेली के अन्दर से लौट आये—"पाँच मिनट प्रतीक्षा का कष्ट सह्य हो।"

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। आप बैठिए !"

"तो, सुचितलाल मड़र कनसस किसान को मैं आपके द्वारा संवाद दे रहा हूँ। वे दोनों कुण्ड ताजमनी के हैं। मैं लेने-देनेवाला कौन होता हूँ !"

"जमीदारी झौंई मत दीजिए। यह सब कचहरी में बोलने-बतियाने के लिए रखिए। सीधी बात, कुण्ड दीजिएगा सुचितलाल को या नहीं ? हाँ-नहीं में जवाब दे दीजिए—छुट्टी !" मकबूल ने मौका पाकर चोट बैठायी बातों पर तड़ातड़ !

जरा भी नहीं तिलमिलाये जितेन्द्रनाथ।

मकबूल ने देखा, यह आदमी पोलिटिकली काफी पोला है।

मुस्कराकर बोले जितेन्द्रनाथ—"नहीं !"

मकबूल आश्चर्यित हुआ। उसकी नुकीली दाढ़ी के केश खड़े हो गये, मानो। उसने पुनः एक संक्षिप्त प्रश्न किया—"आप कम्युनिस्ट पार्टी के सिम्पथाइजर हैं या नहीं ?"

"नहीं।"

"आप जनयुग पढ़ते हैं या नहीं ?"

"हाँ। माफ कीजिएगा, मैं 'हुआ सवेरा' भी पढ़ता हूँ।"

" 'हुआ सवेरा' ने तब ठीक ही लिखा है, आपके बारे में ?"

"हाँ।"

"ऐं ? हाँ ? मैं आपको चुनौती देता हूँ, आप पीछे पछताइएगा। सुचितलाल तो कुण्ड दखल करके छोड़ेगा।"

"चुनौती मुझे दीजिए झाजी !" ताजमनी ने परदे के उस पार से कहा।

मकबूल चौंका। यह तो एकदम बजाप्ता घर बसाकर रह रहे हैं, दोनों !

गोबिन्दो ट्रे में जलपान और चाय ले आया। जित्तन बाबू ने प्यालियों में चाय डालते हुए उत्तेजित मकबूल से पूछा—"चाय में चीनी ज्यादा डालूँ या कम ?"

"मैं चाय नहीं पीता। क्या आप समझते हैं कि नाश्ता और चाय और सिगरेट पर आइडोलौजी बेचनेवालों के दल का है मकबूल ?"

मकबूल उठ खड़ा हुआ। वह ऐसे विलासी वातावरण में रहकर अपनी द्वन्द्वात्मक

भौतिकवादी बुद्धि को कुण्ठित नही करना चाहता। सगमर्मर की औरत की बेहयाई बरदाश्त के बाहर बढ गयी।

"और चूँकि आपने समाजविरोधी काम किया है इसलिए भी आपके अन्न-जल से हमे परहेज करना चाहिए।"

"समाजविरोधी ?" जित्तन बाबू अपनी प्याली मे चीनी मिलाते हुए मुस्कराये।

"नही तो और क्या ? 'हुआ सवेरा' के पृष्ठ बोलते हैं, सुर्खियाँ बोलती है। आपकी यह हवेली बोलती है। आपकी नवेली "

हवेली के पुराने कमरे प्रतिध्वनित हुए—"क्या खूब ! क्या खूब !"

—बॉख ! बॉख !

'मीत ! इसको अन्दर बुला लो ताजू !"

मकबूल कमरे से बाहर चला गया लुत्तो ठीक करता है, ठीक कर रहा है। लेकिन, मकबूल की दुश्मनी बुरी साबित होगी। याद करेगे !

"घर बैठे आपकी लडाई कैसे हो जाती है, लोगो से ?" ताजमनी ने परदे के उस पार से ही कहा—"क्या जरूरत ? कुण्ड से क्या आता है अब ?"

"आज मैं फलाहार करूगा।"

ताजमनी के अग-अग मे गुदगुदी लगी। मालकिन-माँ मुस्कराती कहती—"ताजू, आज एक आदमी फलाहार करेगा। सुबह से गुस्सा खा पीकर बैठा है। कुपित पित्त मे फलाहार !"

ताजमनी परदे के उस पार से हट गयी। मीत उसके पीछे पीछे भागा।

सुरपतिराय टेप रिकार्डर बजाकर गीत का आखर लिख रहा है !

पचरात्रि !

पॉच रातो तक अहोरात्रि गीत कथा गाकर असाध्य रोग अर्धाग से मुक्ति नही मिले, नही चाहिए अस्सी वर्ष के रघू रामायनी को गयी हुई देह। गुरु के ऋण से उऋण हुआ है, वह ! उसका जन्म अकारथ नही गया।

चार राते, सुननेवाले ही कह सकते हैं, कैसी धडकती हुई राते था ! किन्तु पॉचवी रात तो कथा का सुर ही बदल गया। यह क्या हुआ ?

सुन्दरि नैका का भी दिल डोल गया—दन्ता राकस पर ? खुद फँस गयी प्रेम के फन्द मे ! महाबलशाली दन्ता, किसी देवता मे क्या कम है ? देवता तो रात-दिन सेवा करवायेगे। और, यहॉ दन्ता कहता है कि रोज पैर पखारेगा सुन्दरि नैका का ! जिसकी हिरन्नि रानी रने-वने रो रही है, जिसका प्यारा बच्चा आस लगाकर बैठा है। हाय, हाय ! सुन्दरि नैका दिल की बात कहने चली दन्ता से। लेकिन, सुन्दर नायक भी भारी गुनी आदमी ! सब चलित्तर देख रहा था अपनी बहन का ! अस्सी मन लोहे की बेडी-बॉध मे जकडकर बॉध दिया सुन्दरि को !

सुन्दर नायक ने जाकर देखा, पॉचवॉ कुण्ड भी तैयार है। बोला—'छठा कुण्ड

तैयार करो। शर्त में छः कुण्ड खोदने की बात है। सुन्दरि कह रही है।'··· एक झलक भी नहीं। जब तक छठा कुण्ड तैयार नहीं करते, सुन्दरि की एक उँगली भी देखने को नहीं मिलेगी।

मोहनबान से घायल दन्ता भूल गया कि कितनी रात बाकी है। राकसों की टोली को हुक्म दिया—'कोड़ भैर्रा !' राकसों ने कुण्ड की गोलाई का चिह्न दिया ही था कि मुर्गे ने बाँग दे दी। भोर का तारा आखिरी बार झिलमिलाकर लुप्त हो गया।

तब, सुन्दर नायक ने अगिया बान मारकर सभी राकसों को जला दिया।··· कुण्ड की गोलाई में खड़े एक सहस्र राकस हाथ उठाकर किलकिला उठे—'ऐ-रे भैर्रा-आ-आ ! रे सरदार-हा-हाय !'

उधर लोहाबासा-घर से, बेड़ी-बाँध में जकड़ी सुन्दरि नैका रो-रोकर पुकारती रही :

एक पहर बीतल जे दुई पहरे, जे तेसरो पहर हो-ओ-
रात कटे सुन्दरि छाती कुटे दैवा आँगन में।
भागहु-भागहु मीता दन्ता रे, सुनू दन्ता-रे-ए,
तोहरो हिरन्नि रानी रोई मरी बिरनावन में।
बेटवा तोहार रोज हुलसि रहे, वप्पा आवता रे-
मैया लावता रे-ए, मानुसछोरी मइया के आस लगावल सूगना रे-ए !•

उधर, एक सहस्र राकस हाथ उठाये अगियाबान से झुलस गये।·· सेमलबनी के सेमल के पेड़, राकसों की ही कठायी हुई कायाएँ हैं। हाथ उठाये, ऊपर की ओर। लाल-लाल फूल, आग की लपट !

दन्ता राकस अपनी देह की आग बुझाने के लिए दुलारीदाय के कुण्ड में कूद पड़ा। भोर-भोर तक वह पुकारकर मर गया—'अरी ओ-ओ-ओ मानुसछोरी मोहनियाँ-आँ-आँ ! पीरितियो जनि तोड़े-ए-ए, हुम्हुँ मरिजायबा !'

सुन्दरि नैका का ब्याह देवपुत्र से ही हुआ।

किन्तु ऐसा श्रापभ्रष्ट देवपुत्र, जो एक ही रात धरती पर सुख भोगने के लिए आया था· पुरइन -फूल से भरे कुण्ड में, दूसरे दिन देवपुत्र का निष्प्राण शरीर फूलकर तैरता रहा।

सुन्दरि नैका इस संसार में रहकर क्या करे ?·· 'ओ रे मीता दन्ता ! मैं आ रही हूँ।' दन्ता-कुण्ड में एक बड़ी मछली कूदी—छपाक् !

दन्ता के मरने के बाद कुण्ड के पास पहुँची हिरन्नि रानी। उसके कुछ ही क्षण पहले विधवा सुन्दरि नैका डूब मरी थी कुण्ड में। किनारे पर रख गयी थी, सोने की एक कटोरी, खीर से भरी हुई—दन्ता के बेटे के लिए।

औरत के दिल की बात औरत नहीं परखेगी ? कलेजा कूटकर गिर पड़ी हिरन्नि रानी :

दन्ता रे दन्ता, तोरा बिना धरती पे कछुओ ना सूझे
मोरा लेखे कठिन जीवनियों रे, सुनु दन्ता !
दन्ता रे दन्ता, कूल के निशानियों तोरा बेटवा नदनवों,
सेहो, छोड़ि केकरा पे जायब रे, सुनु दन्ता !

'मानुस-छोरी मइया भी चली गयी तेरी, ओ रे मेरे लाल !'

रघ्घू इससे आगे नही गा सका ! कथा के अन्त मे, सभी बाल-बच्चेवाली माताओ से रघ्घू ने प्रार्थना की। उसकी सफेद दाढी से झर-झरकर आँसू गिर रहे थे–"कल रात घर-घर से खीर से भरी कटोरी उत्तर की ओर से दूसरे कुण्ड मे दन्ता के टूअर बेटे के नाम चढाइए ! बाल-बच्चो का कल्याण होगा !"

छोटा-सा भोला-भाला राकस का बालक ! हाथी के बच्चे जैसा हुलसता हुआ कटोरो से खीर लेकर खाता हुआ। न जानं कब का भूखा-प्यासा टूअर बच्चा ! बच्चा आदमी का हो या राकस का ! ओ री मानुस-छोरी मइया-या या !

"जैकिट कहो या जमाहिर कोट, एक ही बात है।" लुत्तो ने सामबत्ती पीसी को बात समझाते हुए तुलनात्मक उदाहरण दिया–"चाहे दो सौ रुपया नकद लो या दो सौ रुपये का धान तौला लो। एक ही बात है। बीरभद्दर बाबू बादशाह आदमी हैं।" लुत्तो अपने साथ जितवा पन्हेडी की दुकान से ण्पिरमेण्टवाला पान ले आया है। सामबत्ती पीसी पान मुँह मे लेकर बोली–"अच्छा ! इसका जवाब, मन मे बूझ-विचारकर कल दूँगी। लेकिन, मेरी एक बात का जवाब दो पहले ! आखिर, जित्तन के पीछे तुम लोग क्यो लगे हुए हो ? सर्वे अब खतम हुआ, झगडा-झझट भी खतम करो ! और जिसको तुम सिकन्नर-शा-बादशा समझते हो उसको मैं अच्छी तरह पहचानती हूँ। आ रे गरुडा-आ-आ तू-तू !"

सामबत्ती पीसी जब अपने कुत्ते को पुकारे तो समझो कि आस-पास कही गरुड झा की बोली उसने सुनी है।

गरुडधुज झा चौबटिया पर खडा होकर किसी से पूछ रहा है–"इधर लुत्तो आया है ? लुत्तो पर नजर पडी है किसी की ?"

लुत्तो को गरुडधुज झा पर जरा भी विश्वास नही, लेकिन उसका सग करना पडा है। मजबूरी है !

लुत्तो ने सामबत्ती पीसी की बातो का ाई जवाब नही दिया। बोला–"तुम सोलकन्हटोली की सबसे चान्सवाली हो, इसीलिए तुम्हारे पास आया। मैं अभी चलता हूँ, सोच-समझकर जवाब देना ! खूब पौलिसी देना मलारी को !"

–ई-पी-ही-ही-ही ! ई-पी-ही-ही-ही !

इसको मैथिलाम ठहाका कहते हैं। मैथिलो की खास पहचान ! कण्ठ से कठायी

हुई हँसी के साथ निकलता है यह ठहाका !

गरुड़धुज झा ठहाका लगाकर सूचना देता है लुत्तो को–"बड़े अकबाली आदमी हो, तुम लुत्तो बाबू ! मालूम है, मकबूल भी अब बिलकुल उलट गया है। अभी कह रहा था, लुत्तो ठीक कर रहा है। जित्तन नरक का कीड़ा है। उसको गाँव से भगाना होगा, नहीं तो सारा गाँव नरक के कीड़ों से भर जायेगा।"

"ठीक पहचाना है मकबूल ने ! देर से ही सही, लेकिन पहचाना है।·· नरक के कीड़े तो बढ़ रहे हैं गाँव में !"

"हाँ, कल देखा। कौलेजिया लड़कों का एक गिरोह हवेली की ओर से खूब खुशी-खुशी आ रहा था। पता लगाना चाहिए।"

"कौन-कौन था ?"

"भूमिहारटोले का सुवंशलाल, कमलानन्द, प्रयागचन्द. नितिया। मैथिलटोले का अनरूध, शशभूखन, किरता। और·· सोलकन्हटोली का रधवा, सत्रूघन, मोहना। कमेसरा भी था !"

"हूँ-ऊँ-ऊँ !" लुत्तो ने दाँत से ओठों को चबाते हुए कहा–"देखिएगा, सभापतिजी से कहकर सबको कौलेज से इसपेल्ट करवाते है या नहीं !"

गरुड़धुज ने मुँह में खैनी तम्बाकू लेते हुए थुकथुकाया–"थू, अरे इससे क्या होता है ! जाने दो लोगों को। एक मकबूल अकेला ही काफी है। कौलेज के लड़कों की लड़कभुड़भुड़ी चार दिन भी नहीं चलेगी। मकबूल के दिमाग में काफी फौक्सिग है। फुफुआ रहा था गेहुअन साँप की तरह ! उससे मिलकर बात करोगे तो समझोगे !·· अच्छा, मैं अभी चलता हूँ, रोशन बिस्वाँ का बेटा जरा पगला गया है। बाप से लड़ाई-झगडा करके अलग खाना-पीना कर रहा है।"

लुत्तो सिडूल से बाहर की बात सुनकर इतना प्रसन्न हुआ कि राह चलते नौटंकी की पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा–"किस गफलत की नीद मे रहे पलँग पर सोय, अजी अब तो मजा सब मालूम होय। अजी, हाँ-हाँ-जी ! मालूम होय !"

सर्वे के मारे हुए, हारे हुए लोग ! उन्हें कोई नही पूछता, अब। सर्वे की बात कोई नहीं करते। आजकल, सिर्फ ग्राम-पंचायत की बात होती है, गाँव में।

कहते हैं–गुड़ के गाछ ऊख को सभी मिठाइयों का बाप समझा जाता है। उसी तरह ग्राम-पंचायत भी सभी सुखों की माँ है। इस पर कब्जा करो ता फिर कौन पूछता है, जमीन ! कितनी जमीन लोगे ?

दीवाना ने बिखरे, टूटे और हारे हुए लोगों को सँभालने का बीड़ा उठाया है, क्योंकि लुत्तो के पास इतना समय नहीं कि वह लोगों का रोना सुनता फिरे। प्रेम की बात करे। लुत्तो और बीरभद्दर ने मिलकर दीवाना से कहा है, "सोलकन्ह नाटक-मण्डली तैयार करो। जल्दी !"

"प्यार का बाजार ! हाँ, 'प्यार का बाजार' का खेला होगा। सिर्फ सोलकन्ह लोगों के लिए, सोलकन्ह नौजवानों के द्वारा यह नाटक खेला जायेगा।"

"अच्छा, दीमानाजी ! आपका एक नाटक तो बम्बै मे भी खेला होता है, सुना। कहाँ-कहाँ गये थे आप ?"

"मैं ? मैं बहुत जगह गया भाई ! कलकत्ता से लेकर दिल्ली, दिल्ली से बम्बै। समझो कि अखिल भारत। सब जगह लोगो ने कहा—दीवानाजी, आप हम लोगो के देश मे रह जाइए। यही 'प्यार का बाजार' कराइए। लेकिन, मैने कहा, हर्गिज नही। मैं गॉव का रहनेवाला आदमी हूँ। अपने गॉव मे ही रहूँगा और वही 'प्यार का बाजार' खेला होगा। बम्बै मे फिलिम सिनेमावाले इतना रोकने लगे, जिद्द करने लगे ! यहॉ तक कि झोली भी मेरी छिपाकर रख दी. एक हिराइन ने। मगर भाई, दीवाना ऐसा नही ।"

"ठीक किया आपने ! अपना गॉव फिर अपना ही गॉव, है कि नही ?"

"अच्छा किया आप चले आये। आखिर, झोली दिया या नही ?"

"अब, गॉव मे 'प्यार का बाजार' होने दे तब तो ? बारह बसेडिया लोगो के बीच कोई काम होना मुश्किल है।'

खाली बोतलो की तरह लोगो के दिमाग, इसमे जो कुछ भी भर दो समा जायेगा ! प्रेमकुमार दीवाना ने कहा—"कितना काम करूँ अकेला ? देखो, अभी भी डाक से चिट्ठी आयी है—चार कविता, दस कहानी और करीब बारह नाटक की मॉग पटना से आयी है, लोहागपुर मुहल्ला से। पटना की क्या वात ! वहॉ जब मैं गया तो स्टेशन पर एक हजार पबलिक मुझे सिर्फ देखने के लिए जमा हो गयी थी।"

"इस्स ! एक हजार ?"

"तो, हो न तैयार ? तुम लोग सहायता दोगे न ? शुरू कर लिखना, प्यार का बाजार ?"

"हॉ हॉ, तेयार ही तैयार है सब ! अब तो सर्वे का भी झझट नही। जरा, एक चोंटिलवा पाट हमारे लिए भी लिखिएगा !"

"जोकड का पाठ हमको दीजिएगा। अहा हा, सुचितलाल हम लोगो के दल से निकल गया। नही तो, 'प्यार का वाजार' मे वह भी कमाल दिखला देता। बिदसिया नाच मे वह जब वटोहिया बनकर आता था और 'तोहॅरो बॅलेमुजी के चिन्हियो नॉ जॉनियो गाने लगता था तो सारगी भी उसके मोकाबले मे मात खा जाये।"

प्रेमकुमार दीवाना ने दलित नाटक मण्डली की कच्ची बही पर नाम दर्ज करना शुरू किया। दीवाना कहता है—"कलकत्ता, बम्बै थेटर के असली भेद का पता लगाकर आया हूँ। सब एलिक्ट्रिक की चालाकी सीख आया हूँ ! देखना, 'प्यार का बाजार' कैसा जमता है !"

"दीमानाजी !'

"गलत नाम मत बोलो, दीवानाजी नही बोल सकते ?"

"दीनावॉ नही नही, दीबानाम !"

मलारी सोच रही है, इस दीवानाजी को क्या कहा जाये ?

उस रात में दुम दबाकर भागे और आज फिर स्कूल से लौटते समय दीवाना को एक जरूरी बात पूछने की जरूरत हो गयी। बड़ा आया है, मलारी का भला-बुरा सोचनेवाला ! मलारी अपना भला-बुरा खुद सोचती है। दीवाना की आँखों में हमेशा शैतान हँसता रहता है। मलारी का यह दुख नया नहीं। सात वर्ष की उम्र से ही वह दुनिया के लोगों की जहरीली निगाहों को पहचानने लगी है। मलारी सच-सच बयान कर कभी लिखे तो··· तो, न जाने क्या हो जाये !···

मलारी अपने बाप को दोष नहीं देती। चिड़चिड़ा है, मद्दकी है। लेकिन गाँव के बहुत भले लोगों से अच्छा है उसका बाप। मलारी का बाप ही क्यों, गाँव की किसी भी लड़की का बाप ऐसा ही मद्दकी और चिड़चिड़ा हो जायेगा, हमेशा आदमी को हाँकते-हाँकते !··· पिछली चार-पाँच रात से चौबेजी पर भूत सवार हुआ है। रोज रात में चौबेजी की बछेड़ी खो जाती है। दो पहर रात में मलारी के बाप को जगाकर पूछने आते हैं–'महीचन, मेरी बछेड़ी को देखा है ?' कल रात मलारी के जी में आया कि पण्डित सरबजीत चौबेजी से पूछे··· । क्या समझ लिया है चौबेजी ने ? उस दिन ठाकुरबाड़ी गयी थी मलारी, रामलला का दर्शन करने। दूर से चौबेजी ने कहा–तुम मंदिर की सीढ़ी पर या बरामदे पर से दर्शन कर सकती हो मलारी ! कोई हर्ज नहीं। तुम्हारा संस्कार बदल गया है। इसके बाद चौबेजी ने इधर-उधर देखकर हाथ के इशारे से बुलाया–'पगली ऐसा मौका कभी नहीं हाथ लगेगा। कहीं, कोई नहीं ! आकर चुपके से रामलला के चरण छू ले ! आ ! आ जा ! डरती है काहे ?'···

रामलला और रामलला के पुजारी पण्डित सरबजीत चौबे को दूर से ही नमस्कार करती है, मलारी ! लेकिन, मँगनीसिंह··· प्रेमकुमार दीवाना की क्या दवा की जाये ? अभी-अभी डाक से एक गुमनाम चिट्ठी मिली है, मलारी को। दोहा, चौपाईवाली चिट्ठी।···

–मैं किसी के प्रेम में पागल हुआ हूँ, वर्ष-भर से रात में जागल हुआ हूँ। मेरी जान, मलारी ! तुम पर कुर्बान यह प्राण ! आओ, चलो ! इस भेदभाव की दुनिया से दूर, बहुत दूर चल चलें हम ! जहाँ मैं रहूँ, तुम रहो और कोई न रहे ! तुम सुवंशलाल से हँस-हँसकर बात करती हो और मुझको दुतकारती हो। खैर, मेरी किस्मत में यही है। मैं रस चूसकर उड़ जानेवाला भौंरा नहीं हूँ। कलात्मक प्रेम किसे कहते हैं, यह क्या जाने सुवंशलाल ! कलात्मक प्रेम करनेवाला मधुकर रस चूसकर उड़ नहीं जाता। वह गुन-गुन-मुन-मुन कर फूल के अधर पल्लव पर··· ।

शैतान ! बदमाश !

न जाने क्यों, जब से सुवंशलाल और मलारी की चायवाली कहानी उड़ी है गाँव में, मलारी को रोज पाँच-सात बार सुवंशलाल की याद आ जाती है।··· सुवंश बाबू ? ऐसा आदमी आजकल कहाँ मिलेगा ! कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन कह नहीं सकते। कई दिनों से देख रही है, मलारी। सभी नौजवानों को जानती-पहचानती है।··

अररिया-कोट जाने की बदनामी ! मलारी अपनी या सुवंश की सफाई देने

के लिए दाल-भात की तरह कसम-पर-कसम नहीं खायेगी। जिसको परतीत न हो, उसकी खुशामद तो नहीं करने जायेगी, मलारी ? हाँ, इतनी-सी बात वह जरूर कहेगी कि पाँच-छः घण्टा साथ रहने पर भी, सुवंश बाबू ने कोई बेकाम की बात नहीं कही। घोड़ा-गाड़ी पर, एक बार सुवंश बाबू की गोद में गिर पड़ी वह। अररिया-कोठ की सड़क तो अपने गाँव की सड़क से भी गयी-गुजरी है। घुटने-भर गड्ढों में घोड़ागाड़ी हिचकोले खाती। ··सुवंश बाबू का मुँह लाल हो गया था। सरककर अगली गद्दी पर बैठ गये थे।

मलारी चाहती है, सुवंशलाल के नाम के साथ उसकी बदनामी फैले। खूब जोर से ! वह, अब किसी से नहीं डरती। सुवंश बाबू क्या कहना चाहते हैं ? कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं ? बोलो न सुवंश बाबू, मँगनीसिंह की क्या दवा की जाये ? कायर ने अपना नाम नहीं लिखा है। नाम के बदले दोहा :

–ढाई आखर शब्द का मैं हूँ बेचलर ब्वाय, चिह्ननवाले कहत हैं, है मजनू का भाय !

"सुबो रे, सुबो !" सुवंशलाल की बूढ़ी माँ अपनी पतोहुओ के मुँह से सुनी हुई बात का विश्वास क्यों करे ? सुवंश उसका कोरपच्छू लडका है। कोरपच्छू, सबसे आखिरी सन्तान ! माँ से कुछ नहीं छिपायेगा उसका सुबो।

"सुबो !"

"क्या है माँ ?" सुवंशलाल को माॅ के मन की बात की झलक मिल गयी, मानो। वह अपनी माँ से आँखें नहीं मिला सका।

"तुम्हारी भाभियाँ क्या कह रही हैं· ?"

"भाभियो का नाम क्यों लेती हैं मइयाँ ?' मँझली भाभी ओसारे के नीचे से बोली–"आँगन छोड़कर कहीं जाती हूँ तो बस एक ही बात सुनाती हैं, सभी। कोई ताना मारकर कहती है–नयी देवरानी के लिए कोठरी बनवाओ, मँझली ! कोई कूट करती है–घर की भौजी रसवाली बात नहीं करे तो आदमी क्या करे ! जिस टोली मे, जिस ऑगन में रस मिलेगा, जायेगे। आज भी मै लड़ आयी हूँ छत्रीटोली की सन्तोखीसिंह की बेटी से !"

बड़ी भाभी बोली–"जिस दिन से अखबार मे फोटो छापी हुआ है, गाँव के लहेंगड़े लड़कों ने मलारी को बाभनी समझ लिया है। मकबूल, मनमोहन और दीनदेलवा ने तो मुसलमान हाड़ी-काछी-मोची को पहले से ही माथे पर उठा लिया था। अब लोग घर में चाह नहीं पीकर मलारी के हाथ का परसाद पीने जाते हैं।"

"सान्ती के बाबू कह रहे थे कि इस बा· फागुन चढ़ने के पहले ही, अगहन में काझा-गनेसपुरवाले शादी करने को तैयार हैं।"

सुवंशलाल चुपचाप सामने पड़ी हुई बीमा-पुस्तिका को उलटता रहा। उसकी माँ ने अपने सुबो का मुँह देखकर न जाने क्या समझा कि फूट-फूटकर रोने लगी–"बेटा रे !"

"माँ ! क्यों रो रही हो ?... सब झूठी बात है। जीवन-बीमा के काम में चार पैसा कमा लेता हूँ घर बैठे। यह भी लोगों को बरदाश्त नहीं होता !"

"तें, चाह की बात झूठ है ?" मँझली ने पूछा।

"हाँ, झूठ है। सरासर झूठ !"

"लेकिन, मलरिया ने तो अपने मुँह से कबूल किया है।" बड़ी भाभी बोली। मँझली ने बात में जोड़ा-पट्टी लगायी—"इतना ही नहीं ! कहती थी कि रकसा-गाड़ी में एक आदमी की जगह में दो आदमी बैठकर कैसे जाते ? इसलिए, सुवंश बाबू कोरियाये हुए ले गये।"

सुवंश के मँझले भाई यदुवंशलाल ने आँगन में प्रवेश किया—"सान्ती की माय, मैं कह देता हूँ—मेरी थाली, मेरा लोटा, गिलास वगैरह अलग रखो। सभी लोटे-थालियों के साथ क्यों रखती है ? पीठ की खाल खींच लूँगा।... आग में जलाओ कटोरी को !"

गुस्से से पैर पटकता हुआ बैठक की ओर चला गया यदुवंश। बड़ा भाई रघुवंश बहुत शान्त प्रकृति का आदमी है। मँझले भाई की बोली सुनकर पिछवाड़े की बगिया से आया—"मइयाँ, क्या बात है ? आग में थाली-लोटा क्यों झोंकने कहता है यद्दू ?"

बूढ़ी ने आँखों को पोंछते हुए कहा—"जमराज दुश्मन को मेरे ही साथ दुश्मनी है। उठा नहीं ले जाता !"

रघुवंश बाबू ने अपनी स्त्री से पूछा—"क्यों मोरंगवाली, क्या बात है ?"

मोरंगवाली, बड़ी भौजी ने घूँघट के नीचे से जवाब दिया—"जद्दू बाबू वैस्निव हैं। माँस-मछली उनकी थाली में कोई क्यों परोसती है ?"

"आज कहाँ से मछली आयी ?"

सुवंश की माँ बात पर राख नहीं डालना चाहती—"मछली नहीं, मलारी !"

"मलारी ?"

"हाँ ! सुबो ने जीवन-बीमा किया है उसका। इसलिए जद्दू अपनी थाली में नहीं खाने देगा, सुबो को।"

रघुवंश बाबू ने सरलता से कहा—"उसका माथा खराब है।"

"मेरा माथा खराब है ? जाकर पूछिए गरुड़ झा से, छत्रीटोला के मँगना से, तेतरटोली की सामबत्ती से। क्या कहते हैं, लोग ? आप तो दिन-भर गाँव मे रहते नहीं, खेत में क्या सुनियेंगा ?" यदुवंश ने बैठक की खिडकी से आँगन की ओर जवाब दिया।

"क्या कहते हैं लोग ? क्या है रे सुबो ?"

सुवंशलाल ने कहा—"मुझे क्या मालूम ? भैया को ही पूछिए।"

"काम करो तुम और पूछा जाये भैया से ?" यदुवंश आँगन में आ गया, "बोलो, क्या चाहते हो तुम ? काझा-गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखें ?"

"काझा-गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखने की क्या बात है ?" सुवंश ने साहस से काम लिया।

शान्ति स्कूल से आयी और हाथ की किताब सुवंश काका का देती बोली–"मलारी मास्टरनी ने दिया है। बोली कि आज पुस्तकालय बन्द है। किताब लेती जा, काका को दे देना !"

सुवशलाल की अन्यमनस्कता से किताब गिर पड़ी और किताब के अन्दर का लिफाफा छिटककर बाहर आ गया। सुवंश बाबू को मिले। जरूरी, बहुत जरूरी, लाल स्याही से रेखाकित !

रघुवश बाबू ने कहा–"कम्पनी की चिट्ठी-पत्री, हर-हिसाब इधर-उधर न हो ! तुम्हारे जैसा भुलक्कड आदमी कही नहीं देखा। गड़बड़ होने पर बूझना ! पोस्टमास्टर का क्या हवाल हुआ था ? चार आने पैसे के हिसाब की गडबडी में, चार सौ रुपये दण्ड। कम्पनी का कारबार है !"

सुवश ने लिफाफे को पाकेट मे रख लिया। मॅझली बहू ने बडी की ओर देखा।

दोनो भाई जब दरवाजे पर चले गये तो मॅझली ने अपनी लड़की को डॉटते हुए कहा–"तू स्कूल मे पढने जाती है या डाकपेन का काम सीखने ?"

शान्ति को मलारी मास्टरनी कितना प्यार करती है ! 'बेटी' कहती है।–'शान्ति बेटी, भूख लगी है ? जाओ घर, छुट्टी !'

सुवशलाल ने अपने कमरे से निकलते हुए कहा–"जिस स्कूल की मास्टरनी रैदास की बेटी है, उसमे पढने के लिए भेजती ही क्यो हो अपनी बेटी को ?"

बडी ने मॅझली की ओर देखा–बात सच है !

मॅझली तुनककर बोली–"कोई कुछ करे, हमको क्या ! जीवन-बीम्मा का सब रुपैया मलारी के पेट मे जायेगा, देखना, दीदी !"

"सुबो का क्या कसूर ! वह छौंडिया ही ऐसी है। जब तक छौंड़ी न दे आस, तो छौंडा क्यो जाये पास ?"

सुवश सीधे हवेली की ओर जा रहा है, अपने आँगन से निकलकर। यदुवंश ने पुकारकर कहा–"दरवाजे पर म‌च्छ‌ड काटता है तुमको, क्यो ? कहाँ जा रहे हो ? गुरुमन्तर लेने ?"

रघुवश बाबू ने बछिया को घास देते हुए कहा–"तुम तो बेकार उसके पीछे पडे हुए हो !"

"बेकार ? देखियेगा, एक दिन सभी चमार मिलकर सिर तोडेगे, इसका। आपकी ढिलाई से ही !"

"क्या किया है सुवश ने ? किसका घी का घडा उलटाया है ?"

"मलारी से फॅस गया है !" यदुवश ने खोलकर कहा–"अब समझे ?"

"फॅस गया है ?"

"और यह बात छिपी रहेगी ? काझा-गनेशपुरवालों को यदि मालूम हो जाये कि चमार की बेटी से फॅसा है लडका, तुरत भडक जायेंगे।' रघुवश बाबू चुपचाप सोचने लगे।

प्यार का बाजार !

एक गाँव-समाज का सामाजिक नाटक !

लेखक : श्री प्रेमकुमार 'दीवाना'।

भूमिका !

नाटक लिखने के पहले ही मँगनीसिंह नाटक की भूमिका लिख रहा है।

... प्रेम सरोवर स्नान करि, धर नटवर को ध्यान,

दीवाना रचता अहो, नाटक एक महान् !

संसार में प्रेम के नाम पर, प्यार की दुहाई देकर आज तक घनेरों नाटककारों ने अपनी लेखनी को कलंकित किया है। कलात्मक प्रेम उठ गया है, समाज से।...

कला पर प्रेम की कलई कलम मेरी चढ़ावेगी,

कलात्मक प्रेम का झंडा जगत-भर में उड़ावेगी ! इति शुभम्।

निवेदक—दीवाना

पात्र-परिचय :

1. पागल प्रेमी—प्रेम-तत्त्व को ढूँढ़नेवाला एक युवक।
2. जागल प्रेमी—प्रेम में वर्षों से जगा हुआ प्रेमी। अधेड़।
3. अभागल प्रेमी—जिसकी प्रेमिका की शादी दूसरे से हो गयी।
4. मूक प्रेमी } —एक ही प्रेमिका को प्यार करनेवाले दो प्रेमी।
5. हूक प्रेमी }

... पैंतीस पात्र हैं। पात्री ?

दीवाना ने सबसे पहले, मलारी को पत्र लिखना आवश्यक समझा। मनमोहन बाबू की बहन लीला पटना में नाटक करती है। गाँव में भी स्टेज पर उतरेगी। लेकिन, दलित-नाटक-मण्डली को उससे क्या लेना-देना ! यदि मलारी तैयार हो जाये तो नाटक में एक पात्री का भी समावेश कर सकता है, दीवाना।

"प्यार का बाजार हो या नहीं हो। इस बार शामा-चकेवा तो जरूर होगा। इसी पूर्णमासी की रात को शामा-चकेवा है, तैयारी करो !" मलारी कहती है लड़कियो से। अपनी उम्र की लड़कियों और सखी-सहेलियों को उत्साहित कर रही है—"कौन कहता है कि यह गँवार पर्व है ?... इसे माननेवाली लड़की फॉरवर्ड लडकी नहीं समझी जायेगी ! रहने दो वह सब फॉरवार्डी, शहर में !"

"लेकिन लिलिया भी कह रही थी कि शामा-चकेवा की याद आयी थी पिछले साल पटना में। सो, सुना कि गाँव में भी दो-तीन साल से शामा-चकेवा बन्द ही कर दिया है।" जयवन्ती बोली।

मलारी विहँसकर बोली–"कहती थी लिलिया ?"

लीला पढ चुकी है मलारी और जयवन्ती के साथ। जयवन्ती ने तो बहुत पहले ही पढना छोड दिया। मलारी और लीला ने एक साथ मिडल पास किया है। मलारी का तीन वर्ष मुफ्त मे ही खराब हुआ। लीला कॉलेज मे पढ रही है। मलारी के जी मे आया कि दौडकर लीला के पास जाये। लेकिन तीन-चार साल से तो भेट-मुलाकात हुई नही। तिस पर, कॉलेज मे पढती है–"सुनती हूँ कि लिलिया लडको की तरह केश छँटाकर आयी है ?"

"नही, नही।" जयवन्ती बोली, "मैं अभी देखकर आ रही हूँ। असल मे जिस साल गयी पटना, उसी साल शादी की बात होने लगी। वह भी कॉलेज मे पढनेवाला लडका ! उसने कहा, लीला यदि मर्दो की तरह बाल कटावे और साइकिल पर चढना सीखे तो शादी कर सकता हूँ। बस, लीला के मामू लीला को एक अग्रेजी बालबर की दुकान मे ले गये। वहॉ सोडावाटर-लेमलेड से केश को धोया, बालबर ने। फिर "

"इस्स ! तू भी जुलुम लडकी है जयवन्तिया ! ह हः ! बिना पटना शहर गये ही ऐसा बियान करती हो जेसे ऑख मे तू देख रही थी !" समिया बोली।

"ऑख की सपथ ! खुद बोल रही थी, लिलिया। दोपहर की मैं वहॉ थी। लिलिया के यहॉ खाकर सारी दोपहरी कहानी सुन रही थी।"

"शादी का क्या हुआ ?"

"सो, बाल तो कटा दिया। साइकिल पर, भोरे भोरे गिर पडकर किसी तरह लीला ने साइकिल सीखी। लेकिन, तब तक दुल्हा को दूसरी लडकी पसन्द आ गयी।"

"अच्छा ? तब क्या हुआ ?"

"फिर, दूसरा दुल्हा ठीक हुआ। तो, उसने कहा कि जब तक बाल नही बढेगा, शादी ही नही करेंगे।"

"लो मजा ! इस बार क्या हुआ ? इसको भी दूसरी लडकी !"

"नही नही। कहती थी, ज्यो-ज्यो मेरा बाल बढे त्यो-त्यो उसका आना जाना ज्यादे शुरू हो गया। लेकिन है उस्ताद उसका दुल्हा ! केश बढता गया, फोटो छापता गया, केश बढता गया, फोटो छापता गया।"

"इस्स ! हद हो तुम भी छौडी–ई-ई ह ह। ई तो वही फोटो खीचनेवाले भब्बी बाबू की तरह फटाफट फोटो खीचने लगी, जेसे !"

"हॉ, लिलिया कहती थी। मलारी का फोटो समाचारपत्र मे देखा, बडी खुशी हुई। उसके कॉलेज की लडकियो ने कहा कि तुम भी आग पर चलना जानती हो, तब ? दिखलाओ, एक दिन !"

मलारी बोली–"आज शाम को जाओगी जयवन्ती, फिर ?"

"चलेगी ?"

"हूँ !"

"चल ! लिलिया बदली नही है। एकदम, सब आदत वैसी ही। सेमिया भी चलेगी।"

केंक्-केंक् ! क्रें-ऐं-क्रेंक्। केंक्-केंक् !

शामा-चकेवा की बोली दुलारीदाय के किनारे सुनायी पड़ती है—आ गयी, आ गयी शामा-चकेवा की जोड़ी ! देखो, कहा था न ? शामा-चकेवा से ठीक एक दिन पहले ही आ जाती है शामा-चकेवा की जोड़ी। कोई पर्व मनावे या न मनावे !

शामा-चकेवा ही नहीं। सैकड़ों किस्म की चिड़ियाँ उतरी हैं हिमालय से, दल बाँधकर। खंजन-पंखी सबसे पहले ही सन्देश लेकर आ गयी थी—टिंउ-टिंउ, ट्रिटाँ ! खंजन को देखते ही कुमारी लड़कियाँ ओरियावन शुरू कर देती हैं।

नये नौजवानों की नजर में इस तरह के पर्व-त्यौहार रूढ़िग्रस्त समाज की बेवकूफी के उदाहरण-मात्र हैं। शामा-चकेवा, करमा-धरमा, हाक-डाक इत्यादि पर्वों को बन्द करना होगा।

बूढ़े भी कहेंगे—'मुफ्त में चावल, केला, गुड़, मिठाई, और दूध में पैसे लगते हैं। फिजूलखर्ची। चिड़िया-पंछी का भी पर्व होता है, भला ? सो भी इस जमाने में ?'

फिर भी हर साल लड़कियाँ खेलती ही आ रही थीं। जिस साल सर्वे शुरू हुआ, उस साल से एकदम बन्द। गाँव की बड़ी-बूढ़ियों ने कहा—"कहाँ खेलेगी शामा-चकेवा ! कोई भी अपनी जमीन में खेलने नहीं देगा।... फुटबॉल खेलने का मैदान स्कूलवाला दर्ज हो गया। कबड्डी खेल हो या फुटबाल, चाहे शामा-चकेवा। सर्वे के परचे में दर्ज हो ही जायेगा।" इसीलिए, जमीनवालों ने कहा—"नहीं, मेरी जमीन में नहीं। एक पर्व मनाकर मुफ्त में जमीन नहीं छिनवानी है। दर्ज हो जायेगा कि यह शामा-चकेवा खेलने का मैदान है।"

इस साल, हर टोले की लड़कियाँ धूम-धाम से शामा-चकेवा मनाने की तैयारी कर रही हैं। कहने को सिर्फ कुमारी लड़कियों का त्योहार है। साथ रहती हैं, सभी। ब्याही, बेटा-बेटीवाली, अधेड़, बूढ़ी सब मिलकर गाती हैं।

मिट्टी का शामा, मिट्टी का चकेवा ! छोटे-छोटे दर्जनों किस्म के पंछियों के पुतले ! अन्दी धान के चावल का पिठार घोलती है। पोतती है प्रत्येक पुतले को। इसके बाद लिपे-पुते सफेद पुतलों पर, पुतलों के पाँखों पर, आँखों पर तरह-तरह के रंग-टीप, फूल-लत्ती। लाल, हरे, नीले, पीले, बैंगनी, सुगापंखी, नीलकण्ठी। पुतले ब्याही बहनें बना देतीं। बूढ़ियाँ रंग-टीपकारी आदि कर देती हैं।

"कौन कहता है गँवई पर्व है ?" लीला बोली—"मैंने दैनिक आर्य-भूमि और इण्डियन-नेशनल-टाइम्स में लेख पढ़ा है, इस पर्व पर। समझी मलारी ?" मलारी ने कहा—"और मैंने भी पढ़ा है। 'पारिजात'[1] की पुरानी कापी उलटा रही थी। देखा शामा-चकेवा पर भी लेख है। लिखा है नेपाल की तराई से सटे, उत्तर बिहार के जिलों में होता है, यह पर्व।"

"ए मलारी, तू अपना हाथ काट के मुझे देगी ? कितना सुन्दर बनाती है तू !

1. पारिजात—पटने से निकलने वाली मासिक पत्रिका।

शहर की लड़कियों को भी मात कर देगी तुम्हारी चित्रकारी !"

"दुत्त !"

"आँख की कसम कहती हूँ...।"

"अरी लिलिया, तू अभी तक आँख की कसम खाती है। शहर में भी ?"

लीला बोली–"सच कहती हूँ, आजकल ऐसी ही चित्रकारी को पसन्द करते हैं लोग। हाथ में सीकी की बनी डोलची लेकर घुमती हैं, लड़कियाँ ! सो भी कितनी भद्दी ! यदि महीन कारीगरी तुम्हारी देखें वे ! तू चल मलारी, पटना ।"

"दुत्त !"

"तू नहीं जायेगी तो हाथ काट के दे अपना। मैं तो सब भूल गयी !"

"मैं हाथ काटकर दूँगी ! लेकिन, तुम एक चीज दोगी ?"

"क्या ?"

जयवन्ती, सेमियाँ, रतनी और मलारी एक ही साथ हँस पड़ी। सबसे पहले जयवन्ती बोली–"उँहुक्। वह देनेवाली चीज नहीं ! खबरदार, लिलिया !"

"क्या माँगती है ?" भोली लीला ने पूछा।

"माँगती है तुम्हारा दुल्हा-आ !"

"हा-हा-हा-हा ! "

मनमोहन बाबू ने अपनी माँ से कहा–"माँ ! जरा इधर सुनो !"

"क्या है ?"

"देखो, यह मलारी बड़ी करप्टेड है।"

"क्या है ?"

"माने, बदनाम है न ! लीला को उसके साथ ज्यादं मिलने-जुलने देना अच्छी बात नही।"

मनमोहन की विधवा माँ घर की मालकिन है। मनमोहन बाबू से नाराज रहती है। बहू की बात पर उठने-बैठनेवाले बटे को फूटी निगाह से नही देख सकती, वह बोली–"चार साल के बाद चार दिन के लिए गाँव आयी है, बेचारी। उस पर मैं हुकुम नही चला सकती। तुम्हीं कहो !"

"बिनराबन बनायी है या नहीं ? जरा देखने दो, मलारी दैया !"

मलारी हँसकर कहती है–"बिनराबन मत बोल ! बृ-न्दा-ब-न ! रटो पाँच बार !" मलारी के आँगन में खडी लड़कियों ने दुहराने की चेष्टा की–"बिन-बिर-बिन्द-बिन्दराबन। अब दिखा दो !"

"बेकार बृन्दाबन क्यों बनाऊँ ?" मलारी बोली–"जित्तन बाबू ने तो दो हजार गाछ रोपकर असली बृन्दाबन लगा ही दिया है। मैंने इस बार ऐसा चुगला बनाया है कि देखोगी तो देखती ही रह जाओगी।"

पुर्णिमा से दो रात पहले से शामा-चराई की रात शुरू होती है। घर-घर से डालियाँ लेकर आती हैं लड़कियाँ। डालियो में चावल, फल, फूल, पान-सुपारी के साथ पंछियों

के पुतले। लम्बी पूँछवाली खंजन, पूँछ पर सिदूरी रग का टीकावाला पंछी, ललमुनियाँ। बिनरा बृन्दाबन ! जहाँ, शामा-चकेवा की जोड़ी चरेगी। छोटे-छोटे कीड़े-पतंगे, बरसात के जन्मे। असली कीड़े-पतंगे नहीं, मिट्टी के ही। बृन्दाबन में चुगला आग लगा देगा। जली-अधजली चिड़िया बृन्दाबन की आग को अपने छोटे-छोटे डैने से बुझावेगी। धान, दही, दूध और मिट्टी के ढेले खिलाकर, लड़कियाँ बिदा करेंगी शामा-चकेवा को—"जहाँ का पंछी तहाँ उडि जा, अगले साल फिर से आ !" चुगला की चोटी में और मुँह में आग लगाकर लड़कियाँ ताली बजाकर गावेगी—"तोरे करनवाँ रे चुगला, तोरे करनवाँ ना ! रोये परानपुर की बेटिया रे, तोरे करनवाँ ना !"

"मैं नहीं देख सकूँगी मलारीदी का चुगला।" महती पेट पकड़कर बोली, "देख, जिसकी शामा केक-केक करके अब उडी। ऐसा लगता है, जिसकी खंजन को छूते ही टिंउ-टिउ-ट्रिटें करके सरसराकर दौड पडेगी। उसका चुगला कैसा होगा, हे राम ?"

"एक बार सब मिलकर ताली बजाओ।

फट-फट-फट-थप-थप-ढन-ढन-ढन ।

"ए, रमदेवा ! फटी ढोलकी मत बजा !"

मलारी धीरे-धीरे चँगेरी की झॉपी उघारकर चुगला निकालती है—"हॉ, मेरा चुगला ऐसा-वैसा नही, दु-मुँहा चुगला है। एक मुँह पक्का काला, दूसरा सादा "

"ह-ह-ह-ह-ह ! हा-हा-हा-हा ! ही-ही-ही बन्द करो, बन्द करो ! मर गयी ! पेट मे दर्द होने लगा। बन्द करो, मलारी दैया !"

डेढ हाथ का मिट्टी का पुतला ! एक शरीर, दो मुंह ! एक मुँह काला, ऑखे उजली और ओठ पर थोडी जीभ निकली हुई। दूसरा मुँह सफेद, दोनो ऑखे काली। दन्तपंक्ति मे एक दॉत सादा, बाकी सरीफा के बीज की तरह काले।

"हाय रे ! रूप देखकर जी जुडा गया। लगता है, मुँह चिढ़ाकर कुछ बोलेगा और बोलकर आँख मटकायेगा। चुटिया देखो छुछुन्दरराम की ! इसका नाम चुगलैट साहेब रखो मलारी !"

बाहर से किसी ने आवाज दी—"महीचनदास ! मलारी की मॉ !"

"कौन है ? ए ! चुप-चुप ! के है ?"

मलारी की मॉ घूँघट जरा-सा सिर पर सरकारकर ऑगन से बाहर आयी।

"क्या है ? कौन है ?"

"मैं सुवशलाल। एक किताब मासिक पत्रिका मलारी से पूछो।"

मलारी की माँ सब कुछ समझती है। लेकिन, जोर जोर से कुछ कैसे बोले, वह ? बूढ़ा जग जायेगा तो आफत लेकर उठेगा। वह धीमी आवाज में हाथ नचा-नचाकर कहती है—"बाबू साहेब, उ सब बात पूछना था तो उस दिन डागडरनी के मार्फत ही काहे न पूछवाये ? सरकारी बात है तो क्या किसी का लाज-धरम भी ले लेंगे ? बोलिए तो, भतखौकी टैन आने की बेला में आये हैं पूछने कि । जरा-सा भी मुँह में लगाम नही ?"

सुवंशलाल अवाक् होकर मलारी की मॉ की बातो को समझने की चेष्टा करने

लगा–क्या हुआ ?

आँगन से निकल आयी मलारी–"एक मासिक पत्रिका पुरानी और एक हाल की। सो, अभी रात में किसको जरूरत पड़ी ?"

मलारी मन्द-मन्द मुस्काती है। मलारी की माँ घूँघट के नीचे से दाँत कट-कटाकर कहती है–"हरजाई, लाज-सरम तो घोलकर पी गयी ! क्या खराब-खराब बात बोलती है !"

"सुरपति बाबू शामा-चकेवा पर लेख पढ़ना चाहते हैं। एक मासिक पत्र में तालाबी पंछी पर पद्द है।"

मलारी की माँ अपनी बेटी को डाँटती है–"मलारी ! बाप जगेगा तो··· ।"

"जगेगा तो क्या होगा ?"

सुवंश के रोम-रोम बज रहे हैं। एक झलक के भूखे सुवंश को और कुछ नहीं चाहिए।

मलारी ने कहा–"अच्छा, तो प्रणाम !"

सुवंशलाल के जाने के बाद दहलीज में गुमसुम खड़ी मलारी को ठुनका मारते हुए बोली, उसकी माँ–"फिर मार खाने को मन हुआ है तेरा ? मर्दों से खराब-खराब बातें बोलते तुम्हारी जीभ नही लड़खड़ाती ?"

"तू बेकार खराब बात रट के मरी जा रही है ! मासिक पत्रिका किताब को कहते हैं। देखती हूँ, अब जल्दी ही ट्रेनिंग के लिए भेजा जायेगा हमको।"

इधर मलारी ने एक नया तरीका निकाला है। समय-समय पर कहती है–"ट्रेनिंग करने के लिए जाऊँगी, मुजफ्फरपुर !" सुनते ही उसकी माँ चुप हो जाती है।

शामा चरावे गेली हम-ओं जित्तन बाबू'क बगिया हे-ए,
सोहि रे बगिया
शामा मोरा हेराइल हे-ए,
सोहि रे बगिया··· ।

गॉव से सटी, गोबर के खाद से पटायी हुई जमीन। तम्बाकू रोपने के लिए तैयार की गयी जमीन में लड़कियाँ जमा हुई हैं, बबुआनटोली की।

"एं ? बबुआनटोली की लड़कियाँ मुकाबला करेंगी ? मजा आयेगा !"

"लीला आयी है। उसी ने उकसाया है सबको।"

"अंग्रेजी में गायेगी शामा का गीत ?"

"अंग्रेजी में नहीं, फारसी में !" मलारी कहती है, 'मुकाबला की बात तो करती हो, जीत सकोगी लीला से ? गीत वह भूली नहीं है।"

लीला कहती है–"देख, सोलकन्हटोलीवाली सब गाली-वाली भी दें तो तुम लोग

गाली मत निकालना। समझी ?"

"सबसे पहले किसकी बगिया से ?"

"हमेशा, पहले हवेली की बगिया से शुरू होता है।"

गोड़ तोरा लागों भइया, पखारनसिंघ सिपैहिया-या
कि पैयाँ पड़ो ना !
काहे शामा मोर छिपावला
कि छोड़ि देहु ना, मोरा शामाँ रे चकेवा राम,
खोलि देहु ना !

"तब ? इसके बाद ?··· नाचेगी नहीं तो गीत कैसे जमेगा ? एक ही पद गाकर हाँफने लगी ? उधर सुन, बुर्ज के उस पार से मलारी के गले की आवाज ! कैसी सुरीली सुनायी पड़ रही है !"

"तू भी लिलिया, रिकाट से कम नहीं गाती है।" सामबत्ती पीसी कहती है। सामबत्ती पीसी के लिए दोनों दल बराबर हैं। बबुआनटोली की मण्डली में आयी है। गीत नहीं जमेगा, पान-पत्ता का इन्तजाम ठीक नहीं होगा तो सोलकन्हटोली की मण्डली में चली जायेगी। पान-जर्दा खाने से गला खराब हो जाता है, किसने कहा ? गाने दो सामबत्ती पीसी को। पीसी नाचना भी जानती है।

"ले। कमर कस के पकड़। बाल खोल ले। पद गाकर झूमना पड़ेगा।"

"हाँ, पखारन सिंघ बिना गाली सुने, शामा नहीं छोड़ेगा।"

सामबत्ती पीसी शुरू करती है :

आ-रे, लाज तोरा नाँहि भड़वे, पखारनसिंघ सिपैहिया-या
कि सरमो नाँहि रे।
तोरा देहि में धरमवाँ, एको रत्ति ना··· !

सोलकन्हटोली की करीब पाँच सौ औरतों की मूलगैन है, मलारी। सुर देने का काम करती है घेघी फुआ।

"ऐ ! घेघी फुआ को कौन चिढ़ा रही है ? बेन बाजा कहती हो तो कहो। बेगपैप क्यों कहती हो मलारी ? घेघी फुआ सुर छोड़ देगी तो तुम तुरत हाँफ जाओगी।"

"बेनबाजा की तरह, भाथी में हवा भरकर छोड़ भी दो, फिर भी, रें-एं-ऐं-ऐं !"

"कमर कसके पकड़, मुट्ठी बाँध। जयवन्ती, कुलमन्ती, धनवन्ती, सनमन्ती चारों बहिनियाँ ! मलारी को बीच में रखो। दो-दो जनि दोनों बगल में। हाँ !"

"लिलिया आयी है पटना शहर से मुकाबला करने ! देखना है।"

"नहीं, नहीं। मोकबला-मोकबली की बात लिलिया नहीं करती। बेचारी कह रही थी कि एक साथ शामा-चकेवा क्यों नहीं खेलतीं ?"

"जब पहले ही नहीं हुआ कभी तो अब क्या होगा ! बाभन-छतरी की बेटी-पुतोहू को तो हम लोगों की देह की मँहक लगती है।"

"मलारी ऐसी शामा-चकेवा खेलनेवाली लड़की नहीं कि शामा चराने के लिए आते ही खो बैठेगी सामाँ !··· अरे, अभी बाग देख, बगैंचा देख, पुरइन के गलैंचा देख। बृन्दाबन में घूमेगी नहीं, मस्ती में झूमेगी नहीं तो शामा को कैसे भूलेगी ?—चल ! जरा फैल के गिर्दांव बाँध। ताल मत तोड़ना। नवसिखू छौंड़ियों से कह दो, बेकार गला न भाँजें ! नहीं तो, मेरा मन खराब हो जायेगा।"

सभी मलारी की बात मानते हैं। मूलगैन है, मलारी। गला क्या पाया है छिनाल ने ! ··हम-उम्र लड़कियाँ अपनी सखी-सहेलियों को प्यार से भी छिनाल कहती हैं, गाँव में। मीठी हो जाती है यह गाली, तब !

बाँहों में बाँह डालकर कड़ी जोड़ती हैं मूलगैन के साथ की लड़कियाँ। हाँ, मूलगैन की कड़ी में जुड़कर गीत गाना खेल नहीं ! बेताली की हिम्मत नहीं होती कि उम कड़ी में जुड़ जायें।·· मूलगैन की पाँति चली !

मलारी बनहाँसिन की तरह चलती है। पहाड़ से तुरत आकर धरती पर बैठी हुई बनहाँसिन ! तकमकाकर इधर-उधर देखती है, अचरज से :

देखे में जे जावे सखिया, बाग रे बगैंचवा कि पोखरी-मण्डलवा
रम्मॉ ऊँची रे हवेलिया, देखु-देखु ना !
कहाँ बाग रखवारवा से पूछि लेहुना,
हमरो शामा के पीरितया से नेति देहुना !

बाग के रखवाले को पान-सुपारी से नेति दो, निमन्त्रित करके कहो—शामा तेरे बाग में चरेगी। बस, पान-सुपारी से फाजिल कुछ माँगे या कुछ इधर-उधर बतियावे तो सुना दो :

परानपुर के सोलकन्हटोला, नामि रे लठेलवा
कि जानि लेहुना,
हम्मरो बप्पा के पगड़िया कि भैया के रुपइया,
हम जाइब कचहरिया··· ।

शामा-चराई की पहली गत बीत गयी '

सुबह को मर्दों ने आपस में बातें करते हुए कहा—"रात में बहुत हल्ला मचा रही थीं लड़कियाँ सब। लड़कियाँ ही नहीं, बूढ़ियाँ भी गला खोलकर चिल्ला रही थीं।" तीन साल के थके हुए, सर्वे की दौड़-धूप से चूर लोगों को इधर कई रात से गहरी नींद आ जाती है। जमीन जीतनेवाले, मुकदमा हारनेवाले, सभी सोते हैं। अघोर निद्रा में बेसुध ! उनके स्वप्नों में कभी-कभी सर्वे के अमीनों की जरीब की कड़ियाँ खनखनाती हैं—खन-खन, खन-खन ! हाकिम गुस्सा से गरजते हैं—ए ! चौप ! चपरासी पुकारता है—कहाँ-आँ-आँ· !

दूसरी रात के बाद तीसरी रात। विसर्जन की रात।

आज की रात, किसकी जीत और किसकी हार होती है, देखना है ! पहली रात के बाद ही मुकाबले की चुनौतियाँ दी गयी हैं, दोनों ओर से। आज दिन-भर दोनों दलों की प्रमुख लड़कियों ने देह मालिश करवायी है। दूध, मिसरी के साथ गोलमिर्च की बुकनी खाकर गला साफ किया है।

लीला तो पगली हो गयी है, मानो। उसका दल कैसे जीते ? मूलगैन ही नहीं।

"एक मूलगैन ऐसी है कि यदि वह आ जाये तो सोलकन्हटोली की बोली बन्द कर दे। लेकिन, उसमें एक लेकिन लगा हुआ है।"

"कौन ? क्या लेकिन ? कौन लगाता है लेकिन ? मैं नहीं लगाने दूँगी किसी को कोई लेकिन। बोलो, कौन मूलगैन ?"

सुवंश की बड़ी भाभी बोली—"ताजमनी ! अब बोलो ? है न लेकिन लगा हुआ ?"

"क्या लेकिन लगा है ? दस साल पहले वह तुम लोगों के साथ शामा-चकेवा और झूमर खेल चुकी है। अब क्यो न खेलेगी ? जित्तन मामा ने मना किया है क्या ?"

"मना किसी ने नहीं किया है। अपनी मॉ से पूछकर देखो। तुमको तजमनियाँ के साथ खेलने देगी ?"

"क्यो, क्या हुआ ?"

"तुम जैसे कुछ नहीं जानती !"

"मैं सबकुछ जानती हूँ। ताजमनी तुम लोगों के दल की मूलगैनी कर चुकी है, वर्षो। हवेली की नानी के राज में खेलती थी, अब क्यो नहीं ? बिना मूलगैन के आज की रात भी फजीहत होगी। मलारी से मुकाबला करना आसान नहीं। मैं जा रही हूँ ताजमनी को बुलाने।"

सुवंश की बड़ी भाभी खुश है। वह चाहती है कि मलारी की छँहकबाजी छुड़ा दे कोई। कल रात पद जोड़-जोडकर ताना दे रही थी मलरिया—'बाभिन भौजी हे, भूमिहारिन भौजी हे—गावलो गीत जनि गाउ !'

"अरे ! लीला साइकिल पर चढ़कर आ रही है। देखो-देखो, मर्दों का कान काटती है साइकिल चलाने में। घण्टी भी बजाती है ? टिड़िंग-टिड़िंग !"

"ठीक है, बुला लाओ। वह तो हम लोगो की पुरानी मूलगैन है।"

"तजमनियाँ अब नट्टिन थोड़ी रही ? नट्टिन वे हैं जो कल जा रही हैं तम्बू लेकर, मेले में।"

"कालीबाड़ी में कीर्तन गाती थी तजमनियाँ। देवी के आगे ! · शामा-चकेवा साथ खेलने में क्या है !"

·· टिड़िंग-टिड़िंग !

"काकी ! तुम क्या कहती हो ?"

"ठीक है।"

"बबुआनटोली के हर टोले की औरतों ने, अपने मर्दों से बिना कुछ पूछे या सलाह लिये ही स्वीकृति दे दी—मर्दों से क्या पूछना है इसमें !"

"अरी, नट्टिनटोली नहीं जा रही है लिलिया। ताजमनी आजकल हवेली में रहती है। नही जानती ?"

शरद की चाँदनी में, पहाड से उतरनेवाले पंछियों की पहली पाँति का स्वागत !

शामा-चकवा, अधिगा, चाहा, बनहाँस, मुर्गाबी, पनकौआ, पनचिर्री, झिल्ला, जलमुर्गी, लालसर, सिल्ली की अलग-अलग पंक्तियाँ आकाश में भाँवरे लेती हैं।

उतरो, उतरो ! धरती पर पैर रखो। हाँ, यही है परानपुर गाँव। दुलारीदाय के कुण्डों मे मखाने, सिंघाडे, कमलगट्टे, पानीफल खूब फले हैं। वही तलैये, वही पोखरे, पुरानी चौर और धान के खेत। डरो मत, आज की रात बन्दूक का निशाना साधे धरती पर कोई नही बैठा है। आओ ! गाँव की कुमारियाँ अपने सफेद आँचलों को हिलाकर बुला रही हैं–"शामा-चकेवा अइहऽहे "

–केक-केक ! क्रेगा-आ ! क्रेंगा-आ ! केंक-केक !

हहास ! हहास ! एक के बाद दूसरी पाँति धरती पर उतरती है–हहास !

फेकनी की माय कहती है–"आकि देखो ! कल से ही मै समझा रही थी लडकियों को कि गला फाड-फाडकर मत गा। उधर बाभन-छतरी की बेटी-पुतोहुओं को देखो आकि, सलीमा-ठेठर की तरह डानस कर रही हैं। आकि देखो !"

"मलारी के साथ आज गा रही है सेमियाँ !"

"उधर, सामबत्ती पीसी है तो इधर फेकनी की माय। उधर भूमिहारटोली की फूहादी है तो इधर सेवियादी। उधर बौकी बेवा और इधर घेघी फुआ।"

"सुनती है ! ताजमनियाँ को बुलाया है उन लोगो ने ! अब ?"

"अब क्या ? मलारी किस बात में कम है, उससे ? कलेजा मत छोटा करो कोई !"

"क्या गावेगी तजमनियाँ, अब ? ढलती बैस में जवानी का गला कहाँ से पावेगी ?"

मलारी कहती है–"ऐसा मत कहो। मधा हुआ गला है उसका !"

ताजमनी ने जब गीत गाना शुरू किया तो मुँह में घुलती हुई पेप्स की गोली चबाकर निगल गयी, लीला। क्या गला दिया है भगवान् ने ताजमनी को !

लीला के साथ दूसरी लड़कियो ने भी ताजमनी के गीत का आखर पकड़ा। मुँह ऊपर ! चॉद की ओर देखकर यह गीत गाना चाहिए।

"ले ! कोई जानती थी यह गीत ?"

"मिसराइन की सिखायी-पढ़ायी कोयलिया है, तजिया !"

"गलबल मत करो ! सुनो !"

ऑं-रे, मानसा-सरो-ओ-बरा के झलमल पनियौं-यौं-यौं,
खचमच मोतिया भ-ण्डा-आ-र–
काहे छाड़ि आयला हंसा रे-ए-ए मिरतू भवनियौं-यौं-यौं,
बिनराबन करि पा-आ-आ र !
ऑं-रे, गंगा रे जमुनवौं के निरमल पनियौं-यौं-यौं,
काहे छाड़ि आयला हंसा रे-ए-ए··· हमरो अभागल गाँव।
बाबा मोरा आ-रे हंसा-आ-आ, पोखरी खोदायी गइले
पोखरी में फूले पुरइन फूल-आ-रे-हंसा हमरो तोखरिया-या
पोखरी भरायब दूध !···

·· दूध से पोखरा भरवा देंगी कुमारियाँ–उतरो ! आओ-ओ हंसा-चकेवा !

ताजमनी जब गा रही थी, पेड़ का एक पत्ता भी न हिला। सब, चुप होकर सुन रहे थे !

मलारी चुप होकर सुनती है। सभी चुप हैं–ताजमनी गा रही है। सुन !

"मन का बहुत पुराना बिरोग गीत मे घोलकर धीरे-धीरे ढाल रही है काँच के बर्तनों मे। मेरी देह देखो, रोये खड़े हो गये हैं !"

"ले, बलैया ! घेघी फुआ रो रही है। लो, बेनबाजा कौन वजायेगा ? क्यो रो रही है ? ताजमनी का गीत सुनकर ?"

"तैयार हो जा ! ताजमनी के रुकते ही तुम शुरू कर देना मलारी ! कहाँ सेविया ! तैयार रह जयवन्ती !"

उधर ताजमनी रुकी। इधर, मलारी ने शुरू किया। फेकनी की माय गुड़ और काली मिर्च की बुकनी खिला रही है पच्चक लडकियों को–गला साफ होगा।

गैहरी-ई-ई नदिया-या-या अगम वहे धारा-आ कि रामरे,
हंसा मोरा डूबियो नि जाये
रोयी-रोयी मरली-ई-ई चकेवा-वा, कि रामरे,
आ रे हंसा लौटी के आव··· !

पुराने गीत पर मलारी ने नया तर्ज दिया है !

ताजमनी मुस्कराकर कहती है–"मलारी के कलेजा में बहुत दम है। इतना ऊपर खींचती है। वाह !"

लीला बोली–"अब, एक गीत पनकौआवाला शुरू करो।"

हाँ रे, पन-कउवा···
सावन-भादव केर उमड़ल नदिया
भाँसि गेल भैया केर बेड़वा रे, पन-कउवा !
हाँ रे, पन-कउवा, मचिया वैसली मैया मने मने गुनैछे,
भैया गइले बहिनी बुलावेले रे, पनकउवा··· !

पूर्णिमा का चाँद हवेली के बागों के ऊपर उठ आया और धरती को ठिठककर देखता ही रह गया।

बुर्ज के मीनार पर जलता हुआ पेट्रोमेक्स भुकभुकाकर बुझ गया, अचानक ! नींद में विभोर सोये हैं गाँव के मर्द, थके-मारे, हारे-जीते, भरे-रीते !

गीतों के पंख पर उड़ता हुआ गाँव ! गीत-गंगा में नहाती औरतें !

गाँव में सब मिलाकर मात्र आठ-दस प्राणी जगे हुए हैं।

मीत भी जगा हुआ है। रह-रहकर उत्कर्ण होकर सुनता है और बाहर भागना चाहता है। जित्तन बाबू डाँटते हैं।

सुवंशलाल की आँखों में नींद अँगड़ाई लेती है। मलारी की सुरीली आवाज उसे एक घूँट-सा पिला जाती है, वह ऊँघते-ऊँघते जग पड़ता है।··· अजीब हाल है ! न सो सकता है और न जगने में ही कल ! बेकल है सुवंशलाल। यह कैसी बेकली है ! मलारी के बिना वह कुछ नहीं। मलारी का जन्म सुवंश के लिए ही हुआ है। और, अब तो मलारी उसकी आँख की भाषा को पढ़कर आँख से जवाब भी देती है ! मासिक पत्रिका वापस करते समय उसने जानबूझकर ही सुवंश की उँगलियो को छेड़ दिया था।·· क्या लेगी ? किताब ? कितनी किताबें हैं, देख ! रवीन्द्र, शरद्, प्रेमचन्द, यह ले, यह ले ! ऐं ! पुस्तकों में पंख लग गये हैं ! पुस्तकें उड़ती हैं पाँखें पसारकर ! फड़फड़ाकर रवीन्द्र-ग्रन्थावली उड़ी, अपार पारद के पर फड़फड़ाकर ! मलारी पकड़ती क्यों नहीं ? मलारी, दुलारी, हारी··· !

गँव के लोगों के सिरहाने सपने मँडराते हैं–दुलारीदाय की धारा में बाढ आयी है।

चाँदी के रुपयों-जैसी पोठी मछलियाँ, परती पर झिरझिर पानी में छटपटा रही हैं–चित्-पट, चित्-पट, छट-पट ! · धान के खेतों में दौड़ने से धान के फूल झरते हैं, दूधिया गन्ध फैल रही है।·· खेत का धान काटकर ले जा रहे हैं जमींदार के लठैत ! घेरो, घेरो !·· मुखिया का चुनाव हो रहा है। गाँववाले मुखिया बना रहे हैं, उसी को। दफा तीन में हारी हुई जमीन फिर हासिल हो गयी है।· · गेंदाबाई गाली देती है। मलारी हवेली-घर में रो रही है ? क्यों रो रही है ? लिखाकर दस्तखत करा लो उससे। पोंपीं ? कौन साँला हँमकों पोंपी कँहता ?··· मकबूल की दाढ़ी !

चाँद को भी नहीं मालूम, लड़कियों की दोनों जमात कब नाचते-नाचते एक गिरोह में घुल-मिल गयी !

पच्चीस बीघे जमीन लाँघकर, दो लहराती हुई धाराएँ मिलकर एक हो गयीं। हवेली के पच्छिम, बुर्ज से उत्तर ! संगम !

किलक पड़ीं एक साथ सैकड़ों चिड़ियाँ–हा-हा-हा ! केंक-केंक ! अरी, तजिया, ताजूदी, ताजमनी ! केंक-केंक ! मलारी, दुलारी ! लिलिया, लीला, हाय रे मेरी लीली

बिस्कुट रे ! क्रेंगा-क्रेंगा ! घेघी फुआ ? बैगपैप, बेनबाजा ? टिंऊँ-टिंऊँ-टिहुँक ! मौसी, मामी, काकी ? ए, बूढ़ी नानी ! मेंक-मेंक-मेंकाँ ! जयवन्ती ? सेमिया ? हा-हा-हा-हा ! ओ-हो सामबत्ती पीसी··· ।

भवेश तैयार हो गया !

··· ऐसा अवसर नहीं मिले बार-बार, किलकती रुपहले पाँखें पसार चिड़ियाँ हजार—फ्लैश ! क्लिक ! छटक-छटक !

"देखो ! बिजली छटकी ! · देखो बदमाशी। फोटो छाप रहा है !"

—फ्लैश ! छटक-छटक !

पाँच-सात लड़कियों के साथ लीला ने छापा मारकर छापी लेनेवाले को गिरफ्तार किया—"कहिए महाशयजी ! क्या हो रहा है ? चलिए औरतों की कचहरी में। कुछ नहीं सुनी जाएगी। लो, जयवन्ती, पकड़ो !"

औरतों के बीच भवेश की सूरत ! लीला देखकर मन-ही-मन मुस्कराती है—"चेहरे पर बारह बज गये ? ·· एक बल्ब दीजिए तो !"

भवेश की तुतलाहट बढ़ गयी—"इसमें बल्ब बदलने की ज-ज-ज-रू ।"

—फ्लैश ! चलो उतर गयी तस्वीर, छापी लेनेवाले को भी। दूर से बडा तीर मार रहे थे ! इनकी तस्वीर कौन लेगा ?

लीला ने दिखलाया—हजारो पुतले पछियो के ! रग-बिरगे ! चुगले, चुगलैंट। बृन्दाबन। इनकी तस्वीर · !

मलारी बोली—"मेरे चुगले की तस्वीर सचित्र साप्ताहिक के सबसे ऊपरवाले पन्ने पर नहीं छपेगी ? यदि आपके साथ इसका फोटो लिया जाये, तो भी नही ?"

"हा-हा-हा-हा। छोड दो, छोड़ दो ! बेचारे का फोटो विगड रहा है।"

"अब लगाओ चुगलैंट साहब की चुटिया मे आग ! फिर, मुँह मे।" मलारी ने अपने चुगले की चुटिया मे आग लगायी। सभी लडकियो ने अपने चुगलो को अन्तिम बार देखा :

तोरे करनवाँ ना रे चुगला, तोरे करनवाँ ना-
जरल हमरो बिनराबनवाँ रे तोरे करनवाँ ना।
तोरे करनवाँ ना रे चुगला··· !

लड़कियाँ हँस-हँसकर गा रही है, तालियाँ बजाकर !

फ्लैश ! · दोमुँहा चुगला का क्लोज-अप !

धूसर, वीरान, अन्तहीन प्रान्तर !

सफेद वालुचर ! यही है चिरपरिचित दुलारीदाय ! पाँचों कुण्ड में, पाँच चाँद ! पंछी की पहली पाँति का वृद्ध पखेरू आकाश में भाँवरे मारकर अपने दल को बिठाना चाहता है—पहले धरती पर, तब पानी में।

क्रेंगा-आ ! क्रेंगा-आ ! नये पंखवालों से कहो ज्यादा चुलबुल न करे। इस बार लक्षण अच्छे नहीं दीखते। इस परती पर पौधे कैसे लगे हैं ? ऐं ! खतरे की कोई बात तो नहीं ? खबरदार ! केंक-केंक !

द्वितीय-परिवर्त

स्थिर-निबद्ध, तीव्र-दृष्टि !

विनिद्र सुरपतिराय ने शरद-पूर्णिमा के चाँद को देखा, हवेली के पोखरें में। सहस्र कमल-दल पर शशिकला !

सुरपतिराय की ऑखो में स्नेहसिंचित लावनी की झलक ! दूध की सुगन्ध चारो ओर ! प्रकृति के अग वात्सल्य-गन्ध से सराबोर ! सरोवर मे दूध-ही-दूध !

सुरपतिराय कई दिनो से दूसरी ही दुनिया मे है। बहुमूल्य प्राप्ति के नशे मे झूमती कटी हैं राते, उसकी !

गीतवास हाट के पास रजौड गॉव मे, एक गरीब तॉती-परिवार मे कुछ पुरानी पाण्डुलिपियो-जैसी चीजे प्राप्त हुई थी। नेपाली, बॅसहा कागज के पचास-साठ पृष्ठ बहुत बुरी दशा मे मिले, अस्पष्ट लिखावट और दीमक-भुक्त दशा को देखकर सुरपति ने जिन्हे एक ओर रख दिया था, निराश होकर। यत्र-तत्र स्पष्ट पंक्तियो को पढ़कर, एक दिन विस्मित हुआ। भवेश ने कहा–"इन्फ्रा-रेड फोटोग्राफी ही बस एकमात्र उपाय है।"

उस दिन, भवेश लौटा है सत्तर प्लेट्स प्रिण्ट करवाकर। मोती-जैसी जगमगाती, 'श्रीमती लिखावट' ! टूटी लड़ियों के लटके-जैसे दीमक-भुक्त स्थान !

दो रात जगकर पढ गया है। तीसरी रात, वह हिन्दीं-अनुवाद करने बैठा। शामॉ-चकेवा विसर्जन की रात। शरद-पूर्णमासी की गीत-भरी रात की गोद में बैठकर उसने देखा, स्थिर-निबद्ध, तीव्र दृष्टि से !

दूध-भरे पोखरे मे चाँद ! अदृश्य अचंचल अचल से दूध झरते देखा। माँ-माँ की मृदु-गन्ध से उसका आँगन महक उठा।

मांगलिक अनुष्ठान-भरा वातावरण ! पंछियो की पाँतियाँ उड रही दूधिया आकाश में। पोखरे मे पुरइन के पात, महार पर स्थलपद्म की शीत मे नहायी पखुड़ियाँ !

पंछियों के बीच हठात् राजहंसिनी पर दृष्टि पड़ी उसकी।

स्निग्ध-धवल पंख पसारकर पोखरे में उतरी।···उसका जोड़ा कहाँ है ? राजहंस ! किसी ने पुकारा ! नारीकण्ठ ! लॉली ! लॉली ! बेटा लॉली !

सुरपति ने पहचाना—द्रोणी-पुष्प-रंग के वस्त्र में आवृता : मिसेज रोजउड। गीता मिश्रा। श्रीमती गीता !

लॉली, डेडी आयेगा !

·· आय, आय !

· लॉली, डेडी आयेगा !

आय, आय !

[प्रथम तीन अर्धभुक्त पृष्ठों से प्राप्त वाक्यांश ! इसके बाद !]

· माइ लास्ट एण्ड लॉस्ट लव !

मेरा अन्तिम प्यार, जो खो गया !

माँ मरियम के पवित्र चरणों पर जवा-फूल चढ़ाना अपराध है ! क्या अपराध है और क्या नहीं, माँ मरियम मुझे बता जाती है। इसलिए, धर्म के संकुचित !

!!

और मेरा अपराध !

मैं कन्वर्ट होकर हिन्दू हो गयी हूँ। इसीलिए तो ! किन्तु प्यार की परिभाषा मैंने अपने पवित्र धर्मग्रन्थो से ही सीखी है।

जिसे, जो जी मे आवे कहे ! किन्तु, दुहाई ! मेरे प्यार को कभी भला-बुरा न कहे कोई !

एक हिन्दू को मैने अपने गुरु, स्वामी अथवा पति के रूप में प्राप्त किया। प्यार की मारी मैं, इसी पुरुष की खोज में जन्म-जन्मान्तर भटकी फिरी, और इस जन्म में, यहाँ आकर मैंने इसे प्राप्त किया। सन् 1910 में। अपना सर्वस्व समर्पित कर मैंने उसे प्राप्त किया। मेरा सौभाग्य ! नहीं मालूम मुझे !

पूरब-पगली बचपन से ही मैं थी। पड़ोस की सहेली के पिता पूरब से लौटे थे। भारत से लौटे थे; महाभारत का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे थे। मैने बाद मे पढ़ा। सूर्य-पुत्र-गण ! कृष्ण ! कृष्ण नहीं, मैं पहले कहती—क्रिश्चना !

बाद में ऐसी लगने लगी कि मैं एबनार्मल हो गयी। लिटल-लॉर्ड क्रिश्ना को पढते-पढ़ते मैं एकान्त मे आतुर हो पुकारती—गोपाला ! ओ, नन्दलाला !

एक रात तो मक्खन की पूरी टिकिया लेकर बैठी रही—आओ ! बटर-थीफ !

[इसके बाद, पाँच पृष्ठो से प्राप्त शब्दों को झरे हरसिंगार के फूलों की तरह बटोरा है सुरपति ने !]

·हिम-मण्डित ! तुषार-मुकुट ! इन्द्रधनुषी देश ! गंगाजल ! देवपुत्र ! आर्यपुत्र ! स्वामी !

स्वामी के रूप में मैंने उसे स्वीकार किया।

डिस्पेप्सिया से अधमरे वृद्ध अंग्रेज व्यापारी को मैंने बात दे दी। उसे एक ऐसी सहधर्मिणी की आवश्यकता थी जो कुँआरी हो, सुन्दर और स्वस्थ हो; रबर-स्टेट के कारोबार को समझकर व्यापार में उसका हाथ बँटा सके। मलय प्रदेश, पूरब जाने की शर्त अनिवार्य थी !

ब्याह और मलय के लिए प्रस्थान। उसके दोनों कदम कब्र की ओर !

वह पूरब जा रहा था–भारत के निकट। भारत में भी रह आया है वह। बनारस में पाँच दिन रह चुका था। पुण्यवान था वह !

उस पुण्यवान को मैंने सबल, स्वस्थ और सुन्दर नौजवान पति की तरह स्वीकार किया। वह पूरब जो जा रहा था !

मेरी मम्मी जीवन में पहली बार नाराज हुई–'क्या पागलपन है ! जरा, फिर से सोचकर देखो तो !'

फिर से सोचने का समय कहाँ था ! वह अगले सप्ताह ही सेल कर रहा था।

शादी के बाद, मेरी एक शोख सहेली ने चुटकीली ठिठोली की थी, धीरे-धीरे, कान के पास–'उसकी पसलियों का खयाल करना। टेक केयर ऑफ हिज रिब्स !'

जहाज समुद्र में है। कोई अदृश्य शक्ति मुझे खींच रही है अपनी ओर ! एडवर्ड, मेरा स्वामी बीमार है। वह समुद्र में कभी स्वस्थ नहीं रहता : वह कहता है···।

[बीच के कुछ पृष्ठ खो गये हैं !]

मलय की सिर्फ सात चाँदनी रातों से हमारा परिचय करवाकर, मेरे पतिदेव ने सदा के लिए आँखें मूँद लीं। एडवर्ड कहा करता, 'मुझे मलय का अपना बँगला बुला रहा है !'

मलय के जंगल में, अपने बँगले में ही एडवर्ड को चिर-शान्ति मिली।

मेरे पति के साझेदार मित्र ने हमारी बड़ी मदद की। रोज रात में मम्मी भय खाकर उठ बैठती–'एडवर्ड नाराज है !'

मेरे पति के साझेदार मित्र ने सभी हिस्से बिकवा दिये। पूरे दो महीने के बाद हमने भारत की ओर प्रस्थान किया।·· टु केलकटा !

सारी घटनाएँ कुछ इस तरह घटीं, जिन्हें मैं अदृश्य शक्ति की कृपा के सिवा और कुछ नहीं मानती।

कलकत्ते में, दूसरे ही दिन ब्रण्टी से भेंट हो गयी–रेसकोर्स में। ब्रण्टी भी पूरब-पगली थी। पिछले साल, एक राजा की रानी होकर भारत आयी है।

ब्रण्टी और उसके राजा साहब ने हमें सूचना दी, उसके जिले में एक अंग्रेज कोठीवाला प्लाण्टर अपना स्टेट बेचना चाहता है, मिस्टर ब्लैकस्टोन। कल कलकत्ते आया है। वह आधी कीमत पर बेचने को तैयार है।··· गोइंग डेराडून !

एक दिन मम्मी बोली–'ब्रण्टी ने अच्छा किया है। उसका राजा सुन्दर है। भला आदमी है। सुपुरुष है।'

मिस्टर ब्लैकस्टोन ने बताया–'डेरीफार्म के लिए बहुत उपयुक्त स्थान है। कोठी के पास ही छोटी-सी अकेली नदी है। पास में विस्तृत चरागाह !'

मिस्टर ब्लैकस्टोन अपने बैग में जमींदारी के अन्य दस्तावेजों के साथ मैकमिलन एण्ड कम्पनी का एक बालकोपयोगी भूगोल भी हमेशा रखता। किताब खोलकर रेखांकित पंक्तियो की ओर दिखाकर बोला–पूर्णिया जिला। थाना–रानीगंज !

जिले के नक्शे पर, उत्तर कोने में नेपाल की सीमा के पास एक लाल बिन्दी डाल दी थी उसने–'यही है वह जगह ! यही है वह नदी–डोलरे-डेय !'

ब्रण्टी और उसके पति राजा महीपालसिंह की सहायता से हमने जमींदारी की कीमत तय करवायी।

राजा महीपालसिंह मुझे बहुत भद्र जँचे। लापरवाह, हँसमुख, हास्यप्रिय और चतुर। किन्तु, उनको भारतीय मानने को मन तैयार नहीं होता। रूप-रंग, पहरावा-पोशाक, बोलचाल और खानपान, सब इगलिस्तानी। मेरे, कल्पनालोक के पूर्वी पुरुष से कोई मेल नही। मुखाकृति भी नहीं मिलती।

हमने जमींदारी खरीद ली।

तीन महीने कलकत्ते मे रहकर, हम मिस्टर ब्लैकस्टोन के साथ पूर्णिया आये। माँ के विशेष आग्रह पर मिस्टर ब्लैकस्टोन ने हमारे साथ एक सप्ताह रहना मंजूर कर लिया। इलाके से परिचय कराते समय उसने बार-बार चेतावनी दी हमें।

–परानपुर स्टेट के पत्तनीदार मिसरा से होशियार ! माइण्ड यू !

सन् 1856 ई. में इस कोठी की नीव डाली गयी है।

हीरा दरबान का कहना है–'सात साहबो ने इस कोठी में वास किया है। चार ने इलाके पर राज किया है। ब्लैकस्टोन साहब चार साल भी नही चला सके, जमींदारी !' बँगले की सजावट मे कहीं कोई कमी नहीं हुई। कोठी की फुलवारी मे, विदेशी पेड़-पल्लवो के बीच स्थानीय फूलों के कुंज ! बूढ़ा माली उत्तिमलाल आदमी से ज्यादा फूलों की भक्ति करता है।

पुटुस फूल यहाँ का जगली फूल है। बॉमबन के घने अन्धकार में खिली-फूली झाडियाँ ? छोटे-छोटे स्टार-जैसे फूल, घोर लाल, गुलाबी, सफेद, बैंगनी।

इस उपेक्षित फूल को फुलवारी में लगाने के प्रस्ताव को सुनकर उत्तिमलाल बहुत उत्साहित हुआ। हीरा दरबान के मार्फत उसने हमें समझाया, पिछले आठ-दस वर्षों से वह, इस फूल की झाड़ी को फुलवारी में रोपना चाहता है। किन्तु…। बाद में मालूम हुआ, पुटुस को फुलवारी में लाने का विरोध, कोठी के मालिक ने नहीं, कोठी के दरबान हीरा मण्डल ने विशेष रूप से किया था। इस बार भी देखा, जंगली फूल के इस सम्मान को देखकर हीरा खुश नहीं। बूढ़ा हीरा दरबान गत बीस वर्षों से इस कोठी में दरबानी करता है। वह समय-असमय मुझसे अपनी टूटी अंग्रेजी में बातें करता। आसपास के गाँव और गाँव के लोगों के बारे में–'थिक विलेज, ग्रेट विलेज, खास रैयाट, भेरी बैड मैनी एण्ड भेरी गूड मैन नन !'

डेरीफार्म खोलने के विरोध मे हीरा ने कहा–'नॉट गूड ! एवरीबडी से–यू विलायती ग्वालन !'

सुनते ही मैं समझ गयी, सभी मुझे ग्वालिन समझेगे। समझेगे ग्वालिन ? अहोभाग्य ! मैं ग्वालिन ! मैं गोरस का कारबार करूँगी ! अवश्य !

जापानी डॉल ! ताजमनी का पहरावा देखकर जितेन्द्रनाथ को जापानी गुडिया की याद आयी। माथे पर सीकी की डाली–रग-बिरगे फूलोवाली डाली ! ओठो पर सरल मुस्कराहट ! जितेन्द्रनाथ प्रसन्न हुआ। वक्र मुस्कराहट नही !

गोबिन्दो ने जितेन्द्रनाथ की गुनगुनाहट को सुनकर समझ लिया, मन का फूल खिला है ! मॅन का फूल ही नेहि फूटता है दादाबाबू का ? फिर कैसे कॅरके क्या होगा ?

"क्यो गोबिन्दो ! रसोईघर मे अडहुल फूल से किस देवता की पूजा हो रही है ?" गोबिन्दो ऐसी बातो का मतलब बहुत शीघ्र समझता है। नुकीले ओठो पर हॅसी को स्थिर करके बोला–"ही-ही-ही ! श्येमा पूजा माने माँ काली का पूजा नजीक आ गिया कि नेहि, इसी वास्ते ! ताजनदि बोला । दादाबाबू, आप नेहि मॅत कॅरिए। पूजा को हुकुम जॅरूर दीजिए ! माँ श्येमा !"

"गोबिन्दो ! अपने चूल्हे की आँच देखो जाकर ! श्यामा पूजा के लिए हुकुम लेने की जरूरत नही। हुकुम लेकर पूजा होगी ?"

जापानी गुडिया को एकान्त मे खिलनेवाले दो फूलो की महक लग गयी। गोबिन्दो अपने दादा बाबू के हृदय के कोने-कोने मे घूम चुका है, बचपन से ही !

ताजमनी को देखते ही गोबिन्दो ने जितेन्द्रनाथ को आँख के इशारे से सूचित किया। पुरानी आदत ! जितेन्द्रनाथ को हॅसी आयी ! गोबिन्दो हाथ मे खाली प्याली लेकर रसोईघर की ओर भागा। मीत ने धमकी दी–इसमे दौडने की क्या बात है ! बॉख !

जितेन्द्र और ताजमनी की उम्र एक साथ ही बीस वर्ष घट गयी, मानो। दोनो खिलखिलाकर हँस पडे। मीत ने उत्कर्ण होकर दोनो की ओर देखा। इन्हे भी एक धमकी दे दे ? बॉख !

"जानते हैं ! जोर-जोर से हँसने पर मीत नाराज होता है।" मीत ने अपना नाम उच्चारण करनेवाले प्राणी के घुटने पर अपने दोनो पैरो को रखकर प्यार प्राप्त किया। दूसरे ने उसके लम्बे कान को पकडकर जरा खीच दिया। आऊँ ! बॉख !

ताजमनी ने दीवार पर लटकती हुई तस्वीरों की ओर देखा। तस्वीरो के आसपास मकडी के जाले हैं या ये भी तस्वीरे हैं ?

"मन्दिर और हवेली-घर के कमरो की सफाई के लिए मुशीजी को मजदूर नही मिलते हैं। और दुनिया-जहान के फरेबी कामो के लिए उन्हे आदमी ढूँढते फिरते हैं ! आज यदि मालकिन-माँ होती !" ताजमनी धूपबत्ती जलाने लगी।

"मुंशी जलधारीलाल ने चालीस साल पहले ही फरेब कर्म की ट्रेनिंग ली है। नया फरेबी नहीं, वह !" जितेन्द्रनाथ को अचरज हुआ, ताजमनी की मुस्कराहट जरा भी टेढ़ी नहीं हुई ? नागफनी के डण्ठल-जैसे होल्डर में धूप की बत्तियाँ सजाती हुई बोली–"लेकिन, ऐसा कुकर्म न मालकिन-माँ के समय में हुआ और न उनसे पहले !"

जितेन्द्रनाथ हठात् गम्भीर हो गया। ताजमनी मन-ही-मन मुस्करायी · मुझे चिढ़ाने चले थे ! धूपबत्ती के नागफनीनुमा होल्डर को सामने के ताख पर रखकर ताजमनी बोली–"नकली नागफनी मे असली काँटे लगाने की क्या जरूरत !" उँगली के अगले पोर को टीपकर रक्त की नन्ही-सी बिन्दी निकाली और सिर में लगा ली। जितेन्द्रनाथ ने पूछना चाहा–यह क्या हुआ ? खून का टींका ! किंतु कँटीली बात उसे चुभ गयी थी। बोला–"क्या किया है मुंशी जलधारीलाल ने ! किसी की पीठ पर लाल दगनी से फिर कुछ लिखा है क्या ?"

"पीठ पर नही। कलेजे पर दगनी दाग रहे हैं मुंशीजी।"

"मुशीजी का क्या क़सूर ?"

"कसूर जिसका भी हो ! लेकिन, जो कुछ भी हुआ है या हो रहा है, वह आपके जोग नही। जिद्दा, आप नही जानते ?"

"क्या ?"

ताजमनी हँसी। वह अच्छी तरह जानती थी, जिद्दा को कुछ नही मालूम। बोली–"इस्टेट से मामले-मुकदमे करनेवालो रैयतो, या इस्टेट के बरखिलाफ होनेवाले किसानो की लहलहाती हुई फसल रातों-रात चौपट कभी नही करवायी गयी। गाय-भैंस और बैलो की चोरी नही करवायी गयी। किसी के घर मे आग लगाने के लिए ।"

"ताजू !"

"सन्तोखीसिह की बीस बीघे की खती, एक ही रात में शेष हो गयी। केयटटोली से सात बैल और तीन भैंस चोरी चली गयी। फटकन के दोनो बैल छटपटाकर मर गये। जिद्दा, और भी बहुत-कुछ करने की धुन में लगे हैं मुशीजी।"

"रामपखारन सिघ !"

"हजोर ! जी बौवाजी !" आजकल, हजूर कहने से नाराज होते हैं बौवाजी !"

"मुशीजी कहाँ हैं ?"

ताजमनी मुस्कराती हुई अन्दर चली गयी। धूपबत्ती की गन्ध कमरे में और अँगनाई में हरसिगार की हल्की सुरभि ! लगता है माँ का मौसम लौट आया है। माँ-माँ की मृदु गन्ध !

मुशीजी दाद खुजलाना भूल गये !

"बायोलॉजिकल वारफेयर का मतलब समझते हैं मुंशीजी ?"

"जी नहीं ! फिर कोई नया कानून बना है क्या ?"

"कीटाणु-युद्ध ! रोगों के कीड़े बरसाकर दुश्मनों को बरबाद किया जाता है, आजकल ! सबकुछ माफ है, इस युग में !"

"जी !"

"इस्टेट के दुश्मनों को साधने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं ?"

मुंशी जलधारी के दाद के चकत्तों की खुजलाहट तीव्र हुई। अब वह अपनी उँगलियों को रोक नहीं सका। दाद खुजलाता हुआ मुस्कराया—"जी ?"

"हाँ !" जितेन्द्रनाथ ने मुंशी के चेहरे पर निगाह गड़ा दी।

"आप चुपचाप बैठे रहिए ! इस्टेट के दुश्मन सध जायेंगे, खुद-ब-खुद !"

"नहीं। मैं चुपचाप क्यों बैठा रहूँ ? आप कुछ नहीं कर सकते तो साफ-साफ कहिए। दुश्मनों को साधना होगा।"

मुंशी जलधारीलाल दास के चेहरे पर ऐसी खुशी कभी नहीं देखी गयी। उत्साह और आनन्द में दाद की खुजलाहट खत्म हो गयी—"हुजूर ! आप तो बेकार परेशान हो रहे हैं ! हुजूर का नमक ताबेदार की हड्डी में है। एक-से-एक टेढ़े दुश्मन को बारी-बारी से सीधा करना मेरा काम है। सन्तोखीसिंह को जानते हैं न ! तीन दिन से खाना-पीना छोड़कर हाय-हाय कर रहा है !"

"मुंशीजी ! एक सन्तोखीसिंह के हाय-हाय करने से कुछ नहीं होगा। मैं चाहता हूँ, सारा गाँव हाय-हाय कर रोये। मेरा कलेजा ठण्डा होगा, उसी दिन !"

"सारा गाँव रोयेगा ! रोयेगा ! ताबेदार कान में तेल देकर बैठा नहीं है। मेरे कब्जे में ऐसे-ऐसे लोग हैं कि चाहूँ तो एक ही रात में गाँव को मशानघाट बना दूँ !"

"वाह ! वाह ! साँप-बिच्छुओं से भरी हाँडी कहाँ मिली आपको ?"

अब, मुंशी जलधारीलाल की मुस्कराहट देखे कोई !··· बमभोलेनाथ धीरे-धीरे राह पर आ रहे हैं ? पर्दे की ओर कनखी से देखकर वह बोला—"हुजूर ! ऐसा-ऐसा आदमी है। एक-से-एक !··· "

एक-से-एक !

मुंशी जलधारी की सेना के एक-एक व्यक्ति को देखकर जितेन्द्रनाथ ने स्वीकार किया··· एक-से-एक !

··· बकला अहीर ! जिला-जैवार में मशहूर भैंसवार। दस कोस, बारह कोस दूर गाँवों की फसल चराकर जब वह अपने बथान पर आता है, तब आकाश में भोर का तारा उगता है। भैंसे हैं या हिरनों का झुण्ड !

उस रात में मुंशी जलधारीलाल ने अपने 'गणों' को बुलाया था, हुजूर से भेंट कराने के लिए—"चलो ! तुम लोगों की किस्मत खुल गयी !"

बहुत देर तक जितेन्द्रनाथ बकला की बनावट को देखता रहा। लम्बे तरबूज की तरह सिर। कपाल सामने की ओर निकला हुआ। देह से दूध की गन्ध ! जो कितनी भी पवित्र क्यों न हो, किसी-किसी के लिए दुर्गन्ध अवश्य है। घुड़कती

हुई आँखें !··· बकला की मुस्कराहट ! उसकी बोली भी अजीब !

"हें-हें-हें ! हुजू-उ-उ-र ! आपके अकबाल से अभी तक मैं बीच खेत में कभी नहीं पकड़ा गया। बीस रस्सी दूर के आदमी के पैर की आहट को परेख लेती है मेरी भैंस ! फिर मेरा खूनियाँ भैंसा ! उसके तीन नवतुरिया जवान पाँड़ा की जोड़ी। बारी-बारी से चौकन्ना होकर देखने लगते हैं।··· मैं ? हजू-उ-उ-र, मैं तो अपनी मोरंगनी भैंस की पीठ पर नींद में फोंफ्-फोंफ् ! उधर खेत साफ !"

बकला का 'फोंफ्-फोंफ्' मुनकर, पहले से ही आतंकित, और जंजीर में बँधे मीत ने तीन बार बॉख किया !··· एक-एक व्यक्ति को प्रवेश करते समय मीत ने डाँट बतायी–बॉख-बॉख-बॉख ! बकला ने मीत की ओर सशंक दृष्टि से देखते हुए कहा–"हुजू-उ-उ-र ! मटरकाट भी हमारी भागती हुई हाँज[1] का मुकाबला नहीं कर सकती। एक बार रानीगंज थाना के दारोगा ने इलाके के नामी पहाड़ी घोड़े पर चढ़कर पीछा किया। कहाँ मेरी मोरंगनी भैंस के छूए-पूए और कहाँ मँगनी का माल, पहाड़िया घोड़ा ! मेले के रेस में बाजी मारनेवाला पहाड़ी घोड़ा का पेशाब अटक गया और चार चितंग-हें-हें-हें !"

बकला अपने हुनर में माहिर है। उसकी भैंसों को देखने की इच्छा हुई जितेन्द्रनाथ की, क्योंकि बकला ने बताया–"मेरी हाँज की भैंस सिर्फ चरती ही नहीं। कल ही तो चौरीटोलेवाले का दस बीघा सकरकन्द और पटनियाँ आलू उखाड़कर कचर गयी !··· हाँ, चारों खुरों से खोदती है मेरी भैंस ?··· हें-हें-हें। चेले-चपाटी भी साथ रहते हैं। हें-हें-हें !"

ननकू नट ! मुंशी जलधारी का दूसरा दस्तादार।

–बॉख ! बॉख ! बॉख ! बॉख।

जितेन्द्रनाथ को मांस की गन्ध लगी। मांस की नहीं, शहर के बूचड़खाने की बगलवाली गली में ऐसी ही गन्ध लगती है। ननकू नट की बाबड़ी ! खाल से सटाकर कटी हुई पट्टी ! मिस्सी मलकर काले किये दाँत !··· जितेन्द्रनाथ ने सुना–यह ननकू नट मवेशी चुरानेवालों का मेंठ है, इलाके का ! राह के हर गाँव में इसका एक शागिर्द सतर्क होकर रात में सोता है। डाक के दौड़ाहे की जैसी ड्यूटी ! डाक में आये हुए मवेशी को तुरत दूसरे अड्डे तक पहुँचाने का काम आसान नहीं। सुबह को अपने घर से आँखें मलते हुए उठकर गाँव में चक्कर मारना होगा। इसके अलावा ननकू नट का जेबी बूचड़खाना भी चलता है। हाथ की झोली में जितना सामान है, उसी से वह आध दर्जन मवेशी के मांस का कारबार कर लेता है, गुपचुप। जितेन्द्रनाथ ने ननकू नट को मात्र पाँच मिनट अटकाया। मीत रह-रहकर गुर्रा उठता था।

खन्तर गुलाबछड़ीवाला !··· 'गुलाबछड़ी कड़कड़ बोले, लड़िकन सबके मनुआँ डोले।' घण्टी बजाते हुए खन्तर गुलाबछड़ीवाले को देखते ही गाँव के लड़के धान,

1. भैंसों का झुण्ड।

चावल या पैसे लेकर दौड़ते। उन लड़कों के पीछे-पीछे उनकी माँ, दादी या चाची! खन्तर गुलाबछड़ीवाला बैद्य भी है, ओझा भी! इसलिए, दूसरे गुलाबछड़ीवालों से चौगुना सौदा देने पर भी खन्तर घाटे में नहीं रहता। गुलाबछड़ी की कड़कड़ी मिठाइयों में, लड़कों की बलि लेनेवाले तरह-तरह के जहर लपेटकर खन्तर घण्टी बजाता है। मौत की ओर दौड़ते हुए लड़के!... बनहल्दी की एक कच्ची गोली की कीमत दो रुपया! और झाड़-फूँक में जैसा घर, जैसी बीमारी देखी वैसा हिसाब। हर दो महीने के बाद विभिन्न पोस्ट ऑफिसों से सैकड़ों रुपये भेजता है, दवा, जन्तर और जड़ी-बूटी के नाम पर! खन्तर गुलाबछड़ीवाला किसी रात को अपने घर में नहीं सोता। किसी-न-किसी गृहस्थ के घर में चक्कर पूजकर, कबूतर का भूना हुआ मांस और तीस नम्बर दारू का तीन बोतल पीकर, बैठा मन्तर पढ़ता रहता है। चक्कर के पास पीड़ित बच्चा अपनी माँ या दादी की गोद में ऐंठता हुआ। रह-रहकर चिल्लाता—बप्पा रे! मैया रे!

... बॉख-बॉख-बॉख-बॉख!·

खन्तर गुलाबछड़ीवाला बड़ी मीठी बोलनेवाला! बात बोलने के पहले प्रत्येक बार नाक से एक विचित्र आवाज निकालता है—"खँक्! बाबू साहेब! बात यह है कि जान-बूझकर जान लेना अच्छी बात नहीं। इसलिए, खँक्, ज्यादा तेज खुराक नहीं मिलाता हूँ। नारियल के पानी और कोहड़े के सेंक से पेट का दर्द आराम कर पचीस-पचास मिल जाते हैं। कभी-कभी अन्दाज से फाजिल खुराक पड़ जाने पर जान चली जाती है, एकाध की।.. फरमाइशी काम में हजार-पाँच सौ से कम नहीं लेता। अब तक सिर्फ तीन फरमाइशी गुलाबछड़ी बनाकर खिलाया है। बहुत बड़े खानदानवाले हैं, नाम क्यों लें? खँक्! तीनों फैनल केस!" खँक् शब्द के अलावा प्रत्येक पंक्ति के बाद हाथ जोड़कर गर्दन झुकाने की आदत है, खन्तर की! फैनल केस माने जान लेने का काम! खन्तर को पूरा विश्वास है, पाँच-सात हजार का काम जरूर मिलेगा। मुंशीजी ने कहा है, तीन केस तो जरूर समझो!

जितेन्द्रनाथ का सिर चकराने लगा। किन्तु, उसने अपने को सँभाला! टेबल की आड़ में, परदे के पीछे टेप-रिकॉर्डर की करकराती हुई आवाज! बीच-बीच में परदे के उस पार से या इस पार से बिजली छटकती! जितेन्द्रनाथ हँसकर कहता—तेजी पावरवाला टॉर्च है। घबराने की बात नहीं।

तीन बजे रात तक इण्टरव्यू का कार्यक्रम चला!..

आतंक से जितेन्द्रनाथ का मुँह विकृत हो गया है। साँप-बिच्छुओं से भी ज्यादा जहरीले प्राणियों से मिलकर वह भयभीत हुआ है। किन्तु ताजमनी नित्य प्रसन्नवदना होती जा रही है। मुस्कराहट की वक्रता मिट गयी है। अन्दर हवेली की उजड़ी क्यारियों में हरियाली जाग रही है, धीरे-धीरे। तुलसी-चौरे पर तुलसी का बिरवा सदा फूला-फला रहता है—जिद्दा! माँ आ रही है! आनन्दमयी, प्राणमयी माँ!

"पूजा की सामग्री ? ताजू, मुझे माफ करो। मैं सबकुछ भूल गया हूँ। किस देव-देवी की पूजा में कौन फूल वर्जित है, मुझे याद नहीं।"

"मैं फर्दी लिखकर ले आयी हूँ। आप सु-मन से खरीदकर ला दीजिए। फूल नहीं लाना है आपको !" फिर वक्र मुस्कराहट लौट आयी ओठों पर ?·· नहीं, नहीं। ऐसा न करो ताजू !

जितेन्द्रनाथ ने पूजा-सामग्री की फेहरिस्त लेकर देखा, ताजमनी की लिखावट में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। और, इस पत्रे को खो देना अन्याय होगा। · माँ की वेदी का एक स्केच, हल्के गेरुए रंग में अंकित ! मिथिलाक्षर, देवनागरी और बँगला लिपि से प्रभावित, पवित्र किस्म के अक्षर ! उपशीर्षक की पंक्तियाँ, जवाफूल की कलियों की छोटी-छोटी मालाएँ ! जादू सीखने की बात झूठ नहीं ! पत्रे को यत्नपूर्वक जेब में रखते हुए जितेन्द्रनाथ ने ताजमनी की उँगलियों की ओर देखा—स्वर्ण-चम्पा की कलियाँ ! इन उँगलियों को सूँघने की इच्छा हुई। चूमने का मन ·· !

सु-मन से ही नहीं, भक्ति-भरे मन से पूजा की सामग्री ला दी है जितेन्द्रनाथ ने।

सिन्दूर, अगरू, तिल, हर्रे, पंचगव्य, पंचशस्य, पंचरत्न, पंचपल्लव, घटाच्छादन का वस्त्र, माँ के लिए साड़ी, महाकाल के लिए धोती, भोगद्रव्यादि कर्पूर, ताम्बूल, धूप-दीप, दूर्वादल, पुष्प, तुलसी, नैवेद्य, चाँदमाला, पुष्पमाला, आरती !

श्यामा-पूजा के दिन माँ की देह से मनोहारी गन्ध निकलती। रह-रहकर तीव्र हो उठती। मतवारा करे, आत्महारा मोरे—तोहरऽवदनऽसुरभि माँगो ! जितेन्द्रनाथ हठात् अपनी माँ का आँचल पकड़कर हठ करता—"थोड़ी देर आँचल सूँघने दो अपना, माँ !"

"चल ! बड़ा तंग करता है कभी-कभी तू ! सारा काज पड़ा है। आँचल में क्या है ?"

जिद्दा की जिद्द ! "क्यों, पीसी की तरह तुम भी क्यो नही सिंगार करतीं ? बलभद्दू भैया कह रहे थे, तुम्हारी माँ सिन्दूर का टीका नहीं लगा सकती। क्यों नही लगा सकती ? बस, आज ही, एक दिन के लिए सिन्दूर लगा लो माँ ! देखूँ !"

पूजा-उपकरण खरीदते समय जितेन्द्र को याद आयी। माँ ने समझाकर कहा था—"सिन्दूर श्यामा माँ को दे चुकी हूँ। मैं सिन्दूर नहीं देती तो अड़हुल के फूल लाल कैसे होते ? माँ की माँग के सिन्दूर से ही जवाफल में लाली भरती है।

जितेन्द्रनाथ को प्रत्येक पूजा की याद आती है, बारी-बारी से। लगता है, माँ हवेली के किसी कमरे में छिपी बैठी है ! एक बार लुत्तो ने मुँह चिढ़ाकर अपने साथियों से कहा था—"इतना बड़ा हो गया है और उस रात को अपनी माँ का दूध पी रहा था गट-गटकर। आँचल की ओट में। छिः, छिः !" लुत्तो को देखकर बचपन से ही, डकरते हुए पाँड़ा की याद आयी है जित्तन को। भैंस का पाँड़ा। मौका पाते ही सींग चलाना नहीं भूलता। जित्तन ने एक बार पूजा के अवसर

पर धमकी दी थी—"काली के नाम चढ़ाऊँगा। भोग दूँगा !" "ही-ही-ही !" ताली पीटकर लुत्तो भागा था—"लड़कियों की गाली बकता है रे ! छौंड़ीमुँहा लड़के को देखो रे !… "

जितेन्द्रनाथ मन-ही-मन हँसा, पाँड़ा-बलि को उसने कभी बर्बरता नहीं समझा ! किन्तु लुत्तो की बलि ? नहीं-नहीं। लुत्तो को देखकर उसको अपना बचपन याद आता है। ठीक ही कहा था लुत्तो ने। लड़कियों की गाली ही थी।

लुत्तो के एक वर्ष के बेटे को गुलाबछड़ी खिलाकर बलि देना चाहता था मुंशी जलधारीलाल। उसकी भैंस को सींग-फोड़ जहर खिलाकर मारना चाहता था। किन्तु, लुत्तो के मन के घाव की पीड़ा को समझता है सिर्फ जितेन्द्रनाथ, अकेला ! … नैवेद्य, पुष्पमाला, आरती ! कल्याणी माँ के सामने भेद-भाव, डाहद्वेष ? सत मुझे दे, असत तू ले। विष तेरा, अमृत मेरा। नहीं-नहीं, अमृत भी तेरा !

"इस बार श्यामा-संकीर्तन करूँगी !" ताजमनी ने अपने मन की लालसा खोल दी।

"सच !" जितेन्द्रनाथ उत्साहित हुआ। ताजमनी की उँगलियों को पकड़कर उसने चूम लिया।

"जिद्दा !" ताजमनी की उँगलियाँ मानो आग में झुलस गयीं।

"ताजू !"

ताजमनी बेसुध पड़ी रही जितेन्द्रनाथ की भुजाओं में !

· अमीर, तहसीलदार, पटवारी, सिपाही, गोड़ाइत और बराहिलों को लेकर मम्मी कचहरी-बँगला में जमींदारी का जंजाल सँभालने लगी। मैं अपने गुहाल-बँगला (मेरी दाई पुतली गोशाले को गुहाल-बँगला कहती !) में गाय, भैंस, बाछे, बछियाँ, भैंसवार, चरवाहे और पुतली के साथ गोधन की सेवा करती। पुतली मेरी सहेली जैसी हो गयी। साँवली, सलोनी, स्वस्थ पुतली सदा मुस्कराती रहती, मीठी मुस्कराहट !

वह मुझे स्थानीय बोली में आदमी और जानवरों को पुकारना सिखलाती : भैंसवार को, 'रे मेथिया-या-या !' चरवाहे को, 'रे घोल्टा-आ-आ !' दरबान को, 'हिरवा-वा-वा !' काली गाय को पुकारती—'हि-बो-ओ-ओ-हि', और गाय दौड़ी आती। अरनी भैंस को बुलाने के लिए—'उ-ड़-हा-हा-हा-हा !'

मैं रोज रात को अपना रीडर लेकर बैठती। किन्तु, बिना शिक्षक के कोई भाषा सीखी भी जा सकती है ?… मुझे तुलसीकृत रामायण पढ़ने की आतुरता थी। पुतली से मालूम हुआ, रामसेवक मड़र नाम का एक बूढ़ा रामायण गाने में बेजोड़ है। अर्थ न समझूँ, कोई बात नहीं। ध्वनि का कोई महत्त्व नहीं ? मैंने हीरा दरबान से कहा तो उसकी आँखें गोल हो गयीं। मुझे समझाने के लिए वह शब्द ही नहीं पा रहा था। आँखों को नचाकर उसने कहा, 'नो ब्लैक मैन से—ए मेम, औल से—ए बंगाली ! मेम नौट साड़ी, नौट रामायन, नौट लाफ टॉक टु ब्लैक मैन !'

आश्चर्य ! हीरू की इस खिचड़ी भाषा का अर्थ मुझसे पहले मम्मी समझने लगी—'आपको कोई अंग्रेज स्त्री नहीं समझेंगे। बंगालिन कहेंगे। अंग्रेज स्त्री को साड़ी नहीं पहननी चाहिए। रामायण नहीं सुनती अंग्रेज स्त्री। काले लोगों से हेलमेल ठीक नहीं !'

मम्मी ने हीरा दरबान की 'हाँ-में-हाँ' मिला दिया। हीरा दरबान ऐसे मौकों पर भेद-भरी निगाह से मेरी ओर देखता।

प्रथम बार ! ग्रामगीत सुनः मैंने उस रात, पहली बार !

नींद नहीं आ रही थी। हठात् कोठी के पूरबवाले गॉव से, करुण रागिनी में लिपटी गीत की एक कड़ी लहरों पर तैरती आयी। मैं लालटेन तेज कर बिछावन झाड़ने लगी। वातावरण में साँप-ही-साँप का भय होने लगा।

सुबह को पुतली से पूछा—'कैसा गीत था वह ? रेशमी केंचुल जैसा चमकता, वक्र, तिर्यक्, चमचम !'

मेरे हाथ के इशारे से नहीं ! पुतली जब समझती बात को तो, हीरा दरबान से ज्यादा समझती। सदा अपने घर की बोली मे बोलती। मै समझूँ या न समझूँ। जब कभी वह चार अंग्रेजी शब्द जोड़कर बोलती, हीरा से अच्छा ही बोलती। पुतली से मालूम हुआ, उस रात सचमुच साँपों के ही गीत गाये जा रहे थे। नागों की बड़ी देवी, विषहरी मैया के गीत ! मनसा-मंगल के गीत कहते हैं, इनको। पुतली कन्वर्ट क्रिश्चियन थी। किन्तु, विषहरी मैया का नाम लेते समय श्रद्धा से या भय से, दोनों हाथों को जोड़कर शून्य में एक प्रणाम करती।

दूसरी रात को छोटी ढोलकी के ताल पर गीत गाये जा रहे थे। ढोलकी के ताल और गीत की लय को सुनकर कोई भी कह सकता था, वे नाच रहे हैं, मिल-जुलकर।·· झुम्म-झुम्मर ! सुबह को मैं अपने कमरे में धुन गुनगुनाती टहल रही थी, अन्यमनस्क। पुतली न जाने कब से अचरज से मुँह फाड़कर खड़ी देख रही थी। मुझसे नजर मिली तो तलहथी से अपनी हँसी को ढँक फिर खिलखिलाकर हँसती हुई बोली—'झूमर ! झूमर ! हाउ यू सिंग झूमर छोटी मेम ? ·· वेरी गूड !'

'हा-हा, हा-ह, हा-ह-हा ! ला-रा, ला-रा ला-र-ला।·· लामि-लामि बेनियाँ, सिर गंगाजी के पनियाँ, दरभंगावाली कनियाँ।' पुतली ने ताल पर शब्दों को दुहराया, 'यस, छोटी मेम ! आपने झूमर का लय ठीक ही पकड़ा है।'

बीच-बीच मे मुझे मम्मी की झिड़कियाँ सुननी पड़तीं—'भगवान् जाने, तुम क्या होती जा रही हो !' और आश्चर्य, उसी समय, बारामदे पर हीरा दरबान भी कुछ-न-कुछ अवश्य बोल बैठता !

डेढ़-दो महीने की मेरी वह जिन्दगी ! मैं भूल सकूँगी कभी ? मेरे इस कमरे को ही मालूम है ! अजाने, अदेखे, कल्पनाप्रसूत पूर्वी पुरुष की प्रतीक्षा में मैंने कितनी रातें छटपटाकर काटी हैं ! मेरी दुर्दशा देखकर मम्मी घबरा गयी थी। इसी बीच, हमें पूर्णिया पलाण्टर्स-क्लब के एक उत्सव में सम्मिलित होने का निमन्त्रण मिला।

पूर्णिया-डे !

अप्रैल की वह सुबह। चिरस्मरणीय दिवस। 10 अप्रैल, 1910 !

[पाण्डुलिपि में यहाँ कई मांगलिक अनुष्ठान के चिह्न अंकित हैं, उपर्युक्त पंक्ति के आस-पास ! ऊपर क्यूपिड का सुन्दर स्केच, पंखवाला छः-सात साल का धनुषधारी बालक। तलहथी पर ठुड्डी रखकर तालाब में कमल को देख रहा है !]

16 अप्रैल से प्लाण्टर्स-क्लब में पूर्णिया-डे का समारोह शुरू हो रहा था। चार दिनों तक भूरिभोज, अहोरात्रि नृत्य, पान, काकटेल, जलविहार, पिकनिक और पोलो !

15 अप्रैल को सुबह साढ़े सात बजे ही अपनी सम्पनी-गाड़ी से बारह माइल पूरब अररिया स्टेशन के लिए प्रस्थान कर देने का प्रोग्राम हमने बनाया।·· भला, उन घड़ियों की एक झाँकी देखे बिना मैं कैसे जी सकूँगी ! आँखों के आगे स्पष्ट तस्वीर उतर आती है।··· मम्मी अन्दर के कमरों में जाने की तैयारी में व्यस्त हैं, पुतली के साथ। मैं अपने सबसे उत्तरवाले कमरे की उत्तरवाली खिड़की से (जिस खिड़की का नाम बाद में उत्तरा पड़ा !) हिमालय की तुषारमण्डित चोटियों पर छाया सिन्दूरी समाँ देख रही हूँ। दुलारीदाय के कछार पर पुल के उस पार घने जंगलों में परिन्दे प्रार्थना-गीत गा रहे हैं·· देवी पार्वती के पिता, जगदम्बा के जनक, नमामि देव ! इस झरोखे से मैं नित्य पर्वतश्रेष्ठ को प्रणाम करती !

झरोखे के पास ही है कदम्ब का पेड़। कल से एक मतवाला कोकिल कदम्ब की डार पर बैठकर कूक-कूक जाता है।

सुबह को आकर चिढ़ा गया–'कु-क्कु-कू-कू ! उठकर देखो !' पहाड़ी कोकिल को पुतली ने गोशाले से जवाब दिया–'जल्दी भागो ! कु-क्कु-कू-कू !'

पूरब, यानी कोठी के सदर फाटक पर हीरू के गले की आवाज सुनायी पड़ती है। हीरू की आवाज एक अजनबी स्वर में खो जाती है। घोड़े की एक तेज हिनहिनाहट से सारा प्रान्तर मुखरित हो उठता है–'ईं-हिं-हिं-हिं-हिं हिं !' हीरू भागा हुआ आ रहा है, घबड़ाया हुआ। मम्मी भी इस गुलगपाड़े को सुनकर बाहर आ गयी हैं।· मिस-मिस-मिसरा ! मिसरा कहने के बाद मुँह बा दिया उसने। मम्मी शीघ्र ही समझ लेती है–दैट सिवेण्ड्रा मिस्सा ? मिस्टर ब्लैकस्टोन की चेतावनी प्रतिध्वनित हुई–मोस्ट बॅडमास ब्राहमीन-नोटोरियस, दि ब्राहमीन क्रिमीनल ही'ज··।

हीरू के मुँह में बोली वापस आयी–'भेरी भेरी बैड मैन। ओल्ड ईस्टेट दुश्मन। कम हेयर अन्दर कोठी. ही वाण्ट।'

मम्मी बोली–'ही वाण्ट्स टु सी अस। सी द फन ! क्रिमिनल !'

फाटक पर घोड़ा पुनः पुनः हिनहिना उठता है।··· पूरब आसमान की लाली जरा हल्की हो गयी। झाऊ की नील-नुकीली लम्बी झाड़ी और घने पुटुस के झुरमुटों के उस पार घोड़े की गर्दन दिखायी पड़ती है। अच्छे नस्ल का घोड़ा ! सिल्क ब्लैक ! मेरी पुतली का मुँह पीला पड़ गया है। सभी जानते हैं, उसे। घोड़े ने हिनहिनाकर

कोठी के निवासियो को बुलाया। मैं मम्मी से कहती हूँ–'वह हमसे मिलने आया है। स्टेट का पुराना दुश्मन है तो क्या ? वह मिस्टर ब्लैकस्टोन का दुश्मन हो सकता है। हमें मिस्टर ब्लैकस्टोन की बुद्धि से दोस्त-दुश्मन नहीं बनाना है मम्मी !'

मम्मी पर मेरे कथन का प्रभाव पड़ता है ! आश्चर्य ! इतना शीघ्र इतनी बड़ी बात का समर्थन मम्मी ने कैसे किया, यह मेरे लिए आज तक एक रहस्य की बात है। मम्मी कहती है हीरू से–'बुला ला !' अनिच्छापूर्वक, मुँह लटकाकर ड्राइंग रूम का दरवाजा खोलते समय बड़बड़ाता है, हीरू, अन्तिम चेष्टा करता है–'नो ब्लैकमैन कम इन कोठी-कम्पौण्ड। व्हाट रूम ?' पुतली की सिखायी हुई झिड़की मैंने दी–'ही-र-वा-वा-वा !' ई-हिं-हि-हिं-हि ! बाहर, घोड़े की हिनहिनाइट और तीव्र हो उठी।

मैं अपने कमरे में आकर पूरबवाले झरोखे की झिलमिली से देख रही हूँ, झाऊ की झाडियो के पार्श्व से प्रकट होते हुए व्यक्ति को। इसे मैंने कहीं देखा है ? किन्तु कहाँ ? झरोखे की झिलमिली से एक लहर आकर मेरी रोमावली पर छा जाती है। परिचित पुरुष ? मेरे सपने का पूर्वी-पुरुष ? सूर्यपुत्र ? देवपुरुष ? कलेजे की धड़कन इतनी तेज क्यो हो गयी ?

हीरू की पुकार पर जरा सँभल जाती हूँ–'मेम साहेब !'

मैं अपने कमरे में, रीडर खोलकर भारतीय अभिवादन 'नमस्कार' का उच्चारण ठीक करने लगी। आरसी मे अपने प्रतिबिम्ब को मुस्कराकर नमस्कार करती हूँ : नमस्यका !

ड्राइंग रूम का परदा हटाकर, मैंने कैसे नमस्कार किया–मुझे याद नही ! जन्म-जन्मान्तर के बाद ऐसी मिलन की घड़ी मे होश रहता भी है ?

होश मे लाती है, उसकी गुरु-गम्भीर वाणी। भद्रतापूर्वक खड़ा हो, प्रति-नमस्कार किया उसने–'आइ एम पण्डित शिवेन्द्र मिश्र पतनीदार ऑफ परानपुर स्टेट। वेरी क्लोज टु योर जमींदारी लैण्ड '

मम्मी आकर आरामकुरसी पर बैठ जाती है, उसके नमस्कार को नजरअन्दाज कर। मुझे खुशी हुई–पूरब का यह पुरुष अंग्रेजी तो थोड़ी बोल लेता है !

मम्मी अपने काम की बात छेड देती है–'मिस्टर मिस्सा हमारी जमीदारी से आपको क्या शिकायत है ? वी 'व हर्ड !'

"येस मेम ! दैट इज ए वेरी लांग लिटिगेशन। एक तौजी के पोजीशन को लेकर झगडा है। अभी तक, वह तौजी मेरे अधिकार में है। किन्तु, यह भी सच है कि उस तौजी पर कानूनी हक आपका है। मैं वही तो कहने आया हूँ। मैं आप लोगों से, यानी मातृजाति से, नही लड़ना चाहता !"

बात समझ मे आयी ! अमीन, पटवारी और सिपाहियों ने अपने-अपने ढंग से इस तौजी के बारे में सुनाया था। मि. ब्लैकस्टोन ने नक्शे में, दुलारीदाय धारा में तीन लाल घेरा डालकर, दिखलाया था। पाँच में से दक्खिनवाले तीनों कुण्ड–फुल ऑफ फिशिज एण्ड । कारकुनो ने यह भी कबूल किया–आज तक कभी कब्जा

नहीं हुआ।··· मिस्टर ब्लैकस्टोन की बात क्या, किसी साहब को एक मछली नसीब नहीं हुई और न एक धूर जमीन। जमीन धनहर है कुण्ड के आस-पास।

मम्मी को विश्वास नहीं हुआ।··· पूछती है–"सचमुच आप उस तौजी के झगड़े को निबटाना चाहते हैं ?"

'आप मुझसे लिखवा लें मेम !'

और इससे लोग डरते हैं ? बाघ की तरह भय खाते हैं ? किन्तु, हमारे ड्राइंग रूम में बैठा हुआ शिवेन्द्र तो माखन-जैसा मनवाला है ! रक्त-चम्पा की तरह शरीर का रंग, लाल ओठ ! छोटी-छोटी किन्तु सँवारी हुई मूँछें। गाढ़े लाल रंग की धोती, केसरिया रेशमी मिर्जई, ढाकाई झीनी चदरी, जिसकी कौर-छोर पर सुनहले तारों की कारीगरी। उँगलियों में रत्नजटित अँगूठियाँ !··· सामने बैठे इस नररत्न की ज्योति ! ··· मैं इस क्षण को सपना समझती हूँ। भ्रम समझती हूँ।··· शायद उसी रात की तरह कोई गीत कहीं गाया जा रहा है। अथवा कोकिल ! ··कुरसी छूकर देखती हूँ। अपने शरीर को स्पर्श करती हूँ और चिकोटी काटती हूँ नाखूनों से··· सपना नहीं ! यह आदमी अपना है, वही··· !

मम्मी चुपचाप कुछ सोच रही है ! क्या सोच रही है, क्यों सोच रही है ? मैं समझती हूँ, मम्मी ने जान-बूझकर धन्यवाद ज्ञापन नहीं किया।·· मुझे यह झूठा तनाव पसन्द नहीं। अपनी अभद्रता के लिए मम्मी से माफी माँगकर, मैं कहती हूँ–'थैंक यू वेरी मच ! इट्स सो काइण्ड 'फ यू। रियली आइ'म ग्लैड-टु सी यू···। यू'र सो··।'

मम्मी मेरी ओर कटमटाकर क्यों देखती है !··· मैंने कुछ बुरा तो नहीं किया !

उस दिव्य पुरुष की बुद्धि की बलिहारी !

पलक मारते ही सब कुछ समझ लेता है। उसकी आँखें अपने आसपास शक्ति की लहरें फैलाती हैं ! ··· उसके कामदार लाल मखमली नागरे की नोक पर अपनी दृष्टि रखकर मन के उमड़ते-घुमड़ते भावों को सहेजती हूँ। कोई क्या समझे ! ·· जिसके लिए मैं देश-देशान्तर, लोक-लोकान्तर·· !

मम्मी विरक्त होकर कहती है–'समय हो रहा है। धूप तेज हो जायेगी।'

मैं क्षमा-याचना के लिए शब्द ढूँढ़ रही हूँ।·· आत्मसमर्पणात्मक भावावेश की घड़ियाँ ! झूमर गीत पर झूम रही हूँ मैं··· दरभंगावाली कनियाँ ! ··· मम्मी मुझे एक शब्द भी उच्चारण नहीं करने देगी !

··· मेरी लाचारी देख रहे हो, मेरे पुरुष ! मेरी आँखों की भाषा वह पढ़ लेता है।

मुस्कराकर उठा। हाथ जोड़कर बोला–'नमस्कार ! होप टु सी यू अगेन !' मचमच, मचमच ! ·· मेरे दोनों हाथ जुड़े रह गये, मेरी गोद में।

बाहर घोड़ा हिनहिनाया–ईं-हिं-हिं-हिं !

कदम्ब की डाल पर बैठा कोकिल आग लगाकर भाग गया।

कोठी के मुड़ेर पर बैठी एक पण्डुकी अनवरत पुकार रही है–तुतु-तू-तू-तू ! घोड़े की टापों की छन्दमयी खटपटाहट धीरे-धीरे दूर होती गयी।

ड्राइंग रूम हठात् श्रीहीन हो गया। मेरे कान के कोने में बैठी विरहिन के दिल में पहली हूक उठी, एक मीठा दर्द ! अपूर्व ! मैंने आँखें मूँद लीं। मन के भावातुर प्लेट पर एक छवि उतर आयी है, काले घोड़े पर सवार, लाल वस्त्र में आवृत्त दिव्य पुरुष !

दिव्य पुरुष, मेरा अपना पुरुष ! जिससे जन्म-जन्मान्तर के बाद मेरी आँखें चार हुई हैं, दो घड़ी के लिए। प्रथम बार··· दिस नाउ !

नमस्कार ! ओ मेरे··!

पूर्णिया शहर के एक एकान्त कोने में है प्लाण्टर्स-क्लब का बँगला–'दि प्लाण्टर्स !'

तीन ओर आम-कटहल के पेड़, बाँसबन, एक ओर सपाट परती। युकिलिप्टस के बड़े-बड़े पेड़ों के पीछे लाल टाइल का कॉटेज। मुख्य द्वार के पास देवदार और धूप के पेड। पगडण्डियों और एकमात्र सडक पर तख्तियाँ टँगी हैं–'प्राइवेट रास्ता। इस रास्ते में चलनेवाले का चालान किया जायेगा।'

जिले-भर के अंग्रेज-परिवार–जमींदार, कोठीवाल, प्लाण्टर्स, हाकिम-हुक्काम ऐसे विशेष अवसरों पर एकत्र होते हैं। सदर में रहनेवाले अंग्रेजों का दैनिक अड्डा। एग्लो-इण्डियन किसी का मेहमान होकर भी नहीं जा सकता। बार में भी नहीं। ब्रण्टी के पति राजा महीपालसिंह भी उस तख्ती के पास ही गाड़ी रोक देते हैं।

पूर्णिया-डे के अवसर पर सारे सूबे में फैले अंग्रेज जमा हुए हैं, सपरिवार। मेला लग गया है। प्रत्येक दो मास के अन्तर पर यह 'डे', उत्सव। सूबे के विभिन्न जिलों में पूर्णिया-डे, सोनपुर-डे, बेतिया-डे, हजारीबाग डे। भोज-पान-नृत्य और आनन्दोत्सव का चक्र !

सिर्फ बारह घण्टे में ही मेरा सिर चकराने लगा। शाम को लॉन के किनारे, पोलो-ग्राउण्ड के पास बेंच पर बैठी बच्चों का खेल देख रही थी। नया खेल ! खेल का नाम है, 'खबरदार'। बच्चे कहते हैं–'लेट'स प्ले खबड्डा !'

अधिकांश बच्चे हाथ जोड़कर झुके हैं। वे यहाँ के नेटिव किसान बने हैं ! लड़कियों ने कागज का घूँघट बनाया है। एक लड़का हाथ मे चाबुक लेकर खड़ा हो गया–'रेडी !' फिर बूढ़े अंग्रेज की तरह अपनी आवाज को विकृत करके कहता है–'यू ब्लैक बोउमास खबड्डा !' चाबुक फटकारता है–सपाक् ! नेटिव बने बच्चे हाथ जोडे, सिर झुकाये, दो कदम पीछे हटकर कहते हैं–'माय बाप–हाय बाप !'–सपाक् !

–खबड्डा ! माय बाप, हाय बाप ! सपाक् !

–खबड्डा ! माय बाप, हाय बाप ! सपाक् !

'मुझे ली कहते है।' एक सुन्दर साँवर नौजवान ने आकर कहा, 'मैं आपको थोड़ा विरक्त करूँगा। क्षमा करेंगी ?'

इस नौजवान को मैंने देखा है, बहुत कम बोलने की आदत है। बोलता तो है, वह रेलरोड-इन्सपेक्टर मिस्टर बार्कर, मोटर-ट्राली की तरह ! मैं बोली—'बैठ जाइए ! आइए !'

'आपके इलाके को, रानीगंज सर्किल को, यहाँ के ग्रामगीतों की जन्मभूमि कहते हैं। गुनमन्ती, हाँसामारी की विधवा रानियों ने जिनकी रचना की थी, सैकड़ों साल पहले। जो अब गाँव-गाँव में लोक-कण्ठ में हैं।'

ली फोक म्यूजिक एक्सपर्ट बनना चाहता है। इण्टरनेशनल फोक-म्यूजिक कौंसिल का सदस्य है। वह अपने पॉकेट से एक टाइप की हुई पाण्डुलिपि निकालकर पढ़ना शुरू कर देता है—ओनली जेनुइन फोक सांग्स ह्विच हैव बीन हैण्डिड डाउन फ्रॉम जेनरेशन टु जेनरेशन बाई ओरल ट्रान्समिशन···! मैं आपको बोर तो नहीं कर रहा ?'

पागल ली ! बाप सलाह देता है, कटिहार में सूअर के गोश्त की फैक्ट्री खोलने की और यह गीतों के पीछे पागल है। कहता है—'पूर्णिया-डे के अवसर पर जुटे हुए लोगों में सिर्फ तीन मिले उत्साहित करनेवाले। नहीं तो, बाकी सभी··· ।'

बाकी सभी ? ली की अनकही बात को भी सुन लेती हूँ। बेचारा ली !···और, वह रेल-रोड इन्सपेक्टर मिस्टर बार्कर ! सदा चुम्बनोद्धत मुँह ! आदमी बीमार मालूम होता है। कटिहार कीटी का अनुगत है !

कीटी ! परिचय के बाद ही जिसने मेरे कान मे फुसफुसाकर कहा था—'ह्वाइ डोण्ट यु फिश एनी फैट नेटिव राजा ?'

पूर्णिया जिले के सभी प्लाण्टर्स ने परिचय के बाद ही परानपुर के शिवेन्द्र मिश्र की चर्चा की। चेतावनी दी : 'माइण्ड यू ! दैट नोटोरियस मिस्सा'फ पेरानपो !'

मैंने ली को वचन दिया··· वह जब भी चाहे मेरे इलाके मे आये; मैं उसकी यथासाध्य सहायता करूँगी। अन्य सूत्रों की भी व्यवस्था कर दूँगी। ली प्रसन्न होकर चला गया—'धन्यवाद !'

चार दिनों तक मैं ली के साथ रही। इन्टेलेक्चुअल व्यक्ति का सग !··· नाच के बाद, लेडीज क़ार्नर में लड़कियो ने दर्जनो बार कहा—'ली नपुंसक है। वर्थलैस है। क्रेक है। सनकी है। ब्लैकबेरिडस्ट है !'

भगवान ही इनकी बात समझें ! ब्लैकबेरिडस्ट का मतलब ? जो नेटिव लड़कियो के पीछे दीवाना हो। भारतीय सुन्दरता का प्रेमी ! मैंने हँसकर कहा, ली से—'गीत तो पीछे होगा। पहले, रॉयल डिक्शनरी सोसायटीवालो को ब्लैकबेरिइस्ट शब्द भेज दो, अर्थ-सहित !'

ली हँसना जानता है।

अहोरात्रि डिनर, डान्स और ड्रिंक से ऊबकर, समारोह के संयोजकों से छुट्टी ले, जब स्टेशन आ रही थी, मैंने स्पष्ट शब्दो मे मम्मी से कहा—'मैं यहाँ फिर कभी नही आऊँगी।··· आई हेट !'

मम्मी चिढ़कर बोली—'तुम्हारा सिर फिर गया है !'

स्टेशन पर मिला, मिस्टर बार्कर। मानो, हमारी ही प्रतीक्षा कर रहा था वह। मिलते ही, अस्वाभाविक ढंग से ठहाका मारकर हँसा–'गाड़ी डेढ़ घण्टा देर से आ रही है। तब तक हम अररिया पहुँच जायेंगे। मुझे भी फोरबिसगंज की ओर जाना है।'

अपनी कोठी में पहुँचने की इतनी उतावली हो रही थी कि मैने उसके लिफ्ट को, बिना कुछ सोचे-समझे स्वीकार कर लिया।···मम्मी को उसने दाहिनी ओर बैठाया। ट्राली, पूर्णिया स्टेशन से उत्तर की ओर अग्रसर हुई ओर बार्कर का बायाँ हाथ मेरी कमर के इर्द-गिर्द रेंगने लगा। उसकी बड़बड़ाहट बढ़ती ही गयी। असम्भव शक्ति दी है भगवान ने इसे बोलने की ! भट-भट-भट-भट !

मोटर-ट्राली की रफ्तार को तेज-मद्धिम करता, राह के जंगलो, पोखरों और नदियो से परिचय कराता हुआ बार्कर बीच-बीच में मुझे अपनी ओर खींचने की चेष्टा करता। साँप की तरह रेगनेवाला उसका बायाँ हाथ–'देयर ! देयर'ज दि फेमस जिबच्च पोकरा। थाउजण्ड ऑफ थाउजण्ड्स वाइल्ड गीजडाइरेक्ट फ्रॉम हिमालया।'··· 'कीटी का बावर्ची वाइल्ड गूज का बेहतरीन मोगलाई बनाता है।' भट-भट-भट-भट ! 'और, ऐसे जंगल की झाड़ियों में मिस मोबर्ली हाइड एण्ड सीक खेलना खूब पसन्द करती है। लडकियॉ ? मत पूछो। जान देती हैं मोटर-ट्राली मे एक लिफ्ट के लिए !' भट-भट-भट-भट !

प्लाण्टर्स की लड़कियो ने बार्कर की आदत बिगाड़ दी है, इतना तो मैं क्लब में ही देखकर समझ गयी थी। किन्तु, इस आदमी के अन्दर का पशु इतना भूखा है, मुझे ट्राली मे बैठने के बाद मालूम हुआ।···क्लब मे, कीटी के आगे दुम हिलाता था।

अररिया स्टेशन पर ट्राली से उतरते समय मैंने छोटा-सा धन्यवाद दिया। उसके लुभावने निमन्त्रण को सफाई से टाल गयी। किन्तु, उस जानवर ने प्लेटफार्म पर खडे सैंकडो व्यक्तियों के सामने मुझे छाती से बदहवासी से चिपका लिया और···।

पीले, गन्दे दाँत ! दुर्गन्ध से भरी उसकी साँस।···ब्रूट ! यहाँ के प्लाण्टर्स समाज का सारा विष इस एक ही आदमी के अन्दर आकर जमा हो गया है ?

फेकनी की माय और सामबत्ती पीसी ने सारे गुअरटोली में खबर फैला दी–कम्फूवाले बिना किसी झंझट के रुपैया सेर दूध लेते हैं। लोगों को विश्वास दिलाने के लिए फेकनी की माय आँचल में बँधा दुटकिया नोट निकालकर दिखलाती–"देखो ! दो सेर दूध का दाम दो रुपैया !" सामबत्ती पीसी बोली–"तर-तरकारी, साग-सब्जी जिनकी बगिया में है उन लोगों की चाँदी है, समझो !" लोगों के चेहरों पर मुस्कराहट की एक पतली रेखा दौड़ गयी !··· हः हः ! रात-भर डर से थरथराती रही है देह!

पूरे, बारह घण्टे से गाँव और टोले के लोग परेशान थे !

रात-भर मोटरगाड़ियों की गड़गड़ाहट, तरह-तरह की रोशनी और शोरोगुल को देख-सुनकर कलेजे की धड़कन घटती-बढ़ती रही। गंगोलाटोली की औरतों ने सूप पीट-पीटकर हल्ला मचाया—"मुड़बलिया पिशाच है। सूप बजाकर हरकाओ !"

सुबह को लोगों ने देखा, गाँव से पूरब परती पर—जित्तन बाबू के नये बाग के पास सैकड़ों खीमे गड़े हुए हैं। एक सफेद नगरी बस गयी है। नाका के सिपाहीजी और गाँव के चौकीदार ने कहा—"डरने की कोई बात नहीं। कोशीवाले साहब लोग हैं। चतरा गद्दी में पुल बाँधने आये हैं।" फिर भी, लोगों के मन में शंका बनी रही। लुत्तो, बीरभद्दर, जयदेव बाबू और मकबूल ने भी बारी-बारी से कहा—"डरने की कोई बात नहीं !" तब लोगों को अन्न-पानी की रुचि हुई। किन्तु औरतों ने प्रश्न उठाया—"चतरागद्दी में पुल बाँधने आये हैं तो वहाँ जायें ? पचास कोस दूर बैठकर भला पुल कैसे बाँधेंगे ? और पुल बाँधने के पहले तो आदमी की बलि की जरूरत होती है। सो ?"

सो, कम उम्र के बच्चे घर-घर में कैद कर दिये गये थे।

फेकनी की माय ने और भी कहा—"आकि देखो, कम्फू में रोज एक मन दूध खपेगा। मुदा सब भैंसान से कह दो, भाव कम न करें। डरने की क्या बात है ! बड़े भले लोग हैं। आकि देखो, पूछो सामबत्ती से, डर से मेगी बोली बन्द हो गयी पहले, बड़े साहेब को देखकर। जब लम्बे-लम्बे केशवाली औरतों और नन्हें-नन्हें मुँहवाले बच्चों को देखा तो जान-में-जान आयी। कम्फू ! मेला है मेला ! मेला-जैसा सबकुछ !···एक जवान लड़की है, ठीक देवी दुर्गा की तरह। आकि देखो, इया बड़ी-बड़ी आँखें ! ···हम लोगों को बैठाकर दुनिया-भर की बात पूछने लगी—'कोशी मैया किसकी बेटी है ? शादी किससे हुई ? ससुराल कहाँ है ?' अरी, तुम लोग हँसती हो ! पूछो सामबत्ती से ! भला, मैं उतना क्या जानूँ" !

सामबत्ती बोली—"उतना तो किसी को नहीं मालूम। तब, एक बात सभी जानते हैं कि कोशी मैया अपनी सास और ननद से लड़-झगडकर नैहर की ओर जा रही है—पच्छिम !···आकि देखो, एक किताब निकालकर खसर-खसर लिखने लगी, वह। मैं डरी कि कहीं अँगूठे का निशान न देने को कहे !"

सिर्फ दूध ही नहीं, पुदीना और धनिया की पत्ती भी महँगी हो गयी।

कोशी प्रोजेक्ट—पार्टी नं. 10 !

पार्टी क्या है, एक छोटा-मोटा शहर है। दर्जनों डिपार्टमेण्ट्स, उनके अलग-अलग अधिकारी, स्टेनो, पियन, बैरा। अलग-अलग ऑफिस, बँगले, बावर्चीखाने और गैरेज। एक ओर साहबों का क्लब है, दूसरी ओर अन्य कर्मचारियों की कैण्टीन ! उजाड़ धरती पर सफेद नगरी—छोटे-बड़े तम्बू—पाँखे फैलाये हंसों की तरह। दो सड़कें हैं—रैड रोड, ह्वाइट रोड ! ह्वाइट रोड पर दफ्तरों की पंक्तियाँ और रैड रोड पर बँगले। ह्वाइट

रोड सदा शान्त रहती है। दफ्तरों मे टाइपराइटरों की खटपटाहट, कौलिंग बेल की तुनुक आवाज–ट्रिं ! बड़े दफ्तरों के बड़े साहब की मोटी आवाज ! हवा से गूँजते हुए कुछ अंग्रेजी शब्द : कैचमेण्ट एरिया, रोड ब्रिज, माइनर रोड ब्रिज, हाईडैम, मेन कैनाल, बरॉज, लार्ज रेगुलेशन, स्मॉल फॉल्स एण्ड रेगुलेशन, एक्विडक्ट, साइफून, क्रॉस ड्रेनेज, रिजर्वायर, सैण्डी-सॉयल !

रैड रोड पर मुर्गे लड़ते। महीनों पिंजड़े में बन्द रहने के बाद किसी कैम्प में उन्हे जब आजादी मिलती है तो वे अपनी प्रेमिकाओं के लिए लड़ते हैं। बेचारी मुर्गियाँ दिन-भर परेशान रहती हैं। उनकी हरकतों से चिढ़कर चेन में बँधे हुए कुत्ते रह-रहकर गुर्राते हैं। धूप में खेलते हुए बच्चों की माताएँ डाँटती हैं। बावर्चीखाने से भूने हुए प्याज की गन्ध आती है। हरेक कैम्प के आसपास चटाइयों पर, छोटे-वड़े कट के बर्तनों में अचार, मुरब्बे, सूखे बेर, सूखी तरकारियाँ और पापड़ सूख रहे हैं। बूढी औरतें फटे कपड़ों की सिलाई करतीं और जवान लड़कियाँ कैरम-बोर्ड पर गोटियाँ खटखटाती हैं।

बँगले और दफ्तरों के अलावा–खलासी, दरबान, ड्राइवर, पियन, बैरा का अलग-अलग कुनबा··· जहाँ दिन-भर सन्नाटा छाया रहता है !

काम-काम-काम ! एक मिनट भी फुरसत नहीं। मिट्टी खोदो, बालू तोलो, जमीन मापो, साँकल खींचो ! ···मिनट-मिनट पर जीप-गाड़ी गुर्राती हुई विशाल परती पर किसी ओर निकल पड़ती।

सारे कैम्प में सिर्फ इरावती है जो एकान्त पसन्द करती है। दिन-भर वह लिखने-पढ़ने में अपने को बझाये रहती है अथवा कभी-कभी उस विशाल निर्जन मैदान को, दूर तक फैली हुई वन्ध्या धरती के आँचल को, देखती रहती है।

मैदान के सफेद बालूचर पर गोधूलि की मटमैली लाली दौड़ जाती। जीप-गाड़ियाँ गरजती हुई कैम्प में लौटतीं। कुलियों के जत्थे, ओवरसियरों का कोलाहल ! पैट्रोमेक्स की रोशनी में सारा कैम्प जगमगा उठता।

इरावती मलहोत्रा ! देश के बँटवारे के बाद जिसके हिस्से में पड़ी है खानाबदोश जिन्दगी। लाहौर से दिल्ली। दिल्ली के शरणार्थी कैम्प से बिहार ! बिहार में, एक राजनीतिक पार्टी में काम करने लगी।··· दस महीने में ही उसने तीन राजनीतिक पार्टियों से अपना रिश्ता जोड़ा और तोड़ा। कहीं भी चैन नहीं ! किसी पर विश्वास नहीं ! लोगों ने कहा, माथा खराब हो गया है ! उसके चरित्र के सम्बन्ध में भी तरह-तरह की बातें उडीं।

–हरेक पार्टी के लीडर को डिमोरॅलाइज करने के लिए सरकार ने इस कुटनी को बिहार भेजा है ! ··· तपस्या भंग करती फिरती है, तपस्वियों की··· सी.आई.डी. है ! मीठी छुरी है !

कटी हुई पतंग की तरह उड़ रही है, इरावती ! उसके मन का भ्रम बढ़ता ही जा रहा है। उसका विश्वासहीन मन, धीरे-धीरे उसके व्यक्ति को लील रहा

है। कुण्डली मारकर बैठा हुआ साँप ! ···

इरावती को याद है, छोटानागपुर के पहाड़ी अंचल के दौरे पर जा रहे थे, उसकी पार्टी के प्रमुख नेता। इरावती को उन्होंने अपने साथ चलने को कहा–'तुम्हारे सभी सवालों का जवाब देने को मेरे पास समय नहीं। मेरे साथ चलो ! मैं तुम्हारे मन पर छाये हुए भ्रम को दूर करने की कोशिश करूँगा। एक-एक सभा में हजारों-हजार भूखे-नंगे आदिवासियों की आँखों में तुम अपने सवालों का जवाब पाओगी।' नेता ने मुस्कराकर कहा था–'फिर, आवश्यकता हुई तो काँके के पागलखाने में रहने की व्यवस्था भी कर दूँगा।···'

··· छोटानागपुर के पहाड़ी अंचल की पथरीली धरती पर गड़गड़ाती हुई भागी जा रही है–कालका मेल ! रात के सन्नाटे में गाड़ी की सीटी जंगलों और पहाड़ों में प्रतिध्वनित होती है। प्रथम श्रेणी की एक बर्थ पर लेटी हुई है, इरावती। दूसरी बर्थ पर करवट ले रहे हैं, उसके नेता भैया। धुँधली रोशनी ! मन पर छाया हुआ भ्रम। नेता भैया उसके पास आकर बैठ गये। तर्क में हारे हुए नेता को शायद कोई बात आ गयी है ! इरावती जगी। नेता ने खींचकर उसे अपनी गोद में बैठा लिया। उसके बालों पर हाथ फेरना शुरू किया। इरावती अँधेरे में मुस्करायी–यह क्या हो रहा है ! नेता ने अपना मुखड़ा इरावती के उरोज के पास रख दिया–'इरा, मुझे प्यार करो !' उसका एक हाथ इरावती के मांसल शरीर पर भटकने लगा। इरावती हँसी–'काँके में रहने की व्यवस्था हो रही है ?' 'हाँ, मैं पागल हूँ, इरा ! मेरी तीस साल की तपस्या···!' 'हाँ, आपकी देह काफी तपी हुई है। छोड़िए, पंखा तेज कर दूँ।' नेता ने छोड़ा नहीं, उसने अपनी देह की सारी ताकत लगाकर इरावती को दबोचा। आह ! इरा चीख पड़ी।···फर्श पर लुढ़के नेता भैया को उसने उठाया, बत्ती जलायी और नेता के कपड़े में लगी धूल को झाड़ने लगी–'देखिए तो, कितनी धूल लग गयी। नेता भैया, मेरे मन भ्रम बढ़ता ही जा रहा है। मुझे दुख है, मैं तुम्हारे काम नहीं आ सकी। असल में, प्यार करने की ताकत मुझमें नहीं। मेरे प्यार को लकवा मार गया है। दिन-रात मैं इसी चेष्टा में रहती हूँ, मेरा प्यार फिर पनपे ! किन्तु, कहाँ जन्म लेता है मेरे उजाड़ मन में कुछ ! नेता भैया, लजाते क्यों हो ? तुमने कोई अधर्म नहीं किया है। हजारों औरतों पर बलात्कार होते देखा है, मैंने। दिन-दहाड़े सड़कों पर। दर्जनों बार बलात्कार की पीड़ा से छटपटायी हूँ। चीखती रही हूँ, गला फाड़कर। मैंने उस समय की चीखें सुनी हैं, जबकि लोहे के लाल-गर्म सलाखों से···। सड़े हुए सन्तरों की तरह सड़कों पर कटी हुई छातियों को लुढ़कते देखा है। मुझे लगता है, मेरी छाती पर भी दो कटे हुए स्तन रखे हुए हैं–बेजान मांस के टुकड़े। इतना कुछ देखने और सहने के बाद किसी औरत का दिल-दिमाग प्यार करने के काबिल कैसे रह सकता है ? मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि इन्सान कत्ल और बलात्कार करने के सिवा और कुछ कर सकता है ! ···चुप क्यों हो नेता भैया ! अभी दो घण्टे पहले ही तुमने कहा था कि इरा !

तुम तो ड्रामे का डायलॉग बोलती हो। कहो न, कैसा डायलॉग बोलती हूँ !–न, न। माफी मत माँगो ! अधर्म होगा !···'

···रात के सन्नाटे में एक स्टेशन पर गाड़ी रुकी। पहियों की घड़घड़ाहट थमी। इरावती ने अपनी झोली सँभाली–'मुझे जाने दो नेता भैया ! रोको मत !'

···हजारीबाग रोड ! कभी नहीं भूल सकती इरावती इस स्टेशन को। यहीं से उसकी यात्रा शुभ होकर शुरू हुई थी ! ···

ढाई बजे रात का सन्नाटा ! हाथ में झोली लटकाये, अकेली इरावती उस अजनबी स्टेशन पर उतरी। प्लेटफार्म तुरन्त सूना हो गया। कुलियों ने बताया, पटना की ओर लौटनेवाली गाड़ी, सुबह आठ बजे मिलेगी।···वेटिंगरूम के सामने टहलते हुए एक भलेमानस ने घूर-घूरकर उसे देखना शुरू किया। इरावती ऐसी छोटी-छोटी बातो पर ध्यान देना भूल चुकी थी।···'नमस्कार !' उस घूरनेवाले व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कहा–'आप इरावतीजी हैं न ?' हाँ, इरावती उसे पहचानती है। पटना में बहुत बार देखा है, पार्टी-दफ्तर में, आर्यभूमि और इण्डियन नैश्नलिस्ट के दफ्तर में, रवीन्द्र-जयन्ती के अवसर पर, लेडी स्टीफेन्सन हॉल के मंच पर, प्रोफेसर शशांक के साथ चित्र-प्रदर्शनी में। इरावती मुस्कराना नही जानती। कभी जानती थी ?

···भगवान जाने, कहाँ है जीत ! बहुत दिनों से पटना भी नही गयी है, इरावती ! जितेन्द्रनाथ मिश्र के लिए कभी-कभी वह बेचैन हो उठती है। हाँ, उसी ने इरावती के उजाड़ मन मे प्यार को पनपाया है, पहली बार। हजारीबाग रोड स्टेशन···।

'आप कहाँ जा रही हैं, पूछकर आपकी यात्रा अशुभ नहीं करना चाहता। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपकी पार्टी ने आपको आदिवासियों में काम करने के लिए तो नहीं भेजा है !'

'जी नहीं, मैं पटना वापस जा रही हूँ।'

इरावती ने कोई प्रश्न नहीं किया, किन्तु उस व्यक्ति ने थरमस से गरम कॉफी निकालकर ऑफर करते हुए कहा–'आप वेटिंगरूम में इत्मीनान से जाकर सोइए। आपकी गाड़ी में बहुत देर है।···कॉफी ?'

इरावती ने काफी की पहली चुस्की लेने के बाद अनुभव किया था–एक प्याली कॉफी की कितनी सख्त जरूरत थी ! –'आप भी पटना की ओर··· ?' जितेन्द्र ने हँसकर कहा था–'जी नहीं, मैं हजारीबाग शहर जा रहा हूँ। चालीस मील दूर। सुबह की पहली बस खुलेगी। जी नहीं। कोई काम नहीं। यों ही घूमने। सोचा, जरा डी. वी. सी. का काम प्रारम्भ होने के समय एक बार देख आऊँ। बहुत शोर सुन रखा है।" नहीं, नहीं, डी. वी. सी. कोई कॉलेज नहीं ! दामोदर वैली कॉरपोरेशन। बोकारो में थरमल पावर प्लाण्ट। दामोदर नदी को हारनेस कर रहे हैं। तिलैया और कोनार में डैम !' ···

इरावती लज्जित होकर बोली थी–'जी, डी. वी. सी. के बारे में प्रायः रोज ही पढ़ती हूँ, पत्रों में। न जाने क्यों, मुझे कॉलेज की बात कैसे याद आयी !'

···जितेन्द्रनाथ मिश्र ने बताया था, वह घूम-घूमकर यही सबकुछ देख रहा है; क्योंकि वह बेकाम का आदमी है। किसी के काम का होता तो··· ? और पाँच मिनट तक उसकी बातें सुनने के बाद इरावती की इच्छा डी. वी. सी. देख आने की हुई। जितेन्द्र को अचरज हुआ था। बाद में, उसने कबूल भी किया। यात्रा अशुभ होने की आशंका उसे अवश्य हुई थी। नहीं तो बारह किस्म के बहाने क्यों बनाता ! बात यह है कि—बात यह है कि, जोड़कर क्यों बोलता !···

इरावती लिख डालना चहाती है उस यात्रा की याददाश्त !···

बीहड़ घना जंगल। ऊँची-नीची पहाड़ियाँ विभिन्न रंग की वनस्पतियों से आच्छादित ! पेचदार, तीखे मोड़वाली घाटियाँ ! भागते हुए हरिणों की टोलियाँ ! ·· एक पेड़ पर लाखों तोते एक साथ बोल रहे थे ! ·· धड़-धड़-धड़ाम ! ब्लास्टिंग होती है। पहाड़ तोड़े जा रहे हैं ! बड़े-बड़े बुलडोजरों की गड़गड़ाहट और रह-रहकर कुलियों की किलकारी—'मार जवानो-हइयो ! परबत-फोड़-हइयो ! कस के जोर-हइयो ! पत्थर-तोड़-हइयो !'

···अजीब वातावरण ! सड़क के लिए काटी गयी पहाड़ी के कगार पर बैठकर, बोकारो थरमल पावर प्लाण्ट के बारे में समझाते वक्त जीत का चेहरा तमतमा उठा था। बाइनॉक्युलर में देखता, फिर दिखाता जीत—'और वहाँ जो उस पहाड़ी के ऊपर का हिस्सा सेब के टुकड़े-जैसा काटकर निकाल लिया गया है, रोपवे का रास्ता बन रहा है, वह पाँच मील दूर, बेरमों में एक खदान क्या · मनहूस खदान है। बेकाम के कोयले की खदान। जिस कोयले से कोई आग सुलगाने की सम्भावना नहीं। बाँझ कोयला कह सकती हैं ! थरमल पावर प्लाण्ट उसी कोयले से चलेंगे ! रोपवे से रोज हजारों-हजार टन कोयला आयेगा—तारों में लटकती डोंगियों में। खुद खाली करेंगी डोंगियाँ: स्टोर में कोयला ले जाकर. फिर वापस आयेंगी। एक खास ताल पर सब काम होगा—क्रिरि-खटक, क्रिरि-खटक-खटक-खटक-खट्ट ! एलिवेटर के सहारे खुद-ब-खुद अपनी राह तय करता हुआ एक चेम्बर मे जाकर चूर-चूर--फेस पाउडर-जैसा महीन होकर फिर अग्निकुण्ड में धधक उठेगा। तीन मंजिल नीचे, अण्डरग्राउण्ड में, कोनार नदी की धारा कुलबुलायेगी। पानी ऊपर जायेगा, गर्म होगा—वाष्प होगा। वाष्प उड़ नहीं जायेगी। उसे फिर ठण्डा किया जायेगा। डिस्टिल्ड वाटर, बर्फ-जैसा ठण्डा !'

—'प्रायः सभी यन्त्र ऑटोमैटिक काम करनेवाले होगे। और तब दूर-दूर तक इन पहाड़ियों और जंगलों में—विशाल राक्षस के सफेद कंकालों की तरह, छः हाथ फैलाये ट्रान्सफॉर्मर के ऊँचे-ऊँचे टावर गड़ जायेंगे। बिजली की लहरें जायेंगी पटना, कलकत्ता··· ! बिहार ! बंगाल !'

जीत के मन का भी कोई पौधा मुरझा गया था। वह इन्हीं घाटियों के पानी से सींचकर उसे जिलाने की उम्मीद कर रहा था। पंचेट, माइथन, दुर्गापुर ! प्यार के तीर्थ-क्षेत्र। पलास का रंग उसकी आँखों में हमेशा छाया रहता है। कोनार नदी के किनारे, डैम साइट पर, एक विशाल क्रेन की छाया में बैठते हुए कहा था जीत

ने–'न जाने कोसी का काम कब शुरू हो ! वह मेरा इलाका है। कोसी-कवलित अंचल। जहाँ हर साल लाखों प्राणियों की बलि लेती है कोसी महारानी !'··· धड़धड़-धड़ाम !

···कोसी ! हिमालय की गोद से निकलनेवाली तीन धाराएँ–अरुण, तिमुर और सुनकोसी, बराहक्षेत्र के पास आकर आपस में मिल जाती हैं। त्रिवेणी ! त्रिवेणी के बाद सप्तकोसी ! फिर कोसी ! डायन कोसी ! उन पहाड़ियों में भी ब्लास्टिंग होगी। किन्तु, उसकी प्रतिध्वनि इससे भिन्न होगी। कहते हैं, कोसी को बाँधना आसान काम नहीं।

···तिलैया डैम के पास उदास हो गया था, जीत ! थरमस में कॉफी पड़ी रही। न खुद पी और न इरावती को पीने दी। रात को हजारीबाग के निवास-स्थान पर पहुँचते ही वह चंगा हो गया।

· हजारीबाग का निवास-स्थान ! जितेन्द्र ने कहा–'मैं अकेला तो किसी होटल में डेरा डालता। किन्तु, यात्रा की बात ! इस बार सुख भोगना लिखा हुआ है। पास ही, श्यामगढ़ स्टेट का नौ-रत्तन है। मेरे ममेरे भाई के दोस्त दयासिन्धु सिंह के दूर के मौसा लगते हैं राजासाहब। हमारे भी मौसा हुए राजासाहब। लेकिन, आप तो वामपन्थिनी हैं। आपकी जाति मारी जायेगी। वहाँ नहीं ले चलूँगा, आपको ! जस्टिस मल्लिक के खाली बँगले में रहने का परमिट मेरे पास है।··· '

·· जस्टिस मल्लिक का बँगला ! हजारीबाग शहर से दो मील दूर एकान्त में–केनाड़ी नामक पहाड़ी की गोद में। छोटी केनाड़ी की चोटी को तुड़वाकर बना है बँगला ! आज भी मल्लिक-कोठी बिहार की सर्वश्रेष्ठ इमारतों में से एक समझी जाती है। जस्टिस मल्लिक के वंशधर कलकत्ता में रहते हैं, किन्तु एक-एक पेड़ और पौधो का कुशल-क्षेम चिट्ठी से पूछते हैं। हर महीने, कलकत्ता से बाबुओं के दल आते हैं, कोठी में ठहरने का परवाना लेकर। बाग के बूढ़े माली की आँखों में हमेशा रहस्य की घुमड़ती छाया दिखायी पड़ती। · बरामदे पर बैठकर बहुत रात तक दोनों ने बातें की थीं। जितेन्द्र ने इरावती से कहा था–'आपका दुख मैं समझता हूँ। अनुभव करता हूँ। आपके यहाँ की नदियों में खून की बाढ़ आयी थी। एक अन्धवेग, एक पागलपन, एक जूनुन ! खून की धाराएँ बहीं। ज्वार-भाटे आये। सिर्फ बाढ़ ही नहीं, दावानल भी ! भयंकर लपटे उठानेवाला ! सबकुछ जल गया। धन-सम्पत्ति, कला-कौशल ! मैं उसकी भीषणता की कल्पना कर सकता हूँ ! और, आप भी कल्पना कीजिए, उस भूभाग की ! डायन कोसी के सफेद-बलुवाही आँचल पर बिखरे लाखों नये नर-कंकालों की कल्पना से आप डर तो नहीं जायेंगी ?'

·· दूर, पहाड़ी के उस पार, शाल के जंगल में बाघ गरजा–हाँऊँ-हाँऊँ-हाँऊँ ! ठाँय-ठाँय ! बँधी भैंस पर टूटनेवाले बाघ की जान निश्चय ही गयी।··· जितेन्द्र ने कहा–'बाघ मरा है !'

···इरावती और जितेन्द्र दोनों ने उस दिन उपवास किया था। दोनों गुमसुम रहे थे। दोनों ने दामोदर नदी में डुबकी लगाकर स्नान किया था और राह में एक

थके वृद्ध किसान को जीप में चढ़ाकर घर पहुँचाने का पुण्य किया था–आशीर्वाद बटोरा था।···बूढ़ा तैश में आकर देखने निकल पड़ा था–'पथरीली धरती को समतल बना लेंगे ये लोग ! खेल बात है ! सब झूठ !' इस इलाके का खाता-पीता किसान था बूढ़ा। भँभरा गाँव में उतरकर बूढ़े ने कमरबन्द से दो रुपये का नोट निकालकर जितेन्द्र को देते हुए कहा–'बाल-बच्चा राजी-खुशी से रहेंगे, आपके ! वही भोगेंगे भी, यह सब ! कपाल में यह भी देखना बदा था–देख लिया दामोदर की छाती पर धन चलते !' जितेन्द्र ने नोट वापस करते हुए कहा था–'आप भी भोगेंगे बाबा ! कौन मारे सौ साल की देर हो रही है ! दस साल में तो सिंचाई शुरू हो जायेगी।' बूढ़े ने मुस्कराकर कहा था–'कत्ते तनखा मिलै हकौ ! तोहर तनखवा बढ़तउ ! तोहर··· !'

मल्लिक-कोठी की खिडकी से हजारीबाग जेल के टॉवर की रोशनी एक मनहूस सितारे की तरह झिलमिलाती। जितेन्द्र को मल्लिक-कोठी की एक-एक रात की याद आने लगी थी। 1941, 42, 43 और फिर ' 50···! वह उठकर अपने कमरे मे चला गया। इरावती आरामकुरसी पर झपकियाँ लेती सो गयी थी। छोटा-सा सपना आया था–उसका प्यार फिर पनप रहा है ! इनसान सिर्फ कत्ल और बलात्कार ही नहीं करता। इन्सान गढ़ भी सकता है। गढ़ रहा है, बना रहा है, रचना कर रहा है–समाज के लिए, अवाम के लिए। वीरान को बसाने के लिए, वन्ध्या धरती को शस्य-श्यामला बनाने के लिए, जी-तोड परिश्रम कर रहा है आदमी ! उसके प्यार पनपने के लक्षण ! वह सपने मे बार-बार रोमांचित हुई थी।··· बाइनॉक्युलर इरावती की आँखों के सामने से हटाते हुए जितेन्द्र ने कहा–'उठो !'

मल्लिक-कोठी के चौकीदार के गले की आवाज–फटी-फटी ! नींद खुली इरावती की। चौकीदार ने कहा–'मेम साहब, अन्दर जाइए ! बिछावन किया हुआ है। इस पहाड़ी में ए-गो अजगर बड़ा उत्पात मचा रहा है, कई महीना से।' हँसता हुआ आया जीत, चौकीदार चला गया।··· जितेन्द्र ने बहुत समझाया। कहा–'दस साल पहले भी एक भद्र महिला को इस चौकीदार ने अजगर का डर दिखाया था।'

जितेन्द्रनाथ को यह दिखाने के लिए कि वह दस साल पहले आनेवाली महिला की तरह अजगर से नही डरती, इरावती अपने कमरे की खिड़कियों को खोलकर सोयी। किन्तु, सच्ची बात ! वह अजगर का नाम सुनकर ही डर गयी थी। खिडकियो के रंग-बिरंगे काँच···मणि-मुक्ता-भण्डार, नाना रत्नो की खान पर सोयी है, इरावती। एक बड़ा-सा छत्रधारी साँप फुफकारता है–भाग जा ! मेरी जगह छोड़ दे !

बाहर बरामदे पर चौकीदार के खुर्राटे ! इरावती डर से उठ बैठी थी।···

धूसर, वीरान प्रान्तर ! जितेन्द्र ने इस अचल की चर्चा बार-बार की थी। वह हँसकर अपने को परतीपुत्तर कहता और इरावती को पांचाली ! इधर ही कही जितेन्द्र का गाँव होगा। कहाँ हो, ओ परतीपुत्तर ?

'खबरदार होय खबरदार !' अन्तहीन शून्य मैदान में कैम्प के पहरेवाले की आवाज

बड़ी खौफनाक मालूम होती है। इरावती को नींद नहीं आ रही।···कहाँ हो जीत, तुम ? मैं तब से दर्जनों बार छोटा नागपुर के उन कर्म-क्षेत्रों में भटकी फिरी हूँ। बोकारो के तीनों प्लाण्ट को चलते देख आयी हूँ। कोनार और तिलैया के रिजर्वायर के नील जल से मुँह धो आयी हूँ। और, तुम्हारी कोसी मैया के कछार पर कब से घूम रही हूँ। तुम कहीं नहीं मिले ! वर्षों से तुम्हारे सपनों के देश में हूँ ! तुम मिलो तो एक कविता सुना दूँ—गाकर ! निश्चय ही तुम स्वस्थ हो, प्रसन्न हो ! तुम्हारा बाइनॉक्युलर ? ···

इरावती के मामा मिस्टर खानचन्द गार्चा कैम्प के बड़े साहब हैं। तीन बजे रात को ही उठकर जीप स्टार्ट कर रहे हैं।···भर्र-र-र-र-र !

इरावती करवट लेती है !

गाँव में दलित वर्ग को हर तरह से मर्दित करके रखा गया था, अब तक ! नाटक-मण्डली के लिए प्रत्येक वर्ष खलिहान पर ही चन्दे का धान काट लेते थे, बाबू लोग। लेकिन, कभी भी द्वारपाल, सैनिक अथवा दूत का पार्ट छोड़कर अच्छा पार्ट, माने हीरो का पार्ट, नहीं दिया सवर्ण टोली के लोगों ने।

दीवानाजी ने नाटक की रचना खासकर नाटक-मण्डलियों के लिए की है। दीवानाजी की बात विचार करके देखने की है। नाटक-मण्डली के लिए सभी चन्दा देते हैं। और नाटक में राजा, राजा का बेटा, पुरोहित, मन्त्री आदि जितने भी अच्छे पार्ट होते हैं, ऊँची जातिवालों को दिये जाते हैं। बाकी बचे हुए लोगों को 'जो आज्ञा' वाला पार्ट देकर टरका दिया जाता है। कहते हैं, नाटक में जितना पार्ट लिखा है, उससे ज्यादा लोगों को कैसे दिया जाये ! ···भला शहर के नाटक लिखनेवालों को क्या मालूम कि गाँव में कितने लोग, यों ही बिना पार्ट के रह जाते हैं ! 'प्यार का बाजार' मे तीस हीरो हैं। औरत का पार्ट कोई लेना नहीं चाहता, इसलिए एक घूँघटवाली हीरोइन की व्यवस्था की गयी है, किताब में। दीवानाजी ने गाँव की पुरानी नाटक-मण्डलीवालों की धाँधली का पर्दाफाश करते हुए कहा—"गाँव में गाँव के नाटककार का नाटक स्टेज नहीं करते, और देश के कल्यान की बात करते हैं !"

किन्तु, 'प्यार का बाजार' ने एक विराट व्यापार का रूप धारण किया।

दलित नाटक-मण्डलीवाले जब सवर्णटोली से पर्दा-पोशाक लेकर चले गये तो मालूम हुआ कि अब वे पर्दा-पोशाक लौटाकर नहीं देंगे।···पचीस साल से चन्दा लिया जा रहा है, मगर कभी हीरो का पार्ट नहीं मिला। छित्तन बाबू ने पुस्तकालय को हथिया लिया। बिकू बाबू सरकारी रेडियो बजाते हैं, अपनी कोठरी में। पर्दा-पोशाक पर दलित नाटक-मण्डली का कब्जा होना जायज है। देखना है, कौन माँगने आता है पर्दा-पोशाक ! एक मूँछ भी नहीं मिलेगी !

किन्तु, सवर्णटोली पर जाहिरा इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

नाटक शुरू होने के दो घण्टा पहले सवर्णटोली के दर्शक भी पहुँचे। सबने मिलकर स्टेज की तारीफ की। सजावट को सराहा।

बातो-ही-बातो मे सवर्णटोली के नौजवानो ने अपनी गलती मान ली। नाटक-मण्डली के स्थायी मन्त्रीजी बोले—"नाटक ही करना था तो मिल-जुलकर करते !"

"दूर-दूर से लोग देखने आये हैं। क्या कहेगे लोग ?"

"अरे भाई, जमीन की लडाई जमीन पर ! गॉव की लडाई गॉव मे होती रहेगी ! लेकिन, नाटक-मण्डली मे फूट होने से तो दुनिया हँसेगी !"

एक तेज नौजवान ने कॉंपती हुई आवाज मे कहा—"परानपुर की प्रतिष्ठा का प्रश्न है, प्यारे भाइयो !"

दीवानाजी को समझाया गया, नाटक-मण्डली ने अब तक उनकी किताब को अस्वीकृत करके भारी भूल की है। गॉव के नाटककार की कद्र गॉव मे न हो, यह अच्छी बात नही ! किन्तु, यह बात भी ठीक है कि दूसरे सीन मे सशोधन की आवश्यकता है। सशोधन करते ही नाटक चमक उठेगा।

दीवानाजी ने उत्साह से हाथ फेकते हुए कहा—"यह तो मेरे लिए बाये हाथ का खेल है। एक रात मे नाटक लिखा है, पॉच मिनट मे सशोधन कर सकता हूँ।"

सर्वसम्मति से सह सशोधन भी स्वीकृत हो गया कि सवर्ण और दलित, दोनो दल के लोग मिल-जुलकर नाटक खेलेगे। सवर्णटोलीवाले सिर्फ सशोधित सीन मे उतरेगे। दलित-दल के एक भी हीरो का ड्राप नही किया जायेगा।

हारमोनियम-मास्टर ने जब 'मार कटारी मरि जाना' गीत की गत बजाना शुरू किया तो किसी को भी होश नही रहा। दर्शको ने तालियॉ बजाकर पर्दा उठाने की उत्कण्ठा प्रकट की।

पर्दा उठा। प्रथम दृश्य मे नाटककार—मॅगनीसिह उर्फ प्रेमकुमार दीवानाजी ने पन्द्रह मिनट भाषण देकर प्रमाणित कर दिया कि सिर्फ नाटको से ही ग्राम-सुधार सम्भव है। शर्त यह है कि गॉव मे गॉव के योग्य नाटक ही खेले जाये। बीच-बीच मे दोहा, कवित्त, शेर जोडकर दीवानाजी ने इग्लैण्ड, अमरीका, चीन, रूस आदि दशो के नाटको पर काफी प्रकाश डाला। प्रथम दृश्य मे दलित-मण्डली के एक दर्जन कलाकारो ने मिलकर प्रेम-प्रार्थना की—'प्रेम की महिमा अपार जग मे, प्रेम की महिमा अपार-हॉ हॉ !'

दूसरा दृश्य ! इसी दृश्य मे सवर्णटोली के बीसो कलाकारो को एक ही साथ उतरना था। सबसे पहले एक व्यक्ति हाथ मे तलवार लेकर स्टेज पर आया। दीवानाजी पर्दे की आड से प्राम्पटिग कर रहे थे। किन्तु उस हीरो ने अपने डायलॉग मे पुकारा—"साथियो ! तैयार हो !"

अन्दर से सम्मिलित आवाज आयी—"हम तैयार हैं !"

हुक्म दिया प्रथम व्यक्ति ने—"एक-एक कर प्रवेश करो !"

बीसो कलाकार, किस्म-किस्म की पोशाको और हथियारो से लैश होकर स्टेज

पर आये। आठ-दस नायकों के सिर पर बक्से भी लदे थे। दीवानाजी दौड़कर स्टेज पर आये। उन्होंने कुछ कहने की चेष्टा की। किन्तु, प्रथम हीरो ने हुक्म दिया—"इस आदमी को कैद कर लो।" दीवानाजी चक्रव्यूह में फँस गये। उन्होंने बहुत हाथ-पैर मारने की चेष्टा की। इस घेर-भाग और धर-पकड़ से समवेत दर्शक-मण्डली बेहद खुश हुई और तालियों से इस दृश्य का स्वागत किया। हारमोनियम-मास्टर साहब ने लड़ाईवाली धुन बजाते हुए तबलची ने कहा—"अंग्रेजी बाजा की तरह बजाओ!" ड्रम-ड्रम-ड्रम ! डम-डम-डम ! दीवानाजी पकड़े गये। हीरो आखिरी डायलॉग बोला—"निकल पड़ो !"

बीसों हीरो सारे साजो-सामान तथा पोशाक के साथ दर्शकों के बीच उतर पड़े। दो नायकों ने नाटककारजी को कन्धे पर बेबस करके लटका लिया था। दलितटोले के पंचायती पैट्रोमेक्स को गुल कर दिया गया।···भीषण कलरव और कोलाहल मे किसी की समझ में नहीं आया कि क्या हुआ ! टँगे हुए परदे की डोरी भी काटकर ले गये, सवर्णटोली के नायक। बारह-तेरह व्यक्ति नकली तलवार की मार से घायल भी हुए।

गाँव मे सरगर्मी है। थाने में खबर दी गयी है। लुत्तो, गरुड़धुज झा, वीरभद्दर बाबू वगैरह पैरवी कर रहे हैं। गवाही देगे—नाटक की बात नही ! डकैती का अभियोग लगाकर नालिश की गयी है !

सवर्णटोली के नौजवानो ने 'प्यार का बाजार' को सेबोटाज कर दिया। किन्तु, उसी रात को हवेली की बगिया मे एक दलित-दुहिता ने एक सवर्ण युवक के प्यार के ससार को असंख्य चॉद-सितारो से जगमगा दिया। युवक धन्य हुआ !

"तुम्हारी जाति मारी गयी।" मलारी मुस्करायी—"हाय, हाय ! तुम्हारी जाति चली गयी !"

"कहाँ चली गयी जाति ." सुवंश ने मलारी के कान के पास मुँह रखकर पूछा—"किसकी जाति मारी गयी ?" मलारी ने बार-बार सुवंश की जाति को लौटाने की चेष्टा की। मरी हुई जाति जी जाती, फिर मर जाती ! मरती और जीती हुई जाति अन्त में अमर हो गयी। सुवंश ने मलारी के घुँघराले बालों की लहरों पर हौले-हौले हाथ फेरते हुए कहा—"मलारी, मुझे बताओ, मै क्या करूँ ! अब जी की जलन को सहना मेरे बूते की बात नही।"

मलारी एक क्षण के लिए गम्भीर हुई। फिर बोली—"और मैं किससे पूछूँ ? मेरा दुख तुमसे दूना है सुवंश बाबू !"

"फिर तुमने बाबू कहा ! लाओ जुर्माना !"

मलारी ने हँसकर दण्ड स्वीकार किया। सूखे पत्ते की खड़खड़ाहट पर चौंककर मलारी ने अपने को सुवंश के बन्धन से छुड़ाना चाहा—"शायद कोई आ रहा है, इधर ही !"

"कोई आवे, मेरी बला से ! मै नही डरता। मलारी, तुम विश्वास क्यो नही करती ?"

"तुम नही जानते, विश्वास करने मे कितना सुख मिलता है, मुझे–किन्तु मन मे जमता ही नही है। जो कुछ आज तक नही हुआ वह तुममे कैसे हो सकेगा ? मै कुछ नही समझ पाती हूँ।" सुवश की चौडी छाती पर अपना सिर रखकर बोली मलारी–"गॉव मे भूकम्प हो जायेगा। कैसे सँभाल सकोगे तुम अपने को ? इसीलिए कहती हूँ–जो हुआ, बहुत हुआ। अब ।"

सुवश ने अपनी हथेली से मलारी का मुँह बन्द कर दिया। पेड पर बैठे किसी पछी ने डैने फडफडाये। ओस की बूँदे झरझराकर धरती पर गिरी !

"सचमुच, भूकम्प हो गया गॉव मे !

मलारी और सुवशलाल गॉव छोडकर भाग गये। घाट बाट, खेत-खलिहान, डगर-सडक और अली गली मे बस एक ही चर्चा–"हद हो गयी ! जुल्म हो गया। जित्तन का भी कान काट लिया। हरिजन-उद्धार हो गया। भूमिहार सभावाले क्या कहते हैं ? हरिजन वेलफेयर ऑफिसर आ रहे हैं ! हरिजन मिनिस्टर साहब को तार दिया है !"

कल, खबर मिली है–मलारी मुजफ्फरपुर मे ट्रेनिग ले रही है और सुवशलाल भी मुजफ्फरपुर कॉलेज मे नाम लिखा चुका है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन से पहले ही छुट्टी ले चुकी थी मलारी। सुवशलाल ने भी, चिट्ठी पत्री लिखकर सब काम दुरुस्त कर लिया था, पहले से ही।

सुवशलाल की मॉ रो रोकर अन्धी हुई जा रही है। बगीचा मे बैठकर रैदासटोली की ओर मुँह करके, जोर जोर मे रोती है, वह। मलारी की मॉ हमेशा बुदुर बुदुर बकती रहती है "कोख मे सॉपिन पल रही है, जानती तो पेट पर गरम पानी की कटोरी रखकर तुमको पेट मे ही पका मारती, छिनाल ! भाग गयी टरनिग लेने, भूमिहरवा के साथ ! उस भूमिहरवा छौंडे की मॉ को, भाई को, भौजाइयो को लाज नही !"

सुवश की मॅझली भाभी अपनी रोती हुई सास को समझाती हुई, जोर-जोर से कहती है–"रो-रोकर ऑख चौपट करने से क्या होगा मइया ! मर्द की जात, सोने की जात ! सुवश बाबू की जात जरा भी मलिन नही होगी। लेकिन, उस हरजाई चमारिन छौडिया का हवाला देख लीजिएगा। नट्टिनटोली मे नही आकर बसे तो, मेरे नाम पर काली कुतिया पोसे कोई ! जो एक मर्द के साथ भाग सकती है, वह दस मर्द के साथ ऑख लडावेगी !"

रोज, दिन डूबने से पहले, पनघट पर खडी औरते इस हवाई झगडे को सुनती हैं, टीका-टिपकारी करती है। फिर, दोनो का पक्ष लेकर आपस मे झगडती हैं। हाथ चमकाकर फेकनी की माय चुनौती देती है–"आकि देखो, बाभन-छतरी की बेटी-पुताहु को भी सोलकन्हटोली का कोई छौंडा लेकर भागेगा। जब, भागा-भागी

का कारबार शुरू हुआ है तो देख लेना। आकि देखो !"

आज, मलारी की माँ और सुवंश की माँ और दोनों भाभियाँ हवेली की ओर मुँह करके गाली-श्राप दे रही हैं। सुवंश की माँ रोती हुई कहती है–"रे उकलगौना जितना ! तेरे बाप ने मेमिन का जूठा खाकर धरम गँवाया। तेरी मैया की जात का कोई ठीक-ठिकाना नहीं ! तेरी हवेली में रण्डी की बेटी पली ! तू दूसरे की जात क्यों नहीं मारेगा ! क्रिस्थनवाँ, मुसलमनवाँ, नट्ट-बजीगरवाँ ! रण्डी का भड़वा ! मेरे सुवंश का माथा खराब करके गढ़े में गिरा दिया और अपने मौज से बैठकर हवेली में फेनूगिलास का गीत सुनता है ! तजमनियाँ तुमको जहर खिलाकर मारेगी रे-ए-ए-ए !"

मलारी की मॉ रोती नहीं, चिल्लाती है–"बैठा बनियाँ क्या करे तो, इस कोठी का धान उस कोठी में ! ... तजमनियॉ से मन नहीं भरा तो मलरिया पर आँख पडी ! पोसा कुत्ता सुवंशलाल को हुलका दिया ! पूँछकट्टा गीदड़ कहीं का !"

गॉव में नयी खबर फैली है, जित्तन बाबू ने ही दोनों को, सलाह-मशविरा, चिट्ठी-चपाटी और शायद रुपया-पैसा देकर भगा दिया है। सुवंश के बड़े भाई रघुवंश बाबू से जितेन्द्रनाथ ने स्पष्ट शब्दों में कहा–"सुवंश और मलारी, दोनों की चिट्ठियाँ मेरे पास हैं। मैंने दोनों को समझाने की कोशिश की। लेकिन, अपने फैसले पर दोनो अटल थे।... मुझसे सिर्फ परिचय-पत्र लिया है सुवंश ने। हाँ, मैंने प्रान्त के एक प्रसिद्ध मिनिस्टर की घोषणा की याद अवश्य दिलायी थी, सुवंश को। एक-डेढ महीना पहले ही मिनिस्टर साहव का वक्तव्य निकला था–हरिजन कन्या से विवाह करनेवाले सवर्ण युवक को स्कॉलरशिप देंगे। सुवंश की चिट्ठी आयी हैं, कल। उसने मिनिस्टर साहब को अचरज में डाल दिया है।"

रघुवंश बाबू ने चिट्ठी पढ़ी। कुछ बोल नहीं सके। उठते समय बोले–"माँ मर जायेगी, रोते-रोते !" जितेन्द्रनाथ ने लाचारी की साँस ली।

दीवाना, अब सचमुच दीवाना हो गया है। अपने प्यार की कहानी वह गा-गाकर सुनाता फिरता है। सरपट चालवाली कविता बनाता है, आजकल–खटर-खटर, पटर-पटर, रेलगाड़ी जा रही, उड़ाये जा रही है प्रेमिका को मेरी... बहुत दूर, बहुत दूर ! धुकुर-धुकुर धुआँ मेरे दिल से निकलता है...! कभी-कभी तैश में वह भाषण देना शुरू कर देता है–"मुझे मालूम है, मेरे भाइयो ! आपको भी मालूम होना चाहिए, दुनिया को मालूम होना चाहिए कि प्यार का क्या फल मिलता है ! कलात्मक प्रेम के पुजारी की हैसियत से मैं कहना चाहूँगा..." इत्यादि !

बालगोबिन मोची का माथा अब ज्यादा झुका रहता है। लुत्तो रोज धमकी देता है–"तुम्हारी ही बेवकूफी से सबकुछ हुआ। यदि मलारी से उस कागज पर दस्तखत करवा लेते तो आज ऐसा नहीं होता। तुम्हारी बदनामी हरिजन वेलफेयर ऑफिसर के यहाँ भी हो गयी है। नही चलेगी तुमसे अब लीडरी !"

बीरभद्दर का विभीषण भाई शिवभद्दर खुले-आम प्रचार कर रहा है–"मलारी को खजवा टोपीवालों ने भगाया है। जित्तन भैया को क्या पड़ी है ! यह काम

तेरंगा झण्डावालों का है। जिसको परतीत नहीं हो, मेरे पास कागज है, आकर पढ़ लो। मैं पढ़ना नहीं जानता तो क्या हुआ ! कांग्रेसी-छाप कागज भी नहीं पहचानूँगा ?"

शिवभद्दर ने आजकल भैंस चराना छोड़ दिया है। लोग कहते हैं, जित्तन बाबू ने उसकी पीठ पर हाथ रखा है। देह की ताकत में दोनों बड़े भाई उससे पार नहीं पा सकते। इसलिए, अब मारपीट की धमकी भी वे नहीं देते। बीरभद्दर कहता है–"लुत्तो, क्या बतावें ! यह डम्फास भाई मेरा जो है न, सब-गुड़ गोबर करनेवाला निकला। आजकल उसका मन कौमनिस्ट होने के लिए कसमसा रहा है। देखो, वह सिडुलवाला कागज कैसे हाथ लग गया ?⋯फुसलाना मलारी को ! दिखलाना लोभ ! सामबत्ती पीसी की खुशामद, दिन में दो बार कर आता है लुत्तो। देखना ! एक तो तुमने काम नहीं बनाया। अब, मुफ्त में बदनाम मत करना। पान-पत्ता के लिए बीरभद्दर बाबू तैयार हैं। जो कहो !" जयवन्ती और सेमियाँ फिसफिसाकर आपस में बतियाती हैं–"लिलिया पहले से ही जानती थी मलारी के मन की बात। इसीलिए, पटना चलने के लिए कह रही थी।"

आजकल, रामलला की पूजा से छुट्टी नहीं मिलती है, सरबजीत चौबे को। किन्तु, मलारी की माँ रोज पहुँचती है–"चौबेजी ! पैर पड़ती हूँ, आज जरा फिर से पोथी में हिसाब करके देखिए, मेरी बेटी घर लौटेगी या नहीं ?"⋯ चौबेजी को भी मलारी के भाग जाने का बहुत दुख है। जब से गयी है मलारी, गाँव अलोना-अलोना लगता है !

उस दिन भूदान के तीन कार्यकर्त्ताओं को मारते-मारते बेदम कर दिया, सरबन बाबू के लठैतों ने। सरबन बाबू और लालचन बाबू में भैय्यारी झगड़ा है। लेकिन, बाहर के दुश्मनों से मुकाबला करने के समय दोनों भाइयों में मेल हो जाता है।

सर्वे की आँधी के पहले ही जिला के सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं ने–विनोबा की पदयात्रा को सफल बनाने के लिए–दानपत्र बटोरने का काम पूरा कर लिया था।⋯कांग्रेसियों और समाजवादियो ने मिलकर गाँव-गाँव में अलख जगायी–'भूदान करो ! भूदान करो !' विनोबा के प्रत्येक पड़ाव पर दान-पत्रों और दान में मिली जमीन के आँकड़े सुनाये जाते। दाताओं के नामों की घोषणा की जाती। प्रत्येक नाम पर जनता जय-जयकार करती।⋯दुखहरन साह की तरह, परानपुर के अधिकांश जमीनवाले बडे किसानों ने सोचा–सामने सर्वे की कड़ी सरसराती हुई आ रही है। जमीन माँगनेवाले कोई नये लोग थोड़े ही हैं ! पुराने ही बाबू लोग हैं। कांग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी के लीडर लोग। विनोबा बाबा को कुछ बीघे जमीन का दानपत्र देकर काम बनाया जा सकता है–सर्वे में। भूदान देनेवालों पर कांग्रेसियों और सोशलिस्टों की मिली-जुली नेक निगाह जरूर रहेगी।⋯

लेकिन, सर्वे के समय न तो सर्वोदय के कार्यकर्त्ता काम आये, न कांग्रेसी, और न सोशलिस्ट-कम्युनिस्ट। काम आये आखिर गरुड़धुज झा। किसी ने इस दान

का खयाल नहीं किया। दान का प्रतिदान तुरंत चाहनेवाले लोगों में हैं सरबन बाबू। अपने भाई लालचन के हक को उड़ाने के लिए सरबन बाबू ने भरी कचहरी में हलफ लेकर कह दिया—"लालचन मेरा भाई नहीं।"··· सरबन बाबू ने फैसला कर लिया था मन-ही-मन—एक घर जमीन भी नहीं देंगे। दानपत्र दिया है तो क्या हुआ ?

लुत्तो, सर्वोदय के लोगों पर बहुत नाराज है। तीन सौ एकड़ जमीन का दान-पत्र बटोर दिया लुत्तो ने। लुत्तो ने समझा था और आज भी समझता है—जमीन माँगनेवालों को परसेण्टेज के हिसाब से कुछ कमीशन जरूर मिलता है। लुत्तो को कुछ भी नहीं मिला ! वह अपनी आँख के सामने देख रहा है, मौज में हैं सर्वोदय के कार्यकर्त्ता। खँजड़ी बजानेवाले को भी मुसहरा मिलता है।

लुत्तो की उपर्युक्त धारणा को गलत प्रमाणित करने के लिए सर्वोदय-आश्रम के खजांची तारा बाबू ने दाँत किटकिटाकर कहा था—"क्या समझ लिया है ! कपड़ा-चीनी-तेल के परमिट का डिपू समझ लिया है, इसको भी ?" तारा बाबू जरा तीखे मिजाज के आदमी हैं। सोशलिस्ट-साइड के सर्वोदयी हैं। आश्रम की भाषा में, इस साइड का अर्थ—कांग्रेसी, उस साइड का माने सोशलिस्ट होता है।

तारा बाबू ने चिल्लाते हुए कहा था—"इस साइड और उस साइड की क्या बात ! कांग्रेस में ही बचपन काटकर जवान हुआ हूँ। कार्यकर्त्ताओं को नहीं पहचानूँगा ?"

सामूहिक भोजन के समय भोजनालय-भाई ने बेपानी कर दिया था लुत्तो को—"यहाँ शरीरश्रमी भाई का पेट एक पैली चावल में ही भर जाता है। आप पाँचवीं बार भात माँग रहे हैं··· !" लुत्तो तैश में आकर खड़ा हो गया था, पर्दाफाश करने के लिए। धर्मपुर इलाके के दुग्गी-तिग्गी कार्यकर्त्ता भी, दूसरे इलाके के कार्यकर्त्ताओं पर हुकुम चलाकर बात करते हैं। लुत्तो ऐसे लोगों को 'हुजूर-कार्यकर्त्ता' कहता है। हर जगह हुजूर हैं, सब जगह मजूर हैं।

झगड़े को जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान महोदय ने निबटा दिया था—"एक पैली भात दे दीजिए, भोजनालय-भाईजी !"

इसके बाद, लुत्तो ने सर्वोदय का नाम लेना कम कर दिया··· तारा बाबू कभी परानपुर इलाके में नहीं आयेंगे ? तब पूछेगा, लुत्तो !

एक सर्वोदयी अमीन के साथ दो भूदानी आये—रामलखनजी और टमाटर परोपकारीजी। लुत्तो ने साफ-साफ कह दिया, "मेरे पास समय नहीं। कांग्रेस का भी काम करें, भूदान की भी बेगारी करें और पेट का भी अन्धा खोजें ! जमीन माँग दी है, अब आप लोग घर-घर डोलिए। दाताओं के यहाँ डेरा डालिए। जो साग-सत्तू मिले, प्रेम से पाइए।··· यहाँ कांग्रेस कमेटी का दफ्तर मेरे पॉकिट में है। पॉकिट में रहियेगा ?"

ऐसे-ऐसे भूदानी, जीवनदानी भी हो जायें, लुत्तो की लंगी को नहीं समझ सकते ! रामलखनजी को वह बहुत दिनों से जानता है। सूधे आदमी हैं। लेकिन, टमाटर परोपकारी जरा टर्रबाज है। असल नाम छिपा रखा है, उसने। जहाँ जाता है, टमाटर

के गुण पर भाषण देता है। अनुपान-भेद से गुणभेद, अनुपम अनेक गुणों का बखान करने के बाद नारा देता है–'अधिक टमाटर उपजाइए !' लुत्तो को पक्का विश्वास है, यह आदमी जरूर किसी बीज बेचनेवाली कम्पनी का एजेण्ट है ! ···अच्छी बात, फलाहार करावेगा लुत्तो, इस बार !

लुत्तो ने गाँव के दाताओं से बातें कर लीं–"ब्योरा मत दीजिए जमीन का। सर्वोदयवालों ने हमारे गाँव में कौन-सी भलाई की है ! दिया है एक भी कुआँ या रहट ?"

दिन-भर डोलते रहे गाँव में दोनों भूदानी। किसी ने इनकी ओर देखा भी नहीं आँखें उठाकर। रात में कोई आश्रय देने को तैयार नहीं। सभी टाल देते, दूसरे टोले का रास्ता दिखला देते।··· रामलखनजी पहली बार नहीं आये हैं, परानपुर। किन्तु, गाँव ऐसा हो जायेगा, उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

लुत्तो ने इन्हें अच्छी तरह भटकने दिया। शाम को जब दोनों भूदानी हवेली की ओर जाने लगे, तब लुत्तो ने पुकारकर कहा–"सुनिए जी, बिलैती बैंगन···टमाटरजी और रामलखनजी। कहीं कोई नहीं रहने देंगे, रात में। इस इलाके में अफवाह फैली है कि भूदानी और जीवनदानी जहाँ टिकते हैं, जो चीज सामने देखी वही दान में माँगने लगते हैं।···चलिए, मेरी हाँड़ी का बना हुआ भात खाइएगा या फलाहार ?"

दिन-भर के भूखे भूदानियों को भर-पेट दूध-भात खिलाकर लुत्तो ने समझाया–"असल बात क्या है, जानते हैं ? एक भी आदमी ब्योरा नहीं देगा, आप लोगों को। मैं बात कर चुका हूँ लोगो से। दानपत्तर का कोई भैलू ही नहीं लगाते हैं लोग ! किसी बड़े कार्यकर्त्ता को ले आइए बुलाकर ! नहीं तो, कुछ नहीं होगा। जब आये हैं तो एक सप्ताह रहकर रंग-रुतबा देख लीजिए !"

एक सप्ताह रहकर रंग-रुतबा देख लिया, दोनों भूदानियों ने। झोली-झण्डा लेकर सर्वोदय आश्रम, रानीपट्टी की ओर मुँह किया !···लुत्तो ने इसी बीच सरबन बाबू को चोट पर चढ़ाया। बतलाया–"आपने तीस एकड़ जमीन दी है न ! सुना है, आपकी गुलरीवाली जमीन को वितरण कर देंगे भूदानी लोग !" सरबन बाबू सुनकर अगियाबैताल हो गये–"कौन साला गुलरीवाली जमीन··· ?"

दस-पन्द्रह दिनों के बाद रामलखनजी और टमाटर परोपकारीजी के साथ आये खुद तारा बाबू ! ···खजांची बाबू आये हैं ? लुत्तो खुशी-खुशी जाकर मिला–"ठीक है, अब आप आये हैं। देखिएगा, कितनी जल्दी ब्योरा देते हैं गाँव के लोग !"

लुत्तो ने सरबन बाबू के बारे में बतलाया–"सब कोई जमीन का ब्योरा दे दें, मगर सरबनसिंह नहीं दे सकता। भारी दुश्मन है भूदान का। कहता था, विनोबाजी का भी क्या विश्वास ! यदि सभी जमीन लेकर खुद जमींदारी करने लगें, तब ? कहिए, भला !" तारा बाबू ने अपनी डायरी में नोट करते हुए पूछा–"क्या नाम बताया ? सोबरन या सरबनसिंह और लालचनसिंह !"

"जी हाँ !" लुत्तो ने विनम्रता से कहा–"जयदेव बाबू के मामा हैं। एक दिन कह रहा था सरबनसिंह–सभी डकैत लोग सर्वोदय में पैठ गये हैं। मैंने पूछा–कौन

डकैत ? तो, बोला–सोशलिस्ट लोग।"

तारा बाबू तेज मिजाज के आदमी हैं, किन्तु लुत्तो से इस बार उन्होंने हँस-हँसकर बातें कीं। लुत्तो ने तारा बाबू को अपने घर पर रखा। आदर-सत्कार किया–"ऐ बिठैलीवाली ! जानती नहीं, कैसा मेहमान आया है ? दही खानेवाला ! खूब अच्छी तरह दही जमाओ।" घर में दही जमाने की ताकीद करके, लुत्तो निकला। गरुड़धुज झा, बीरभद्दर और रोशनबिस्वाँ से मिला। भूदान का नया एलान सुनाया–"तारा बाबू कहते हैं कि जो दाता ब्योरा नहीं देंगे, उनकी जमीन बगैर ब्योरा के ही बाँटकर देंगे। सरकिल कर्मचारी से ब्योरा ले लेंगे। ऊपर से सरकिल कर्मचारी को भी हुक्म आया है !" लुत्तो ने यह भी बताया कि तारा बाबू बहुत तीखे आदमी है। इसफगोल की भूसी दही के साथ खाते हैं, फिर भी दिमाग तेजी से जलजल करता रहता है। और वह जो बिलैती बैंगनजी...नहीं-नहीं टमाटर परोपकारीजी हैं न ! कह रहे थे--इस गाँव में पेशाब से मोती बनायेंगे और सोना...!

गरुड़ झा ने खैनी थूकते हुए कहा–"जितने काने-कोढ़ी और पागल हैं, सब सर्वोदय में ही आकर जमा हुए हैं क्या ? पेशाब से मोती बनायेंगे !"

रोशनबिस्वाँ ने कहा–"जरूर कोई भारी ठग है। मेरे बाप को ठग गये थे दो साधू सो नही जानते ? बोले, कि एक नोट का पाँच बना देंगे।"

लुत्तो ने बताया–"तारा बाबू धरमपुर के हैं न ! इसीलिए कह रहे थे कि परानपुर गाँव लॅगटा-लुच्चों का गाँव है।"

इस बात पर सबसे ज्यादा रोशन बिस्वाँ का पित्त खौला–"क्या कहता है ? लॅगटा-लुच्चों का गाँव है ! कैसा आदमी है !"

गरुडधुज ने कहा–"अच्छी बात ! इसी बार भेंट हो जायेगा, तब !"

गरुडधुज झा और लुत्तो ने एकान्त में सरबन बाबू की बात की। फिर, आकर रोशन बिस्वाँ और बीरभद्दर बाबू से बोले–"क्यो पचों ! इस धरमपुरिया को फलाहार करा दिया जाये ?"

"हाँ, हाँ। हो जाये !"

गरुड़धुज झा सरबन बाबू और लालचन बाबू को लेकर कचहरी उड़ा–भोर की गाड़ी से। लुत्तो ने सरबन बाबू को गुप्त खबर दी है–गुलरीवाली धनहर जमीन पर सोशलिस्टो की आँख है। जिस गुलरीवाली उपजाऊ जमीन के लिए सरबन बाबू ने हलफ उठाकर कह दिया...! उसी जमीन को तितर-बटेर करके बँटवाना चाहते हैं लोग ! ...वकील साहेब ने फीस लेकर सलाह दी--कोई डकैती करने आवे तो क्या कीजिएगा ? बस, और क्या !

तारा बाबू ने एक सप्ताह तक गाँव में छोटी-छोटी सभाएँ कीं। रामलखनजी ने खँजड़ी बजाकर भूदान-संकीर्तन सुनाया और टमाटर परोपकारीजी ने टमाटर की तरह-तरह की तरकारियों और चटनियो की बात सुनकर सुननेवालों की रसना को सरसाया। किन्तु, गाँव के किसी दाता ने जमीन का ब्योरा देना स्वीकार नहीं किया। कुछ लोग बहाना बनाकर टाल गये–'मालिक घर में नहीं हैं। कागज कचहरी में

लगा हुआ है !' कुछ लोगों ने कहा—'भूदान में जो जमीन देने की बात थी सो सरकार ने छीन ली। परती जमीन !'

तारा बाबू ने भूदान-कार्यालय में तार दिया—'जमीन वितरण करके ही लौटूँगा !' और, उस दिन निकल पड़े तारा बाबू अपने कार्यकर्त्ताओं के साथ। लुत्तो भी साथ था। उसने धीरे से कहा—"तारा बाबू ! पहले सरबनसिंह से ही शुरू कीजिए।"

गुलरीवाली जमीन की मेंड़ पर आकर जमा हुए सभी। तीसों एकड़ में धान के पौधे, दूध-भरी बालियों के गुच्छे झुकाये हुए ! हवा का हल्का झोंका भी खेत में तरंग पैदा कर देता है। तारा बाबू भी किसान-परिवार के पुत्र हैं। धान देखकर उनका जी जरा जुड़ा गया। बोले—"पहले यहीं से !"

लुत्तो ने कहा—"देर क्यों करते हैं ? शुरू कर दीजिए !"

तारा बाबू कागज-पत्तर ठीक करने लगे। रामलखनजी ने खँजड़ी बजाकर गीत शुरू किया। और, अमीन साहब कड़ी का झब्बा खोलकर गुनिया ठीक करने लगे ! आस-पास कुछ लोग आकर जमा हुए।··· घेर, घेर, घेर ! गाँव के पास कुछ लोग दौड़ रहे हैं। लुत्तो ने कहा—"खरहे का शिकार कर रहे हैं, शायद !" किन्तु, पलक मारते ही सरबनसिंह का छोटा भाई लालचनसिंह दस-पन्द्रह लठैतों के साथ आ धमका—"क्या हो रहा है ? क्या समझ लिया है ? मुसम्मात की जमीन है ?···मारो सालों को !"

लठैतों ने लाठी भाँजनी शुरू की। अमीन साहब जरीब की कड़ी छोड़कर भागे। तारा बाबू के सिर पर लाठी लगी तो वह सिर पर झोली रखकर बैठ गये।·दूसरी लाठी में ही चित्त हो गये।···भूदानियों पर लट्ठ पड़ने लगे—"साला ! पहले जमींदारी खत्म किया। तब सर्वे और तब सरबोधन। साला सरबसाधन। और लो ब्योरा ! बाँटो जमीन अपने बाप की !" तड़ा-तड़ ! तड़ा-तड़ ! रामलखनजी धरती पर लोट गये। लुत्तो को एक भी लाठी नहीं लगी। तारा बाबू के गिरते ही वह भागा···फलाहार करिए ! किन्तु, टमाटर परोपकारीजी अडिग खड़े रहे। लाठियाँ पड़ती रहीं, सिर से खून की धारा बह चली, किन्तु उन्होंने बचाव के लिए हाथ भी नहीं हिलाया। उन्होंने प्रार्थना शुरू कर दी : 'ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह, पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है···सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ सो— है बैठ जाता प्राप्त कर लेता उसे—जो तेज से परिपूर्ण !'···घायलों को छोड़कर भागे सभी।

कॉमरेड मकबूल अपने साथियों के साथ दूसरे गाँव की ओर जा रहा था। सुनते ही साइकिल छोड़कर दौड़े सभी ! तारा बाबू ने आँख खोलकर देखा—मकबूल और उसके साथी रामलखनजी को चुल्लू से पानी पिला रहे हैं।

जिला के प्रमुख तन्त्रमुक्त भूदानी नेता ने घोषणा की है—परानपुर में आमरण अनशन करेंगे !

भिम्मल मामा का पागलपन बढ़ गया है। जबरदस्त दौरा ! जित्तन बाबू को भी इस बार आशंका हो रही है, मामा पागलखाने में भेज दिये जायेंगे। कौंके !

दौरे के समय भिम्मल मामा 'होल्डिंग डॉग' के बदले दूसरी पंक्ति रटते हैं, हमेशा। राह चलते समय हाथ नचा-नचाकर बकते हैं–"हेक्सागन प्लस पेण्टागन !"

आक्रमण नहीं करते, किसी पर। किन्तु, राह काटकर चलते हैं लोग फिर भी ! कौन डेढ़ घण्टा तक उनकी परिभाषा सुने और उनकी भाषा को समझे ! ··· "हू मेड कोकोनट ! जहाँ पवन को गमन नहिं, रवि शशि उगे न भानु–जो फल ब्रह्मा रचे नहिं सो अबला माँगत दान। व्हाट्स दैट फ्रूट ? जाफल, काफल, श्रीफल, कटहल, कटहल-बड़हल, कटहल-बड़हल ! हेक्सागन प्लस पेण्टागन !"

जितेन्द्रनाथ को भिम्मल मामा की बड़ी चिन्ता है। किन्तु, आजकल जितेन्द्रनाथ का नाम सुनते ही भिम्मल मामा उत्तेजित हो जाते हैं।···

जितेन्द्रनाथ ने हिसाब लगाकर देखा, ठीक है ! उसी शाम को, हवेली से जाने के बाद से ही मामा की हालत बिगड़ी है !

उस शाम को ! ···

खड़ाऊँ खटखटाते आये मामा। कभी जितेन्द्रनाथ के ड्राइंगरूम में पैर नहीं रखते। उस शाम को आये तो बाहर प्रतीक्षा करने के बदले अन्दर चले गये। मीत ने उनको सूँघकर छोड़ दिया।

"जित्तन ! तुम्हारे निजस्व व्यक्ति से कुछ कथा है !"

"कहिए !"

"पंचचक्र तुमने कैसे प्राप्त किया ?"

"ताजमनी ने दिया। माँ ने एक पिटारी दी थी, उसी मे था। क्यो ?"

"और, ताजमनी अब फिर हवेली के अन्तर मे प्रवेश पा गयी ? सोचकर जवाब दो !"

ताजमनी ने हवेली के अन्दर जुधना को डाँट बतायी, किसी बात पर–"रोज-रोज तुम्हारा दिमाग बिगड़ता ही जा रहा है ?" ···भिम्मल मामा ने ताजमनी की बोली की प्रतिध्वनि सुनी–"और वह नटकुमार भी है ?"

"हाँ।"

"क्या हाँ-हाँ ?"

जितेन्द्रनाथ ने ताड लिया। बोला–"आप बैठते क्यो नहीं ! बैठिए, पहले !"

"इसे क्यों नहीं बैठने को कहते !" भिम्मल मामा ने खड़ी पत्थर की मूर्ति की ओर दिखाकर कहा–"और अब इसकी आवश्यकता ही क्या है ?" भिम्मल मामा की एक कमजोरी को सिर्फ जितेन्द्रनाथ ही जानता है। बचपन से ही भिम्मल मामा उसको प्यार करते हैं। नाटक में भी कभी ऐसा पार्ट नहीं लेते, जिसमें जित्तन के विरुद्ध कुछ कहना पड़े। द्रोणाचार्य का पार्ट करना छोड़कर, नकुल का पार्ट लिया भिम्मल मामा ने।··· जित्तन अभिमन्यु बनेगा और वह कौरव-दल में रहेगा?

घण्टो, एकटक जित्तन को देखते–कभी-कभी एकान्त में। जित्तन पूछता–"क्या

है मामा ?"..."कुछ नहीं, तुम्हारी कमीज पर एक कीड़ा चल रहा था।" कहकर, उँगली से कुछ हटाते हुए जित्तन की देह का स्पर्श कर लेते। आज भी, रोज किसी-न-किसी बहाने, जित्तन की देह को वह एक बार अवश्य छू लेते हैं। बचपन में ललाट पर लटकते केश को भी हटा देते। किन्तु, आजकल कभी-कभी अपनी कलाई जितेन्द्रनाथ की ओर बढ़ाकर कहते हैं–"देखो तो जित्तन, देह गरम तो नहीं ? अरे, तुम्हारी हथेली इतनी गरम क्यों है ?"

उस शाम को, ड्राइंगरूम में भिम्मल मामा गुस्से-से टहलने लगे। और, एक बार तो उन्होंने जितेन्द्रनाथ की किसी बात से चिढ़कर नोच लेने के लिए हाथ भी बढ़ाया। किन्तु, मीत ने भूँकना शुरू कर दिया।

भिम्मल मामा ने मीत की ओर गौर से देखा, क्षण-भर फिर जितेन्द्रनाथ की ओर छलछलायी आँखों से देखकर कहा–"यू हेक्सागन ! हि पेण्टागन !" और इसके बाद 'हेक्सागन प्लस पेण्टागन' रटते, खड़ाऊँ खटखटाते हुए चले गये भिम्मल मामा ! ...जित्तन ने खिड़की से देखा था, कामिनी के पेड़ के पास, आँख पोंछते हुए जा रहे हैं भिम्मल मामा !

जब से ताजमनी हवेली में आकर रहने लगी है, सुधना उदास रहा करता है। अब उसे मीत से दोस्ती का लोभ नहीं। वह मीत से मन-ही-मन चिढ़ा रहता है ! रह-रहकर लहेरियासराय जाने के लिए रोता है।...जहाँ भूखों मर रहा था। आजकल वह गाँव के लड़कों के साथ खेलने में अपना अधिकांश समय बिताता है। शाम को पढने के समय ताजमनी की झिड़की सुनता है। जितेन्द्रनाथ के सामने तो गूँगा ही हो जाता है, वह।

जब कभी ताजमनी, जित्तन बाबू के कमरे में जाती है; सुधना दम साधकर अपने गुस्से को रोके रहता है।...कभी-कभी दिन-भर भूखा रहता है।

ताजमनी ने जाकर देखा–कालीबाड़ी का रूप ही बदल गया है। जंगल-झाड़ियों की सफाई करते समय घुँघरू के दाने पाये गये हैं।...ताजमनी ने पहचाना, उसी के पाँव के घुँघरू ! श्यामा-कीर्तन गाकर नाचते समय टूटे हुए घुँघरू ! ताजमनी बीते हुए बचपन के दिनों की स्मृतियों के जाल में उलझ गयी।

शाम को वह जितेन्द्रनाथ के कमरे में गयी–"जिद्दा ! बलिदान रोकने का हुक्म किसने दिया है ?" ताजमनी की आँखों की ओर देखता ही रह गया, जित्तन !

"बोलो न !"

"माँ श्यामा ने !"

"ठिठोली नहीं करते जिद्दा !"

जितेन्द्रनाथ ने कहा–"तो, पूछने ही क्यों आयी ? माँ श्यामा की पूजा में किसी का हुक्म कैसे चल सकता है, तुम्हारे रहते ? ... और, मैंने हजार बार प्रार्थना की

है–जो कुछ कहना या पूछना हो, बैठकर पूछो !" ताजमनी लजाती हुई हँसी। बैठी नहीं।

"तुम्हें पूजा से कोई मतलब नहीं ! ...भिम्मल मामा के लिए चिन्ता क्यों करते हो ? पूजा के दिन अपने-आप आराम हो जायेंगे। पहली बार, ठीक पूजा से पाँच दिन पहले सनके थे।"

"क्यों, पूजा से मतलब क्यों नहीं ! श्यामा-संकीर्तन के लोभ से ही मैं पूजा में दिलचस्पी ले रहा हूँ !"

"श्यामा-संकीर्तन का लोभ ? मैंने माँ से हुक्म ले लिया है। मन-ही-मन संकीर्तन गाऊँगी।"

"क्यों ?"

"खोल कौन बजावेगा ?"

"क्यों, मैं !"

"बजाओगे ? जिद्दा, सच कहते हो ? तुम खोल बजाओगे ? मुझे परतीत नहीं। तुम ठिठोली करते हो ! ...याद है ? तुमने खोल नहीं बजाया था। घुँघरू खोलकर फेंक दिया था मैंने ! उस बार भी तो तुमने कहा था। प्रतिज्ञा की थी तुमने !"

ताजमनी को जितेन्द्रनाथ ने कुरसी पर बैठा दिया–"ताजू ! तू इतनी छोटी कैसे हो गयी, फिर से ? शायद, माँ के डर से इस तरह धीरे-धीरे बोलती हो !"

ताजमनी उठ खडी हुई। जितेन्द्रनाथ ने हाथ पकड़ लिया–"एक श्यामा-कीर्तन का पद गुनगुना जाओ। मैं भूल गया हूँ। वह..."

ताजमनी मुस्कराने लगी। कहने पर भी कोई कीर्तन न गाये, यह कैसे सम्भव है !

"कौनसा ! पगला-पगलीवाला ?"

"हाँ-हाँ !"

ताजमनी गुनगुनाने लगी–मधुर-मन्द स्वर में :

पगली माँ केर कोन भरोसा !
खनहि मैया राजी-ई-ई खुशी-ई,
राशि-राशि हाँसि हँसे-ए;
खनहि मैया तिरिख नयनी-ई-ई के सँभारे माय केर गोसा... ?

जितेन्द्रनाथ की माँ मालदह जिले की कन्या थी। बँगला श्यामा-संगीत को मैथिली में रूपान्तर करके, स्वयं सुर देकर गाती थी। बचपन से ही वह अपने पिता के साथ श्यामा-संगीत गाती।...जितेन्द्रनाथ के पिता शक्ति के उपासक और प्रसिद्ध तान्त्रिक माने जाते थे। काली-पूजा के समय, उनसे सभी डरते। हमेशा आँखों में अड़हुल फूल खिले रहते। कारन[1] और प्रसाद[2] की अतिरिक्त मात्रा को जितेन्द्र की

1. माँ काली को उत्सर्ग की हुई शराब। 2. माँ काली का चढ़ाया हुआ मांस।

माँ कम नहीं कर सकती थी। बहुत सोच-विचारकर उसने श्यामा-कीर्तन की तैयारी की। सकीर्तन सुनकर साधक का तपा हुआ मन शान्त होता है।... घोर अन्धकार में, कालीबाड़ी की अँगनाई में एक दीपक जल रहा है। प्रतिमा के सामने बैठे हैं शिवेन्द्र मिश्र और बरामदे पर बैठी है वह कीर्तन गाती—अकेली !

जितेन्द्र की माँ ने अपने मैके से एक जोड़ी खोल और नरहरि खोलवाहा को मँगाया था ! ...

अपने तँ पगली मैया, बरहु पागल जुटऽल
पगला-पगली केर पागल सन्तान
मन भुलावल रे-ए-ए-हे...

जितेन्द्र सब कुछ भूल जाये, खोल का ताल कैसे भूल सकता है ! बूढ़े नरहरि पाइन ने कहा था, 'बेजोड़ खोलवाहा होगा तू बाबा ! तेरी उँगलियों पर माँ स्वय बैठ जाती है !'...ताजमनी की गुनगुनाहट के साथ-साथ खोल और मन्दिरा की ध्वनि जितेन्द्र के मन में गूँजने लगी—पगली माँ केर कोन भरोसा ! एक-दो, तीन-चार ! धिन्-ते, इत्-था—धिन्-ते, इत्-था... पगला पगली केर पागल सन्तान भुलावल रे-ए-ए-हे... धिन-खेरे-खेरे, ताँग-खेरे-खेरे-धिन-खेरे-खेरे-ताँग खेरे-खेरे-तॉग-धित् धिन्नक ! ... किन्नक-किन-काँ, टिन्नक-टिनाँ—खोल और मन्दिरा, ताजमनी और जित्तन, माँ श्यामा और श्यामा-सगीत ! जित्तन कहीं खो गया—रेहल पर मोटी बही लेकर बैठी हुई माँ ताजमनी को संकीर्तन सिखा रही है। पास में बैठा नरहरि पाइन जित्तन को ताल पकड़ाता है, एक-दुई-तीन-चार-धिन्-ते, इत्-था !

ताजमनी न जाने कब चली गयी अन्दर, उसे अकेला छोड़कर ! ... नहीं, वह आज ताजू को अपने पास बैठाकर रखेगा। ताजू जब होती है सामने, बडा निडर हो जाता है, वह। इधर कई दिनों से वह अशान्त रहा है—खन्तर गुलाबछड़ीवाला, ननकू नट, बकला ! साँप-बिच्छुओं से भरी हाँडी ! गाँव का एक प्राणी भी नहीं जी सकता। कैसे जीयेगा, इस दुनिया में कोई ?

जितेन्द्र ने पुलिस के बडे अधिकारियों को सूचना दी है। मुंशी जलधारीलाल दास को उसने सदर भेज दिया है कुछ दिनो के लिए।...वह उसका मुँह नही देखना चाहता। नरनिशाच !

"मैं पूछती हूँ कि बेचारे मुंशीजी को क्यों बनबास दिया गया है ? इतने दिनों के बाद पूजा हो रही है और बेचारा पूर्णिया में बेकार आकर बैठा है।"

ताजमनी लौट आयी।

"किसने कहा बेकार बैठा है ? काम कर रहा है।... तुम बैठोगी नहीं, थोड़ी देर ?"

"बैठने से काम नहीं चलेगा। आप भी दया करके टहलने जाइए।"

"ताजू ! मुझे माँ की याद सदा आती है, आजकल।"

"आयेगी, आयेगी माँ ! अभी से इतनी उतावली क्यों··· ?"

गाँववालों ने देखा—युगों के बाद काली-पूजा हो रही है। लेकिन, रात का कोई प्रोग्राम नहीं। ऐसा तो कभी नहीं हुआ। मुसम्मात के जमाने में तो सतरंगे झाड़फानूस टँगते थे। दल-के-दल नाचवाले आकर पाँच दिन पहले से ही मुजरा करते थे। जात्रा, नाटक या संकीर्तन कुछ भी नहीं ? तब, क्या पूजा ! लोग माँ काली की प्रतिमा को देखकर लौटते, मायूस होकर—बड़ा फीका-फीका लगता है !

रात में, घड़ी देखकर ठीक आठ बजे ताजमनी ने माँ को पुकारा, गुनगुनाकर—"माँ गो-ओ-ओ ! सुनु माँ-आ-आँ !"

जितेन्द्रनाथ की गोद में पास पड़ा खोल किसी ने उठाकर रख दिया, मानो ! ताजमनी ने झुककर माँ के चरणों से एक फूल उठा लिया। सिर, आँख और गले से छुलाया। खोल और खोल बजानेवाले को नमस्कार किया फिर :

हेरि हरऽमनऽमोहिनी, शिशिर शेखरऽनन्दिनी-ई-ई···
काली कालभवऽवारिनी ई-ई-ई···
ता-रे ना-रे-तिट्टा-तिन्ना घिन खेरि-खेरि··· !

श्यामा-संकीर्तन की पहली कड़ी को जब ताजमनी ने तन्मयता से दोहराया तो गाँव का एक-एक प्राणी रोमांचित हो उठा।···रघ्घू रामायनी की गीत-कथा और सारंगी सुनकर भी जिन लोगों की चमड़ी पर कुछ असर नहीं हुआ था—वे भी आज दौड़ रहे हैं। मकबूल, जयदेवसिंह, रामनिहोरा और डी. डी. टी. आपस में बातें करते हुए जा रहे हैं—"ताजमनी ही गा रही है, है न ?"

"याद है मकबूल ? उस बार तुमने भाषण दिया था !"

"और तुमने स्टेशन के लड़कों से लड़ाई की थी !"

"दीनदयाल ! तुम तो श्यामा-संकीर्तन दल के सदस्य थे ?"

घर-घर से स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े आ रहे हैं।···सामबत्ती पीसी गला भाँज रही है—"तुम लोग क्या जानोगी ? दूसरे गाँव की बेटी हो ! उत्तरवाले बरण्डा पर हमेशा सोलकन्हटोली की औरतें बैठती थीं। दक्खिनवाले बरण्डा पर जाओ। हल्ला-गुल्ला मत करो !"

सामबत्ती पीसी को जवानी के दिनों की याद आयी है ! फेंकनी की माय, आज शान्त है। समझाकर कहती है—"आकि देखो ! हाथ जोड़कर निहोरा करती हूँ। जरा सुनने दो। बहुत दिन के बाद महाबारुनी लगी है।"

केयटटोली का गोबरधन, श्यामा-संकीर्तन दल में मन्दिरा बजाता था। आज वह चुपचाप खड़ा देखेगा, भला ! दौड़कर घर से मन्दिरा की जोड़ी ले आता है। खोल के ताल पर मन्दिरा बजाता और नाचता मन्दिर के अन्दर चला जाता है। देखते-देखते डी. डी. टी. को छोड़कर सभी पुराने कीर्तनियाँ, सब भेदभाव भूलकर,

कीर्तन मे सम्मिलित हो गये।··· ताजमनी आज दम नहीं लेगी क्या ? आगमनी के बाद रूपवर्णन गा रही है :

जनि उलंग रहबि भवानी-ई-ई-ई
बसन पहिरू बसन पहिरू
मेघबरन धारऽन करू—ओ-गो-मुण्डमाली-ई-ई !

कोसी-कैम्प में लेटी इरावती अब बेचैन हो गयी। कीर्तन के सुर मे उसका मन बँध गया। मामी को जगाकर बोली—"गाँव मे कोई उत्सव हो रहा है। चलो मामी, देख आयें !"

विशाल जनसमूह में लहरें आती हैं रह-रहकर ! ··· लो, पगला-पगलीवाला पद शुरू किया ! लोगों के सिर ताल पर स्वयं हिलने लगे। पगला-पगली ! भोला-काली !

इरावती रोमांचित हुई—जितेन्द्र ने, पहाड़ी नदी कोनार की कलकलाती हुई धारा को सम्बोधित कर गाया था—खनहि मैया राजी-खुशी, राशि-राशि हँसि हँसे—खनहि मैया तिरिख नयनी···! राशि-राशि हँसी रह-रहकर बिखर जाती है, भीड में !

···पगला-पगली को पागल सन्तान, मन भुलावल-रे-हे !

और विहाग के परस से पावन विदा-गीत गाते समय, ताजमनी की आँखो से आँसू की धारा झरने लगी :

सुनऽसुनऽनगरवासी-ई-ई उमाशशि मोर उदासी-ई-ई
भिखारिनी वेष साजी-जाय-रे-जाय रे-कहाँ जाय रे,
देख-देख, राज-राजे-ए-एश्वरी-आज कहाँ जाय रे··· ?

राज-राजेश्वरी की भिखारिनी मूरत उपस्थित कर दी ताजमनी ने !

पगला-पगली ने मिलकर मन को भुला लिया ! ··· लोग आँखे पोछते हुए घर लौटे।

इरावती अपने कलेजे पर भारी पत्थर का टुकड़ा लादकर लौटी। जितेन्द्र की याद को इसी तरह दबाकर रखती है वह !

हजार पौधों में अँखुए लगे हैं। लग गये पौधे !

जितेन्द्रनाथ प्रसन्न है—"ताजू ! गोबिन्दो ! ···मुंशीजी ! सुरपतिबाबू ! मैं गिनकर आ रहा हूँ—हजार पेड़ जम गये ! छोटी बात समझते हैं, लोग ! अरे, इस परती पर पौधे लग गये, यह छोटी बात है ?"

भिम्मल मामा आये—"हेक्सागन प्लस पेण्टागन ! ··· तुम्हारा नन्दन-कानन कोंपलित हुआ है ? घबराओ नहीं। आ रही है—वन-टू-तीन-चार—देख लेना ! काल वैशाखी की कृपा होगी। तुम्हारे सभी पौधे बगैर पानी के तड़फ-तड़फकर दम तोड़ेंगे !"

ताजमनी आकर बोली—"श्राप क्यों दे रहे हैं, मामा ?"

न जाने क्यों, भिम्मल मामा का मुँह सूख गया··· उसने श्राप कहाँ दिया है ! क्या उसने श्राप दिया है ? नहीं-नहीं।

जितेन्द्रनाथ ने कहा—"ठीक कहते हैं, भिम्मल मामा ! मुझे अभी इतना उत्साहित नहीं होना चाहिए। सिंचाई की क्या व्यवस्था होगी ?"

जितेन्द्रनाथ ने मुंशी जलधारीलाल को बुलाया—"कम-से-कम एक सौ ट्यूबवैल खरीदने होंगे। रुपये का प्रबन्ध कीजिए !"

मुंशीजी ने गर्दन झुकाकर कहा—"हुजूर ! तहबील में तो अब कुछ नहीं है। कर्ज भी आजकल लोग नहीं देंगे।"

"क्यों ? तहबील में नहीं है तो जूट पर अग्रिम रुपया लीजिए महाजनों से।"

"मुझे कौन देगा ?"

"तो, मुझे कौन पहचानता है ? ··· मुंशीजी, मैं कुछ नहीं जानता। मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। प्रबन्ध कीजिए, चाहे जहाँ से हो।"

ताजमनी बोली—"चाहे जहाँ से हो ! क्या डकैती करके ले आयेंगे मुंशीजी ? यहाँ, जमींदारी खत्म हो गयी, लेकिन जमींदारी शान बढ़ती जा रही है ! दो सौ बीघे धान और डेढ़ सौ बीघे पाट की खेती करनेवाला हवाई जहाज से सफर करेगा, महीने में पाँच सौ रुपये की किताब, तस्वीर और अखबार मँगावेगा ! दान करेगा ! बाग लगायेगा !"

मुंशी जलधारीलाल मुँह लटकाये, वापस हुआ। ताजमनी हवेली के अन्दर गयी और जितेन्द्रनाथ की आँखें छलछला आयीं—ताजमनी ने ठीक कहा है ! भिम्मल मामा ने ठीक कहा ! ··· लगे हुए पेड़, पानी के बिना सूख जायेंगे ! तहबील में कुछ नहीं ! यह क्या हुआ ?

रात को गोबिन्दो रसोईघर में थाली लौटाकर ले गया—"ताजनदि ! फिन दादा बाबू को क्या हो गया ? बोलते हैं, दूध-डीम-घी कुछ नहीं। आलू का भर्ता और भात खाकर कैसे रहेंगे दादा बाबू ?"

"परोसी हुई थाली इस तरह लौटाकर नहीं लायी जाती !" ताजमनी नाराज हुई—"तुमसे कितनी बार कहा !" ताजमनी चली।

"क्यों, फलाहार करने की क्या बात हुई ?"

"नहीं, ताजू ! मुझे मालूम नहीं था। मैंने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था। अब, रहन-सहन··· !"

रहन-सहन ? दूध-घी छोड़ने से कुछ नहीं होगा। हर महीने शाह कम्पनी का तीन सौ रुपये का हिसाब भुगतान देना पड़ता है, उसको कम कीजिए ! न मालूम किसने आदत लगा दी ! कब से लगी··· !

जितेन्द्रनाथ ने अपनी अलमारी की ओर देखा, ताजमनी ने सबकुछ देख लिया

है। किसने बताया कि तीन सौ रुपये प्रतिमास शराब के लिए देना पड़ता है, शाह कम्पनीवालों को ? जितेन्द्र लज्जित हुआ।

"जिद्दा ! मैंने क्या भला-बुरा कह दिया जो खाना-पीना छोड़ रहे हैं ? लेकिन, मैं चुप नहीं रहूँगी।"

"ताजू, मैं अब नहीं पीऊँगा··· ।"

"इतनी आसान नहीं है जिद्दा !" ताजमनी मुस्करायी–"इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या जरूरत ?"

जितेन्द्रनाथ को ताजमनी ने बैठकर खिलाया–"रुपये का प्रबन्ध हो जायेगा। कोई चीज छोड़ने की जरूरत नहीं। जमींदार का बेटा शराब नहीं पियेगा भला !"

"रुपये का प्रबन्ध हो जायेगा ? कैसे ? कहाँ से ?"

"घबराइए मत !" ताजमनी ने एकटक जितेन्द्रनाथ की ओर देखकर कहा–"मालकिन-माँ सब प्रबन्ध कर गयी हैं। वह चाहती थीं, उनका बेटा शराब पीये, जुआ खेले, बेकाम के काम में रुपया उड़ाये। उनका सपना पूरा हुआ है !"

ताजमनी को याद आयी, मालकिन-माँ की बात–'ताजू ! मेरा बेटा फकीर की तरह झोली लेकर भीख माँगता फिरता है, मोटा खाता है, मोटा पहनता है ! इस खानदान की इज्जत उसने मिट्टी में मिला दी। जमींदार का बेटा भला ऐसा होगा !'

"ताजू, तुम विश्वास करो। मैंने पिछले कुछ वर्षों से ही पीना शुरू किया है।··· "

"इतना छोटा क्यों करते हैं अपने को ?"

आधी रात को, ताजमनी ने जितेन्द्रनाथ को आकर जगाया–"जिद्दा !"

जितेन्द्रनाथ ने ताजमनी को अपने पलँग पर बैठाना चाहा। किन्तु, ताजमनी ने अपना हाथ भी नहीं स्पर्श करने दिया। बोली–"अन्दर चलिए !"

जितेन्द्रनाथ हवेली के अन्दर गये। ताजमनी ने भण्डार-घर के पास जाकर लालटेन की रोशनी तेज की।···ताजमनी कौन होती है रोकनेवाली ! मालकिन-माँ जो चाहती थी, वही होगा !

ताजमनी ने हाथ के इशारे से दिखलाकर कहा–"उसी मूर्ति के नीचे है !"

"क्या ?"

"आपकी माँ ने कहा था, जिस दिन मेरा बेटा राह पर आये, उसी दिन···!"

गोरस के व्यापार से मेरी आत्मीयता बढ़ती गयी !

अब तो कलकत्ता, पटना, दार्जिलिंग के व्यापारियों के हाथ मक्खन, पनीर, क्रीम और घी बेचने के बदले–दही की मटकी लेकर गाँव-गाँव घूमना चाहती हूँ मैं–राधा की तरह ! गोकुल की ग्वालिनियो की तरह ! –दधि ले ले ! दधि ले ले !

गोशाले में एक बीमार बछड़े को दवा पिला रही थी कि नये अर्दली ने आकर सलाम किया। हाथ में एक पुर्जा देकर मुँह देखने लगा। मम्मी का पुर्जा : 'मिसरा'ज़

कम विद प्रेजेण्ट्स। आइ थिंक वी मस्ट रिफ्यूज···!' मैंने बिना कुछ भूत-भविष्य सोचे, अर्दली से कहा—'मिसराबाबू को कोठी पर माँगता छोटा मेम। अब्बी !'

मछली, महीन सुगन्धित चावल, पके केले, नारियल, मिसरीकन्द, शहद, ऊख, मिठाई और कीमती रेशमी साड़ी ! मिसरा ने कहा—'पहला बेटा हुआ है। आज उसकी छट्‌टी है। मेरी स्त्री आपसे बहिनापा जोड़ना चाहती है।···दैट इज गॉड सिस्टर, मीन्स—फ्रेण्ड !'

इस पुरुष को देखते ही मुझे कुछ हो जाता है। मेरी आँखों को वह सही-सही पढ़ लेता है। भगवान को धन्यवाद !

कचहरी-बँगले से मम्मी आयी और घोर प्रतिवाद करने लगी।

हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं···! उस पुरुषसिंह ने फुर्ती से झुककर मम्मी की चरणधूलि ले ली। बड़ी विनम्रता से उसने समझाया—'माइ वाइफ हैज मेड योर डॉटर हर बहिनापा—दैट इज गॉड-सिस्टर, मीन्स फ्रेण्ड ! फ्रॉम टु डे यू आर माइ मदर-इन-लॉ !'

मम्मी हतबुद्धि होकर मुझे देखने लगी और मैं उस लीलाधर की लीला देखकर मन-ही-मन मुस्करा रही थी।

स्वीकार अथवा अस्वीकार का मौका वह नही देता। चँगेरी से एक डिबिया निकालकर खोलते हुए बोला—'एण्ड, दिस इज फॉर मदर-इन-लॉ। इसको कृपा कर स्वीकार करे ! अपनी गॉड-डॉटर और गॉड-ग्रेण्डसन को ब्लेसिग दें।···यू मे कर्स मी !'

रत्नजटित मुँदरी ! ···इस आदमी को क्या कहिए !

'एण्ड गिव मी चान्स टु सर्व यू !'

मेरी अच्छी मम्मी मुस्करायी ! भगवान, मम्मी मुस्करायी ! मुस्कराहट को खोलते हुए मम्मी बोली—'सी द फन ! आइ डन्नो व्हाट ही वाण्ट्स !'

मिसरा ने कहा—'आपकी जमींदारी-कचहरी के सभी कारकून निकम्मे ही नहीं, चोर ओर बेईमान हैं। चार महीने बीत रहे हैं, अभी तक स्टेटमेण्ट, कागज-बुझारत नहीं दे सके हैं ! मैं सिर्फ दस दिन में इनसे कागज-बुझारत लेकर, दो महीने के अन्दर बकाया-सहित हाल का खजाना वसूल सकता हूँ।··आइ मे !'

लगातार डेढ घण्टे तक अपनी अंग्रेजी में बाते करके उसने मम्मी को इस तरह मोह लिया कि··· हीरू दरबान के शब्दों में 'अन्धेर' हो गया ! ब्लैकमैन को कुरसी पर आमने-सामने बैठाकर बड़ा और छोटा मेम ने चाय पिलाया ! पुतली को दूसरे किस्म का अचरज हुआ—ब्राह्मण होकर अंग्रेज के क्रिस्तान बावर्ची के हाथ का छुआ हुआ खाया ?

मम्मी मुझे एकान्त में ले गयी—'वह जमींदारी की मैनेजरी अथवा कण्ट्रैक्ट चाहता है। आदमी तो काम का मालूम होता है। अपनी कचहरी के सभी अमले इसको देखते ही बदहवास से हो गये।···रियली ! तुम क्या कहती हो ?' मैं मन-ही-मन भगवान को धन्यवाद दे रही थी—'मुझे क्या आपत्ति हो सकती है ! मैंने पहले ही

कहा था, आदमी अद्वितीय है।'

'आइ डन्नो व्हाइ दे से सो मच !···जो भी हो, हमें हर हालत में अपनी प्रतिष्ठा कायम रखनी है।' मम्मी कुछ सोचने लगी।

एस. मिसरा···नहीं, पण्डित शिवेन्द्र मिश्र उसी दिन से हमारी जमींदारी का जनरल मैनेजर हो गया। वह अपनी जमींदारी सँभालने के साथ-ही-साथ हमारे इस्टेट का भी काम देखेगा। इकरारनामे पर दस्तखत करने के बाद उसने मुस्कराकर मेरी ओर निगाह उठायी–'आइ हैव हर्ड दैट यू वाण्ट टु लर्न हिन्दी ! ··· और रामायण पढ़ना चाहती हैं आप ? मैं बिग संस्कृत पण्डित हूँ, दैट इज शास्त्री !'

बातों-ही-बातों में उसने मुझे शिष्या बना लिया।··· छलिया !

जब कालिदास के ग्रन्थों पर बातें होने लगीं तो मम्मी किसी काम से कमरे से बाहर चली गयी।

उसने कहा–'इट इज सो स्वीट दैट वन्स यू रीड कालिदास यू विल फॉरगेट एवरीथिंग यू हैव रैड !'

'मैं पहले ही सबकुछ भूल चुकी हूँ··· माइ मास्टर !' मैं अपने मन को काबू में नहीं रख सकी। अब उसकी आँखों में मदिरा-ही-मदिरा थी–'आइ हैव सोल्ड माइसेल्फ···!'

मैं कहना चाहती थी–'नहीं, नहीं ! ऐसा मत करो। मैं तुम्हारे हाथ बेमोल बिक चुकी हूँ।'

मम्मी आ गयी। अपने बाग के पके मैंगोस्टीन की एक टोकरी ले आयी, पुतली।

मम्मी मुस्कराकर बोली–'फॉर माइ गॉड-डॉटर ! ···दूध में इसका रस मिलाकर पीने दीजियेगा।··· सोमवार से आप अपने काम पर आ रहे हैं ?'

'नमस्कार !'

'नमस्कार ! माइ मास्टर ! रेस्टलेसली आइ'ल वेट फॉर यू !'

जादू ! ब्लैक मैजिक !

जादू नहीं तो और क्या कहा जाये ! मिश्रा ने मम्मी को इतना प्रभावित किया है कि उठते-बैठते मम्मी प्रशंसा करती है–'नाइस फेलो ! एक ही सप्ताह मे जमींदारी-कचहरी का दफ्तर सुचारु रुप से चलने लगा है। इलाके के जेठ रैयतों के नाम परवाने जारी किये गये हैं।'

अब हीरू दरबान अपना विरोध नहीं प्रकट करता। कभी-कभी वह छुट्टी लेने की बात अवश्य करता है। पुतली बहुत चालाक है। मुझे गोशाले के एकान्त में समझाकर सलाह दी, उसने–यदि गोशाले की व्यवस्था भी मैनेजर साहब अपने हाथ में ले लें···!'

पुतली मेरे मन की बात बोली।

उसी शाम को हिन्दी पढ़ते समय, बात को पेश करने की भूमिका मैंने बाँधी–'मिश्रजी ! मुझे अपनी स्मरण-शक्ति पर अब जरा भी भरोसा नहीं। देखिए

न, एक शब्द भी याद नहीं। परतीच्छा और परीच्छा के अर्थ में··· । सुना है, दूध-घी का कारबार करने से बुद्धि मन्द पड़ जाती है।'

"किसने बताया कि दूध-घी के कारबार से बुद्धि मन्द पड़ जाती है ?'

'पुतली ने !'

कमरे के बाहर, पंखा की डोरी खींचती हुई पुतली मुँह में कपड़ा ठूँसकर हँसी को रोक रही थी।

'तो, पुतली भी पण्डिताइन का काम करती है ?'

'हाँ, वह मुझे मैथिली बोलना सिखलाती है। सुनिए तो ! ···अहाँ बड़ सुन्दरऽछिः दैट इज यू आर··· ।'

ठठाकर हँस पड़ा वह। मम्मी बोली–'लेकिन, मैं गजराजसिंग सिपाय की बोली सीख रही हूँ–का हो ? का बात हऽ; हैलो, ह्वट्स दि मैटर ?'

मिश्रा कितनी अच्छी हँसी हँसता ! सारी कोठी मुखरित हो उठी। उपयुक्त समय देखकर मैंने बात उपस्थित की, अपनी। पुतली दो-दो बार झाँककर मुझे संकेत दे चुकी थी। मैं बोली–'मम्मी, मैं चाहती हूँ, एक बार मेरी डेयरी को भी कोई सिलसिलेवार चला दे। मैं थोड़ी-सी मदद चाहती हूँ, मिश्रजी की।'

'मेरी ?' मिश्रा ने पूछा। मम्मी गर्दन हिलाकर बोली–'नहीं, नहीं। इलाके के जेठ रैयतो से निबटना है। इन्हें मरने की भी छुट्टी नही।' मम्मी ने मिश्रा की ओर देखा। वह बोला–'थोड़ी-सी मदद के लिए मेरे पास काफी समय है। किन्तु, गुरुजी की बुद्धि जो मन्द पड जायेगी !'

'शायद वह अपने गुरु की बुद्धि को थोडा मन्द करने की आवश्यकता समझती है !' मेरी मम्मी भी खूब हँसती है।··· बेचारी मम्मी ! बहुत दिनों के बाद मम्मी को इस तरह हँसते देखा मैंने !

मिश्रा ने गोशाले को भी अपने हाथ में ले लिया।

थोडे ही दिनो में कचहरी और गोशाले के अधिकाश कर्मचारी और चाकर बरखास्त कर दिये गये। हीरू खुद भाग गया। एक महीना बीतते-बीतते पुतली और बूढे माली उत्तिमलाल को छोड़कर सभी कर्मचारी और नौकर-चाकर चले गये। मिश्रा कहता–'ऑल ऑफ देम–लॉट ऑफ देम–ए बण्डल ऑफ थीव्स ! दूसरे जमीदारों के यहाँ से चोरी और बेईमानी करके भागे हुए लोग !'

मिश्रा द्वारा नियुक्त किये हुए लोगों के बारे में मम्मी ने कहा–'ये काम के सिवा और कुछ जानते ही नहीं, मानो !'

मैं सुनती और हँसती।··· ऐसे मादक दिनों की स्मृति ही मेरा सम्बल है। मन में एक मखमली डिबिया खोलकर देखती हूँ–जीवन-ज्योति मिलती है। जीने लगती हूँ !

[इसके बाद के पाँच पृष्ठों को सुरपति ने सम्पादन करके अलग रख दिया है।]

अपने कलम-बाग में, मिश्रा से आमों की किस्म, जाति और विशेषता की जानकारी हासिल कर रही थी–लँगड़ा, आमों का राजा ! कृशनभोग, बादशाह-पसन्द, बेगम··· ।

बाग के माली ने आकर सूचना दी–'फाटक पर अंग्रेज बहादुर खड़ा है।'

मिश्रा ने मेरी ओर देखा। मैं बोली–'साहब को कोठी दिखायेगा !'

'नहीं मेमरानी, वह आपको देखने माँगता है।'

मिश्रा ने कहा–'जाओ, देखो कौन है !'

जाकर देखा, जिसका भय था–वही ट्राली··· !

'गुड ईवनिंग मिसिज रोजउड !' दुष्ट हँसी हँसता हुआ बार्कर मिला–'आर यू नॉट वेटिंग फॉर योर हेड-ब्वाय ?'

'हेड-ब्वाय !'

'हाँ, मैंने सुना है कि आपने एक ब्राह्मीन हेड-ब्वाय रखा है ! दैट्स गूड !' बार्कर की आँखों में शैतान नाच रहा था।··· बदमाश !

प्लाण्टर्स-क्लब के उत्सव में, ब्लैकबेरिइस्ट के वजन के दूसरे शब्द से परिचित हो चुकी थी।···ली ने लजाते हुए कहा था–'यहाँ के एंग्लो-इण्डियन समाज में एक शब्द बहुत प्रचलित है। हेड-ब्वाय ! आपस में गाली-गलौज करते समय एक-दूसरे को कहते हैं–सन ऑफ हेड-ब्वाय। बहुत विषैली गाली है ! डेडड्रंक अवस्था में भी यदि किसी को यह गाली दी जाये तो वह सीरियस हो जायेगा।···एक उपयुक्त हेड-ब्वाय के बगैर कोई अंग्रेज-परिवार यहाँ कब तक टिक सकता है ! दूर-दूर, जंगलों और नदियों के पार उनके बँगले। सभी नौकर-नौकरानियों का कर्ता-धर्ता होता है, हेड-ब्वाय। साहब-मेम बाहर रहें तो बँगले का स्थानापन्न साहब। मेम बाहर हों तो साहब जिस पर भरोसा कर सकें। और, जब साहब बाहर हों तो मेम साहिबा जिसकी फौलादी बाँहों के भरोसे सारी रात सुख की नींद सो सकें। साहब और मेम दोनों ही, जिससे मन का हाल बताने में संकोच नहीं करते। ऐसा हेड-ब्वाय !'

हेड-ब्वाय ! सुनते ही मुझे लगा मेरे गालों के पास दो सिन्दुरिया आम लटक गये। मैंने अपने को संयत किया। सहज मुद्रा में ही मैंने कहा–'मिस्टर बार्कर, वी कीप नो हेड-ब्वाय।··· यदि आपका मतलब हमारे जनरल मैनेजर पण्डित शिवेन्द्र मिश्र से है तो मुझे क्षमा करें···आपने हमारा अपमान किया है। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति का अपमान किया है !'

आँखें फाड़ते हुए बार्कर ने अचरज प्रकट किया–'वाण्डर··· ! किस क्रिमिनल की बात कर रही हैं आप ?'

हाथ में आमों से भरी झोली लटकाये मिश्रा बाग के फाटक पर प्रकट हुआ। मेरा कलेजा न जाने क्यों, काँप उठा ! बार्कर ने पास ही रामपुर हाल्टिंग-बँगले पर सस्ती रम पी होगी। उसकी आँखें लाल थीं। हाथ की बन्दूक को उसने कन्धे पर रखकर, मिश्रा को देखा। फिर बोला–'लास्ट सैटर्डे दि प्लाण्टर्स वर फुल ऑफ

योर स्केण्डल स्टोरीज। फ्रॉम कण्ट्री टु मलाया ! ···मैं देखता हूँ, कहानियाँ झूठी नहीं ! शेम···!'

मिश्रा आकर ठीक मेरी देह से सटकर खड़ा हो गया। बार्कर की बोली मुँह में अटकी रही। उसके चेहरे पर एक तिलमिलाहट दौड़ गयी। मिश्रा ने कुछ क्षण बार्कर की ओर देखा। फिर, बिना किसी झलक के उसके हाथ से बन्दूक ले ली–'नाउ, कण्टिन्यू योन स्टोरी ! आई नो, यू आर मिस्टर बार्कर। सो, बेटर बार्क !'

गुस्से से बार्कर के केनाइन टुथ ओठ के दोनों कोरों पर निकल आये। कुछ सैकेण्ड्स वह कठाया खड़ा रहा। फिर, एक भद्दी गाली का भद्दा उच्चारण कर मिश्रा पर टूटा–'स्वा··· !'

–तड़ाक् ! गाली पूरी होने के पहले ही मिश्रा ने तमाचा जड़ते हुए कहा–'गुड़ का दारू बड़ा तेज होता है।···लेकिन, इससे गरमी थोड़ी शान्त होगी ! आइ थिंक !'

'मि-श्रा-जी-ई !' आतंकिता मैं चीख पड़ी। बार्कर अपने पतलून की जेब में हाथ डाल रहा था।

'हा-हा-हा-हा !' मिश्रा के ठहाके से पास का बाँसबन प्रतिध्वनित हुआ–'मैं जानता हूँ। खाली पॉकेट में हाथ डालकर मत डराओ मिस्टर बार्कर ! पिछले सप्ताह ही तुमने अपनी पिस्तौल भाड़े पर भेज दी है–डकैती करने, जो आज तक वापस नहीं आयी।···आइ नो मिस्टर बार्कर, व्हेर इज योर रिवाल्वर !'

बार्कर के चेहरे पर अचानक राख पुत गयी।

न जाने किस समय मिश्रा ने मेरा हाथ थाम लिया था। मेरी तलहथी को जरा-सा झटकते हुए बोला–'गीता ! साहब को कोठी में ले जाओ। ही नीड्स रेस्ट···आराम चाहिए।'

'आराम करने आये हैं साहब बहादुर !'

बार्कर खाली हाथ टूटा।

मिश्रा ने फुर्ती से बार्कर के उठे हाथ को बाँह के पास थाम लिया और भगवान जाने क्या कर दिया कि बार्कर का हाथ ऊपर ही उठा रह गया।

'दिस इज कॉल्ड ऊर्ध्वबाहु गिरह !'

उठा हुआ दाहिना हाथ, बँधी हुई मुट्ठी। उसकी चेष्टाओं को देखकर लगा, वह किसी अदृश्य शक्ति से लड़ रहा है। ऊपर की ओर उठा हुआ हाथ टस-से-मस नहीं होता।···उसके पाँव लड़खड़ा रहे हैं। किन्तु, बँधी हुई मुट्ठी हवा में भाँजने की कोशिश कर रहा है।

दो मिनट के अन्दर ही, चारों ओर से–पाट के खेतो से, बाँसबन से, कलम-बाग और बीजूबाग से–बीसों आदमी हाथ में लट्ठ, बल्लम-भाले लेकर दौड़े आये। मिश्रा ने धीरे से कहा–'घबराओ नहीं ! सभी अपने ही लोग हैं–तुम्हारे चरवाहे, सिपाही, दरबान, कारकून !'

'मिस्टर बार्कर ! रेल-रोड छोड़कर, देहात की कच्ची सड़कों पर निकलने से ऐसा ही होता है।' मिश्रा ने बार्कर के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। बार्कर का

हाथ हठात् गिर गया–'सिगनल डाउन ! ···नाउ दिस इज योर बार्किंग मुद्रा गिरह ! इजण्ट ?'

मिश्रा के इस लड़कपन से मैं नाराज हुई।··· क्या आवश्यकता है ?

बार्कर का हाथ तो गिर पड़ा, किन्तु मुँह खुल गया। खुले हुए जबड़े, मैले गन्दे दाँत, पीले !

मैं थर-थर काँपने लगी–'मि-श्रा-जी !'

मिश्रा ने बार्कर के हाथ में बन्दूक वापस दे दी। और, बार्कर की गर्दन के पीछे चमड़ी पर चुटकियों से कुछ किया। लीवरवाले केस की तरह बार्कर का मुँह खप्प से बन्द हो गया !–'दिस इज कॉल्ड जुजुत्सु ! जापानी कला !'

बार्कर के हाथ में बन्दूक ! भगवान ! यह क्या हो गया !

बार्कर ने बन्दूक की सेफ्टी की परीक्षा की।··· उसका इरादा खौफनाक मालूम होता है। उसने भूखे भेड़िये की तरह गुर्राकर मेरी ओर देखा। उसने मेरी सूरत पर थूकने की मुद्रा बनायी। वह कोई भद्दी-सी गाली थूकना चाहता था।

विदा-भाषण का कोई शब्द उसके मुँह से नहीं निकला। उसने उलटकर पगडण्डी पकड़ी। बीस-पच्चीस कदम, मानो गिनता हुआ वह चला। और अचानक मुड़कर खड़ा हो गया।

मिश्रा ने हँसकर कहा–'सी दैट कॉवर्ड फेलो ! ···अब वह हम पर चार्ज करेगा !'

'विल ही-ई-ई ?' मैं चीख पड़ी। लाठी-भालेवाले दौडे तो मिश्रा ने हाथ उठाकर रोक दिया–'घबराओ मत, चुपचाप देखो !'

बार्कर ने कारतूस-चेम्बर की परीक्षा की···भरी हुई बन्दूक ! निशाना लेने के पहले फिर भद्दी मुद्रा बनायी। पागलो की तरह चिल्लाकर बोला–'यू बिच ! दैट्स व्हाट यू आर। फर्स्ट ऑफ ऑल··· यू।'

मिश्रा ने पलक मारते ही मुझे ढँक लिया। मैं उसकी पीठ पर लद गयी। उसने मुझे केहुनी से झटका देकर कहा–'सी द फन, डरो मत !' बार्कर ने निशाना लिया ! ···लेट जाओ माइ मास्टर !

बार्कर को बन्दूक की परीक्षा की आवश्यकता हुई। उसने जब दूसरी बार निशाना लिया तो मैं मिश्रा से लिपट गयी–ओ-म-म ! धाँय-धाँय ! ··· बन्दूक की आवाज नहीं, मिश्रा ठहाके लगाकर हँस रहा है–'जरा एक बार फिर बन्दूक की परीक्षा कर लो मिस्टर बार्कर ! हा-हा-हा ! ··· ट्रिगर का नॉजल ही टूटा हुआ है।··· चलाओ नहीं तो, नाउ इट इज माइ टर्न। सँभालो !'

झोली से लोहे के गोले-जैसा एक काला कच्चा आम निकालकर मिश्रा ने दिखलाया।

मैं बोली–'मिश्राजी-जी-ई ! डोण्ट !'

हल्की झिड़की मिली मुझे–'अपनी बन्दूक लाकर मिस्टर बार्कर के हाथ में क्यो नहीं देती ? उसकी तो खराब हो गयी···ट्रिगर टूटा हुआ है। गोली दगती ही नही। और सुनो ! जब मैं एक्शन में रहूँ तो मुझे टोक-टोक मत किया करो।···व्हेन आइ

एम इन एक्शन, आइ एम नो मैन !'

बार्कर ने बन्दूक की परीक्षा करते हुए एक बार इधर-उधर देखा। फिर, अचानक सिर पर पैर लेकर भागा–पाट के खेतों की ओर।

–'हा-हा-हा ! ट्राली साहब…!' बार्कर के पीछे लाठीवाले दौड़े। मिश्रा ने हँसकर रोका–'हुलहुला दो। लोग समझेंगे, गीदड़ भागा है।'

सभी पुकारने लगे–'उयं-उय-तू-तू ! हो-हो-हो ! भागा-भागा !'

मिश्रा को मुद्रा बदलने में देर नहीं लगती। मुँह गम्भीर करके बोला–'गीता, तुम अपनी कोठी में जाओ !'

'आप नहीं चल रहे ?'

'नहीं, मुझे अभी परानपुर जाना है।…अपने देशवासी का अपमान करनेवाले को मुलाजिम नही रखना चाहिए, तुम्हें !'

मिश्रा को मैंने अपनी आँखों की राह दिल का कोना-कोना दिखलाया ! … 'कितनी बार कहूँ, तुम मेरे मुलाजिम नहीं ! मैं तुम्हारी चेरी हूँ !'

'अपना हेड-ब्वाय तो नहीं समझती ?' मिश्रा ने बच्चों-जैसी बात की।

'मुझ पर विश्वास नहीं करते, माइ मास्टर ?' मैं दुखी हुई।

मिश्रा ने नाक पर उँगली डाली। सोचकर बोला–'चलो !'

कोठी के पास ही मम्मी सिपाहियों के साथ आती मिली। पुतली सबसे आगे थी… घबरायी हुई मम्मी ने पूछा–'व्हाट्स द मैट… ?'

'मिस्टर बार्कर'ड कम टु किल अस !'

'किल अस ! बट व्हाई ?'

'मम्मी ! उसने मुझे भद्दी गालियाँ दीं।' मम्मी से लिपटकर मैं रो पड़ी, 'आज मिश्रा… मिश्राजी नहीं होते तो वह मुझे मार डालता ! नशे में धुत्त था वह ! …'

'डेड ड्रंक हि वाज !'

मम्मी गम्भीर होकर बोली–'मिश्रा कहाँ था ?'

'सुनो मम्मी ! दो-दो बार निशाना ले चुका था, वह तो ! किन्तु, मिश्राजी थे।… कोठी के अन्दर चलो मम्मी ! वह फिर लौटकर आ सकता है !'

'इज इट ?' मम्मी गुर्रायी।

'मिश्राजी ने कहा–'नो-नो। हि वोण्ट।…आराम करो जाकर !'

मम्मी ने मिश्राजी से कहा–'थोड़ी देर के बाद आपको बुला भेजूँगी। आप अपनी कोठी में जाकर कपड़े बदल डालिए !'

मैंने मिश्राजी की ओर देखा–'आइएगा तो ?'

मैं अब मिश्राजी कहना सीख गयी हूँ।

लुत्तो का दुख कौन समझे ! बचपन से ही उसे रात-भर आँख खोलकर सपना देखने का रोग है। तीन बजे भोर तक उसे नींद नहीं आती। सुबह, आठ बजे तक सोता है। क्या करे लुत्तो ! वही जो, पाँच या सात वर्ष की उम्र में एक रात को नींद उचटी, सो उचटी ही हुई है। माँ-बेटा रोते रहे थे दिन-भर ! बाप को खटोली पर सुलाकर ले चले, गाँववाले ! उससे कहा गया—"आग दो अपने बाप को !" लुत्तो को याद है, वह चिल्ला उठा था—"बप्पा जल जायेंगे !"···

लगता है, कल की ही घटना है। रात में उसकी माँ ने कहा था—"तू नहीं खायेगा तो तेरा बाप भूखा रहेगा।" सोने के समय बाप की याद और भी जोर से आयी थी। वह रोज अपने बाप के साथ सोता था। पीठ पर थपकी देते हुए उसके बाप शेखचिलिया की कहानी सुनाता। खाते समय घण्टों बैठा रहता था लुत्तो के लिए—"बाबू ! आओ, दूध जुड़ा गया।···"

जब तक लुत्तो का बाप जिन्दा रहा, खाने-पीने की चीजों से घर महकता रहता ! किस्म-किस्म की मिठाइयाँ, तरह-तरह के फल—जिनका नाम भी नहीं जानते गाँववाले। हवेली में, जितेन्द्रनाथ की माँ के लिए जो साड़ी आती, उससे बस एक आना कम कीमत की साड़ी लुत्तो की माँ पहनती। कभी-कभी लुत्तो का बाप जान-बूझकर पैण्ट और कमीज छोटा खरीद लाता, जितेन्द्र के लिए। जितेन्द्र की माँ कहती—"बड़ा होता तो किसी तरह काट-छाँटकर ठीक भी कर लिया जाता। यह तो एकदम छोटा है। क्या होगा ? ले जाओ, अपने बेटे के लिए !" जितेन्द्र के लिए जितने किस्म के पुष्टई मेवे या फल आते उसमें से चतुर्थांश तो खुद शिवेन्द्र मिश्र निकालकर देते। लुत्तो का बाप कहता—"मालिक कहते हैं बुद्धि और बल में मजबूत नहीं होगा बेटा तेरा, तो जित्तन को कौन सँभालेगा ?"···हुँ मालिक ! लुत्तो, एक भद्दी गाली देकर, बीड़ी सुलगाता—"सँभालूँगा ! देखते रहो बूड्ढे ! लुत्तो तुम्हारे बेटे को कैसा सँभालता है !"···

सो, उस रात को लुत्तो ने सपने में देखा—उसका बाप थाली पर बैठा पुकार रहा है—'बाबू !' लुत्तो अपने बाप के साथ खाने बैठ गया। थालियों और कटोरों का ढेर ! जब वह खाने लगा तो उसका बाप जानवर की तरह गों-गों करने लगा। लुत्तो ने हँसकर कहा—'बप्पा ! मुझे डराते हो ?' उसका बाप फिर गों-गों करने लगा तो लुत्तो ने अपनी माँ को पुकारकर कहा—'देख मैया ! बप्पा बैल की तरह सींग हिलाकर गोंगाता है !' वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसकी माँ बोली—'बौवा ! हँसते हो ?' लुत्तो उठकर बैठा। इधर-उधर देखा, फिर रोने लगा—'अभी तो बप्पा आये थे··· ।'

रोज रात में बस, एक ही सपना देखकर वह जग पड़ता—बाप आया है, उसका। कभी बाहर से पुकारता है, कभी घर में आकर।···लुत्तो की माँ ने लगातार एक महीना झाड़-फूँक करवाया। तब जाकर कहीं वह सपना आना बन्द हुआ। सपने में फिर उसका बाप नहीं आया कभी। उसको रात में नींद ही नहीं आती। सपना कहाँ से आयेगा ? जगकर जो कुछ देखता है, वह भी यदि सपना है तो लाखों

सपने देखे हैं, लुत्तो ने। उसको हजार किस्म की बुद्धि दे जाता है, उसका बाप।··· दगनी पकड़ते समय जल्दीबाजी मत करना। नहीं तो, खुद दग जाओगे! पीठ पर ढेरा की तरह दाग देना X , हाँ इसी तरह ! ढेरा की तरह दाग। पाट की सुतली बाँटनेवाले ढेरे नाचते, लुत्तो की आँखों के आगे XXXXX, अनेक। जितेन्द्र चीख रहा है–'गों-गों-गों !' जलती हुई चमड़ी की गन्ध लुत्तो को लगती है।···

"धेत्तेरी नाक में ! ए· बिठैलीवाली ! बिठैलीवाली ! ··· वाह, तुम्हारी नाक तो आजकल जोगबनी जूट मिल के हुसील की तरह बोलती है !"

लुत्तो की स्त्री कुनमुनाकर करवट लेती है–"हाँ-अ, बेबात की बात मत कहे कोई ! हाँ-अ, मेरी नाक नही बोलती।"

"नहीं बोलती ? मैं झूठ बोलता हूँ ? अच्छी बात ! इस बार जब बोलेगी तो देखना ! मारे बौक्सिंग के तोडता हूँ या नहीं।"

"मारने के लिए हाथ खुजलाता है तो मार ले कोई ! ई दुपहर-रात को किसी की नींद तोड़कर झगडा क्यों करता है कोई !"

लुत्तो अपनी स्त्री बिठैलीवाली से बहुत नाराज रहता है, आजकल !··· साली, कीर्तन सुनने चली गयी बीमार बच्चे को गोद मे लेकर। रात-भर पड़ी रही उस जंगल-झारवाले मन्दिर की अँगनाई में ! ऊपर से बात बनाती है कि खुली अँगनाई में नहीं, बरामदे पर बैठी थी–आराम से ! मन्दिर में अब जंगल कहाँ–चमचम चमकती है मन्दिर की अँगनाई। साली, आराम लूटने गयी थी।···

लुत्तो को भगवान ने आँख-कान नहीं दिया है क्या ? वह क्या कालीमाई को नहीं मानता ? वह स्टेशन के बनियाँ लोगों की कालीमाई का दर्शन कर आया है। मान-मनौती भी की है, उसने !···उसकी गँवार औरत ने उसके व्रत को तोड़ दिया। प्रण को तोड दिया ! भोजभात तो कभी वह नहीं खाने गया हवेली मे। लेकिन, मन्दिर में दर्शन करने और कीर्तन सुनने जाता था–हर साल। लेकिन, उस बार···!

···भागलपुर डिवीजन-भर मे प्रसिद्ध चम्पानगर के शारदा बाबू की जात्रा-पार्टी आयी थी, उस बार। बँगला-जात्रा को हिन्दी में रूपान्तर करके बँगला सुर में ही गाते थे, शारदा बाबू। उनकी पार्टी के बारे मे यह बात मशहूर हो गयी थी–साज-बाज शुरू होते ही लोगो के सौ दुख दूर हो जाते हैं। मन्त्र-मुग्ध होकर दौड़ते हैं लोग !···

बात झूठ नहीं थी। हारमोनियम-तबल' के अलावा ढोलक, खोल, करताल, मन्दिरा, बाँसुरी, बेहाला, क्लारनेट बजानेवाले, पाँति में आलथी-पालथी मारकर बैठते–अर्धवृत्ताकार ! बीच में दो कुरसियों के पीछे जात्रा के मास्टर बही और सीटी लेकर बैठे ! मास्टर ने इधर-उधर देखकर सीटी दी–हारमोनियम-मास्टर ने झुककर हारमोनियम को नमस्कार किया। सभी साजिन्दों ने अपने-अपने सुर मिलाये हुए साज को नमस्कार करके उठा लिया। गत बजाना शुरू किया।···लुत्तो बयान नहीं

कर सकता। जिसने अपनी आँख से देखा और कान से सुना—वही समझ सकता है। पूरे आध घण्टे तक बाजा बजाते रहे। एक-एक साज के बजानेवाले कालबजनियाँ थे। बाजा शुरू हुआ और गाँव के लोगों के मन में फिरकी नाचने लगी। ढोलक पर गिरगिरी देने लगा ढोलकिया—तिर्र-तिर्र-र-र-र-र-र-तड़क-तड़क-तड़-तटक-तटक-तड़-तिर्र-र्र-र-र-धड़क-तटक-तर्र ! है, है, है, है, ! पाँच जोड़ी मन्दिरावालों ने ताल पर 'है-है' करना शुरू किया !··· सुननेवाले भी झूम-झूमकर ताल पर 'है-है' करने लगे। देह की बोटी-बोटी नाचने लगी, कुकाठ लोगों को भी। रह-रहकर ढोलकिया ताल काटते समय चिल्लाता—'भालो रे भालो !' क्लारनेट कटे हुए ताल को दो बार एकदम महीन आवाज में पैं-पैं-पट-पैं, करके आगे बढ़ाता—पैं-पैं-पट-पैं, पैं-पैं, पूँ-ऊँ-ऊँ ! सब लोगों की नजर इन्हीं नये साजबाज के बजनियाँ लोगों की ओर टँगी, ···देखने में अजीब, लेकिन आवाज कैसी, ललमुनियाँ चिड़िया की तरह ! पैट्रोमेक्स जलाते ही, जंगल-झार के सभी फड़िंग-पतंगे जिस तरह पर फड़फड़ाते हुए टूटते हैं उसी तरह गाँव के लोगों को दौड़ाते देखा था लुत्तो ने।··· लुत्तो दौड़कर घर की ओर भागा, अपनी माँ से कहने—ऐसा नाच जिन्दगी में फिर कभी नहीं देख पाओगी। लुत्तो की स्त्री बिना गौना के ही आयी थी मेला देखने। घर आकर लुत्तो ने देखा था—घर का दरवाजा खुला है ! चूल्हे पर दूध की कड़ाही छोड़कर ही सास और पुतोहू नाच देखने चली गयी हैं। लुत्तो ने कड़ाही उतारकर झाँपी से ढक दिया। और, अपनी धोती बदलकर पायजामा पहना था उसने, पहली बार। एक बार फिर से सिर में चमेली का तेल डालकर कंघी से बालों को उलटाया था। गाँव के ही नहीं, दूर-दराज के भी हजारों लोग आये थे। पायजामा आखिर किस दिन के लिए सिलाया था उसने, फत्तू खलीफा के सिर पर सवार होकर !···

लुत्तो जब सज-धजकर दुबारा आया तो 'उसने देखा, तिल रखने की जगह नहीं।···बबुआनटोली के बाबुओं पर मन-ही-मन गुस्सा हुआ था लुत्तो—पुरानी आदत ! कोई भी तमाशा देखने जायेंगे तो, सोलकन्हटोली की औरतों के झुण्ड से सटकर खड़ा होकर देखेंगे। औरतों के झुण्ड में अपनी माँ को खोजता हुआ वह बबुआनटोली के बाबुओं के पास जाकर खड़ा हो गया। भूमिहार टोली के लड़कों को न जाने क्या फुचफुची लगी कि लुत्तो को देखकर फुच-फुच हँसने लगे। और, मैथिलटोले का मूरत झा अपने को बड़ा पहलवान समझता था उस समय ! भद्दी-से-भद्दी बात को रसदार बनाकर बोलने में, कूट की बोली बोलने में उस्ताद ! मूरत झा ने लुत्तो को अचरज से देखा, थोड़ी देर तक। फिर, अकचकाकर बोला—"अरे ! लुतवा है, यह तो ! मैंने समझा कि जात्रापार्टी है, कोई फारस करनेवाला एक्टर आकर खड़ा है !"

लुत्तो ने देखा है, बाबड़ी और जुल्फी केश यदि बाबू लोगों के बेटे रखें तो कोई बात नहीं। जहाँ किसी भी सोलकन्ह के लड़के ने पट्टी छँटायी कि बाबूटोले के बूढ़े-पुराने से लेकर नये नवतुरिये तक के जी जलने लगते हैं।··· अरे-रे ! तुमने भी दस आना छै आना वाली पट्टी छँटायी है ? मूँछ अभी काला भी नहीं हुआ—फुचकट

कटाने लगे ? ···उस रात बबुआनटोली के लड़के उसका पायजामा देखकर ही नहीं, गले में बँधे रेशमी रंगीन रूमाल की बहार देखकर भी जले थे। उधर, जित्तन ने जो ढीला-ढाला पंजाबी कुरता और धरती-बुहार धोती पहन रखी थी, उस पर नजर ही नहीं गयी। मैथिलटोली के मूरत झा को वह कोई कड़ा-सा जवाब देना चाहता था, किसी दिन। बराबर कूट बोली सुनाकर कलेजा बेधता–"हाँ-हाँ, लुत्तो की माँ के घर में असली चमेली का तेल का स्टॉक इतना है कि लुत्तो सारी जवानी लगायेगा तो भी नहीं घटेगा तेल !" हाड़ से मांस को अलगक़र देनेवाली बोली कब तक सुने लुत्तो ! उसने कड़ककर जवाब दिया था–"मोटा पावर का चश्मा खरीदकर लगाइए !"

मूरत झा ने बोतू की तरह मुँह बनाकर कहा था–"तो इसमें चिढ़ने की क्या बात हुई जो डेढ़-डेढ़ हाथ उछलने लगे ?"

'क्या बोलता है ?' 'कौन बोलता है ?' 'क्यों उछलता है ?' भूमिहारटोले के लड़कों ने चिल्ल-पों शुरू की। एक लड़के ने कहा–"हम लोग तुम्हारा पायजामा देखकर नहीं हँस रहे। बकरी करे जुगाली और डायर बूढ़ी समझती कि उसी की चर्चा हो रही है !" मूरत झा ने कहा–"धोखा होगा नहीं ? यह नाटक-नौटंकी तो नहीं कि स्टेज पर परदे की आड़ से निकलेंगे एक्टर लोग ! अभी देखना, जात्रा का एक्टर कभी-कभी भीड़ में छिपकर भी सवाल-जवाब करता है !"

'कौन है ?' 'जात्रा का एक्टर ?' 'लुत्तो ?' 'हा-हा-हा !' –'हल्ला-गुल्ला रोकिए !' भीड़ की गलबल बोली सुनकर लुत्तो ने समझ लिया, लोग उसी को दोषी समझ रहे हैं। मैथिल और भूमिहारटोली के पढ़वा लड़कों ने मिलकर हल्ला मचाना शुरू किया–'डिस्टर्ब करने आया है। जान-बूझकर कोई बखेड़ा करेगा तो थुरावेगा !' मैथिल, भूमिहार और राजपूतों की यारी खूब देखी है लुत्तो ने। हजारों की भीड में से स्कूल के स्काउट-मास्टर साहब ने, लु··· को निकालकर एक किनारे किया। कहा–"यहीं बैठकर तमाशा देखो !" लुत्तो ने स्काउट-मास्टर की मुट्ठी से अपनी कलाई छुड़ाकर कहा था–"छोड़िए, नहीं देखूँगा नाच। घर जाने दीजिए !"···

घर लौटते समय लुत्तो ने कालीबाड़ी की कालीमाई के बारे में सोचकर देखा, जित्तन की कालीबाड़ी की कालीमाई, लुत्तो के मन की क्यों होने देगी कोई बात ? उसने प्रतिज्ञा की थी–प्राण रहते, कालीबाड़ी की पूजा या नाच-तमाशे में फिर कभी नहीं आयेगा वह !···और उसकी स्त्री रात-भर कीर्तन सुन आयी !

लुत्तो गुस्साकर करवट लेता है–'साली, कहती है कि भोज में क्या होगा, भोज में ! भोज जो होनेवाला है हवेली की ओर से, इसमें क्या करेगा कोई ! सब घर खायेगा और अकेला एक घर मुँह बाँधकर रहेगा तो क्या समझेंगे लोग ! दँडवा-बँधवा तो नहीं है कोई !'

खूब समझता है लुत्तो ! औरत–तिस पर देहाती, साली की बुद्धि ही कितनी ! ···लेकिन, बात कहती है ठीक ही बिठैलीवाली–इस भोज में क्या होगा ! ···और साला, यह बैठे-बिठाये भोज का बखेड़ा उठानेवाले भी खूब हैं ! लुत्तो का

सारा क्रोध, ब्राह्मणटोली के बूढ़े बलराम खाँ पर जाकर पड़ा–खाँ ! अजीब बात ! ब्राह्मण की पदवी 'खाँ' मैथिल ब्राह्मणों में ही है–शायद ! खाँ का माने खाऊँ ! –ब्राह्मणटोली का सबसे बड़ा लोभी है यह बलराम खाँ। हमेशा खाने की ही फिक्र में रहता है। कीर्तन के बाद, बलराम खाँ ने जित्तन से कहा–"जै हो ! जै हो ! बहुत दिनों के बाद कालीबाड़ी में पूजा हुई। सबकुछ देखकर धन्य हुए, हम लोग। लेकिन, हवेली की ओर से हर साल होनेवाले भोज के लिए तो, रामजी की कृपा से समझ लीजिए कि रसना जनम-जनम की प्यासी !"···जरूर लार टपक पड़ी होगी, बोलते समय। मुँह के दाँत एक भी नहीं बलराम के तो क्या हुआ ! ढाई सेर पका हुआ मांस खाकर अब भी पचा लेता है। कोई खिलानेवाला ही नहीं मिला तीन सेर मांस ! ···

सचमुच जटिल समस्या आकर खड़ी हुई, लुत्तो के सामने। इस भोज में सोलकन्ह लोगों को कैसे सँभाला जाये ! क्योकि, जब पुरानी प्रथा के मुताबिक भोज दे रहा है तो किसी टोले-टोली का एक घर भी बाद नहीं जायेंगा। सबको बुलावा दिया जायेगा ! ···

हवेली मे होनेवाले किसी भी भोज में आज तक नहीं शरीक हुआ लुत्तो।

हवेली का भोज ! ···

शिवेन्द्र मिश्र के श्राद्ध में बारह-बखेड़ा खड़ा हुआ। मैथिलों के मुँह में तो बन्धन पड़ गये थे। शिवेन्द्र मिश्र को मैथिलों ने मिलकर अजात-निर्वेद घोषित किया था। भोज कैसे खायें ! ···बलराम ख़ाँ ने ही मैथिलों को इस भोज का उपभोग करने का भेद बताया था। सीधा के रूप में अरवा-चावल, घी, मसाले, बकरे, मछलियाँ, दही-दूध लेने में क्या हर्ज है ! ब्राह्मण का हक !

हवेली की मुसम्मात ने ब्राह्मण टोलीवालों से कहा–"आप लोग सारे टोली के भोज का एक मोट रकम ले जाइए ! टोली में भोज का प्रबन्ध करके खाइए !"

ब्राह्मण, भूमिहार और राजपूतों ने अपने-अपने टोले के भोज के लिए नकद रुपया लिया। सोलकन्ह लोगों ने हवेली में होनेवाले भोज में शरीक होने का फैसला किया।···साल में दो-तीन छोटे भोजों के अलावा काली-पूजा मे लगातार तीन दिनों तक पके हुए प्रसाद का भोज होता और शिवेन्द्र मिश्र के वार्षिक श्राद्ध में हर साल पाँच दिन–पन्द्रह जून भोजन पाते गाँव के लोग।···हवेली के भोज के इर्द-गिर्द, गाँव की प्रत्येक जाति और टोले-टोली में बहुत-सी ऊँची-नीची बातें घटीं। दलबन्दी, जाति-बन्दिश आदि के विवाद भोज के समय जोर पकड़ते। शिवेन्द्र मिश्र के श्राद्ध में मैथिलों ने चालाकी से चौगुना भोज वसूल किया था। टोले के भोज के लिए सवा सौ रुपया लिया, सो अलग। जब साधु-फकीर, भाँट-भिखारी और लूले-लँगड़ों को सीधा दिया जाने लगा तो, मैथिल लोग उस पंक्ति में भी खड़े हो गये। ब्राह्मण का हक ! अपांक्तेय घोषित मिश्र-परिवार की पंक्ति में भोजन करने के लिए दस ब्राह्मण भी तैयार हो गये।···गरुड़धुज झा के बाप काने महापात्र की एक आँख

अपनी दक्षिणा के अलावा ब्राह्मण-दान के नाम पर आयी हुई चीजों पर थी। सो, कुछ ब्राह्मणों ने मिलकर बाँट लिया। दान लेने में कोई पाप नहीं !...

भूमिहारों ने दूसरे साल वार्षिक श्राद्ध में चालाकी की। भोज का रुपया भी ले गये और जब हवेली के भोज का बुलावा आया तो उसको भी कबूल कर लिया।...अजाति घोषित किया है मैथिलों ने। भूमिहारों को क्या !

हवेली के भोज को केन्द्र करके, जाति-पंचायत के बहुत-से दाँव-पेंच खेले गये हैं, गाँव में। लुत्तो ने सदा कुकुरभोज कहकर हवेली के भोज की खिल्ली उड़ायी है। लेकिन, इस बार ! इस बार...कहीं उसकी स्त्री भोज के दिन भागकर तो नहीं चली जायेगी भोज खाने !

"ए, बिठैलीवाली ! सुनती है ? नींद में क्या बकर-बकर बोल रही है ? साली, सपने में भोज खा रही है !"

"हाँ-अ, खा-म-खा जानवर समझ लिया है किसी को, क्या कोई ? बेर-बेर नींद तोड़कर गाली क्यों सुनाता है, कोई ? नटिनियाँ छौंड़ी हिरिया के कारन मैं गले में घड़ा फाँसकर दुलारीदाय के कुण्डा में डूब मरूँगी। हाँ-अ !"

बिठैलीवाली उठकर बैठ गयी और खाँसने लगी। असमय में नींद खुलने पर उसकी खाँसी उभर आती है। तीन चिलम तम्बाकू हुक्के पर गुड़गुड़ाकर पीती है, तब भी शान्त नहीं होती खाँसी।...साली ! हीराबाई की बात कहाँ से सुनकर आयी ? आज लुत्तो को खबर मिली है, नट्टिनटोली की नटिनियाँ मेले से तम्बू तोड़कर गाँव वापस आ रही हैं। पंचायत्त करके ताजमनी से भोज वसूलेगी, गंगाबाई।

बिठैलीवाली ने हुक्का गुड़गुड़ाया और उधर लुत्तो की नाक बोलने लगी। बिठैलीवाली खाँसती हुई बड़बड़ायी—"नाक किसकी बोलती है सो सुन ले कोई !"

पुस्तकालय के सामने ऐसी भीड़ कभी नहीं लगी। मैट्रिक्युलेशन परीक्षाफल निकलने के दिन भी नहीं।...फिर मलारी की तस्वीर छापी हुई है सुवंशलाल के साथ ! चलो, चलो !

भूमिहारटोले का प्रयागचन्द आजकल पुस्तकालय का सेक्रेटरी हुआ है। वह दैनिक आर्यभूमि में प्रकाशित संवाद को, रेडियो से समाचार सुनानेवालों के लहजे में जोर-जोर से सुना रहा है।... ठीक, शिवसागर मिसर का नकल किया है प्रयाग ने ! ...क्रान्तिकारी विवाह ! लोगो ने सुना कि सुवंशलाल और मलारी ने रजिस्ट्री करके विवाह का पक्का कागज बनवा लिया है ! कि बड़े-बड़े लीडर और मिनिस्टर लोग शादी के बाराती थे ! कि मिनिस्टर साहब ने अपनी ओर से दान-दहेज दिया है, सुवंश को ! और तिलक में नकद रुपया के अलावा पढ़ाई-खर्च ! ... अब कौन क्या बोल सकता है !

प्रयागचन्द भूमिहार-युवक-संघ का भी मन्त्री है। उसने संघ के सदस्यों को आवश्यक बैठक की सूचना दी है। आज ही बधाई का प्रस्ताव पास करके भेजना

है ! ··· प्रयाग भी वाममार्गी हो गया, क्या !

भूमिहार युवक सभा के सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट सदस्यों ने सुवंशलाल की बहादुरी की प्रशंसा करते हुए प्रस्ताव में एक स्थान पर 'पूँजीवादी समाज की रूढ़िवादी रीढ़ पर प्रहार कर' पंक्ति जोड़ने के लिए जोर दिया।

रघुवंश और यदुवंश के सामने छाया हुआ अन्धकार दूर हुआ। इसी भोज में भूमिहारों ने रघुवंश और यदुवंश के परिवार को पंगत से उठाने का विचार किया था। भूमिहार युवक संघ के सदस्यों ने अपने-अपने घर में नारा लगाकर सुना दिया–"कौन उठायेगा पंगत से ? कल ही खबर पटना चली जायेगी और तब देखना !"

पनघट पर खड़ी औरतों ने कानाफूसी की–"जोर से मत बोलो ! सुना है, सुवश और मलारी के खिलाफ बोलनेवाले को दारोगा साहब पकड़कर चालान करेंगे !··· रास्ट्री बिहा हुआ है किसी का, इस गाँव मे ? तब कैसे जानोगी सरकारी शादी का बिध !"

फेकनी की माय अपने जानते खूब गला दबाकर बोलती है। लेकिन, फुसफुसाकर बोलने की आदत रहे तब तो ! बोली–"हिन्नू चा गरमागरम ! आकि देखो··· !"

"फेकनी की माय ! तुमको थाना-पुलिस का डर नहीं है, हम लोगो को क्यो फँसाती है ? पानी भरकर जाने दो तब अपना गला भाँजना !" सेबिया की बोली सुनकर फेकनी की माय जल गयी–"आकि देखो, गाँव में और भी रास्ट्री बिहा करने के लिए छौंड़िया सब छटपटा रही हैं !··· कौन जमाना आया है, रे दैब !"

दिलबहादुर पूरे ढाई महीने के बाद लौटा है, अपने देश से। पहाड़ से !

जितेन्द्रनाथ और ताजमनी ने समझा-बुझाकर भेजा था–"बहादुर ! तुम्हारी काछीमाया जरूर बैठी होगी, तुम्हारे लिए। जाकर शादी कर लो।··· वहाँ नहीं मन लगे, फिर वापस आ जाना !" ताजमनी ने, दिलबहादुर की होनेवाली स्त्री के लिए सोने का झुमका और चाँदी की चूड़ी बनवाकर दी थी।

दिलबहादुर मुस्कराता हुआ वापस आया–"ऊँह ! एत्रो–काछीमाया का बिहा नमक के, सौदागर से हुआ। फिन सौदागर मरा तो फिन सूबेदारबाजे के साथ !··· चार बिहा किया कांछीमाया ने !"

ताजमनी को एकान्त में बताया दिलबहादुर ने, किस तरह कांछीमाया उसको पकड़कर घण्टों रोती रही। अपने कपाल में पत्थर मारकर फोड़ने लगी–'दिले ! मेरा कोई कसूर नहीं।' तीन बच्चे हैं, कांछीमाया के। उनको छोड़कर कैसे आती दिलबहादुर के साथ !···दिलबहादुर झुमका और चूड़ी कांछीमाया को ही पहना आया है। कितनी राम्री··सुन्दर लग रही थी, कांछीमाया ! इसीलिए, दिलबहादुर ने मानकुमारी के बाप से बात पक्की नहीं की। मानकुमारी का बाप रोज कहता–'दिले ! मानकुमारी का हाथ पकड़ो।' लेकिन, दिलबहादुर चुपचाप गाँव का मोह तोड़कर तलतिरऽ, उतर आया।··· कांछीमाया रो रही थी।

पुलिस के सबसे बड़े साहब आये हैं, मोटरगाड़ी पर !··· क्या बात है ? नाखा के हवलदार साहब के मुँह पर हवाई उड़ रही है। न जाने क्यों, एस. पी. साहब बहुत नाराज हैं। थाना के दारोगा साहब ने आँख के इशारे से कहा—मामला बड़ा बीहड़ है !

गाँव में खबर फैली—'परबतिया दाजू को पकड़ने के लिए आये हैं इसपी साहेब ! परबतिया अपने देश से कोई खून करके भाग आया है।···भुजाली भाँजने का मजा अब मिलेगा, बिलारमुँहा को !'

एस. पी. साहब को पटना से आई. जी. ने ताकीद करके टेलीफोन किया है : 'जितेन्द्रनाथ के पत्र पर जल्दी कार्रवाई करो।' एस. पी. साहब ने अपनी पन्द्रह साल की नौकरी के दरम्यान ऐसा पेंचीला मामला नहीं देखा—रेकॉर्ड और फोटो की बात पढ़कर उनको हँसी आयी थी। सचमुच पागल है यह जितेन्द्रनाथ ! किन्तु, आई. जी. साहब ने बी. एल. केस चलाने की सलाह दी है—कोई जरूरत नहीं एक हजार आदमी के दस्तखत की ! जितेन्द्रनाथ ने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट की उचित खातिर की। सुरपति ने अपने टेप-रेकॉर्डर मशीन का डिमांस्ट्रेशन किया, गवाही दी। भवेश ने तस्वीरो के साथ फिल्म के नेगेटिव्स दिये और एस. पी. साहब ने रसीद ले ली !···जितेन्द्रनाथ ने हँसकर कहा—"हमें कुछ नहीं कहना है, रेकॉर्ड बजाकर सुन लीजिए। सारी बात समझ में आ जायेगी।"

ननकू नट को न जाने कैसे बात की गन्ध लग गयी ! वह अपने घर में गड्ढा खोदकर ताजे चमड़ों की गद्दी गाड़ रहा था कि पुलिस ने घर घेर लिया ! ···खन्तर गुलाबछड़ीवाला, बकला अहीर और उसके साथ सोये हुए पाँच-सात अजनबी नौजवान—सब मिलाकर पन्द्रह आदमी गिरफ्तार हुए।

नाखा पहुँचकर, एस. पी. साहब ने पहले मारपीट नही की। एक-एक आदमी को बारी-बारी से बुलाकर बैठात और रेकॉर्ड बजाते···'हें-हें-हें ! हुजू-उ-उ-र। आपके अकबाल से अभी तक मैं बीच खेत में कभी नहीं पकड़ा गया।···फोंफ्-फोंफ् ! उधर खेत साफ !'···बकला की आँखें गोल हो गयीं ! अचरज से थरथरानी हुई देह काठ की तरह कड़ी हो गयी। उसकी बोली निकल रही है ? कहाँ से ? ···कुत्ता भी भूँकता है, बीच-बीच में ! ननकू नट का रिकार्ड खत्म हुआ तो एस. पी. साहब ने एक भद्दी गाली दी—"साले !···बहुत मवेशियो को जेबह किया है। इस बार, देखना !"

खन्तर गुलाबछड़ीवाले ने नाक से आवाज निकाली—'खँक !··· फरमायशी गुलाबछड़ी ! खँक !'···

एस. पी. साहब ने बीच में ही मारना शुरू कर दिया। रेकॉर्ड से खन्तर की बोली निकलती रही—'जान-बूझकर जान नहीं··· खँक। तीन फरमायशी गुलाबछड़ी बनाकर खिलाया। बड़े खान्दानवाले हैं, नाम क्यों लें ! खँक···!'

"साले। नाम नहीं लेगा ? बताओ, नाम बताओ ! नहीं तो, मारते-मारते गुलाबछड़ी बना देंगे साले ! तुमको तो आग में झुलसाकर मारना चाहिए !"

मुंशी जलधारीलाल को भी एस. पी. साहब ने गिरफ्तार किया। किन्तु, जितेन्द्रनाथ ने जमानत पर छुडा लिया है।··· मुंशी जलधारीलाल गवाही देगा !

गाँव के लोगो की समझ मे कोई बात नही आयी !

केयटटोली मे खबर उडी–'सुन्नरि नैका के दिन जो बाजा कुरकुरा रहा था, उसी मे कोई भेद है !'

बूढा रघ्घू रामायनी थर-थर काँप रहा है–गुरु हो ! देखना !

दिलबहादुर और रामपखारन सिघ निमन्त्रण-पत्र बाँट रहे हैं–घर-घर घूमकर !

गॉववालो ने दिलबहादुर की मुस्कराहट पहली बार देखी। ··'परानपुर पार्क' की सफलता के उपलक्ष मे एक प्रीतिभोज ! दिलबहादुर मुस्कराकर पूछता है–"आयेगा ? फिन हमको लम्बर लिखना पडेगा !"

–वाह रे भोज ! पहले ही पूछकर नाम क्यो नोट करता है ! इस बार किसी टोले को नकद रकम नही दिया गया है। जिसकी श्रद्धा हो, हवेली मे जाकर भोज खाये। यह तो सोच-विचारकर करनेवाली बात है। ब्राह्मणटोलीवालों को छोडकर बाबूटोला के सभी परिवारो ने अपने घर-भर के लोगों की गिनती करके लिखा दिया, दिलबहादुर को।···पहडिया भूत भी लिखना-पढना जानता है। कहता है–"छोटा केटाकेटी ? हॉ, लडका-बच्चा का भी भोज होगा !"

सोलकन्हटोले मे एक घर, लुत्तो ने साफ जवाब देकर निमन्त्रण-पत्र लौटा दिया–"नही जायेगे, भोज खाने।" दिलबहादुर ने पूछा–"किन ? क्यो नही जायेगा ?"

लुत्तो की नजर दिलबहादुर की घुडकती हुई ऑखो पर थी–"कोई जबरदस्ती है ? जिसका मन नही होगा, नही जायेगा।" दिलबहादुर ने कहा–"ताजुदि बोला है, लुत्तो को जरूर बोलना, आने को !"

"नही, नही। हम भोज नही खाता है। जाओ !"

"नही खाता है तो नही खाता है। इस माफिक बोलता काहे है ?"

रामपखारन सिघ ने राह चलते दिलबहादुर को समझाया–"जरा प्रेम की बोली ही बोलल करो दाजू ! लोग तुमको देखकर घबडा जाता हैनु !"··· दिलबहादुर के कारण रामपखारन सिघ कही एक पल बैठकर कोई गप भी नही कर सकता है–"नट्टिनटोली मे तुम अकेले जाओ दाजू !"

रामपखारन सिघ ने लौटकर बाबूटोले मे अड्डी जमायी–"अब राम जाने, ई भोज कैसा होता है ! हमने बहुत समझाया बौवाजी को। लेकिन जानते ही हैं–लम्बरी जिद्दी आदमी हैं ! कहते हैं, नही। पटना से पेण्टो या मेण्टो कौन होटल है, उसी का बाबुर्ची आवेगा। चार किसिम की मिठाई और दु-तीन किसिम के··· !"

नट्टिनटोले मे दिलबहादुर भी बैठा। गेदाबाई ने कहा–"जरा बैठ के सुस्ता लिन्छः एक-दु गो गप हुन्छः तब जान्छः··· !" गेंदा ने पान लाकर दिया। दिलबहादुर पान-सुपारी नही खाता। लेकिन गेंदाबाई ने पान खिलाकर छोडा–"मोर सिर के कसम लागछः

पान खानै पड़छः।" दिलबहादुर की मुस्कराहट देखकर गेंदा प्रसन्न हुई।···ऐसी अच्छी मुस्कराहट उसने किसी को मुस्कराते नहीं देखा है।

गेंदाबाई ने दिल्लगी की–"ए दाजू, तोरे-मोरे खूब प्रीत हुन्छः। तोर मुँह पान से खूब लाल हुन्छः।"

गंगाबाई ने अपने ऑगन से पुकारकर कहा–"गेंदा! होशियारी से गप करो। याद नहीं है?"–हीराबाई, मेले से बीमार होकर लौटी है। दारू में दवा मिलाकर पीती है। झूमती आयी–"नाच नहीं होगा, नाच? सिर्फ, भोज ही होगा? मैं नाचूँगी। ताजमनी दीदी को कहना, मैं नाचूँगी!"

दिलबहादुर को अचरज हुआ–इस लड़की को क्या हो गया? सूखकर काँटा हो गयी है।

गरुड़धुज और रोशन बिस्वाँ साइकिल की घण्टी बजाता हुआ आया। एक घड़ी साँझ हो गयी। दिलबहादुर हवेली की ओर लौटा। हीराबाई बोली–"ए दाजू! मोर घर में पान नहीं खायेगा?" दिलबहादुर ने कहा–"नहीं खायेगा!"

मकबूल ने अपनी पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को बुलाकर सवाल पेश किया–"किसानों और मजदूरों के मुँह से कौर छीनकर जो यह भोज दिया जा रहा है, इसमें हमारी शिरकत कहाँ तक जायज है?"

रंगलाल गुरुजी ने सवाल का जवाब देने के लिए हृदय-परिवर्तन का सूत्र पकडा–"जहाँ तक जित्तन के हृदय का प्रश्न है, वह परिवर्तन···!"

विश्वकर्मा ने बीच में ही बात काट दी–"सबसे पहले हम कामरेड गुरुजी के हृदय-परिवर्तनवाद पर विचार कर ले तो अच्छा हो! कामरेड गुरुजी मार्क्सवादी होकर भी हृदय-परिवर्तनवाद पर विश्वास करते हैं, यह कहाँ तक जायज है?"

"इसी को प्रतिक्रियावादी विश्वास कहते हैं।" एक सदस्य ने अपनी राय जाहिर की।

"हृदय-परिवर्तनवाद को प्रतिक्रियावादी विश्वास कहते हो?" रंगलाल गुरुजी का चेहरा लाल हो गया।

"मेरा खयाल है, गाधी ने इससे बढकर और कोई खतरनाक शब्द नहीं दिया भारतीय राजनीति को।" विश्वकर्मा आजकल महात्मा गांधी के बदले सिर्फ गांधी बोलता है।

रंगलाल गुरुजी का विश्वास इतना कच्चा नहीं–"फिर आपके पार्टी-साहित्य, प्रचार-पुस्तिका, पत्र-पत्रिका और भाषण-वक्तव्य की क्या आवश्यकता? बन्द कर दीजिए इन्हें!"

"क्यों, हृदय-परिवर्तनवाद का इनसे क्या सम्बन्ध?"

"मैं कहता हूँ कि इन सारे आयोजनों के पीछे हृदय को परिवर्तन करने का ही मुख्य उद्देश्य काम करता है!"

"हृदय-परिवर्तन करने के लिए नहीं, गुमराह मास के दिमाग को इन-लाइटेन

माने उजागर करने के लिए···!"

"एक ही बात है।" रंगलाल गुरुजी ने पूछा—"अन्धकार दूर होकर प्रकाश छा जाना, परिवर्तन नहीं ?"

विश्वकर्मा कोई माकूल जवाब ढूँढ़ रहा था कि मकबूल से मुस्कराकर कहा, "साथियो ! हृदय-परिवर्तन पर हम फिर से कभी विचार करेंगे। आज हम फैसला करें कि इस भोज में हमें कौन-सा रुख अख्तियार करना है ! रंगलाल गुरुजी शायद भोज खाने के पक्ष में हैं।"

"हाँ !" रंगलाल गुरुजी ने बेहिचक कहा।

सुचितलाल मड़र भी दर्शक की हैसियत से उपस्थित था। बोला—"जैंराँ हैंमकों भीं बोंलनें का हुँकुँम दियाँ जाँएँ !"

सुचितलाल मड़र भी भोज खाने के पक्ष में है। वह अपनी जाति और टोले का मड़र है। उसके गाँववाले नहीं मानेंगे।

बहुत देर तक कार्यकर्त्ताओं ने आपस में सलाह की। तरह-तरह की बातें सामने आयीं। जित्तन के वामपन्थी और प्रगतिशील होने पर भी विश्वास तथा सन्देह किये गये। अन्त में मकबूल ने समाजवादी सत्य का हवाला देकर कहा—"साथियो ! मेरे खयाल में सबसे सही रास्ता यह है कि कम्युनिस्ट की हैसियत से हम इस भोज का विरोध करें और ग्रामवासी के नाते इसमे जरूर शामिल हों।···कामरेड विश्वकर्मा ! आप पहले पूरी बात सुन लीजिए तब··हाँ, यह आदत अच्छी नही ! मैं क्या कह रहा हूँ यह जाने बगैर आप जवाब क्या दे रहे हैं ?"

उपस्थित कार्यकर्त्ताओ को भी यह बात बुरी लगी। विश्वकर्मा ने कोई जवाब नही दिया। मकबूल ने साथियों को समझाया—"पार्टी यूनिट के सेक्रेटरी को इस भोज में नहीं जाना चाहिए। बाकी सभी सदस्य ग्रामवासी की हैसियत से भोज खाने जायें। और, वहाँ यह भी देखें कि अपनी पार्टी से प्रभावित किसानों और मजदूरों के पत्तल मे सारी चीजें समान रूप से परोसी गयी हैं या नहीं।"

सुचितलाल मडर खुश हुआ।···उसने देखा है, मकबूल की पार्टी में आकर भी उसका काम सुधर नहीं रहा है। गॉव मे उसके पोपी नाम का पूरा प्रचार हो गया है। पार्टी के लोग भी पोपी कह बैठते हैं। दूसरी बात, दुलारीदाय के कुण्डों के भरोसे उसने मछुवारी गाँव के मड़र से अग्रिम रुपया लिया था, एक हजार ! लेकिन, कुण्ड तो हुआ नहीं। मछली कहाँ से देगा, सुचितलाल ? और, रुपये सारे तो सर्वे में ही साफ हो गये। सुचितलाल चाहता है कि किसी तरह जित्तन से एक भी कुण्ड बन्दोबस्त मिल जाये।

घर लौटते समय उसने रामपखारन सिंघ को सुना दिया—"बैंड़ाँ झँझट काँ काँम होंता हैं पाँटीं मिंटिं में पैंटरीं बैंठानाँ···"

सुचितलाल ने रामपखारन सिंघ को पान खिलाने के बहाने रोका और सुनाया कि किस तरह उसकी पार्टी के लोग भोज को भण्डुल करना चाहते थे और किस तरह वह लोगों को समझाकर रास्ते पर लाया है !

रामपखारन सिंघ मन-ही-मन बोला–'ससुरे हम तुमको चिह्नते नहीं हैं का ?'

फूल फूटिलो रे राँगा···ओ गो···फूल फूटिलो रे जवा···फूटिलो रे !···रसोईघर के पिछवाड़े में मगन होकर गोबिन्दो गुनगुना रहा था। सामबत्ती पीसी बगल से जा रही थी। बोली–"बड़ा गीत गा रहे हो गोबिन्दो ! कौन फूल फूटा है ?"

सामबत्ती पीसी इस राह से आते-जाते गोबिन्दो से मिलना नहीं भूलती है। अन्दर हवेली में कुत्ते के डर से जाने का साहस नहीं होता। गोबिन्दो पान-जर्दा का पुराना शौकीन है। सामबत्ती को बड़ा भला लगता है, गोबिन्दो। बचपन से है इस गाँव में। लेकिन, कभी किसी लड़की से मुँह खोलकर नहीं बोला। सामबत्ती से बोलते समय भी वह आँख नहीं मिलाता है, कभी। निगाह नीची ही रहती है। लेकिन, आज तो लगता है कि दूसरा ही गोबिन्दो है ! गोबिन्दो ने मुस्कराकर जवाब दिया–"हाँ, फूल फूटा है ! मँन का फूल फूटा है, दादाबाबू का ! श्येंमा-पूजा में देखा नहीं ! कैसा फूल फूट गिया था सब लोग का ऊपर। सबका आँखि में जवा फूल जैसन फूट गिया था। और, तुम्हारा भी डिजैन उस दिन एकदम बाँगला काट का गिन्नी का माफिक हो गिया था। हम देखा···!"

सामबत्ती पीसी हैरान हो गयी। कहता क्या है गोबिन्दो ? सामबत्ती को अशर्फी-गिन्नी कहता है ? क्या मतलब है इसका ? –"पान-जर्दा है तो खिलाओ ! तुम्हारी मालकिन से तो डर लगता है, अब ! कही आ न जाये !···अच्छा गोबिन्दो ! वह रसोईघर में भी आती है ?"

"ई कौन नाया बात है ?"

सामबत्ती पीसी पीढ़ी पर बैठ ही रही थी कि रामपखारन सिंघ आकर पुकारने लगा–"गोबिन्दो ! ए गोबिन्दो ! तू इधर नाया बात के पुराना बात बनाओ–उधर देखो, का हो रहा है ?"

"क्या ?"

"इधर आओ।"

गोबिन्दो और रामपखारन सिंघ रसोईघर के ओसारे से हटकर बातें करने लगे तो सामबत्ती पीसी उठकर चली आयी। चलते-चलते उसके कान में बात आयी–"मुंशीजी रो रहे हैं ! ··· " जलधारीलाल मुंशी रो रहा है ? आखिर क्यों ? सामबत्ती पीसी शाम को भी एक फेरा लगा जायेगी, इधर से !

"क्यों, रो क्यों रहे हैं ?" जितेन्द्रनाथ ने अवाक् होकर पूछा।

"हुजूर, हमको छुट्टी दीजिए ! अब नहीं··· ।"

मुंशी जलधारीलाल हाल की घटनाओं से क्षुब्ध है। जितेन्द्रनाथ उसे जब-जब समझाना चाहता है, वह बधिर हो जाता है। कुछ सुनता ही नहीं, मानो ! आज वह छुट्टी माँग रहा है।

"ठीक है। छुट्टी लीजिए। रो क्यों रहे हैं ?"

"हुजूर, इस इस्टेट से पालन-पोषण हुआ। इसके एवज में खिदमत भी की ताउम्र। क्या किया, कुछ नहीं किया। अपना फर्ज अदा किया, हमेशा। लेकिन, कभी ऐसा···" मुंशी जलधारीलाल का गला फिर भर आया।

"आपको अपने किये पर पछतावा हो रहा है। यही प्रायश्चित्त है !"

नहीं ! मुंशी जलधारीलाल को अपने किये पर जरा भी पछतावा नहीं। उसे दुख है, उसके साथ धोखेबाजी क्यों की गयी ? क्या-क्या नहीं किया उसने इस स्टेट के लिए ! लेकिन कभी हाथ में हथकड़ी नहीं लगी। इज्जत रह गयी थी, सो भी गयी ! मुंशी के साथ अन्याय हुआ है। उसको जमानत पर छुड़ाकर गवाही देने कह रहे हैं उसके मालिक ! क्या करे वह ? न निगलते बनता है, न उगलते, रेकार्ड में उसकी बोली चली गयी है ! हर आदमी का परिचय देती हुई आवाज–'हुजूर, यह है बकला अहीर ! यह ननकू नट !···'

"गवाही तो आपको देनी ही होगी !··· आवाज तो मेरी भी है उसमें। अपनी आवाज को कबूल करने में क्या हर्ज है !"

मुंशी जलधारीलाल को हठात् कोई बात याद आयी। उसने तमतमाकर कोठरी में इधर-उधर एक नजर दौड़ायी।···कहीं फिर न बोली रिकार्ड हो रही हो। मुंशी जलधारीलाल सुरपति और भवेश को जोडा सॉप कहता है, आजकल ! ऐसा जानता तो एक दिन भी नहीं टिकने देता, मुंशी जलधारीलाल। अच्छी बात, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। ब्रह्मपिशाच से भेंट करा देगा मुशी इन दोनों बाबुओं की। बोली और फोटो खीचनेवाले–भूत की बोली रेकार्ड कर ले, फोटो छापें। अच्छी बात ! देखेगा ! ··

रामपखारन सिंघ कमरे के बाहर से मुंशीजी को चेतावनी देना चाहता है, होशियारी से ! फिर कहीं फिलिंग रिकाट··· रामपखारन सिंघ भी नाराज है। वह गोबिन्दो से कहने गया था, 'अब यहाँ से छुट्टी लो–नहीं तो किसी दिन हम लोगों के हाथ में भी हथकड़ी पड़ के रहेगी।' लेकिन, गोबिन्दो अपने को बड़ा माथावाला समझने लगा है। बोला–'देखो, सिंघजी ! जो जैसे कॅर्म कॅरेगा वैसा पावेगा।···मुंशीजी बहुत जुल्मी काम कॅरेगा तो मॅरेगा नहीं ! हाम ऊ सब बात नहीं बूझता है।'···

क्या समझ लिया है इस सालन-भात बनानेवाले गोबिन्दो ने ? रामपखारन सिंघ के बाप ने इस इस्टेट के मालिक शिवेन्द्र मिश्र के एक खून को खुद कबूलकर कहा था, हाकिम से–'मालिक ने नहीं, खुद हम रामजीयावन सिघ को गोली से मारा है !' हँसते-हँसते दामुल की सजा भोगने चला गया रामपखारन सिंघ का बाप। लेकिन, अब तो फिलिंग रिकाट···!

मुंशीजी को गवाही देनी ही होगी। जितेन्द्रनाथ ने कहा–"तब जो भोग भोगना बाकी है, भोगिएगा !"

मुंशी जलधारीलाल क्या करे ! कलम की बात रहती तो ऐसी-ऐसी बात को वह कलम की मार से सही कर लेता। कलम की बात नहीं–रिकार्ड की बात है ! आवाज की बात है !

मन की खीझ को कहाँ उतारे जलधारीलाल ? वह चाहे तो जितेन्द्रनाथ को रास्ते का भिखारी बना दे। ऐसी-ऐसी चीजें उसके पास हैं ! लेकिन जित्तन का मुँह देखकर मुंशी चुप हो जाता है।…जित्तन के मुँह के आसपास कई मुखड़े दिखायी पड़ते हैं, मिट जाते हैं—मालिक शिवेन्द्र मिश्र की मूरत ! मालकिन की अन्तिम आज्ञा या प्रार्थना—'जीत का कागज कभी कमजोर न हो ! जीत का कागज बिगाड़ना मत कभी !'

मुंशी जलधारीलाल आजकल बात-बात में डरता है। जेब से अशर्फी की थैली निकालकर देते हुए कहता है—"हुजूर ! रुपया-पैसा की बात नहीं। यह कम्पनी के जमाने की अशर्फियाँ हैं। बैंक में खुद जाकर जमा कर आइए !"

"क्यों ? बैंक में पुरानी अशर्फियाँ नहीं ली जाती हैं क्या ?"

"सो बात नहीं है, हुजूर ! इससे भी पुरानी अशर्फियाँ जमा होती हैं। बात है कि अब तो हुआ मैं दागी आदमी। हथकड़ी पहना हुआ ! न जाने नीयत कब बिगड़ जाये ! दूसरी बात, इन अशर्फियों का कौन भरोसा ! न जाने किस गोरे साहब के खजाने की हों। या, नकली अशर्फियाँ !"

ताजमनी कमरे में आयी—"मुंशीजी !"

मुंशी जलधारीलाल दास को मालकिन की याद आती है, अचानक—'मुंशी जलधारीलाल, तुम हवेली की बहुत-सी ऊँची-नीची बात जानते हो। काशी-विश्वनाथ की सौगन्ध खाकर बोलो—कभी जित्तन के सामने उसकी चर्चा नहीं करोगे !' मुंशी ने काशी नगरी में बैठकर प्रतिज्ञा की थी।…

डॉक्टर रायचौधुरी पार्टी नं. 10 के साथ हैं। कोशी के विभिन्न अंचलो में पेड़-पौधे, वनस्पति और उद्भिद की परीक्षा वह कर रहे हैं। पिछले तीन साल से हिमालय के प्रसिद्ध स्थान, बराह-क्षेत्र के पास किसी फूल की खेती का प्रयोग किया है, अब पार्टी नं. 10 में भेजे गये हैं। तीन बड़े-बड़े ट्रकों में सैकड़ों गमले भरकर ले आये हैं। इसलिए, परती पर लगे हुए बाग पर एक सप्ताह के बाद नजर पड़ी।…विशेष प्रकार के झाऊओं की तरह झाड़ियो के गमले फूट गये। पाँच तो सूख ही गये हैं। नील-अमलतास का बहुत दुख है डॉक्टर को !…डॉक्टर रायचौधुरी ने बाग में जाकर देखा—पौधों को, दूबो को, बनलहसन के फूलों को ! मधवा जंगल का रंग बहुत भाया डॉक्टर को। घण्टों भूले रहे ! अचानक उनके मन में प्रश्न उठा—किसका है यह बाग ? योजनाबद्ध पाँतियों की कल्पना करनेवाला, कौन है वह ? यह किसका प्रयोग सफल हुआ है ? किसका सपना साकार हुआ है, यहाँ एकान्त में ? यह किसने उसके काम को सहल बनाकर रख दिया है, उसके सामने ? कौन है वह ? डॉक्टर रायचौधुरी बेचैन हो गये। शाम को बँगला धोती-कुरता पहनकर, हाथ में मोटी छड़ी लेकर निकले डॉक्टर रायचौधुरी। अधेड़, बंगाली भद्रमानुस !

इरावती के मामा मिस्टर खानचन्द गार्चा ने हँसकर पूछा—"क्यों डॉक्टर साहब !

कहीं मछली-वछली की दावत मिली है क्या ?"

डॉक्टर रायचौधुरी ने हँसकर जवाब दिया—"हाँ। खूब बडा जात का माछ ! बाद में बोलेगा।"

इरावती डॉक्टर साहब की इसी बात से चिढ़ी रहती है। कुछ पूछिए तो, बाद में बोलेगा। और बाद में कभी नहीं कहते कुछ। अकल कहके देखा, मामा कहके पुकारा। पर कुछ नहीं कहते खोलकर।

"मामा ! अपने नील-अमलतास के बारे में कुछ कहिए !"

"बाद में बोलेगा।" डॉक्टर रायचौधुरी विरक्त होकर कहते। अपने दुख को भूलने का जितना बहाना करो, बेकार ! फिर, नील-अमलतास की बात छेड़ दी इस लड़की ने। बँगला में ऐसी लड़कियों को नाछोडबन्दा कहते हैं। नाछोड़बन्दा मेय !

कार्ड पढ़कर जितेन्द्रनाथ का चेहरा चमक उठा—डॉक्टर सी. के. रायचौधुरी···! बहुत श्रद्धा है जितेन्द को इस नाम से। उसने सिर्फ तीन लेख पढ़े हैं !—पूज्य व्यक्ति ! जितेन्द्रनाथ तेजी से कमरे से बाहर गया। प्रसन्न होकर स्वागत करते हुए बोला—"बड़ी लालसा थी आपसे मिलने की ! मेरा सौभाग्य ! पधारिए !"

डॉक्टर रायचौधुरी ने कमरे में एक निगाह डाली। —क्राइस्ट, बुद्ध, राम कृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाधी की, केस्टनगर की मूरते !

"पाइरिथ्रम एक्सपेरिमेण्ट का क्या हुआ, सर ?"

कीमती सिगार मे छेद करके फूँकते हुए बोले डॉक्टर रायचौधुरी—"हॅम तो रिपोर्ट कर दिया। बॅराहखेत्रऽआउर उसका चार-पाँच माइल नीचू को पॅहाडी में पाइरिथ्रम का खेती हो सॅकता है। नेपाल सॅरकार इस/खेती को प्रोत्साहॅन देने से मैलेरिया को बिभीषिका बॅहुत कॅमती··· पाइरिथ्रम ! एहि, क्राइसेनथेमम-चॅन्द्रमॅल्लिका फूलेर एक जात। आश्चॅर्यऽएर खॅमॅता। आइ'म सॅरी ! कीट-पतंग नाशक उद्भिद ! मॅशा, माछी, माकड़ासा आउर सॅब किसिम का कीड़ा-पोका इंसको छूने से इक-दु मिनिट को अन्दर पंगु होकर मारा जाता है। पॅहाड़ी भूमि को छोड के आउर जगहा नेंही होने सकता।··· इसका एक्टिव प्रिंसिपल माने कीट-नाशॅक गुन जिसको पाइरिथ्रम बोलता है—हमारा चास किया हुआ फूल में हुआ—जेरो डेसिमल सेवन···!"

जितेन्द्रनाथ ने मुस्कराकर कहा—"चाय ठण्डी हो गयी, सर ! छोड़ दीजिए। गरम चाय ला देता हूँ।"

"आरे, नेही-नेंही। हॅम ठाण्डा चा पीता है।—आपका बागान देख कॅरके हॅम बूझ लिया ! जॅरूर कोई माँ का बेटा होगा। आकॅर देखा—ठीक ! उई, जॅवाफूल देखकॅर बूझ गिया हम !"

"हाँ, काका ! इस बार फिर पूजा हुई है माँ की। आप नहीं आये।" ताजमनी परदे के उस पार से इस पार चली आयी।···साँझ की बेला टली जा रही है ठाकुरों को धूपदीप तो देना ही होगा। ताजमनी ने समझा, पूर्णिया के नवीन बाबू वकील आये हैं। ताजमनी 'काका' कहती है नवीन बाबू को। कमरे में आकर प्रणाम करते

समय उसका भ्रम दूर हुआ—यह तो कोई दूसरे काका हैं ! जितेन्द्रनाथ ने मुस्कराकर देखा, ठगी-सी ताजमनी को।

डॉक्टर रायचौधुरी धूपदीप की बेला में कुरसी छोड़कर खड़े हुए। जितेन्द्र कभी खडा नहीं होता। ताजमनी ने बार-बार उसकी ओर देखा। अन्त में, वह भी उठकर खड़ा हुआ।

ताजमनी ने अन्दर जाते समय सुना, जितेन्द्रनाथ पंचचक्र की बात कह रहा है। पिटारी निकाल रहा है भोजपत्र की। ताजमनी रुक गयी परदे के इस पार !

"एक चक्र में, मेरा अनुमान सच निकला। सम्भव है, बाकी में आपको कुछ और सहायता मिले, इसलिए अपने अनुमान की बात स्पष्ट कर दूँ। मेरा अनुमान है, इन चक्रों में जो मिट्टियाँ हैं—वे भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं। सम्भव है, इस विशाल परती पर ऐसी मिट्टियोंवाले चकले—जगह-जगह हजारों एकड़ में फैले हों।···किसी में गेहूँ की खेती। जड़ी-बूटियों की खेतीवाली धरती ही कहीं निकले !"

डॉक्टर रायचौधुरी प्रसन्नता से उलट रहे हैं भोजपत्र को, चश्मा पोंछकर देखते हैं !···वही माँ ! उसी की माया है। अपने आँचल में न जाने कहाँ-कहाँ, कैसा-कैसा फूल टाँककर रखती है ! कहता क्या है, यह नौजवान ? इसके अनुमान के पीछे वैज्ञानिक दृष्टि है।

डॉक्टर रायचौधुरी की हालत को एबनॉर्मल कह सकते हैं।···इस युवक के बालो को मुट्ठी में लेकर स्नेह से झकझोरकर कहना चाहते हैं—ओ रे दुष्टू ! डॉक्टर साहब ने लगातार कई प्रश्न पूछे—'दुलारीदाई नेंदी में गेहूँ की खेती होता है ?"

"होती है।"

"उ होता-होती माफ कॅरेगा हॅमारा !"—जितेन्द्रनाथ की ऑखों को रायचौधुरी ने गौर से देखा।

"आमार चोख बुझि कॅटा !" जितेन्द्रनाथ ने मुस्कराकर पूछा।

डॉक्टर ने कहा—"नेहीं। हॅम क्या देखता है, सो बाद मे बोलेगा।"···आँखें कुरी नहीं। आँखों मे कोई खास बात उन्होंने देखी है। यह युवक तो स्वयं एक वनस्पति है। नील-अमलतास-जैसा ! ···"तुमी पारबे ! तुमी जे निजेई एक बिरल बनस्पति !"

न जाने क्यों, डाक्टर की ऑखे छलछला आयी। जितेन्द्रनाथ को आशीर्वाद दिया डॉक्टर रायचौधुरी ने—"तुमी पारबे !"

बातों-ही-बातों में रात्रि भोजन का समय हो गया।···शाक्त के घर दोनों जून माँ के भोग के लिए ही रन्धन होता है। माँ के प्रसाद को अस्वीकार कैसे कर सकते हैं, डॉक्टर रायचौधुरी !

बहुत रात तक दोनों बेसुध होकर बातें करते रहे।

मिस्टर खानचन्द गार्चा ने अचरज से कहा—"अरे ! आपको अहले सुबह यह मछली कहाँ से मिल गयी ?"

"माछ का दर्शन शुभ होता है। आप अभी फिल्ड पर जा रहा है ? लौट के आइये ! आपसे एक बात है। बाद में बोलेगा।"

इरावती को देखते ही डाक्टर ने कहा—"लक्खी माँ, नील-अमलतास को बारे में अब बोलेगा। मिल गया—नील-अमलतास !"

"कहाँ मिला मामा ?"

"गाँव में एक भँद्रलोक है जितेन्द्रनाथ मिश्र, उसी को पुराना बागान में ! ई नाया बागान भी उसी का है। हि-हि ! माँ भी खूब है ! कैसा-कैसा अपूर्व···!"

"क्या नाम ? जितेन्द्रनाथ मिश्र ?"

"हाँ। लेकिन, तुमको आबार क्या हुआ ! ···माछ ले जाओ ! कि माछ नहीं छूता···छूती !"

"नहीं, मामा !" इरावती हँसी, "इस नाम का मेरा एक बन्धु खो गया है। इसलिए पूछ रही थी।··· हमारे प्रान्त का नहीं, वह इसी इलाके में रहता है, कहीं। मैं उसको परतीपुत्तर कहती। सदा अपने इलाके की परती की बात छेड़नेवाला। वह मुझे पांचाली···!"

डॉक्टर रायचौधुरी मुस्कराये। इरावती के चेहरे पर आने-जानेवाले भावो को देखकर एक भटियाली गीत गाने का मन हुआ उनका—बंधुआ तोमार मनेर मानुस, घाटे-घाटे डाके लो-ओ, नाम धरिया हाँके···।

"लेकिन, लक्खी माँ ! मामा को छाडि के, बन्धु को पानेवाला• कोई नेहीं।"···बहुत दिनन मे बधुआ मिलल। मामा को नाहीं भूलल।···इरावती हँसती हुई कैम्प के अन्दर चली गयी। एकबग्गा हैं डॉक्टर रायचौधुरी ! आज खुश हैं तो गीत गा रहे हैं। नही तो, 'बाद मे बोलेगा' छोड़कर और कोई जवाब ही नहीं देते।

इरावती ने झोली और छतरी उठायी अपनी !

कैम्प के आसपास के गाँवो में घूमना ही काम है। रात में लौटकर, मामा के बच्चों को और एसिस्टेण्ट कैम्प इंचार्ज की तीन लडकियों को एक साथ बिठाकर पढाती है।

इरावती ने गाँव मे प्रवेश किया। हलचल मच गयी गाँव में !

पनघट पर भीड़ लग गयी—कम्फू की देवी-दुर्गा जैसी लड़की आ रही है। फेकनी की माय आगे बढ़कर सलाम करती है—"सलाम बीबीजी ! आकि देखिए, हम दूर से ही देख करके चिन्ह लिया आपको !"

"ओ ! दूधवाली ! यहाँ जितेन्द्रनाथ मिश्र रहते हैं, कोई ?"

"जित्तन बाबू ?" फेकनी की माय की आँखें नाचीं।

पनघट के पास सामबत्ती पीसी भी खड़ी थी। हँसती हुई आयी—'परनाम छोटी बीबीजी ! जित्तन बाबू के पिछवाड़े में ही है, वह बुर्ज। चलिए, मैं ले चलती हूँ। मैं भी उधर ही जा रही हूँ। गाँव के लड़के अच्छे नहीं।"···सामबत्ती पीसी ने कैम्प

में बैठकर कितनी कहानियाँ सुनायीं हैं छोटी बीबी को। उसके एक सवाल का भी जवाब नहीं देगी, छोटी बीबी ? —जित्तन बाबू से आपकी पहले से ही जान-पहचान है ? ···कभी खोज-पुछार तो नहीं किया आपने ? कहाँ ? पटना में ? तब ठीक है।

इरावती प्रसन्न हुई, जितेन्द्र मिल गया !

"बस, इसी रास्ते से जाकर गोबिन्दो का नाम लेकर पुकारिएगा।···इस गाँव की बेटी-बहुरिया हवेली में नहीं जाती। हाँ, कुत्ता बड़ा कटहा है। जरा, होशियारी से !"

···खुट-खुट करती चली गयी कम्फू की बड़ी-बडी आँखोंवाली देवी, दुर्गा-जैसी लड़की, हवेली की ओर !

गाँव के कुछ नौजवानो ने सामबत्ती पीसी से कुछ पूछा तो पीसी चिढ़कर बोली—"तुम लोगो की यह क्या आदत ! कोई जनिजति आयी गाँव मे कि पेट मे छछुन्दर छुछुवाने लगता है। कोई रहे, तुम लोगो को मतलब ? हवेली मे गयी है। जाओ न ! पूछना कि कौन है और क्या है !"

जितेन्द्रनाथ अपने कमरे की खिड़की से सामने पोखरे में पडती नारियल और सुपारी के पेड़ो की परछाइयों को देख रहा है।

"जितेन्द्र !···सरप्राइज्ड ?"

"अरे ! इरावती ! तुम ! तुम कहाँ से ?"

परदे को हटाकर इरावती खड़ी मुस्करा रही है। जितेन्द्रनाथ ने कहा—"अन्दर आओ !" मीत दौडकर दरवाजे के पास गया और सूँघने लगा। इरा ने चुमकारकर कहा—"क्या नाम है तुम्हारा डियर ?"

"वह मीत है।" मीत ने सूँघकर परखा, हाथ के स्पर्श से समझा, हथेली प्यारभरी है।

"इरावती को भूल नही सके हो, देखती हूँ। अभी भी उसकी तस्वीर तुम्हारी मेज के एक किनारे मुस्करा रही है।"

जितेन्द्रनाथ अप्रतिभ हुआ—"विश्वास करोगी ? अभी ही, कुछ ही क्षण पहले ढूँढ़कर निकाली है। अचानक हजारीबाग की केनाडी की याद आयी।··· और, इस तस्वीर में तुम्हारे पीछे केनाडी पहाड़ी भी मुस्करा रही है।"

"क्यों, केनाड़ी की याद ही क्यों आयी ?"

"पाइरिथ्रम की खेती···!"

इरावती हँसी—"ओ-हो ! मालूम होता है डॉक्टर रायचौधुरी आकर प्रचुर पाइरिथ्रम का बीज बो गये है। तीन साल तक इस मक्खी मारनेवाले फूल के पीछे लगे रहे। मक्खी मारना कहावत है न ?"

"हाँ। लेकिन, जानती हो ? मैलेरिया, हैजा, प्लेग, टाइफाइड आदि मारात्मक रोगों के अलावा ये कीड़े-पतिंगे दुनिया की खेती को कितनी बडी क्षति पहुँचाते

हैं ? अमरीका में प्रतिवर्ष 200 करोड़ डालर और सोवियत रूस में 250 करोड़ रूबल !"

"आँकड़े पसारने की आदत तो नहीं थी, तुम्हारी ?"

जितेन्द्र हँसा। यह 'आँकड़ा पसारना' शब्द उसी का कहा हुआ है। आश्चर्य ! इरावती भूली नहीं है—'काम करनेवाले सिर्फ काम करते हैं, आँकड़े नही पसारते फिरते !'

मीत को ताजमनी के पाँव की आहट मिली। दौड़कर दरवाजे के पास गया। फिर, उछलता-कूदता अन्दर आया। उछल-कूदकर, बॉख-बॉख करता हुआ फिर बाहर की ओर गया। जितेन्द्र ने कहा—"बहुत प्रसन्न है मीत !"

"मैं भी बहुत प्रसन्न हूँ !" इरावती मुस्करायी मन्द-मन्द।

··· उस बरसाती रात की याद ! मेरी उँगली में उस रात की अँगूठी अभी-भी पड़ी हुई है। उसी रात को गुरु ने मेरे कान में इष्टमन्त्र दिया—काली !

बाहर मानसून के बादल आकाश में लरज आये थे !

हिमालय की ऊँचाई से टक्कर लेकर वापस लौटे मेघ उमड-घुमडकर आते और झूम-झूमकर बरस जातें। झड़ी बन्द होती तो, कोठी की पक्की नालियो मे पानी की कुलकुलाहट स्पष्ट हो जाती।

लगातार, तीन-चार घण्टो तक कमरे में चहलकदमी करके राजकाज की बाते की थीं, उन्होंने। उनका विश्वास दृढ था—बार्कर इस घटना की चर्चा भी नहीं करेगा कहीं, किन्तु वह बदला लेने की पूरी चेष्टा करेगा। बिजली की हर कौंध पर उनकी उँगलियों में पड़ी अँगुठियाँ झिलमिलातीं। रह-रहकर उनके शरीर से शक्ति की एक तीखी गन्ध आती।

मम्मी बहुत देर तक चुपचाप बैठी कुछ सोचती रही। फिर, दस-पन्द्रह मिनटो तक उनकी ओर गौर से देखती रही।···प्रफुल्ल मुद्रा में मम्मी उठी और मुझे एकान्त में ले गयी—'सो यू लव मिस्सा ? ···वह किसी राजा से क्या कम है ?'

'मम्मी !' मैं मम्मी की छाती में मुँह सटाकर बोली थी—'आइ काण्ट हेल्प !'

'आइ'म ग्लैड··· !'

मम्मी ने पुतली के हाथ, मेरे कमरे में धूप और अगर-पाउडर की डिबिया भेज दी। धूपदानी में अगर-पाउडर डालकर पुतली ने मेरी ओर देखा।···ओ, पुतली ! आज धूप जलाने की क्या आवश्यकता ! आज तो स्वयं गन्धराज उपस्थित हैं। बादल थम चुके थे !'···

घोर लाल रग की धोती उनकी। घोर लाल रंग की साड़ी मेरी, रेशमी जरीदार ! लाली क्रमशः बढ़ती गयी। आकाश में छा गयी। मेरी आँखें बन्द थी या खुली, मुझे नहीं मालूम ! शक्ति की तीखी गन्ध निकलती है। उसी सुरभि के सहारे आगे बढ़ रही हूँ। तन्मय ! आकाश-पातालव्याप्त लाली पर काले-काले अक्षरो मे लिख

गया कोई—का-ली-ई-ई ! ...

मैं गोरी नहीं, काली हूँ अब ! ब्लैक बेरी ! जामुन, जमुना, काली, काला, कृष्ण, कालिन्दी, काले-काले मेघ... कालिदास के देश की काली !... माँ मेरी और क्राइस्ट—यशोदा की गोद में बालगोपाला !

अरे ! मेरी आँखों में परमपश्यन्ती-दृष्टि कौन दे गयी ?

... वेदी पर बैठी है, जगदम्बा !

मेरे तपते हुए ललाट पर उन्होंने रक्तचन्दन का तिलक किया। मुझे लगा, उसी तिलकचिह्न के साथ सारी लाली—आकाश-पाताल में फैली—मेरी देह में समा गयी। लगा, आग पी रही हूँ ! ...

मिश्रजी...अब मिश्रजी नहीं। परमगुरु—पति। सामान्य पुरुष नहीं—सम्पूर्ण पुरुष। प्राणाकर पति ने मुझे छूकर देखा। गात्रदाह, मर्मदाह मेरा शान्त हुआ, एक निमिष के लिए !

सुबह को पुतली ने बाहर से पुकारा। जगी तो लगा, मेरा दूसरा जन्म हुआ है। दौड़कर मैं आईने के पास गयी—हे भगवान् ! मैं कहाँ खो गयी ? मैं कहाँ चली गयी ? यह मैं ही हूँ ? ...ललाट पर रक्त-चन्दन के तिलक के चारों ओर पीले चन्दन की बिन्दियाँ ! कपोल पर हरसिंगार-जैसे दो फूल रक्त-चन्दन से ही अंकित !

...कनपटी के पास। वक्षःस्थल पर...! चन्दन की नन्ही-नन्ही बिन्दियों में मैं खो गयी।...तो, सारी रात मुझे चन्दन-चित्रित करने में काट दी ?

मेरे रोम-रोम में एक स्वर्गिक सुगन्ध बस गयी।

आरसी के पास मैं ठगी-सी खड़ी थी। पीछे से आकर मेरे कन्धे पर हाथ धरकर धीरे से बोले—'कौन हो तुम ? यह या वह ?'

...मेरे पति की छाती जल रही थी। आनन्दातिरेक में बरसती आँखों के आँसू से शान्त होगी यह ज्वाला ? काली !

हम दोनों ने एक साथ माँ का ध्यान किया : साकारशक्तिस्वरूपा, दिगन्तवसना, खड्गमुण्डाभिरामा, पुरातनी, परमार्था... !

मैं हिन्दू हो गयी !

मम्मी ने सुना तो स्तब्ध रह गयी।...नहीं, मम्मी नहीं ! मरियम और काली में कोई अन्तर नहीं। एक ही शक्ति के दो नाम !

बार्कर-काण्ड के दस-बारह दिन बाद सदर से फादर आये। मेरे ड्राइंगरूम को कालीमन्दिर समझकर बाहर ही रहे—बरामदे पर। उन्होंने मेरी ओर गौर से देखा। मेरी आँखों में कुछ देखने की चेष्टा की।...परमगुरु ने मेरे मन के पद्मासन पर माँ की मूर्ति प्रतिष्ठित कर दी है। क्या देखते हो फादर ? मरियम और तारा !...फादर दो कदम पीछे हट गये।

...भागो मत फादर ! दो कदम आगे बढ़ जाओ। मुक्त, उदार हृदय से विचारो—तुम

भी मातृपूजक और हम भी।

फादर तेजी से रोजरी के दाने घुमा रहे थे। उन्होंने मुझे कुछ भी नहीं कहा। एक बार माँ काली की छवि को गौर से देखने के बाद, कुछ बोलने को उनके ओठ फड़के। किन्तु, चुपचाप रहे। फिर धीरे-धीरे बरामदे से नीचे उतर गये।··· बहुत दुखी, बहुत अप्रसन्न !

मम्मी ने स्पष्ट शब्दों में कहा–'क्या बुरा किया ! इसी जिले में दो राजा और एक जमींदार की अंग्रेज पत्नियों ने हिन्दू धर्म को स्वीकार किया है।' फादर ने अपनी सम्पनी में बैठने के बाद माँ को घायल करने की चेष्टा की–'मदाम ! तुम भी अपने लिए कोई हिन्दू पकड़ो !'

मम्मी घायल नहीं हुई। मम्मी को बहुत सहना पड़ा है, जीवन में। उनके किसी पुराने घाव को ठेस लगती है, ऐसी बातों से। मैं जानती हूँ, मम्मी कई दिनों तक मौन रहेगी।

एक ही रात में, अचानक दस-दस गाँव के अशिक्षित लोगों को धर्म-परिवर्तन करानेवाले अपने धर्म की एक सामान्य महिला से इतने अप्रसन्न क्यों !

मम्मी ने ठीक समझा है–'धर्म-परिवर्तन करके किसी नेटिव राजा की रखैल की तरह रहने से इन्हें दुख नहीं होता। तुम देवी-देवताओं की पूजा करने लगी हो। आचार-विचार भी बदल गये हैं, तुम्हारे। तुमने फादर को बैठने के लिए कुश की आसानी क्यों दी ? तुम वेदान्त क्यों सुनाने लगीं ! तुमने मरियम और काली को समतूल कर दिया···!' मम्मो हँसी। मम्मी की उल्लासिनी मूर्ति माँ ! हँसती है–माँ काली हँसती है ! मुझे क्या भय ? क्या भय ?

ब्रण्टी के पति राजा महीपालसिंह अच्छा करते हैं। प्लाण्टरों को साल में चार-पाँच भोज देते हैं; गार्डन-पार्टी, कॉकटेल और एटहोम देकर मुँह बन्द कर देते हैं। राजा महीपालसिंह की शिकारपार्टी का निमन्त्रण ! पूर्णिया-डे के उत्सव में, राजा साहब की शिकारपार्टी की तारीफ सुनाते समय बूढ़े मोबर्ली के मुँह से, वास्तव में लार टपक पड़ी थी··· 'गैलेंन्स ऑफ गैलेंन्स व्हाइट हॉर्स एण्ड ऑल दैट यू वाण्ट इन ए जंगल !' मिसिस मोबर्ली राजा साहब के साथ हाथी पर चढ़ने का अनुभव बताते समय कुरसी हिलाने लगी थी।

ब्रण्टी ने मुझे बताया–'राजा साहब के सामने सभी प्लाण्टर्स हाथ जोड़े खड़े रहते हैं।' मैंने एक मीठी चुटकी ली थी–'इसीलिए, प्लाण्टर्स क्लब की सीमा के इस पार अपनी गाड़ी लाने की इजाजत नहीं !'

'सिस !' ओठों पर उँगली डालकर ब्रण्टी ने मद्धिम आवाज में बताया–'ही'ज़ टू क्लेवर। उसने खूब पहचाना है इन्हें। मिस्टर विलियम को देखा न ! कैसी-कैसी शेरमार कहानियाँ सुना रहे थे ! वास्तविकता यह है कि पिछले साल नेपाल के जंगल में एक गेंडे को देखकर हाथी पर बेहोश हो गये थे···'

ब्रण्टी के पति से, पूर्णिया-डे के लिए दो हजार रुपये लेकर भी प्लाण्टर्स क्लबवालों

ने उनको निमन्त्रित नहीं किया। इस बात की चोट ब्रण्टी को लगी थी। बोली–'देखना ! वह जरूर इसका बदला लेगा ! यों लापरवाह और मस्तमौला है मेरा राजा। लेकिन जिद्दी भी है। चाहे तो खिताब भी ठुकरा दे, इस जिद्द में।··· राजा ने एक अलग क्लब की स्थापना करवायी है, स्थानीय वकीलों के द्वारा। जिले-भर के राजाओं, जमींदारों और वकीलों का क्लब होगा–स्टेशन-क्लब ! मुझे सेक्रेटरी बना रहे हैं !'

मेरे पतिदेव कह रहे थे–'राजा महीपालसिंह अन्दर-ही-अन्दर चिढ़ा रहता है, एक-एक प्लाण्टर से। मौका पाकर एकाध को बेइज्जत भी करता है। और, कभी-कभी अपने पाले हुए डकैतों की पीठ ठोंक देता है। –रात में डकैती हो जाती है !'

ब्रण्टी का हरकारा सिपाही कल आया।

ब्रण्टी ने बधाई भेजी है–'राजा कहता है, तुमको बहुत अच्छा आदमी मिला है, बहादुर और बुद्धिमान ! ए बिग संस्कृत स्कॉलर··· नाउ यू नो बेटर ! क्लब के उद्घाटन में तुम्हारी अनुपस्थिति खटकी। स्टेशन-क्लब में तुम्हारे पति की ओर से पार्टी का प्रबन्ध कब करूँ ? हाँ, मैं सेक्रेटरी जो हूँ !'

मैंने भी लिखकर जवाब भेजा–'क्लब के उद्घाटन मे नहीं आ सकी, दुख है। जब सुविधा हो, पार्टी की व्यवस्था करो। मुझे खुशी होगी ! ··और, यह मेरी जिन्दगी की अन्तिम अंग्रेजी-पार्टी होगी। इसके बाद तो प्रीतिभोज ! टेबल-कुरसी नहीं, चन्दन की पीढ़ी पर बैठना होगा तुम्हारे गुलथुल राजा को !'···

मेरे अग्रेज भाई-बन्धु क्यो नाराज हैं, यह मैं जानती हूँ !

मिस्टर बार्कर ने अपनी बदली करवा ली है–सोनपुर सेक्शन में। मेरे पति ने हँसकर कहा–'गीता ! तुम्हारा मोटर-ट्रोली खड़का ! हा-हा-हा ! तुम पर इलजाम लगाते हैं वे–एक डकैत, जालसाज, खूनी आदमी से तुमने रिश्ता किया है। बार्कर प्रचार कर गया है, मलय मे तुमने अपने स्वामी की हत्या की है !'··

शैतान !

मेरे पति यदि डकेत है, क्रिमिनल हैं, तो कानून किसका मुँह जोहता है ? पकड़कर फाँसी पर क्यो नही लटका देते ? प्रमाण इकट्ठा करना तो आसान है। अंग्रेजी राज मे एक इगलिश-हेटर इस तरह विचरण करे, यह आश्चर्य की बात है !

प्लाण्टर्स के प्रबल प्रताप के दिन अब नहीं रहेंगे, क्या ? सुना है, पाँच-सात साल पहले तक ये खून करके आते और जिला मैजिस्ट्रेट को लिख भेजते–'आज मैंने एक जगली आदमी का शिकार किया है। बनमानुस !'

किन्तु, आश्चर्य ! मेरे पतिदेव अंग्रेजों के सभी आरोपों को स्वीकार करते हैं–'हाँ, गीता। तुम्हारे भाई-बन्धु ठीक ही कहते हैं। मैं डकैत हूँ, जालसाज हूँ, ठग हूँ, खूनी हूँ !'

पहली बार, अपने स्वामी के साथ इलाके में गयी थी, मैं। अर्धवार्षिक कैम्प में। मधुचन्दा कैम्प। मधुचन्दा, गाँव का नाम है। दुलारीदाय के कगार पर, चार मील दक्खिन बसा हुआ, मधुचन्दा। मधुचन्दा–हनीमून !

खजाना-वसूली के लिए जनरल मैनेजर का कैम्प इलाके में दो बार जाता। अर्धवार्षिक—एक सप्ताह का। वार्षिक—सवा महीने तक।···

···राशि-राशि पुरइन के फूलों की वह सेज ! गाँव की मालिन लड़कियों को एक-एक गिन्नी पुरस्कार दिया गया था।

पुरइन की सेज पर, महाभाव से मतवारी मैं ! मेरी आँखें नशे में चूर ! मैं बोली—'काला, डकैत ! डकैत नहीं तो और क्या ? तुमने तो मेरा सबकुछ लूट लिया। काली का बेटा काला !'

'मुझे दण्ड दिया जाये, महारानी विक्टोरिया !' मेरे स्वामी ने मुस्कराकर हाथ जोड़े। मैंने चरण-धूलि ली, झुककर। मैंने अपने स्वामी को डकैत कहा ? मुझे क्षमा करो देव···!

'गीता ! मैं आज जी खोलकर कहना चाहता हूँ !'

[कमल के कुछ फूल अंकित हैं—पाण्डुलिपि पर !]

'क्या, तुम समझती हो कि बिना डकैती किये ही आदमी राजा हो जाता है ?'

लड्डू लड़े तो बुँदिया झरे !

गरुड़धुज झा जरा सोच में पड़ गया है। लड्डुओं को लड़ाकर तीन साल तक झड़ी हुई बुँदिया बटोरी है उसने। लेकिन, अब तो लड्डू लड़ते ही नहीं ! ···बुँदिया कैसे झरे ?

उसको भरोसा था, भूदानियों और सरबन बाबू में जमकर मुकदमेबाजी होगी। किन्तु, भूदानी लोग भी अजीब जीव होते हैं ! इतनी मार पड़ी, सिर फूटे और हाथ-पैर टूटे। पर बजाप्ता फौजदारी की बात तो दूर, पुलिस-केस भी नहीं किया भूदानियों ने ! घायल भूदानियों को अस्पताल भेजकर, खँजड़ी पर गीत गाने लगे—भइया जमींदरवा से करता अरजिया से··· । और, सरबन बाबू को क्या कहा जाये ? भूदान के नेता ने दरवाजे पर आकर जरा-सा अनशन करके मरने की धमकी दी तो दोनों भाई सर्वोदय-आश्रम में जाकर माफी माँग आये। गरुड़धुज माफी माँगनेवालों और देनेवालों—दोनों को हिजड़ा समझता है।···

गरुड़धुज झा घर-घर का हाल जानता है।···ऊँचे चढ़कर देखा। घर-घर एके लेखा। लेकिन, ऐसा कभी न देखा। गरुड़ झा ने क्या, किसी ने नहीं ! और कोई माथा घुमावे या नहीं, गरुड़ झा भंग के नशे में कभी-कभी सबकुछ देखता है। एक-एक घर की तस्वीर···एक-एक परिवार के हरेक सदस्य को हवा में डोलते हुए देखा है, उसने। इसलिए, गरुड़ झा को पूरा भरोसा हुआ—उसका व्यापार कभी मन्दा नहीं होगा। गाँव थिर नहीं। पहले से भी ज्यादा वेग से दौड़ रहा है सारा समाज ! गरुड़ झा बेकार घबराता है। सोच में पड़ने की जरूरत नहीं। लड्डू लड़ेंगे, बुँदिया झरेगी।··· झर-झर झरते हुए लोग ! ···

बता दे कोई गरुड़धुज को एक भी परिवार की ओर—आँख के इशारे से ही

सही ! कोई घर साबुत नहीं। क्या गरीब, क्या अमीर ! इतने दिनों तक सर्वे में जमींदार की जमीन हासिल करने और दर-रैयत से जमीन बचाने के दाँव-पेंच में रहे। अब, परिवार का एक प्राणी दूसरे प्राणी की ओर सन्देह-भरी निगाह से देख रहा है। एक-एक आदमी अपने को एक किला बना रहा है। सभी कछुए हुए जा रहे हैं…!

गरुड़धुज झा के पास दिन-रात मुवक्किल लोग चक्कर मारते हैं।

"क्यों झाजी, मान लीजिए कि एक बाप के तीन बेटे थे। मर-खपकर दो भाई रहे। तीसरे भाई की बेवा को छोड़कर दोनों भाई की बहू समझ लीजिए कि कागबन्ध्या और कठबाँझ हैं। तो, बचे हुए दोनों भाइयों का हक ?"

"हक ? जो हाथ सो साथ, जब तक जीवे पेट भात !"

"क्यों पण्डितजी, बाप को हक है कि अपनी स्त्री के नाम से उइल कर जाये–बेटे के रहते ?"

"बाप को कुष्पुत्तर करने का हक हमेशा दे दिया है, पण्डितों ने ! क्या करोगे ?" गरुड़ झा पत्थर का दाँत चमकाकर, खैनी ओंठ में दबा लेता।

"आप ही विचारिए ओझाजी ! बेटा अपने कोख का है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि बेर-बेर हजार-हजार रुपैया माय-माय कहकर ले और देने के बेर उकट-नाकट गाली ! यह कि उसके बाप या दादा का कमाया हुआ पैसा है?… जब से आयी हूँ–राख की ढेरी ही देखी ! ओझाजी ! बेटा-किरिया कहती हूँ–सब मेरे नैहर का है ! बोलिए, दूसरी जगह मेरा रुपैया बैठा तो नहीं रहता ? सो, कल से कह रही हूँ, कागज बना दे भैया के नाम। तो, लाठी लेकर मारने आये दोनों प्राणी ! ओझाजी… !"

"छिः-छिः ! आपकी-जैसी स्त्री भी रोती है, भला ? बिना कागज बनाये, अब एक पैसा भी नहीं दीजिए। आ रहा है, मौका सामने ! आपके बेटे को फिर हजार-बारह सौ की जरूरत होगी।" गरुड़ झा फुसफुसाकर बोलता है ! …

और तो और, गरुड़धुज झा का सबसे जिगरी दोस्त रोशन बिस्वाँ भी दरार पड़ी दीवारोंवाले घर में ही है। आज नहीं तो कल, उसका बेटा लड़ाई-झगड़ा करके भिन्न होगा-ही-होगा। गरुड़ झा सतर्क होकर देख रहा है–दीवार गिरी-गिरी ! रोशन बिस्वाँ या उसका बेटा, दो में से एक अथवा दोनों ही उस दीवार के नीचे आ जायें तो ? …गरुड़ झा ने अपना नियम बना लिया है। पुरोहित-जजमान का पुराना रिश्ता उसका घर-घर से है। हर घर में श्राद्ध करके वाजिब दक्षिणा लेने का हक उसको है।…मुवक्किलों को अपने दरवाजे पर से निराश करके लौटाने में पाप होता है मुकदमाबाजों को !…लेकिन आश्चर्य ! बलभद्दर का शिवभद्दर घर से लड़कर जब इधर-उधर मारा-मारा फिरने लगा तो गरुड़ झा ने सोचा, एक चरखी को जरा चला दिया जाये ! सो, एक-एक कर तीनों भाइयों को पम्प दिया गरुड़ झा ने। फूले भी थे तीनों, अलग-अलग खूब। लेकिन, लगता है कहीं से हवा धीरे-धीरे लीक करती है। इधर कुछ ढीले हैं, तीनों !

"क्यों लुत्तो बाबू ! अपने दोस्त बीरभद्दर बाबू को नहीं समझाते ? समय टल जाने पर टाइटिल-सूट तो नहीं चल सकता; कलेजा कूटने से भी कुछ नहीं हाथ आयेगा, बाद में !"

"झाजी ! कौन किसका दोस्त ! किसको क्या समझाया जाये ! मालूम नहीं आपको ? आज सुबह से ही तीनों भाई हवेली में घुटना टेककर दही-बुनिया उड़ा रहे हैं। पता नहीं क्या बात ! धरकट्ट कहीं के !" –लुत्तो उदास है।

"हवेली में ? सो कैसे ?" गरुड़धुज ने थू-थू कर खैनी थूक दी।

"तिरिया-चलित्तर ! बीरभद्दर की स्त्री कालीपूजा की रात कीर्तन सुनने गयी। न जाने वहाँ कैसे जित्तन से आँख लड़ गयी। देवर लगता है न !...दूसरे दिन सुबह उठकर, गोद में एक महीने के बेटे को लेकर चुपचाप हवेली में जाकर हाजिर हो गयी। सुना है, जित्तन ने पाँच भरी सोने की मोहनमाला दे दी। अपने बचपन की मोहनमाला क्या दे दी, तीनों भाई गद्गद हो गये।...आज तीनों भाई मिलकर हाजिर हुए हैं। लेगा, एक-एक मोहनमाला तीनों भाई–देखूँगा ! वहाँ अन्दर हवेली में कौन घुसी है ? तजमनिया कानी कौड़ी नहीं देगी !" लुत्तो ने अपनी उदासी को ढँकते हुए कहा–"जाने दीजिए ! पीछे मजा मालूम होगा ! कांग्रेस में तो अब गुजर नहीं, उसका। सभापतिजी से कहकर तुरत इसपेल्ट करवाते हैं।...ग्राम-पंचायत के चुनाव की तारीख भी अब करीब है।"

रोशन बिस्वाँ साइकिल की घण्टी बजाता हुआ आया। आजकल, उसने अपनी साइकिल में मेढक की तरह बोलनेवाला हारन भी लगाया है...

–पें-ऐं-ऐं-ग-पें-ऐं-ग-ग !

लुत्तो चमक गया। रोशन बिस्वाँ ओठ चाटता हुआ साइकिल से उतर पड़ा। फिर, मुस्कराकर दो बार जीभ ओठ पर निकालने के बाद बोला–"सुना कि आज पोखरा में महाजाल डालने गये हैं, चौधरी तीनों भाई !"

गरुड़धुज झा ने कनखी देते हुए कहा–"सब मछली निकलेगी !"...न जाने क्यों, तीनों एक ही साथ ठठाकर हँस पड़े–हा हा-हा-हा !

हँसकर कुछ हल्का हुआ दिल। तब गरुड़धुज झा ने गम्भीर होते हुए बात खोली–"हाँ, अब ग्राम पचायत के बारे में क्या सोचते हो, लुत्तो बाबू ?... जित्तन तीनों भाइयों को ही नही, सारे गाँव के लोगों को तीन दिन छः शाम खिलाने का प्रबन्ध कर रहा है। सो, फोकट में नहीं। कुछ समझते हो ?"

"खूब समझते हैं।" लुत्तो और रोशन बिस्वाँ ने एक ही साथ कहा।

रोशन बिस्वाँ आजकल लुत्तो को रुपये-पैसे से भी मदद करने लगा है, समय-असमय ? बोला–"रास्ते में खड़े होकर बतियाना अच्छा नहीं। कहीं चलिए... !"

"कहाँ चलें ?" गरुड़धुज झा ने कूट किया–"आपके भी यहाँ बैठकर कोई बात बतियाना अब ठीक नहीं।" रोशन बिस्वाँ ने कबूल किया–"हाँ, आप ठीक कहते हैं झाजी ! अब मेरे घर में भी छेद हो गया है।" बहुत सोच-विचारकर चले

तीनों, सबसे सुरक्षित स्थान··· नट्टिनटोली !

महीचन रैदास से मलारी की बात मत पूछे कोई ! लड़ाई हो जायेगी उससे, मुफ्त ही। आजकल, वह दिन-रात कलाली में पड़ा रहता है। जाने के पहले मलारी ने अपनी माँ के हाथ में पचास रुपये दिये थे, रमदेवा के सामने ही। मलारी के घर से गायब होने के बाद मलारी की माँ ने धरती खोदकर छोटकी टुमनी निकाल के देखा था।···रमदेवा अपने बाप का बेटा है, वह मलारी नहीं। महीचन से छिपाकर रखेगी रुपये घर में ? मार-पीटकर छीन लिया–"साली ! जैसी माँ वैसी ही बेटी ! तू इस रुपये से मदनपुर के मेले में सैल-सफ्फड़ करने जायेगी ? जातिवालों को भात कहाँ से देंगे री साली ? तेरी बेटी ने सरकारी शादी की है तो कहे न सरकार-बाप से–जातिवालों का भात कहाँ से आवेगा ? बोल ? खोलती है मुट्ठी कि लगाऊँ लात ?"···

जाति के सरदार झल्लू मोची और दीवान घोतन मोची को वह रोज दारू पिलाता है। यह काग्रेसी बात नहीं कि बालगोबिन्द से अब कहने जाये कुछ। बालगोबिन्द भी जाति के सरदार से बाहर कैसे हो सकता है ? महीचन ने जाति के सरदार से मिलकर तय किया है, समय-समय पर मलारी की माँ से जातिवाले भोज जरूर माँगे। हुक्का-चिलम बन्द करने की भी धमकी दें।···

महीचन, अपनी बेटी पर जन्म के बाद से ही दाँत कटकटाता है।···साली इतनी गोरी कैसे हो गयी ! सौर-घर मे ही घुसकर उसने अपनी स्त्री को लात से मारते हुए कहा था–"अब बोलो ! यह गोरी-लारी छौंडी मलारी कहाँ से आयी ? इसका मुँह भोगेन्दर भुमिहरवा के जैसा क्यों है ?"

कई बार महीचन ने इस लड़की को गला टीपकर मारने का भी विचार किया।···लेकिन, उसकी माँ हमेशा कलेजे से सटाये रहती बेटी को। नाम लेकर पुकारती–'मलारी !' महीचन चिढे-तो-चिढे। अपनी बेटी को, अपने पेट की बेटी को वह बचायेगी नही ?

मलारी बढ़ती गयी और महीचन का गुस्सा भी उसी अनुपात में बढ़ता गया। मलारी की माँ कम चालाक नही। दो वर्ष की उम्र में ही मलारी की शादी करा दी उसने, एक जवान रैदास से ! ··· दो वर्ष की बेटी अपना धन नही। पराये की चीज है, कोई कुछ नही कहे ! लेकिन, वर्ष लौटते-लौटते मलारी बेवा हो गयी। दो बरस की बेटी की माँग भरवाकर उसने जमाई को घर-जमाई करके रखा।··· महीचन एक साल नही, दो साल तक देखता रहा, तिरिया-चलित्तर का नया-से-नया खेल। आखिर, एक दिन घर-जमाई और ससुर ने एक-दूसरे पर अपना पुराना गुन फेका। मवेशी को जहर-महुरा खिलाने में दोनो मशहूर !

मलारी की माँ को कुछ नही मालूम ! जानते हैं, ऊपर जो जल रहे हैं देवता सूर्य महाराज ! मलारी की माँ को मालूम रहती बात तो···। साँप भी मारती और लाठी भी नहीं टूटने देती। अपने जमाई को भिन्न करके उसका कारबार अलग

कर देती, मलारी की माँ। यह काम तो दोनों ने गुपचुप करने का मन्सूबा किया।

···जिसको गोली पहले लगी वह मर गया। मलारी बेवा हो गयी !

मलारी की माँ ने देखा है, बचपन से ही मलारी की बुद्धि बबुआनों की बेटी-जैसी ! पढ़ने-लिखने का ऐसा शौक कि भागकर कब चली गयी एक दिन पढ़ने, किसी को मालूम नहीं। और, ट्रेनिंग भी लेने गयी ठीक वैसे ही ! ···भोगेन्दर बाबू ने एक दिन रास्ते में देखा था मलारी को और देखते ही रहे थे, कुछ देर तक ! आखिर, जहाँ की थी वहीं चली गयी। मलारी की माँ ऊँघ रही थी। कोई आ रहा है, शायद !

"महीचनजी !"

"कौन है ? क्या काम है ?"

"मैं दीवाना। महीचनजी कहाँ हैं, माँजी ?"

दीवाना के दावे को कोई गलत साबित कर दे ! ···वह सबसे पहला माई का लाल है गाँव का, जिसने खुले शब्दों में मलारी से प्रेम की भिक्षा माँगी थी, बचपन में ही। कोई, कसम खिलाकर पूछे मलारी से। आज तक दीवाना ने किसी लड़की की ओर नजर भी उठाकर नहीं देखा। मन-ही-मन कलात्मक प्रेम करने लगा वह। और, उधर सुवंशलाल जीवन-बीमा करते-करते लूट ले गया।···जीवन, यौवन-प्राण गँवाकर भी वह जी रहा है–माँ सरस्वती की कृपा ! ···

दीवाना ने बहुत सोच-विचारकर एक नयी बात निकाली है। वह रैदासटोली के सरदार, दीवान से लेकर पंच-पंचान तक से साफ-साफ कहेगा–सुवंशलाल ने मलारी के साथ, सभी रैदास की जाति ले ली है। दीवाना ऐसा नहीं ! वह जाति लेगा नहीं। वह देना चाहता है–वह रैदास हो जायेगा। हरिजन ! ···हरिजन होने में नफा हो या न हो। गांधीजी के प्रिय थे–हरिजन ! वह हरिजन बनकर दिखला देगा, वह रैदास होकर रहेगा। अपनी जाति में लेकर देखें, हरिजन के लिए जान देता है या नहीं। वह ढोल बजायेगा, पिपही बजायेगा, चाम का कारबार करेगा, चमरौधा जूता सीयेगा, यहाँ तक कि माल-मवेशी को जहर-मुहरा भी खिला सकता है। उसके दो दर्जन बैल, एक कोड़ी गाय लोग चुराकर ले गये हैं। वह क्यों छोड़ देगा ? और, यदि कहें जातिवाले कि जूता अण्डी के तेल में भिगोकर फलाने के सिर पर मार आओ, तो वह भी करके दिखा देगा दीवाना।··· जिसके सिर पर कहें !

"बाबू साहेब, जरा गला दबाकर बोलिए। अड़ोस-पड़ोस में हितमुदैया लोग हैं।"

"नहीं, नहीं। मैं डंके की चोट पर बोलूँगा। सुनिए माँजी ! मैंने कल एक कहानी लिखी है। कहानी छपने पर तो दुनियावाले पढ़ेंगे। लेकिन, आप लोगों को पहले सुना देता हूँ। 'कलात्मक प्रेम की सच्चाई की परीक्षा' उसका नाम है। महीचनजी को भी आने दीजिए ! हाँ, हाँ। मैं इसी चटाई पर बैठूँगा ! दोनों सुनिए मिलकर। देखिए कि आप लोगों के दुश्मन, ऊँची जातिवालों पर, बड़ी-बड़ी पगड़ीवालों पर, किस तरह भीगा हुआ चमरौधा लगाया है, मैंने।··· हरिजन-उद्धार खेल बात नहीं! कोई सच्चा हरिजन-प्रेमी नहीं।" दीवाना का दावा है···महीचन ने बाहर से ही पुकारकर कहा–"डेरी में कौन बोलता है रे रमदेवा ?"

रमदेवा ने दौड़कर बाप की अगुवानी की। उसने उत्तेजित होकर कहा—"रजपूत टोली का है, बप्पा ! एक लाठी माथा पर कसके लगायें ? मैया को भी फुसलाने आया है।"

मँगनीसिंह दीवाना जानता है, किस देवता की पूजा में कौन-सी चीज चढ़ती है।···महीचन ने दारू की बोतल को ढिबरी की रोशनी में देखकर समझ लिया—तीस नम्बर !

नट्टिनटोली गुलजार है, फिर !

गंगाबाई नट्टिनटोली की सरदारिन ही नहीं, मालकिन भी हो गयी है। बिना उससे पूछे अब कोई किसी पुरुष से प्रीत नहीं जोड़ सकती। मेले में गंगाबाई ने बड़े-बड़े हाकिमो की बोलती बन्द कर दी। गिरोह की नट्टिनों ने गंगाबाई की मर्दानगी देख ली है। वे, अब अपनी सरदारिन का पैर पूजती हैं। सरदारिन की डिबिया में आजकल अफीम की दूनी गोलियाँ रहती हैं।··· हिरिया छौंड़ी पर नजर रखना होगा। मेले का खाया-पिया मुँह है। कहीं अपथ-कुपथ खाकर जान न दे दे। माँ तो उसकी चण्डालिन है !

"क्यों री हिरिया ! तुझे कबूतर का मांस खाना मना है न ? तेरे लिए आग है आग। सो, समझ ले !"

"नहीं काकी ! माँ से कह रही थी कि काली माय को एक जोड़ी कबूतर क्यों नहीं चढ़ा आती, मानत करके।"

चढ़ती अगहन की साँझ ! दूर, दुलारीदाय के खेतों में अखता अगहनी धान काटनेवालों की टोली पुआल में आग लगाकर हुलास से ताप रही है। गंगाबाई अपने ओसारे पर अँगीठी के पास खाट पर पाँव मोड़कर बैठी है। गेंदाबाई एक बोतल दारू पीकर आ रही है। अँगीठी के पास आकर हँसती हुई बोली—"जाड़ बड़ी जाड़, बूढ़ी खेलाड़; बूढ़ा ·ल ठण्डा कि कथरी सँभार—हि-हि-हि-हि !"

"दुर हरजाई !" गंगाबाई की मिस्सीमज्जित दन्तपंक्तियाँ अँधेरे मे नहीं दिखायी पड़ती हैं। लगता है, मुँह के अन्दर अँधेरिया का एक टुकड़ा समा गया है। निःशब्द हँसी हँसती हुई बोली—"ठहर ! आ रहा है तुम्हारा ताड़ का पेड़ गरुड़ा और कड़ाही की पेंदी बिस्वॉ।" गगाबाई की बात पर गेंदाबाई हँसी—"हँ-हँ-हँ !" फिर बीड़ी सुलगाती हुई बोली—"जानती है नानी, ई करिया कलन्दर का मन तो डोल रहा है ?"

"मन डोल रहा है ! किस पर ?" गंगाबाई ने इशारे से पूछा।

"और किस पर ?" गेदा ने हिरिया के घर की ओर कनखी मार के कहा—"मेरे दूसरे आसामी की मेहरबानी है, ई सब। वह देखने में ही लम्बा नहीं, उसकी जीभ भी लम्बी है। उसी ने बिस्वाँ को उचकाया है। मैं खूब जानती हूँ। आवे तो आज !"

गंगाबाई मन-ही-मन हिरिया की माँ पर नाराज है। वही कहावत है न—छौंड़ी सिखावे बुढ़िया को खेल, देखो भाई समय का खेल।···मेले की बहुत-सी बातें हैं। गंगाबाई किसी दिन खोलकर मन को साफ कर लेना चाहती है। अवसर देख रही

है। बोली—"तो, इसमें डरने की क्या बात ? मेले में हिरिया की माँ ने ही लड़ाई-झगड़ा करके कानून पास करवाया है कि किसी के मवक्किल को कोई नहीं फुटकावे। जो कानून मेले में, वही गाँव में ! ··· हिरिया की बीमारी का पता नहीं है अभी किसी को !"

गंगाबाई से रार करके पार नहीं पा सकती हिरिया की माँ। मेले में जाकर गंगाबाई का कलेजा और भी दो हाथ बढ़ गया है। उसके बाल फिर से काले हो रहे हैं और आजकल वह दिन-रात रंगीन साड़ी पहनती है।··· गंगाबाई नहीं रहती तो कोई नट्टिन इस साल मेले में तम्बू नहीं गाड़ पाती। कितने झमेले ! ···

सबसे पहले ही, मेले के मुस्ताजिर ठेकेदार से ठकठक ! मेले से आध मील पच्छिम ही सरकारी सिपाही के साथ रास्ता रोक के हुकुम सुना दिया—"नया कानून पास हुआ है। मेले में कोई रण्डी-पतुरिया, मोजरा गानेवाली हो या तम्बुकवाली, किसी को बसने का हुकुम नहीं है। गाड़ी खोलो ! नाम लिखाओ, सिपाहीजी को पहले··· ।" मेले के चारों ओर छेकी हुई रण्डियों के झुण्ड ! जिले के बड़े-बड़े कस्बे की कस्बिनों के होश उड़ रहे थे, देहातिनों की क्या बात ! अपनी-अपनी ऐंठ-गेंठ, गठरी-मोटरी, हाँस-मुर्गी, लटकन-फुदना, तम्बू-कनात के साथ कुछ धन-खेतों के पास, कोई पक्की सड़क के पुल के नीचे तीन दिन से पड़ी हुई थीं।···क्या करेंगी ? सिपाही का पहरा चारो ओर। मुजरा-खेमटा गानेवालियाँ फारबिसगंज स्टेशन के प्लेटफार्म पर, पड़ी-पड़ी आती-जाती गाडियों से उतरनेवाले यात्रियों को देखकर कहतीं···इस बार; पाट का भाव तेज है न ! न जाने, खुदा को क्या मंजूर है ! सभी किस्म की नटिनियों की जमात मुरझायी हुई पास के पैसे तुडाकर खाती रही।

तीसरे दिन, गंगाबाई पर परानपुर परती पर रहनेवाली कोई देवी आकर सवार हो गयी, शायद।···देहात की नट्टियो में भी परानपुर की नट्टिनें ! जो पहली बार मेले में तम्बू लेकर आयी हैं। बसेटी-हाँसा, होटिल-बँगला, टोल मीरगंज और खुट्टी-खरैया की खुर्राट नट्टिनों से कुछ मदद नहीं माँगी गंगाबाई ने। गाड़ी से उतरकर सीधे मेले की ओर चली।···तम्बू नहीं गाडने दे, मेला जाने से भी रोकेगा कोई ? वह सीधे मेले के डाकबँगले पर गयी और चौकीदार को सलाम कर बोली—"अन्दर में कौन हाकिम हैं भैया ?"

चौकीदार ने धीरे से कहा—"इशडिवो साहेब हैं।"···इशडिवो कहते समय उसके मुँह से एक सिसकी सीटी-जैसी निकली—शी-ई !

लेकिन गंगाबाई डरी नहीं। डाकबँगले के बरामदे पर जाकर गुहार दी—"हुजूर माय-बाप !"

डाकबँगले की कोठरी से तुरत बाहर आ गये, हाकिम ! गगाबाई ने सलाम करके कहा—"हुजूर माय-बाप ! मेले में यदि नहीं बसने देंगे तो हम खायेंगे क्या ? कौन उपाय करके पेट पालें ?" गंगाबाई पर सचमुच कोई देवी ही सवार हुई थी !

हाकिम ने झुँझलाकर सिगरेट की राख झाड़ते हुए कहा—"क्या बक-बक करती है ? दुनिया में कोई काम ही नहीं··· इ-इ-इसके सिवा ?"

"हुजूर ! बेअदबी माफ करल जाउ। मेले की आमदनी से ही हम लोगों का साल-भर का खर्च निकलता है।··· ओर, जब सरकार की ओर से ममानियत है तो कानून सबके लिए एक बराबर है। एकतरफा, गरीबमार नहीं कीजिए हाकिम बाबू !"

"क्या एक़तरफा ?"

"हुजूर, सरकार जब कांगरेस का है तो सब पर एक ही नजर रखनी चाहिए।··· हमारे गाँव में भी खूब झण्डा-पत्तखा उड़ता है ! बड़े-बड़े कांगरेसी और सोशलिस्टपाटी के झंखाड़ लेडर लोग हैं। जित्तन बाबू, मनमोहन बाबू, मकबूल बाबू, लुत्तो बाबू। नाम जरूर सुना होगा हुजूर ने।"···

हाकिम थोड़ा और गुस्सा हुए तो गंगाबाई ने हाथ चमका-चमकाकर समझाना शुरू किया—"हाँ ! पान बेचनेवालियाँ—गिनते जाइए—एक। दोयम—हरमुनियाँ पर घूम-घूमकर मेले की हरेक पट्टी में गाने-नाचनेवालियाँ, न जाने कहाँ से आयी हुई छोकरियाँ, किस देश की ! ···वही ! सुनिए, गा रही है—'ऊँची-ऊँची दुनिया का दीवार' वाला गीत। दारोगा-हवलदार, सिपाही-मुस्ताजिर सबके कन्धे पर हाथ डालकर गाती है न ! पाकिटकाट छोकरियाँ··· ।"

हाकिम साहब ने हाल में ही तरक्की पायी है। ऐसी औरत से पहली बार भेंट हुई है, उनकी।··· बार-बार ओवरकोट पहनने और खोलने लगे, बेकार !

"और भी ! तेसर नम्बर पर, एक बार चलके देख लीहल जाउ, अपनी चसम से। झूठ साबित हो तो हुजूर की जूती और मेरे ये ओठ।···ऊ ठेठर-नौटंकी कम्पनी से भरी हुई हैं—मुजरावालियाँ-पछवरनियाँ छौड़ियाँ ! बाह्नर में बड़की-बड़की सैनबोट में नाम लिख रखा है—मिच अलानी तो मिच फलानी !···सो सव क्या है ? देखना है तो चलकर देख लीजिए अभी। चाह की बेला है न अभी। नौटंकी कम्पनी और ठेठर कम्पनी के परदे के पीछे बड़के-बडके बाबू महफिल लगाके बैठल हैं। मारे तबला ठनक रहा है, चाह-बिस्कुट उड रहा है।··· नये हाकिमों को भी रिहलसल दिखलाते हैं, कम्पनीवाले। निसाफ कौन करेगा ? गरीबों का देखवैया को-ई-ई नहीं !"

इस इलाके के महफिल-मुजरा के माहिर बाबुओं का एक-न-एक दूत, किसी-न-किसी काम से हाकिमों के कैम्पों के पास चक्कर मारता रहता है।···सारे मेले में बिजली की तरह बात फैल गयी—एक देहातिन रण्डी की बूढ़ी सरदारिन हाकिम को सब भेद बता रही है। इलाके के बाबुओं में एक-से-एक कानूनची भी हैं, हाईकोर्ट की हवा खाये हुए। किसी ने बात सुझायी—मेले में नहीं बसने देते हैं, नहीं सही। मेले की चौहद्दी से सटी जमीनवालों से बातें करें। मेले के पास जिन बाबुओं की जमीन थी उनकी तकदीर खुल गयी।···

दिन डूबने के पहले ही जमीन के मालिकों से तस्फिया हो गया—दो रुपैया फी हाथ। अलग-अलग पट्टी के अलग-अलग रेट !··· मेले-भर मे मशहूर हो गयी, गंगाबाई। सभी उसको देखकर कहते—"देख, जा रही है···हाकिम से लड़कर हक हासिल करनेवाली ! ···जबरदस्त कलेजावाली ! ···बालिस्टर जैसा बहस करनेवाली !"

और, यदि गंगाबाई नहीं रहती तो हिरिया फारबिसगंज मेले से जिन्दा लौटकर

नहीं आ सकती थी। इस बात को हिरिया की माँ भी कबूलती है।··· मथुरा-मोहन कम्पनी के फरहाद के साथ भागने को तैयार थी, हिरिया। बहुत लम्बी कथा है। गंगाबाई किसी दिन सूद-सहित वसूलेगी !

"एक बात जानती है, नानी ?" गेंदाबाई दूसरी बीड़ी सुलगाती हुई बोली– "आजकल दोनों आसामी एकहि साथ आता है और एकहि साथ जाता है।··· अँधेरिया-इँजोरिया दोनों एकहि साथ। मन तो करता है कि एक दिन जाकर दिलबहादुर को नेंत आउँ !"

गेंदाबाई की मौसी आकर आग तापने बैठ गयी। फिर, इशारे से बताया, "तीनों।" अर्थात, आज तीनों एकहि साथ आये हैं ! गरुड़, रोशन, लुत्तो ! गेंदाबाई ने गला खोलकर पूछा–"कुछ लाया भी है या फोकट में कोई पंचैती-बखेड़ा करने आया है ? साथ में कुछ था भी ? बोतल-ऊतल ?" उसकी मौसी जानती है, कुछ लाया भी हो तो 'हाँ' नहीं कहना है। गंगाबाई को सुनाकर उठी गेंदा, बड़बड़ाती हुई–"फोकटिया मिटिंगबाजी करने के लिए नहीं है, हमारा घर। पतुरिया की जात, मेरे लिए जैसे जित्तन बाबू, वैसे छित्तन बाबू या कोई बाबू ! ···गेंदाबाई गीत गाते हुई राह लगी। बहुत पुराना गीत, पूरबी की एक कड़ी–हम-से-गेहुँआ-आँ-पीसावेला-आँ-बेदर्दाआ सैंयाँ-हो-ओ ! धुन सुनकर रोशन और गरुड़ की आँखें मिलीं। दोनों ने गर्दन हिलाते हुए एक-दूसरे को देखा ··· बहुत पुरानी बात याद करा रही है, गेंदाबाई !

गेंदाबाई दिलचस्प किस्म की औरत है।··· भिम्मलीय नाम अर्जन किया है उसने अपने गुन पर–मेरीगोल्ड ! और, गरुड़धुज, रोशन, दोनों मेरीगोल्ड कपहोल्डर।··· नया मुवक्किल लुत्तो ?

नट्टिनटोली से लौटते समय, तीन बजे रात को अचानक भिम्मल मामा मिल गये चौबटिया पर टहलते। पेड़ की आड़ से बाहर निकलकर पूछा–"क्यों, मेरीगोल्ड कप-होल्डरो ! यह तीसरा कौन है नया मुवक्किल ? ओ-ओ-ओ-हो-हो ! ··· ओ-ओ-हेक्सागनो, ओ पेण्टागनो, देखो, देखो ! लिटल-लिटल लुत्तो भी लोटस खोजता है नट्टिनटोली में। हार्रिबल, टेर्रिबल-ओ-ओ-ल, टेर्रि-बो-ओ ल ! ओ-ओ-हा-हा-हा !" भिम्मल मामा की पैशाचित हँसी सुनकर तीनों ने अपनी चाल तेज कर दी···पागल आदमी का क्या ठिकाना ! ··· दूसरे दिन सुबह को लोगों ने देखा, सुना और मान लिया, दौरा उतर गया। अब फिर भिम्मल मामा नॉर्मल हो गये हैं। उन्होंने जितेन्द्रनाथ से कहा–"लगता है, अब हम लोग नॉरमल हो रहे हैं। मुझे पुनः चक्र में युक्त करो !"

यह क्या कर दिया है ताजमनी ने ?

आजकल, जितेन्द्र एक पेग से ज्यादा नहीं पी सकता है। ताजमनी, उस दिन अलमारी से बोतल निकालकर ले गयी, माँ काली के आगे चढ़ाने। लौटकर बोली–"देखिए ! हँसी-खेल नहीं। यह 'कारन' है। मुझे ऐसे लोगों की कहानी मालूम

है जिन्होंने शराब की आदत को ढँकने के लिए 'कारन' सेवन शुरू किया और बाद में··· ।"

"बाद में क्या हुआ ?" जितेन्द्र ने पूछा।

ऐसे प्रश्नों का जवाब कभी नहीं देती, ताजमनी। वह जानती है, उसका जिद्दा जवाब सुनने के लिए नहीं करता है ऐसे प्रश्न। आज ताजमनी ने एक नयी बात कही। मीत को कलेवा खिलाती हुई बोली–"एक बात पूछूँ जिद्दा ! ···कहीं, फलाहार करने की जरूरत न पड़ जाये। ना मैया, मैं नहीं पूछूँगी !" उसकी आँखों में, मन की दबी हुई मुस्कराहट की छटा छा गयी।

"यों, मैं फलाहार करने की बात सोच रहा था। लेकिन, आज नहीं। गोबिन्दो पूछ गया है अभी–उई मोरोग टा'र की हबे ?"···

"हाँ, अच्छी याद आयी। गोबिन्दो को क्या आपने ही धर्मादेश दिया है, माँ काली को मुर्गा-मुर्गी चढ़ाने का ? आज यदि मालकिन-माँ रहती !" ताजमनी सचमुच नाराज हो गयी।

जितेन्द्र कहना चाहता था, मुर्गे ने क्या अपराध किया ? किन्तु, उसने हँसकर कहा–"परानपुर हवेली में कभी किसी पुरुष ने कोई धर्मादेश नहीं दिया। मैं अनधिकार काम क्यो करूँ ? तुमने गोबिन्दो को हुक्म दिया था शायद, बगैर प्रसाद के किसी किस्म का मास नही आयेगा, रसोई में।··· तुम कुछ पूछ रही थी न ?"

'हाँ। पूछती हूँ, आप इतना अकेला कैसे हो गये हैं ?"

"अकेला ?" जितेन्द्र को अचरज हुआ, क्या कहती है ताजमनी !

"अकेला नहीं तो और क्या ? पिछले पाँच दिन से आ रही है, बेचारी। और, किसी दिन आपसे यह नहीं कहते बना कि एक दिन यहीं खाइए। कल आयी तो आप कमरे में बन्द थे। मैं पूछती हूँ कि उस बक्से मे क्या है जो घण्टा··· ।"

जितेन्द्रनाथ अपनी हँसी रोक नहीं सका, हँस पड़ा। बोला–"उसको मेक्कानो कहते हैं। लेकिन, तुम इरावती से यह मत कहना कि मेक्कानो लेकर कमरे में बन्द थे।"

"तब तो जरूर ही कोई बुरी चीज है। आखिर है क्या इसमे ? क्या है मेक्कानो ?"

"बच्चों का खिलौना !"

"मुझे अब कोई ठग नहीं सकता। मैं इरावती दाय के पाम अभी भेजती हूँ, पखारन काका को।" ताजमनी, शरारत-भरी हँसी हँसती है।

जितेन्द्र ने कहा–"आओ, देखकर खुद समझ लो !'

जितेन्द्रनाथ अपना बनाया हुआ, ग्राम-नाट्य मण्डप ले आया।

"देखो···इसको कहते हैं मेक्कानो। बच्चे मकान बनाते हैं, पुल बनाते हैं, हबड़ा का पुल, भद्रा का डैम !"

ताजमनी एकटक देखती रही–"नहीं, नहीं। तोड़िए मत। रहने दीजिए न ! लेकिन, इसमें छिपाने की क्या बात है ?"

"बच्चों के खिलौने से खेलता हूँ, यह अच्छी बात तो नहीं।"

ताजमनी कुछ समझ नहीं पायी तो फिर अपने प्रश्न पर लौट गयी–"इसीलिए तो कहती हूँ, आप इस तरह कैसे बदल गये ? गाँव की गलियों में दिन-भर गायब रहनेवाला आदमी, इस तरह कैसे हो जायेगा ? क्या हो गया है, आपको ?"

"कुछ भी नहीं !" जितेन्द्रनाथ झेंप गया। मानो, किसी ने उसके कमजोर स्थल पर दृष्टि दे दी।

ताजमनी गम्भीर हो गयी थी।…जिद्दा नहीं जानते कि गाँव के अधिकांश लोग क्यों दुखित हैं। इतना पराया बना देना, खलेगा नहीं ? भोज खिलाने से क्या होगा ! नेह-छोह की भूख पूरी-मिठाई से नहीं मिटती।

ताजमनी ने दवा मापनेवाले गिलास से 'कारन' माप कर दिया। कमरे से निकलती हुई कह गयी–"बुर्ज पर जाकर बैठा कीजिए !"

दो रात बैठ चुका है, बुर्ज पर !

जितेन्द्र ने अनुभव किया है, एक पेग से एक बूँद भी ज्यादा पीकर अब वह नही सँभाल सकेगा।… पाँच घण्टों तक सुध-बुध खोकर बैठा रहना ! ‥ऐसा नशा उसको कभी नहीं हुआ।

तीसरी रात, ताजमनी चुपचाप पैर दबाकर बुर्ज पर देख आयी…बुर्ज पर बैठकर खाने की आदत लग गयी ? जै माँ, अब मैं कहाँ जाऊँ ? क्या करूँ ?

वह डरी थी। किन्तु उसे याद आयी, मालकिन-माँ होती तो हँसकर बोल उठती–'बाप की आदत ! …माँ तारा ! परती साध रहा है तुम्हारा बेटा। देखना !'

इष्टनाम जपती हुई वह सीढ़ी से उतरी।…आश्चर्य ! मीत भी सूँघ-साँघकर लौट आया। बेचारा ! बिना प्यार पाये लौटा हुआ, मीत !

नहीं ! आज जितेन्द्रनाथ बेसुध नहीं होगा। आज उसने एक पेग से भी कम 'कारन' लिया है।…बुर्ज पर बैठना अच्छा लगता है, इसका यह अर्थ नहीं कि आदमी किसी दिन बुर्ज से गिरकर अपनी जान दे दे !

जितेन्द्रनाथ ने बुर्ज पर चढ़कर देखा, दो मील उत्तर परानपुर स्टेशन पर गाड़ियों की क्रॉसिंग हो रही है। दक्खिन से आनेवाली गाड़ी निश्चय ही मालगाड़ी है।… ओ ! आज तो बारह तारीख है। बारह की शाम को… यही गाड़ी है, कोशी-प्रोजेक्ट-स्पेशल गुड्स-ट्रेन की प्रथम सवारी बारह की शाम को ! भिम्मल मामा ने कल ही सूचना दी है।…तो, यही है वह गाड़ी। कोशी प्रोजेक्ट के लिए सामान ढोनेवाली गाड़ी !

–धू-ऊ-ऊ-ऊ !…

मालगाड़ी में निश्चय ही चितरंजन-इंजन जुड़ा हुआ है। इसकी सीटी अन्य इंजनों से भिन्न है, आवाज के किनारे-किनारे एक सुनहली खनक !

–धू-ऊ-ऊ-ऊ !…

जितेन्द्रनाथ रोमांचित हुआ। 'कारन' पीने के बाद ऐसा ही रोमांच होता है

कभी-कभी।…तू-ऊ-ऊ-ऊ !…शंखध्वनि ? हवेली मे आज कोई व्रत-कथा है। किस व्रत-कथा में कितनी बार शंखध्वनि की जाती है, नहीं मालूम जितेन्द्र को। सात दिनों तक हवेली में कोई-न-कोई व्रत-कथा करवाने का प्रोग्राम है, ताजमनी का।… घन-घन बाजे शँाख !

वह मुस्कराकर सिगरेट सुलगाने लगा। आज वह बेसुध नहीं हो सकता ! उसने स्टेशन की ओर से निगाहें हटायी। फिर, एकटक परती को निहारने लगा, पूरब की ओर। ताजमनी जंगल लगाने पर भी व्यंग्य कर चुकी है—'पचास ट्यूबवेल लेकर आ रहे हैं, मुंशी जलधारीलाल दास ! और भी पचास चाहिए।'

अकेला ? जितेन्द्र ने इलियट की 'कॉकटेल पार्टी' की कुछ पंक्तियाँ स्मरण करने की चेष्टा की…नो इट इजण्ट दैट आइ वाण्ट टु बी एलोन, बट दैट एवरीवन'स एलोन, ऑर सो इट सीमूस टु मी।…किसी से बात करना नही सुहाता। नहीं-नहीं, इसका यह अर्थ नहीं कि मैं अकेला रहना चाहता हूँ। कम-से-कम, मुझे तो ऐसा ही लग रहा है, सभी हल्ला मचाते हैं, और भ्रम में हैं कि आपस में वार्तालाप कर रहे हैं। जानता हूँ मैं कि कुछ भी नहीं जानते वे, एक-दूसरे के बारे में। सोलह आने झूठा व्यवहार सारा !…

जितेन्द्र के मन मे किसी ने चुटकी ली, अचेतन मन मे इलियट के कोटेशनों से कण्टकित बाते गूँथने का मोह तो नही है, कहीं दबा हुआ ?…आज सुबह जितेन्द्रनाथ ने अपने बाग में देखा, एक नयी जाति का नागफणी उग आया है। डॉक्टर रायचौधुरी ने भी कहा, "रेयर कैक्टस !" ताजमनी कहती है, "काली-नागफणी है; कभी-कभार जन्मता है। लोग देखते ही इसे उखाडकर ले जाते है। कोई दवा बनती है, इससे।"

जितेन्द्रनाथ सिगरेट सुलगाता हुआ सोचने लगा, अपने बाग के बारे में। बैशाख-जेठ की धूप को कितने पेड़ बरदाश्त कर सकते हैं, देखना है। इरावती कह रही थी, "हजारीबाग की केनाडी पहाड़ी पर वन-विभाग ने सुन्दर पेड लगाये हैं। केनाल…!"

इरावती भी उलहाना दे रही थी—"तुम क्या हो गये हो जितेन्द्र ? इतने निर्मोही हो गये कि…।" जितेन्द्र को याद आयी, उसने कहा था एक रात मल्लिकविला की बालकनी में खडा होकर—"मैं इस पहाड़ी को किसी भी प्रेमिका से ज्यादा प्यार करता हूँ। केनाड़ी पहाड़ी को !"…

इरावती भी अकेली है क्या ? ताजमनी से पूछना होगा। मन-ही-मन बहुत-से लोग मेक्कानो के घर बनाते हैं, तोड़ते हैं, गढ़ते हैं। फिर रोमांच ! इरावती, ताजमनी ! दोनों मिलकर कहती हैं—"जित्तन ! अकेलेपन के अन्धकार से निकल आओ।"…लेकिन, यह तो नाटक नहीं कि स्टेज पर बल्ब का तिरछा प्रकाश डाल दे कोई ! और, कौन नही है अकेला ? उन्हे कोई नहीं कहता कि निकल आओ अन्धकार से !… क्यों ?

नाटक की बात याद आयी जितेन्द्र को ! ···उसकी माँ के पास आये हैं तिवारीजी, गाँव के नौजवानों को लेकर। भिम्मल मामा ने अन्दर हवेली में जाकर सूचना दी थी–"नाटक समिति की संस्थापिकाजी हैं ?" माँ झुँझलाकर बोली थी–"मैं समिति-पंचायत कुछ नहीं जानती। मैं एक पैसा भी बेहरी नहीं दूँगी। एक बार रुपया ठगके ले गये। कलकत्ते से पर्दा-पोशाक लेकर आये। और, नाटक ऐसा दिखाया कि निहाल हो गयी देखकर !"

तिवारीजी ने चिक के पास खड़ा होकर जवाब दिया–"अब इसमें हम लोगों का कौन कसूर ? आप महाभारत की एक-एक कथा-उपकथा जानती हैं। आपको यह भी मालूम था कि जितेन्द्र को अभिमन्यु का पार्ट दिया गया है। आपको पहले ही तौलकर देख लेना चाहिए था, कलेजे को।"··· 'अभिमन्यु-वध' नाटक पूरा नहीं देख पायी थी, जितेन्द्र की माँ। स्टेज पर जितेन्द्र को देखकर माँ की नौंड़ी बोल उठी थी–"ठीक लगता है··· दुलहा-मालिक ब्याह के दिन ऐसे ही··· ।"

"चुप !" माँ ने हल्की धमकी दी।

दुःशासन की छाती पर चढ़े हुए अभिमन्यु को देखकर वह एक बार पुकारना चाहती थी–छोड दे बेटा ! ···दुःशासन को अभिमन्यु ने छोड़ दिया !

जितेन्द्र की माँ भूल गयी थी कि अभिमन्यु का वध करने के लिए ही नाटक किया जा रहा है। जब महारथियो ने घेरकर उसको निहत्था कर दिया, तब उसको याद आयी–"अरी जिबछी, इसको तो जान से मारेगा ? उठ ! चल !"

अभिमन्यु मरते समय अपने पिता, चाचा आदि को बारी-बारी से सन्देशा दे रहा था–"लेना, बदला लेना।" केंहुनी के बल लेटा, हिचकियाँ लेता, खून से लथपथ ! इस्स ! –"लेना, बदला लेना ओ गदाधारी, ओ गाण्डीवधारी··· !"

खून से लथपथ कई शरीर आकर दम तोड़ गये, मानो। जितेन्द्र ने घड़ी देखी। नहीं, आज वह न डरेगा, न बेसुध होगा। अपने मित्र कामरेड कुलदीप की लाश, खून से लथपथ उसने देखी थी। मीनार के झरोखे पर एक बार झलक गयी मृत मित्र की मूरत ! ··· एक ही नही, कुबेरसिह का शिकार, वह नौजवान साथी, जिसे मोटर से कुचलकर मार दिया गया। दूर, छोटानागपुर पहाड़ी की एक घाटी में उसकी लाश के आस-पास किलकिलाते गिद्ध-काक ! ···धेत्त, बादुड हैं वे। गिद्ध नहीं ! जितेन्द्रनाथ ने घड़ी देखी··· आश्चर्य ! आज भी वही हाल ! उसने विश्वास कर लिया··· 'कारन' है, हँसी-खेल नहीं !

ताजमनी प्रसाद लेकर बैठी होगी।

सुरपतिराय की कोई खबर नहीं ली है जितेन्द्र ने, इधर कई दिनों से। गेस्ट-हाउस के दोनों कमरों में रोशनी हो रही है। तो, दोनों मित्र जगे हुए हैं। सुरपति और भवेश···परदेसी पंछी। गेस्ट-हाउस का नाम दिया है दोनों ने मिलकर–घोंसला ! उस दिन, गोबिंन्दो भवेश की नकल करके सुना रहा था रसोईघर में–"भँबीबाबू बोला कि घोसोलाँ तो, हँम बूझा पाखी का बासा हुआ है कोई। लो-ओ बाबा ! घँर-बाड़ी को नाम हुआ–घोसोलाँ ! ऑर, भँबीबाबू बोला–हाँ-हाँ-हाँ इ-इ-स घो-धोसोलाँ में-में

सोनार डीम पाड़ेगा—पँ-पँरदेसी पाखी ! हा-हा-हा !"

भवेश के सिर पर पंछी फड़फड़ा रहे हैं, शामा-चकेवा की रात से। किलकती चिड़िया हजार, पाँखें पसार। ऐसा अवसर नहीं मिले बार-बार। ले निहार—ओ-ओ-परदेसी पंछी···!

परती पर टिटही बोल रही—टिं-टिंहि-टिं, टिं-टिंहि-टिं।···अशुभ है यह बोली ! माताएँ घर-घर में अपने नवजात शिशु को छाती से चिपकाकर बड़बड़ाती होंगी—'छिनाल ! टिटही···कहाँ से कहाँ मरने आयी है ! तुझे तीर लगे, कीरबा बनजारे का। टीं-टीं करती है। राकसनी !'

जितेन्द्रनाथ बुर्ज की सीढ़ी से उतरते हुए मुस्कराया—बेचारी टिटही ! बेवजह गाली सुनती है। लोग कहते हैं, टिटही दोनों पाँव को ऊपर उठाकर सोती है, घोंसले में। हिमालय जब गिरेगा तो पैर से थाम लेगी !···

···मेरे पतिदेव कहा करते—'जमींदारों के वंश-परिचय में खोजकर देखो—अर्जन करनेवालों में किसी ने अवश्य डकैती की होगी। राजा खिताब मिलने के बाद तो दिनदहाड़े डकैती करने का लाइसेंस मिल जाता है···हमारे इस्टेट के सिपाहियों को क्या समझती हो तुम ? सुलतानपुर से हवेली परगना तक शिवेन्द्र मिश्र के डर से लोग खाँसी तक नहीं करते। क्यों ?'

'कारन' पीने के लिए एक मधुर विराम दिया मेरे स्वामी ने ! हँसकर बोले—'तुम्हारे भाई-बन्धु मुझे इंगलिश-हेटर समझते हैं। मैं क्या हूँ, सो तुम देख रही हो।'

मैं लजाकर उनकी छाती में मुँह छिपाने लगी।

'सही है। गदर के बाद तो यहाँ के पशु-पक्षी भी इंगलिश-हेटर पैदा होने लगे हैं।'

'लेकिन, आप तो अंग्रेज प्लाण्टर के मुलाजिम थे।'

'हाँ, विश्वासपात्र कर्मचारी एन्थनी साहेब की कोठी का। और, उसकी कोठी में दस साल तक नौकरी करके घृणा पालता रहा, मैं।'

मैंने पनडब्बे से पान निकालकर खिलाया मिश्रजी को। घृणा से बार-बार सिकोड़ रहे थे मुँह। कस्तूरी-अम्बर-मिश्रित तम्बाकू खाकर सहज हुई मुद्रा ! उन्होंने शुरू किया—'हिन्दुस्तानी को, चाहे वह इस्टेट का मैनेजर हो अथवा चौकीदार, ये जानवर ही समझते हैं।···माली की जवान बेटियों को धमकी देते हुए बाथरूम से नंगा निकलकर डाँटना। नंगी देह को तौलिये से पोंछते हुए अपने हेड-ब्वॉय से बातें करना ! जानवर के सामने नंगा होने में क्या लाज ! एक दिन की बात···!'

मैं अपने पति के पास लेटकर कहानी सुनने लगी···एक दिन की बात !

'हेडब्वाय बैरागी छुट्टी लेकर घर गया था। एन्थनी साहब कटिहार गये थे। मैं अपने कमरे में बैठकर लिखा-पढ़ी कर रहा था। छोटे मुंशी की जगह पर था, मैं। दोपहर को मेम साहब ने मुझे बुलाया। गरमी से परेशान थी वह। व्याकुल

होकर बुलाया–यू मिस्सा ! कम इन।…कोठी के भीतरी हिस्से में जनाना बाग था। आम के एक नये पेड़ के नीचे बड़ा छाता धरती में गाड़कर बैठी थी मेम साहब। मैं गया तो कुछ काम की बातें पूछकर उसने मेरे हाथ में पंखा थमा दिया–धीरे-धीरे चलाओ ! …मैं पंखा झलने लगा… ।'

'हो-हो-हो-हो !' मै अपनी खिलखिलाहट को नहीं रोक पायी ! 'भगवान कहाँ हो ! …पंखा झलने लगे आप ! हो-हो-हो !'

'हाँ, झलता रहा। मेम साहब गरमी से बेचैन होकर कैम्पचेयर में इधर से उधर टास्स करती तो और जोर से झलता। अचानक मेम साहब ने मेरे हाथ से पंखा छीन लिया। पंखे की डण्डी मेरी बाँह पर मारकर बोली–सैटान, सूअर, सूअर का बच्चा, जंगली सूअर।…गुर्राती हुई चली गयी मेम साहब कोठी के अन्दर !'

'चः-चः।' मैं मिश्रजी की बाँहों पर हाथ फेरने लगी तो वह हँसे–'पगली !' मैंने पूछा–'क्यों मारा उसने !'

'और रात में जब साहब लौटा तो मेम ने सबसे पहले मेरी शिकायत की। वह गरमी से मरी जा रही थी, बेसुध थी। उसकी देह को आँख फाड़-फाड़कर देखा गया। आश्चर्य ! देखो भला ! साहब ने रात में ही मुझे बुलाया। दाँत कटकटाकर टूटा। क्यों डेक्का ? बोलो, क्यों डेक्का ? …बोलो, फिर डेक्केगा ? साहब के मुँह पर जवाब हम कभी नहीं देते। कुछ जवाब देते ही वह पागल हो जाता। मुझे चुप देखकर उसका गुस्सा कम हुआ। बोला–पहला कसूर, माफ किया। कल सुबह मेम साहब के सामने दस बार कान पकडकर…उट्टेगा-बैट्टेगा। समजूटा ? …मुझे जमींदार बनना था। मुझे जमींदारी खरीदनी थी अपने गाँव की। पण्डितों के टोल में पढ़ी हुई विद्या मैंने पिटारी में बन्द कर दी थी। क्योंकि, उससे एक बीघा जमीन भी नहीं खरीदी जा सकती थी। मेरे जिले में एक अपढ़ आदमी ने किसी साहब की कोठी में सिपाही की नौकरी करके जमींदारी खरीदी थी। इसलिए, कैथी अक्षर और कचहरी की विद्या-बुद्धि से मैं भी जमींदारी खरीदना चाहता था। …मैंने स्वीकार कर लिया।'

'इज इट ? आँ ?'

हाँ, दूसरे दिन सुबह मेम साहब के प्राइवेट चेम्बर मे हाथ जोड़कर जा खड़ा हुआ। मेम साहब की तनी हुई भौहें सीधी हुईं। इधर-उधर देखकर बोली धीरे से, मुस्कराकर–'तुम निगाह नीचा क्यों करता, फिर उस दिन का माफिक ? आँख क्यों नहीं देखने देता अपनी ? इधर देखो !'…

मिश्रजी ने मुस्कराकर अपनी आँखें बन्द कर लीं। मैं हँसी–'फिर तो कभी आपने निगाह नीची नहीं की ?'

'नहीं !' आँखें खोलकर बोले पतिदेव–'हाँ, मैंने कभी आँखें नहीं मूँदीं, मेरी निगाह कभी नहीं झुकी।…साहब का विश्वास मुझ पर बढ़ता ही गया। मेम साहब हर हफ्ते मुझे टिप देतीं। मेरी तरक्की हुई। मैं मीर-मुंशी बना दिया गया। छः महीने के जमा किये हुए टिप के रुपये से ही मैंने अपने गाँव में, बरदिया घाट के पास

दस बीघे जमीन की बन्दोबस्ती ली। आँखें खोलकर, देखता रहा, सीखता रहा। और, अन्त में एक दिन घृणा से मुझे आँखें मूँद लेनी पड़ीं... ।'

'बस, आज रहने दीजिए। ओ मेरे परमगुरु ! मैं अब कुछ नहीं सुनना चाहती।'

'और, अन्तिम घटना नहीं सुनोगी ?...वह दृश्य ! उस बार डानापोर कैण्ट से कोई फौजी मेहमान आये थे, साहेब के यहाँ छुट्टी मनाने के लिए। हेडब्वाय बैरागी ने साहब को बताया—टुराईदास गौना करके नयी बहू ले आया है। तुरत, सिपाहियों को हुक्म हुआ—सूर्जसिंग, बाकरमियाँ डोनो जायेगा। अब्बी ले जायेगा... ।'

'मेरे स्वामी ! मुझे माफ करो। मैं आज नहीं सुनूँगी।...आप थोड़ा 'कारन' और लेंगे ?'

वर्ष पूरने में एक महीना कम ! ग्यारह मास बीते।

मैं मिश्रजी से मैथिली में बात कर लेती हूँ। रानी-बहिना (परानपुर इस्टेट के पतनीदार की पत्नी) की कृपा से रामायण गाना सीख चुकी हूँ। रानी-बहिना की तरह गा नहीं सकती। किन्तु वह तो मेरी दीदी है न ! कहती है, तुम्हारे मुँह से रामायण-गान और भी मीठे लगते हैं।...मेरी अच्छी दीदी ! मैं जान गयी, मेरे पतिदेव की जिन्दगी की सारी सफलताओं के पीछे इसी महिमामयी नारी की साधना काम कर रही है। मधुर बैन, मोम का मन और दूध-जैसा निर्मल प्राण !

याद है... पहली बार परानपुर जा रही हूँ ! रानी-बहिना मुझे ले जाने के लिए आयी है, डोली में। गीतवास कोठी से परानपुर ड्योढ़ी, आठ मील उत्तर। कुपाड़ी गाँव के पास हमारी डोलियाँ रुकीं। रानी-बहिना ने अपनी डोली से निकलकर कहा—'उस पोखरे को देखती हो न ? उसका नाम है, इन्द्रानी पोखर ! गुनवन्ती ड्योढ़ी की विधवा रानी ने गाँववालों का जलकष्ट दूर करने के लिए खुदवाया था। किन्तु, पोखर-यज्ञ के दिन ही उसमें एक घोड़ा डूबकर मर गया। और, उसके बाद से उस पोखरे का पानी कभी किसी ने स्पर्श नहीं किया।'

परानपुर ड्योढ़ी के जनाने फाटक पर औरतों की एक बड़ी भीड़ पहले से ही तैयार थी।

[तीन पृष्ठ खो गये हैं !]

मेरा लॉली मेरे बिना एक क्षण नहीं रह सकता। मेरा जिद्दू-बद्दू लॉली। सभी हँसते—'देखो-देखो, कितना बेईमान है ! राह चलते समय इनको पुतली की गोद चाहिए और बैठेंगे मेम-माँ की गोद में !'...अहा-हा ! बेचारे के दाँत देर से आ रहे हैं। पेट खराब है। वैद्यजी ने हिंग्वाष्टक दिया है। और आठ-नौ महीने के लॉली-लला हिंग्वाष्टक की शीशी देखकर काँपने लगते हैं।...मेरी गोद में दवा के डर से ही बैठा रहता। इतनी तेज घ्राणशक्ति। रानी-बहिना रोज रसोईघर में अपने हाथ से मेरे लिए तरह-तरह के मैथिल व्यंजन बनाती।...उस दिन मुझे भी हिंग्वाष्टक की जरूरत हुई। अबेर में, सोते से उठा मेरा लॉली—'मम्म, मम्म !' मैंने पुतली से कहा—'जल्दी ले आ पुतली।'

मैं बाहर बरामदे में बैठी थी। हुलसता हुआ आकर गोद में बैठा—'आयं, मम्म-मम्म !' बैठ तो गया, पर थोड़ी देर के बाद उसने ओठ बिदकाये। मेरे मुँह की ओर देखा, उसने। अचानक, न जाने क्या हुआ···भरी हुई झारी की तरह लुढ़क पड़ा, गोद से नीचे। पुतली की गोद में भी रोता रहा। मैं जब-जब हाथ बढ़ाती, डरकर मुँह छिपा लेता पुतली के कन्धे पर। रानी-बहिना आयी। उनकी गोद में भी रोता रहा। मैंने फिर हाथ बढ़ाया तो मुँह छिपाने लगा। किसी के समझ में नहीं आती, क्या बात है ! रानी-बहिना ने समझा और हँसकर बोली—'तुमने आज हिंग्वाष्टक लिया है न ! जब तक मुँह में गन्ध रहेगी, गोदी में नहीं जायेगा।' ओ माँ ! छुट्टू पण्डित इतना चालाक है ?

रानी-बहिना के शब्दकोश में जितने बेढब नाम थे, सब मेरे लॉली के लिए व्यवहार करती।···लड़के को भोंडे नाम से पुकारने पर लडका जीता है। कहते है, पण्डित लोग इस बात पर विश्वास करते हैं। मैं नहीं मानती। मेरा लॉली भी नही मानेगा। पण्डित लोग पंक्ति से छाँट दें। मेरा लॉली छुट्टू पण्डित होकर रहेगा। यह लॉली है, जीत है, जिद्दू है, बद्दू है ! परानपुर से गीतावास कोठी लौट रही थी जिस दिन···

रानी-बहिना की सखी-सहेलियो के समदाउन गीत शुरू करने के पहले से ही मैं रो रही थी। मेरे जिद्दू की रुलाई, हवेली की दीवारो को चीरकर मेरे कानो के पास मड़राती। मैं बोली—'वह रोकर जान दे देगा। एक बार ले आ पुतली। मैं फिर समझाकर देखूँ।'···हुलसता आया और डोली में बैठ गया। अब ?···लॉली ! लिटल-लिटल लोटस—डार्लिंग ! जिद्दू-बद्दू, तू चुप रहेगा। ले, अब रानी-मैया की गोदी में जा। मैं फिर आऊँगी, जरूर !' जिद्दू ने मेरे मुँह की ओर देखा और धीरे-से रानी-बहिना की गोद में चला गया।

'लॉली, मम्मी आयेगा ?'

'आय-आय !'

हाथ हिला-हिलाकर कहता है—'आय-आय !' दो नन्हे-नन्हे हाथ, हिलते हुए ! छोटी-छोटी उँगलियाँ !

फागुन का मधु चैत की गरमी में और भी गाढ़ा हो गया।

चैत की एक अनमनी उदास सन्ध्या को मैं अपने सदाबहार की प्रतीक्षा कर रही थी। मेरा सदाबहार कभी झूठा वादा नहीं करता।

ठीक सूरज डूबने के पहले आकर मुझे अपनी चरणधूलि दी। किन्तु, मुझे लगा—सदाबहार जरा मुरझाकर लौटा है।··· लॉली के बारे में बार-बार पूछती हूँ। कहते हैं—'ठीक है, सब !'

रात में फिर स्वीकारोक्ति के मूड में आ गये।—'मैं नहीं सुनना चाहती वैसी कहानियाँ। मुझे डर लगता है।'

'डरने से काम नहीं चलेगा, गीता ! तुमको सुनना चाहिए।···दस्तावेज जाल

करनेवालो को प्राणदण्ड तक की सजा होती है। मेरे दस्तावेजों को कई नीलहों ने कई बार जाली दस्तावेज कहकर चैलेज किया। बादशाही जमाने के दानपत्र, ताम्रपत्र, सभी जाली हैं, उन्होने कहा। कह देने से ही तो नही होता है ! पचहत्तर नम्बर तौजी को लेकर मिर्जापुर कोठी के डिगबी साहब से झगडा था। साढे पॉच सौ एकड जमीन ! एक ही चकबन्दी ! उस एक चक जमीन मे धान और पाट की ऐसी खेती लगती है कि फसल देखकर आदमी पुत्रशोक भूल जाये। उमडते-घुमडते बादलो की तरह मेघलाल पाट के घोर लाल पौधे।··डिगबी साहब दानपत्र देखकर पागल हो गया। मेरा दानपत्र मेरे पितामह के समय का था। गुनवन्ती ड्योढी की रानी इन्द्रानी का दानपत्र ! रानी ने अपने पति के श्राद्ध मे पण्डितो को दान मे जमीन भी दी थी। बाद मे, दूसरे जमीदार ने फुसला-धमकाकर मेरे पितामह से जमीन ले ली। साहब के वकील ने हाकिम से कहा–हुज़ूर ! रानी इन्द्रानी के बारे मे मशहूर है कि उसने पण्डितो को डेढ-डेढ एकड जमीन दी थी ।

'मेरे वकील ने सबूत मे दूसरे ब्राह्मणो के दानपत्र पेश करने की अरजी दी। हॉसामारी के चनकू पण्डित का दानपत्र मॅगवाया गया। भरी कचहरी मे डिगबी साहब के हाथ मे दोनो दानपत्र दिये गये–कोन जाली है और कौन असल ? ·पागल हो गया डिगबी–नो, नो, नो, नो, फोर्ज्ड ! फोर्ज्ड ! इतनी जमीन और इसका लगान सिर्फ तीन रुपये ? नो, नो ! लगान भी नही, दस्तावेज मे लिखा है–स्वस्ति के रूप मे प्रतिवर्ष मात्र तीन कम्पनी !

'लॉ-जनरल खोलकर पेश करत हुए मेरे वकील ने दिखलाया–रानी इन्द्रानी के दानपत्रो के बारे मे इसमे एक न्यायाधीश ने स्वीकार किया है : रानी इन्द्रानी के दानपत्र अथवा अन्य दस्तावेजो का जाल पकडना आसान है। उसका जाली होना असम्भव नही। रानी के जीवित दीवान के कथनानुसार रानी इन्द्रानी की करधनी मे लटकनेवाली सोने की दो सौ छोटी-छोटी मछलियो मे से एक मछली से सील-मुहर का काम लिया जाता था जिसको रानी के सिवा और कोई नहीं पहचान सकता था। इतनी बारीक रेखाओ की कारीगरी का जाल करना कठिन काम है।··

'डिगबी ने उस दानपत्र को सरकारी एक्सपर्ट के पास भेजने की अरजी दी, डबल फीस के साथ। तुम जम्हाई लेती हो गीता ? नीद आ रही है ?'

मिश्रजी की उँगलियाँ मेरे बालो के गुच्छे से खेलने लगी। हठात्, उँगली रुक गयी। मैने कहा–'नही देवता ! मै सुन रही हूँ।'

मन्द-मन्द मुस्कराकर बोले–'और कलकत्ते के सरकारी एक्सपर्ट ने कहा, दानपत्र असली है !'

मिश्रजी ने मुझे बाहो मे जकडकर कहा - 'माफ करो गीत, जब कहने ही बैठा हूँ तो सच कहूँ। असल मे वह दानपत्र जाली था।'

'जाली ? फोर्ज्ड ? ··किसने किया था ?' मैं अचरज से चीख पड़ी।

'यदि कहूँ, मैंने, तो ? ··कहो, ऐसी जमीन को खोकर आदमी पागल नही होगा ? जमीदारी बेचकर कलकत्ता भाग गया। किसी और ने नही, डिगबी को उसके देशभाई

ने ही धोखा दिया था। उसको बतलाया गया था कि जमीन कोठी के कब्जे में है। डिगबी से पहले मैकफरसन की जमींदारी थी। उसने धमकी दी थी—गोली से भून देंगे !···एक-एक कर तीनों हँसेरी[1] में मैंने उसको छट्ठी का दूध याद कराया। हाईकोर्ट ने मुझे ही डिक्री दी।'

···मैंने बिन-माँगे ही पात्र में 'कारन' ढालकर दिया।

कुछ क्षण इष्ट-नाम-जाप करने के बाद बोले—'जीवन में सबसे बड़ी ग्लानि मुझे, एक···एक स्त्री-हत्या जिस दिन हो गयी। मेरे हाथ से नहीं, मेरे सिपाही के हाथ से !'···

मैंने अपने पति की छाती के अन्दर, कलेजे की अस्वाभाविक धड़कन, छन्द-पतन का अनुभव किया। मैं उनकी छाती में मुँह छिपाकर बोली—'नहीं-नहीं ! तुम क्यों करोगे किसी का खून ?'

हवेली परगना के इतिहास में पाँच-सात इस्टेट की विधवा हिन्दू रानियों के राजकाज की बातें मिलती हैं। इनमें रानी इन्द्रानी और रानी चम्पावती के सुनाम के चिह्न आज भी पाये जाते हैं। बाकी रानियों के कुनाम की कहानियाँ भी घर-घर में होती हैं।··· उनमें से एक ने पति के मरने के बाद अपने एकमात्र तीन मास के पुत्र की हत्या कर दी थी। मेरे पति ने उस पतिता को मारने का बीड़ा उठाया था। सिपाहियों ने उनका काम पूरा कर दिया। मेरे पति ने हत्या नहीं की, नहीं की ! वह स्त्री-हत्या नहीं कर सकता कभी !···

मेरे देवता ने मुझे सँभालते हुए कहा—'गीत ! अब 'कारन' नहीं मधु···!'

सुबह को, सूरज उगने से पहले ही मिश्रजी अपने 'मूँगा' पर सवार हुए। मिश्रजी के चतुर और प्यारे घोड़े का नाम है मूँगा। 'मोती' हाथी का नाम है। मूँगा मेरी प्रतीक्षा में खड़ा देखता रहा। कानों को जरा ह्रिला-डुलाकर हिनहिनाया—ई-हीं-ही-ही ! मैं जब तक उसे प्यार कर, उसकी गर्दन पर उँगली से काली नाम न लिख दूँ, वह कभी कदम आगे नही बढ़ा सकता। रानी-बहिना भी ऐसा ही करती है। मूँगा ! डियर ! ··· खड़प-खड़प, खड़प-खड़प-खड़-पड़, खड़-पड़ !

खड़ाप-खड़ाप-खड़ाप-खड़ाप···!

चार दिन बाद ! मिश्रजी की चादर के एक किनारे पर ॐ काढ़ रही थी कि पुल पर घोड़ों के टापों की आवाज सुनायी पड़ी। उत्तरा से झाँककर पुतली बोली—'हाँ ! मैनेजर साहब !'

मेरे स्वामी आ रहे हैं !

फाटक पर घोड़े से उतरकर, दौड़ते हुए आये मिश्रजी। मैंने चरणधूलि ली। मेरा प्राप्य मुझे देकर बोले—'व्हेयरि'ज मम्मी ?'

'मम्मी पास के गाँव में गयी है। स्कूल खोल रही है न ? क्यों, मेरा लॉली कैसा है ? कुशल तो है न ?'

1. बलवा।

'जय माँ !… सब ठीक है। एक काम कर सकोगी ? तुमको याद है, पिछले महीने एन्थनी साहब ने मम्मी को एक पत्र भेजा था। एन्थनी के हाथ की लिखी हुई चिट्ठी ? किसी जमीन के बारे में लिखा था उसने !… है ? दोगी खोजकर ?'

'क्या होगा उसका ? आज सुबह को बास्केट से निकालकर ले तो नहीं गयी पुतली ?

'ऐंय ?' मिश्रजी ने अपना सिर थाम लिया।

मुझे याद आयी। पत्र सुरक्षित है। बोली—'है ! क्यों, क्या बात है ?'

पत्र पाते ही मिश्रजी सदाबहार हो गये, फिर—'मम्मी से कहना मत ! यह खत मैं ले जाता हूँ।' मिश्रजी की देह से मूँगा के पसीने की गन्ध आ रही थी।

'मुझे अभी जाना है। तुरत !… तरह-तरह की बातें सुनोगी। घबराना नहीं। मुझे खोजने के लिए पुलिसवाले आर्मृड-फोर्स लेकर आ सकते हैं। मैंने सारी व्यवस्था कर दी है। तुम तिल-भर भी विचलित मत होना। लॉली को लेकर उसकी माँ आवेगी।'

मैंने कोई प्रश्न नहीं किया। देर करना अनुचित लगा। फाटक तक मैं साथ गयी। मैं मिश्रजी के प्रत्येक पदचाप पर इष्ट-नाम जाप करती जा रही थी।

उस दिन मूँगा मेरी थपकियों के लिए रुका नहीं। मिश्रजी सवार हुए और वह भागा—खड़ाप, खड़ाप ! मेरे मूँगा ने मान किया है, रूठ गया है। आते ही प्यार नहीं मिला, इसीलिए इतना गुस्सा ! भगवान जाने कब का भूखा-प्यासा था ! उसके मुँह से गिरे हुए सफेद झाग धरती पर चमक रहे हैं।…ओ रे मेरे मानी, अभिमानी !

कॉलेजों में पढ़नेवाले लड़के गाँव लौटे हैं।

जिला के कॉलेजों में पढ़नेवाले लड़के पहले ही आ गये हैं। जिले के बाहर पढ़नेवाले लड़कों का दल आज ही आया है। पटनियाँ और भगलपुरिया बैच !

जाडे की छुट्टियों में घर आये हुए लड़के आसानी से पहचाने जाते हैं। कोट-पैण्ट की काट और बालों की छाँट ही बता देती है कि किस कॉलेज में पढ़ता है लड़का। किस शहर के किस सैलून का नाई कैसा बाल बनाता है, यह गाँववाले नहीं जानते। लेकिन गाँव में यह बात मशहूर हो गयी है—पटना के जिस नाई से जित्तन बाबू बाल कटवाते थे, शैलेन्दर भी उसी से पट्टा छँटवाता है। और, वह नाई लाट साहेब के अमला-फैदा का केश काटता था सुराज होने के पहले।

शैलेन्दर तीन साल के बाद आया है, गाँव ! … पढ़ते-पढ़ते यह भी बनरा न जाये कही ! गाँव के लोगों को डर है।

आजकल, पुस्तकालय का वाचनालय आठ-नौ बजे रात तक खुला रहता है। रह-रहकर हँसी का एक रोर उठता है। बीच-बीच में फिल्मी गीतों की धुनें सुनायी पडती हैं। ब्याह-गौना किये हुए लड़के जब चौकड़ी छोड़कर जाने लगते हैं, उन पर एक फुलझड़ी फेंकता है परमा, बारी-बारी से—'नाइट-कॉलेज का समय हो रहा है, जाने दो !'

इस बार पटना में पढ़नेवाले विद्यार्थियों का दल सुवंशलाल से मिल आया है।

आज की बैठकी में पटना के लड़कों के मुँह की ओर ही सबकी नजर है। आज चौकड़ी जमेगी। प्रयागचन्द का मँझला भाई त्रिवेणी गप का एकाध टुकड़ा पहले ही सुना चुका है। बजरंगराय आ जाये तो बात जमे !

बजरंग आया और एक ही साथ कई नौजवानों ने उसका स्वागत किया—"आओ, आओ ! कब से तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है।"···त्रिवेणी ने इसी साल पटना में नाम लिखाया है। बजरंग चार साल से पटना में पढ़ रहा है। त्रिवेणी का मुँह छोटा हो गया।

भागलपुर कॉलेज में पढता है शोभा, लेकिन मुँहचोर है। नहीं तो उसके पेट में एक ऐसी बात चुलबुला रही है कि सुनते ही सारी चौकड़ी ठठाकर हँस पड़ेगी। उसने परमानन्द के कान में डाल दी बात।

परमा को सभी बोतू कहते हैं। वह अपने से पाँच साल सीनियर लडकों को भी मुँह के जोर से हरा देता है। जब कभी गाँव आता है, बड़े-बूढ़ों से हमेशा उलझता रहता है। कहाँ पढ़ता है और किस कॉलेज में पढ़ता है, यह उसके सिवा और कोई नहीं जानता। वह कभी इलाहाबाद, कभी बनारस और कभी लखनऊ के कॉलेजों के किस्से सुनाता है। गैर-पटनिया दल के विद्यार्थियों का स्वयंनिर्वाचित सरदार है, वह ! शोभा की बात सुनकर उससे रहा नही गया। बोला—"तिरबेनियाँ क्या पढ़ता है पटना में ? बाइलौजिक ? इसीलिए उसकी बाई तेज हो गयी है।··· हाँ, हँसने की बात नहीं। आज ही पटना से आया और अपनी भाभी को चौंधिया दिया। अपनी भाभी से कह रहा था कि दही तो कीड़ो का समूह है···!"

"ऐ-य-य ? क्या कहा ?···हा-हा-हा ! दही-ई-ई ? कीड़ो का समूह ? हा-हा-हा !" हँसी के रोर मे ही त्रिवेणी की पतली आवाज सुनायी पड़ी—"वाह रे लण्ठ-लर्नेड। इसमें हँसने की क्या बात है ?"

परमा आजकल झगड़ने के पहले जनमत अपने पक्ष में कर लेता है—"हाँ, हम लोग देहाती हैं, लण्ठ हैं। सिर्फ पटना में पढ़नेवाला लडका पिएचडी होता है। दही को कीड़ों का समूह कहनेवाला। पटना में पढ़ने क्या गया, न्यूटन का अवतार हो गया !"

बजरग कई कारणों से चिढ़ा हुआ है, त्रिवेणी से। श्रीकान्त ने बजाप्ता बायकाट कर लिया है, त्रिवेणी से। बोलचाल भी बन्द है। बजरग ने त्रिवेणी को घुड़की दी—"तुम भी खूब हो तिरबेनियाँ ! तुमने बायलौजिक लेकर कमाल किया है। ऐसी भी बात करता है कोई ?"

त्रिवेणी तमतमाकर बोला—"बायलौजिक नहीं, बायोलॉजी !"

मधुसूदन अब तक चुप था। आजिज आकर बोला—"खूब खटखटिया हो तुम लोग। आते ही खटखट शुरू कर दिया न !"

"हाँ-हाँ। ठीक कहता है। इतने दिनों के बाद एकजुट हुए हो। पहले किस्सा-कहानी सुन लो !" बजरंग छोटी-सी बात को भी रसाकर सुनाता है। रसदार

गप के लोभ में परमा ने बात मान ली। लेकिन, उसने चुनौती दे दी—"कल साबित करना होगा। दिखावे तिरबेनियाँ कीड़ों का समूह।" बजरंग ने गप की पहली चुटकी निकाली—"मैं तो देखकर दंग रह गया। दुनिया भी क्या है! आदमी तुरत क्या-से-क्या हो जाता है! सुवंश तो खैर···लेकिन मलारी ?" बात खुल ही रही थी कि शैलेन्दर आ गया। नगेन्दर ने धीरे से सिगरेट दे दिया दानी के हाथ में—"भैया आ रहे हैं।" शैलेन्दर को देखते ही सारी चौकड़ी अप्रतिभ हो गयी, जरा। शैलेन्द्र तीन साल से बैठा हुआ है पटना में, एम. ए. पास करने के बाद से ही। तीन साल के बाद गाँव लौटा है। बजरंग ने रंग-भंग नहीं होने दिया। बोला—"कहाँ, लाइब्रेरियन! देखो, कितनी किताबें ले आये हैं शैलेन्दर बाबू!"

प्रयागचन्द कहीं मेहमानी गया है। उसके बदले में ललितलाल है। किताबों की बँधी-बँधायी गठरी उठाकर दूसरे कमरे में चला गया वह! शैलेन्दर ने हँसकर कहा—"सुवंश-कथा हो रही है ?"

"हाँ! आइए, आप भी सुनाइए कुछ!"

"बस, हमको एक ही बात जाननी है।" परमा ने कहा—"व्हेदर इट इज ए फैक्ट या पटनिया फफटबाजी ? अभी तिरबेनियाँ कह रहा था कि मलारी हो गयी है, क्या नाम भला, डांसिंग-गर्ल ? क्या यह सच है शैलेन्दर बाबू ?"

"डासिंग-गर्ल ?··· हॉ, वह डांस स्कूल में भरतनाट्यम् सीख रही है।"

"मैने झूठी बात की है ?" त्रिवेणी ने पूछा।

"ठहरो, तिरबेनियाँ!" परमा ने कहा—"डासिग-गर्ल का मतलब भी कीड़ों का समूह है, जानते हो ? चैम्बर्स-ऑक्सफोर्ड उलटो जाकर!"

शैलेन्दर ने उठते हुए कहा—"सुवंश और मलारी की तरह कितने लोग हो सकते हैं ? उन लोगो ने ऐतिहासिक काम किया है।"

परमा ने कहा—"वाजिब बात! ऐतिहासिक ही नहीं, क्रान्तिकारी कदम! हम लोगो ने लिखा है उसको—ब्रेवो! वेल डन!"

"पूछो बजरंग से।" शैलेन्दर ने मुसकराकर कहा—"बजरंग और त्रिवेणी वगैरह सुवंश से मिलने गये थे, मुजफ्फरपुर। पूछो, इन लोगो ने सुवंश के हाथ का पान तक नही लिया।"

परमा जोश मे आकर खड़ा हो गया—"शेम-शेम!"

"काबुल मे भी गदहे होते हैं!"

"गॉव से हम लोगो ने प्रस्ताव पास करके भेज दिया है, पहले ही। बधाई है, बधाई है! और, पटना में पढ़नेवाले ऐसे मूर्ख ?"

मधुसूदन ने कहा—"इसमें विद्वान्-मूर्ख की क्या बात! अपनी-अपनी श्रद्धा की बात है। बजरंग और तिरबेनियाँ का क्या कसूर ? खुद, सुवंश की भाभी कह रही थी, उसका भाई कह रहा है, घर में पैर नहीं रखने देंगे।"

शैलेन्दर ने कहा—"सुवंश उस घर में पैर भी नहीं देने जायेगा, शायद।"

शैलेन्दर के जाने के बाद लोगों ने मँगनीसिंह दीवाना की चर्चा शुरू की। परमा

ने इधर-उधर देखकर कहा—"कहीं पीछे में कोई बैकवर्ड-शिडूल कास्ट तो कान लगाकर नहीं सुन रहा ?··· प्यारे भाइयो ! आप लोग गम्भीरता से मैंगनीसिंह दीवाना के चाल-चलन पर विचार करें। आजकल वह बमका है। उससे पूछना होगा, व्हाट ही वाण्ट्स ?"

"सचमुच ! दीवाना के चलते नन-बैकवर्ड··· !"

परमा ने बोलनेवाले को धमकी दी—"नन-बैकवर्ड क्या ! फॉरवर्ड बोलो। अग्रगामी जाति !"

"दीवाना भी पटना गया है।"

"वापस आने दो। प्रेमपहाड़ा पढ़ा देंगे।···प्यार का बाजार लगाता फिरता है। अग्रगामी जाति को कलंकित करता है। दीवाना की दीवानगी निकालता हूँ !"

"बात तय रही न ?"

"हाँ, तय ही समझिए !"

लुत्तो को गरुड़धुज झा ने कानूनी दाँव-पेंच के उदाहरण देकर समझा दिया—ग्राम-पंचायत के लिए कांग्रेस की ओर से रोशन बिस्वाँ को खड़ा किया जाये। नाम रहेगा रोशन बिस्वाँ का, काम तो सभी लुत्तो के मन से होंगे। ग्राम-पंचायत के मार्फत गाँव मे पूरी तरह जड़ जमाकर, लुत्तो विधानसभा के लिए नाम पेश करेगा। रोशन बिस्वाँ तन-मन-धन से मदद करेगा। कैसे नही चुनेगे कांग्रेसवाले ? रुपया की क्या कमी होगी ? एक ही साल मे तीन-तीन चुनाव लडने का पैसा, ग्राम-पंचायत के मार्फत, यदि गरुड़धुज झा जमा नहीं कर दे तो वह ब्राह्मण नहीं—चमार !

लुत्तो के दिमाग पर बीरभद्दर बाबू सवार हैं।···बीरभद्दर ने धोखा दिया। गाछ पर चढ़ाकर नीचे कुल्हाड़ी से काटनेवाला आदमी !

रोशन बिस्वाँ ने जीभ से ओठ चाटकर कुछ कहना चाहा। गरुड़ झा ने टोक दिया—"फिर वही आदत !"

रोशन बिस्वाँ लजा गया। उसकी जीभ मुँह में बन्द लकपकाकर रह गयी। गरुड़धुज झा ने बिस्वाँ की इस आदत को छुड़ाने का जिम्मा लिया है। उस दिन फारबिसगंज के सब-रजिस्ट्रार साहब ने चिढ़कर कहा था—"आप बार-बार साँप की तरह जीभ क्यों निकालते हैं ?"

हाकिम ने सोचा, शायद—जीभ दिखाकर मुँह चिढ़ाता है ! कचहरी से निकलते ही रोशन बिस्वाँ को कसम दिलायी थी गरुड़ झा ने—"इस प्रैटिक्स को छुड़ाइए किसी तरह ! दाँत से जीभ को कुचल दीजिए एक-दो बार। खुद ठीक हो जायेगी।"··· बिस्वाँ की जीभ की नोक पर घाव हो गया है। वह कहना चाहता था, जित्तन की बात। आज उसने सुना है, जित्तन मुखियागिरी के लिए नहीं उठेगा।

लुत्तो ने कहा—"मालूम है, मालूम है। वह यदि उठता तो आपको मैं अपनी जगह इस तरह दान नहीं करता। और, आप उसका मुकाबला कर भी नहीं सकते थे !"

गरुड़धुज ने कहा–"खुद नहीं खड़ा होगा जित्तन, बीरभद्दर को खड़ा करेगा।"
"तो मैं भी रोशन बिस्वाँ को मुखिया बनाकर दिखा दूँगा।"
पत्थर का दाँत चमका गरुड़ झा का। रोशन बिस्वाँ गद्‌गद हुआ।

पनघट पर आजकल लड़ाई-झगड़े नहीं होते।

हर पनभरनी अपने साथ कोई-न-कोई नयी बात ले आती है, चुपचाप। बात की क्या कमी है ! एक बात हो तो झगड़ा किया जाये जमकर !

"मलारी ने अपनी माँ के लिए तीन जोड़ी साड़ी भेजी है। रमदेवा का कुर्ता-पैजामा आकर देखे कोई ! दैया-री-दैया, बाघ-छाप कपड़ा कभी नहीं देखा था।"

"और, सुवंश ने अपनी माँ को कुछ नहीं भेजा है ?"

"मलरिया मोजरा का नाच नाचती है। सचमुच, नट्टिन हो गयी !"

"सरकारी नट्टिन ! ··· चुप !"

"अब यह परानपुर नहीं, नट्टिनपुर हो गया। किसको क्या कहा जाये ! जयवन्ती अपने दुलहा को पीटकर भाग आयी है, ससुराल से ! रातों-रात !"

"सेमियाँ कहती थी, ठीक किया है।"

"देखना है सेमियाँ को !"

"करिया बिलार और लमगोड़ा नकलोल की बात मालूम है ?"

"तजमनियाँ को भी अब आसमान सूझने लगा है। बड़ी हवेली की पटरानी बनने आयी थी ! अब आ गयी है. शहरवाली। देखती नहीं, रोज आती है कम्फूवाली बीबी ?"

"सिर्फ आती है ? तब तुम क्या जानती हो ! आती है, खाती है, पीती है। हँसती-बोलती है। क्या नही करती है ? शहर की पाठी है। तजमनियाँ मखाने के पत्ते से मुँह पोंछे अब अपना !"

"अरे हाँ, कल नूनू के बाप ने देखा, घड़ी पहर रात को बरदिया घाट पर दोनों गुदुर-गुदुर, फुसुर-फुसुर बतिया रहे थे। कम्फू की बीबी और जित्तन बाबू ! नूनू के बाप को डर हो गया।"

"तजमनियाँ का भाग ही खराब है। इधर से भी गयी और उधर से भी !"

सामबत्ती पीसी पनघट के बगल से गुजरी–"तजमनियाँ का भाग खराब नहीं। कम्फू की बीबी भी उसे दीदी कहती है। गोबिन्दो कहता था, ताजनदी के माथा की बराबरी नहीं कर सकती !"

"शहर की खेलाड़ लड़की है, फिर भी ?"

इरावती हैरान है ! क्या हो गया है जितेन्द्र को ?

इरावती ने लक्ष्य किया है, बातें करते समय जितेन्द्र की आँखों में नींद घुमड़ने लगती है; रह-रहकर वह जम्हाई लेता है। इतना आत्मकेन्द्रित तो नहीं था जीत !

इरावती ने लोकमंच की विस्तृत परिकल्पना का फाइल समेटते हुए कहा—"लगता था, जीवन में कभी कुछ सुव्यस्थित ढंग से सोच नहीं पाऊँगी। तुम्हारी बतायी हुई राह पर चलती गयी। वर्षों जंगल-पहाड और पठारों में भटकने के बाद प्रीत की रीत जान पायी। किन्तु, जिससे प्रीत करना चाहती हूँ, उससे परिचय नहीं। इसलिए तुमसे प्रार्थना है…!"

"लोकचित्त और लोकचेतना का ज्ञान मुझे भी नहीं, इरा ! मैं क्या सहायता कर सकता हूँ, तुम्हारी ?"

"कैसी बात करते हो, जीत ?"

"हतबुद्धि का विलाप-प्रलाप कहो।"

"हतबुद्धि ! …भैरवीचक्र की भाषा रखो अपनी !"

"लोकभाषा में ही कहता हूँ, अपनी व्यर्थता पर मुझे दुख है।"

"तुमसे सहायता की उम्मीद नहीं करूँ, कोई ?"

जितेन्द्र चुपचाप देखता रहा, बाहर की ओर। इरावती उठी, लम्बी साँस छोड़कर—"अब मैं अपने जमे हुए विश्वास को क्या करूँ ?"

जितेन्द्र हँसा—"अतिरिक्त संचय के बाद दान ही एकमात्र मार्ग है कल्याण का ! …विश्वासदान आन्दोलन !"

इरावती तिलमिलायी।…वह क्या सुन रही है जितेन्द्र के मुँह से ? यह जितेन्द्र है ? छोटानागपुर की पहाडियों में भटकनेवाला भावप्रवण प्राणी। बात-बात में जिसका आत्मविश्वास पहाड़ी झरने की तरह कलकल कर उठता था। शक्ति की सुन्दरता से आलोकित मुखमण्डल, मानव-प्रीति से भरपूर स्वस्थ आत्मा ! समाजमुखी, उदार मन ! परानपुर हवेली की तंग कोठरी में कैद करके अपने को किस अपराध का दण्ड दे रहा है, यह ? …सिर्फ, मुस्कराहट रह गयी है जितेन्द्र के ओठो पर जो निराश नहीं होने देती।

उसने अपने को संयत किया। बोली—"हाँ ! मुझे दान मे ही प्राप्त हुआ था यह विश्वास, एक दिन।"

इरावती अन्दर हवेली की ओर जा रही थी। ताजमनी हाथ मे एक कार्ड-बोर्ड का बक्स लेकर मुस्कराती हुई आयी—"बच्चों का खेल !"

"यह क्या है ?"

"आपके परतीपुत्तर ने बनाया है। देखिए न, क्या है !" ताजमनी हँसी—"कमरे में बन्द होकर इसी खेल में बझे रहते हैं।"

इरावती ने जितेन्द्र की ओर प्रशंसा-भरी नजरों से देखा, ओपन-एयर-स्टेज का मॉडेल !…अजाने ही उसने मेरी सहायता कर दी है ? ताजमनी को धन्यवाद दिया इरावती ने, "बहुत-बहुत धन्यवाद ! परतीपुत्तर ! तुम्हें भी ? …इसे मैं ले जाती हूँ। डायग्राम… !"

जितेन्द्र ने कहा—"लेकिन, स्टेज पर इन्द्रधनुषी रेशमी पर्दा और फूलदार झालर किसने लगा दी है ?"

ताजमनी मुस्कराकर चिक के उस पार चली गयी।

खुले स्टेज पर, महीन तार में चार-पाँच रंग के साटिन कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़ों को सजाकर बाँध दिया गया है। विशाल स्टेज की पृष्ठभूमि में रंग की धाराएँ आकाश से उतर रही हैं।···चारों ओर हजारों लोगों की झलक ! कलरव !···तालियों की गड़गड़ाहट ! जितेन्द्र और इरावती ने एक साथ पुकारा–"ताजमनी··· दी !"

"यह बात नहीं कि पहले कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ समाज में। परिवर्तन होते रहे हैं।··· बात है, परिवर्तन की गति की !"

शैलेन्दर की बात को ध्यानपूर्वक सुन रहा है जितेन्द्रनाथ। भिम्मल मामा अपनी मोटी डायरी में उसकी बातों को नोट कर रहे हैं। जितेन्द्र ने पूछा–"क्या, इसके पहले भी, किसी काल या युग मे, आज की तरह अभाव-अभियोग और व्यर्थता के विलाप से सामाजिक वायुमण्डल परिव्याप्त हुआ था ?"

"नही, ऐसा नहीं हुआ कभी, मैं मानता हूँ। इसका कारण है, परिवर्तन की गति मे भी परिवर्तन हुआ है। ऐसी तीव्र गति कभी नहीं रही। इसकी तेज चाल के साथ तालमेल रखकर चलना आदमी के लिए असम्भव हो रहा है। इसीलिए, यह टूटन··· ।" भिम्मल मामा ने पेंसिल रोककर कहा–"बन्दा बैलगाड़ी पर, जमाना ज्येष्ठ जहाज में ?"

शैलेन्दर श्रद्धा-भरी हँसी हँसकर बोला–"आप ठीक कहते हैं मामा ! बैलगाड़ी और जेट प्लेन की गति··· !"

जितेन्द्र ने शैलेन्दर को प्यार से चाय की प्याली दी–"चीन देखकर लौटे हुए मित्र की भेजी हुई चाय है।"

भिम्मल मामा ने कहा–"गोरी-चमेली चाय ? ···देख लो, गोरी-चमेली के प्रेमीगण गन्ध से अन्ध होकर आ रहे हैं, मेरी काष्ठपादुका की खूँटी को तोड़ेंगे।" सुरपति और भवेश ने क्षमा माँगी।··· खटटम !

"व्हाइट जैसमिन ?"

"सुरपति बाबू ! पहली प्याली शैलेन्द्र के हाथ में है।"

जितेन्द्र के साथ सुरपति और भवेश भी हँसे–"हाँ, शैलेन्दर बाबू ! त-त-तैयार रहिए !" जितेन्द्र ने कहा–"बात तय हुई थी कि पहली प्याली पानेवाला एक चीनी गीत सुनायेगा।"

"चीनी गीत ?"

"हा-हा-हा-हा !"

"लीजिए मामा ! मैं दूसरी प्याली लूँगा।" शैलन्दर ने हँसकर कहा। गोबिन्दो ट्रे लेकर खड़ा था। बोला–"नेंहि, नेंहि। पॅहिला कॉप माँ श्येमा को निवेदॅन कॅरा है।"

"तब, माँ श्यामा ही सुनायेगी एक चीनी गीत !"

चिक की आड़ में मीत की छाया डोली। जितेन्द्रनाथ सतर्क हो गया, निश्चय

ही ताजमनी अप्रसन्न हुई होगी।

सभी ने चाय की प्याली मे पहली चुस्की लेने के बाद एक-दूसरे की ओर देखा। भवेश की दृष्टि एक चाइनीज पेंटिग पर अटकी। "···नयी तस्वीर कब आयी है ?"

भिम्मल मामा ने कहा—"माँ श्यामा की कृपा से मैं चीनी भाषा के दो-तीन शब्द जानता हूँ। गोरी-चमेली की पहली चुस्की लेने के बाद मन बेईमानी नही करना चाहता। उन शब्दो को जोडकर यदि पूर्वी धुन मे गुनगुना दूँ तो माँ सरस्वती नाराज तो नही होगी ?"

भिम्मल मामा ने सुरीले सुर मे गाया—नि-हाउ-पू-हाउ—शेई शेई।

भिम्मल मामा के गुन-दोष को जानते है, सभी। इसलिए, सभी ने अपने पेट मे कुलबुलाती हुई हँसी को रोक रखा। सुरपति की हँसी जरा फसककर निकलना चाहती थी। किन्तु, उसने रोक लिया। भिम्मल मामा बोले—"आप सशक हैं कथाकलक्टर साहब ? ··अर्थ-हीन शब्द नही हैं। एक बन्धु दूसरे से पूछता है, कहो क्या हाल है ? जवाब मिला—धन्यवाद ! कोई किसी का हाल न पूछे, ऐसे जमाने मे, कहो बन्धु, क्या समाचार है, कौन पूछता है ? इसलिए, बन्धुहीन व्यक्ति प्रसन्नता से धन्यवाद के सिवा और कुछ उच्चारण नही कर सका ! हँसते हो ? "

भवेश ने हँसी का अपनी तुतलाहट से लपेट लिया। लेकिन भिम्मल मामा सबकुछ समझते हैं। बिगडकर बोले—"वर्तमान खगसाहित्य के गीतो मे सभी अपना ही रोना रोते हैं। दूसरे की कौन पूछता है, भला ! तुम नही समझागे हाँ, खगसाहित्य। ऐसा साहित्य जो चिडिया की तरह पखदार हो। खग ही जाने, खग ही समझे, खग की भाषा !"

"मैं स-स स-साहित्यिक तूथोडो हूँ, म्मामा। लेकिन चीनी भाषा म्मे तूतो प्राय इसी शब्द मे चॅ-चं चॅ-च ।"

भिम्मल मामा ने भवेश को माफ कर दिया—"चवर्ग फोबिया है यह तुम्हारा। बिना चॉचूँवाले शब्द भी होते हैं।"

भिम्मल मामा ने शैलेन्दर की ओर मुखातिब होकर कहा—"अच्छी बात। इस चायचक्र और चवर्गचर्चा से चौकित-चमत्कृत वातावरण मे सामाजिक सकट की भूमिका अफिट होगी। इसलिए बात पस्तपन्न रहे। क्यो ? बन्दा बेलगाडी पर, जमाना ज्येष्ठ जहाज मे ! ·सबसे तीव्रगामी हवाजहाज को ज्येष्ठ मानना ही होगा।"

गॉव के किसी चौराहे से परमा की फठहँसी की हहास सुनायी पडी—हह ! हहह ! हहहह ! ··· उसकी हँसी के कारण तो बोतू नही कहते लोग !

भिम्मल मामा ने कहा—"परम ज्येष्ठ आनन, परम आनन्दकन्द श्रीमन्त परमाननजी से मैं पच्चीस गज दूर रहता हूँ। परम आनन्द अवस्था म ही जो गले की नरेठी टीप देने को उतारू हो जाता है, वह परम कुपितानन होने पर जो न कर दे !"

—हहहहह ! हहहहह !

परमा की विकट हँसी तीव्र हुई। परम आनन्दित है, आज !

दीवाना इस हँसी से बहुत घबराता है। 'प्यार का बाजार' भंग करने के बाद ऐसा ही हँसा था परमानन्द !

दीवाना पटना से लौट रहा है, अभी-अभी। अब दीवाना नहीं, हरिजन दीवाना नाम है उसका। नाम छपाकर लौटा है पटना से, इस बार।···हँसे परमा, जी भरकर ! सबको ठीक करेगा हरिजन दीवाना।··· ले आया है, झोली में !

चमरौधे !

लेखक—हरिजन दीवाना।

विभिन्न अवगुन और गुमान-भरे, मुँड़े-कटे-छँटे आठ खोपड़ो पर क्रमशः आठ सर्गों में समाप्त। मूल्य—हरिजन-सेवा के नाम, एक अठन्नी !

पुस्तकालय के पासवाले चौराहे पर मस्त होकर गा रहा है हरिजन दीवाना, स्वरचित 'चमरौधे' के गीत—

रेड़ी के तेल मे, भींगे-भींगे, प्यारे-प्यारे
चर-मर चमरौधे पहले, तेरे ही सिर पर मारें,
आओ परानपुर के कलंक कुलंगार—
लम्बे-लम्बे बालों पर कर दें बौछार आज !
सचमुच में यार, तेरी ई किस्मत बड़ी तेज है··· !

'चमरौधे' की प्रतियाँ धड़ाधड बिकने लगी।··· ले जाइए, खुद पढ़िए, अपनी घरवाल्यिो को सुनाइए, और बच्चो को रटाइए। जो बूझेगा, वह रीझेगा। नकद नही तो उधार ले जाइए !

जिसकी जाति बेच आयी ॲगरेजिन ग्वालिन बेटी !
जिसके घर मे आयी पहले, फूली-फूली पॉवरोटी—
··· रण्डी के पीछे छोड़ा सारा समाज को-ओ-ओ, दुनिया-जहान को !

एक अठन्नी, एक अठन्नी ! आठ बिगड़े दिमाग सिर पर—नरम-नरम, गरम-गरम !

भूमिहार सुत कुवंश के सिर सूखे-सूखे डाले···

"जो भी कहो ! है असल कवि ? है न ?"

"जो बूझेगा, वह रीझेगा। बहुत दूर की मार है ! वाह जी हरिजन दीवाना !"

जयमंगल ताँती, शिड्यूल-कास्ट-स्टूडेण्ट्स-यूनियन का सेक्रेटरी है, अपने कॉलेज में। सवर्णटोली के लड़के उससे बात नहीं करते। अपने दल के लड़को के साथ

वह हरिजन दीवाना के अगल-बगल में तैयार है···जरूरते-नागहानी पर मदद करेगा।

परम मूर्ख बोतू बातूनी बकबक क्यों करता है ?
आओ इधर नालवाला चमरौधा क्या कहता है ?
हँसो और फिर हँसो, दाँत पर बार-बार मैं मारूँ··· ।

"हहहहह ! हहहहह ! हरिजन-सेवा के नाम, एक अठन्नी ! हरिजन-सेवक के नाम दूसरी अठन्नी। वाहजी, हरिजन दीवाना ! क्या बनाया है चमरौधा !" परमा भी गाने लगता है हरिजन दीवाना के साथ–

ऊँची-ऊँची पगड़ीवालो पगड़ी अपनी खोलो
गंगाजल से अपना-अपना मूँड़ा माथा धोलो··· !

"हहहहह ! हहहहह ! वाह जी हरिजन दीवाना ! लाओ पीठ ठोक दूँ··· ।"

"ऐ ! मारते हो क्यों ? देखो जयमंगल, यह मार रहा है और कहता है कि पीठ ठोकता हूँ ! ··· लुत्तो बाबू को खबर दो जरा।"

"क्यों मारा ?"

"पीठ ठोकता हूँ या मारता हूँ ! इस तरह पीठ ठोकने से चोट लगती है ? जरा तुम्हीं देखो ! ··· फट्-फट् !"

"ऐ ! मारपीट करता है। ऐ ! सीटी फूँको ! परमा ने क्या समझ लिया है अपने को ? जयमंगल ! देखो, झोली छीनकर भागा जा रहा है।"

जितेन्द्रनाथ पगडण्डी से जा रहा था। उत्तेजित नौजवानों को देखकर रुका। परमा से पूछा–"क्यों परमानन्द ? क्या बात है ?"

उत्तेजित नौजवानों को अचरज हुआ।···आज जित्तन बाबू भी आये हैं ? परमा ने 'चमरौधे' की प्रति जितेन्द्र के हाथ में देते हुए कहा–"ऐसी अच्छी किताब पर तो नोबेल प्राइज मिलना चाहिए। मैंने जरा-सा पीठ ठोक दिया तो क्या बुरा किया ? आप ही कहिए, भैया !"

"नहीं, वैसे भला पीठ ठोका जाता है ! देखिए, पीठ लाल हो गया है !"

जितेन्द्र ने पृष्ठों को उलट-पुलटकर देखते हुए कहा–"लड़ाई-झगड़ा करने के बदले इसको एंजॉय क्यों नहीं करते, परमा ?"

जितेन्द्र को हँसते हुए देखकर हरिजन दीवाना को अचरज हुआ। उसके साथियो ने आपस में कानाफूसी की। जयमंगल ताँती ने धीरे से कहा–"घबराने की बात नहीं, लुत्तो बाबू आ रहे हैं।"

"एक प्रति मुझे भी दीजिए।" जितेन्द्र ने कहा। हरिजन दीवाना ने झोली से एक प्रति निकालकर बढ़ाया। जित्तन ने माथा झुका दिया। सभी ठठाकर हँस पड़े–हा-हा-हा-हा ! हहहह ! हहहह ! हो-हो-हो ! हरिजन दीवाना अप्रस्तुत हुआ।

परमा ने हाथ के साप्ताहिक पत्र को मोड़कर चोंगे की तरह बनाया और उसमें मुँह लगाकर बोला–"भोइयो-ओ ! ओज रोत ! पुस्तकोलोय में बिराट कवि सम्मेलन !

मोंगनीसिंघ दीवोनो उर्फ प्रेमकुमोर उर्फ हरिजन दीवोनो···!"

जितेन्द्रनाथ बरदियाघाट की ओर चले—हँसते-मुस्कुराते। राह में सामबत्ती पीसी पर नजर पड़ी। पीसी हँसकर रह गयी···आज रास्ता भूलकर गाँव की पुरानी गली से जा रहे हैं!

पनघट पर औरतों ने सिर पर घूँघट खींचे। फेकनी की माय कुछ कहते-कहते रुक गयी—"आकि देखो···!"

···रात में पुतली दौड़ी आयी—'मेमरानी! सरबनाश हो गया!'

'का-ली! क्या है पुतली?'

'सुलतानपुर मेले को लूट लिया गया। दो खाँटी साहब और एक देशी साहब मारे गये। एन्थनी साहब घायल हुए हैं।··· पाँच सिपाही मरे हैं।'

'कहाँ? कहाँ?' मम्मी घबरा गयी।

मैंने पुतली को आँख का इशारा दिया। पुतली बोली—'अभी, कोई बोल रहा था कि सुलतानपुर मेले को लूट लिया गया है।'

'मम्मी! यहाँ तो हमेशा बलवा-हँसेरी, दगे-फसाद लगे ही रहते हैं। घबराती क्यों हो!"

मम्मी तुरत शान्त हो गयी। बोली—'तुम्हारा यह भला आदमी न जाने कहाँ है! सुलतानपुर मेला तो मिस्टर एन्थनी का है न!'

रात-भर मैं बेसुध रही माँ के पास। सुबह को फुलवारी से जवाफूल लाने गयी तो फाटक के पास एक तख्ती लटकी देखी। रात में ही लटकायी गयी है—'श्रीमती गीता मिश्र से मिलनेवाले अंग्रेज बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि श्रीमती एक हिन्दू जमीदार की पत्नी है; हिन्दू धर्म के आचार-विचार पालती है। इसलिए···!' अपनी कोठी के कारकुनों और सिपाहियों को देखा—लाठी-भाला लेकर तैयार हैं—आधे घण्टे के बाद ही, पुल पर दो-तीन दर्जन घोड़ों के टापों की गड़गड़ाहट हुई! ···मैं तैयार हो गयी। मम्मी ने बाथरूम से पुकारकर कहा—'दि-रि-बे-ल!'

'नो मम्मी!' घोड़े के टापो की गड़गड़ाहट फाटक पर आकर रुक गयी। एक फौजी हुक्म गूँज गया। प्रतिध्वनि हुई—अ-ऽ-ऽ-वा-ह्म-औं-क्! दरबान ने परवाना लाकर दिया—डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का परवाना!

···एस. मिश्रा इज वाण्टेड! खूनी मुकदमे का आसामी अव्वल। डी. एम. कोठी की तलाशी लेगे।

मम्मी घबरायी। मैंने समझाया—'मिस्टर एन्थनी से मिश्रजी की पुरानी दुश्मनी है, सो तो तुम जानती ही हो।'

लेकिन, मम्मी ने बार-बार फुसफुसाकर कहा—'मरडर! मरडर!'

मैंने माँ तारा की चरणधूलि लेकर कहा—'माँ तारा मेरी, रोज बलि चाहती है तो कोई क्या करे!'

मम्मी मूक-बधिरा-सी खड़ी रही।

मैं स्वीकार करती हूँ, यदि मिस्टर एण्डरसन की जगह पर कोई और अग्रेज डी. एम. होता तो घटनाएँ दूसरा रूप ले सकती थी। बहुत प्रतिष्ठत परिवार का विद्वान् बेटा है वह ! डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मिस्टर एण्डरसन अपने कुछ अधिकारियो के साथ अन्दर आया।

फौजी सार्जेण्ट से डी. एम. ने आकर कहा–'बहुत-से लोग तीर-धनुष, बल्लम-गँड़ासा लेकर फाटक के चारो ओर जमा हो रहे हैं। आइ थिक ए फ्यू राउण्ड्स··· ।'

डी. एम. ने कहा–'हमेशा गोली से बात मत कीजिए। उन्हे समझाकर पूछिए, वे क्या चाहते हैं; भीड क्यो लगा रहे हैं।'

मिश्रजी तो मिले नही। किन्तु, तलाशी के सिलसिले मे डी. एम ने मेरे घर का कोना-कोना देख लिया। गुहाल और गोशाले मे भी झॉकी मार आया।

मैंने, अपने प्रत्येक कमरे की दीवारो पर अपनी और मिश्रजी की रुचि से म्यूरल्स अकित किये थे, इस अचल मे प्रचलित भित्तिचित्र के आधार पर।···मिस्टर एण्डरसन ने हमारी किताबो की अलमारी को दूर से ही देखा, सस्कृत-ग्रन्थो पर अग्रेजी मे लिखे सुनहले नामो को पढकर विस्मित हुए···रामायण, महाभारत, रघुवशम्, मेघदूत, कुमारसम्भवम् !

जाते समय मिस्टर एण्डरसन ने मुस्कराकर माफी मॉगी–'क्षमा करेगी !'

डी. एम. सदल-बल परानपुर की ओर चले। भगवान जाने, रानी-बहिना के साथ कैसा व्यवहार करे ! वहाँ कोई अप्रिय घटना न घटे ! मॉ तारा ! दूसरे ही दिन मैं परानपुर गयी।·· मिस्टर एण्डरसन सन्मुच भद्र व्यक्ति हैं। हम दोनो बहनों ने व्रत पालन किया। दुलारीदाय मे नहा आयी। मॉ तारा के मन्दिर मे पूजा हुई।

लॉली को मैं पूछती–'लॉली, डैडी आयेगा !'

"आय, आय !' मुँह मे उँगली डालकर जिद्दू-बद्दू जवाब देता–'आय-आय !'

'लॉली, डैडी आयेगा !'

'आय-आय !' ··दो छोटे-छोटे हाथ, नन्ही हथेलियॉ !

परानपुर हवेली के अन्दर महाभारत सुन रही थी। अचानक बाहर शोर-गुल होने लगा। रानी-बहिना की नौंड़ी चिल्लायी–'मालकिन, दुल्हाबाबू, आवि गेल ! लाउ हमर इलाम-बकसिस। हमर बात ठीक भेल !'

'क्या कहती है तू !'

'सच ! तारा-मन्दिर मे मये हैं।'

रानी-बहिना ने गले का चन्द्रहार उतारकर जिबछी के आगे फेक दिया। शख-ध्वनि से सारा वातावरण गूँज उठा।

मूँगा के लिए मैंने बेसन का हलुआ बनवाया। जीतकर आया है–मूँगा ! इस

मुकदमे की जीत की खुशी में हमारा परिवार दो दिनो तक मस्त रहा। गाँव में भोज और गीत-उत्सव हुए।

पहली बार माँ तारा के मन्दिर मे श्यामा-सकीर्तन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

माँ तारा की प्रतिमा हँस पड़ी···

मनहि में राखब भूवनमोहिनी माँ के
करि सब बन्द दुआरे,
सोहि मन्दिर एको दियरो न लेश'ब
तवहुँ जगत उजियारे—तारा-तारा !

कचनार के फूलों से लदी मै मिश्रजी की गोद में न जाने कितनी देर तक सोयी रही ! ···गुलाबजामुन के फूल पाउडर-पफ जैसे होते हैं। फूल के केसर थरथराते हैं। मिश्रजी ने कहा—'अब जीवन में फिर कोई दस्तावेज जाल नहीं कर मकूँगा। इस बार मेरा दाहिना हाथ अबस होता जा रहा है।'

मिश्रजी ने हाथ को ऊपर उठाते हुए कहा—'कँपकँपी देखती हो न ?' मैं मिश्रजी की हथेली को चूमकर बोली—'माँ तारा अब तुमसे कोई ऐसा काम नहीं करवायें जिससे तुम्हारा हाथ अबस होकर काँपे !'

मेरे स्वामी की हथेली सचमुच कॉप रही थी—भगवन् ! यह क्या ?

'हाँ, माँ की यही इच्छा है। अब मैं कोई ऐसा काम न करूँ, इसीलिए यह दण्ड ! तुमको नहीं मालूम गीत ! पिछले महीने, लगातार पन्द्रह दिनो तक दिन-रात काम करने के बाद, जब मेरी हथेली थरथराने लगी तो मैं रो पडा। माँ से प्रार्थना की—बस, यही आखिरी··· क्या कर रही हो माँ ! ··· एन्थनी साहब के दस्तखत का आखिरी नुक्ता देते-देते मेरी उँगलियाँ कबूतर के पंख की तरह थर-थर कॉपने लगीं।'

मिश्रजी ने अपने बैग से रोल किया हुआ कागज निकालकर फेक दिया। एक लम्बी-चौडी अरजी !

··जनाब मिस्टर एन्थनी साहब, मालिक सुलातनपुर इस्टेट ! जनाब आली ! ···सुलतानो पोखरा का मेला, जिले-भर क हिन्दू-मुसलमानों का एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक मेला है। दोनों कौम की स्त्रियाँ तीन दिन तक नहाती हैं। जनाब को यह भी मालूम है कि मैथिल ब्राह्मण तथा ऊँचे वर्ण की स्त्रियाँ साड़ी के सिवा और किसी किस्म का अँगरखा नही पहनतीं ! ···मुझे परानपुर पोखरे के जनानाघाट पर नहाती हुई स्त्रियों की याद आयी ! ···पिछले साल, जनाब के कुछ दोस्तों ने मिलकर नहान के समय कुछ बेजा हरकत की थी जिसकी सूचना आपको वाजिब समय पर दी गयी थी। इस बार नहान के पहले ही—मेले में जो आपने कलकत्ता से अंग्रेजी डांस और कार्निवल पार्टी बुलायी है—उसके कुछ लोगों ने छेड़खानी की है, औरतों से।···

मुझे बार्कर की याद आयी।

"'जनाब से प्रार्थना है, घटनाओं की जाँच करके हमें यकीन दिलावें ताकि हमारी स्त्रियाँ कल सुलतानो पोखरा में धार्मिक अनुष्ठान करके, नहा सकें। नहाने के समय अथवा मेले में कोई अशोभन घटना न घटे ! '''

दरखास्त पर बहुत-से दस्तखत हैं। सबसे ऊपर मेरे स्वामी का हस्ताक्षर है—श्री शिवेन्द्रनाथ मिश्र, मालिक—परानपुर इस्टेट।'''राजा महीपालसिंह, नैनगंज राज। राजा नीलमणि ओझा, राज चम्पापुर। जमींदार उमापति रायं, कठौतिया इस्टेट। चौधरी मुहम्मद अताउर रहमान, चौधरी इस्टेट। राजा आंतिश खाँ'''।

मुसलमानों ने भी कैथी लिपि में दस्तखत किये हैं। जिले-भर के पन्द्रह राजा, जमींदार और पतनीदार के हस्ताक्षर।

'इसमें जाल की क्या बात है ?'

'उलटकर पढ़ो !'

इसी पत्रक के दूसरे रुख पर लाल रोशनाई से खूब बड़े-बड़े अंग्रेजी अक्षरों में कुछ पंक्तियाँ लिखी गयी हैं—आड़ी-तिरछी ! गुस्से में थर-थर काँपते हुए या शराब के नशे में लिखी हुई पंक्तियाँ—

'''योर नेकेड वीमन ! तुम्हारी नंगी औरतें पोखरें में नहाने आती हैं। हम दूरबीन से उन्हें देखते हैं। दूरबीन की राह हमारे एकदम करीब आ जाती हैं।''' हम उन्हें अपने पलँग पर देखना माँगते हैं। कसूर तुम्हारी औरतों का है। वे इतनी सुन्दर क्यों होती हैं ? बिना किसी रंग के उनके ओठ क्यों इतने लाल रहते हैं ? पागल बना देती हैं'''? तुम्हारे कहने से हम अपनी कोठी की खिड़कियाँ बन्द नहीं कर सकते। केलकेटा, डाइनापो और डेराडुन के दोस्तों को मैंने जशन के लिए बुलाया है। एकादशी और रोजानमाज पढ़वाने के लिए नहीं।'''तुम्हारी औरतें इतनी बेवकूफ क्यों हैं ? भला, पोखर-तालाब भी बच्चा दे सकता है ? बच्चा तो आदमी'''।

'और, और, इस शैतान की जान कैसे बच गयी ?' पढ़ते-पढ़ते मेरे गाल लाल टेसू हो गये। 'उसकी मेम ने बचा लिया। पैरों पर गिर पड़ी—एक्सक्यूज मिश्रा''' प्लीज !'

'तुमने यह नहीं पूछा कि इसमें जाल क्या है ?"

'कैसा जाल ?'

कागज मोड़ते हुए मिश्रजी बोले—'बातें सारी सच हैं, किन्तु इस कागज पर चढ़ी हैं बातें, मेला लूट हो जाने के बाद।'

'आँय ! '''फिर भी। पहले हो या पीछे, एन्थनी का वह जहरीला जवाब !'

'देखता हूँ, दूध-घी का व्यापार करने से कुछ डल हो ही जाती है बुद्धि !'

मिश्रजी ने एन्थनी की लिखावट पर उँगली डालकर कहा—'इसको एन्थनी ने चैलेंज किया। आसमान से गिरा अपनी लिखावट को देखकर।'''सपने में भी नहीं ! मैंने कभी नहीं लिखा ! '''नहीं लिखे, कहा तो उसने अवश्य था !'

मैं काँप उठी, न जाने क्यों !

'हस्ताक्षर-विशेषज्ञ विभाग के अफसरों ने कहा, एकमत होकर—यह जाल नहीं। लिखावट मिस्टर एन्थनी की ही है···। और, तुम्हारा मिस्टर एण्डरसन सचमुच भला आदमी है। उसने गवर्नर को लिखा : इस बार मिस्टर एन्थनी ने ऐसा कुकाण्ड किया जिससे सारे जिले में गदर होने की सम्भावना थी। यहाँ के प्लाण्टर्स हमेशा ऐसी ही वारदातें करते हैं। जिले के पूर्वी इलाके से कल एक जवान लड़की की लाश आयी है।···शासन-विशेषज्ञ की हैसियत से मैं कहना चाहूँगा, दंगे का मामला उठा लिया जाये, वरना दबी हुई आग भड़क सकती है। आप इस मामले के कागज को खुद पढ़कर विचार करें। इस मुकदमे को पेडिंग रखना भी खतरे से खाली नहीं।···अन्यथा, जिले का शासन-भार जिले के किसी प्लाण्टर को ही दे दें। हा-हा-हा ! लाट साहब ने इन प्लाण्टर्स को कनैठी दी है, बुलाकर—सी यू हेरी-डिक-टॉम। माइण्ड यू···!'

···मैं रूठी रही।

मिश्राजी ने कहा—'क्यों, तुम मेरे कुकृत्य को सुनकर नाराज हो ?'

'कुकृत्य-सुकृत्य मैं क्या जानूँ !' अब मुझे बोलना ही पड़ा—'मैं दूध-दही बेचनेवाली ग्वालिन हूँ। मुझसे पण्डित-ज्ञानी लोग क्यों बोलें ?···डल ! एक काले छोकरे की बाँसुरी पर तन-मन-जीवन अर्पित करनेवाली मूर्खाओं को डल नहीं तो और क्या कहोगे ?'

मिश्राजी ने कहा—'हजार बार यशोदा के पास जाकर लाख बातें लगा आतीं ! सौगन्ध खातीं—अब जो कभी तुम्हारे आँगन में पाँव भी धरूँ ! अब जो कभी बोलूँ तुम्हारे काले-कलूटे, चोर बेटे से ! और, ज्यों ही बाँसुरी बजी···।'

हा-हा-हा-हा ! हँ-हँ-हँ-हँ !

गरुड़धुज झा का अनुमान सच निकला। पाँच दीवानी मुकदमे दायर हो चुके हैं। एक-से-एक रँगीले मुकदमे ! परिवार का एक प्राणी दूसरे को निगलने की तैयारी कर रहा है। लड़के ने अरजी दी है—'विधवा माँ परिवार को नेस्तनाबूद करने पर तुली हुई है। पारिवारिक सम्पत्ति को बरबाद कर रही है। माननीय जज साहब तुरत इंजंक्शन की कार्रवाई को मंजूर करें।' बाप ने प्रार्थना की है, वह सम्मिलित परिवार का कर्ता होकर अभी भी जीवित है। सम्मिलित परिवार की आमदनी के पैसे से उसके लड़के ने जमीन खरीदी··· सब अपने नाम से। अब, एक धूर जमीन भी नहीं देना चाहता उसका बेटा। गुजारिश है···।

एक ही पखवारे की आमदनी से आनेवाले महीनों की आमदनी का हिसाब जोड़कर देखा है, गरुड़ झा ने। मार-काटकर पाँच सौ रुपये महीने की आमदनी ! ··· गरुड़धुज झा वकील से कम दावी नहीं रखता है। सलाह, नगद पैसा लेकर ही देता है, मुफ्त में कभी नहीं। फीस के अलावा भेंटी और दर्शनी के रूप में दही, केला, दूध, चिउड़ा आदि भी स्वीकार करता है।

इसके अलावा, रोशन बिस्वाँ से कर्ज लेनेवाले खातुक भी पहले गरुड़धुज झा के ही पास आते है। बिना गरुड़ झा की जमानत लिये किसी को कर्ज नहीं देता है बिस्वाँ।... गरुड़ झा एक कहावत को दिन मे पाँच बार दुहराता है–'गाछ पर चढ़ो गिरने के लिए, जमानत होओ भरने के लिए ! मुफ्त मे कौन जान फँसाने जाये अपनी !' खातुक लोग दाँत निपोरकर घिघियावे या देह नोचे अपनी। गरुड़धुज झा को इससे क्या ! दान-दक्षिणा की बात वह साफ-साफ शब्दों मे करता है। लस्टम-पस्टम नही, पाँच रुपया सैकड़ा से एक अधेला कम नही। तीन रुपये पर बात तोड़कर वह अपनी दूसरी कौडी फेंकता है–'क्यों किसको मुखिया चुनोगे ? वैसे, तुम्हारी जो मर्जी हो करना। लेकिन, एक बात जान लो--खगता आदमी का कोई परतीत नही। जिसकी सन्दूक में कभी दस रुपया भी नही रहा, उसके पास अचानक हजार रुपया सरकारी तहसील से आ जाये, तो वह क्या करेगा ? एक ही बार मे सब हडपना चाहेगा या नही ? रोशन बिस्वाँ को क्या कमी है ? अघाया हुआ मन है। वह मुखियागिरी के लिए जरा भी तैयार नही था। मैंने जबरदस्ती नौमलेशन दाखिल करवाया है।... और आज रोशन बिस्वाँ नहीं होता गाँव मे तो बहुतो की इज्जत मिट्‌टी मे मिल जाती। फारबिसगज के मारवाडी महाजन परानपुर गाँव का नाम सुनते ही साफ इनकार कर जाते है, सो जानते ही हो ! बेर-बखत पर जो काम दे, वही असल हितू। है या नहीं ?'

गरुड झा ठीक ही कहते थे–रोशन बिस्वाँ की मुखियागिरी उसकी तिजोरी में धरी हुई है।

सोशलिस्ट पार्टी के जयदेव और रामनिहोरा में फिर मेल-जोल हो गया है। रामनिहोरा, ग्राम-पचायत की मुखियागिरी के लिए खडा हुआ है। पार्टीवाले पीठ पर हैं, मदद करने के लिए।

सुचितलाल मडर मकबूल से राय लेकर नामजदगी का पर्चा दे आया है।... पर्चा दाखिल करते समय उसकी हालत साँप-छुछुन्दर जैसी हो गयी। आखिर, सरकारी कागज मे लिखे हुए नाम को कबूल करना ही पडा–सुचितलाल मडर, कोष्ठ में पोंपी !

बस, दो ही विरोधी हैं। बीरभद्दर के भाई शिवभद्दर को जितेन्द्र ने दस एकड धनहर जमीन दे दी है। तीनो भाई आजकल अपने मरे हुए मामा-मामी का गुणगान करते फिरते हैं।...बीरभद्दर यदि उतरता चुनाव के मैदान में ! लुत्तो कहता है–"झाजी ! असल मजादार कैण्डेट नहीं तो कुछ नहीं। इसी बार बीरभद्दर को दगाबाजी का मजा चखा देता !"

लुत्तो और गरुड़ झा एक ही चुटकी बजाकर दोनों विरोधियों को चित्त कर देंगे। गरुड़ झा ने लुत्तो को सलाह दी–"खबरदार ! जब तक चुनाव नहीं हो जाये, बिस्वाँ को पूरा भरोसा दिलाकर कुछ कहना ठीक नही।... सबसे मोटी बात यही है, एक ही वोट मे हार-जीत की बात है। क्या जाने क्या हो ! अपनी ओर से

कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए।"

तब, लुत्तो ने अपने मन की बात खोली–"झाजी ! दोनों कैण्डेट, समझिए कि मेरी मुट्ठी में हैं। मैंने लंगी लगा दी है। एक को सरपंची का लोभ दिया है और दूसरा कुछ रुपया चाहता है।"

गरुड़ झा ने पत्थर का दाँत चमकाकर चेतावनी दी–"हूँ-ऊँ !...लेकिन, बिस्वाँ से कहना होगा–दोनो उम्मीदवार रुपया लेकर ही नाम वापस लेगे। और, असल रकम की बात कहीं खोलने की नहीं।"

बिस्वाँ को लुत्तो और गरुड़धुज झा ने मिलकर तुरत समझा दिया–पाँच सौ रुपये फी उम्मीदवार को देकर भी घाटे में नहीं रहेगा, बिस्वाँ। चुनाव में खुदरा खर्च ही इससे ज्यादा हो जायेगा। तिस पर भी, ऊँट किस करवट बैठे ! एक ही वोट पर हार-जीत की बात है।...तिजोरी में रखी हुई है बिस्वाँ की मुखिया-गिरी !

मुखिया ! सारे परानपुर गाँव का मालिक ! जिसके इशारे पर गाँव के लोग उठेंगे, बैठेगे ! जेल और जुर्माना करने का पॉवर ! बिस्वाँ ने लगातार तीन बार जीभ निकालकर ओंठ चाट लिया। तिजोरी से नोट निकालकर गिनते हुए बोला–"कहीं ठग न ले, दोनों !" लुत्तो और गरुड़ झा एक ही साथ हँसे, ठठाकर–"ठग लेगा ? ठठेरे-ठठेरे... हा-हा-हा !"

रामनिहोग ने सोच-विचारकर देखा–सरपंची ही ठीक है ! मुखिया तो सरपच के हाथ का कठपुतला होता है। उसने गरुड़धुज और लुत्तो की बात मान ली। पर्चा उठाने को तैयार हो गया।

सुचितलाल मड़र अपने पोपी नाम को लेकर चुनाव नही लडना चाहता। गाँव के छोटे-छोटे लौण्डे भी उसको देखकर नारा लगाते हैं–"पोंपी को फूँक दो, सुचितलाल को भोट दो !"

मुबलग एक सौ पच्चीस रुपये गिनकर सुचितलाल ने कमर में खोंसते हुए कहा–"रजिस्टर से गॅलत नाम कँटवाँ दीजिएँ झाँजीं किसीं तरँह !"

ग्राम-पचायत के आफिसर साहब की कचहरी हाई-स्कूल में लगी है।

रोशन बिस्वाँ के दोनो विरोधियों ने नामजदगी के परचे वापस ले लिये।

लुत्तो ने कहा–"देखा झाजी ! आखिर, बबुआनटोली को चित किया या नहीं ? सोलकन्ह मुखिया बनाया या नही ?"

गरुड़ झा ने खैनी थूकते हुए कहा–"मैंने मदद नहीं की होती तो ?"

"ठीक कहते हैं, झाजी। आपने खूब मदद की है। चलिए जरा टीशन की ओर ! सुचितलाल मड़र को देने के बाद बचा है...।"

गरुड़धुज झा ने कहा–"अढ़ाई सौ रुपया हाकिम का भी घटा दो।...हाकिम तैयार ही नहीं हो रहे थे।...पाँच बजे के बाद नामजदगी का परचा वापस करने आये हैं ? टैम ओवर हो गया। मैंने दो पूरी एक आधी उँगली दिखलायी। तब कलम पकडी हाकिम ने।"

लुत्तो ने मान लिया–"जो वाजिब खर्च है, वह क्यों नहीं घटेगा !"

"और हिरिया ने मुझसे बनारसी साड़ी वसूल ली है। पाँच दिन के करार पर खेमचन्द मारवाड़ी की बही में अपना नाम चढ़वाकर, मैंने साड़ी ला दी है। तुमने कहा था न ! एक सौ पाँच रुपये।"

"हाँ। वह भी जोड़े देता हूँ। और···एक सौ रुपया मैंने ईंट बनाने की मजदूरी दी है। बाकी जो बचा, उसका आधा··· ।"

"कैसा हिसाब करते हो ? एक सौ रुपये का ईंट दोगे मुझे क्या ?"

"हाँ-हाँ, ठीक ! छः सौ पच्चीस का आधा ?"

मुखिया साहब गाँव की गली-गली में साइकिल का नया हारन बजाकर घूम रहे हैं—पें-ऐं-ग ! पें-ऐं-ऐं-ग !

"झाजी ! एक खुशखबरी और सुन लीजिए। जित्तन का भोज भण्डुल हो गया। ब्राह्मणों ने भोज खाने से इन्कार कर दिया···अब कौन खायेगा उसकी हवेली मे ? हम लोग नट्‌ट नही हैं। जित्तन ने कहा—न नकद रुपया देंगे और न भोज देंगे।"

लुत्तो और गरुड़धुज झा ने जोर से ठहाका लगाया—"गेल भैंस पानी में ! बहुतों की जीभ छटपटाकर रह जायेगी।"

जीभ छटपटाती है रोशन बिस्वाँ की ! मुखिया होने के बाद ही उसने अपनी जीभ को लगातार पाँच बार दाँतों से कुचल दिया। इसलिए बिना जर्दावाला पान भी जीभ को धधकाता है।···पान की पीक कुरते पर गिर पड़ी !

गरुड़ झा ने कहा—"शुभ है, शुभ है ! अब आप हमेशा पान कचरिएगा !"

ताजमनी क्या करे ? जितेन्द्रनाथ अधिक संगसुख चाहने लगा है। उँगलियाँ चूमकर सन्तोष नही, अब ! अब क्या हो ? ··· माँ तारा !

··· और जिद्दा का क्या कसूर ? क्या हुकुम देती हो माँ ! तुम्हारे सामने झूठ कैसे बोलूँ, मेरा मन भी अब थिर नहीं। मैं अपने जिद्दा को सम्पूर्ण सुखी देखना चाहती हूँ। उसकी लजायी आँखें मैं नहीं देख सकती। मैं उसको क्या जवाब दूँ! कल ही मेरे पीछे-पीछे दौड़ आया··· ।

"ताजू !"

"नही, जिद्दा ! मुझे माफ करो ! पैर पडती हूँ तुम्हारे। मुझे हुकुम लेने दो माँ से ! ··· माँ जो कहेगी, करूँगी।"

पैर पर झुकती हुई ताजू को बाँहों में समेटकर, चुपचाप ताजू का मुँह देखता रहा जितेन्द्र। बन्धन ढीला हुआ—"ठीक है, तुम्हारा सत्त भग नहीं करूँगा।"

"सत्त अकेले मैंने ही नहीं किया था।··· जिद्दा ! यह क्या ?"

ताजमनी को लगा, गालों पर दो सोने के तपे सिक्के बैठा दिये गये ! लाल-लाल ! ···ताजमनी के ललाट पर, दाहिनी ओर एक छोटा-सा चाँद का दाग है। बचपन में सोने का कण्ठा तपाकर दाग दिया था, उसकी माँ ने। नजर लग गयी थी किसी की ! घण्टों चिल्लाती रही थी ताजमनी।···

"विश्वास करो ताज ! सत्त भंग नहीं हुआ है।"

"सच ?"

"हाँ !"

ताजमनी के गालों की जलन दूर हो गयी। जितेन्द्र की आँखों में ढूँढ़कर देखा उसने, सचमुच, कहाँ है इनमें कोई कलुष ? ऐसी आँखों का पूर्ण विश्वास है ताजमनी को। उसने बचपन से ही देखा है ! ···सत्त भंग नहीं हुआ ? तो, जिद्दा ! ··· जि-त् दा !

जीवन में पहली बार जितेन्द्र के ललाट को चूमकर, जितेन्द्र की आँखों में देखा उसने।···अब देखूँ ? और, अब ? ···

जितेन्द्र के मुख-मण्डल पर कमल की पंखुड़ियाँ बरसीं ! ···दूसरे दिन, सुबह होते ही सुधना भागकर गगाबाई के यहाँ चला गया। जला-भुना रहता था हमेशा ···पिछले कुछ दिनो से। कभी-कभी ताजमनी को भद्दी गालियाँ भी देता, धीमी आवाज मे। एक दिन गुस्से में मार भी बैठा। ताजमनी अवाक् है। जाने के पहले सुधना की आँखें और जहरीली बोली की याद कर वह सिहर उठती है। डाह ? ···उत्ती-जरा लड़का भला ऐसा जलेगा ? ताजमनी डर गयी है !

सुधना के खाने की बेला मे मीत उसकी खाट को सूँघ आया। ताजमनी मुँह में कौर नहीं डाल सकी।

गोबिन्दो रसोईघर मे बडबडा रहा है–"कहाँ का कौन तो भाई ! उसकी खातिर खाना-पीना छाडके ताजनदि बेकार जान देता है।···उल्लूक है छोकडा !"

जितेन्द्र गुनगुनाकर गा रहा है–बैराग जोग कठिन उधो-ओ-ओ, हम ना कऽरऽब हो ! हुँ-हुँ-अँ, उँ-य-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ-उँ-ऊँ··· । पूरबी धुन में मस्त है, जीत।

गोबिन्दो चाय की खाली प्याली लेने आ रहा था। अँगनाई मे खड़ी ताजमनी चौंक पडी।···खडी सुन रही थी। गोबिन्दो ने जो गुनगुनाहट सुनी तो थमककर खड़ा हो गया। उसके ओठ खिल पड़े, नुकीले।···फूल फूटा है, इस बार गन्धऽ निकॅलता है। वह वापस हो गया।

ताजमनी तुलसीचौरा के पास खड़ी अब अपनी हँसी रोक नहीं सकी।···अभी तुरत बैराग जोग कठिन हो रहा था और अब पटना शहर से जहर मँगा रहे हैं !

··· सखि हे-ए–पटना शहर से जहर हम मँगइबए, सखि हे-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ-हु खइबइए ! ताजमनी ने खिडकी से झाँककर देखा–एक मोटी किताब को रूमाल से झाड रहे हैं।···अलमारी की सफाई हो रही है ? ऐसे समय में उन्हें कोई विरक्त नहीं करे।···महाभारत को उलटते-पलटते ताजमनी को भी मालकिन-माँ की कितनी बातें याद आती हैं।

ताजमनी हौले पाँवो अपनी कोठरी में लौटी और माँ काली की तस्वीर को प्रणाम कर मुस्करायी···माँ !

ताजमनी, सचमुच आँखों को पढ़ना जानती है ?

अपनी लाइब्रेरी में लटकाने के लिए उसने हिन्दी, बँगला, अंग्रेजी तथा उर्दू के कई प्रसिद्ध साहित्यकारों की बड़ी-बड़ी तस्वीरें मँगवायी थीं। सुबह भवेश आकर, प्रत्येक की जगह तजवीज करके लटका गया था। शाम को टहलकर लौटा जितेन्द्रनाथ। कमरे में पैर रखते ही स्वामी विवेकानन्द की मूर्ति के पास लटकी निरालाजी की तस्वीर पर नजर गयी ! · "यह किसने किया है ? मेरे कमरे में कोई आया था ? भवेश, सुरपति··· इरावती ?"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

"तस्वीर किसने लटकायी है यहाँ ?"

ताजमनी पर्दे के इस पार चली आयी, कमरे में। जितेन्द्र की आश्चर्यचकित मुद्रा देखकर अप्रतिभ हुई–"मैंने !"

"तुमने ? सच?" जितेन्द्रनाथ मुस्कराकर बैठ गया। बोला–"लाइब्रेरीवाले कमरे से क्यों उतार लायी ?" ताजमनी चुप रही। जित्तन ने कहा–"तुमने अच्छा किया है। लेकिन मुझे कारण नहीं बताओगी ? यों ही, वों ही नहीं। साफ-साफ। और भी दो दाढ़ीवाले थे, उन्हें क्यों नहीं ?"

जितेन्द्र ने ताजमनी का आँचल पकड़ा।–"छिः, अभी तक वही आदत !"

आँचल छूटता ही नहीं। मालकिन-माँ का आँचल भी इसी तरह पकड़ लेते–"बतलाओ तब छोड़ूँगा। लड़कपन !"

"यों ही ! मैंने देखा आँखे ! देखिए न, सामीजी की आँखों से मिलती हैं न ? मैंने समझा मुझे लगा–यह भी माँ तारा का बेटा है, कोई ! कौन हैं !"

"माँ तारा का बेटा ? शाक्त ?" जितेन्द्रनाथ हँसा ठठाकर–"ताजू ! तुमने सही किया है, ठीक समझा है। · जरा, बैठ जाओ ताजू ! मैं सुनाता हूँ।" ताजमनी बैठ गयी पास पड़े मोढ़े पर। जितेन्द्रनाथ अपने बिछावन के पास रखे सेल्फ में कोई किताब ढूँढ़ने लगा। इरावती आयी–"ताजदि ! आज ज़रूर कोई खास बात है तुम्हारी पाठशाला में। सूपकार गोविन्दो आज मगन होकर गा रहा है–रामौलखन सीता··।" ताजमनी हँसी–"हाँ, आज आपको यही पत्तल जूठा करना होगा।"

जितेन्द्र ने कहा–"सुनो इरावती ! निरालाजी के मुँह से मैंने पहली बार सुनी थी–राम की शक्ति-पूजा !"

इरावती अपनी कुरसी खींचकर ताजमनी के पास ले गयी। धीरे से बोली–"आज क्या बात है ताजदि ?" ताजमनी ने उठकर धूप-बत्ती जला दी। जितेन्द्र ने कथा-प्रसग बताकर शुरू किया। · पद्य-पाठ शुरू हुआ। धूप की सुगन्ध कमरे में छा गयी–पूजा पर बैठा है राम !

रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा अम··· ।

है अमा निशा; उगलता गगन घन अन्धका-आ-आ-र;
खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवन-चा-आ-आ-र;

अप्रतिहत गरज रहा पीछे, अम्बुधि विशा-आ-आल;
भूधर ज्यों ध्यानमग्न; केवल जलती मशाल।
स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा-आ फिर फिर सं-श-य
रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय…

पुण्य कथावचन का पवित्र वातावरण प्रस्तुत हो गया कमरे में !

…होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन…!

तू-उ-उ-उ-उ ! ताजमनी शंख फूँकने लगी, ताखे से उठाकर !

…कह महाशक्ति राम के वदन में हुई ली-ई-न !

स्नेह, प्रेम, माया-ममता आदि की मधुर धारणाएँ भी परिवर्तन की प्रचण्ड गति के आघात से विकृत हो गयी हैं।

शैलेन्दर की बातें रह-रहकर झकझोर जाती हैं, जितेन्द्र को—"तेज चलनेवाली मोटरगाड़ियों की बनावट हर साल बदलती है। आदमी के हृदय की बनावट भी बदल रही है ?" लाल पान का एक्का ! लम्बा-लम्बा तना-तना ! अत्याधुनिक मोटरगाड़ी-जैसा ! भाले के फलक की तरह नुकीला दिल !

कुबेरसिंह की याद आती है, जितेन्द्र को। पार्टी की एक नवागता को कुबेरसिंह ने लाल पान का एक्का दिखाकर कहा था—"इसका नाम अंग्रेजी में हार्ट है। लॅव का सिम्बल ! घबराओ नहीं, इसको प्लेटोनिक लॅव कहते हैं।"

वाणी दास ने हँसकर कहा था—"जीतभाई, अनिमा को भी लॅव का सिगनल मिल गया है ! दूसरा जत्था जल्दी भेजिए, रामगढ़ !"

अनिमा आठवीं लड़की थी जिसको कुबेरसिंह ने प्यार से पुचकारकर लॅव का सिगनल दिखलाया था। अनिमा अंग्रेजी नहीं जानती थी। उसने वाणी दास से पूछा था—"वाणीदी ! लॅव का सिगनल और प्लेटफार्म !"

जितेन्द्र ने दूसरे ही दिन स्वयंसेवकों और स्वयंसेविकाओं का दूसरा जत्था, रामगढ़ कांग्रेस के कैम्प में भेज दिया। प्रेमी जीव है कुबेरसिंह, इसमें सन्देह नहीं। पिछले साल तक वह लोगों को सुनाता फिरा है—"आइ स्टिल लॅव जित्तन ! अब भी प्यार करता हूँ।"

जितेन्द्र को कुबेरसिंह की याद आने लगी। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी का प्रधान संस्थापक श्री कुबेरसिंह ! वह जितेन्द्र को अपनी पार्टी का दूसरा स्तम्भ मानता !

ऐसा लगता है, राजनीति के लिए कुछ लोगों का विशेष अवतार होता है, पृथ्वी पर !

कुबेरसिंह भी अवतार है। कुरूप और भद्दा व्यक्तित्व उसका। उसकी सारी

सफलताओं ने उसके सारे 'कु' को ढँक लिया। सफल इन्सानों की पंक्ति में है कुबेरसिह !

याद आती है···! 1940 में, बिहार सोशलिस्ट पार्टी के एक प्रसिद्ध कलाकार नेता ने, पुराने पिण्टू होटल के एक कोनेवाले टेबल पर चाय पीते हुए, ओजपूर्ण भाषा में कहा था–"जितेन्द्र ! इस कुबेर के चक्रान्त में तुम किस तरह पड़ गये ?··· वह तुम्हारा शोषण कर रहा है।"

"आप अपने चक्र के चक्रवर्ती हैं, सदाबहारजी। दूसरे चक्र के चक्रवर्ती के बारे में आपको बोलने का पूरा हक है। हम लोग तो दरबारी हैं। जैसे इसके दरबार में, वैसे आप दरबार में !"

सदाबहारजी ठठाकर हँस पड़े थे। मुग्ध होकर उन्होने जितैन्द्र की ठुड्डी छू ली–"मैं अपने लड़के का नाम जितेन्द्र ही रखूँगा ! ··· अच्छे लडके ! जरा इसका भी तो खयाल करो, लोग क्या कहते हैं ! भद्दी-भद्दी बातें !"

"मैं जानता हूँ। आपके साथ रहूँ तो आपकी बदनामी भी इसी तरह फैलेगी।"

"अच्छा, एक बात बताओ ! जबकि तुम्हारे बॉस, माफ करना, तुमने अपने को दरबारी कहा है, तुम्हारे बॉस और पार्टी के अन्य लोग मिलने पर भी ऑखे फेर लेते हैं, बाते तक नहीं करते, तुम मुझे खोजकर क्यों मिलने आते हो ? कोई रहस्य है ?"

"बहुत बड़ा रहस्य ! आप मुझे स्नेह की दृष्टि से देखते हैं। मुँह फेर नही लेते मिलने पर, इसीलिए। शायद, आपके दिल के फौजी अधिकारियो को इसमे कोई दुर्गन्ध लगी है। है न ? निश्चय ही कहा होगा, जितेन्द्र से मेलजोल ठीक नही।"

सदाबहारजी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा था–"जीओ !"··· जितेन्द्र ने वचन दिया था, बिना माँगे ही–"आपको कोर्ट-मार्शल से बचाने के लिए, हमारी यह मुलाकात अन्तिम हो !" सदाबहार की आँखें छलछला आयी थीं–"राजनीति बहुत-बहुत बलिदान माँगती है, जित्तन ! कुबेरसिंह सौभाग्यशाली है।"

सचमुच, किस्मत का कुबेर है कुबेरसिंह !

सन् छत्तीस से चालीस तक उन्होंने तीन पार्टियों में डुबकी लगायी और हर बार घोंघे-सीपो के साथ एकाध मोती लेकर ऊपर हुआ।···जितेन्द्र को हठात् पाकर, खुशी से खूबसूरत हो गया था उसका चेहरा–"समझते हो भैया ! मैंने खूब डुबकी लगाकर थाह ली है, हर पार्टी की गहराई की ! सच कहता हूँ, मुझे अब पूरा विश्वास हो गया। तुम्हारे सहयोग से मैं अपनी, अपने मन की पार्टी बना सकूँगा। बोलो ! मुझे छोडोगे तो नहीं ?"···

काशी-विद्यापीठ के स्नातक की तत्कालीन राजनीतिक चेतना को उकसाने मे सफल हुआ, कुबेरसिंह। नयी पार्टी बनाने की बात भी गयी जितेन्द्र को। कुबेरसिंह प्रसन्नता से गीत गाने लगा था; बेसुरे राग और गलत उच्चारण की याद है जितेन्द्र को आज भी–जोदी तोमारी डाकियो ना सुरे कोई-ई-ई, तारपोड़े एकोला चोलो

रे-ए-ए-ए ! एकोला चोलो रे-ए-ए- ![1]···

कुबेरसिंह के चेहरे पर जो जामुन की तरह दो बड़े-बड़े व्रण हैं, क्या कभी नहीं सूखेंगे ?···

तगड़ी, नाटी काया। श्याम वर्ण। फेशियल पैरालिसिस से किंचित् विकृत ओठ ! जब वह भाषण देने को उठता, दर्शकों के चेहरे पर आतंक की एक गहरी रेखा खिंच जाती। भारतीय राजनीतिक पार्टियों के ओरेटर नेताओं में कुबेरसिंह का नाम अवश्य लिया जायेगा। किन्तु, जितेन्द्र ने सफल वक्ता कुबेरसिंह के भाषण-काल में एक विशेष बात को लक्ष्य किया था। ऐसा भयोत्पादक भाषण उसने किसी का नहीं सुना ! ···

जितेन्द्र की माँ कुबेर को फूटी नजर से नहीं देखती, कभी–"कहाँ से आया है यह बिलारमुँहा !"

मातृसत्ताक-संसार से कुढ़े हुए जितेन्द्र ने कुबेर-पुरुष से दोस्ती कर ली। माँ नाराज होती गयी।···अन्त में, एक दिन वह चल पड़ा कुबेरसिंह के साथ।···रात के पिछले पहर में हवेली छोडी थी, उसने। हवेली की अँगनाई, बाघिन की तरह गुर्राती हुई माँ के हुंकार से दलमला रही थी–"चला जाये ! चला जाये !"

···प्रगतिशील समाजवादी पार्टी, नया झण्डा, मेनिफेस्टो, पार्टी-विधान आदि की रचना मे जो सहायता दी जितेन्द्र ने, उसका उल्लेख कुबेरसिंह कभी नहीं करेगा। कुबेरसिंह को बेकार ही एक भ्रम है, जितेन्द्र ने कभी नहीं कहा किसी से आज तक कि कुबेरसिंह के सारे भाषणों, लेखों, वक्तव्यो आदि का लेखक वही था। पार्टी की पत्रिका के सम्पादन का सेहरा भी अपने सिर नहीं लिया कभी। किन्तु, कुबेरसिह कह रहा था, किसी से–"कलम पकड़कर राजनीति शब्द लिखना मैंने सिखाया और जितेन्द्र कहता फिरता है कि···!"

जितेन्द्र कबूल करता है, 'राजनीति' लिखते समय वह हमेशा गलती करता। 'न' में ह्रस्व और 'त' में दीर्घ या कभी दोनों में···। सचमुच कुबेरसिंह ने एक बार कलम पकड़कर सिखलाया था–"भैया ! 'राजनीति' ही गलत लिखोगे तो हुआ !"···जितेन्द्र ने फिर कभी गलती नहीं की थी। कुबेरसिह ने दूसरा महत्त्वपूर्ण काम किया–"देखो भैया ! तुम अपने 'मैं' को भूलो और मैं अपने 'मैं' को भूलता हूँ। आज से–हम ! ···तुम यू. पी. रह आये हो···इसलिए जरा ज्यादा 'मैं-मैं' करते हो। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी में 'मैं' क्या ?"

कुबेरसिंह अपने 'मैं' को भूला नहीं, किन्तु ! लिखित भाषणों को रटने के पहले कलम निकालकर प्रत्येक 'हम' को काट देता–'हमारी धारणा है' नहीं, 'मेरी धारणा है' ! 'हम कहते हैं' नहीं, 'मैं कहता हूँ'।···

एक ही वर्ष में बिहार की इस नयी पार्टी ने अखिल भारतीय ध्यान आकर्षित

1. शुद्ध रूप : यदि तोर डाक सुने केउ ना-आसे, तबे एकला चलो रे !

किया। और, जिस दिन अग्रगामी दल के संस्थापक श्री सुभाषचन्द बोस ने व्यक्तिगत सन्देशवाहक भेजकर कलकत्ते आमन्त्रित किया ! कुबेरसिंह ने भाषण के लहजे में कहा–"मैं बोस से कहूँगा··· ।" जितेन्द्र ने गरदन हिलाकर रोका–"बोस नहीं, सुभाष बाबू ! हम सुभाष बाबू से कहेंगे।" कुबेरसिंह हठात् चैतन्य हो गया था··· जितेन्द्र के बिना वह कलकत्ता नहीं जा सकता !

उस विराट् सुपुरुष के प्रथम दर्शन के क्षणों की याद कर रोमांचित हो उठता है जितेन्द्र, आज भी। सम्मानपूर्ण सहयोग का शर्तनामा पढ़कर सुभाष बाबू ने पहली नजर जितेन्द्र पर डाली। कुबेरसिंह ने शर्तनामे पर हस्ताक्षर करने की जिद करके सुभाष बाबू को याद दिलायी–"प्रगतिशील समाजवादी दल का संस्थापक कुबेरसिह है। एकमात्र नेता···!" सुभाष बाबू ने हस्ताक्षर करना स्वीकार नहीं किया; चुपचाप शर्तनामा वापस करते हुए बोले–"पहले अपने दिल मे विश्वास पैदा कीजिए, सिहजी !"

कुबेरसिंह ने अपनी पार्टी को अग्रगामी दल की अगम धारा में डूबने से बचा लिया। कलकत्ता के प्रमुख दैनिक पत्रों मे कुबेरसिंह का सचित्र वक्तव्य प्रकाशित हुआ–"जहाँ तक कांग्रेस के विरोध का प्रश्न है, हम अग्रगामी दल को सहयोग देगे, किन्तु··· ।"

कलकत्ता में कुबेरसिह एक लमहे के लिए भी जितेन्द्र को कहीं अकेला नही जाने देता। बार-बार कहता–"रसगुल्ला के लोभ में तुम पार्टी को ले डूबोगे, देखता हूँ !"इसके बावजूद, जितेन्द्र मिल आया सुभाष बाबू से एक दिन। वामपन्थी एकता पर बहुत-सी शंकाएँ दूर हुईं, उसकी।···प्लेट-भर रसगुल्ले खाये। चलते समय बडे प्यार से विदाई दी, उस युगपुरुष ने। उनकी अन्तिम सतर्क वाणी–"मुझे डर है, तुम्हारी हत्या न करवा दे कुबेर। सावधान ! उसके लिए कुछ भी असम्भव नही !"

रामगढ़-कांग्रेस में कुबेरसिंह ने देखा, जितेन्द्र का 'मैं' सिर उठाकर फुफकार रहा है। प्यार से कब तक काम लेना चाहिए, जानता है कुबेरसिंह। रामगढ-कांग्रेस के कांग्रेस-विरोधी प्रदर्शनों और भाषणों में जितेन्द्र की मनमानी उसने सह ली। कांग्रेस-अधिवेशन के बाद डेढ़-दो महीनों तक कुबेरसिह ने अपने मन्त्र-तन्त्र से जितेन्द्र पर पड़े सुभाष-प्रभाव को दूर करने की चेष्टा की–"बंगाली लड़कियो की मीठी बोली मुझे भी अच्छी लगती है। लेकिन, खुद जाल में फँसना बुद्धिमानी नही ! बंगाली पुरुषों का विश्वास कभी नहीं, कभी नहीं ! चाहे वह कोई हो !"

रामगढ़-काग्रेस के बाद पार्टी की जड़ बिहार के कई जिलो में और भी मजबूत हुई। कुबेरसिंह, गुप्त और प्रकट दान के द्रव्य का हिसाब करता, नशे में झूमता गाता–जोदी तोमारी डाकिया···! जितेन्द्र, अपनी पार्टी के नये नौजवान सदस्यों की बढ़ोतरी पर फूला नहीं समाता।···भावुक किशोरियाँ और नवयुवतियाँ जाल में रोज फँसतीं–"जीत भैया ! मुझे काम दीजिए।···माँ को समझा दीजिए।···बाबा आपको बहुत प्यार करते हैं।"

"जितदाज्यु !"

ध्यान भंग हुआ जितेन्द्र का–"क्या है दाज्यु ?"

अपनी जातीय मुस्कराहट को खोलकर हँसा दिलबहादुर—"क्याम्प को त्यो शाहेब आये को··· ।"

क्या हो गया है गॉव को ? शाम होते ही घर-घर मे लडाई शुरू हो जाती है।··· कोई लडैया-भूत की सवारी आती है, शायद ! पहले एक घर में शुरू हुआ। मर्दो की बात मे औरतो की बोली कभी-कभी सुनायी पडती, मोटी-महीन आवाज मे बच्चे और साथ ही कुत्ते रो पडते।··· एक घर का झगडा दूसरे घर की ओर लपकता। फैलता जाता, गॉव मे एक अजीब कोलाहल !

"इह ! कोई खाय घी-मलीदा, कोई भूजा फॉके ? मालिक रे मालिक, एक-नजरा मालिक !"

"देख, देख ! तुम्हारी बहू मुझे काना कहती है। कह दे, मुँह सँभालकर बात करे !"

"बेजा क्या कहती है ? जो सच बात है, बोलती है। नही रहेगे हम साथ। आज ही भिन्न कर दीजिए।"

"कचहरी देखो ! कानून देखो ! अभी ये लोगे अपने बाप से हिस्सा ?"

"देखे कौन साला नही देता है हिस्सा ? बडा कानून दिखाते है, सब कानून निकाल देगे। लालचन ने लिया अपना हिस्सा या नही ?··· दुलारीदाय की जमीन चादी और सोना एक ही साथ उगलती है। एक ही मौसम मे दा फसल ! आभरन देवे पाट, पेटभरन देवे धान; परानपुर के बेफिकरा सोवे चादर तान !"

जब से नयी जाति के पाट चन्नीपाट का प्रचलन हुआ है, दुलारादाय की जमीन को लोग हीरे की खान समझते हैं।··· कभी-कभी नयी किस्म की खेती ने भी जन-जीवन को आलोडित किया है। नील की खेती का नाम सुनते ही बूढे-पुराने लोगो का मुँह अब भी नीला हो जाता है। और, सोनाबग पाट की चर्चा होते ही सभी के चेहरे चमचमा उठते हैं—सोनाबंग पाट के रेशमी रेशे की तरह ! · पहली जरमनिया लडाई के समय पहले-पहल आया था यह पाट, ढाका की ओर से। एक ही बार बहुत-से गॉवो मे पुख्ता और कारोगेटिड टिन के मकान झलमलाने लगे।

और, पिछले दस-बारह साल से चन्नीपाट धूम मचा रहा है।

पाट की खेती मे भी किसानों की मर्दानगी की परीक्षा होती है। सोनाबंग, लालमेघ और जापानी आदि पाट के हजार नखरे ! जमीन की मिट्टी चिकनी होनी चाहिए, खेत की जुताई खूब हुई हो, समय पर आकाश से पानी गिरे, तीन बार निकौनी, बिधा ! जरा-सा चूक हुई, खेती खत्म।··· किन्तु, वाह रे चन्नी-पाट ! कहाँ से लाया इसको एग्रिकल्चर फार्मवालो ने ? लाया नही गया है; बहुत खोज-ढूँढ़कर ओर मिला-जुलाकर इस नयी जाति के पाट को जन्म दिया है—कृषि-विशारदों ने !

भीठ जमीन हो या जुताई कम हुई हो, आकाश चुए या बातास जले, पौधे उगेंगे ही। मवेशी इसके पौधों को दूर से ही सूँघकर समझ लेते हैं, यह उनकी खाने

की चीज नहीं। यदि किसी लम्बी जीभवाले ने बतौर आजमाइश के किसी दिन चार कौर खा लिया, पाँच दिनों तक गुहाल में बेहोश ! दूसरी जाति के पाटों को जानवर के अलावा आदमी भी बहुत शौक से खाते हैं। कड़वा-साग ! ···पाट साग के झोल के लोभ में, लुक-छिपकर बहुत-से खेतों में मूँड़ लेती हैं, औरतें ! बकरी और औरतों के झुण्ड को हाँकने का काम ? हर परिवार का बूढ़ा इस काम पर, एक हजार गालियों से लैस, तैनात ! ···दूसरी जाति के पाटों को समय पर नहीं काटा-बाँधा या गोरा गया तो उसके रेशे कमजोर हो जायेंगे। वजन कम देंगे। लेकिन, चन्नीपाट खेत में लगा रहे, कोई हर्ज नहीं। काटकर महीनों सुखाइए। पानी नहीं है, वर्षा होने पर गोरिए गड्ढों में। और दर ? सोनापाट से सिर्फ पाँच रुपया कम !

गाँव के अतिवृद्ध लोगों का मत है–"जब से यह चन्नीपाट आया, आदमी की मति भरम गयी।"

गरुड़ झा राह चलते मन-ही-मन 'नारद-नारद' जाप करता है। उसका विश्वास है, नारद-सहस्रनाम के जाप से मिटा हुआ झगड़ा भी सुलग उठता है, जोर से ! धुधुआकर ! और भी तेजी से–नारद-नारद··· !

"निकल जा साला घर से ! मेरा कोई बेट-ऊटा नहीं।" पुतोहू अपने ससुर की इज्जत करती है। घूँघट ताने ही रहती है। घूँघट के नीचे से अगियाबान बोली, महीन आवाज में छोड़ती–"जन्माते लाज नही आयी इस बूढे को ? कहता है, बेटा नहीं !"

"साले की बेटी ! मुँह तोड़ दूँगा। लँगटा की बेटी साली लँगटी !"

"इह ! बड़ा आया है मुँह तोड़नेवाले का बेटा।" ताल ठोककर जवान बेटा उतर पडता है, मैदान में–"आइये तो ! क्या समझ लिया है, उसकी पीठ पर कोई नहीं ?" बाप को ललकारता है बेटा–-"आ/जाओ, अपने चारों बेटों को भी बुलाओ, दुलरुओं को। यदि कोई असल बाप का बेटा है, आवे ! दे मेरी जोरू की पीठ पर हाथ, अब ! बार-बार मारकर हाथ परच गया है !"···नारद-नारद-नारद-नारद !

"सिर उतार लेंगे। मजा चखा देंगे !" नारद-नारद ! "देख लेंगे थाना-पुलिस को भी। दामूल-हौज झेलेंगे, मगर साले एक की जान जरूर लेगे।" नारद-नारद ! "गाँव में ही कचहरी खुली है–गिराम पंचैत। सिर्फ दो रुपया खर्च।" नारद-नारद ! "कल आना जमीन पर, वहीं दो टुकड़ा करके गाड़ देंगे।" नारद ! शाम को कोई लड़ैया-भूतों का दल आकर गाँव में, घर-घर में समा जाता है। खाँऊँ-खाँऊँ ! खाँऊँ-खाँऊँ !

गरुड़धुज की खेती लहलहा रही है–सोने-चाँदी की खेती। खन-खन, ठन-ठन ! फिर, घूमने लगा है गाँव। एक-एक प्राणी ताव खाये हुए लट्टू की तरह घूम रहा है–बनबन-बनबन ! एक-दूसरे से टकराते हैं, लुढ़कते हैं, फिर ताव पर चढ़ते··· !

पाँचों चक्र नाचने लगे जितेन्द्रनाथ की आँखों के आगे–घनघन-घनघन ! खुशी के मारे गूँगा हो गया, वह। उसने डॉक्टर रायचौधुरी को श्रद्धापूर्वक प्रणाम

किया।··· डॉक्टर रायचौधुरी ने बार-बार कहा—"खूब बेंड़ऽकँथा !"

बहुत बड़ी बात !

जितेन्द्र का अनुमान सच निकला। कोसी-प्रोजेक्ट की पार्टी नं. 10 ने रिपोर्ट दी है, जाँच करने के बाद—इस परती पर यत्र-तत्र-सर्वत्र कई प्रकार की मिट्टी पायी गयी है। जगल और वृक्ष ही नहीं, गेहूँ, धान, पाट तथा दलहन-तिलहन की खेती के योग्य धरती भी मिली है।

··· उम्मीद है, अगले सप्ताह ऑपरेशन-पार्टी आ जायेगी।

"बहुत बड़ी बात है यह ! हजारों एकड़ परती इस साल जोती-बोयी जायेगी, ताजू !"

"और, पानी कहाँ से आयेगा, पानी ?"

"किसी सुन्नरि नैका का अवतार कराना होगा ! दन्ता राकस··· !"

"दन्ता राकस ! बाप रे बाप !"

"आरे-दैबा ! ई टैकटर नहीं है रे दैब ! न जाने कौन मशीन है ! ऐसी आवाज ! धरती दलमल करती है !"

·गुडगुड-गुड़-गड़-गर्ड़-र्र-र्र-गड़-गड़-गड़र्ड़ाड़-गर्ड़गड़ !

"भूकम्पन ! ··· ए धरती डोलती है, राम कसम ! भागो !"

"क्या कहते हो ! उधर देखो··· !"

"ए-ले ह ! हथियासूड़ एक झुण्ड !"

कई बुलडोजर और बड़े-बड़े ट्रैक्टर आ रहे हैं। ऑपरेशन-पार्टी ! आसपास के गाँवो मे ट्रैक्टरवाले किसानों को सरकारी सरकुलर आया है—मदद दें।

जितेन्द्र जायेगा ऑपरेशन-पार्टी मे. ट्रैक्टर लेकर । ये लोग डी. वी. सी. मे काम कर चुके है, पहाडी-पथरीली जमीन पर। अव परती पर भेजे गये हैं।···सुन्नरीहाट जंगल के शिकार का मजा यहाँ कहाँ ! यहाँ तो परती है ! अन्य जमीदारो ने अपने ड्राइवर को भेजा है, ट्रक्टर लेकर !

गाँव के नौजवानों का दल परती की ओर दौड़ता है। बडे-बूढे खिसियाते हैं—"गेहूँ ना केला ! केला भी नहीं उपजेगा। ट्रैक्टर से जोते या··· ।"

··· गुडगुड-गर्डर ! भट-भट-भट ! गर्डर-र्र-र्र ! फट्ट्ट-फर्ट-फर्र-टर-टर ! अगला बुलडोजर चला रहा है, मि. नेगी, ऑपरेशन-पार्टी का चीफ ! इरावती हाथ में बन्दूक लेकर हवाई फायर करने के लिए घड़ी देख रही है। जितेन्द्र ने अपने ट्रैक्टर पर सवार होने के पहले धीमी आवाज में कहा—"दया कर हम लोगों की ओर निशाना मत तानिएगा।"···इरावती समझती है। लेकिन वह क्या करे बन्दूक छोड़ने के सिवा ? ताजमनी रहती तो निश्चय ही शंख फूँकती। वाह ! ट्रैक्टर पर बजाप्ता सिन्दूर से माँ के चरण-चिह्न, दस उँगलियाँ अंकित हैं ! ताजमनी !

ट्टठौंय ! ···गर्ड़र-गड-गड़-गड़-गुड-गुड़-गुड़-भट-भट-भट। फट्ट्ट-फट्ट्ट-फट्ट्ट-फर्ट ! फड़-फड़, गुड़गुड़ !

प्रान्तीय ट्रैक्टर बोर्ड के सेक्रेटरी मिस्टर सिन्हा ने हँसकर कहा—"हैलो जित्तन बाबू ! आइ एडमायर योर···"

"नॅट ओन्ली मी ! मेरा मीत भी है ! देखिए···।"

एक, दो, तीन···बुलडोजर। क्रॉलर्स, एंगलडोजर्स और दो न जाने कौन-सी मशीनें, जिनके पिछले दो पहिये धतूरे के बीज के बडे-बड़े सस्करण। जमीन को छलनी बना देंगी, गतर-गतर उधेड़ देंगी ! ···गाँव के अधिकांश लोग तमाशा देखने आये हैं।···जित्तन बाबू ने पूरी बाँहवाला स्वेटर पहन रखा है, घोर लाल रंग का। स्पेशल हैट, ताड़ की पत्तियो का !

डिस्ट्रिक्ट एग्रिकल्चर विभाग का ट्रैक्टर-चालक बोदू बाबू कहता है—"आँख झुलसानेवाले रंग का पुलओवर पहनकर नुमायश लगाने आया है !" बोदू बाबू से बातचीत कर चुकी है इरावती ! इस परती पर बोदू बाबू को हरी-भरी जगह मिल गयी, आते ही।···इरावती धानी रग की साडी पहनकर आयी है। कितना मैच करता है, आज ! कोकटी रग की, बिना किनारीवाली साड़ी में मैली लगती थी ज़रा ! अभी तो स्वर्ण रंग ! ···हू इज दिस जेण्टलमैन जितेन्दर बाबू ?···जमीदारी चली गयी है, नवाती नहीं गयी ! दिमाग सही है, इसका ? यही है वह आदमी ? 'हुआ सवेरा' मे पटनियाँ निडर जिसको खूब गलियाता है ?··· सही है। बहुत ऐय्याश आदमी ! इरावती से इसका क्या सम्बन्ध ? ट्रैक्टर मोडते हुए उसने जितेन्द्र पर निगाह डाली। एक-दूसरे को देख रहे हैं, पाइलट-गॉगल्स से ! अन्धकार मे धुँधली दो जोडी ऑखे !

···ठुट्ठी पाखर के पास ! चलो-चलो ! टकटर का रेस हो रहा है, घुड़दौड की तरह। कौन फस्ट आता है ! चलो, चलो !

गाँव के लोगों ने देखा—करीब दो सौ बीघे जमीन जोती जा चुकी है।

ठुट्ठी पाखर के ठूँठे डाल पर भवेश अपनी मूवी के लिए उपयुक्त कोण तजवीज कर बैठा हुआ है—यहाँ आकर ट्रैक्टर मुडे, सूरज की रोशनी शीशे पर झिलमिलायी···एक, दो, तीन, चार-पाँच ! रह-रहकर सूरज की रोशनी झिलमिलाती ! किर्र-र्र-र्र-रि··· !

ताजमनी सिगार कर रही है माँ तारा का !

··· मिश्रजी अपने साथ एक बैग हमेशा रखते हैं ! उसमें कुछ कागज ऐसे हैं जिन्हे कहीं दूसरी जगह छोड़कर निश्चिन्त नहीं रह सकते। उस दिन उन्होंने खोलकर दिखलाया था, एक भोजपत्र पर पाँच चक्र अकित ! चक्र के आसपास कुछ चिह्न, चीनी या जापानी लिपि के मेल के ! ··· और, कई मुकदमों के कागज। मुझे कोई दिलचस्पी नहीं मुकदमे की दलील से। किन्तु, इन तीन सौ रेखाचित्रो को तो भूलना असम्भव है। मिश्रजी ने बसहा कागज पर लाल रेखाओं से अनेक चित्र अंकित किये हैं ! रानी-बहिना की एक छवि ! ···तीन उनके भी बनाये हुए हैं।

इस चतुर चितेरे की तलहथी को अवाक् देखती रही। फिर, धीरे-से मैंने उसे चूम लिया। कलाकार की काँपती हुई उँगलियों ने मेरे ओठों पर गुदगुदी पैदा कर दी।···अब, इनसे कोई सीधी रेखा नहीं खींची जायेगी।···इस बार माफ कर दो! एक बार फिर इनमें शक्ति दो। माँ श्यामा ! जाल नहीं करने दूँगी। वचन देती हूँ।

उँगलियों की थरथराहट बढ़ती ही गयी। मेरे बालों में उँगलियाँ फेरकर अपनी थरथराहट को बहलाने लगे।

ओ माँ ! ऐसा तो न करो कि मेरा स्वामी कलम ही न पकड़ सके !

[पाँच पृष्ठों पर पद्य हैं, डेढ़ सौ पंक्तियाँ !]

कलम पकड़ेगा मेरा लॉली !

मुँह मे दाँत पूरे उगे भी नहीं, भात चाहिए। क्या लेगा रे छुट्टू पण्डित, भात ?

अन्नप्राशन के दिन जित्तन की जन्मकुण्डली मिली है। लिखा है··· अथ··· दशम्या··· फलम्—धर्मैकबुद्धिर्बहुवैभवादयः प्रलम्बकण्ठो बहुशास्त्रपाठी। उदारचित्तो नितरा विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवः स्यात्।··

···अथ शुक्रवासरे जन्म तत् फलम्—सुनीलसंकुचितकेशपाशः प्रसन्नवेशो मतिमान् विशेषात्। शुक्लाम्बरः प्रीतिधरो नरः स्यात् सन्मार्गगो भार्गववारजन्मा।

··कान्तः सुखी भोगयुतश्च मानी प्रियः प्रवक्ता···सुगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी। मिष्टान्नपानानुरतो विनीतः···।

मैं खोज रही हूँ—यह आँकेगा या नाचेगा या क्या करेगा !

···देवद्विजार्चाभिरतोऽभिमानी धनी दयालुर्बलवान् कलाज्ञः !—हाँ, है ? है रे छुट्टू पण्डित ! तू कलम भी पकड़ेगा, आँकेगा !

—देखो जी छुट्टू पण्डित ! तुम्हारी बहुत-सारी बातों को आज अन्नप्राशन के दिन कटवा दिया है। लटकती इमली की तरह तेरी जटायी हुई लटें कट गयी हैं। ··बेचारा अपने मुड़े हुए सिर पर बार-बार हाथ फेरकर मुँह देखता है। अरे हाँ, हाँ, है, है ! है तेरी चुटिया ! ···चुटिया काटने से तो छुट्टू पण्डित नहीं, छुट्टू संन्यासी ! छोटा-सा संन्यासी ! ··· नहीं, नहीं। हमारा जितेन्द्र संन्यासी नहीं होगा ! सत्कर्म वेषः··· तू गृहस्थ होकर सत्कर्म करेगा ! तू आँकेगा ! तू गढ़ेगा ! सिरजेगा ! ···

दुलारीदाय के तीनों कुण्ड तेरे नाम लिख देती हूँ। तू इन कुण्डों के पास बैठकर एक-एक पद्म को अंकित करेगा, पंछियों का गीत सुनेगा। भौंरों की गुंजन से अपना तानपूरा मिलायेगा, तू गायेगा।···कमलगट्टे बेचेगा ! मछली पकड़ेगा, खायेगा, बेचेगा, सबकुछ करे—जाल नहीं करेगा ! कभी नहीं, कभी नहीं ! परोपकारार्थ इन कुण्डों को बेच भी सकता है।···अच्छा, इधर आ ! तू क्या-क्या होगा, बोल, सुखी, भोगी ?

—हाँ-ते ! ···अच्छा ? मौज करेगा ! ठीक है। बड़ा चालाक है, छुट्टू ! अच्छा, प्रियप्रवक्ता !

—हाँ-ते !

—तू बीच में मत टपक, पुतली ! बासी भात खायेगा, भेड़ चराने जायेगा, पीछे पूछना।···तू लिखेगा, गायेगा, नाचेगा और भेड़ भी चरायेगा ? तब तू मार खायेगा ! अच्छी बात, नाचगान में, इन कुण्डों को बेचकर फूँक भी दे तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु, जालिया काम ?··· नेवर ! कभी नहीं ! बहुशास्त्रपाठी ? अपनी विद्या-बुद्धि को जमीन और जमींदारी-अर्जन में मत लगाना !

उस रात हमने माँ तारा की वन्दना की। मेरे स्वामी ने कहा—'प्रार्थना करो, जीत को कभी राजकाज में नहीं फँसना पड़े। नहीं तो उसका ज्ञान भी जाल-फरेब में ही खर्च होगा।'

'नहीं, नहीं !'··· मुण्डमालिनी, पद्मालया, शक्तिस्वरूपिनी, शिवभावभाविनी भगवती, जगन्माता, हमारा लॉली तेरे हाथ !

मिश्रजी के हाथ का कम्पन कम हुआ है। किन्तु, मेरे ललाट पर बिंदिया सजाने की असफल चेष्टा करते समय, उनकी लाचार आँखें मुझे मार डालती हैं। उँगलियो की थरथराहट रोकने की कोशिश में कँपकँपी और भी बढ़ जाती है। मैंने चिकित्सा की बात चलायी तो हँसकर बोले—'असम्भव ! नसों और रोगो की बात मुझसे ज्यादा कोई वैद्य नहीं जानते।···मुझे उपयुक्त दण्ड मिला है। सरस्वती के दरबार मे, इस तरह के कुकृत्य करनेवालों को कभी क्षमा नही किया जाता। हाथ का कम्पन कोई बड़ी सजा नहीं, हल्की सजा है, वरना, गलितकुष्ठ··· !'

'स्वामी !'

'हाँ, गीत ! मैंने अपनी आँखों देखा है, विद्या के गर्व मे चूर, सरस्वती के भाल पर कलक का टीका लगानेवाला अपनी गली हुई हथेली, चादर के नीचे छिपाकर मक्खियो से बचने के लिए भागा फिरता है··· ।'

··· मेरे स्वामी का अपराध क्षमा करो, माँ शारदे !

प्लाण्टर्स बौखलाये हुए हैं।

जिले-भर के मैथिल-पण्डितो को उकसाया गया है—शिवेन्द्र मिश्र को जाति से बहिष्कृत करो पण्डितो ! ··· इधर कुछ दिनों से मिश्रजी की गुप्त बाते विरोधियो को कैसे मालूम हो जाती हैं ? अब तक ऐसा नहीं हुआ। कभी नही !

—पण्डितो की सभा ने मेरे स्वामी को निर्वेद घोषित कर दिया। अब्राह्मण ! ···हाँसामारी के निर्गुण झा को मिर्जापुर के साहब ने पचीस बीघे जमीन दी है। उसी ने प्रस्ताव किया था—'शिवेन्द्र मिश्र को जाति से बहिष्कृत किया जाये !'

'गीत ! संकीर्ण संस्कार के गहन अन्धकार में एक जीवित धर्म को कब तक छिपाकर रख सकता है कोई ? उदार, उन्मुक्त धर्म को घेरे में नहीं रखा जा सकता।'

मिश्रजी को मैंने पहली बार अपनी मैथिली तुकबन्दी सुनायी—'शिव'क घरनी बड़ बुधियारि, भाँग'क लोटा अछि तैयार !'

'बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर ! ···और, इन कठपण्डितों के कहने से मैं तुमको

छोड़ दूँ ? असम्भव !'

ब्राह्मणों ने मिलकर मेरे पतिदेव को, हमारे परिवार को निर्वेद घोषित कर दिया। ब्राह्मणेतर ही नहीं, चाण्डाल की कोटि का मनुष्य ! मेरी कोठी का नाम दिया—गृद्धवास कोठी··· ! गीतवास ! ···प्रान्त के विभिन्न जिलों की पाँच पुत्रियों के पिताओं ने मिलकर दावा किया—हमारी पुत्रियों का पाणिग्रहण करके परित्याग कर दिया है। भरण-पोषण का व्यय वसूल करवा दिया जाये !

मिश्रजी गुस्से से जल रहे हैं—'जानती हो ? जीत की माँ के सम्बन्ध में कैसी-कैसी फूहड़ बातें उड़ायी हैं पण्डितों ने ? ··· देखता हूँ, ब्रह्म-हत्या का पाप मेरे सिर पर मँडरा रहा है।'

'नहीं, स्वामी ! ऐसा मत सोचिए !'

रानी-बहिना तिरहुत की मैथिलानी नहीं। मालदह जिले की लडकी है। गरीब पुरोहित की बेटी है तो क्या हुआ ? ···रूप और गुण पर मोहित होकर मिश्रजी ने अपने कीर्तन के आचार्य से उनकी पुत्री के पाणिग्रहण का प्रस्ताव किया था ! ···पण्डितों ने प्रचार किया है—देवदासी को फुसलाकर ले आया है।

'लरेना खवास अपने को क्या समझने लगा है ! स्वामी के सामने हमे अपदस्थ करने की हिम्मत कैसे हुई, उसकी ?'

'गीत ! इस लरेना से बहुत-कुछ काम निकालना है, अभी चुप होकर सह लो।' 'आप आवश्यकता से अधिक विश्वास करते हैं, उसका। यह अच्छा नही जँचता। रानी-बहिना को भी दुख है।'

लरेना बड़बड़ाता आया, बाहर से—'दो-दो इस्टेट को सँभालने का यही नतीजा होता है। एक तरफ भी पूरा मन देकर कुछ नहीं किया जाये··· । हजूर ! आप अभी पॉच दिन परानपुर हवेली छोडकर कही मत जाइए। हॉं, बात है। एकान्त में कहने-सुननेवाली बात, कब कहे आदमी ? यहाँ तो हमेशा··· ।' परमपति की लाचार दृष्टि को देखकर हम दोनों अन्दर चली गयीं।···'लरेना के मुँह पर मैं हमेशा शैतान की छाया देखती हूँ।' रानी-बहिना बोली। मैंने कहा—'मैं भी।'

'रहिकपुर के किसी प्लाण्टर से रामपु -लहना के पतनीदार की लडाई है। मिश्रजी से मदद मॉग रहा है, पतनीदार जैनन्दन साही। बदले मे हल्दिया गाँव की जमीन दे रहा है, जमीदारी हक के साथ !' ···लरेना इसी काम मे अपने को व्यस्त बतलाता है। इसी काम की प्रतीक्षा कर रहे थे मिश्रजी !

मेरा लॉली अस्वस्थ था। लौटने का जरा भी मन नहीं था। बुखार से तपी हुई उसकी देह।···रात के तीसरे पहर मे ताप कम होते ही मुस्कराने लगा था—'हाँ-ते ! ना-ते !'

मैंने स्वामी से आज्ञा माँगी। आज्ञा मिल गयी, किन्तु लॉली···? मेरी साडी का खूँट छोडकर पुतली का गला पकड़कर लटक गया। सारी हवेली को कँपा देनेवाली उसकी चीख—'आआ-मेम्माँ ! मेम्माँ रे-ए-ए-ए ! आँ-हाँ !' मैंने स्वामी की ओर देखा। लेकिन उनकी आँखें झुक गयीं। उन्होने नही कहा—'मत जाओ !'

मेरी डोली उठ गयी।··सेमलबाग के पास तक कान लगाकर सुनती रही। वही चीख—'मेम्मॉ रे-एए!' निश्चय ही धरती पर माथा पटक रहा होगा। जिद मे ऐसा ही करता है, वह।

डोली के साथ पैदल चलती हुई पुतली रह-रहकर अपनी ऑख और नाक पोछती रही, सारी राह।

मिश्रजी गिरफ्तार ? ऐय ?

हवेली की कालीबाडी मे नोट बनाने और रुपया ढलाने के सामान पकडे गये!··· मॉ तारा, यह क्या ?

लरेना खवास आया है मूँगा पर सवार होकर!—हवेली के एक-एक पैसे को जप्त कर लिया गया है। मिश्रजी को जमानत पर छुडाना है। कलकत्ता दौडना होगा। रुपया चाहिए।

'कितना चाहिए रुपया ?' उस दिन लरेना पर से सारा गुस्सा उतर गया।·· स्वामी-भक्त है। हम औरत की जाति! हमारी बुद्धि ही कितनी! इसीलिए, हमारे स्वामी इसको इतना दुलार करते है। कहता है—'जब तक मिश्रजी को जेल से न छुडाऊँगा, सिद्ध अन्न मुँह मे नही डालूँगा।'

'रुपये की कमी नही। कितने की जरूरत है ? पॉच हजार ? ला देती हूँ।'

मेरा मूँगा!· ऐसा उदास कभी नही देखा!

मम्मी मुझे समझाती है—'उसका कुछ नही होगा! मैं जानती हूँ। तुम्हारे पति को मैं भी पहचानती हूँ। वह बिना ताज का बादशाह है!'··मॉ तारा! तू ही बोल रही है मेरी मम्मी के दिल मे पैठकर! पहले मेरी मम्मी कितना भय खाती थी!

श्यामगढ स्टेट के राजा कामरूपनारायण आये हैं। परानपुर हवेली मे कोई विशेष चाचल्य नही, क्योकि राजा साहब ने आते ही सख्त हिदायत दी है—"बगैर पूछे न एक कप चाय और न एक गिलास पानी।"

"एक प्लेट उबले हुए आलू और दो अण्डे! बस, यही मेरा दिन का भोजन रह गया है।"

"निश्चय ही आपने कोई व्रत लिया है!"

—"हॉ, हाँ। व्रत।··· जब तक अपने विरोधी को वाजिब जवाब नही दता हूँ, आहार-निद्रा हराम!" राजा साहब आलू मे कालीमिर्च की बुकनी मिलाते हुए बोले—"मैं ठहरूँगा नही, जित्तन! एक घण्टा मेरे पास बैठ नही सकते ?"

"आज्ञा!"

"मैं तुमसे पूछने आया हूँ, तुम क्या कर रहे हो ?"

"मैं ? कुछ नहीं।"

"अपने पुराने दुश्मन को भूल गये ? लेकिन, वह तुमको नहीं भूला है!"

"कौन ? मैंने नहीं समझा।"

दाँत कटकटाकर कामरूपनारायण ने झिड़की दी–"समझोगे क्यों ? अब तो गोली का डर नहीं ! वह प्रान्तीय कांग्रेस का सहायक मन्त्री हो गया है, इससे क्या ? गोली दगानेवाले अभी भी उसके पास हैं। तुम्हारी जगह पर मैं होता ? ··· मैं तुम पर कोई विचार लादने नहीं आया हूँ। मैं सलाह देने आया हूँ। राजनीति के पुराने खिलाड़ी हो। उपयुक्त टीम चुनकर उतर पड़ो मैदान में। जहाँ तक मेरी पार्टी का सवाल है, तुम्हारा सदैव स्वागत···!"

जितेन्द्र सोच में पड़ गया।···लज्जित हुआ ! राजा साहब ने उस बार कुबेरसिंह के सहचरों के हाथ से बचाया था ! लेकिन··· ?

"तुम लोगों की देह में न कहीं आन है और न कैरेक्टर में कोई रीढ़ !··· तुम नहीं समझोगे ! अपमान से मेरी जिन्दगी जल रही है !"

जमींदारी-उन्मूलन के बाद राजा साहब ने अपने जिले मे अपनी पार्टी की नींव डाली। आज, बिहार के कई जिलो में जड़ मजबूत हो चुकी है।

राजा साहब कहते हैं–"अपने इस्टेट के तीन सर्किल मैनेजर, पचास पटवारी और डेढ़ सौ प्यादो को लेकर मैंने प्रजापार्टी का शिलान्यास किया। कहा–चलो ! तुम्हारी नौकरियाँ अपनी जगह पर बरकरार ! जमींदारी चली गयी, राजा चला गया, फिर भी मैं वेतन दूँगा। ओहदा बदल गया है, काम बदल गया है।··· और, आज देखो ! कई वामपन्थी पार्टियों के सधे-सधाये लोग आ गये हैं, वकील, मुख्तार, प्रोफेसर, छात्र, महिलाएँ। मैंने राज्य-भर में बिखरी ऐसी शक्तियो का संचय किया है, जो सही नेतृत्व के अभाव मे, बुझी जा रही थीं। पिछले दिनों, दो-दो वामपन्थी पार्टियों ने प्रजापार्टी के झण्डे के साथ अपना-अपना झण्डा बाँधकर, विधानसभा के सामने प्रदर्शन किया है।···रेण्ट-फ्री लैण्ड, बगैर किसी खजाना के जमीन ! दे सकी है आज तक कोई पार्टी ऐसा क्रान्तिकारी नारा ?··· बोलो, कुछ कहो !"

"मौसाजी ! मेरे मन में कोई भी राजनीतिक महत्त्वाकाक्षा नही। मैं क्या जवाब दूँ, आपको ?"

राजा साहब ने घड़ी देखी। अपने ड्राइवर और सहकर्मियों को आदेश दिया–"गाड़ी तैयार रखो !" जितेन्द्र की ओर देखकर बोले–"मुझे तुम्हारे बारे में गलत सूचना दी गयी। मैंने समझा था तुम मिलिटेण्ट हो। मुझे क्या मालूम था कि एक हिजड़े से मिलने जा रहा हूँ।···परती की तरह निपट्ट निकले तुम ! लाज नहीं आती ? पतनीदार का बेटा है !··· मैं बैठा नहीं रह सकता।"

जित्तन ने हिम्मत बटोरकर जवाब दिया–"मौसाजी ! अपने रेडियो पर इस मैच का आँखों-देखा हाल सुनने के लिए नियमपूर्वक मैं ट्यून करूँगा !"

"अच्छी बात !··· सुनोगे, जरूर सुनोगे। इस बार नहीं तो आनेवाले वर्षों में। मैं चुप बैठा नहीं रह सकता।"

जितेन्द्र जानता है, कांग्रेस के अन्दर की घुटती हुई शक्तियों और पराजित पुरुषत्व का गुप्त सहयोग प्राप्त है, राजा साहब को !

"सुनेंगे। सभी सुनेंगे–प्रजापार्टी तीन गोल से विजयी ! ...हुर्रा-आ !"

पनघट पर जित्तन बाबू की चर्चा चली हुई है। सामबत्ती पीसी कहती है–"जो भी कहो, मन साफ है जित्तन बाबू का। कल मेरे घर के बगल से जा रहे थे। मैं केश का ढील[1] हेरवा रही थी धूप में बैठके, रमधनियाँ की माँ से। जित्तन बाबू पर नजर पड़ी तो भाग के पुआल के बोझे की आड़ मे चली गयी, कि पुकारने लगे–'सामबत्ती, तुम्हारे यहाँ भफ्फा[1] नहीं बनता, अब ?' मैं तो लाज से गड़ गयी। ...आज भफ्फा बनाके दे आयी, गरम-गरम। हाथ से लेकर लुबलुब बच्चों की तरह खाने लगे। सच कहती हूँ। उनका कुत्ता अब कुछ नहीं बोलता !"

फेकनी की माय बोली–"आकि देखो ! जिस मुँह से खाये, उस मुँह से शिकायत नहीं करे आदमी, किसी की ! कल फेकनी के बाप को हवेली का प्रसाद खाने का मन हो गया। थाली लेकर गयी फेकनी।... जित्तन बाबू की माँ के समय फेकनी का बाप हवेली में ही पडा रहता था। आकि देखो, जित्तन बाबू ने फेकनी से कहा, रोज प्रसाद ले जाओ, बूढ़े के लिए।"

सेमियाँ बोली–"आज मेरे दरवाजे के सामने कैसा मजा हुआ ! टोले-भर के बच्चे मेरे बथान के पास खेल रहे थे। जित्तन बाबू को देखकर कुछ भागे तो रामलगन भैया के बेटे ने कहा–'जै हिन्न !' हँसने लगे जित्तन बाबू। मनोहर की सबसे छोटी बेटी जो डगमग कर चलती है, ठिठककर खडी रही। जित्तन बाबू आगे बढ गये तो उतनी-सी टुन्नी छौंड़ी पुकारकर कहती है–'हेय ! मारे कन्ने ?' ... उमका बाप हमेशा डर दिखलाता है न !... चुप रहो नहीं तो हवेली पर पकड़कर ले जायेंगे ! मारेगा हवेलीवाला ! इसीलिए, वह छौड़ी पूछ रही थी कि क्यों मारते हं

"तू भी ऊन की बात दून करके बोलती है। नाभी लगी हुई छौड़ी वैसः बात बोलेगी भला ?"

घर-घर-घर-घर्र-र–डबाक् !

पनभरनियों ने भण्डुल हुए भोज के लिए, बारी-बारी से ब्राह्मण, क्षत्रिय और भूमिहारों को जिम्मेदार ठहराने की कोशिश की। फत्तू खलीफा की घरवाली ने लुत्तो का नाम लगाया।

सामबत्ती पीसी के कान में सेवियादी ने कोई बात कही। सामबत्ती पीसी हँसकर बोली–"दुत्त ! ... तजमनिया का जुठाया हुआ फल अब कौन खाये ?"

फेकनी की माय ने राह मे रुककर कहा, दोनों से–"आकि देखो, जो बात अपनी आँख से नहीं देखे कोई, बोले नहीं कहीं। बाकि, बेवा हो गयी है फिर भी जीभ नहीं समेटती है बाभिन फूहा। अभी कह रही थी सबसे कि तजमनियाँ अँगभरबी है !"

1 ढील – जूँ। 2. अरवा चावल से आटे पर भाप से पकी हुई, मद्रासी इडली की तरह की चीज।

सामबत्ती पीसी ने कहा–"फूहा को पाँच आँख है। मैं कल ही आयी हवेली से। तजमनियाँ जैसी थी, वैसी ही है।···फूहा जलती है क्यों, सो नहीं जानती ! अभी जब मैं भफ्फा की बात बोल रही थी तो देखा नहीं, मुँह कैसा चुनिया रही थी, साड़ी की कोची की तरह !"

"चुप रहो, आ रही है।"

फूहा बड़बड़ाती आ रही है। रास्ते में रुककर गीले कपड़े को निचोड़ती है और जोर-जोर से कहती है–"उत्ती-जरी छौंड़ी की बोली तो सुनो ! मैं तो अभी उसकी माय से जाकर पूछती हूँ कि कब मुझे जित्तन से क्या हुआ था !"

सामबत्ती पीसी ने आँख के इशारे से सेविया और फेकनी की माँ से कहा–'चलो। बेबात का झगड़ा··!'

जितेन्द्र अकेलेपन के अन्धकार से बाहर निकलना चाहता है।

···सांस्कृतिक जीवन पर राजनीतिक प्रभाव अवश्य पड़े हैं। किन्तु उसकी काली प्रतिच्छाया सर्वग्रास नहीं कर सकी है, अभी भी ! ··जितेन्द्र हिजड़ा नहीं ! वह अपनी शक्ति पर फिर से विश्वास करने लगा है। उसका सबसे बड़ा सपना सच हुआ है।

···गाँव-समाज में, मनुष्य के साथ मनुष्य का व्यक्तिगत सम्पर्क घनिष्ठ था, किन्तु वह अब नहीं रहा। एक आदमी के लिए उसके गाँव का दूसरा आदमी अज्ञात कुलशील छोड़ और कुछ नहीं।···कहाँ है आज का कोई उपयोगी उत्सव-अनुष्ठान, जहाँ आदमी एक-दूसरे से मुक्तप्राण होकर मिल सके ? मनुष्य के साथ मनुष्य के प्राण का योगसूत्र नहीं।

···प्रीति-बन्धन के खोये हुए सूत्र को खोजकर निकालना होगा। नहीं तो, इस सार्वभौम रिक्तता से मुक्ति की ·ोई आशा नहीं।

···परमादेव की सवारी के दिन, गाँव मे चाचल्य ! रघ्घू रामायनी की गीतकथा के समय, शामाँ-चकेवा की रातों में, बन्द म ा के झरोखे जरा खुले थे।···जात्रा, सकीर्तन, नाटक के अवसरों पर आनन्द से सारा गाँव फूला-फूला रहता। और, अब ?

··जितेन्द्र अपने को फिर से युक्त करेगा, चक्र में। पाँच चक्र नाच रहे हैं ! घनघन ! घनघन !

···ट्रट्ठॉय ! ऑपरेशन पार्टी को चाय की छुट्टी मिली।

···इरावती और राजा कामरूपनारायण, द· अपमानित आत्माएँ ! दोनों ने अपने अपमान का बदला चुकाने के लिए व्रत लिया है। राजा साहब कह रहे थे–"समझे जित्तन ! इतिहास लिखनेवाले यह नहीं लिख पायेंगे कि एक दृढ इंस्टिट्यूशन यों ही ढह गया; इसने कोई रीढ़दार व्यक्ति पैदा ही नही किया !" ··· इरावती कहती है, "रोज–हमारी अशुभ मूरत देखकर लोग राह काटते हैं। राजनीति के कदर्य-कीच से इस नयी जाति का जन्म हुआ है। मैं चाहती हूँ, कोई यह न कहे कभी–समाज

की रगो मे विषाक्त बीजाणु का प्रवेश इसी नयी जाति ने कराया।"···भिम्मल मामा आजकल जितेन्द्र के सामने एक नयी पक्ति दुहराते हैं—"तान्त्रिक का बेटा गणतान्त्रिक !"

"गोबिन्दो ! डेढ घण्टा पहले ही सुरपति बाबू ने··· !"

ताजमनी की बोली सुनकर जितेन्द्र ने अपनी अस्त-व्यस्त लुगी सँभाली। ताजमनी के पहले ही प्रफुल्ल मीत चुलबुलाता हुआ आया।···निश्चय ही आज चाय के साथ पकौड़े आ रहे हैं। पकौडे के लिए चोरी भी कर लेता है मीत, कभी-कभी। "क्या डेढ घण्टा पहले ?"

ताजमनी झुँझलायी हुई आयी—"सुरपति बाबू ने डेढ घण्टा पहले कहला भेजा कि चाय जरा जल्दी दे जाये घोसला मे। कही जा रहे होगे, दोनो। सो, अभी तक गोबिन्दो ने केतली भी नही चढायी है। कहता है—आगाडी दादा बाबू को चा देके तँब··· !"

जितेन्द्र हँस पडा। ताजमनी भी हँसी। पिछले कई दिनो से गोबिन्दो घोसलावासियो से चिढा हुआ है।··सुरपति और भवेश और गोबिन्दो के लडाई-झगडे बडे रसीले होते हैं। जरूर कोई नयी बात होगी।

घोसला मे कोई बात हो, ताजमनी को तुरन्त मालूम हो जाती है। ताजमनी हँसकर कहती है—"इस बार बगाली-बिहारी झगडा हवेली मे भी शुरू हुआ है !"

"सच ? क्या हुआ ? घोसलावालो को भी बुलाओ, यही पिये चाय !"

ऐसी बात से गोबिन्दो और चिढता है। कहता है—"मॅन को माफिक थोडा-सा बनाकर कुछ ले जाओ तो दस जॅन भागीदार··· हॅं-हॅं !"

"बात क्या हुई है ?"

"सुरपति बाबू ने पखारन काका और गोबिन्दो मे लगा दिया। पखारन काका ने कहा—भात सालन बनानेवाला बगाली हमरा से पार पाई ? भवेश किन्तु, गोबिन्दो के पक्ष मे रहा। गोबिन्दो ने जवाब दिया—बगाली को माथा को बराबरी दुनिया को कोई बेटा नही ! और भवेश ने कहा—ठीक कहता है··· !"

जितेन्द्र ने कहा—"ठीक कहता है नही, ठ्ठ्ठीक क-कहता है !"···प्रसन्न होकर जब कोई प्रिय घटना सुनाने लगती है ताजमनी, अपूर्व चित्र उपस्थित कर देती है। जितेन्द्र ने ताजमनी से ही सीखा है।

"ताजू ! ··बहुत दिनो की लालसा है, एक। अरे, घबराओ नही ! मै कह रहा हूँ !"

"बहुत दिनो की लालसा है, मेरी भी एक। एक नही, अनेक। किन्तु, उन्हे माँ काली ही पूरा कर सकती है।"

"ठीक है, मेरी लालसा को तुम माँ काली के पास पेश करो।···मैं तुमको मच पर देखना चाहता हूँ।"

"फाँसी-मच पर ?"

"लोक-मच पर !"

"कोई पार्टी है किसी राजा की ?"

"हाँ ! नाच-पार्टी, इरा रानी की !"

चिक के उस पार गोबिन्दो ने खखासकर गला साफ किया–"हें-खें-क !" आ-रे, रहो-रहो। मीत बाबू··· ।

"तब तो मैं सचमुच रानी समझूँ अपने को ?" इरावती खिल पड़ी।

"हाँ इरा ! मेरे अपमानित जीवन के घाव फिर से हरे हुए हैं। मैं अपने मुँहबोले मौसा को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने गाल पर थप्पड़ मारकर ताजा कर दिया।"···पाँचों चक्र बायीं ओर घूमते है। जितेन्द्र के अपमानित जीवन की उपकथाओं की पोथी के पिछले पन्ने उलटते हैं, फड़फडाकर !

··नकटा ! नकटा बना दूँगा जीवन भर के लिए, याद रखो भैया ! ···चाहकर भी तुमको प्राणदण्ड नही दे रहा। जाओ, जिन्दगी-भर के लिए नपुंसक होकर जियो, जीना ही चाहते हो यदि तुम ! लम्पट !

1942 का मार्च··· !

जितेन्द्र ने पार्टी के अन्दर और बाहर अपनी शक्ति बढा ली थी, धीरे-धीरे। कुबेरसिंह की सतर्कता के बावजूद वह स्वतन्त्र होता गया···कुबेरसिंह ने ढील दे दी थी–बँड़सी में बझी हुई मछली, जायेगी कहाँ ? लग्गी कुबेर के हाथ में है।

1942 की फरवरी में ही प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के सामने अगले कदम का प्रश्न उठा।···कुबेरसिंह के मन में कोई और बात पक रही थी, जितेन्द्र कुछ और सोच रहा था। वाणी दास की अपनी राय थी।

कुबेरसिंह ने जान-बूझकर मीटिंग की तारीख एक महीना आगे बढ़ा दी और पार्टी के आवश्यक काम से कलकत्ता चला गया।

वाणी दास सम्भवतः कुबेरसिंह के प्रस्थान की प्रतीक्षा कर रही थी।···जितेन्द्र से प्रार्थना की वाणी दास ने–"जितेन्द्रभाई ! मुझे निकालो इस अन्धकूप से ! कल ही चलना है, साथ तुम चलोगे ? नहीं तो, मैं-मैं··· ।"

"वाणीदी, किस समय चलना है, मुझे कह दें।"

"सुबह खुलनेवाली बस से !"

···सुबह खुलनेवाली बस से कोडरमा ! कोडरमा मे टिकट खरीदते समय जितेन्द्र ने समझा, बनारस जा रही हैं वाणीदी !

"भैया ! ···तुम पर अविश्वास नहीं करती। माखनदा ने बुलाया है ! माखनदा ! चण्डीपुर बम-केस में अण्डमन की सजा पानवाले, नौजवाने-गदरपार्टी के प्रधान ! पिछली प्रान्तीय कांग्रेसी सरकार बनने पर अण्डमन से लौटकर अपनी पार्टी को पुनर्जीवित किया है, माखनदा ने। पिछले कई महीनों से फरार हैं !" –वाणीदी वाग्दत्ता हैं, माखनदा की। माखनदा की पार्टी और जितेन्द्र की पार्टी में साँप और नेवले की दुश्मनी है। वाणीदी किसी संकट से बचने के लिए ही प्रगतिशील समाजवादी

दल में आयी थी। दो वर्षों तक सहती रही कुबेरसिंह के उत्पातों को। जितेन्द्र, पार्टी-दफ्तर में आकर रहने लगा। कुबेरसिंह से जान छूटी। वाणीदी की उपस्थिति से जितेन्द्र की पार्टी को बहुत लाभ हुए, इसको पार्टी का एक-एक सदस्य जानता है। वाणीदी को शहर का बच्चा-बच्चा जानता था–'मिष्टीमुखी मासी' !–केदारघाट की सीढ़ियों पर बैठकर वाणीदी से की हुई बातों को कभी भूल सकता है जितेन्द्र !

बंगालीटोला का खालिसपुरा मुहल्ला ! ···चार-मंजिले की छत पर बैठकर दूर, हिन्दू विश्वविद्यालय के कलश और गुम्बजों पर निगाहें डालकर बैठा रहता जितेन्द्र। वाणी दास राजघाट पुल से गुजरनेवाली हर गाड़ी के बारे में पूछती–"कौन गाड़ी है यह ?"

···प्रतीक्षा में कई दिन कट गये। माखनदा नहीं आये ! एक शाम को, नौकाविहार से लौटकर जितेन्द्र ने देखा, एक व्यक्ति बगलवाली दूकान पर बीड़ी खरीदता हुआ घूर-घूरकर देख रहा है।··· वाणी दास थमक गयी।

रात-भर माखनदा और वाणीदी छत पर रहे। जितेन्द्र सीढ़ी के पास खाट पर लेटा पहरा देता सो गया था।··· देह को छूकर जगाया वाणीदी ने–"जीत भाई !···आमरा चॅललाम। उनी···!"

जितेन्द्र, दरी हाथ में लेकर छत पर सोने चला गया।

कुबेरसिंह भूखे भालू की तरह प्रतीक्षा कर रहा था।···आवे इस बार ! इस पार या उस पार !···

"आइए, शहबाला साहब ! आ गये आप ? चौंकिए मत।"

जितेन्द्र पर इस व्यंग्य-वचन की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। तब, कुबेरसिह ने अपने चेहरे पर पके व्रण से कील निकालने के लिए हाथ के आईने पर दृष्टि डाली। ··· अवकाश के क्षण यही करता है, कुबेरसिंह। झोली से आइना निकालकर अपने चेहरे पर जामुन की तरह उभरे व्रणों से रस या कील निकालता। इन्हीं अवसरों पर वह अपनी प्रहारात्मक प्रवृत्ति को तेज़ किया करता।···ओठों पर दाँत बिठाकर व्रण का कील निकालते हुए कहा कुबेरसिंह ने–"मैं-एँ-ने समझा था वाणी दास आपके पुरुषत्व की चेरी है। लेकिन गलत समझा मैंने।··· म-म-मैं ? मेरा दावा है कि मैं उसको सारा जीवन अपनी अँगुलियों के इशारे पर नचाकर रखता। लेकिन, बीच में टपके आप !···एक डिस्पेप्सिया का मरीज माखन लाहिड़ी पॉकेट से औरत छीनकर चला गया और आप शहबाला बनने की खुशी में हैं ? वाह रे सुपुरुष !"

"आपने आज भंग ज्यादा छान ली है, लगता है।"

"बनारस से आये हैं आप और भंग का नशा हो मुझे ? क्या बात की आपने !" कुबेरसिंह झोली में आईना रखते हुए बोले–"आपके अभिमान का कारण मुझे मालूम है।··· बहुत शीघ्र जनरल मीटिंग बुला रहा हूँ।"

··· जनरल मीटिंग !

दो-ढाई सौ युवक-युवतियो की जनरल रैली, कतरासगढ़ धर्मशाला के बड़े हॉल में शुरू हुई। एजेण्डा की प्रथम विचारणीय बात थी–वाणी दास के पार्टी-परित्याग पर विचार।··· एक सदस्य ने एजेण्डा पढ़ते समय चुटकी ली–"पार्टी-परित्याग या पार्टी-परिवर्तन !"

सबसे पहले, कतरास के युवक कार्यकर्त्ता पशुपतिनाथ ने उठकर, अपना आरोप-पत्र पढ़कर सुनाया। आरोप-पत्र में वाणी दास तथा जितेन्द्र को नौजवाने-गदर-पार्टी का भेदी कार्यकर्त्ता कहा गया था।···इसी तरह के अन्य आरोप !

एक आदिवासी युवती, केरकेटा ने उठकर कहा–"जित्तन बाबू के खिलाफ मुझे भी कुछ कहना है। लेकिन, बातें ऐसी हैं कि मैं मुँह से बयान नहीं कर सकती।"

"ऐं ? ऐसी क्या बात ? लिखकर दीजिए, अभी तुरत।···छिपा हुआ भेदिया ! गुर्गा, गुर्गा !"

जितेन्द्र भौंचक होकर देख सुन रहा था।···पशुपति ? जो 'भैया-भैया' की रट लगाये रहता था, एक पखवारा पहले तक ? केरकेटा, जिसको उसने आज तक 'तुम' नहीं कहा ?

"सुमित्रा, विद्या और रामरति का भी एक सम्मिलित अभियोग है।"

"पहले अभियोगों पर विचार हो ले !"

केरकेटा ने लिखकर दिया–"जितेन्द्र ने मेरी इज्जत ली है।" सुमित्रा, विद्या और रामरति ने सम्मिलित अभियोग-पत्र में लिखा–"जितेन्द्रनाथ ने पिछली पार्टी-रैली के अवसर पर हजारीबाग के किसी बँगले पर चलने का प्रस्ताव रखा–गोपी-कृष्ण लीला खेलें।"···

"शूट हिम !" रामरति का प्रेमी कार्यकर्त्ता अवधूत अपनी भारी-भरकम देह को तौलकर उठता हुआ बोला–"रासलीला करता है ? शूट हिम !" ··"ए ए ! ठहरो। पहले फैसला हो जाने दो साथियो ! ···बड़ा मौके से दूसरी पार्टी का भेदिया इतने दिनों के बाद पकड़ाया है भाइयो !"

"और एक चार्ज !" एक तेरह-चौदह साल के किशोर ने साफ-साफ शब्दों में कहा–"पूछिए, मुझे यह लड़की समझते हैं या लड़का ?" ··कुबेरसिंह ने रामरति के प्रेमी अवधूत को रोका–"अवधूतजी ! शूट-शूट मत चिल्लाइए बेकार ! पहले बातों को एक-एक करके आने दीजिए सामने।"···कुबेरसिह बार-बार मुस्कराकर जितेन्द्र की ओर देखता !

"सुनिए !"

सारे हॉल में सन्नाटा छा गया। कुबेरसिंह के चेहरे पर वैसी पैशाचिक मुस्कराहट कभी नही देखी थी किसी ने। कुबेरसिंह पाँच मिनट तक अवाक् खड़ा रहा; विकृत ओठों पर मुस्कराहट बनी रही। बोला–"भाइयो ! समझ मे नहीं आता, क्या कहूँ और क्या करूँ ! ···जहाँ तक जितेन्द्रनाथ के व्यक्तिगत चरित्र का प्रश्न है, मैं आप लोगों से अधिक ही जानता हूँ उसको। मैंने उसको पाप-पंक से निकालकर राजनीति मे प्रवेश कराया। सोचा था, एक भले घर का बेटा सही राह पर आ गया।···लेकिन,

वह इस हद तक पतित हो सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की थी मैंने। आपको मालूम होना चाहिए कि इस रण्डीबाज ने सोलह साल की उम्र में ही नथिया उतारा था !"···

"हा-हा-हा-हा !"

"इसलिए, प्रधान दोषी मैं हूँ।" कुबेरसिंह ने नीलकण्ठ की तरह सारा जहर पी लिया–'हाँ, मैं दोषी हूँ। इस व्यक्ति को अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बनाकर, इस पर इतना विश्वास करके मैंने पार्टी का अहित किया है ! ···कलकत्ता में इन्होने रसगुल्ले खाकर पार्टी को बेच देना चाहा, बंगालियो के हाथ। मेरा माथा उसी समय ठनका था। लेकिन जो होने को होता है वह होके रहता है ! ···और, सुन लो कान खोलकर। नकटा की जिन्दगी ! प्राणदण्ड से भी बडा दण्ड ! जब तक जियोगे, नकटा की जिन्दगी ! ···छोड़ दो साथियो ! उदारता से माफ कर दो। हमें यह नही भूलना चाहिए कि जब तक यह वफादार रहा, पार्टी की अच्छी सेवा की इसने। ···जितेन्द्रनाथजी ! आपने कलकत्ता के दीनानाथ चौरासिया से चुपचाप चार हजार रुपया लिया है, वह भी माफ कर देता हूँ।···कृपया हॉल छोड दे। आगे की कार्रवाई शुरू होगी।" रामरति का प्रेमी अवधूत बाँहो को तौलकर घूँसा दिखाते हुए कहता है–"याद रखना !"

जितेन्द्र का माथा चकरा गया था ! ···श्यामगढ पहुँचते-पहुँचते रामरति के प्रेमी अवधूत और विद्या के भाई निगम ने उसको पकड लिया था। श्यामगढ ड्योढी में पहुँचकर भी गोली दागने का इरादा था उनका। राजा कामरूपनारायण ने बडी बुद्धिमानी से उन्हे वापस किया।

कुबेरसिंह ने उसी दिन की रैली में प्रस्ताव मजूर करवा लिया। बिहार के पत्रो में छपा–'प्रगतिशील समाजवादी पार्टी का फैसला ! हम फासिस्ट-विरोधी हैं किन्तु कम्युनिस्ट नहीं !'···प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के दूसरे समाचार में जितेन्द्रनाथ के निष्कासन पर एक छोटा-सा वक्तव्य था, पार्टी के प्रधान श्री कुबेरसिंह का–'ऐसे चरित्रहीन व्यक्ति को किसी भी राजनैतिक पार्टी में जगह नही मिलेगी !'

'जितेद्रनाथ आधा मर चुका था। उसको अपने सहकर्मियो पर, साथियों पर इतना विश्वास था कि कुबेरसिह का आसन डोल जाता, बार-बार !···चारो खाने चित्त गिरा है जितेन्द्र, राजनीतिक लगी खाकर। फेशियल पेरेलिसिस से विकृत ओठ, चेहरे पर जामुन जैसे दो बडे-बडे व्रण, छोटी-छोटी आँखे···हे-हे-हे ! जा साने, नपुसक होकर जियो ! हे-हे-हे ! यही दण्ड !' ··· अगस्त-आदोलन मे अण्डरग्राउण्ड पार्टियो से नाता जोडने की चेष्टा मे तीन बार पिस्तौल के मुँह से बचा। पूर्णिया के आजाद-दस्ता के कमाण्डर ने कहा–'तुम्हारे आने के पहले ही तुम्हारे बारे मे खबर मिल चुकी थी। प्रगतिशील समाजवादी दल के लोग सी. आई. डी. का काम करते हैं, हमें मालूम है।'···बाजाप्ता बन्दी-अवस्था मे उसे आजाद-दस्ता की फौजी अदालत मे पेश किया गया। दस्ता के कमाण्डर नन्दकिशोर की राय थी–'बीच कोसी में ले जाकर–ठाँय !' किन्तु जी. ओ. सी. शशिनाथसिंह ने जित्तन से बातें करने के बाद

फैसला दिया–'अभी इन पर नजर रखी जाये, नजरबन्द रहें।' कमाण्डर नन्दकिशोर ने जितेन्द्र की छाती से पिस्तौल भिड़ा दी थी–'मैंने रिपोर्ट पढ़ी है इसके बारे में। इसको कुबेरसिंह ने हम लोगों के पीछे लगाया है।··· कैपिटल पनिशमेण्ट !'

शशिनाथसिंह ने उठकर रोका था–'छोड़ दीजिए नन्दकिशोरजी !'

1943 में गिरफ्तार होकर जब जेल गया···

जेल में यह बात पहले ही पहुँच चुकी थी–'आ रहा है, कुबेर का जित्तन !' ···तरह-तरह के प्रश्नों, व्यंग्य तथा कटु बातों को सहकर जेल-यातना भोगने लगा। एक रात वार्डवासियों ने कम्बल-ओढ़ैया रस्म कर दी। कम्बल से ढककर तसले की पेदी से पीटते हैं ! गोरी मिलिटरी की मार से अधमरे जितेन्द्र को, कम्बल-ओढ़ैया रस्म के बाद जेल-अस्पताल मे शरण लेनी पड़ी।··· जिला जेल से सेण्ट्रल जेल ! 'ए' क्लास का नजरबन्द होकर सेण्ट्रल जेल में गया, जितेन्द्र। प्रान्त के आधे से अधिक नेता, विभिन्न पार्टियों के, इसी जेल के विभिन्न वार्डों में रहते थे। पाँच घण्टे तक जेल-गेट पर ही बैठा रहना पड़ा। हर वार्ड के लोगों ने एतराज किया–'यहाँ मत भेजिए, यहाँ अब जगह नहीं।' जितेन्द्र ने प्रार्थना की थी, उसे किसी सेल में ही जगह दी जाये !···

तीन साल तक वह पुराने सेल में पड़ा खाँसता रहा। किसी ने उसकी खोज भी नहीं की। जितेन्द्र को वे राजनीतिक बन्दी नहीं मानते, सरकारी गुर्गा समझते। जेल से निकलने के बाद···!

कुबेरसिंह ने अपनी पार्टी को कांग्रेस में विलीन कर दिया। शहादत-आश्रम से उसने टेलीफोन किया–"क्यों, सदाबहारजी ? जितेन्द्र को आपकी पार्टी में जगह मिल गयी ? आपको शायद याद न हो मेरे उस समय के वक्तव्य की भाषा। ···हाँ, मैंने लिखा था किसी भी राजनैतिक पार्टी में उसकी जगह नहीं। हैं-हैं ! अरे, पुराना पतित ! हाँ, हाँ भैया ! इसीलिए कहता हूँ ! खास करके आपकी पार्टी में तो उसकी जगह नहीं ही होनी चाहिए। महिला-कॉलेज की बहुत-सी लड़कियाँ ? हाँ, हाँ। तब समझिए !" रिसीवर रखते हुए कुबेरसिंह हँसा–"नकटा !"···

···"प्रान्त की राजधानी में बैठकर पत्रकारिता करना चाहता है ? ठहरो ! चखा देता हूँ मजा !" कुबेरसिंह ने सभी अखबारों के दफ्तरों में जितेन्द्र की चरित्रहीनता का गुप्त सवाद भेज दिया ! ··· साहित्य-सेवा ? वहाँ भी कुबेर के मित्र हैं, बहुत। कहाँ जायेगा जितेन्द्र ? गली-गली में, उसका नकाब उलटकर दिखलायेगा, कुबेरसिंह। किसी सोसायटी में मूव नहीं करने देगा।

इसके बावजूद पाँच वर्षों तक पटना में डटा रहा जितेन्द्र। छद्मनाम से लेख लिखता–राजनीतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक। पटने के कई सम्भ्रान्त परिवारों मे घुला-मिला। कई नये दोस्त बनाये, बहुत-सारी किताबें पढ़ीं, अनेक चित्र-प्रदर्शनियाँ देखीं, और अपना प्रिय साज सितार बजाना सीखा।···किन्तु, वह टिक नहीं सका। लाछना, अपमान, असफलता और निराशा को झेलकर भी वह समाज से बँधा रहना

चाहता था। समवयसी, समधर्मा, समभावापन्न स्त्री-पुरुषों की छोटी गोष्ठी में जीने-भर खुली हवा पाकर ही प्रसन्न था।…बायो-सोशल क्षुधा की निवृत्ति के लिए एक मर्मी मित्र की निष्कपट मुस्कराहट ही पर्याप्त है ! कुबेरसिंह ने उसे भी छीन लिया। तब, वह भागा-भागा अपने गाँव आया।…गाँव के लोग पहचानते ही नहीं, मानो।

"घृणा से मुँह विकृत मत करो जितेन्द्र ! राजनीति ने हमें बहुत-कुछ दिया भी है।…फिर भी तुम विस्थापित नहीं ! गाँव के लोग तुमको न पहचानें। गाँव की मिट्टी, अपनी जन्मभूमि का पानी, तो तुमको प्राप्त है। जहाँ तुम खेले-कूदे, बढ़े…। मुझे देखो !" इरावती ने समझाया—"मेरे दुख की कल्पना करो !"

"तुम्हारे इस सांस्कृतिक अनुष्ठान के पीछे कोई राजनीतिक हाथ तो नही ? सरकारी या गैर-सरकारी किसी किस्म की राजनीति से प्रभावित तो नहीं लोक-मच की कल्पना ?"

"तुम बहुत शंकालु हो गये हो।"

"यहाँ के सांस्कृतिक जीवन में डुबकी लगाये बिना प्रीति के छिन्न-सूत्र को पकड़ना असम्भव है !"

जितेन्द्र ने परानपुर के सभी नौजवानों को, नाटक-प्रेमी व्यक्तियो को आमन्त्रित किया है, परानपुर नाट्यशाला का पुनरुद्धार करने के लिए। नाम-बनाम हर नौजवान की बुलाहट है।…मँगनीसिंह उर्फ प्रेमकुमार दीवाना उर्फ हरिजन दीवाना गाँव का एकमात्र नाटककार है। नाटक का अकेला नामलेवा है। पत्र में लिखा है—'आपके सहयोग की विशेष आवश्यकता है !'

'क्यों झाजी ! ग्राम-पंचायत को मीटिंक-बैठक पर दफा चौआलीस लगाने का पावर नहीं है ?"

रोशन बिस्वाँ की पुरानी आदत छूट गयी है। लेकिन, जीभ को रोकते समय मुँह चुनियाने की नयी आदत लग गयी है।

लुत्तो कहता है—"नट-नट्टिनों की मीटिंग में मैं नहीं जाता।"

गरुड़धुज झा की राय है—"बहुत दूर की चाल है, यह। मिसर खानदान की अँतड़ी की बात मैं समझता हूँ !"

हरिजन दीवाना पीठ पर झोली लादे जा रहा है। लुत्तो ने पुकारा—"ए ! हरिजनजी ! आप भी जा रहे हैं नट-नट्टिनों की बैठक में ?"

"हाँ, मुझे विशेष निमन्त्रण है। देखिए न, लिखा है—आपकी उपस्थिति…।" गरुड़धुज झा ने कहा—चमरौधे का जवाब बूट-जूते से देने लगे, तब ?" गरुड़धुज झा के नकली दाँत की कमानी टूट गयी है। हँसते समय अ-गरुड़ध्वज चेहरा हो जाता है।

हरिजन दीवाना ने कहा–"आप लोगों का राजनीतिक मतभेद है। मुझे क्या ? मैं तो लेखक हूँ न ! जित्तन बाबू कह रहे थे कि अकेला दीवाना है जो नाम भी लेता है नाटक का, इस जमाने में। मैं कैसे नहीं जाऊँ ?"

हरिजन दीवाना अपने नाटकों की पाण्डुलिपि से भरी झोली सँभालता हुआ चला गया।

"जाने दो ! पीछे मालूम होगा।··· जे बेटा पैठल परानपुर हवेली, सोहि दागल गेल !" गरुड़धुज झा ने कहा–"इस बैठकी में दीवाना-परवाना सब क्यों टूट रहा है सो नहीं जानते ? वहाँ डबल पुरोग्राम है। कम्फ की छौंड़िया भी रहेगी।"

"ओ !"

"सच कहता हूँ, आज यदि मेरे दाँत की कमानी नहीं टूटी रहती तो मैं भी जाता इस मीटिंग मे। तुम्हारी शपथ !"

गरुड़धुज झा एक विशेष ग्राम्य मुद्रा बनाकर हँसा। हँसते समय दाँत की खुली खिड़की से लार टपक पडी। लुत्तो ने हँसकर कहा–"आप तो सचमुच··· ।"

"सचमुच क्या ! पुराने मछलीखोरों की भाखा में उस छौंड़िया को नैनी मछली कहेगे। देखते ही मन लट्टू हो जाता है।···कहाँ से आयी है ?"

लुत्तो ने कहा–"चालू माल है, रिफूजनी है। साला, मजे में यही लोग हैं। मरते हैं हम लोग, जो असल देशवासी हैं। उधर नेहरूजी इन लोगों के चलते भर-पेट भात नहीं खा सकते और इधर दिन मे चार किस्म की रेशमी साड़ी पहनकर बरदिया घाट पर बैहर-चुक्का खेलती है !"

"जो भी कहो ! जित्तन है जोगाड़ी आदमी। कहाँ से, घर-बैठे मँगा लिया इस नैनी मछली को।··· साला बूढ़ा भी जवान हो जाये, देखते ही ! तुमने उसकी बोली सुनी है ? ठीक पहाडी मैना की तरह बोलती है। सामबत्ती से उस दिन बतिया रही थी।"

"झाजी, आप ऊपरी सजावट को दखकर मत भूलिए। वह अधेड है और आप कहते है छौंडिया ? आप नही जानते आजकल का भेद ! नकली दॉत की तरह सभी चीजे नकली।··· हिरिया की बोली कम मीठी है ?"

लुत्तो को हीराबाई की बात याद आयी। कल कह रही थी–"ताजमनी को जित्तन बाबू ने हवेली मे बैठा लिया है, उसी तरह··· ।"

··हमारे गॉव की मिट्टी मे सास्कृतिक सोना फल सकता है !

विचारशील नौजवानो के मन में इरावती और जितेन्द्र की बातें घर कर गयी है।··· प्राण नही, अनुभूति नहीं ! अब मनुष्य को यन्त्र चला रहा है।··· टेकनॉलोजी कं युग मे हम लोग जीवन-उपभोग का मूल तकनीक ही खो बैठे हैं। हजारो-हजार जनता के बीच भी हरेक आदमी विच्छिन्न है, अकेला है। हँसी-खुशी, उत्तेजना, अवसाद, आनन्द-उल्लास–सभी यान्त्रिक ! कामरेड डी. डी. टी. ने प्रश्न किया

था—"कामरूपनारायण सिंह पार्टी का कल्चरल फ्रण्ट तो नहीं यह लोकमंच ?"

मकबूल के दो सवाल—"इस सांस्कृतिक उत्थान के लिए आर्थिक सहायता कहाँ से मिलेगी ? भूखे किसान और मजदूरों को इससे क्या फायदा ?"

...समाज को मानवीय और मनुष्य को सामाजिक बनाना ही मुक्ति का एकमात्र पथ है !

गरुड़धुज झा कहता है—"अब ठीक है। जित्तन ने गाँव के नौजवानों को फुसलाने का नया तरीका निकाला है। नैन की मार ! ...नैनी मछली !"

हरिजन दीवाना चौबटिया पर रोज नियमपूर्वक भाषण देता है—"नाटक ! गाँव-समाज का नाटक ! आपके और हमारे घर का नाटक ! इरावती बहन को भगवान ने खासकर हम लोगों के लिए ही भेजा है।"

इरावती घर-घर घूमती है। गीत सुनती है, शादी-ब्याह, पर्व-त्योहार और आनन्द-उत्सव के समय गाये जानेवाले गीत !

जितेन्द्र के टेबल पर चार-पाँच फोटोग्राफ हमेशा पड़े रहते हैं—परमादेव के गहवर और शामाँ-चकेवा की रातवाली तस्वीरें ! ...लोगों के चेहरे पर स्वाभाविक हँसी फूटी हुई है...शामाँ-चकेवा खेलती हुई औरतों की खिलखिलाहट कमरे मे गूँज जाती है, रह-रहकर।... आनन्दोल्लास !

परानपुर नाट्य समिति की पुरानी नाट्यशाला की दीवारों पर उगे हुए पीपल के पेड़ काटे जा रहे हैं। ईंट-चूने और सीमेण्ट का हिसाब करता हुआ बड़बड़ाता है जलधारीलाल दास—'रह-रहक़र सनक सवार होता है। कभी जंगल लगाते हैं...तो कभी... ।'

गाँव के अधिकांश लोग उदासीन, तटस्थ और शंकालु होकर देख रहे हैं—गाँव के नये-नवतुरियों को क्या ?...नाटक-तमाशा सूझता है सिर्फ !

गाँव की औरतें बड़े उत्साह में हैं—फिर से पुराना जमाना लौट रहा है !

बरदिया घाट के ताड़ पर बैठा त्रिकालदर्शी ब्रह्मपिशाच हँसता है—बस, तीन-चार दिनों की देर है। आ रही है, दिल्ली से नयी खबर ! खड़क्-खडक्-खड़-खड !

...दूर, दिल्ली में बैठा नदी-घाटी योजना का एक नौजवान विशेषज्ञ परानपुर की तकदीर को फिर से लिख रहा है। विशेषज्ञों की सभा में नक्शा फैलाकर वह समझा रहा है—"यह है कोसी की मुख्य धारा ! तीस मील पूरब की ओर जो यह पतली-सी धारा है—दुलारीदाय, इसको ध्यान से देखिए।... आजकल सूखी पड़ी हुई है। यही एक धारा है जो नेपाल की तराई में कोसी से निकली थी। यदि, इस जगह... हम कोसी की मुख्य धारा को डाइवर्ट कर सकें। दुलारीदाय को फिर जीवित कर देने से हम एक तटबन्ध के खर्च से बचेंगे। साथ ही, रानीगंज-फारबिसगंज इलाके में परती पर जो नयी जमीन पायी गयी है, उसकी सिंचाई।...हाँ। पाँच कुण्ड हैं। इन्हें केनाल में परिवर्तित करना होगा।... तीन-चार मील तक इस धारा के बेड़ में

खेती होती है। बाकी यों ही पड़ी रहती है।···पाँच-सात गाँव के किसानों के पुनर्वास के लिए परती पर यथेष्ठ भूमि है। एक करोड़ की बचत, बाढ़ के समय कोसी की मुख्य धारा की बरबादी से करीब दो सौ गाँव यानी दो-तीन हजार एकड़ धरती को बचाया जा सकेगा।"

विशेषज्ञों ने एकमत होकर दुलारीदाय की धारा को पुनर्जीवित करने का प्रस्ताव मंजूर कर दिया। उसी दिन रेडियो और समाचार-पत्रों द्वारा कोसी-योजना का यह समाचार देश के कोने-कोने में फैल गया—एक करोड़ रुपये की बचत···!

हाहाकार मच गया सारे गाँव में !

···ऐंय दुलारीदाय में पानी आवेगा ? खेती कहाँ करेंगे लोग ? किसने यह किया ? जरूर जित्तन का काम है ! वह छौंड़िया इसी काम के लिए आयी है। ··· घर-घर घूमकर अली-गली की खबर इसीलिए लेती है। और भी न जाने क्या हो ? लुत्तो बाबू, क्या होगा ? क्या हो गया ? जयदेव बाबू ! यह कौन जमाना दिखा रही है सरकार ? आग लगे इस सरकार को। मकबूल बाबू ! किस दिन के लिए बैठे हैं, शुरू क्यों नहीं करते क्रान्ति ? बालबच्चा कैसे जियेंगे ? कहाँ जायेंगे हम ? रिफूजी की तरह हमें भी भेजा जायेगा कहीं ? ··· मारो पकड़कर जित्तन को ! उस कम्फूवाली छौंड़िया को पकड़ो। क्यों ऐसा किया ? नाटक करने आयी है या हम लोगों की जान लेने ? जै दुलारीदाय ! हे काली माय ! ओ-ओ-ओ ! हा-आ-आ-आ ! हे-ए-हो-ओ ! बाप-रे-ए ! क्या होगा ? क्या-आ-आ ?

"शान्ति ! शान्ति ! ए ! आप लोग रोते हैं काहे ? हम आज ही पण्डित नेहरू को तार देते हैं, सभी आदमी के नाम से। निकालिए पैसा।···यह हो नहीं सकता !"

लुत्तो, गरुड़धुज और मुखिया रोशन बिस्वाँ को लोगों ने घेर लिया है !···"उपाय कीजिए। जान बचाइए। लुत्तो बाबू !"

मकबूल और जयदेवसिंह ने अपनी-अपनी पार्टी के लीडरों को खबर भेजी है—"इस परिस्थिति मे क्या किया जाये ? जल्दी आदेश दें !"

सारे गाँव में कोलाहल है। किन्तु, हवेली में रिकार्ड बज रहा है। बंगला भठियाली गीत—

नँदीर धारेर काछे-पासे,
बाँस बनेरी माझे-साझे-ए-ए-ए-ए,
देखा जाए जे ग्राम खानि, बँधुआ सेथाय थाके
मो-ओ-ओ-र बँधुआ सेथाय थाके-ए-ए !

गरुड़धुज की बात पक्की है—सात-आठ गाँवों का लीडर एक ही रात में हो जायेगा, लुत्तो।···आनेवाले चुनाव में फत्तेह ! यही मौका है ! लुत्तो को मौका मिला है। इस बार वह करके दिखलायेगा। यह परती जमीन नहीं कि जित्तन के कहने से छीन ली।···कांग्रेस से इस्तीफा की धमकी देगा वह !···इनकिला-आ-आ-ब !

'डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट दुबारा आये—मेरी कोठी की खानातलाशी लेने के लिए। ली आया, किन्तु उदास होकर लौट गया। मैं उसकी कोई मदद नहीं कर सकी।··· माँ तारा के सिवा और किसी से क्या बात की जा सकती है, ऐसे दुर्दिन में !

लॉली के लिए कलेजा सहस्रखण्ड हो रहा है। क्या करूँ ? स्वामी ने मना कर दिया है।

लरेना आकर फिर दो हजार रुपया ले गया।

मूँगा की हालत देखकर रोना आता था। पुट्ठे की हड्डियाँ निकल आयी हैं। आँखों में कीचड़। मूँगा मेरा प्यार ले रहा था। मैं उसकी आँखों से कीचड़ पोंछ रही थी। लरेना ने गाली दी—'चल साले !'

लरेना के व्यवहार से मैं दुखी हुई, किन्तु, स्वामिभक्त··· ।

तीसरे दिन फिर आया लरेना। मूँगा पर सवार रहा, उतरा नहीं। मूँगा मुझे देखकर प्यार से हिनहिनाया—ईं-हिं-हिं !

लरेना कह गया—'पण्डितजी जमानत पर रिहा हुए हैं। लेकिन, गिधबास कोठी में नहीं आवेंगे। कभी नहीं आवेंगे ! ···और, न यहाँ से कोई परानपुर जायेगा।'

मूँगा को ऍड़ लगायी, उसने। मूँगा जम गया। पिछले दोनों पैरों को उठाकर, दाँत से लगाम को कटकटाने लगा। तड़ातड़ चाबुक बरसाया लरेना ने—'साला ! मेमिन माँगता है ?'

क्या अर्थ ? क्या मतलब ? माँ तारा ! मैं कुछ नहीं समझ सकी क्या कह गया वह ? मेरे स्वामी का सन्देश लेकर आया था वह ? ··· मेरे स्वामी ने मेरा परित्याग कर दिया ? आँ ? ओ माँ तारा-आ-आ !

लॉली बेटा रे-ए-ए !

मेरे स्वामी ने सचमुच मुझे छोड़ दिया है।

उन्होंने कचहरी में अपनी सफाई दी है—प्लाण्टर्स से उनकी पुरानी दुश्मनी है। गीतवास कोठी की मिसिस रोजउड के द्वारा काली-मन्दिर और हवेली के अन्दर समान रखवाये गये।

मम्मी एकदम मौन धारण किये रहती है। पास के गाँव का नाम उसने रखा है—'रोजउड-गज'। दिन-भर उसी गाँव में रहती है। अपना जो धर्म समझती है, करती है। स्कूल, पाठशाला··· ।

और, मैं अकेली माँ तारा को लेकर बैठी रहती हूँ।···परित्यक्ता नारी के मर्मदाह को माँ तारा नही समझेगी तो कहाँ जायेगी, बेचारी ? ठुकरायी, खोयी, औरत की जाति !

मैं नियमपूर्वक सिन्दूर लगाती हूँ। रानी-बहिना रोज सिन्दूर लगाती होंगी।··· मेरे स्वामी को कुछ नहीं होगा। कोई दण्ड नही !

रात में मैं स्वप्न देखकर डरी। स्वप्न क्यों ? माँ तारा के पद-तले सोयी मैंने

जो कुछ देखा, वह सपना क्यों हो ? माँ तारा ने मुझे दिखलाया, परानपुर हवेली का पूरबी कमरा, मेरे स्वामी का कमरा। सभी खिड़कियाँ बन्द हैं।···कमरे के अन्दर एक सिंह-पुरुष चहलकदमी कर रहा है। वह कमरे से निकला। अन्दर हवेली की देवी-कोठरी में गया। बैठ गया, देवी की प्रतिमा के आगे। कागज का अम्बार। पंछी के पंख की कलम। मेरी हस्तलिपि से मिलाकर कुछ लिख रहा है।···बड़े-बड़े अक्षर। हाथ से कलम छूट नहीं रही। कलम चल रहा है।···मेरा दस्तखत बनाने की कोशिश कर रहा है। कागज पर रेखाएँ, वृत्त, चक्र बन रहे हैं। कौन ? मेरे स्वामी ? क्या हो गया है मेरे स्वामी को ? ऐसी विकृत मुखाकृति क्यों ? काँपती हुई हथेली में कलम ! कागज पर रेखाएँ, वृत्त, चक्र···!

परमपाविनी क्षमास्वरूपा माँ तारा ! क्षमा करो माँ !

यह कौन आयी है मेरी गोद मे, अभागिन !···दुलारीदाय ? लॉली की दुलारीदाय आयी मेरे कोख से निकलकर रोती हुई। सारा जीवन रोयेगी, अभागिन !

मेरे पति की ऑखें मिली हैं, दुलारी को।

मॉं तारा ! आनन्दमयी विरहिनी बनाकर मुझे नंगा नचाना चाहती हो ? इतना सुख ! इतना दुख ! इतनी पीड़ा !

पुतली जा रही है, परानपुर। मैंने कोई संवाद नहीं दिया है। एक कागज भेज रही हूँ। कागज नही, दस्तावेज।···पत्र का एक टुकड़ा ! मिसेज रोजउड ने लिखा है सुलतानपुर इस्टेट के मालिक मिस्टर एन्थनी को–'डियर मिस्टर एन्थनी ! ···पिजडा तैयार है। इधर शिकार भी अफीम का शरबत पीकर मदहोश और कमजोर हो चला है। शिकार फँसने के पहले हमारे और आपके बीच हुई शर्त पूरी हो जानी चाहिए।···काली-मन्दिर और हवेली के अन्दर सामान पहुँच जायेगा। नोट और रुपये लेकर कल जाऊँगी। आप अपनी सारी तैयारी कर लें।···आपकी–मिसेज रोजउड, गीतवास कोठी।'

···अरी, डोमिन ! इतना रोती क्यों है ? पुतली गयी है तुम्हारे जिद्दू-बद्दू भैया के पास। लाली भैया पूछेगा, मेरी दुलारीदाय कैसी है ? पुतली कहेगी, बहुत रोती है।···तू डोमिन है, चमारिन है। तू भैया के घर की मजदूरनी बनकर रहेगी ? तू अपनी भाभी की ओढ़नी पखारेगी ? भउजी, हे भउजी, ओढ़नी तोहर पखारब हे भउजी···!

मम्मी मुझसे बहुत कम बोलती है। आज हठात् उन्होंने मेरी दुलारी को प्यार करना शुरू किया। कहती है–'तू तो इस तरह नहीं रोती थी, जन्म लेने के बाद। यह इतना रोती क्यों है ?' मुझे हँसी आती है। हँसते-हँसते मम्मी की छाती में मुँह छिपाकर रोने लगती हूँ।

स्वामी ने अविश्वास किया ?

पुतली लौट आयी।···मुस्कराती है पुतली। ओ माँ ! मेरा भाग्योदय होगा, फिर ?

…पुतली जान पर खेलकर हवेली के अन्दर गयी। भोजन करके उठे थे मेरे स्वामी। देखते ही गरजे–'यह कैसे आयी ? फिर क्या लेकर आयी है ?' पुतली ने मेरा वह पत्र दिया–एन्थनी के नाम। मेरे पति ने बार-बार पढ़ा। मेरी रानी-बहिना आकर खड़ी हो गयी। और मेरा छुट्टू पण्डित हवेली के बाहर जाने के लिए रोने लगा। उसने सोचा–मेम्माँ बाहर खड़ी है, काली मन्दिर के पास। –'यहाँ क्यों लायी है ?' पूछा मेरे पति ने, पुतली से।

पुतली ने निडर होकर कहा–'मुकदमे में लगाने के लिए।'

गुस्से से गरज पड़े–"दिल्लगी करने आयी है ?"

पुतली ने झट से कहा–"नहीं, मालिक !' रानी-बहिना ने पूछा–'क्या बात है ?' मेरे पति चुपचाप फिर से पत्र को पढ़ने लगे। कुछ देर के बाद बोले–'लरेना जब रुपया लाने गया था, जमानत की पैरवी के लिए, तो उसे गाली क्यों दी गयी अंग्रेजी में ?'

पुतली चौंक उठी–'गाली ?…लरेना की तो वैसी खातिरदारी कभी नहीं हुई, पहले।'

रानी-बहिना और मिश्रजी ने एक-दूसरे को देखा। पुतली ने सुना दिया–'दुबारा भी रुपया ले आया है।'

'ऐं ? …पहली बार कितना लाया था ?'

'शायद, पाँच हजार। इस बार, दो हजार।'

रानी-बहिना और मिश्रजी की आँखें फिर चार हुईं।

जानती हैं, माँ तारा ! मैंने तो पुतली से सिर्फ कहा था–'इस पुरजे को किसी तरह परानपुर इस्टेट के किसी विश्वासी कारकुन को भी दे आओ तो समझो बहुत बड़ा उपकार हो जाये। और, यदि भाग्य अच्छा हो, रानी-बहिना से मिल सको तो कहना–लरेना के हाथ का बनाया हुआ पान स्वामी को खाने न दें।… ली कह रहा था, मिश्र के नौकर को एन्थनी के बँगले में देखा है उसने। पूर्णिया में भी कई साहबों के यहाँ आता-जाता है। ली ने समझा था, मैंने ही कोई, पैरवी करने के लिए भेजा है, मिश्रजी की तरफ से।'

'तू क्यों इतनी बात कहने गयी !'

मैनेजर साहब बोले–'तू चल, पुतली ! मैं गीतवास आऊँगा। लेकिन अभी नहीं। मुकदमा फैसला होने के बाद।…मैं सबकुछ समझ गया। तू जल्दी भाग। लरेना न देखने पाये, तुमको। नहीं तो, साला ऐसा चालाक है कि आज ही मोरंग के जंगल में भाग जायेगा।'

…सच है ! पुतली रानी, सच कहती है ! दुलारी इतनी बड़ी तकदीर लेकर आयी है, वह अपनी रानी-माँ की चरण-धूलि ले सकेगी ? …बाप की गोद में बैठेगी ! लॉली भाई आयेगा, इसका !

चुप हूँ। सब चुप हैं। दुलारी भी नहीं रोती अब।… मुकदमे की सुनवाई होने तक

की अवधि ! माँ, माँ तारा ! काली-काली !

दिन गिनती हूँ—एक काली, दो काली, तीन काली !

आज नहीं तो कल। कल तो अवश्य ही···।

मेरे स्वामी ने मुझे छोड़ा नहीं है। मैं परित्यक्ता नहीं। मैं अपने स्वामी की हूँ। यही क्या कम है, मेरे लिए ? देखने की लालसा पूरी न भी हो, अब।···तप में फिर कोई त्रुटि हुई। जन्म-जन्मान्तर, फिर दर्शन की प्यासी आँखें लेकर मैं भटकी फिरूँगी।

···ले आ पुतली, उस अभागिन को मेरे पास। अपनी बीमार माँ के पास पाँच मिनिट रहने दे। हाँ, ला।

··· लॉली बेटा ! डार्लिंग ! यह रही तुम्हारी दुलारीदाय। मेरा जहाज सम्भवतः कल खुल रहा है।

···मकरध्वज ? किसलिए ?···अरे-रे, यह छुटकी ब्राह्मणी भी हँसती है ? वाह री पण्डिताइन ! ···भैयादूज में घोड़े पर चढ़कर आयेगा तेरा भाई। तू टीका लगायेगी ? आ रे लॉली, आ-आ ! दधि-दूब-धान से तेरा पैर पूजेगी छोटी पण्डिताइन, तेरी बहन।

··· मेरा लॉली बेटा, तू आयेगा !

···आय-आय !

··· लॉली डैडी आयेगा ?

···आय-आय !

···लॉली, डैडी···!

'चिया ! चिया इधर में लायेगा कि उधर में जायेगा, साहब !'

'आय-आय !'

सुरपति की आँखें खुलीं, सामने बिखरे कागजों को समेटते समय उसने देखा, कागज गीले हो गये हैं। आँखें पोंछकर बाहर देखता है वह। गेस्टहाउस की अँगनाई में असंख्य गेंदे फूले हैं। आकाश-विकास-सूर्य सर्ववर्णमयी प्रकृति मे शैत्य ग्रहण कर चुका है।

सुरपति अपने साथ कागजों का बण्डल लेकर हवेली की ओर चला—जय माँ तारा !

समाजकम्प ?

भूकम्प से भी भीषण इस समाजकम्प में, गाँव के लोगों के दिल दरार पड़ी हुई दीवारों की तरह अरराकर गिरे हैं। घर-घर में मातम छाया हुआ है। हरेक के चेहरे पर राख पुती है, सभी की आँखें बुझी हुई-सी। बच्चा-बच्चा उदास है—अब

क्या होगा ?

सरबन बाबू को कलेजे मे धडकन की बीमारी हो गयी है। रह रहकर पुकारते हैं–"लालचन बाबू ! मैं डूबा, डूबा, डूबा। दौडो लालचन !"

लालचन की घरवाली मना करती है–"हरिवश उठाकर ईमान खाने का फल दे रहे हैं भगवानजी। तुम क्यो दौडकर जाते हो ? उनके बेटे किस दिन के लिए हैं ! वह तुम पर अपना आधा पाप डालना चाहता है।"

रोशन बिस्वॉ की पुरानी आदत फिर लौट आयी है। सूखे ओठो पर सूखी जीभ बार-बार निकलती है। अब वह क्या मुखियागिरी करेगा, किस पर करेगा–"झाजी ! ग्राम-पचायत की बात पर जरा भी खयाल नही करेगी सरकार ? बिना मुखिया से पूछे ही !"

गरुडधुज झा का दिमाग कोई काम नही कर रहा। किसको क्या जवाब दे ? बोला–"रोशन बाबू ! जब तक लुत्तो लौटकर कोई खबर नही ले आता है पूर्णिया से, तब तक असली बात का पता नही चल सकता।"

बालगोबिन मोची फारबिसगज से आया है। कहता है–"सभापतिजी कह रहे थे, यह कानून टलनेवाला नही।"

"बालगोबिन क्या कहेगा ? आखिर, करने से क्या नही होता है ?"

"झाजी ! कोई कुछ कहे। है यह जित्तन की ही बदमाशी। पहले अपनी परती तोडकर तब सरकार को खबर दिया कि परती जब्त किया जाये। पहले नैका सुन्नर सुनने के बहाने उस कुरकुरिया मशीन मे गाव के लोगो की बोली को बन्द किया, तब ननकू नट, बकना अहीर वगैरह की बोली भरकर भेज दिया। बेचारे जेल मे सड रहे है। और इस बार देखिए ! पहले सभी लोगो को बुलाकर नाटक नौटकी की बात सुनाकर फुसलाया। उधर अन्दर ही अन्दर पचास कोप खेला।"

"सरबन बाबू की हालत अच्छी नही। फारबिसगज का डॉक्टर आकर देख गया है। डाक्टर बोला, कोई भीतरिया चोट लगी है।"

"अरे, सरबन बाबू जैसे लोगो के पाप से ही यह सब होता है। भूदानियो को मारने का फल सारा गॉव भोगे अब।"

सबको अपनी अपनी जमीनो की याद आती है, धान और पाट के पौधो के रग ऑखो के आगे फैल जाते हैं। अन्त मे सब पर पानी फिर जाता है। सर्वे मे लडकर जमीन हासिल करनेवाले, बाप और भाइयो के पेट से अपने हक की जमीन निकालनेवाले, सभी जमीनवाले राह चलते लडखडाते हैं।

यह कौन जमाना आ गया, हे भगवान् !

औरते बेवजह आँपस मे झगडती हैं।

"आकि देखो ! मैंने कहा था न ! देख लिया न ! परती तोडने का फल देख रही हो न ! परमादेव भला झूठ भखेगे ? जैसा कहा, अच्छर अच्छर फला।"

"इस कोढिया सरकार की आँख मे छानी पडी है, क्या ? जोत-आबाद होनेवाली

जमीन को बाँस-भर पानी में डुबा रहा है और उधर ऊसर परती को जोतवा रहा है !"

सामबत्ती पीसी तुक जोड़ती है-"आम कटाये, बबुल लगाये, फल जे फलय मॅहकार; उचित कहत सो चित्त नहीं भावे, चुगलन के दरबार ! सो, चुगलखोर का राज है, यह। कहता है सुराज है। राम-राम ! मुँह मारो ऐसे सुराज का !"

"सरकार का क्या कसूर ? यह घर के भेदिया ने लंकाडाह किया है। सर्वे मे लोगों ने जमीन ले ली। इसी डाह से यह सब किया है।"

"हाँ-हाँ, जित्तन बाबू और कम्फू की बीबी ने मिलकर यह काम किया है। कहो तो भला ! सामने कैसी मीठी बोली बोलती है ? और, मन में छप्पन छुरी। छॅट्टकबाजी छौंड़िया आये इधर, तब पूछती हूँ। हरजाई, नट्टिन, न जाने कहाँ से आयी है !"

"तुम लोग बिना जाने-बूझे क्यों बोलती हो ? सभी बात का दोख एक ही आदमी को नहीं देना चाहिए। जित्तन बाबू का क्या कसूर ! गोबिन्दो कहता था-दादा बाबू खुद फिकिर में हैं, खाना-पीना छोड़कर।"

"जित्तन के बारे में कुछ बोलते ही तू क्यों टपकती है, सामबत्ती ?"

सामबत्ती पीसी कई दिन से बेवा फूहा से जी खोलकर झगड़ा करना चाहती थी। फूहा के टोकते ही बरस पड़ी-"तुम्हारी जीभ बड़ी पतली हो गयी है, फूहा ! टपटप टपकती है खुद और मुझे कहती है कि क्यों टपकती है ? लाज नहीं आती है ?··· जित्तन बाबू के लिए हवेली के पोखरे में डूबने गयी थी, कभी।"

"चुप, छिनाल !"

"ठहर, तुम्हारा कल्ला तोड़ती हूँ। आ जा !"

बाल्टी, घैला छोड़कर सामबत्ती झपटी। दोनों एक-दूसरे पर बिल्लियों की तरह टूटीं। दोनों ने एक-दूसरे का केश पकड़ा। पनघट पर खड़ी औरतें ऐसे झगड़े में बीच-बचाव नहीं करती। फूहा की चाची दौडी आयी।

"मार-मार, मुँह मे मार, फूहा !"

फूहा की चाची मैदान में उतरी तो फेकनी की माय क्यों चुप रहे ? सामबत्ती सोलकन्ह की बेटी है-"आकि देखो, एक जनि को अकेली पाकर मार रही हैं दो जनि··· !"

गुत्थमगुत्थी लड़ाई के समय भी मुँह की लड़ाई नहीं बन्द होती।

बड़ा तेलवाली हो गयी !···हवेली के निमोंछा रसोइया ने मुँह चिकना कर दिया है तेरा। मुँह तोड़ दूँगी, आज ! ··· आकि देखो, दाँत काटती है ! दाँत तोड़, मार मुक्का। ···भफ्फा खिलाने गयी थी तू या··· ?

मार खाकर फूहा और उसकी चाची गला फाड़कर रोने-चिल्लाने लगीं-"दौड़ रे-ए-ए-ए-ए बिसना भैया-आ-आ ! जान मारलक रे-ए-ए-ए-ए सामबत्ती नटिनियाँ-याँ-याँ-याँ !!"

सामबत्ती कहती है-"गाँव के लोगों को भात नहीं रुचता है और छिनाल छौंड़िया

बेवा होकर भी दूध की छाली खोजती फिरती है। बुला, जिसको बुलाना है।"

चीख-पुकार, रोना चिल्लाना धीरे-धीरे बढ़ता ही जाता है।

जित्तन बाबू अपने सामने गाँव के लोगों की तस्वीरें रखकर काम कर रहे हैं। लोकमंच के लिए उपयुक्त चीज तैयार कर रहे हैं—एकांकी, सामूहिक गीत, नृत्य। गीत-कथा के आधार पर गीतों की स्वरलिपि ! हरिजन दीवाना ने अपना नाम बदल लिया है—प्रेमजीत ! आजकल, इरावती और जित्तन का गुन-कीर्तन करता है। दिन-भर हवेली में पड़ा रहता है। इरावती को देखते ही नशे में झूमने लगता है। आज तक किसी स्त्री ने उसको इतना प्यार नहीं किया। प्रेमजीत से हर बात में सलाह लेती है, इरावती।··· कलात्मक प्रेम इसी को कहते हैं।

"लॉली बाबू !"

जितेन्द्र चौंका। मेम-माँ का दिया हुआ नाम किसने बता दिया ? मेम-माँ के बाद फिर किसी ने इस नाम से नहीं पुकारा। सुरपति ने जितेन्द्रनाथ को दुबारा चौंकाने के लिए कहा—"हिंग्वाष्टक··· !"

"आज आपको कहीं कोई पुरानी कथा हाथ लगी है क्या ?"

"मेरा सौभाग्य ! ··· पढ़कर देखिए, नयी है या पुरानी ?"

जितेन्द्र के हाथ में छपे हुए प्लेट्स देकर सुरपति बोला—"इसको पढ़ने के बाद मेरे कुछ प्रश्नों का जवाब देना होगा।"

जितेन्द्र ने लिखावट पहचान ली, तुरत। खुशी से चीख पड़ा—"सुरपति बाबू, मेरी माँ की लिखावट है, मेम-माँ की ! कहाँ मिली आपको ?"

हाँफती हुई आयी, इरावती—"यह क्या हो गया है गाँव में ! औरतें आपस मे झगड़ रही थीं। मैंने छुड़ाने की कोशिश की तो मुझे ऐसी-ऐसी गालियाँ सुनने को मिली··· "

प्रेमजीत ने उत्तेजित होकर कहा—"किसने दी गाली ? आप पहचानती हैं ? मैं अभी जाकर··· ।"

"आखिर, क्यों ?" जित्तन बाबू ने चिन्तित होकर पूछा।

इरावती बैठ गयी—"कोसी कैम्पवालों के साथ तुम पर भी कम नाराज नहीं हैं, गाँववाले। वह लम्बा आदमी है न, क्या नाम··· हाँ, गरुड़धुज झा··· अभी कह रहा था—मेम साहेब ! आप और जित्तन जरा होशियारी से चलिए-फिरिए। गाँव का एक-एक आदमी आप दोनो से खफा है। थाना में सनहा लिखा दीजिए।"

लोकमंच में मस्त जितेन्द्र को गाँव की कोई खबर नहीं। भिम्मल मामा आये—"जै जनता ! सत्याग्रह की तैयारी हो रही है।··· दिमाकृषि, समस्ती, कलेक्तिव !"

सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

जितेन्द्र ने कहा—"नौकरशाही सरकार को आश्चर्य होगा कि गाँव के लोग घी के चिराग जलाकर खुशियाँ मनाने के बदले सत्याग्रह क्यों कर रहे हैं।"

"तुम्हारा क्या खयाल है, खुशियाँ मनाने की बात नहीं ?"

"हमारे और तुम्हारे समझने से क्या होता है ?"

"हम उन्हें समझायेंगे।"

"हमारी बातों पर विश्वास ही नहीं करेंगे कोई।"

"तुम तो उन पर विश्वास करते हो ?"

जितेन्द्र सोच में पड़ गया। हाथ के प्लेट्स को उलटते हुए बड़बड़ाया–"तमाशा है ! ...पिछले पाँच सौ वर्ष की बेकार पड़ी हुई परती पर खेती के लायक जमीन पायी गयी। देश के लोगों की बात दूर, गाँववाले भी नहीं जानते कि सरकार परती क्यों तोड़ रही है। कोसी योजना की सबसे बड़ी पेचीदा समस्या हल हुई है। दुलारीदाय को कोसी की मुख्य धारा से संयुक्त करके सिर्फ करोड़ों रुपये की बचत ही नहीं, करोड़ों की आमदनी भी होगी।...बेचारी जनता का क्या दोष ? ऊपर से थोपे हुए सुख को वह क्या समझे ?...मन की परती ज्यों-की-त्यों पड़ी हुई है। वीरान होती जा रही है। लगता है, मन को छूनेवाला मन्त्र ही हम भूल गये हैं।"

आज की डाक से मलारी और सुवंश की चिट्ठी आयी है, जितेन्द्र के नाम "भैया, गाँव आना चाहते हैं किन्तु... ।"

भैया !! ... जितेन्द्र का सारा शरीर झनझना उठा। प्यार-भरे शब्द ने मन को झंकृत कर दिया।

सात-आठ गाँव के लोगो को एक ही रात में जगायेगा, लुत्तो–"उठो ! सोने से काम नहीं चलेगा। कमर कसकर आगे बढ़ना होगा।"

"बंगाल-बिहार झगड़ा के समय जैसा अण्डोलन हुआ था वैसा ही फिर होगा ?"

ऐसे आन्दोलनों में बड़ा मजा आता है, गाँववालों को ! रेलवे लाइन पर खड़े होकर झण्डा दिखाकर गाड़ी को रोकना, जिन्दाबाद करते हुए गाड़ी पर सवार होकर जोगबनी से कटिहार तक नारा लगाना ! क्या मजा ! जहाँ मन हो, चेन खींचकर रोक दो। इस आन्दोलन में न पुलिस का डर, न गोली का भय।...कांग्रेसवाले पीठ पर हैं।

लुत्तो जिला कांग्रेस के सभापति को चुनौती देकर आया है–"परती छीनी गयी, उस समय भी कौंग्रेस की ओर से कोई मदद नहीं मिली। अब धनहर जमीन जा रही है, आप छोआ-गुड़ लपेट रहे हैं ? ...इस बार हमारे इलाके में एक भी वोट नहीं मिलेगा कांग्रेस को, सो याद रखिए !" कांग्रेस के सभापति को क्या ! धरमपुर इलाके में रहते हैं। लेकिन लुत्तो कैसे चुप बैठा रह सकता है ! कांग्रेस ने यदि टिकट नहीं दिया, वह स्वतन्त्र रूप से खड़ा होगा।...आठों गाँव इस बार मुट्ठी में आ जायेंगे।

समसुद्दीन मीर काग्रेस का काम छोड़कर घर में बैठ गया। लुत्तो ने उसको फिर से उत्साहित करके अपने साथ कर लिया है–"कांग्रेसी हैं तो क्या ? सरकार पेट पर छुरी चलायेगी और हम चुपचप झण्डा ढोते रहेंगे ? इस बार–'सत्याग्रह' !

होगा क्या ? एक-दो आदमी नहीं, सारे गाँव के लोगों को लेकर कल दस बजते-बजते परानपुर आइए। वहाँ से जुलूस बनाकर कोसी कैम्प पर धावा बोलना होगा। ट्रैक्टर की भटभटी बन्द करनी होगी। इसके बाद, रेलवे लाइन पर धरना ! बाल-बच्चा, औरत-मर्द को लेकर लाइन पर पिकेटिंग करना होगा। जब तक दिल्ली खबर न पहुँचेगी, कुछ नहीं होगा।"

"ठीक है, ठीक है।...लुत्तो बाबू को छोड़कर पब्लिक का दुख समझनेवाला कोई नहीं।"

मधुलता, मानिकपुर, दसपत्तर, रँगदाहा और पिपरा आदि गाँवों का चक्कर रात-भर में ही लगा आया है लुत्तो।...जनता तैयार है। देखना है मकबूल और जयदेवसिंह की पार्टी को। इस बार धोखा देंगे तो हमेशा के लिए चुक्का पार हो जायेगा।

मकबूल की पार्टी के कामरेड रात-भर बैठक में बैठे बहस करते रहे।

विश्वकर्मा ने कहा—"जनमत के खिलाफ हम कोई कदम नहीं उठा सकते।"

"ऊपर से कोई खबर आयी ?"

"हाँ, जिला-मन्त्री ने लिखा है, स्थानीय समस्याओं पर स्थानीय यूनिट ही विचार करे। लेकिन जनमत के खिलाफ कोई कदम न उठे, इसका खयाल रखना होगा।"

कामरेड मकबूल ने चुपचाप अपनी नुकीली दाढ़ी को चुटकियाते हुए पूछा—"क्यों रंगलाल गुरुजी, आपकी क्या राय है ?"

"मैं ? बुद्धिहीन दलबद्धता को पाशविक वृत्ति समझता हूँ।"

विश्वकर्मा बौखला उठा—"ऐसे-ऐसे रिएक्शनरी जिस पार्टी में रहें, उसका कोई कदम सही नहीं पड़ सकता। जनता को प्रशु कहता है और आप लोग चुपचाप मुँह देख रहे हैं ? जनता बुद्धिहीन है और आप बुद्धि के जहाज हैं ?"

"निश्चय। हम सब जानते हैं कि सरकार की इस योजना से जनता की भलाई होनेवाली है तो बेकार बखेड़ा क्यों करें ? हम क्यों न गुमराह जनता को समझायें ?"

"समझाने का काम हमारा नहीं। हमारी पार्टी सरकारी प्रचार-विभाग नहीं। सीधी-सी बात आप नहीं समझते ? बहुमत जिस बात के पक्ष में न हो उसका समर्थन करके हम अपने पाँव में कुल्हाड़ी क्यों मारें ?"

"माफ कीजिएगा। हैजे की सुई और चेचक के टीके के पक्ष में बहुमत कभी नहीं हुआ।"

कामरेड मकबूल ने फैसला दिया—"जनमत के साथ चलने के लिए कभी-कभी समाजवादी सत्य की सीमा को संकुचित करना निहायत जरूरी हो जाता है।"

जयदेवसिंह की पार्टी तटस्थ रहेगी। न विरोध करेगी, न समर्थन।

अपनी मेम-माँ की कहानी पढ़ते समय जितेन्द्र की आँखें भर-भर आतीं।

...बाग-बन, पठार-मैदान, ताल-तलैये, नदी-पोखरे छायाछवि की तरह सामने

आते, फिर ओझल हो जाते। कचनार और हरसिंगार के स्पर्श का अनुभव करता। ·रह-रहकर किसी कमलदह से हल्की सुरभि आती। गीत की एक कड़ी सिर धुनती—सखी हे-ए-ए-ए, हमर दुखक नहीं ओर ! ··· मूँगा की हिनहिनाहट ! उसके पिता का व्यक्तित्व उभरकर सामने आता, ब्राँच का स्टैचू ! ··· छोटी पण्डिताइन, दुलारीदाय ! गुड़िया-जैसी ! कहाँ है उसकी बहन ?

"ताजू, ताजू ! इधर आओ। यहाँ बैठो। सुनो।···माँ ने निश्चय ही तुमसे कहा होगा। बोलो, कहाँ गयी मेरी छोटी बहन, दुलारीदाय !"

जितेन्द्र की छलछलायी हुई आँखों को देखकर समझ गयी ताजमनी, जिद्दा के सपने में माँ आयी हैं।

"इस पोथी में क्या है ?"

"सुनाऊँगा। पहले बताओ, माँ ने कुछ कहा था ?"

"बूढ़ी नानी उसको अपने साथ लेती गयी। मालकिन-माँ ने एक बार कहा था, जित्तन की मेम-माँ का दाह-संस्कार करके लौटे और बोले, बिटिया के बिना उसकी नानी एक पल जी नहीं सकेगी। मैं कैसे माँगता ?"

जितेन्द्र ने एक लम्बी साँस ली। ताजमनी उठकर जाने लगी तो उसने अनुभव किया।

"तुम कहीं मत जाओ। मेरे पास बैठो आज।··· ताजू रानी !"

ताजमनी का रोम-रोम बज उठा।

··· लॉली, डैडी आयेगा ?

··· आय-आय !

··· मुझे टोको मत। व्हेन आइ एम इन एक्शन, आइ एम नो मैन ! ··· ब्राँज स्टैचू !

जितेन्द्र की रगों में एक अपरिचित वेग ! अपूर्व स्पन्दन ! मांसपेशियों में अजीब तनाव ! ···ताजमनी जरा डर गयी। यह कौन पुरुष आकर सवार हो गया है उसके जिद्दा पर।

"पखारनसिंघ !"

पखारनसिंघ को लगा, बड़े मालिक पुकार रहे हैं। इसी तरह हवेली गनगना उठती, उनकी पुकार पर—"ह-जौ-र !"

द ' बजते-बजते सारा परानपुर गाँव दलमला उठा। नारों से आकाश गूँजने लगा।

"र का फैसला रद्द करो !"

ं ा की पहली लहर दौड़ी। गाँव-गाँव के लोग जत्थे बनाकर आ रहे हैं ! झण्डे लहराते हैं, विभिन्न पार्टियों के ! ··· लुत्तो प्रसन्नता से दौड़ता फिरता है।

"ए ! यह कहाँ का जत्था है ? मानिकपुर का ? जत्थेदार का नाम लिखाइए। ···पहले जमा होने दीजिए सभी गाँव के जत्थों को।···एक घण्टा के बाद जुलूस रवाना होगा।"

"तब तक गीत-नाद गाइए, नारा लगाइए !"

"मधुलता गाँव के जत्थे में एक आल्हा गानेवाला आया है, गुलर अल्हैता !"

"शुरू करो जी गुलर अल्हैता, नया आल्हा। ढोलक पर थाप दो।"

डिडि-चट, डिडि-चट··· चटपटाक !

सुमरि भवानी जगदम्बा को, और काली को शीश नवाय,
हाल बखानूँ नेताजी का आ-आ-आ-आ,
अरे, जिनकर धुजा रहल लहराय,
लहर-लहर लहराय जवानी-ई-ई-ई-ई !

डिडि-चट, डिडि-चट··· चटपटाक !

आल्हा गीत सुनकर बूढे भी जवान हो जाते हैं। उत्तेजना की लहरे ! तुमुल-ध्वनि ! ··· मारो जवानो ! बढो बहादुरो ! घेरो-घेरो··· !

परमा, शिवमंगल, अनिरुद्ध, प्रेमजीत वगैरह डॉक्टर रायचौधुरी को कन्धे पर लादकर हवेली में ले गये।··· इरावती भागकर सामबत्ती पीसी के घर में घुस गयी। सामबत्ती पीसी हाथ में मूसल लेकर दरवाजे पर पहरा दे रही है—"माथा थुर देगे, इधर यदि कोई आया !"

डॉक्टर रायचौधुरी और इरावती हवेली की ओर आ रहे थे। उत्तेजित भीड ने नारा लगाया—"कोसी कम्फवाले दुश्मन हैं !"··· आल्हा की ढोलकी के ताल पर कसमसाते हुए लोगो के सामने शिकार ! डॉक्टर रायचौधुरी को घेरकर मारने लगे।

"जीत भैया ! बाहर आइए !"

"सर्वनाश हो गया !"

"वे कोसी कैम्प को लूटेंगे। रेल लाइनें तोडेंगे, तार काटेगे।"

"कहता है, सभी ट्रैक्टरो मे आग लगायेगे।"

"हमारी बात कौन सुनेगा ? वहाँ सभी पार्टी के लीडर लोग हैं।"

"इरावती बहन की साडी पकडकर खींच रहा था, ठीक दुशासन की तरह !"

··· बॉख, बॉख, बॉख !

"दाज्यु, कहाँ जा रहे हो ? ठहरो !"

"जिद्दा, इरावतीदाय को देखिए जाकर ! काका के पास मैं हूँ। हे बाबू लोग, आप लोग भी जाइए ! गॉव के लोगों पर शैतान सवार है।··· माँ तारा !"

गाँव के सभी पढ़े-लिखे नौजवान एकमत हैं—गलत बात !

डिडि-चट, डिडि-चट··· !

बढ़ो बहादुर, डर काहे का-आ-आ-आ !··· इनकिलाब, जिन्दाबाद !

जितेन्द्रनाथ दौड़ता है। उसके पीछे गाँव के नौजवानों का दल—"उन्हें सही बात बतलाकर समझाना होगा।··· दाज्यु, तुम मत आओ। लौटो ! बात सुनो !"

जुलूस गाँव से निकल पड़ा। जुलूस के आगे-आगे करीब तीस-चालीस लठैत लाठी भाँज रहे हैं··· मुहर्रम का ताजिया निकला है, मानो। समसुद्दीन के गाँववाले

नारा लगाने के बदले 'अली-अली' कर रहे हैं। बालगोबिन मोची, चमारटोली के सभी ढोल बजानेवालों को हुक्म देता है—"बाजा बन्द नहीं हो।" ठाकुरबाड़ी के पण्डित सरबजीत कहते हैं—"बीच-बीच में गोध्वनि भी कीजिए—बाँ-आँ-आँ !"··· चर-र-र-र-र-र्र ढिन्नर, डिग-डिग-डिग-ढि-ढिन्नर ! अली-अली ! ···रद्द करो। कोसी कैम्प—तोड़ दो। गाँव हमारा—छोड़ दो। दुलारीदाय··· ! बाँ-आँ-आँ। डिडि-चट, डिडि-चट··· ! अजीं हँवँलदाँर क्याँ करेगाँ अकेलाँ ? आने दों, नाराँ सुनकँर भाँगेगाँ दुम दबाँकर ! ए ! काँग्रेस का झण्डा आगे रखो ! ···मक़बूल को क्या हुआ, अपनी पार्टी के लोगों को क्या कह रहा है ? ···हसुवा-हथौड़ावाला झण्डा समेटता है काहे ? ··· बढ़े चलो। लुत्तो, गरुड़धुज और रोशन बिस्वाँ बैलगाड़ी पर खड़ा है।

च-र-र-र-र-र्र ढिन्नर, ड़िग-डिग-डिग-ढि-ढिन्नर··· !

"कौन हैं वे लोग ?"

"गाँव के पढ़े-लिखे लुच्चे हैं।··· कम्फ की छौंड़िया के पीछे पागल हैं सभी।"

"जित्तन बाबू !···जित्तन भी है ? तब, ठीक है। लगाओ नारा—जित्तन हमारा, दुश्मन है !"

जितेन्द्रनाथ हाँफते हुए जुलूस के सामने जाकर खड़ा हो जाता है—"भाइयो !"

"साला लीडरी करने आया है। मारो ढेला कसके !"

"भाइयो ! डरने की क्या बात ? उसके साथ सिर्फ एक कोड़ी लुच्चे-लहेंगड़े हैं।"···मकबूल की पार्टी का एक कामरेड पूर्णिया से खबर ले आया है, वह जुलूस से अपनी पार्टी के लोगों को अलग कर रहा है—"गलत कदम ! झण्डा समेटो !"

"भाइयो ! सुनिए !"

"बाँ-आँ-आँ ! जित्तन हमारा, दुश्मन है। दुश्मन नम्बर, एक है।··· मारो ढेला, रोड़ा तिकाकर !"

मॅंगनीसिंह···प्रेमजीत को पहला ढेला लगा ! ···सिर से खून बहने लगा। परमा, शैलेन्दर, त्रिवेणी और उपेन्द्र जितेन्द्रनाथ को चारों ओर से बचा रहे हैं। चमारटोली का ननकेसर चमार ताल ठोककर नाचता हुआ आगे बढ़ आता है, जितेन्द्र के बालों को पकड़कर खींचता है—"स्साला !"

मकबूल चिल्लाता है—"साथियो ! यह क्या कर रहे हो ?"

"इस साले को भी मारो। दगाबाज है ! दाढ़ी पकड़कर नोचो। सालो, यहाँ जमीन जा रही है हम लोगों की और तुम लोग लीडरी करते हो ? ··· कभी आगे, कभी पीछे !"

"भाइयो !"

"साला, थेथ्थर है। चमार के हाथ की मार खाकर भी भाइयो-भाइयो करता है। मारो गाल में थप्पड़ !"

"चटाक ! पटाक-चटाक !

"भाइयो ! सुन लें··· !"

"अच्छा, सुन लो। साला चमगादड़ का बच्चा क्या कहता है ! ···ए ! बाजा

बन्द करो।"

"भाइयो ! किसी बात को सोचे-विचारे बिना···।"

"हम लोगों ने खूब सोच-विचार लिया है। हम लोगों को भी बुद्धि दिया है भगवान् ने !"

"मैं मानता हूँ, गलती आपकी नहीं। पुरानी नौकरशाही अब भी काम कर रही है।"

"सुनो, सुनो, क्या कहता है।··· उसकी जमीन भी तो डूबेगी।"

"दुलारीदाय में, जहाँ तक मेरा खयाल है, सबसे ज्यादा मेरी जमीन ही पड़ती है।··· यदि आपको इस योजना के पहले सारी बातें बता दी जातीं तो मेरा विश्वास है, आप आज खुशियाँ मनाते।··· "

"मारो साले को !··· फोटो लेता है, लेने दो। छोड़ दो, छोड़ दो !"

"हाँ, खुशियाँ मनाने की बात है।"

"साला, पगलैंटी करता है !··· मारो !··· छोड़ो ! आगे बढ़ो !"

जित्तन के कपाल पर एक रोड़ा आकर लगा। उसका सफेद कुरता खून से तरबतर हो गया। ओठों पर जमते हुए लहू को पोंछकर उसने हाथ उठाया–"आप मेरी बात सुन लीजिए, पहले। इसके बाद ढेले, रोड़े और लाठियों से जवाब देना चाहें, दें।··· आपने जिस अफसर को कुछ देर पहले मारा है, वह मरते समय भी आपकी भलाई की बात सोचकर मरेगा।··· "

भिम्मल मामा के साथ इरावती भी आ गयी–दौड़ती, हाँफती ! ·· आज के पत्रों में विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ है। जितेन्द्र के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। समाचार-पत्र खोलकर वह जोर-जोर से पढ़कर सुनाता है–"परानपुर की परती पर इसी साल जूट, और धान की खेती·· इसमें जूट, धान, दलहन, तिलहन, मकई, ज्वार आदि की उपज होगी, जबकि दुलारीदाय में सिर्फ जूट और धान की खेती होती थी।···दुलारीदाय में कुल उपजाऊ जमीन ढाई हजार एकड़, जबकि परती पर सात-आठ हजार एकड़ जमीन अगले वर्षों में तैयार हो जायेगी ! ··· दुलारीदाय के पाँचों कुण्डों में बारहों महीने पानी भरा रहेगा। गीतवास के पास एक छोटा बाँध तैयार होगा।··· परती की सिंचाई··· गंगा के किनारे तक दुलारीदाय के कछार पर फैली ऊसर धरती, खेती के लायक हो जायेगी।··· दुलारीदाय के किसानों को परती पर जमीन दी जायेगी। इसके साथ बेजमीन लोगों को भी··· । फसल की कीमत के साथ नकद क्षतिपूर्ति ! ··· तीन साल तक सरकारी सहायता मिलेगी, नयी खेती करनेवालों को। दुलारीदाय नहर और गीतवास-बाँध-निर्माण में गाँव के लोगों को काम··· ।"

"सब झूठ ! ठगनेवाली बात। परती पर कुछ नहीं होगा।··· फुसला रहा है। इस साले को जरूर सरकार की ओर से पैसा मिलता है।··· नारा लगाओ !"

"भाइयो ! जिस अफसर को आपने घेरकर मारा है, उसने आपके लिए नयी किस्म का एक पाट पैदा किया है। चन्नीपाट से भी बढ़िया ! ··· एक बीज में एक

ही पौधा उगेगा, लेकिन बारह इंच के बाद ही उसमें पाँच से लेकर सात डण्ठल निकल आयेंगे। जहाँ एक मन पाट होता है, वहाँ चार मन तो अवश्य होगा। साल में दो बार पाट उपजेगा।"

"साँब झूठ बात !"

"दोष हमारे विशेषज्ञों का नहीं। हमारी सरकार के पुराने कलपुरजे ही इसके लिए जिम्मेवार हैं। वरना, जैसा कि मैंने बतलाया, आप आज तोड़ने-फोड़ने के बदले गढ़ने का सपना देखते ! ··· इतना बड़ा काम हो रहा है, किन्तु आप इससे नावाकिफ हैं कि क्या हो रहा है, किसके लिए हो रहा है ! ··· मुझे ऐसा भी लगता है कि जानबूझकर ही आपको अन्धकार में रखा जाता है। क्योंकि आपकी दिलचस्पी से उन्हें खतरा है।··· इन कामों से आपका लगाव होते ही नौकरशाहों की मनमानी नहीं चलेगी। एक कप चाय पीने के लिए तीन गैलन तेल जलाकर वे शहर नहीं जा सकेंगे। सीमेण्ट की चोर-बाजारी नहीं कर सकेंगे। एक दिन में होनेवाले काम में एक महीने की देर नहीं लगा सकेंगे।··· नदियों पर बिना पुल बनाये ही कागज पर पुल बनाकर बाद में बाढ़ से पुल के बह जाने की रिपोर्ट वे नहीं दे सकेंगे !··· और इस जुलूस के राजनीतिक संगठनकर्त्ताओं से एक अर्ज··· ।"

मकबूल ने कहा—"मैं कबूल करता हूँ, हमने गलत कदम उठाया था।"

रंगलाल गुरुजी का चिर-संकुचित चेहरा आज पहली बार खिला है।

जयदेव बाबू, डी. डी. टी. और रामनिहोरा ने एक ही साथ कहा—"सोशलिस्ट लोगों का इसमें कोई हाथ नहीं।"

जुलूस की उत्तेजना कम हो गयी है।·· गाँजे का नशा उतर गया।

"राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्त्ताओं से मैं कहूँगा। जनता की सरलता का दुरुपयोग अपने स्वार्थ के लिए न करें।·· क्षतिपूर्ति, पुनर्वास तथा जमीन-वितरण आदि मसले ऐसे हैं जिससे सरकारी लाल फीता और घूसखोरी से आप ही बचा सकते हैं, जनता को। जागरूक··· "

लुत्तो ने दाँत कटकटाकर कहा—"ऐ बालगोबिन, ढोलवाले चुप क्यों हैं ? बजाने को कहो ! ··· नारा लगाओ !"

मानिकपुर के जत्थेदार ने कहा—"मानिकपुरवालो, वापस चलो !"

मधुलता के एक बूढ़े किसान ने कहा—"झूठमूठ ही हम लोगों को परेशान किया !"

सरबन बाबू के भाई लालचन ने कहा—"परानपुरवालो ! आप लोग पैर पीछे मत कीजिए। आगे बढ़िए ! ··· लुत्तो बाबू, नारा लगाइये !"

"नहर का फैसला !"

"··· ··· !"

भिम्मल मामा अब तक चुपचाप खड़े थे। बोले—"सुबुद्धि की जय !"

"चलो-चलो, वापस चलो ! झूठमूठ परेशान किया ! अन्याय बात ! छीः-छीः ! औरत को घेरकर मारा ! हाय-हाय ! ··· चलो-चलो, वापस चलो। अपने-अपने गाँव में उत्सव करो। सर्वे में भी जो बेजमीन रहे, उसको भी जमीन मिलेगी।"

ऑपरेशन-पार्टी के बुलडोजर की गड़गड़ाहट सारे प्रान्तर पर फैल रही है।

नाखा के हवलदार साहब तार देकर लौटे स्टेशन से तो अवाक् हो गये—"कहाँ चले गये सब ? लो मजा ! दारोगा साहब को क्या जवाब देंगे ? झूठ मूठ… !"

"आओ जिद्दा, तुम्हारी ही राह देख रहा है मीत… !"

ताजमनी बिलख-बिलखकर रो रही है—जिद्दा… !"

"क्या हुआ ? …रोओ मत। मुझे कुछ नहीं हुआ है। छोटे-से कंकड़ की चोट है।"…हवेली के आँगन में औरतों और छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की भीड़ लगी हुई है। तुलसी चौरा के पास, खाट पर मीत को लिटा दिया गया है। खून से लथपथ शरीर !

फेकनी की माय जंगली जड़ी-बूटी पीस रही है—"हाय-हाय ! बेचारे की गरदन ही तोड़ दी है।" फूहा गरम पानी से घाव धो रही है। सामबत्ती पीसी और जयवन्ती दूध की कटोरी लेकर मीत को दूध पिलाने की कोशिश कर रही हैं। …दिलबहादुर उत्तेजित होकर कहता है—"त्यो सुधना लाय मैं काटछूँ !"

"किसने मारा ?"

सामबत्ती पीसी बोली—"न जाने किस गाँव के कुत्ते थे ! ह:-ह:, मेरे यहाँ कम्फू की बीबी, मैं कैसे छोड़कर जाती कहीं ? उसके जाने के बाद जैसे ही मैं जयवन्ती के घर के पास आयी… !"

जयवन्ती और सेमियाँ एक ही साथ बोलीं—"यदि सुधना ने कुत्तो को नहीं हुलाया होता तो कुछ नहीं होता।…सुधना की बदमाशी है।"

"सरबन बाबू का बेटा भी था।…परसदवा भी था। जंगलू का बेटा भी।…चार-चार कुत्तों ने दाँत से पकड़कर झकझोरा है।"

"जुलूस की ओर जा रहा था मीत !"

जितेन्द्र ने खाट के पास जाकर पुकारा—"मीत ! …ताजू ! रोती क्यों है ?"

मीत रह-रहकर कराहता—उँ-उँ-ऊँ ! …मीत !

मीत ने आँखें खोलीं—शराबी की आँखों-जैसी झपकती हुई आँखें।—"मीत !" मीत इस बार अपनी बची-खुची ताकत को बटोरकर उठ बैठा। कान झाड़े। खून के छींटे चारों ओर छरछराकर पड़े। आँ-ऊँ ! और वह जित्तन की गोद में गिर पड़ा। देह काठ की तरह कड़ी हो गयी। मुँह से, थोड़ी-सी जीभ अर्धचन्द्राकार बाहर की ओर निकली हुई… !

पछाड़ खाकर गिर पड़ी ताजमनी—"ओ माँ तारा ! यह क्या किया ? मीत रे-ए-ए !" गोबिन्द की आँखें बरस पड़ीं। रामपखारनसिंघ अवाक् है।…आज सुबह से उसकी अक्ल गुम है। इतनी बड़ी बात पर तो वह क्या न कर देता ! लेकिन, बौवाजी का हुकुम—हवेली छोड़कर कहीं मत जाना। गाँव के छोटे-छोटे बच्चे भी रो पड़े।…हवेली का आँगन सिहर उठा। मुंशी जलधारीलाल दास पूछता है जितेन्द्र से—"कलमबाग की जमीन में ही तो…?" जितेन्द्र ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी और

अपने कमरे में चला गया

चार-पाँच दिन तक गाँव में डर समाया रहा। कोसी कैम्प और ऑपरेशन-पार्टी की रक्षा के लिए हथियारबन्द पुलिस का एक जत्था आया। सबडिवीजनल पुलिस इंस्पेक्टर दल-बल के साथ गाँव में 'आये।

⋯कम्फू के साहब को धक्कम-मुक्की किया है। कम्फू की बीवी पर हाथ दिया है। जित्तन का सिर फूटा है। बड़ा भारी केस चलेगा। सेशन ? ⋯ रेलवे-लाइन के मुकदमे में कालेपानी और फाँसी तक की सजा होती है।

"क्या ? केस नहीं करेगी, पुलिस ? कैसे मालूम हुआ ?"

"कोसी कम्फू की बीबी ने दारोगा-निसपिट्टर से कहा—कुछ नहीं हुआ है। हवलदार साहब कह रहे थे अभी, जित्तन बाबू ने सरकार को ही दोखी साबित कर दिया। कोसी के बंगाली साहब ने भी कहा—कोई बात नहीं हुआ।"

"जै काली माय !

घर-घर में छिपे हुए लोग चार-पाँच दिन के बाद निकले। गरुड़धुज झा अचरज से मुँह फाड़कर सोचता है—मुकदमा नहीं करने का क्या तुक ! ऐसे मार-केस को भी भला मटिया देते हैं लोग ? भूदानियों ने तो अनसन की धमकी दी थी। इन लोगों ने वह भी नहीं⋯!

हर जगह जितेन्द्र के मीत की मृत्यु की चर्चा हुई—"चः-चः ! कितना प्यारा कुत्ता था !⋯ बोली कितना समझता था ! हाय-हाय !"

रोशन बिस्वाँ कि साइकिल का मेढ़क-हार्न बोला, कई दिन के बाद—पें-ऐं-ऐं-ग ! "सुनिए, झाजी ! मैंने आपके और लुत्तो के नाम के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन बारह किस्म की बाते करके नामंजूर कर दिया लोगों ने !"

गाँव में एक निगरानी कमिटी बनी है। जयदेव, मकबूल, डी. डी. टी. और विश्वकर्मा वगैरह ने मिलकर निगरानी कम्टिी का संगठन किया है। हर पार्टी से एक मेम्बर लिया गया है। लुत्तो की पार्टी का बालगोबिन मोची, मुसलमानटोली से समसुद्दीन नहीं, बूढ़ा पीरबक्कस मियाँ !

जयदेव और मकबूल अपनी झेंप मिटाने के लिए जोर-शोर से निगरानी कमिटी के पीछे लगे हुए हैं। पुनर्वास के लिए जमीन-वितरण पर निगरनी ! घूसखोरी, पक्षपात आदि पर निगरानी ! नहर के काम में गाँव के लोगों की बहाली पर नजर !⋯ मुखिया रोशन बिस्वाँ इस कमिटी का चेयरमैन है। मकबूल का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ है⋯शीघ्र ही पुनर्वास का काम शुरू किया जाये। बेकार लोगों के लिए काम की व्यवस्था अभी से हो। जमीन-वितरण के लिए शीघ्र ही अधिकारियों को भेजा जाये। और, दुलारीदाय नहर-योजना से जन-सम्पर्क स्थापित करने के लिए इस निगरानी कमिटी के महत्त्व को कबूल किया जाये।

रोशन बिस्वाँ खुश है।⋯मुखिया से बढ़िया है यह चेयरमैन नाम ! जित्तन बाबू

से दारोगा साहब ने बार-बार पूछा था—"रोशनी बिस्वाँ जुलूस में था या नहीं, इतना ही कह दीजिए।" लेकिन, जित्तन बाबू ने दारोगा को भी बेपानी कर दिया। हँसकर बोले—"मोटी मछली फँसाने के फेर में हैं, आप!" दारोगा अपना-सा मुँह लेकर चुपचाप वापस चला गया।···पढ़े-लिखे लोग की बात ही निराली होती है। हथियारबन्द पुलिस वापस चली गयी।

लुत्तो के बारे में, गाँव के लोगों के मन में यह बात उतर गयी है—जानबूझकर भक्सी में झोंकने ले जा रहा था लोगों को। बात-ही-बात में क्या-से-क्या हो जाता!

मानिकपुर का उदयानन्द हाट में गला भाँजकर सुना रहा था परानपुर के लड़कों को—"सौ लुच्चा का सरदार है परानपुर का लुत्तो! लुच्चा मारलक बेंग, पाँच पसेरी'क एक ही टेंग[1]!···हम लोगों के गाँव से भी भेड़ भड़काकर ले गया था। इतने पढ़े-लिखे लोगों की आँखों में उसने कैसे धूल झोंक दी!"···लुत्तो को, जिला कांग्रेस के सभापति ने बुलाकर खूब फटकार दी है। थाना कांग्रेस के सभापति ने जल्दी से चौअन्नियाँ-रसीद का हिसाब दाखिल करने को कहा है।

गाँव के लोग परती पर बोयी जानेवाली फसलों की कल्पना करते हैं।···ठुट्ठी पखार से लेकर सेमलबनी तक नयी जाति का पाट! ठुट्ठी पखार से उत्तर मकई और बाजरे की खेती! पुलक उठते हैं, बेजमीन लोग। सर्वे में भी जिन्हें एक धूर जमीन नहीं हासिल हुई, उन्हें भी जमीन मिलेगी, बिना किसी झंझट के!···ढाई रुपये रोज मजदूरी! जो ट्रैक्टर चलाना सीखना चाहें, अभी से नाम लिखाएँ, निगरानी कमिटी में।

खुशी से गीत गाने का मन करता है, हमेशा! ···नान्ही-नान्ही धान केर उजर-उजर अच्छत रा-आ-म, तो-ह-रो चढ़ायब ना; पाकल-पाकल पान केर पातर-पातर पतवा रा-आ-म···!!

ठका-ठक! ठका-ठक! ठक-ठक-ठक-ठक··· ठकाक्!

रात में, पेट्रोमेक्स जलाकर नाट्यशाला में बढ़ई और राज-मिस्तरियों से काम कराया जा रहा है। अगले सप्ताह से ही स्टेज पर रिहर्सल शुरू करने की बात सोची गयी है।··मुंशी जलधारीलाल दास की कर्मठता को देखकर लोकमंच के नौजवान आश्चर्यचकित हो गये हैं। सुबह आठ बजे से लेकर रात के ग्यारह बजे तक वह काम पर तैनात रहता है। दिन में काम करनेवाले मजदूरों को, शाम में मजदूरी देने के बाद एक घण्टा आराम करता है। इसके बाद रात में काम करनेवाले मजदूरों और मिस्तरी को लेकर—ठका-ठक, ठका-ठक···!

हवेली के हॉल-घर में हमेशा कोई-न-कोई साज-बाज बजता ही रहता है। जितेन्द्र कहता है—"ताजू! मेरा सत्त भग मत करो। मीत के लिए मेरे भी कलेजे में रह-रहकर

1. पैर

कचोट उठती है।···वह बेचारा तो, अबोला जानवर था !···आदमी को घेरकर दाँत से झकझोरकर मार डालना चाहता है, आदमी का गिरोह ! तुम्हारा मुरझाया हुआ मुँह देखकर मैं हताश हो जाता हूँ। चलो, अमरहा के बाजा बजानेवाले चमारों का दल आया है। उन लोगों की पिपही-शहनाई बड़ी मीठी होती है। है न ? मैंने बुलाया है। कौन गीत बजाने को कहें ?···ताजू रानी ! मैं मीत की पत्थर की मूर्ति बनवाकर मँगवा दूँगा। भवेश ने मूवी से उसके बहुत से एक्शन-फिल्म लिये हैं। बोलो, कौन गीत ? सावित्री-नाच का ?"

जितेन्द्र के मन में उसकी मेम-माँ की बातें प्रतिध्वनित होती हैं, बार-बार ! ···इन कुण्डों के पास बैठकर एक-एक पद्म को अंकित करेगा, तू ! पंछियों का गीत सुनेगा। भौंरों की गुंजन से अपना तानपुरा मिलायेगा। तू गायेगा, नाचेगा।··· नाच-गान में इन कुण्डों को बेचकर फूँक भी दे तो कोई हर्ज नहीं।

मीत के बिछोह से मुरझायी ताजमनी हँसकर उसके बालों को सहला देती है, वह तरोताजा हो जाता है। इरावती, इस जाड़े के मौसम में भी पसीना पोंछती हुई आती है, भागती है, प्रेरणा दे जाती है। प्रेमजीत अपने सपने में भी लोकमंच की बातें ही देखता है। परमा, शिवमंगल, प्रयागचन्द···और, समाजशास्त्री शैलेन्दर !

"क्यों, इरावती ! भवेश की प्रयोगशाला से कोई आशाजनक सूचना मिली है ? छायानाट्य···शैडो-प्ले के बिना···। उम्मीद दिलाता है ? गुड !" इस जिले के कई इलाकों में, चम्पानगर के शारदा बाबू की जात्रा-पार्टी से प्रेरित होकर नौजवानों ने जात्रा-दल बनाये थे। जात्रा-दल असफल रहे। किन्तु, क्लारनेट और बेहाला का उपयोग कीर्तन-पार्टियो में करके काफी नाम कमाया उन लोगों ने। केयटटोली में, कसबा और धरमपुर से कुछ नये बाशिन्दे आकर बसे हैं। उनमें से एक के पास क्लारनेट है। हालाँकि उसका क्लारनेट अध-गूँगा है, फिर भी कीर्तन का गुर अच्छा निकाल लेता है।···प्रेमजीत उसको बुलाने गया है, प्रेम से।

प्रेमजीत को एक लफ्ज बोलने की आदत लग गयी है। हर बात के अन्त मे वह जोड़ देता है—प्रेम से।

ठके-ठके-ठक्का ! ठक्ठ-ठकट्ठा ! ठवं ठके···

···लकड़ी की ढोलक। भिम्मलीय नाम, कठम ! चमड़े के पूरे नहीं, लकड़ी के ही पूरे हैं। लकडी के हथौड़े से बजाया जाता है। बड़ा खटाखट ताल लगाता है, भाई ! हद हैं जित्तन बाबू भी। लकड़ी की ढोलक !

···परमानन्द, पेट से माटी की नयी हाँड़ी सटाकर बजाने का रियाज कर रहा है—घटम-घटम-घुट, टिड़िकट-तिड़िकट ! हँसी से दम फूलने लगता है, उसको हाँड़ी बजाते देखकर। ढुँग-ढुँग, ढुग-ढुँगा-आ-आ ! घड़ीघण्ट-घड़ियाल टँगे हुए हैं, दो सुर के।··· छम्मक-खट्छक, छम्मक-खट्छक, चार जोड़े करताल।

एक माइल पूरब की ओर, परती पर ऑपरेशन-पार्टी का ट्रैक्टर भटभटा रहा है। भटभटाहट के ताल पर, नैका सुन्नरि का एक पद गुनगुनाकर मिलाता है, जितेन्द्रनाथ—नम्मा, नैका सुन्नरि सुन लें मोर बचनियाँ रे नाम्। भट-भट,

भट-भट-भट-भट, भट-भट-भट-भट, भट-भट-भट-भट-भट्ट !··· कुँहाँ-कुँक्काँ ! कुँहाँ-कुँक्काँ ! वायलिन पर रघ्घू रामायनी की सारंगी का विशेष सुर बजता है। मलारी आयी है ?

"अँय ! आयी है मलारी ? सुवंश भी ? आँख शपथ ?"

"सामबत्ती पीसी और सेविया अभी आयी है, देखकर··· हवेली में।"

"चलो, जायेगी देखने ? मलारी की माँ गयी है या नहीं, बेटी को देखने ? और सुवंश की माँ भी नहीं ?"

सामबत्ती पीसी कहती है—"आयी हैं ठेठर में पाठ करने। लिलिया को भी चिट्ठी गयी है, मनमोहन बाबू की। वह भी आ रही है। "छौंड़ा-छौंड़ी मिलकर नाटक करेंगे ? सच ? हैं-हैं-हैं !"

"अरी, मलारी की माँ, बेटी को देखने नही गयी है ?"

महीचन चिल्ला-चिल्लाकर पड़ोस की औरतों को गाली देता है—"कौन साली लेती है, मलारी का नाम ? मन मे खुजली होती है तो गाली सुनने··· !"

महीचन की बोली बन्द हो गयी।···ये दोनों कौन आ रही हैं ? कम्फू की मेम साहब और··· मलारी ? ऐं !

"हाँ, मलारी ही है। हे, घोतना की माय ! सुखनी मौसी ! ढोलबज्जावाली ! दौड़के आ ! देख-देख ! कौन आ रही है !··· कोई कहेगा कि चमार की बेटी है? रमपतिया !"

मलारी की माँ आँगन से निकल आयी। मलारी के पहुँचने के पहले ही घूँघट से मुँह ढककर, सुर से रोने लगी—"आ-गे बेटी-ई-ई ! तोरा खातिर सब दिन बोली-ठोली सहली-ई-ई-ई, पर-जे-परोसनी के ठोना-जं-ठिठोली-ई-ई, हमरा छोडि कहाँ चलि गेली गे-ए-ए, बे-ए-ए-टी !"

इरावती पूछती है—"गीत गा रही है या रो रही है ?"

मलारी भरे गले और भरी आँखों से बोली—"मेरी माँ ! ··· रोती है !" रमदेवा ने गेना शुरू किया। अपने दुलारे भाई को प्यार से चुमकारकर चुप करती है और खुद रोती है—"भैया रे-ए !"···रोती हुई बाप के पास गयी, पैर छूकर पाँवलागी की। महीचन भी आँख में अँगोछा लगाकर रोने लगा। घिघियाकर बोला—"बेटी ! काहे आयी ? तुम्हारे लिए तो हम मर गये।"

इरावती चुपचाप इस मिलन-रुदन को देखती-सुनती रही। उसका दिल भी रह-रहकर भर आता। माँ-बेटी, बाप-भाई··· !

मलारी की माँ का आँगन खचाखच भर गया। मलारी रेवड़ी बाँट रही है। किसी के मन में अभी मैल नहीं। सभी उसके मुँह की ओर देखते हैं। चेहरा-मोहरा, पहरावा-ओढ़ावा ! कम्फू की बीबी भी उसके सामने मलिन लगती है। शहर जाकर चेहरे पर कैसी चमचमाहट आ गयी है ! ···गले की सोने की सिकरी देह के अँगोठ से मिल गयी है। देह की गठन भी बदल गयी है।

बालगोबिन की बहू धीरे से पूछती है—"सुवंशलाल अपने घर गया है या नहीं ?"
मलारी ने कोई जवाब नहीं दिया।··· बात समझ में आ गयी, सबकी।

परमा ने पुस्तकालय के पठनागार में गरुड़धुज की अभद्र दिल्लगी का जिक्र करते हुए कहा—"बहुत भद्दी-भद्दी बातें करता है। भगताइन कह रही थी, इरावती बहन को नैनी मछली कहता है। सुनोगे भला ! इरावती बहन की साड़ी का पल्ला खींचने की इशारा भी उसी ने दिया था। इस पाँच हाथ लम्बे लुच्चे को क्या किया जाये ? अभी मुझसे दिल्लगी की उसने, तुम लोगों की फिलिम कम्पनी कब से स्टार्ट हो रही है ? खूब फूलेगी-फलेगी, तुम लोगों की कम्पनी ! देशी-विदेशी दोनों किस्म का माल··· । मैंने चेतावनी दे दी है।···हँसने की बात नहीं, परानपुर की प्रतिष्ठा का प्रश्न है, प्यारे भाइयो !"

"अरे, हटाओ उन लोगों की बातों को !"

"हटाओ क्या ! अब कभी उसने ऐसी दिल्लगी की तो दिखला दूँगा। उसके भण्डाइज्म को बरदाश्त नहीं कर सकता।" भिम्मल मामा पठनागार के कोने से बोले—"उसकी काष्ठहँसी की ध्वनि से लाभ उठाया जा सकता है।"

परमा ने जोर से ठहाका लगाकर गरुड़धुज की अविकल नकल की—"ई-पी-ही-ही-ही। ई-पी-ही-ही-ही !"

"कौन ड्रामा होगा ? मालूम हुआ नाम ? मँगनीसिंह दीवाना का 'प्यार का बाजार' तो नहीं ?"

प्रेमजीत पठनागार में प्रवेश करता हुआ बोला—"मँगनीसिंह दीवाना नहीं ! प्रेमजीत।··· लोकमंच के सदस्यों की बैठक है, कल सुबह। इरावती बहन कह रही है, जितने लोग पार्ट चाहेंगे, दूँगी। देखा, मैंने कहा था न ! गाँव में, गाँव के लिए, गॉव के द्वारा··· । हाँ-हाँ ! जो लोग बाजा-गाजा बजाना जानते हैं, उनको भी मौका दिया जायेगा। अभी, फेनाइल···नहीं-·,हीं···डी. डी. टी. बाँसुरी बजाकर आ रहा है। बँगला भठियाली गीत के रेकर्ड को धुन बजाकर सुना दिया। जित्तन भैया खुश हो गये।"

परमा ने कहा—"महीने में पाँच नाम बदलते हो, ठीक है। मलारी और सुवंश के प्रति तुम्हारा विचार···!" प्रेमजीत हँसकर कहता है—"तुम इरावती बहन के सामने ऐसी-ऐसी दिल्लगी मत करना, परमा भाई ! कल मैं लाज से गड़ गया।"

निगरानी कमिटी के पस्ताव पर बहुत जल्दी ध्यान दिया है, अधिकारियों ने। आश्चर्य···! लिखकर जवाब दिया है—"अगस्त तक कुण्डों के तट की बँधाई समाप्त करने के लिए यह आवश्यक समझा गया है कि इसी महीने से काम शुरू कर दिया जाये।··· निगरानी कमिटी के सहयोग के लिए धन्यवाद !"

··· सेटलमेण्ट-ऑफिसर होकर आ रहे हैं, खुद कलक्टर साहब ! इस बार सर्वे-सेटलमेण्ट की तरह गड़बड़ी नहीं होगी।···गाँव के बैलगाड़ीवालों की लिस्ट तैयार हो गयी ? पाँच सौ बैलगाड़ियाँ रोज चाहिए ?

···लुत्ती से पुलिस इन्सपेक्टर साहेब ने मुचलका लिया है।··· कांग्रेस का पाँच सौ रुपैया चन्दा वसूल कर गपतगोल कर गया है। ईंट बनवा रहा है, देखते हो नहीं।

सुबह से शाम तक ऑपरेशन-पार्टी की अनवरत भटभटाहट वातावरण में गति का संचार करती है।··· पहिये घूमते हैं।

सुचितलाल मड़र ने निगरानी कमिटी में अरजी दी है—इस बार उसके नाम में सुधार करवा दिया जाये।··· पोंपी नहीं। कमिटी के मेम्बरों को वह दही-चूड़ा और केला खिलायेगा।··· हा-हा-हा !

दुलारीदाय योजना से सम्बन्धित छोटे-बड़े समाचार को गाँव के हर औरत-मर्द तक पहुँचाने के लिए पुस्तकालय के मन्त्री प्रयागचन्द ने एक योजना बनायी है।··· पुस्तकालय के सदस्यों से छित्तन बाबू ने माफी माँगकर बची-खुची किताबें वापस दे दी हैं। बिकू बाबू ने रेडियो की कीमत देने का वचन दिया है। पुस्तकालय को जित्तन बाबू की हवेली का हॉल मिल गया है; अगले महीने स्थान-परिवर्तन किया जायेगा।

'पंच-चक्र' ! ··· लोकमंच पर 'पंच-चक्र' गीति-नाट्य पाँच दृश्यों में, परानपुर के सवा सौ कलाकारों के सक्रिय सहयोग से प्रस्तुत किया जायेगा ! प्रेमजीत, प्रचारवाणी प्रसारित करके लोगों के उत्साह को बढाता है—कटिहार, पूर्णिया, फारबिसगंज से भी दर्शक आयेंगे ! 'पंच-चक्र' !

दुलारीदाय के तट को बाँधनेवाली पार्टी आ गयी। बरदिया घाट के पास कैम्प के खूँटे गड़ रहे हैं। गाँव के मजदूरों के पहले जत्थे को काम मिल गया। गाड़ीवानों का इंचार्ज मकबूल ही है। गीतवास के पास से चिकनी मिट्टी लाने के लिए सौ गाड़ीवानों को पुरजा दिया गया है।···उधर, परती-ऑपरेशन पार्टी में भी अब लोगों की आवश्यकता हुई है।

गाड़ीवानों का आखिरी जत्था चिकनी मिट्टी लेकर लौट रहा है। बैलगाड़ी की कतार, चर्रर-चूँ-चूँ करती हुई। गाड़ी की धीमी गति की तरह गाया जानेवाला गाड़ीवानों का गीत, मोरंग-बनिजरवा अलाप रहा है कोई सरस गाड़ीवान—

जो तेंहू जइबे पियरवा-आ-आ-आ
कि मोरंग बनि-इ-इ-इ जरवा रे-ए-ए-ए रा-आ-म,
हम धनि जऽइ-इ-बे, नै-ए-हर-वा कि
हमरा-आ-आ-जनि छा-आ-आ-ड़ी जा-आ-रे-ए-ए-ए निर-मो-ओ-ओ-हि-यो-ओ-ओ !

··· चल भैया, आखिरी खेप ! मोरंग जाने की जरूरत नहीं। चर्रर-चूँ-ऊँ-उ !

अब लोगों के कलेजे नहीं धड़कते।

देहाती कच्ची सड़क के गड्ढे, खाई और आँक-बाँक को समतल बनाती हुई बड़ी-बड़ी मशीनें आयी हैं। गाँववालों के चेहरों पर अब आतंक के चिह्न नहीं अंकित

होते।

औरत-मर्दों के झुण्ड बरदिया घाट पर मेला लगाये खड़े हैं।··· डी. डी. टी. कहता है—"ओवरसियर साहब ! इन ट्रैक्टरों और मशीनों के बारे में समझानेवाला कोई आदमी दीजिए, कृपा कर। लोग जानना चाहते हैं··· ।"

"ठीक है। आइए, मैं आपको बतला दूँ। आप उन्हें अपनी बोली में समझा दें। यह है, ट्रैक्टर शोवेल्स। रोड़े, सुरखी, मिट्‌टी वगैरह को ढोने के काम आता है। इसकी विशेषता है कि खुद ट्रेलर में लदाई-बोझाई करता है और खुद खाली करता है। यह, एक्सकेवेटर क्रेन है, बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़ों को नीचे-ऊपर ले आयेगा, ले जायेगा। और यह ट्रैक्टर लॉग्गर्स ! लकड़ी की मोटी-मोटी सिल्लियों को हाथी की तरह उठाकर··· !"

अचरज-भरी मुस्कराहट हर मुखडे पर छायी हुई है। पत्थर के बड़े-बड़े चिप्स, हिप्पो-ट्रैक्टर में लदकर आ रहे हैं।··· गाँव के काम करनेवालों के दूसरे जत्थे के लोगों को काम मिल गया। पार्टी के साथ आये हुए बाहरी मजदूर उन्हें सिखाते हैं, "बिना बोल मिलाये काम नहीं होता। लजाने की क्या बात ! आवाज देना—मार जवानो, हइयो ! पत्थर तोड़, हइयो···!" गाँव के बच्चे भी गली-कूचे में खेलते समय ताल पर 'हइयो' कहना सीख गये हैं।

सुधना को बुलाकर प्यार से समझा रही है, ताजमनी—"सुधो भैया ! जाओ, जिद्दा बुला रहे हैं। कुछ नहीं कहेंगे। जा। बाबू··· ।"

"दिदिया, मीत··· !" सुधना आत्मग्लानि और पश्चात्ताप से घुल रहा है, अब। बुरे-बुरे सपने आते हैं। वह हिचकियाँ लेकर रोने लगा। जितेन्द्र ने कहा—"सुधीन बाबू ! इरावती दिदिया बुला रही है। जाओ !" इरावती गाँव के एक-डेढ़ दर्जन बच्चों को बटोरकर बात कर रही है, घुल-मिलकर। सबकी बोली-वाणी और मुख-मुद्रा को ध्यान से देखती है।···सचमुच सुधीन के चेहरे में एक विशेषता है। भोला-भाला भाव !

"अब तुम्हारी बारी है ताजू ! तुमने वचन दिया था··· निश्चय ही, माँ तारा ने आज्ञा दे दी है।"

ताजमनी हँसी—"सभी नाटक ही करेंगे तो देखेंगे कौन ?"

"उसकी फिक्र तुम मत करो।··· आज से रिहर्सल शुरू हो रहा है। तुम मेरे साथ रहोगी। हाँ, मुझे हमेशा तुम्हारी जरूरत होती है। सचमुच, अमहरावालों की पिपही-शहनाई ने हमारे वाद्यवृन्द में नया रंग डाल दिया है।"

जितेन्द्र के उत्साह को देखकर ताजमनी का मन उत्फुल्ल हो जाता है। किन्तु, तुरत मीत की याद !

"ताजू ! क्या कहती हो ? ···"

··· अब बच्चों की तरह मनुहार कर रहे हैं, जिद्दा। ताजमनी बोली—"रिहर्सल में जाने के पहले तारा-मन्दिर जाइएगा तो ?"

"जाऊँगा।"

··· अब और क्या ? ताजमनी ने पूछा—"कारन ?"

"नहीं, अब 'कारन' नहीं ! ··· मधु !"

जितेन्द्र को याद आयी, यह बात उसकी अपनी नहीं।

परानपुर की पुरानी रीत है, नैन देने के पहले देवी की मिट्टी की प्रतिमा नहीं देखने जाते, बड़े-बूढ़े। और नाटक के रिहर्सल में कोई बेकार आदमी नहीं जाते, भीड़ लगाने के लिए। देवी की प्रतिमा की आँखों में मणि दी मूर्तिकार ने, पुजारी ने प्राण-प्रतिष्ठा की। तब, भक्ति-भरे मन से देवी का रूप देखते हैं जाकर।··· रिहर्सल देखने के बाद नाटक में क्या रस मिलेगा ?

किन्तु, इस बार रिहर्सल में ही भीड़ है। डेढ़ सौ कलाकार आ गये हैं। प्रेमजीत कहता है—"एक बार आखिरी ऐलान कर आऊँ फिर, प्रेम से ?"

"हाँ।" जितेन्द्रनाथ ने सिर हिलाकर कहा। डी. डी. टी. ने विरक्त मुद्रा में कहा—"अब कितने लोगों को बुला रहे हैं ?··· सो, कितना बड़ा नाटक है ?"

मकबूल रिहर्सल में नहीं आया है। लेकिन, रास्ते में उसने डी. डी. टी. से धीरे से जो बात कह दी वह डी. डी. टी. के मन में कसक रही है—'कहीं कोई गहरा मजाक तो नहीं कर रहा है ?'

जितेन्द्रनाथ ने कहा—"इसमें सभी किस्म के कलाकार हैं। गायक, वादक, अभिनेता के अलावा कला-सलाहकार और मंचकार !"

मलारी और सुवंश आये।··· सुवंशलाल अपनी माँ से मिलने गया था। मुँह लटकाकर लौटा है। मँझली भाभी ने नहीं, भाई ने ठेस लगायी होगी।··· यदुवंश के मुँह में लस नहीं है। जितेन्द्रनाथ ने कलाकारों से निवेदन किया—"आप लोग मुझे क्षमा करें। बिना पार्ट के बाँटकर किये ही मैं रिहर्सल शुरू कर रहा हूँ। असफल होऊँगा तो पार्ट बाँटकर काम करूँगा।"

सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा। जितेन्द्र ने कहा—"मलारी और ताजमनी दोनों ही जानती हैं, बटोहिया गीत ! पहले मलारी शुरू करे··· । बटोहिया गीत के बारे में तो आप जानते ही होंगे !··· आ जाओ ! मीठे-मीठे शुरू करो तो दीदी !"

मलारी, ताजमनी और इरावती तीनों एक साथ मुस्करायीं। मलारी जरा भी नहीं लजाती है।

सुन्दर सुभूमि भइया, भारत के देशवासे-ए-ए
मोर प्राण बसे हिम खोह-रे-ए बऽटोहिया-या !

—सिर्फ सारंगी ! ··· घटम ! ··· घड़ियाल !

डेढ़ सौ कलाकारों के अन्तर के जन्तर बज उठे।··· कूँ-हूँ-कूँ-कूँ-कँ··· टिड़ि-ड़िक-टिड़िड़िक, टक्का ! ··· बटोहिया ! ढुँगा-आ, ढुँगा-आ ढुँग-ढुँगा-आ !

··· *गंगा रे जमुनवाँ के निरमल पनियाँ से-ए-ए !*

—बेहाला और सारंगी ! ··· खोल और मन्दिरा ! ताजमनी ! सिर्फ, ताजमनी और मलारी ! ··· झाँझ और करताल ! ···

··· जँहवा कुहुकी कोइली गावे रे बटोहिया-या-या !

—बाँसुरी ! ··· घटम ! शंख। घड़ियाल ! झाँझ-करताल ! खोल नहीं, उपेन्द्र !

आम-कदम्ब नीम-बट तरु पर कूकती अनेक कोकिलाएँ ! झहरता झरना···घहरता समुद्र··· कलाकारों की उमड़ती आँखें ! गुग्गुल-धूम्र से परिव्याप्त वातावरण !

जितेन्द्र ने शिवभद्दर से कहा—"कोशका महारानी का गीत जो उस दिन तुमने सुनाया था, गाओ !"

शिवभद्दर बचपन से ही भैंस चराता है। कोशका महारानी का गीत वह अच्छा गाता है।

"मलारी ! तुम जरा इस गीत को ध्यान से सुनना। इस पर एक नाच की कल्पना तुम कर सकती हो, मुझे विश्वास है।" अध-गूँगा क्लारनेट बजानेवाले को लोग मेहमान कहकर पुकारते हैं। जितेन्द्र ने कहा—"मेहमानजी ! आप तैयार रहिए !"··· "कोशका मैया गौर में दीप जलाकर भागी जा रही है नैहर, वहीं से शुरू करो शिवा !··· खँजड़ी तैयार रखो, कामा ! और, उस बाजे का क्या नाम है बालाजी महाराज, गिड़िंग बाजा ?"···लड़की की कटिया में एक ओर चमड़े से छाया हुआ, बीच में ताँत लगाया हुआ। काँख से कटिया को दबाकर बालाजी तैयार हैं। शिवभद्दर ने कान पर हाथ रखकर शुरू किया—

थर-थर काँपे धरती मैया, रोये जी आकासः
घड़ी-घड़ी में मूर्छा लागे, डेग-डेग पियासः

—खँजड़ी ! ··· गिड़िंग बाजा, बालाजी !··· मेहमानजी, बस उतना ही !···

घाट न सूझे बाट न सूझे सूझे'न अप्पन हाथः

—कठम, काठ की ढोलकी ! ··· करताल ! चलाये चलो शिवा !

चटक-चटक-डिम, चटक-चटक-डिम ! ··· उँक्क-उँक्का, उँक्क-उँक्का !··· पिट-पैं-पिट-पैं !··· ठक्के-ठक्का ! छम्मक-खट्छक !

मलारी सिर्फ घुँघरू की बोली मन-ही-मन भर रही है इस द्रुत स्वर-तरंग में। छुम्म-छुम्मक···! मूसलाधार वृष्टि में, विशाल परती पर भागती कोशका मैया ! उनके पाँव की झनकती पैंजनी !

माघ मास की लम्बी रात, न जाने किधर से कट गयी !

रिहर्सल से लौटते समय, मन में पवित्र प्रातकी फूट रही थी सबके।

मन की परती टूट गयी···!

माघ मास कब गया, फागुन किस दिन आया, परानपुर गाँव को नहीं मालूम ! कोयल

की मधु-लिपटी बोली सुनकर एक-एक प्राणी ने अपने मन के मधु-कोष में देखा—टटके मधु का एक बूँद संचित हो गया है।

दुलारीदाय के पूर्वी महार पर पत्थर के टुकड़ों के अम्बार लग गये हैं। एक्सकेवेटर-क्रेन पत्थरों के टुकड़ों को ऊपर उठाता है, फिर नीचे दुलारीदाय के बलवाही कगार पर उझिल देता है। काम में मगन लोगों की लगन लगी है—वर्षा के पहले तटबन्ध तैयार हो जाये ! —और भी जोर से ! मार जवानो, हइयो ! परबत तोड़, हइयो !

जितेन्द्रनाथ के नये बाग के पेड़ और भी एक हाथ बढ़े ! ···ऑपरेशन-पार्टी द्वारा तोड़ी हुई परती पर श्रीपंचमी के दिन नयी जाति के पाट की बोवाई होगी। वर्ष में दो बार पाट की खेती होगी, इस नयी जाति के पाट की।··· भिम्मल मामा ने इस नये पाट का नाम दिया है—क्रान्ति पाट, सोना पाट-चीनी पाट नहीं।

'पंचचक्र' के पाँच दृश्यों के ताल-तरंग लोकमंच के कलाकारों के प्राण में समा गये हैं। सहज सुर में बँधे हुए लोग एक विशेष ताल पर चलते हैं।

पनघट पर मुक्त हँसी की हिलोर उठती है। गाँव की गलियों में हीरे-मोती बिछ जाते हैं। आज श्रीपंचमी है। लोकमंच के कलाकार वीणा-पुस्तकधारिणी माँ शारदा के चरण में नत हैं—जय माँ शारदे !

कृषि-विशारदों ने तोड़ी हुई परती की तैयार मिट्टी में बीज वपन किया—ओ धरती माता···!

सूरज डूबने के पहले ही परानपुर नाट्यशाला की नयी अँगनाई भर गयी। हाई स्कूल के बालचर और कन्या पाठशाला की स्वयसेविकाओं के अलावा गाँव के बड़े-बूढ़े लोग भी लोगों को बिठा रहे हैं। भीड़ बढ़ती ही जाती है।··· कोसी कैम्प के लोग गाँववालों को नाम-बनाम जानने लगे हैं—"ए ! सुचितलाल मड़र ! इधर एक दरी बिछा दीजिए !" कोलाहल ! कलरव ! औत्सुक्य ! चांचल्य ! रोशनी, मुखड़े अनेक ! सब पर हँसी, एक ! यान्त्रिक करतल-ध्वनि नहीं। सरल, सहज, मुखर मानव !···

'पंचचक्र' ! निवेदक लोकमंच, परानपुर··· । परदा खुला। भनभनाहट भी बन्द हो गयी। मच पर अन्धकार ! सन्नाटा ! एक सिसकी भी नहीं। निःशब्द मंच के पिछले परदे पर एक पंछी की छाया उभरी···क्षीण आलोक। पंछी ने पंख फड़काये। छवि स्पष्ट हो गयी, पण्डुकी ! ध्वनि—'तुर-तु-तू, तू-ऊ-तू-तू ! उठ जित्तू चाउर पुरे-पुरे-पुरे ! ···चाउर-पुरे ! चाउर-पुरे ! रे-ए-म-रे-ए-ए-म।' तानपूरे की झंकार के साथ मंच पर प्रकाश बढ़ता जाता है, क्रमशः ! तानपूरे की झंकार विलीन हुई। सारंगी के झनक-तारों पर 'सुन्दर-सुभूमि' की रागिनी उतरी, हौले-हौले। सुकण्ठ से सुरीले गीत की सुनहरी धारा फूटी। वाद्यवृन्द और पार्श्वगीत को भेदकर उद्घोषक का नम्र स्वर, ध्वनि-विस्तारक यन्त्र पर प्रतिध्वनि होता है—'पूर्णिया के जनजीवन

में जिनकी स्मृति आज भी गुनगुना रही है—बटोहिया गीत के अमर गायक स्वर्गीय रघुवीरनारायण को निवेदित।'··· गंगा रे जमुनवाँ के निरमल पनियाँ से-ए ! ··· ताँग-खेरे-खेरे-खेरे, ताँग खेरे ! टिन्नक-किनकाँ-टिन्नक ! खोल, मन्दिरा, बाँसुरी, घटम, शंख, घड़ियाल, झाँझ, करताल ! प्राण का प्रथम रंग उभरा मंच पर !

दर्शकों की आँखों में तरल तरंग ! आनन्दोल्लास ! हे-ए-ए ! कोशका महारानी ! कौन ? ताजमनी ! ···रेशमी पटोर मैया फाड़ि के फेकाउली, सोना के गहनवाँ मैया गाँव में बँटाउली, आँ रे रूपा के जे।···छम्म, छम्माँ ! ···थर-थर काँपे धरती मैया ! ··· खँजनी, गिड़िंग बाजा ! ··· मंच पर लहराता प्रकाश, जलछवि-सा ! मूसलाधार वृष्टि में विशाल परती पर भागती कोशका मैया !··बड़े-बड़े ढोलों की हल्की गड़गड़ाहट, अन्धकार ! ··· वायलिन की दर्द-भरी सिहरन। एक दीप टिमटिमा उठा। उजाला हुआ।···दुलारीदाय ? हे-ए-ए-ए ! मलारीदाय ? ···दोनों रे बहिनियाँ रामा गला जोड़ी बिलखय।···युग-युग के बाद, एक-एक प्राणी पाप से मुक्त होगा।···प्राणों के नये-नये रंग उभरेंगे। अल्पविरामकालीन कलरव।

दूसरा चक्र : नैका सुन्नरि गीतकथा।···नैका सुन्नरि, मलारी ? नाचती है मलारी ? है-है ! सुन्नर नैका, भिम्मल मामा। कुँक्का-कुँहा ! ··· दन्ता राकस का दाँत देखो। पहचानो कौन है ! परमा के गले की आवाज है···ई-पी-ही-ही-ही ! गरुड़ झा की तरह हँसता है ? ···सुन्नरि नैका रे, जोड़ लो पीरित जनि तोड़े रे-ए ! ··· दन्ता का बेटा, सुधना !

तीसरा चक्र : शैडो-प्ले और 16 मिलीमीटर का चलचित्र ! छायानाट्य···ककालों की टोली—बेघरबार लोगों की छाया। वाद्यवृन्द के बीच करुण पुकार भरते हुए लोगों की टोली—आह-रे-ए-ए-ए-हे ! कोशी की बाढ़ से पीड़ित इलाकों की तस्वीर, परदे पर उभरी···डूबे हुए गाँव, बहती हुई लाशें, गिद्धों की टोली मँडराती आसमान में। आह रे-ए-ए-ए-हे ! ··· चारों ओर निराशा का अन्धकार ! ··· दर्शकों के मुखड़े पर भय की काली छाया !

चौथा चक्र : सामयिक प्रहसन। भिम्मल मामा, परमा। एक, दूध में पानी मिलाकर बेचनेवाला ग्वाला। दूसरा, दवा में मिलावट करनेवाला डॉक्टर।··· बनस्पतिया नौजवान ! लिलिया ? मेम साहेब बनी है—कैसा गिटिम-पिटिम बोलती है ! हो-हो-हो। हा-हा-हा ! बनस्पतिया नौजवान मँगनीसिंह, नहीं-नहीं, प्रेमजीत ! हा-हा-हा ! मुँह देखो जरा !

पाँचवाँ चक्र : उद्घोषक की आवाज—निराश, हताश, कोसी-कवलित मानवों की टोली में जनजागरण ने विद्रोह-मन्त्र फूँका—धु-तु-तु-तु-तु··· ! लड़ाई के नक्कारे बजते हैं। कोसी बह रही है, लहरें नाच रही हैं। अर्ध-नग्न जनता का विशाल दल ! पर्वत तोड़, हइयो ! पत्थर जोड़. हइयो ! इस कोसी को साधेंगे।··· बच्चे मर गये, हाय रे ! बीबी मर गयी, हाय रे ! उजड़ी दुनिया, हाय रे ! ···हम मजबूर, हो गये। घर से दूर, हो गये। वर्ष-महीना, एक कर ! खून-पसीना, एक कर ! बिखरी ताकत, जोड़कर। पर्वत-पत्थर, तोड़कर। इस डायन को, साधेंगे। उजड़े को, बसाना है···

ठक्कम-ठक्कम, ठक्क-ठक्क ! घटम-घटम, घट-टिड़िरक-टिड़िरक ! ...ट्रैक्टरों और बुलडोजरो की गड़गड़ाहट ! ... लहरें पछाड़ खाती हैं। अट्टहास ! मंच रह-रहकर हिलता है।...दर्शकों के मुँह अचरज से खुले हुए हैं। कौन जीतता है—मार जवानो, हइयो ! एक डैम की प्रतिच्छाया परदे पर ! गड़-गड़ गुड़-गुड़ गर्र-र्र-र्र-र्र-र्र !...

धीरे-धीरे ध्वनियाँ विलीन हुईं। मंच पर अन्धकार छाया रहता है।... डी.डी. टी. की बाँसुरी भठियाली धुन छेड़ती है, अकेली... नदीर धारेर काछे-पासे... ! परदे पर धीरे-धीरे बादामी छाया छा जाती है। वीरान धरती का रंग बदल रहा है धीरे-धीरे...हरा, लाल, पीला, बैंगनी।...हरे-भरे खेत ! परती पर रंग की लहरें ! बँधुआ सेथाय थाके मोर, बँधुआ सेथाय थाके-ए-ए ! डी. डी. टी. की बाँसुरी रंगों को सुर प्रदान कर रही है। अमृतहास्य परती पर अंकित हो रहा।...पाँच चक्र नाच रहे हैं। घन-घन, घन-घन ! पण्डुकी का जित्तू उठ गया। पण्डुकी नाच-नाचकर पुकार रही है—तुतु-तुत्त, तुरा तुत्त ! ... पिपही-शहनाई बजने लगी।

खेल समाप्त हो गया। जनता बैठी है।...और भी होगा ? परदा उठाइए ! कोलाहल ! कलरव ! दुलारीदाय ? ...कोशका महारानी ! खोली-ओ ओ ! ... परदा उठा। लोकमंच के कलाकार, मच पर खड़े होकर जनता को नमस्कार करते हैं। डॉक्टर रायचौधुरी की मुद्रा—तुमि पारबे !

हर्षोन्मत्त जन-मन...!

सेमलबनी के आकाश मे अबीर-गुलाल उड़ रहा है।

आसन्नप्रसवा परती हँसकर करवट लेती है।

●●●